वंश भास्कर

(पंचम खण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि–मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :
सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक
स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा
भूतपूर्व प्राध्यापक
इतिहास विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक
बाफना बुक डिपो
चौड़ा रास्ता, जयपुर–३

एकाधिकारी वितरक

वाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर–३

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ षष्ठराशिप्रारम्भः ॥ ६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम बुंदिपपुर आइकैं, रतनसिंह सठ रान ॥
रविवसु[1]१८८१हिं भारत रिपुन, पंचानन तिन दिय प्रान ॥ १ ॥
इत अर्द्धहिं[2] वसु८ अब्द वय, सठ नृप हुव सुरतान १८९१[3] ॥
अधिप सठहि चित्तोर उत, सो विक्रम सिसु मानें[4] ॥ २ ॥
पै बिक्रम१ वय मध्यपर, यातैं नाहिं उतै[5] आस ॥
सम्भुकौं इत बुंदीस सुत२, पैहैं स्व वय प्रकास ॥ ३ ॥

षट्पात् ॥

बालपनहु यह अबुध तियन छलि विजन[6] प्रतारहिं ॥
ओघत खिन बंसिन मल्ल पिठि लत्ता हनि पारहिं ॥
कातिकन-सोधत हुलसाति पयन बिच सल्य प्रवेसहिं ॥
अंसुकैं नारिन अटर्न[11] दूर करि लखत कुदेसहिं[13] ॥
सामंत१८७१आदि गुरु बंधु सब बाहि१ लखि बरजैं बहुत ॥
निजजननि आदि प्रबोधनहु लुचहिं रान जाकौं सुदुत ॥ ४ ॥
गुरुजन बरजन गंजि[14] सिसुहु विदवैं स्वतंत्रत्व ॥
जननिहु बरजत आनि दक्खैं[15] जलधाल डुहत्व ॥

---

१ दुर्घनल्ग को मारने में ॥ १ ॥ २ साढे आठ वर्ष की अवस्था के स्थान में. विक्रमादित्य चित्तोड़ का राजा हुआ ॥ २ ॥ ४ विक्रमादित्य मध्य अवस्था में था इस कारण ५ चित्तोड़ में कुमार की आशा नहीं थी ॥ ३ ॥ ६ एकान्त में स्त्रियों को छलकर ताड़ना देता था उन स्त्रियों को छोड़ते समय ७ योनि में पुष्प रखने के स्थान में वस्त्र डालकर, पीठ पर ८ लात (एक प्रहार) मार के गिराता था और निकली ही ऋतु वाली हुई स्त्रियों की योनि में ९ कण्टक डालता था और ११ फिरती हुई स्त्रियों के १० वस्त्र (लहंगे) दूर करके १२ गुप्त स्थान देखता १३ जनाने में ॥ ४ ॥ बड़े लोगों के मना करने को १४ दबाकर १५ पानी में कूद जाना विचारता

इम बारह१२ वय अंठह भयो तदपिहु खल भास्यो ॥
जननीलग सब जनन प्रतंपति कुसुत प्रकास्यो ॥
भट१सचिव२आदि अखिलन भनिय अप्पन निर्पत बिलोमें
इहिं सिसुहिं आदि दैवो उचित रहहिं नतो कुलातिय बिरह ॥
दोहा—पुब्ब समय संचोरपुर, ब्याहिय जँहँ बरसीह १८४।१ ॥
तँहँ सचपन सुरतान१८९।१को, अर्यौं हुव सब ईहं ॥ ६
नृप नारायन१८७।२ किय निपत, सुतसुतको संबंध ॥
जिनतिय तिन छिय जानिकैं, यह हड्ड६।१५ सिसु अंध ॥
सब बुंदीके भट१सचिव२, बहि थाके कहि ब्याह ॥
अवरठौहु मन्नी न यह, रँच्यो सुनत कुराह ॥ ८ ॥
यहप्रति हड्ड६।१नईसको, बिंथरयो अपजस बार ॥
कन यह सुनि संचोरके, करतभये इनकार ॥ ९ ॥
षट्पात्—ईंत तवहि भट१ सचिव२ बिजन लगि बीजं बिचारन
सोधिय सनन सुपुत्र किति जग हुव सहकारन ॥
तजि समत्वं अब त्वरितं याहि जित तित उरझावहिं ॥
नृप अनूहर्पन निखिल लाज्ज अप्पन सिर लावहिं ॥
यातैं लखहु अब सम१ असन२ वहिपासिसुहु ब्याहहु कुम
कछुदूर दहुरि बंछूर किय नृप संबंध बिखाइ नैति ॥ १० ॥
दोहा—वह चालुक बछूरइन, महा कृपन सिरमोर ॥
भूपति दम्मदुलक्ख २०००००सुव,जस परबस जस१जोर२ ॥
षट्पात्—जिहिं नामहु बनि जीव कहत कोउ न अमद्र क
नृप तव कवि तिहिं नाम लिखत एकांत भद्र लहि ॥

बारह १ वर्ष की अवस्था में हुआ तो भी दुष्ट ही दीखा २ दुष्ट बुद्धि ३ सबने कि अपना ४ भाग्य ५ जलता है ॥५॥ बराबर की ६ इच्छा से ॥ ६ ॥ ७ ॥ बुरे में ७ रजा हुआ सुनकर ॥८॥ ८ प्रतिदिन ९ फैला १० समूह ॥९॥ ११ मन कारण विचारने लगे १३ कारण सहित १४ समता (बराबरी) को छोड़कर १५ राजा के १६ कुमार रहने से १७ बालपोत संबंधी क्षत्रिय के १८ नम्रता

कन्है कन्ह पुनि कन्ह मनहिं लिखि लिखि हम निर्मय ॥
भंजन अनुमंत भेदि जानि जितजित जप जय जप ॥
जिहिं कन्ह जानित तंतु मा कुमार सादिनी ताहु लहँ निपतिवस
सुरतान१८९।१ बरहिं व्याहिय लगियि आहि रथपुर१साला का२न अंस

दोहा ॥

जिनत होइ इह कन्ह जो, तो वह लघु तनयाहु ॥
रूपहु जानि छुछुहु१हिं न है, तिरनैं सन वर ब्याहु ॥ १३ ॥
अनंदु भयो पुन्नहि वढै, लल न भयो सुत लंहु ॥
जस तिहिं नारिन छुडुहु१इन, मन्यौ दर पाति नंहु ॥ १४ ॥

पद्धरी ॥

कन्ह कानिय आलुहिव नाम हरिकुमरि१८९।१सुजानछन ॥
बरि आनिय कुंवरि लिलाति१ पल साहुि २ दिवरेछन ॥
कुमारी१ संगहि वथिर्तं२१चतुर१कुसलइज२पहिचान्यौं ॥
जाति अपिज्ज गृह आइ संद निज भाग्य प्रमान्यौं ॥
पहि पवन चन्विर्य सस्तुमतिहु सहुस्मावहु किन स्वीपसुत ॥
बस जो सलैं न तो अग्र वन्हु देवर१ जेठ२न सुष्टि हुत ॥ १५ ॥
वधू लुयुन गिनि बिहसि इच्छि कुलजन चंद्राउति१८८।३ ॥
जंपतैं सस्तुचितैं जानि निपत बलिहार फोर लुति ॥
सामंता१८७।१हिक स्लीस वधूनत कथित प्रमोधिय ॥
अपपन जिय आंगनि क लल्हु नरिकी सुभ सोधिय ॥

पुनि जिनहु नारि आश्रय पतिहि वहू तदपि ऐसी बदत ॥
तुम१हम२कहैं न इम यह तनय निज कुसंग खलपन नंदत१
इम विचारि नप उचित सिखुहि सिक्ख्यो सु समंतन ॥
पै प्रतिदिन प्रतिकूल बन्यौं मयमँथ बय. बस्तेन ॥
छायंन वपु सोलहम६१ विसँत भास्यो दूनौं२ध ॥
छितको बोधनहार करे प्रतिहल कलि जुग क्रुध ॥
वपुसेद बढन१पुनि मूढपन२वयसंगहि गय हुव२बढत ॥
संभरनरेस सोलह१६समहु चल्लहिं रथ असुचित चढत ॥१
व्यायोंसरन जिन विहितै उचित खुँरली२ आराधन ॥
हित हेरहिं तिन तरँजि सहि गुरु कार्ये कुसाधन ॥
दसमी१०मुख मह दिनहु बैठि रथ कर्म बनावहिं ॥
अनुगं सबल पय अटत पानि अंसनँ भर पावहिं ॥
सामंत१८७११आदि तक्कत स्वहित बिजुहि बीज किय सब ।
बा ...ठुको१८९११सहित चंद्रावति१८८१३हु कूर वजिय करि छितक

दोहा ॥

गुन नव तिथि१५९३ सक पुव्वगत, कढि इल वह बनवीर ॥
हुव अधीस हनि विक्रमहिं, स्वयं रान अधसीर ॥ १९ ॥

...ना से १ गर्जना करता है २ सबने शिक्षा दी ३ बलदा ४ बदमस्त; वा ... ५. ...से अर्थात् बिना मोहरी का ऊँट जावे जैसे जिसको फारसी में (शु... ...) कहते हैं अवस्थावाले ५ पकरों के समान अर्थात् युवा अवस्था ... ...काली बहुत होता है. सोलहवें ६ वर्ष में ७ प्रवेश किया तब दुगुना ... ८ शरीर का मांस और मूर्खपन दोनों अवस्था के साथ बढते गये. ... ...वर्ष की अवस्था में ही ९ अनुचित रथ पर चढकर चलने लगा ॥ १७ ॥ ... ...नहीं ११ करता था इसीप्रकार १२ बाण विद्या भी उचित नहीं समझी ... ...वालों को १३ धमका कर. खोटा साधन करके बड़ा १४ शरीर का ... ...विजय दशमी आदि १५ उत्सव के दिनों में भी रथ में बैठकर १६ ... ...था. बलवान् १७ सेवकों के १८ कन्धे पर भार देकर पैदल फिरता. ... ...सब को १९ उदास करादेये २० मूर्ख बनी ॥१८॥ * बणवीर विक्रमादित्य का मारकर २१ स्वयं चित्तोड का राणा बनगया २२ पाप में बंद करानेवाला ॥१९॥

* ... महाराणा सांगा के बड़े पुत्र पृथ्वीराज का पासवानिया पुत्र था जिसने १५९२ के सम...

कुंभसाननत्तिय कुमति, जो दासीभव जात ॥
सु बनवीर इम अप्प सिर, चामर छत्त चलात ॥ २० ॥

षट्पात्

भोज१सु अग्रज भनिय असिय कुमरहि सु कालगति ॥
हन्यौं रतन२हहै६१स पयड विक्रम३तव भूपति ॥
उदयसिंह४तस अनुज हुतो कुंभिलगढ लै हद ॥
तिहिं अंतर बढि अतुल सु हुव बनबीर दुरासद ॥
अहिप जु प्रमत्त अहिफेनमद इम नरबद१८७१२दौहित्र वह ॥
बिक्रम हन्यौं रु बनबीर बढि व३ हैन्नृप प्रतप्पो असह ।२१।

दोहा ॥

कुंभिलगढ हो तब कथित, उदयसिंह४ अनुजात ॥
सोहु रह्यो यह दुक्ख सहि, पर्‌यो सम्रुक्षि पविपात ॥ २२ ॥

षट्पात् ॥

बरस तीन३ कछु विकर्ख अप्प बनवीर अकंटक ॥
तप्पो असह चित्तोर छलात प्रभु सक्ति छकाछक ॥
कुल सीसोदनकोहु गंजि न सक्यो जिहिं गौरव ॥
दुर्जोधन बल दर्ति रहे नसिनासि जिम कौरव ॥
बनवीर असन इक१दिन बिरचि करत सुबकर सालिल करि ॥
दाधीच वैच आचार्य द्विज परस्यो खेमहु बिंदु परि ॥ २३ ॥

(महाराणा कुम्भा का पोता जो दासी के उदर से पैदा हुआ था उस बणवीर
ने अपने ऊपर चामर छत्र चलाए ॥ २० ॥ १ बुरा (दुष्ट) ॥ २१ ॥ विक्रमादित्य
का २ छोटा भाई ३ वज्रपात ॥ २२ ॥ ४ विशेष आराम से ५ नहीं दबासके.
जिसका ६ बडप्पन ७ दुर्योधन के बल से ८ दबेहुए ९ भोजन करके जल को
हाथ. पोतर था उसका ११ बालकथ कंठकर ब्राह्मण के १० लगा ॥ २३ ॥

* महाराणा विक्रमादित्य को मारकर चित्तोड़ की गद्दी ली फिर एक दिन. भोजन करते समय अपना
उच्छिष्ट भोजन पूरबिया चहुवाण रावत "खान" को दिया जिसने बणवीर को पासवानिया समझकर भोजन
नहीं किया इस पर वाद्विवाद बढ़कर रावतखान उदयसिंह के पास कुम्भलगढ चलागया. बहुतसी
सेना एकत्रित करके सम्वत् १५९७ में बणवीर को निकालकर चित्तोड़ पर अधिकार करके महाराणा उद
यसिंह चित्तोड़ के स्वामि हुए।

सुनिय द्विज जल असुचि न किय हरि द्विजन निवारहु ॥
रान कहिन सब रान त्रिहित कर सुद्धि बिचारहु ॥
बहुरि खेम खिजि बदिय कुदकुस रान डरे सब ॥
दासीसुव तुम द्विजन असुचिकृत जल छुवात अब ॥
यह सुनि पदुप्पि बनवीर अति सु द्विज कढ्ढिदिय देस सन ॥
तब उदयसिंह अभिलाख तकि गो कुंभिलगढ गिरि गहन ।२४।

दोहा ॥

पठये दल तहँ लिखि पिहित, रान सहन इहिँरीति ॥
उदयसिंहआनहु इहाँ, तुम द्विज बिरचि प्रतीति ॥ २५ ॥

षट्पात् ॥

खुल्लयो तब द्विज खेम उदयअग्गैं सम्मत सब ॥
बदिय उदय बिनु बित्त कहहु बिस्वास बनैं कब ॥
सुद्द सुभटन प्रति छन्न पुनिहु पठये इहिँ आसय ॥
सूचित धन तब सबन जोरि पठयो अभीष्ट जय ॥
चित्तोर द्वारपालन चतुर क्रम बसु अप्पि स्वकीय करि ॥
कौंहिनी बहत घायड उदय धुँव सब बिस्वास प्रतीति धरि ।२६।
यह रजनि गढ आत द्वार भेदिन उघारिदिय ।
परिकैर निज संजुत कढ्ढि पर नर प्रवेस किय ।
प्रथमैं परैं१, बनवीर पिंड तौ तौ तस पावैं२ ।
भजिहुजाइ१, जो भीत तोहु जन जियत बतावैं २ ।

दासी के पुत्र १ करके जल को शुद्ध जानो २ चपलित. उदयसिंह की ३ अभिलाषा करके ॥ २४ ॥ ४ छाने पत्र लिखकर भेजा ५ विश्वास करके ॥ २५ ॥ उदयसिंह के आगे सम्मत ६ सब प्रकाश किया, उदयसिंह ने कहा कि बिना ७ धन कैसे विश्वास होसकता है. उमरावों के नाम ८ पत्र ९ अभिलाष करने की १० इच्छा से चित्तौड़ के ११ द्वारपालों को १२ धन देकर अपने किये १३ सेना १४ सिपाह १५ विश्वास करके ॥ २६ ॥ १६ पश्चात् १७ सहित १८ युद्ध में मारा जाता तो बनवीर का शरीर मिलजाता और भागजाता तो उसको छो ड. जीवित बताते सो क्या हुआ यह हमने नहीं जाना ॥ २७ ॥

कैसैंहु होहु जानी न काहु पै सर नव तिथि१५९५साकपर ॥
चित्तोर आइ भो वह अचल धनी उदय मेवार धर ॥२७॥

॥ दोहा ॥

उदय१थान चित्तोर इम, लहि राहिय नय लाइ ॥
मेवारे निज गिनि सुमति, लिय सब रच लिख लगाइ ॥२८॥
रन हित खेत आचार्यसन, दन्यौं बहु सु धुव धारि ।
सत्त७ ग्राम पिप्पलि१सहित, दे दारिद्र दिय टारि ॥ २९ ॥
कथन खेम१के कुलहुको, रान उदय२कुल रक्खि ॥
धन्वंतरि१जगतेस२धुर, सव१ रक्खिय सब२संक्खि ॥ ३० ॥
पुर बुंदिय सुरतान१८९१पहु, इत यह पसुआचार ॥
हित आखत ताकौंहि हनत, सठ कुनिपति अनुसार ॥३१॥
बुंदियहिन दीसे निबल, मरतहि नृप रविमल्ल१८८१ ॥
जितातितैं जुरि अरिजनन, होतहि खिन किय हल्ल ॥३२॥
केसर१हागर२नाम करि, जुगरजवलन इत आत ॥
कोटापति सिसु लखि कियउ, पुर कोटा निज पात ॥३३॥
जिन बुंदिय लिय जानिकैं, तब यह सिसु सुरतान१८९१॥
इम कोटा करि निज अमल, पैठे जवन समान ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाबर३०२न भजि बहुरि सुपहु रविमल्ल१८८१सरन सुनि ।
भंजि बहुत रान भट पर्यो राघव१८७१तद्दीय पुनि ॥
सुत वीरम१८८१कन्ह१८८१सुहि बाल वय औंहि दिंह वस ।
जिंहि निकासि पति जवन बने कोटा अरिहिं बस ॥
सु अरिह फलहिं सुर्जन१९०१ संमय पै अनतो खल सबल पारि ।
ए जवन कहि जैताउतहारन कोटापति हुव विजय करि ॥३५॥

दरिद्र दोर१ करा दिया । २९ ॥ सब२ साक्षी हैं ॥ ३० ॥ ३ हुरे भाग्य के अनु-
सार ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ कोटा पर ४ पड़े ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ५ हैं ६ भाग्य रहने के
७ अनुगमना के वश से, यह अनुगमन राव सुर्जन के समय में पाइये ॥ ३५ ॥

जैत्र१८२।३कुलहु जवतैंहि निवल परिगो रहि निर्भुव ।
केसर१डागर२कहत हुलसि कोटाअधीस हुव ।
इम दिसदिस अंधेर दुजनं छुंदिय भुव दब्बहिं ।
सठ कुपुत्र सुरतान१८९।१गिनत जितातिन अरि गब्बहिं ।
निजजन भजैं जु हितकी निपुन ताहि हनैं प्रतिकूल तकि ।
जिन सुजन भार भट३बंधु४जे सब गेहन बैठे सरकि ॥ ३६ ॥
इकदिन काका उभय५सहँस१सत्तल२दासीसुव ।
अनाकार६नहु आइ रहुराज१८९।१हिं तर्जत हुव ॥
मंडन कुल तजि मग्गमुवन न रहे इम भोरे ।
जिनँ हसाहु रिपुजनन न गिनि हमरेहु निहोरे ।
कुलधर्म अबहु यहि तजि कुमति सहनय विलसहु राजसुख ।
अबतैंहि नतो संहिहै अंटक दुर्जन जिम लहि केददुख ॥ ३७ ॥
सुनत एह सुरतान१८९।१कोप अंतर सदर्प करि ।
जब बस परत न जानि टारि कछु समय अप्प हरि ।
निज सम्मति जन निकट१दूर२रोधंक करिकैं हुत्ते ।
काका दुव२छलि किसहु निलज पकराइलये हुत्ते ।
निज ढिग कढाइ दोउ२न नयन कहि अवाच्य तिनकौं कुटिल ।
पठये निकेत मंचन पटाके कहत भलो हुव अंध किल ॥३८॥

॥ दोहा ॥

इक्खत घोर अनर्थ यह, ताजि जस जिम सुरतान१८९।१ ॥
सेसहु कति ह्री१सोक२सह, थू थू करि गय थान॥ ३९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इमहि जैतगढ आधिप सिंह१८९।१लघुबयहि भीम१८८।२सुत ।

१ बिना भूमि २ शत्रुओं ने ३ गर्व करते हैं ४ अपने अपने घरों में जा बैठे ।३६। ५ बिना बुलाए आकर ६ धमकाया ७ शत्रुओं को मत हंसा ८ नीति के सहित राज्य को भोग ९ रोक ॥ ३७ ॥ १० रोकनेवालों को दूर करके ११ शीघ्र १२ स्तुति योग्य ॥ ३८ ॥ १३ लज्जा और शोक के साथ ॥ ३९ ॥

कहिय नृपहिँ कुल काल जोहु सहि रहिय द्रोहजुत ।
रक्खि बिरह रोधकन यह१८९।१हु लहि कहुँ *एकाकिय१।
जिहिँ गिराइ तालजल दुष्ट चिरलग † गोता किय ।
मरतहि सु जानि ‡ बोरत मनुज छोरत हुव तिहिँ रक्खि छल ।
अटकत निसास जल भृत[1] उदर बच्यो सु निठिन आयुबल ॥४०॥
बढत घोरपन बिक्खि[2] सु नृप सुर्जन१८६।१सामंत१८८।१ हु ॥
करि अर्पन[3] धिक्कार बारबारहि तँरज्यो[4] बहु ॥
रायमल्ल१८८।२तिम दुष्ट सहज कल्ल्यानमल्ल१८८।३सह ॥
उभयपरपितृव्य[5]क एहु अटकि हारे खल आग्रह[6] ॥
जननी१८८।३रु तास रानी१८९।२हु जुगरवरजि रही तस सत्रु बनि
उपदेस समुझि बिप सम अधम रहत निरंकुस[7] दिन१रजनि ॥४१॥

दोहा ॥

उज्झि अधिप बिस्वास इम[8], सावधान अब सर्व ॥
रुचि जिम बचि लग्गे रहन, गिनि कुपुत्रपन गर्व ॥ ४२ ॥
मन सलज्ज अप्पन मरन, बंछतें रन बहु बंधु ॥
निज छतें[10] न लख्योजाइ नृप, अवनी[11] गेरत अंधु[12] ॥ ४३ ॥
जंपैँ[13] हित उपदेस जुहि, बरतैँ सुहि बिपरीत[14] ॥
हल्ल६।१न कुलान कुपुत्र हुव, औसो निगम[15] प्रतीत[16] ॥ ४४ ॥
अर्जुन१८८।१की खट्टी[17] अखिल[18], प्रभुता सुरजन१८९।१ पास ॥
जोहु निजन गिनि लखि जरैं, बंछै[19] तसहु बिनास ॥ ४५ ॥

*इकला लेकर. तालाव के जल में † डुबाया ‡ डुबाते जानकर. पेट में १ जल भरकर ॥४०॥ २ देखकर ३ धिक्कार देकर ४ धमकाया ५ दोनों काका ६ हठ करके ७ अंकुश रहित ॥ ४१ ॥ राजा का विश्वास ८ छोडकर ॥ ४२ ॥ बहुत बान्धव लज्जा सहित युद्ध में अपना मरना ९ चाहने लगे १० अपने होते हुए ११ भूमि को १२ कुए में डालता है ॥ ४३ ॥ जो हित का उपदेश १३ कहै सो १४ उलटा वर्तता है १५ वेद का १६ नाश करनेवाला; अथवा कुल की प्रतिज्ञा को मिटानेवाला ॥ ४४ ॥ १७ सम्पादन की हुई १८ सम्पूर्ण १९ चाहते हैं ॥ ४५ ॥

कर्मध्वज जसकर्णके, जावल पत्तन जाइ ॥
सुत तस भैरवकी सुता, पटु सुर्जन१८९।१ लिय पाइ ॥ ४६ ॥

पद्धतिका ॥

सुर्जन१८९।१ सु लग्न पहिलैं सुजान, बय उचित बीर सह महः१विधान
जसकर्ण तनय भैरव जनीसु, कर मृदुल सोहि ब्याहिय कनीसु ॥४७॥
सौभाग्यदेवि१८९अभिधान२सोहि, जगविदित जसोदा१८९। नामजोहि
आनी सु ब्याहि सुर्जन१८९।१ उदार, बसु३ वृद्धि४ बिरचि अति मह बिथार५
सुरतान१८९।१ सु सोभा सहिसक्यो न, तैसे सु बंधु पर हित तक्यो न॥
इक रक्खिय माटुंदा१ अधीन, लुभि६ इतर पटाके ग्राम लीन ॥४९॥
घर ऋद्ध७ तदपि सोभा घटी न, हुव सुर्जन१८९।१ नैंक न बिभवहीन ॥
बुंदीस ताहि मारन बिचारि, सठ बिजन८ बुल्लि स्वमतानुसारि ॥५०॥
माटुंदा सलत९ काहिय मूढ, गग्गावंसु तिहिँ दल१० जाइ गूढ ॥
अर्जुन१८८।१के उद्धत११ त्रिक१२ अहितोरि१, बसु अखिल१३ लुट्टि१ आनहु बहोरि
यह मंत्र धर्यौ इक१ दिवस आग्ग, सुनि लिय उन पुब्बहि छल समग्ग१४ ॥
मूढन रचेहु कहु दुरंत१५ मंत्र, तकि घर्म चलत रहत सु स्वतंत्र ॥५२॥
अर्जुन१८८।१कै खट६ मित हुव अपत्य, सुत तीन३ रहे तहँ आयु सत्य॥
सुर्जन१८९।१तिम अक्खयराज१८९।२ सूर, पुनि राम१८९।३ अनुज गुन ग्रामपूर१६ ॥ ५३ ॥
सुरतान१८९।१ मंत्र यह सुनि ससंक, पुच्छिय निज जोधन कलिप पंक१७
बंधुनपर बिक्खहु१८ स्वामि बैर, नासन सठ चाहत निजहि नैर१९ ॥५४॥
कोटा न लेत हानि जवन क्रूर२०, सिर बंधुन काढन बनत सूर ॥

कोमल १ हाथ पकड़कर ॥ ४७ ॥ २ नाम ३ धन की ४ वृद्धि करके. बहुत उत्सव ५ फैलाकर ॥ ४८ ॥ ६ लोभ करके ॥ ४९ ॥ तो भी घर की अछि ७ समृद्धि नहीं घटी ८ एकान्त में बुलाकर ॥ ५० ॥ माहूंदा ९ सालता है. सेना से १० घेरा लगाओ ११ आगे अर्जुन के तीनों १२ निरंकुश पुत्रों को मारकर १३ सब ॥ ५१ ॥ १४ समग्र (सब). मूर्खों की रची हुई सलाह भी कहीं १५ छिपी रहती है ॥ ५२ ॥ १६ गुणों के समूह से पूर्ण ॥ ५३ ॥ १७ पाप १८ देखो. अपने १९ नगर का ही नाश करना चाहता है ॥ ५४ ॥ २० क्रूर अथवा मूर्ख

अब जियन१मरन२सब बिधिअर्पीन, पै करहु स्वामि स्वागत प्रबीन ५५
सुतसुर्ज्जन।१८९।१दिइसकोतसज्ज, लखिस्वामिद्रोह१कुलगारिलज्ज
अर्ज्जुन१८८।१वधूजंठीजुआहि, जगकहतजयवती१८८।१नामजाहि
गहिलोतनी सु अनुचित गिनाइ, छम सुतन बुल्लि वह इठ छिनाइ ॥
बुल्ली न स्वामिसन रन विधेय, है भीरु भजहु यह थान हेय।५७।

दोहा ॥

च्यारि४हु जननिन इम चवत, मन्त्रि सु पुत्र सुमंत्रं ॥
सब परिकर बैभव सहित, तक्किय धर्म स्वतंत्र ॥ ५८ ॥
मातुल्ला तजि सुख्मन, कढि पहिली निसकाल ॥
गो बहुरिहु चित्तोरगढ, सुर्ज्जन१८९।१सगुन साल ॥ ५९ ॥
निज मातुलसुत गिनि निपुन, उदयरान करि अग्घं ॥
सुर्ज्जन१८९।१रक्खिय प्रीतिसह, बैरी बर्त्त१न बग्घ२ ।६०।
दैन न किय पहिलो पटा, सीसोदन हठसंधि ॥
कढिय रतन२मारकहु लहिं, बैरी बैरहिं बंधि ॥ ६१ ॥

पद्धति ॥

उदय४रान उच्चरिय रतन२रविमल्ल२ रहे रन ॥
बैर तदपि जो बदहु सोहु सुरतान१८९।१ भूप सन ॥
बलि अर्ज्जुन१८८।१ इन्ह बप्प परिय चित्तोर कामपर ॥
पुनि मम मातुलपुत्र किम न रक्खहिं निज हितकर ॥
इम उदय४समप्पिय सुर्जन१८९।१हिं पटा सहसपैंतीस३५०००सों ॥
सुहु रहिय धारि फूफीसुतहि बंटहु तजि बुंदीसमों ॥ ६२ ॥

---

१ ब्रह्मा के हाथ है. स्वामि के २ आने का आदर करो ॥ ५५ ॥ ३ सुरजन आदि ४ कुल को कलंक लगने की लज्जा से. अर्जुन की ५ विवाहिता पट्टी स्त्री ने ॥ ५६ ॥ इस वार्ता को ६ अनुचित जनाकर ७ समर्थ पुत्रों को बुलाकर. इस स्थान को ८ छोड़कर ॥ ५७ ॥ ९ कहते ही १० श्रेष्ठ सलाह को मानकर ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ११ भाव (आदर) वैरियों रूपी १२ बकरों के लिये १३ सिंह ॥ ६० ॥ १४ हठ की प्रतिज्ञा से सीसोदिया ने ॥ ६१ ॥ रत्नसिंह और १५ सूर्यमल्ल दोनों ही युद्ध में रहे. अर्जुन का १६ पिता. मेरे १७ मामा का पुत्र है १८ भुवा के पुत्र को ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

अनुज तत्थ सुर्जन१८९।३उभय२, व्याहे समसंबंध ॥
अक्खयराज१८९।२रु राम१८९।३ए२, सह मह दुलह सुसंध१ ।६३।
स्वर्णाकुमरि१८९।१ मंडनसुता, रचि उच्छव रह्योरि ॥
अनुज सहोदर अक्खय१८९।१हिँ, जो व्याहिय कर जोरि ।६४।
सुता कबंध समर्थकी, अमरकुमारि१८९।२ अभिधान ॥
सुर्जन१८९।१व्याही सोदरहिँ, सो राम१८९।३हिँ सह मान ।६५।
बंध त्रय३हिँ करिहैँ बहुरि, बुंदिय पाइ बिवाह ॥
बंसहु तीन३नके बढहिँ, रक्खन निज कुल राह ॥ ६६ ॥

पादाकुलकम् ॥

रायमल्ल१८८।२ कल्ल्यानमल्ल१८८।३ रचि, बिन्नति अति बुंदिय अपजस बचि ॥
निज भतीज नृप बहुत निवाख्यो, पै अनयँहि२ सुरतान१८९।१ प्रसाख्यो३ ॥ ६७॥
सगपन इन्ह दोहुरन समकुलसन, रचिय अग्ग रविमल्ल१८८।१ धरार्धन ॥
बुंदीपति जिन्ह अबहु न व्याहत१, दायँ हु दैन२दहे हिय दाहत।६८।
जख्यो समह व्याहत लखि सुर्जन १८९।१, व्याँहैं किम सु स्वं-वित्त पितृव्यन ॥
रोधँ प्रतीपहिँ ते१न सराहैँ, चित्त उदास मरन रन चाहैँ ॥ ६९ ॥
बुंदिय इम तिन्ह भाग्य बुलायो, अतिबल चढि मंडूपति आयो ॥
घेरा लगत भयो भय घरघर, अब सुरतान१९८।१ भटन किय आदर ॥ ७० ॥

---

१ सच्ची प्रतिज्ञावाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥६६॥ २ अनीति ३ फैलाई ॥ ६७ ॥
१ राजा सूर्यमल्ल नें १ बेट देने धैं, जलेहुए हृदय को जलाता है ॥ ६८॥ १ अ-ने धन से ७ रोकने के ८ विरुद्ध ॥ ६९ ॥-७० ॥

षट्पात् ॥

सामंता१८७।१दिक सुभट तदपि नृपतैं न मिले तहँ ॥
बाहिरतैं रतिबाह[1] पटकि पीरे[2] जवनन जहँ ॥
रायमल्ल१८८।२कल्ल्यानमल्ल१८८।३ पुरतैं कढि पद्धर[3] ॥
मन चहि आये मरन भये खग्गन तिलतिलभर ॥
इनसंग सहँस१सत्तल२उभय२ अंधहि खूब प्रहार असि ॥
चउ४भ्रात छह्ह३१धारन चढि रु गिरतभये बहु मिच्छ ग्रसि ।७१।

दोहा ॥

रिपुसंख्या जानी न रन, पै बहुमिच्छन पारि ॥
पहुँके[4] चउ४काका परे, अप्पन लोंन उजारि ॥ ७२ ॥
मिलि पित्थल१८९।१जगमाल१८९।१मुखं[5],सह हरि१८८।१कीरतिसीह
बलि दूजे२रतिबाहपैं, आये साजिजयईह[6] ॥ ७३ ॥
जिन बरजत सुरतान१८९।१जउँ, प्रतिदिन हुव प्रतिकूल ॥
भारपरत बुंदिय सुभट, मिले तेहि जयमूल[7] ॥ ७४ ॥
सब निजनिज गृहतें समिटि[8], बुंदीबाहिर बीर ॥
नृप कुपुत्र ओर न निरखि, सजे कुल पथ सीरे[9] ॥ ७५ ॥
दूजो२ इन रतिबाह[10] दिय, इमहि अचानक आइ ॥
पुनि भाजिगो मंडूपति सु, पहिलें[11]१जिम भय पाइ ॥ ७६ ॥
इम बचाइ बुंदिय अखिल, गये सुभट निज गेह ॥
न मिले मूढ नृपालतैं, अक्खिव कुठक्कुरें[12] एह ॥ ७७ ॥
रायमल्ल१८८।२कल्ल्यान१८८।३रन, सहँस१रु सत्तल२सत्थ ॥
दुसह लज्ज सुरतान१८९।१ हुल, परे लरे जिम पत्थ[13] ॥ ७८ ॥

१ रात्रि का युद्ध करके २ यवनों को पीड़ित किये ३ सीधे ॥ ७१ ॥ ४ राजा के ॥ ७२ ॥ ५ आदि ६ जय की इच्छावाले ॥ ७३ ॥ ७ मूर्ख ॥ ७४ ॥ ८ एकत्रित होकर. कुल के मार्ग में ९ बंद करके ॥ ७५ ॥ १० रात्रियुद्ध ११ पहिले भागा था उसी प्रकार भय पाकर भागा ॥ ७६ ॥ १२ बुरा ठाकुर (स्वामि) कहकर ॥ ७७ ॥ १३ अर्जुन के समान लड़े ॥ ७८ ॥

पूरव गोपुर बाहि प्रभु, अब वापीजुग २ आहि ॥
बंधु सहँस१सत्तल२बिहित, जगत जनावत जाहि ॥ ७९ ॥
स्वामिबिमुख होइ न सके, पिक्खहु राम२०३४नृपाल ॥
चउ४काका धारन चढे, सठ भतीजके साल ॥ ८० ॥
पहिले दुव अग्रज परे, ध्रुव चौरा तिन्ह धाम ॥
सहँस१रु सत्तल२केर सुत, कँलि ऐहैं बलि काम ॥ ८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे २ षष्ठ६राशौ वीतिहोत्र वसुधेश्वर१ बीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडऽस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनवेलाव्याहार्यर्बुदवसुधावरसुरताण १८९१ सिंहचरित्रे सुरताण १८९१ राज्याभिषेकः १, चित्तोडे रत्नसिंहसूनुदुश्चरित्रविक्रमाभिषेकः२,मंत्र्यादिभिः सुरताणबोधनेपि तत्प्रबोधाभावः३,बल्लूरेश्वरचालुक्यकन्हपुत्र्या सह सुरताणकरग्रहः४, चित्तोडे त्रिनवत्युत्तरपंचशताधिकसहस्रतमसंवत्सरेविक्रममारणपूर्वकं औजिष्यबणवीरकर्तृकराज्यग्रहणं५,बणवीरानीतिदुःखितप्रजाभिर्वर्षद्वयोत्तरं कुंभिलमेराद्राहूयोदयसिंहस्य राज्ये स्थापनं६,सुरताणकर्तृकं सहसा सात

पूर्वदिशा के शहर के १ द्वार २ बाहिर हे प्रभु रामसिंह ३ दो बावड़ियें हैं ४ बनाईहुई ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ५ बिना सन्तान ६ मन्दिर ७ युद्ध में ८ फिर ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरताणसिंह के चरित्र में सुरताण का राज्याभिषेक और चित्तोड़ के रत्नसिंह के पुत्र खोटे चरित्रवाले विक्रमादित्य का अभिषेक, मन्त्री आदि के सुरताण को समझाने पर भी उनके समझाने के अभाव से बालणोतों के पति सोलंखी कन्ह की पुत्री के साथ सुरताण का बिवाह करना, चित्तोड़ में १५९३ के सम्वत् में विक्रमादित्य को मारने पूर्वक पासवानिये बणवीर का राज्य लेना, बणवीर की राजनीति से दुःखी होकर प्रजा का दो वर्ष पीछे कुम्भलमेरसे उदयसिंह को बुलाकर राज्य स्थापन करना, सुरताण का मारने के लिये सातल को बुलाकर दो

लेत्याहूयपितृव्यद्वयापालिनिष्कासनं७, सुरताणकर्तृकस्वप्रमापणवार्ताश्रवणात्सुर्जनस्य चित्तोड़गमनम्८, सुरताणकर्तृकाणां जैतगढाधीशसिंहस्य तडागे निमज्जनोन्मज्जनानि९, स्वहितेच्छुदुःखदसुरताणं विहाय बंधुवर्गेण स्वस्वग्रामगमनडागरखाँकेसरखाँनामकयवनयोः कोटग्रहणम्१०, माँडूप्रभोर्बुन्दीक्रमणारम्भे स्वस्वग्रामेभ्य आगत्य बंधुवर्गेण सौनिकयुद्धे मांडूप्रभोः सैन्यविद्रावणम् ११, तत्र रायमल्लकल्याणमल्लसहसातलोतसुरताणपितृव्यचतुष्टयमरणम्१२, मृतावशिष्टबंधुवर्गस्य स्वस्वगृहं प्रति गमनं चेत्याख्यानयुक्तः प्रथमो१ मयूखः ॥ १ ॥ आदितश्चतुरशी१८४त्युत्तरशततमः ॥ ८४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सौराष्ट्री दोहा ॥

इत चितोर अभंग, सुर्जन १८११ जग्ग लहिये असम ॥
जिति लखपति जंग्ग, पुर तानां१ लिन्नौं प्रथम१ ॥ १ ॥
धाड़ैनपति अभिधान, जिहिं माल्हिक१ सो भिल्ल जहँ ॥
वसु लुट्टहिं बलवान, पल्ली करि तानां१ पुरहिं ॥ २ ॥
बल रानहु बहु बेर, पठयो जहँ जयलाभपर ॥

नों काकाओं को नेत्र निकालना, सुरताण की अपने मारने की वार्ता सुनने से सुरजन का चित्तोड़ जाना, मारने के लिये सुरताण का जैतगढ के पति सिंह को तालाव में डुबाने और निकालने अर्थात् गोता लगाने से अपने हित की चाहनेवाले दुखदायक सुरताण को छोड़कर बन्धुवर्ग का अपने अपने ग्रामों को जाना, डागरखां, केसरखां नामक दो यवनों का कोट को लेना, मांडू के पति का बुन्दी को घेरने के आरम्भ में अपने अपने ग्रामों से आकर बन्धुवर्ग का रणिधात देकर मांडू के पति और सेना को भगाना, तहां रायमल्ल कल्याणमल्ल का सातल सहित सुरताण के चार काकाओं का मरना, मरने से बाकी रहेहुए बन्धुवर्ग का अपने अपने घर जाने आदि की कथा सहित प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से एकसौ चौरासी १८४ मयूख हुए ॥

१ किसीसे मारा नहीं जावे ऐसा २ सम्पादन (पैदा) किया ३ भीलों के पति को ॥ १ ॥ ४ धाड़ायतिओं के पति का नाम ५ माल्या था ६ धन ७ तानापुर को पाल (भीलों की बस्ती को पाल कहते हैं) बनाकर ॥ २ ॥

जो जो रन करि जेरे, मल्लिक[1] प्रतिभंग मुकल्यो[2] ॥ ३ ॥
प्रजाविहित[3] पुकार, संसद[4] बिच जाकी सुनत ॥
बिरच्यो रान बिचार, कहहु पंच कैसी करहिं ॥ ४ ॥
इक्खत सुर्जन१८९।१ ओर[5], अर्जुन१८८।१सुत हसि उच्चरिय ॥
दब्बन दिल्लिय दोर[6], राँजैं[7] पुच्छन रावरो ॥ ५ ॥
को खल रंक किरात, त्रासक[8] दीनन तस्कर सु ॥
परैं जत्थ[9] पविपात[10] १, कहा तत्थ तृनगन २ करैं ॥ ६ ॥
महानिठुर[11] हरिमंथ[12] १, पै न समर्थ घरट्ट[13]२ पर ॥
पापी चोर१न पंथ, जोलौं लखहिं धनी२न जागि ॥ ७ ॥

पद्धतिका ॥

चित्तोरनाथ तव रन बिचार, साहनासिर मंडहिं जसप्रसार[14] ॥
कौंतर[15] किरात बत्त तु कितीक, इक्कल१सिपाह सब्बहिं इतीक ॥८॥
जो कहहु अप्प मैं अबहिं जाइ, छिति खलन गंजि लैहौं छुराइ ॥
तव रान दिपउ भुज पुज्जि तास; हत्थी१ हय२भूखन३चंद्रहास[16] ॥९॥
सेना निज दै चउसहँस४०००सत्थ, पठयो तँहँ सुर्जन१८९।१समरपत्थ[17]॥
असवार त्रिसत३००अप्पन अधीन, क्रम इम अर्जुन१८८।१सु-
त गमन कीन ॥ १० ॥
आयो जब यह बुंदी बिहाइ, पुहवीस हड्ड९१भय तबहि पाइ ॥
हम्मीर१९०।१कुमरजुत संग होइ, पूराउत१७।१३मान१८९।१हु
हित पुलोइ[18] ॥ ११ ॥

---

१ दबाकर २ पीछा भेजा ॥३॥ ३ प्रजा की की हुई पुकार ४ सभा में ॥४॥ ५ तरफ ६ दिल्ली का फैलाव दबाने के लिये आपका पूछना ७ शोभा देता है ॥ ५ ॥ दीन लोकों को ८ त्रास देनेवाला ९ जहां १० वज्र पड़ता है ॥ ६ ॥ १२ घने ११ कठोर हैं तोभी १३ घरट पर बलवान् नहीं होसक्ते ॥ ७ ॥ १४ यश फैलाता है १५ कायर ॥ १८ ॥ १६ खड्ग ॥९॥ १७ युद्ध में अर्जुन ॥ १०॥ १८ बढाकर यह हिं-

आयो तव सुर्जन१८९१ संग अत्थ, न मिल्यो पटाहु बुंदी अनत्थ[१]।
हम्मीर१९०१तनय सह तँहँ गँहीर[२], सोपँ हुव सुर्जन१८९१भीर सरि१२
अर्जुन१८८१सुव इंकिय इम अरांक, तानाँ[४]पुर वेढिय हुत तदंक[५]
दिन इक्क[१]समर तोपन दगाइ, दूजे[४]हि दिवस किय हल्लदाँइ ।१३।
निकस्यो खल्ल आवत इन्ह निहारि, भिल्ली जन्योँहु न भज्यो इभाँरि
सुर्जन१८९१को मातुल सुत सधीर, अँर[६] दीपचंद गहिलोत भीर ।१४।
यह गो सवरनाविच हय उडाइ, खल्ल बये वढत ताकोंहु खाइ[७]।
चढि जय गिरंत इम दीपचंद, सज्जहि हय हलु[८]६१न दिय असंद ।१५।
करवाल पूर१८८१३सुत मान१८८१केर, फेर्यो खल्ल मस्तक चक्र फेर
कवहीं न गिरत मल्लिक[१]किरात, जँहँ गिरे सहि६० सव भिल्लजात ॥
मल्लिक[१]के हुव रसँर[१०] होत मेल, सुर्जन१८९१वँपु[११] लग्गे मनहु सेल ॥
अर्जुन१८८१सुत तोडू हय उडाइ, खल्ल पंच५न दिन्नैँ सिर खिराइ
गिरतहि पल्लीपति[१२] विकलगात, क्रम भजिग मेर[१]भीनँ[२] किरात[३] ।
सुर्जन१८९१को जय[१]हुव सुजस[२]सत्थ, तानाँ[१]पुर जिस्यो सधन[१४] तत्थ
सो तानाँ[१] वावर[२] ग्राम संग, इहिं दियउ रान धरि जय उमंग ॥
दससहँस १०००० पटा मान १८९१९ हिं दिवाइ, मविस्यो पुर सुर्जन
१८९१ विजय पाइ ॥ १९ ॥

अप्पिय पुनि रीझि रु रान याहि, सिंधुर[१]हय[२]भूखन[३]धन[४]सराहि ॥
जित्यो इम पातोरा[२]हु जाइ, निरसेस धाटिजन हनि[१]नसाँइ[१७] ॥२०॥
दूजो रहु[ब्याह] सुर्जन१८९१उदार, चित्तोरतँहि किय विधि विचार ॥
पुर वंसवहाला नाम पत्तँ[१६], राउल जसवंतहु मिलिय पत्तँ[१८] ॥ २१ ॥

नग का शब्द है ॥११॥ १अनर्थ की बातों से २ गम्भीर ॥ १२ ॥ ३ वह भीलके फारस्य ४ हल्ला किया ॥ १३॥ ५ सिंह ६ भट (वीर) ॥१४॥ ७ भीलों में ॥१५॥ ८ नाक (नथ) फिरै जिसप्रकार ९ भीलयोन ॥ १६ ॥ १० तीर ११ शरीर में ॥ १७ ॥ १२ पाल का पति १३ भील १४ धन सहित ॥ १८ ॥ १९ ॥ १५ हाथी १६ अमाफर ॥ २० ॥ १७ जाकर १८ प्रीति से

तहँ कनकवती१८९१२कन्या[1] तदीय, सु बिवाहो सुर्जन१८९१गुन गरीय[2]
अवसर वरात चित्तोर आइ, पातोरा२सुर्जन१८९१२बहुरि पाइ ॥२२॥
भो तत्थ रान विस्वासभाजँ[3], सुनिये[4] वँ वत्त मिच्छन समाज ॥
जिम सेरखान परसजि जात, बावर३०मरयो सु हुव पुब्ब[5] वात ॥२३॥
पहिलैं बिहार१सूबा प्रधान, खल स्वामि विमुख हुव सेरखान ॥
बलि जिहिँ दबाइ रुहितास२बंग२, भो प्रबल बावर३०हिँ करन भंग[6]२४
बावर३०सजि जिहिँ सिर चलत बेर, ज्वर करि बपु छोरयो दिष्ट[7] जेर॥
तब सक रस बसु तिथि १५८६ तनयँ[9] तास, हुव साह बिदित
करि चंद्रहासँ[10] ॥ २५ ॥

जिहिँ नाम हुमायों३१[11] किन्न जेर, कौलि नत्ती इब्राहीम२९केर ॥
रेवत अधीस कैवर्त्तराजँ[12], कछु हारि सु मारयो बिजयकाज ॥ २६ ॥
गुजरात२गंजि इम सजि सयान[13], पुनि सेरखानासिर किय प्रयान ॥
विक्रम सक खट नव तिथि१५९६बिहाइ, पूरब१दिस हंकिय समय पाइ
हुत सेरखान सुनि बंगदेस, इत भेदे[14] दिल्ली भट असेस ॥

लहि धन गनिकासँम[15] जे निलज्ज, अरि तंत्र[16] भये अरि कारि कुकज्ज[17]
जिनके विसास दिल्लीस जाइ, रन बंग[18] सीम कछु दिन रचाइ ॥
मुगलेस पराभव[19] लहि महंत, आयो सुरि सह भय ससुक्कि अंत २९
खल सेरखान नय१कपट२खेल, मरहट्टन रक्खत पिहितँ[20] मेल ॥
दिल्लीस सीस जिहिँ छल उदग्गँ[21], मरहट्टे पटके भजत मग्ग ॥ ३० ॥
नदि नाम कर्मनासा निकास, तिन्ह दिय दिल्लीसहिँ पहुँचि त्रास ॥

---

१ उक्त रावल जसवन्तसिंह की कन्या गुणों में २भारी ॥२२॥ ३ विश्वासपात्र ४अब म्लेच्छों के समाज की बात सुनो ५पहिले ॥२३॥ ६नाश करने के लिये॥२४॥ ७भाग्य के ८वशमें होकर ९उसका पुत्र १०खड्ग से प्रसिद्ध हुआ ॥२५॥ ११ युद्ध में इब्राहीम के पोते को १२कैवार ॥२६॥ १३चतुर ॥२७॥ १४ अपने में मिलाए १५वेश्या के समान धन देकर १६शत्रु के अधीन होगये १७ खोटा कार्य करके ॥२८॥ १८बंगाल की सीमा में १९ पराजय ॥२९॥ २० छाने २१ उद्यम ॥३०॥

परिभव[1] लहि तत्थहु सहत पीर[2], आयो सु हुमायूँ ३१ भजि अधीर ।
जिहिँ आइ आगरा कटक जोरि, बैरिन सिर हल्ला किय बहोरि ॥
पुर कान्यकुब्ज अंकित[3] प्रदेस, बलिं हुव समीक[4] दुवरदिस बिसेस ३२
जय मुगलधराज तत्थहु न जानि, पुनि सहकुटुंब भजिबो प्रमानि ॥
दिल्ली तजि परिजनजुत[5] उदास, आयो भजि पच्छिम३ जियन आस
तहँ गर्भसहित बेगम तदीर्थ[6], ही सोहु भज्यो लै तस्त[7] हीर्य[8] ॥
सुनि पिछि लये अरि आत सीस, इहिँ सरन लयो अंजमेरईस ।३४।
पहु मालदेव तहँ छलप्रवीन, अजमेर१ आदि जिहिँ किय अधीन ॥
इहिँ राष्ट्रकूटनृप[9] पाप ऐनं[10], दिल्लीस चहिय पकराइदैन ॥ ३५ ॥
जब सोहु भेद मुगलेदस जानि, नंठो[11] निसीथे[12] मन गहन मानि ॥
कोसन सत१००संतत[13] वायु कोन६, भज्जत लख्यो न जल१अ-
न्न२श्रोन ॥ ३६ ॥
धर जंगल लंघत इम अधीर, नर१वाजि मरे बहु चहत नीर ।
तस पिछि तदपि सत्रुन तजी न, लियजाइ पल्लावत[14] थलिँन[15] लीन ३७
बाबर३०सुत तिन्ह लखि भजिबहोरि, हुव अस्तव्यस्त जन मन अहोरि
असवारबीस२०बेगम१उपेत, रहिगो सु मुगल थकि थलिन रेत३८
पहुँचे तहँ कछु अरि होत प्रात, दिल्लीस लख्यो तव वल दिखात ।
अरिनायक[16] उर दिय तीर एक१, असुहीन[17] गिरयो वह बीर एक ॥३९॥
बिनु नायक अरि हुव अस्तव्यस्त[18], तिहिँ छिद्र भज्यो पुनि मुगलध्वस्त[19]
जल कहुँन मिल्यो दिन तीन३जाहि, इमसिंधुसीम पहुँच्यो सु आहि ॥
नृप सोढा ऊमरकोट नैर, तक्यो सु सरन तिहिँ विगतवैर[20] ॥

वहाँ भी १ पराजय लेकर २ पीड़ा सहता हुआ ॥ ३१ ॥ कान्यकुब्ज से ३ जाना जावे ऐसे प्रदेश में ४ युद्ध ॥ ३२ ॥ ५ अपने लोगों सहित ॥ ३३ ॥ ६ उसकी बेगम गर्भवती थी ७ डरेहुए ८ हृदय से ॥ ३४ ॥ इस ९ राठोड़ों के राजा ने १० पाप का घर ॥ ३५ ॥ ११ भागा १२ आधी रात्रि में १३ निरन्तर ॥३६॥ १४भागताहुआ १५रेगिस्थान में ॥१७॥३८॥ १६ शत्रुओं के पति के हृदय में १७प्राणहीन होकर॥३९॥ १८ तितर बितर १९डरकर॥४०॥ २०वैर रहित

सोढा तिहिं स्वागत करि बिसेस, रक्ख्यो सु हुमायों३१।१पट्टु नरेस ।४१।
अकबर३७।१हुव बाहुल[2]मास अत्थ, सक अष्ठ अंक तिथि१५९८मिति समत्थ[3] ॥
यह जन्म जर्वन[4]ग्रंथन अधीन, आर्ज[5]नमत औ[6] हैं पुनि प्रवीन ॥४२॥
सोढा इम मुगल६हिं रक्खि सूर, दल तास अरिन लरि कियउ दूर ।
सुनि यह तँहँ सासपनाम साह, निजबल प्रगल्भ[6] ईरानेनाह ॥ ४३ ॥
दे दलँ[7] जिहिं ऊमरकोट एस, दिल्लीस बुलायो स्वीय[8] देस ।
नीरधि[9] जिम बुड्डत मिलहि नाव, सो इम बाबर३०सुत स्वस्थभाव ४४
स्व कलत्र[10]१पुत्र२परिजन[11]३समेत, ईरान गयो यह नति[12]उपेत[13] ।
इक१अब्द रह्यो पुर इस्फहान, सन्म्यों तँहँ सासप सरन मान ।४५।
नृप राम२०३।१सुनहु अब इत उदंत[14], लहि सेरखान जय नय[15] लसंत ।
अट्ठानव तिथि१५९८सक लगत अब्द, सुनि जग निज जस१जय२अभय३सब्द ॥ ४६ ॥
वह सेरखान३२प्रभुता उपेत, दिल्लीस भयो सुख सवन देत ।
सत्तानव९७उतरत अरि नसाइ, अट्ठानव९८लग्गत पट्ट आइ ॥४७॥
सुहि सेरखान हुव सेरसाह३२, अति निपुन मंत्र[16]१प्रभुता२उछाह३ ।
इम वंग[17]१उदय१दिस अटक२अस्तं२, सतपंद्रह१५००कोसन सुव सस्त ॥ ४८ ॥
करि सड़क पंथ१प्रतिकोस२कूप[20]२मसजिद३पथिकालय[21]४रूपरूप[22] ॥
॥ ४९ ॥

---

१ चतुर ॥ ४१ ॥ यहाँ पर २ कार्तिक मास में अकबर का जन्म हुआ ३ समर्थ ४ यह जन्म फारसी ग्रन्थों के मत के अनुसार है ॥ ४२ ॥ ५ आर्यों के मत से आगे कहा जावेगा ६ अपने बल से चतुर ॥ ४३ ॥ ७ पत्र देकर ८ अपने देश में ९ समुद्र में डूबते हुए को नाव मिले इसप्रकार ॥ ४४ ॥ अपनी १० स्त्री ११ अपने लोकों सहित १२ नम्रता १३ सहित ॥ ४५ ॥ इधर का १४ वृत्तान्त १५ नीति में प्रारम्भ करन हुआ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ १६ राजा की मन्त्र आदि तीनों शक्तियों में चतुर १७ बंगाले तक १८ पूर्व दिशा में और अटक नदी तक १९ पश्चिम दिशा में ॥ २० कूप २१ सराय २२ सुन्दर ॥ ४९ ॥

सत निज उपवेसक[५] बंगिजोर[६], पथिकोदन[७] सज्जा[८] इहिं प्रकार ।
पादँप[९] फलदाई पथ दुरपौंस, किय सेरसाह इम सुपन प्रकास ॥५०॥
इम मिसत ३०० कोस इत आगरा[१६], मँहूरखान किय मग चतुरचारु ।
थल थल पुर चोरँन डाक[१४] थप्पि, व्यापारिन सिर्ह्रँन अभय[१४] थप्पि ॥५१॥
संवच्छर तीन[१६] हि रहिय साह, पै प्रभु बन्यों सु सब ज्यांपँनाह ।
माकौर[१] दुर्ग[१] रसर[१] संभल[१४] पूर, कुलवैन रचे सब ठाम सूर ॥५२॥
ममदाँ[१] सिसु[१] रकित कनक पानि, जिहिँ राज्य मग्गों विच अभय जानि ।
वानिज्य करन हित नरन भाँत, जितजित निसंक दिसदिसन जात ॥
पहु सेरसाह[२] ऐसे मंताप, दिल्लीस होइ लिय जस दुराप ।
अजमेर[१] सिंधु[२] मालव[३] अधीस, गुजरात[७] भंजि तपि सबन सीस ॥५४॥
सत्रुन निहारि रनथंभ सेसँ, आयउ तिहिँ जित्तन सबल एस ॥
बेढिय गिरिनाहिर कटक बंटि, सुभ[१] अशुभ[२] दैवँ दिय तबहि संटि ॥५५॥
लिय जिति दुर्ग रनथंभ[१] लाह, स्त्र विसास तास विच धारि सिपाह ।
हो निजहँ दिल्ली चलन हार, विपरीत बन्यों भावी वर्यार ॥५६॥
ससि व्योम अहि[१६०१] सक लगत सालँ, किय दैव अचानक अँतकाल ।
बारुद्द निलँय पावक प्रवेस, दगि उडिय निकट दल उँहदेस ॥५७॥
जाहीविच दिल्लीनारि जार, छमें सेरसाह[३] रकिय निर्पति छारँ ॥
सुत ताको तब हुँ सलेमसाह[३], हुव सो हुव दिल्ली नारि नाह ॥
प्रभु गहिय अदद्द दस पुत्र्यह परंतु, अक्खि तब जितजित अरिन मंतु ॥

१ थान (जगह) देनेवाले २ मार्ग चलनेवालों को भोजन ३ शय्या ४ फल देने वाले वृक्ष ५ मार्ग के दोनों ओर ॥ ५० ॥ ६ सुन्दर ७ चोरोंकी डाक ८ स्थापन कर ९ फिरने से ॥ ५१ ॥ यह बादशाह तीन ९ वर्ष तक ही रहा १० मार्गों के रचक ११ और ॥ ५२ ॥ १२ सिरों १३ सोना [illegible] से १५ मार्गों से १४ मनुष्यों के सम ह ॥ ५३ ॥ १६ प्रताप ॥ ५४ ॥ [illegible] में रणथंभोर को १७ मार्गों देखकर १८ ऐसा [illegible] १९ [illegible] से २० [illegible] ॥ ५५ ॥ २१ [illegible] का पवन [illegible] मारा ॥ ५६ ॥ २२ सम्वत् में २३ मृत्यु हुई [illegible] के २४ घर में अग्नि पहुंचकर २५ [illegible] का देश ॥ ५७ ॥ २६ समर्थ २७ [illegible] २८ भस्म करदिया २९ जिसपीछे । ५८ ॥ ३० [illegible] ॥ ५९ ॥

याकेहि समय सुरतान१८९१ अंध, बंधुन दिय नास१ निकास २ बंध३
गज उचित स्व बपु गुरुता४ गिनी न, पटके धमकेहि इतर२ पीन ॥
कति सचिव१ हास२ तांडित कराइ, श्रुति१ नक्क२ रहित कति नीसराइ
द्विज१ आदि जनंगमें२ अंतदेस, बिनु मंतु प्रजा लुट्टिय बिसेस ॥
चुंडाउत १४।१० राघव १८९।१ पग्घ चोरि, जिहिं लिन्न बरूथनि
कुजस जोरि ॥ ६१ ॥
पग्घ हि रहै न यातैं पंपंपि, चुंडाउत १४।१० कह्यो हठन चंपि ॥
आसापूरनि अर्चन अनेह, सामंत १८७।१ हनन धारिय सनेह ।६२।
सठ जो निज बलि अज दैन सज्ज, किय ताहि सैन तस घात कज्ज
कढ्हु अज मारन जब कृपान, पहिलैं सूचितके लेहु प्रान ॥ ६३ ॥
जो छंद्म तबहि सामंत१८७।१ जानि, सुर्जनसमान१८९।१ अवधान आनि
अरु सज्जि कह्यो कुलदेवि अज्ज, अज१ थान इड्ड२ मंगत अकज्ज ६४
मैं जरठ१ ततो मृदु२ यह कुमार, है बाल बलिन परमोपहार ॥
नृपनंदन अक्खयराज१९०।१ नाम, हो तत्थ अठु८ सम बय हगाम ।६५।
सो लिय उठाइ सामंत१८७।१ सूर, दिन्नौं उतारि कढि बाह्य दूर ॥
इम बचि तजि बंसी स्व भुज आस, पहुँच्यो सामंत१८७।१ सलेम
३३।१ पास ॥ ६६ ॥
रनथंभमाँहिं तिहिं साह रक्खि, किल्लापति किन्नौं उचित अक्खि ॥

हाथी के शरीर का १ बड़प्पन नहीं देखा और केवल धमका सुनने के कारण २ अन्य ३ पुष्टों को गिराये "यह लोकोक्ति है" ४ ताड़ना युक्त करके कितनों के ही कान और नाक कटाकर निकला दिये ॥ ६० ॥ ५ चण्डालों को ६ अपने देश की सीमा में बिना अपराध प्रजाको लूटी ७ ग्राम का नाम है ॥ ६१ ॥ ८ कहकर ९ पूजन के समय ॥ ६२ ॥ अपनी ओर से बकरे को बलिदान करने को सज्जित हुआ उसी सामन्तसिंह को मारने का इशारा किया कि जब १० बकरा मारने को खड्ग निकाले तब ॥ ६३ ॥ उस ११ छल को १२ सावधान होकर ॥ ६४ ॥ मैं १३ बुड्ढा हूं. बालक की १४ बडी भेट है. अवस्था के १५ आराम में अथवा उत्सव में ॥ ६५ ॥ १६ बाहर निकाल दिया ॥ ६६ ॥

सह भट सतसप्तक७०० * पालपूर, रनथंभ रह्यो सामंत १८७।१ सूर
सक नव नभ सोलह १६०१ लगत साल, कछु †गद सलेम २३किय
ग्रास काल ॥

नंदन तदीय फीरोज३४।१नाम, ग्वालेर गयो कछु सीघ्रकाम ॥६८॥
सुनि जनकमरन फीरोज३४।१साह, ग्वालेरहि बैठो पट्टगाह ॥
आयो पितृव्य१ मातुल२ हु आहि, जग भनत मुबारकखान ३३।१
जाहि ॥ ६९ ॥

साहहिं कछु मासनमैं नसाइ, सो साह वन्यौं बैरहिं बसाइ ॥
निज रक्खि मुहम्मद३२।२ अपर४ नाम, पायो अदली३५।२पद अघ
प्रकाम ॥ ७० ॥

भानेज भंजि तस पाइ पट्ट, बच्छर१ वह्यो सु कछु घाटि कुवट्ट ॥
पहुँचत दह सोलह१६१० सक प्रमान, मिलि अरिन हन्यौं रन यह
असान ॥ ७१ ॥

तव सेरसाह३२काका तनूज, हुव साह सिकंदर३६।१प्राप्तपूज ॥
इत आकुल बुंदिपजन असेस, सुरतान१८९।१ सठहिं न चहैं नरेस
उपदोहा ॥

बुंदिय भट१ मिलि रन विविध, छन्नैं दिय इम छदन ॥
सुर्जन१८९।१इम सुरतान१८९।१सठ, करहु दूर१कै कदन२ ।७३।
इष्ट सपथ जुत लिपि उचित, सुर्जन१८९।१ ते दल सकल ॥
कहि इम दिन्नैं रान कर, निरखहु सत्य १ कि नकल२ ॥ ७४ ॥
कह्यो रान सत्य १ कि नकल २, जानैं हम १ तुम२ जबहि ॥

* पूर्ण पराक्रमवाला ॥ ६७ ॥ कुछ † रोग से सलेम को काल ने अपना ग्रास किया ॥ ६८ ॥ १ सिंहासन के स्थान में २ काका का मामा ॥ ६९ ॥ ३ मारकर ४ दूसरा नाम ५ अदली (इन्साफ करनेवाला) पद पाकर ६ पाप की ७ विशेष कामना से ॥ ७० ॥ ८ ऐक वर्ष ९ कुमार्ग चलकर १० मान रहित वा अतोल ॥ ७१ ॥ काका का ११ पुत्र १२ पूजायोग्य ॥ ७२ ॥ १३ गुप्त १४ पत्र दिया कि हे सुरजन इस मूर्ख सुरताण को दूर करो; अथवा १५ मारो ॥ ७३ ॥ इष्ट के १६ सौगन सहित वे सब १७ पत्र ॥ ७४ ॥ यह सत्य है

कटक्क खरच मंगहु कथित, सो भेजैं मिलि सबहि ॥ ७५ ॥
कुंभिलमेरुहिं लेख करि, पठयो धन मोपतिहुं ॥
तब मन्त्री वह रीति तुम, रक्खि परक्खहु रतिहु ॥ ७६ ॥
सोहि लिखी तब सुर्जन १८९।१ हु, पृतनाके व्यय प्रमित ॥
वसुं भेजहु जिम विस्वसहिं, असु रच्छक गिनि अमित ॥ ७७ ॥
बुंदी जो दल वंचितहि, प्रचुर सचिव १ भट २ पिहितं ॥
द्रव्य अयुत २०००० न हुंडी दई, सुर्जन १८।१२ के संन्निहित ॥ ७८ ॥
सुर्जन १८९।१ लहि व्यय वलु सब सु, मन्त्रि रान अनुमतिहु[12] ॥
इक्कसहस १००० दलं[13] किय असह, तहँ बुंदिय भटकतिहुं[14] । ७९ ।
आरंभिय गृह आगमन, त्वरित सज्जि भट१ तुरग२ । *
बुंदीके हरखे विविध, देस१ प्रकृति[15]२ पुर३ दुरग४ ॥ ८० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरिते चित्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहाज्ञया हड्डसुरताणस्य ताणाख्यभिल्लपल्लीं विजित्य मल्लिकाभिधभिल्लनिपातन१ दिल्लीन्द्रसम्राड्हुमायोःशे

कि नकल है सो तुम और हम जब जानें कि उन लोगों से १ फौज खरच मांगो ॥ ७५ ॥ २ मेरे पास भी धन भेजा था ३ प्रीति की परीक्षा करो ॥ ७६ ॥ ४ सेना के खरच के ५ प्रमाण ६ धन भेजो ७ विश्वास करेंगे ८ प्राणरक्षक जानकर ॥ ७७ ॥ ९ बहुत १० गुप्त. सुरजन के ११ समीप ॥ ७८ ॥ राणा की १२ सलाह मानकर १३ सेना. बुन्दी के १४ कितने ही उमराव ॥ ७९ ॥ १५ अमात्य आदि राज्य के प्रधान पुरुष ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पष्ठ राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीज हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तांत की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के राजा सुरताणसिंह के चरित्र में चित्तोड़ के स्वामी महाराणा उदयसिंह की आज्ञा से हाडा सुरताण का ताणा नामक भिल्लों के गांव को जीतकर मल्लिक नाम भील को मारना, बादशाह हुमायू का शेरखां यवन से बङ्गाल में पराजय पाकर आगरा शहर में सेना इ-

रखांपठनाद्वङ्गदेशे पराजयमवाप्यार्गलापुरे कटकमाहृत्य कान्यकुब्ज जनपदसमरे स्वविजयानिश्चयादन्तर्वत्न्या निजपत्न्या सहावाचीकाष्ठाया वायुकोणापलायनं २ वस्वङ्कबाणविधु (१५९८) वर्षस्योर्जे पारसीकेतिहासमतादमरकोटप्रदेशेऽकबरप्रादुर्भावकथनं ३ ईरानेशमासपाभिधसम्राजो दलदानेन हुमायोर्निजजनपदाकारणं शेरखांपठनस्यास्मिन्नेव शरदि शेरशाहाभिख्यया दिल्लीदङ्गपालनं ४ शेरशाहराज्यप्रशंसापूर्वकरणतभँवरदङ्गविजयानन्तरं शशिखरसविधु (१६०१) वर्षे वह्निचूर्णसद्मदहनाच्छेरशाहमरणं ५ शेरशाहसूनुफीरोजसम्राजः कतिपयमासान्तरेण तन्मातुलमुबारकशाहसाम्राज्यासादनं ६ भागिनेयहन्तृमुबारकशाहस्य शत्रुकरकर्तनं ७ शेरशाहपितृव्यपुत्रसिकन्दरस्य साम्राज्यासादनं ८ बुन्दीन्द्रसुरताणापाकरणार्थं सैन्यसंप्रेषणेन चित्रकूटाद्धड्डसुरजनाह्वाने द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥ आदितः पञ्चाशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८५ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कर के कनौज की लड़ाई में अपना विजय न दीखने से गर्भवती अपनी स्त्री के साथ पश्चिम दिशा की ओर वायुकोण में भागना, संवत् १५९८ के कार्तिक मास में पारसी तवारीखों के मत से अमरकोट में अकबर का पैदा होना. ईरान के बादशाह शाहतहमास्पशाह का फौज देकर हुमायूं को अपने देश में बुलाना और शेरखां पठान का उसी वर्ष में शेरशाह नाम से दिल्ली का राज्य करना, शेरशाह के राज्य की प्रशंसा के साथ रणतभँवर किले को फतह करने के बाद संवत् १६०१ में बारूद से अचानक जल कर शेरशाह का मरना. शेरशाह के पुत्र फीरोजशाह के कितनेक महीनों के बाद उसके मामा मुबारकशाह का बादशाहत लेना, भानजे को मारनेवाले मुबारकशाह का शत्रु के हाथ से मरना, शेरशाह के चचेरे पुत्र सिकंदर का बादशाह होना, बुन्दी के राजा सुरताण को दूर करने के लिये सेना भेज कर चित्रकूट से हाडा सुर्जन को बुलाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से एक सौ पचासीवां मयूख हुआ ॥ १८५ ॥

इक१हायन ईरान इत, सु रहि हुमायौँ३१।१ साह ।
स्वस्थं२ भयो अवलंब सुभ, लहि तँहँ मालप१साह ॥ १ ॥
तह मालप पुच्छिय तहाँ, कौन३प्रजा अरु४ कौन ।
उत्तर दिय हिंदू उहाँ, दीनं५ जुदे हम दोउ न ॥ २ ॥
साह कहिय तिनकी सुतां६, निज पुत्रन परिनाइ ।
अप्पनकरि दैभूँ७ अधिक भूमि रुपहु तरु भाइ ॥ ३ ॥
तँहँ मालप इम अक्खि तस, सैन्य अयुत१००००दिय संग ।
ताविच चउ४भट मुख्य तिन्ह, जयकारक हुव जंग ॥ ४ ॥
कंदहार१काबल२करहु, अक्खिय प्रथम अधीन ।
इम धरि दिल्लिय३पट्ट इहिं, प्रकटावहु जस पीनं९ ॥ ५ ॥
भाखि इम सु चउ४निज भटन, सह अनीकिं१० दै सत्थ ।
बाबर३०सुत सिर कौंर११ बिरचि, अक्खिय अद्धहु अत्थ ॥ ६ ॥
सो तस माहपसाहके, प्रभुपन पाइ प्रसादं१२ ।
मुरयो हुमायौँ३१।१पुत्र१सग, विजित करत प्रतिवाद१३ ॥ ७ ॥
सब भ्रातन बहिकाइ सठ, अनुज कामराँ३१।२अग्ग ।
पंजाब१रु काबल२प्रमुख, दब्बे मुलक उदग्गँ१४ ॥ ८ ॥
कामराँ३१।२रु गदरू३१।३कालहिं१५, तिमफलान३१।४ए तीन३ ॥
हद निजनिज जप साहि हुव, न्यारे लरतनलीन ॥ ९ ॥

एक १ वर्ष, मालपशाह का शुभ आधार लेकर २ स्थिर चित्तवाला हुआ ॥ १ ॥ उस मालपशाह ने पूछा कि ३ हिन्दुस्थान में प्रजा कौनसी है और उसका ४ धर्म क्या है इसके उत्तर में हुमायों ने कहा कि वहां प्रजा हिन्दू है. जिसका ५ धर्म जुदा है, परन्तु हम और वे जुदे नहीं हैं ॥ २ ॥ मालपशाह ने कहा कि उनकी ६ पुत्रियें अपने पुत्रों को व्याह कर अपने कर लो और अधिक ७ भूमि देकर जिसप्रकार भूमि में ८ जड़ जमाकर वृक्ष रुपते हैं तिस प्रकार रुपो ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ यश को ९ पुष्ट करके प्रकट करो; वा पुष्ट यश प्रकट करो ॥ ५ ॥ १० सेना साथ देकर ११ सिरताज नियत करके कहा कि आधा यहां भेजाकरो ॥ ६ ॥ १२ प्रसन्नता पाकर १३ विरोधियों को विजय करता हुआ ॥७॥ १४ उद्यम (निरंकुश) होकर ॥ ८ ॥ १५ युद्ध ॥ ९ ॥

कंदहार१काबल२कथित, पहिलै लैन प्रमानि ।
चल्यो हुमायौं३१।२जय चहत, अनुजन सिर रिस आनि ॥१०॥
तह मासप दिय संग तिन्ह, नामहु राम२०३।४नरेस ।
सुभट जउ४न जानहु सुमति, इहाँ जनश्रुति एस ॥ ११ ॥

अविषमपयोधराऽष्ट८डगणाख्यालीलावती ।

जखमी अबदुल्लाखान१प्रथम१निज बलि दूजो२बहराम२बली ।
तीजो३सु अलाउद्दीन३कउम४तिम खांनजिहाँ४किय भीर भली।
तह मासपके असवार अयुत१००००तिम पंचसहँस५०००निज कटक करे ।
इम कंदहार१काबल२पर अंगनि धुर धर भाति रनविजय धरे ।१२।
गदरू३१।३अभिधानक तास अनुज इक१भ्रातहि अग्रज१पथन परयो
मन१बचन२काय३करि सासन सिर धरि लुनतैं आरिन रन अग्ग लर्यो ।
जयसाधक जानत हुलासि हुमायौं३१।१लघु गदरू३१।३हिय लाइ लयो
हुकितौ ताकौ इन अतिमँह अप्पन अंगज अकबर१०माहिदयो ।१३।
अग्रज१जय सज्जन ताहिसमय कहुँ आयो कामहु अनुज२यहै ।
करि छिप तब चिंता साह हुमायौं३१।१कृत यत लाहा हानि कहै ।
अतिबल लखि अनुज१आइ सरन अब कामराँ३१।२हु इम मनतिकरै
गसु माफ करौ करि हेतु अग्रमपद अब तब अनुचर पयन परैं ।१४।
यौं कहन लगे आगे गो तल डेरन कामरान३१।२ सिर नाइ रह्यो ॥
इक१ गोंहीं जानत तथा अनुज व्याकुल याके दिन सु दुहूँ२ओर गयो

वलि हठसह विन्नति कामरान ३१।२करि मक्का निवेसि रु एह मस्यो
अनुजात न लग्गो चोथो ४चरनन करि रन सो गहि अंध कस्यो ।१५।
सुव कावल१आदिक लरि छद२समो लग जित्ति हुमायो ३१।२अधिप भयो
इतको धुनि आपउ दिल्लि२इव्वन लरि सग जितलित विजय लयो
सज्जित सादी३गन पंद्रह सहँस१५००० पत्ति५प्रबल बहु सहँस वढे ॥
इततें हु सिकंदर ३६।१तजि घर अंदर चल्लिय पुनि दुव२लरन चढे।१६।
सरहिंद सीस छिगघोर समँर हुव सुर७सिकंदर ३६।१ भीत भज्यो ॥
सुव जित्ति अरिन हनि आइ हुमायो ३१।१दिल्लीपद सु प्रीत सज्यो ॥
सिव सोलह१६।१२लग्गत विक्रम संगत ईजित्ति सिकंदर ३।१२जुद्ध जई
लरि इम वावर३०सुत दूजी२वेरहु अतिवल दिल्लिय जीतिलई ।१७।
पच्छो ईरान कटक सव पठयो कहत रह्यो वहराम १ किते ॥
अकवर१छत हुव वहराम२हु ओरहु जंपत इम दुव३गिनत जिते ॥
सो वहुरि खानखानाँ नवाव ताको पढ़ तातहि वहुत भनें ॥
विधि सत्य किमहु कछु होहु हैसहिँ हठ नैंक न बर्णलमात्र बनैं ।१८।
वलि इम अज्जेनसुव अकवर१ जन्महु वंधू विदित वघेलनके ॥
भजि सेरसाह ३३।१भय गर्भवती गय हुरम तहाँ विनु हेलनके ॥
हुव तत्थहि अकवर१जन्म सुहात वघेलहि मातुल कहतहुतो ॥

इस कारण मक्का में १ निवास करके मरा. चौथा २ छोटा भाई चरणों में नहीं लगा इस कारण उसको युद्ध में पकड़कर अन्धा करदिया ॥ १५ ॥ छः ३ वर्ष लड़कर ४ सम्हकर ५ सवार ६ पैदल ॥ १६ ॥ ७ युद्ध ॥ १७ ॥ ८ पिता ॥ १८ ॥ ९ आर्यावर्त में १० विना अपराध. अकबर * वघेलों को ११ मामा कहता था

* अकबर का जन्म हिजरी सन् ९४९, तारीख १४ शाबान मुताबिक विक्रमी सम्वत् १५९९ मार्गशिर शुक्ल पूर्णमासी को अमरकोट में हुआ था सो अकबर जौहर की किताब "तज़्किरतुलवाकिआत" से सिद्ध है इसमें कई फारसी तवारीखों में भी मत भेद है, परन्तु आधुनिक विद्वानों के मत से उपरोक्त लेख ही सत्य माननीय है जिसका अधिक वृत्तान्त विस्तार के भय से लिखना छोड़दिया है, परन्तु अधिक प्रमाण देखने होवें तो "अकबर के जन्म दिन में सन्देह" इस नाम की उदयपुर के कविराजा श्यामलदास की बनाई हुई किताब में देखें, यहां मामा कहने का प्रकार लिखा सो तो स्वजन्यत्व से भी होसक्ता है अर्थात् [illegible] की रानी भीमसिंह [illegible] की बेटी [illegible] थी इसकारण रीवा के राजा भीमसिंह को [illegible] मामा [illegible] ॥

सतकार अधिक करि भूप बघेलहि मन्न्यौं किम*बिनुहेतु सुतो॥१९॥
गदि इम मतभेदहु कहि गति नावहिं समुझहु संभव है सु सबै॥
है बिजई हुमायौं बेर छुमायौं३।१।२ तिम लिय दिल्लियतख्वत तबै ॥
बुंदिय भट१सचिव२न भेजि इत सधंल बुल्लिय सुर्जन१८९।२बेग बली
सो रान उदय अनुमंत लहि सत्वरं बुध नय हंकिय तेग बली ।२०।
तब नृप सुरतान१८९।१हिं ओग बिमानहिं पहुँचत थानहिं सुद्धि परी
पुच्छिय तब पंचन पिहितै प्रपंच न कारन रंच न आत अरी ॥
लिय उत्तर पंचन आत सुरथपुर रक्कादंताके दरसन ॥
जब लंघिसुरथपुर आत कहिय जड क्यौंआवत अब जंपहु जन ।
भट१सचिव२न भाखिय तात१ पितामह२थौंरन अर्चत आत यहैं ॥
करि पूजन जैहैं बहुरि न ऐहैं हित निज व्हैहै सकल कहैं ॥
जितनैं प्रभु पट्टनि चलहु नतो जन नाहक दोउ२न कोप करैं ॥
जड जड मिलि जुज्झैं बिहित न बुज्झैं प्रभु तब इत१दोउ२द्रोहपरैं
गदि इम सुरतान१९८।१हिं लै सब पट्टनि नृप जडपन जसकरन गए ॥
भट तहँ सब पासन लहि लहि सिक्ख रु भोजन कछुमिस आतभए ॥
अवसेसन अक्खिय तटिनी चम्मलि परतट बिबिध सिकार बनैं॥
चढि नाव सुनत नृप परतट चल्लिय संग न हुव तब स्वजन सनैं ।२३।
अधी तटिनी पहुँचत नृप अक्खिय भटवर आवहु क्यौं न भलैं ॥
ऐसे प्रभु बेलहि भले तिन आक्खय चलहु तुमहि हम नाहिं चलैं ॥
गिनि तब बदल सब बदंन बिगारत सिटि परतट सुरतान१८९१गयो
भूपतिके अनुसंतमैं जोजो खलजन हो सोसो संग भयो ॥ २४ ॥

* बिना कारण उनका मान क्यों बढाया ॥१९॥ इसप्रकार मतभेद । कहकर १ मन भेजकर महाराणा उदयसिंह की २ सम्मति लेकर ३ शीघ्र ॥ २० ॥ थोंगा नामक ग्राम पर आये ४ खबर हुई ५ गुप्त ६ तुच्छ शत्रु के आने का कुछ भी कारण नहीं है ।२१। ७ पिता और दादा के दग्ध स्थान पर बनेहुए स्थानों को पूजने आना है ८ मूर्ख मूर्ख मिलकर लडेंगे ९ उचित ॥२२॥ १० बाकी रहे जिन्होंने कहा ११ चामल नदी के परले किनारे ॥ २३ ॥ १२ मुख बिगाडकर १३ सलाह में ॥ २४ ॥

इत बुंदी आतहिं*राजनिलय रहि कछुदिन सुर्जन१८९।१कछु न कही
पंचम५दिन अक्खिय चंद्रावति१८६३मति।सुतगति सबन न जात सही
जंपिय पुनि पंचन सुत ढिग जावहु भूपति इम सुर्जन१८६१हिं।भज्यो
कहि इम वह कढ्ढिय पुनि तस परिजन लोक सकल हुव संग लज्यो
सहँस१रु सत्तल२सुत जँहँ विक्रमजुत पहिलैं अरि हनि उभय२परे ॥
कही सुरतान१८९।२मसूं तदनंतर क्रम परिजन सब संग करे ।
सिसु अक्खयराज१९०।१कुमार सहित लजि पुलवंधू निज संग लई ।
इम धावरं१धांई२आदि स अनुग३न सूपमसूं कढिजातभई ।२६।
बुंदी नारायन१८७।१के कुलतैं बचि कुल नरबद१८७।२सब स्वामि
करयो ॥
धरनीपति सुर्जन१८०।१सक सिय सोलह१६।१बैठि तखत हुँस
छल धरयो ।
लखि सब अनुकूल सुभट१सचिवा२दिक अर्जुन३अवधि लिय
लाइ लये ।
निजनाम पटा करि सबन निवेदि रु हलाहित कछु कछु अधिक दये२७
भ्राता भटसिंह१८९।१रु मान१८९।१रु भैरव१८९।१भीम१८८।२रु पु
र१८८।३रमोकल१८८।४मवे ।
इन्ह जैतगढ१रु हिंडोली२आप्पिय जक्खमूल३जुत दान सजवे ।
सुंडावत१४।१०रावब१८३।१साबर आहूत सुहि वरंपानि४ढंग दयो
कुंभकरन१८८।१सुत जगमाल१८९।१उजल१८६।३कुल पिप्पलादा
४पति नृपहिं भयो ॥ २८ ॥
वंसी६पुरपति सामंत१८७।२सुलावड जिहिं रनथंभ तज्यो न जई ।

* राजमहल में मरदार सुबरार ।१ कुछ भी मति पूछ क्रे कहीं नहीं जाती, इसने सुर्जन को राजा किया है २७ अपने लोक ॥ २५ ॥ जिस पीछे सुरतान की १माता को निकाली २ मैं दी बहू को ३ धाय ४ सेवकों सहित ५ राजा की माता॥२६॥ ६ ठ्रपति ७ कपट ८ सेवकों तक ९ अपने नाम के पट्टे करके सबको दिये ॥ २७ ॥ १० पुत्र ११ जीव १२ सुता ॥ २८ ॥

बिनुभुव राघव१८७।१सुत कन्ह१८८।१हिँ बिक्रिय[1] रु कोटा[2] गंजन मंत्र कियउ।
लखि, दृढ भट१सचिव२न किय तब बिन्नति रहहु अबहि नय[3]राज्य लियउ।
कन्ह१८८।१हिँ तब सुर्जन१९०।१अप्पि जयस्थल१लै दैहैं कोटा २ हु कह्यो।
पै तिहिँ बाँलिसपन[4] जंपन निजजन लेहु लरहु सुनि चपल चह्यो ३३
जुब्बंन मदकरि प्रभुसासनबिनु जँहँ सत दुव२००मेद[5]१रु सबर[6]२सजे:
ग्राम चिँपथ[7] चम्मलि उत्तर निस गय स्पृध[8] करि कोटा लैन भजे:॥
जवनन यह जानी पहुँचत पुब्बहि भट अतिमानी समुद भये।
राघव१८७।१सुत कन्ह१८८।२समेत मिलत रन भिल्ल१रु मेद२भजाइदये ॥ ३४॥
महिप सु सुनि अक्खी जैसे हैं जन१तैसे सुहृद[9]२सहाय मिलैं।
जयथल इम जंपि रु छिन्निलयो छमं[10] बहुरि न बुल्ल्यो खीजि[11] खिलैं[12]।
जब नृप चित्तोरहिँ जात जाजपुर दूजे२दिवस मुकाम कयो।
निज गुरु सिखयो[13] तँहँ एक बँनिक[14] नामि भूप सरन लहि अनुग[15] भयो ३५
नृपके कर१चरन२नरेखा निरखि रु गुरु यह भावी[16] भूप भन्यौं॥
बनिक सु नारायन१नाम२रु जाति२खटोर२सु सुनि नृप अनुग बन्यौं।
बुंदी अब आइ रु गद्दी बैठत कोबिद[17] बनिक सु सचिव[18] करयो।
तँहँ दुलहनि तीजी३चिमनकुमरि१९०।३चालुक्क सूरसुता बहुरि बरयो ॥ ३६

१ देखकर २ कोटा को विजय करने की सलाह की. आपने बुन्दी का राज्य ३ नवीन लिया है इस कारण अभी ठहरो ४ मूर्खपन से ॥३३॥ ५ कोया ६ भील ७ ग्राम का नाम है ८ युद्ध करके ॥ ३४ ॥ ९ मित्र १० समर्थ ने ११ क्रोध करके १२ बाकी. अपने गुरु का १३ सिखाया हुआ १४ बनिया (वैश्य) १५ सेवक हुआ ॥३५॥ १६राजा के चरण और हाथों की रेखा देखकर गुरु ने कहा था कि आनेवाले समय में यह राजा होवेगा १७ उस चतुर बनिये को १८ प्रधान किया ॥३६॥

सुर्जन१।१०।१के हुव चित्तौरहि हुव२सुत भूपतिपन तीजो३हु भयो ॥
दूदा१९१।१तिम भोज१९१।२रु रायमल्ल१९१।३यह नामधेय त्रिक ३ लिंक३ हि दयो ॥
क्रमतैं हुव तीन३हि रानिनके सुत तीन३हि ए रन१ दान२भूरि ॥
माननं नव९व्याह करे कैति मागध भाखत सु विदित त्रिक ३हि भूरि ॥ ३७॥
सुर्जन१९०।१अब बुंदिय हैं२हो सोदर व्याहे६व्याह लय३रु हुस२त्यौं
क्रम जे कहियत हे प्रभु राम२०३।४सुनों सब दान बड़े हुव त्यौं ॥
हुवत्यौं१ हुवत्यौं२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बरनी कछवाही सेखावति इंदुमती१८९।१अकखयराज१८९।२वरी
क्रमतें बरि तीजी३किसनकुमरि१८९।३ सिसोदनी सु बांमांग करी
नामहु करि कुंमरी१८९।४ झल्लिय चौथो४अक्खय१८९।२ निपुन लहि लालास ॥
स्वसुरहु तस अनुपम१रासल्लाहि२तिम सेरसिंह३इहिं त्रिक३लनाम
इम राम१८९।३ हु चालुक भीमसुता अजबकुमरि १८९।२ दूजे व्याह वरयो ॥
क्रम तीजी३अर्जुन कूरमकी तनया गंगा१८९।३करग्रहन कर्यो।३९।
अक्खय१८९।२के पुत्र दयालु१९०।१ उदय१९०।२रु सुगर पहिली १रहोरि जने ॥
सेखावति दूजी२के सुरतान१९०।३भयो तीजो३इम त्रय३हि भने ॥
इम तीनन३तैं जग अक्खयराज१८९।२जनन प्रकाश्यो बढि जंग जई
जो अर्जुन अक्खयराज पिता१९१।५जिंहा गुनई६क्रम१९संख्य भई ४०
वासों लघु राम१८९।३ लहे चउ४ अंगज जर्थ विजय१९०।१रहोरि १ जन्यौ ॥

१ राजा पुत्र पौत्र २ नाम ३ पण्डित ४ जिनमें ही भाटलोक नौ विवाह कहते हैं ५ बहुत प्रसिद्ध तीन ही विवाह हैं ॥ ३७ ॥ ६ रति पताई ॥ ३८ ॥ ७ विवाह ही ॥ ३९ ॥ ८ वंश ६ भेद ॥ ४० ॥ १० जहां चार पुत्र

दूजीके सुत हुव२॥सूत हठी जुतसिंह१९०।२६दोलतसिंह१९०।३अन्यौ गंगा१८९।३कछवाही तीजी३के सुत अक्खयसिंह१९०।४चउत्थ४ गयो वीसम२०इम च्यारि४नतैं हि बढ्यो कुल रास२०।१६जिहिं नाम बढ्यो सुरतान१८९।१कुमार जु अक्खय१९०।१ सूचिय कुल तस अवसर भाविकढ्यो ॥

सुरतानपउत्त२१।१७तथा इकवीसम२१विदित लु हद्द६१न भेद बढ्यो बैठो सुरतान१८९।१तखत सुर्जन१९०।१बुधधीधन तासहि छत्र धरयो पींढिन संख्या१८९।१सन नृपति नाम पर एक१ अंक इम अधिक १९०।१ परयो ॥ ४२ ॥

तनया हु भई सुर्जन१९०।१कै तीन३हु जेठी पूरकुमारि१९१।३जहाँ सो भोज१९१।२ स्वसाँ दूजी२लालकुमरि१९१।२तीजी३मदनकुमारि१९१।३ तहाँ॥

अनुजाँ हुव२जाँमि अनूढ मरी तिनकी जननी न कही तासौं ॥ सुभ गुन इम सुर्जन१९०बुंदी बैठि तप्यो सबके सिर सुखमासौं ॥४३ ॥

दोहा ॥

इत सिटाइ सुरतान१८९।१ अरु, छम्मपर्न बिनु मन छिज्जि ॥
पलटी समुभी सब प्रजा, खल दुर्बल जिम खिज्जि ॥ ४४ ॥
जननी सुत१ पत्नी२ जुत सु, सब निज वस लै सत्थ ॥
पहुँची पुरतट पुत्रपँहँ, जठरहिं निंदत जत्थ ॥ ४५ ॥
मनकरि१भुव इच्छत कुमति, विक्रम करि२ सु बिगोइ ॥
गज१हु बैठि न सकै गरुव, हयारूढ कब होइ ॥ ४६ ॥

---

* हुए । कहा ॥ ४१ ॥ १ समय पर २ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा सुरजन सुरताणसिंह के पाटपर बैठा ॥ ४२ ॥ ३ भोज की बहिन ४ दोनों छोटी ५ बहिन ६ बिना विवाही मरीं ७ परम शोभा से ॥ ४३ ॥ ८ बिना समर्थपन के ॥ ४४ ॥ ९ अपने पेट की निन्दा करतीहुई ॥ ४५ ॥ १० पराक्रम से खोईहुई भूमि को वह मूर्ख मन से चाहता रहा ११ शरीर से मोटा होने के कारण हाथी पर भी नहीं बैठ सक्ता था सो घोड़े पर सवार कैसे होवे ॥४६ ॥

चंद्राउति दुर्मन चविय[1], रे कुपुत्र अब रोइ ॥
हमरी सिक्ख गिनी न हित, लै फल बीजहिं बोइ ॥ ४७ ॥
खिज्जि तिम्हहि सोलंखिनी, रानी कहिय कुराज[2] ॥
अप्प गजानन[3] तुंद यह, कित भरिहो अँसु[4] काज ॥ ४८ ॥
अब तुमकों मरनों उचित, कुंडीहारहि बेग ॥
अतिबल[5] मैं न सहैं इभहुं[6], तव कहते मम तेग ॥ ४९ ॥
छुरिरावँ[7] जिमजिम स्वजन, इनइन काहि जस पाहि ॥
पट्ट तिमतिम छिज्ज्यो परैं, किसकिस सहैं काहि ॥ ५० ॥
मुख बिगारि कुंडीलहिय, परतट[8] इन पछिताइ ॥
सु तांकि अंसु खिच्चि१३न सरन, पत्तो[9] तहँ दुख पाइ ॥ ५१ ॥
बिफल कोप ऐसो कुबुध, करत सुन्यों नन कोहु ॥
गदत सिक्ख जिहिं अरि गिनी, जननी१ अरु तिय२ जोहु ॥ ५२ ॥
जाइ मऊ पुर हड्ड६१ जिहिं, रायमल्ल नरराय ॥
प्रभु किन्नों खिच्ची१३ प्रथित[10], कुंजर[11] भर गुरुकाय[12] ॥ ५३ ॥
पुर बरोदको परगनों, सुरतान१८९हिं दै सूर ॥
रायमल्ल तहँ रक्खयो, दायिटर्यो[13] लखि दूर ॥ ५४ ॥
जवनन कोटा लिन्न जब, परतट सेस[14] प्रदेस ॥
दब्बे खिच्चि१३न तिन दिनन, बिन्नु रविमल्ल१८८१ बलेस[15] ॥५५॥
पहिलैं छिन्नि बरोदपुर, अब पच्छो तिहिं अप्पि ॥
खिच्ची३१ रक्खिय हड्ड६१ खल, थल निबाहमित[16] थप्पि ॥५६॥

१ उदास मनसे कहा ॥ ४७ ॥ २ हे खोटा राजा आप इस ३. गणेश के समान पेट को ४ आंसू के लिये कहां भरोगे ॥४८॥ तुम कहते थे कि मैं ५ बड़ा बलवान् हूं, सो मेरा खड्ग ६ हाथी भी सहन नहीं करसक्ता ॥ ४९ ॥ ७ अपने लोक ज्यों ज्यों छोड़ते थे ॥५०॥ ८ चांबल नदी के पार. खीचियों को भाई जानकर उनके शरण ९ गया ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० प्रसिद्ध स्वामि किया ११ हाथी के बराबर १२ बड़े शरीर वाले उस सुरताण ने ॥ ५३ ॥ १३ अपना दायभाग छूटा हुआ देखकर ॥५४॥ चांबल के पैले किनारे का १४ बाकी का प्रदेश १५ आडावळा नामक पर्वत के पति सूर्यमल्ल बिना ॥५५॥ १६ निर्वाह के लायिक छोटा स्थल देकर ॥५६॥

निवसथ जो है नाँपता, निकट नंदना[1] नाम ॥
चंद्राउतिके और रु चंउ४, गेल इतर[2] है ग्राम ॥ ५७ ॥
तँहँ जननी सुरतान१८०१३ की, बापी१ रुचिर बनाइ ॥
विरची ढिग वर वाटिका[3], जे जस अवहु जनाइ ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराजअस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरित्रे ईरानदेशाधीशमालपसम्राजा ईरानदेशस्थितहुमायुसम्राजं प्रति तत्पुत्राणामार्यपुत्रीभिः सह पाणिग्रहणशिक्षाकरणम् १ ईरानदेशाधीशसाहाय्येन पुनरार्यावर्त्तागतहुमायुसम्राजः काबुलसीमाविजये सिकन्दरयवनं विजित्य दिल्लीसिंहासनारोहणम् २ आर्यलोकमतानुसारेणाकबरजन्मप्रवचनम् ३ बुन्दीन्द्ररावसुरताणसिंहपलायने सुरजनस्वामित्वलाभेन बुन्दीराज्यस्य नारायणदासकुलसंपर्कपरित्यागात् तदनुजनरपदकुलसंपर्कीकरणम् ४ बुंदीन्द्रसुरजनस्य बन्धुवर्गेभ्यः सामन्तादिभ्यश्च निजनामाङ्कितग्रामाधिपत्यप्रतिपादकपत्रप्रदानेन तद्विश्वासनम् ५ अर्जुनसूनुविवाहपुरःसरसंतानकथनम् ६ बुंदीराज्यच्यु

१ आज २ अन्य ग्राम उसके साथ हैं ॥ ५७ ॥ ३ बाग ॥ ५८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के षष्ठ राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीज हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तांत की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के राजा सुरताणसिंह के चरित्र में ईरान देश के बादशाह मालप का ईरान देश में स्थित हुमायूं को उसके पुत्रों को आर्यों की कन्याओं के साथ विवाह करने की शिक्षा देना, ईरान के बादशाह की सहायता से फिर आर्यावर्त में आयेहुए हुमायूं को काबुल की सरहद फतह कर, सिकंदर बादशाह को जीतकर दिल्ली के तख्त पर बैठना, आर्यलोकों के मतानुसार अकबर के जन्म का कथन, बुन्दी के राव सुरताणसिंह के भागने पर सुरजन के स्वामित्व पाने से बुन्दी के राज्य का नारायणदास के कुल का संबंध छुड़ाकर उसके छोटे भाई नरपद के कुल में जाना, बुन्दी के राजा सुरजन का बन्धुवर्ग और सामन्त आदि को अपने नाम की मुहर लगाकर पट्टे लिख देने से विश्वास उत्पन्न करना, अर्जुन के पुत्र के विवाह के सा

तसुरताणस्य सऊराजखिज्रिरायमल्लाश्रयणाभणनं तृतीयो मयूखः॥३॥
आदितः षडशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८६ ॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

साह हुमायूँ ३।१।१ इत सबल, पुनि लहि दिल्लिपट्ट ॥
तह प्रासप*उपदेस तब, लिंधि चिंत्यो नयबट्ट ॥ १ ॥
आँमेरे भगवंतकी, कन्या हीरकुमारि ॥
ब्याहन लंगी अकबर३।७।४हिं, धर१ धन२ देबो धारि ॥ २ ॥
कूरम्मनृप भगवंत किय, आराधन इनकोंहि ॥
बाबर३।०तैं अवलौं बजैं, सासन साधक सोहि ॥ ३ ॥
बदिय साह तासौं बिहसि, दुहिता तुम नृप देहु ॥
ब्याहौ अब हमरेहु बनि, लाभ धरा१धन२लेहु ॥ ४ ॥
मिरजापद अबतैं तुमहिं, दुर्लभ यह हम देत ॥
संबंधी बनि दै सुता, हमरो पिक्खहु हेत ॥ ५ ॥
सजातीय हमरे सकल, सौरैं पंति न मोहि ॥
तनया लेहु भनैंहिं तो, इम अक्खिय नृप ओंहि ॥ ६ ॥

षट्पात् ॥

कहिय हुमायूँ ३।१।१ कोन प्रति नृप तुमहिं प्रतारहिं ॥
काल संतुँ को करहिं लोहिं टारक सो हारहिं ॥

धं संतान का कथन, दुल्ही के राज्य के खारिज हुए सुरताण का सऊ के राजा खीजी रायमल्ल के शरण जाने का कहने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥ और आदि से एक सौ छियासी मयूख हुए ॥ १८६ ॥

* बादशाह हुमायूँ को ईरान के बादशाह आसफ ने आर्यों की पुत्रियों से विवाह करने का उपदेश दिया था उसको स्मरण किया १ नीति के मार्ग से ॥ १ ॥ २ आमेर के राजा भगवन्तदास की ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३ हमारी जातिवाले (क्षत्रिय) ४ पंक्ति बाहिर नहीं करैं ५ आश्चर्य है ॥ ६ ॥ ६ हे राजा! तुमको पंक्ति के बाहिर कौन निकालेगा ७ काल का अपराध कौन करेगा ८ टालनेवाला होवेगा सो ही हारेगा

तच्छु लखि नृप कातिक हुते मनि कागति धारि ॥
गिरजानृप इममाँहिं कहिय इन लिन्हु लोभ करि ॥
भगवंतनृप आमेरइन-हरिकुमारि तनया लइहि ॥
अधिराज सुगनजुत अकबर१७०४हि ब्याहीं निर्भय बिरोध बहि ।७।

तदहि १ घटहि २ अन्त्यानुप्रास: ॥ ३ ॥

दोहा ॥

कुमर हुतो भगवंतकैं, धरत नाम १ मानसिंहान ॥
अकबर१७०४२ लाजक दोवहं, बानक ब्याह दिवान ॥ ८ ॥
आमेर १ नृपन जवनन धरैं, तुरकिन ब्याहन पंथ ॥
पायो नृप सूरज प्रथम२, लोक नुकस मिलि अंथ ॥ ९ ॥
किले कहत फूलादु पहुँन, पुनिता कहुँ काँहु तान ॥
पै निर्लेस लिखित२ न सकत२, है मसानकरि हानि ॥ १० ॥

दोहा ॥

छिदित रीति मुजरा १ छि बहु, सूचिय प्रथम १ असेस ॥
पै हुव बोरन अजपन, असह रीति अब एस ॥ १२ ॥
इम बिबाहि सुत अकबर३७।१हिं, कूरमभूप कनी सु ।
करत राज्य मासहि कछुक, वत्त जु चरम२ बनी सु ॥ १३ ॥
पुस्तकगृह३ अट्टालपर४, अटत इकदिन एह ।
बैठि स्वस्थ हुव श्रमित बलि, इत हुव संझअनेह ॥ १४ ॥
सीघ्र अचानक तिहिंसमय, बंगिकार६ दिय बंगि ।
आसा डिगिगय उठतहि, भर७ परि तहँ कछु भंगि ॥ १५ ॥
झेला डिगतहि अंग झुकि, उलटिपरयो भुव आइ ।
तजिय हुमायौं३७।१साह तनु, प्रबल कालगति पाइ ॥ १६ ॥
सिव सोलह१६।११मित लगत सक, पुनि लिय दिल्लिय टप ।
या१६।११हि बरसके उत्तरत, इम परि मृत चाढि अट्ट ॥ १७ ॥
वय बिताइ बारह१२बरस, तनुभव८ अकबर३७।१तास ।
बरस तेरहम१३पहु बन्यो, ससि सितपक्ख९प्रकास ॥ १८ ॥
गनित हुमायौं३१।१नाम गत, आत अंक इकतीस३१ ।
सेर३७।१अभंति पीछैं सततै१०, इहाँ पंच५हुव ईस११ ॥ १९ ॥
अकबर३१।१के अभिधान१२ इम, संख्या हुव सैंतीस३७ ।
इक रजिपा१३५न गिनी इहाँ, नरहि गिनैं अवनीस ॥ २० ॥

के पास रहना, इत्यादिक विधि से उनका वह कथन, बगल (एक ओर) में रहता है अर्थात् टलजाता है ॥ ११ ॥ प्रथम मिलाप में मुजरा करना आदि सम्पूर्ण रीति की सूचना पहिले की गई है परन्तु आश्चर्यपन को १ डुबोनेवाली असह रीति यह अब हुई ॥ १२ ॥ २ अन्तिम वार्ता हुई ॥ १३ ॥ ३ पुस्तकालय (लाइब्रेरी) की ४ छत पर एक दिन यह बादशाह फिरता था ५ सन्ध्या समय हुआ ॥ १४ ॥ ६ निमाज की अर्जा देनेवाले ने अर्जा दी ७ भार पड़ने से आशा (सहारे का काष्ठ) डिग कर टूटगया ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ८ पुत्र ९ स्वामि बना ॥ १८ ॥ १० शेरशाह आदि ११ निरन्तर ॥ १९ ॥ इसकारण १२ अकबर के नाम पर सैंतीस की संख्या आती है १३ हे राजा रामसिंह यहां पुरुष बाद-

बयस१कुरि सिसुसम२बैठतहिँ, लाति१करि वुद्ध समान२।
राज्य सम्हारयो न्यायरत्त, अकबर३७।२गुनन अमान ॥२१॥

हरिगीतम् ॥

इत भूप सुर्जन१९०।१बैठि बुंदिय अंतराय दुर२अब्दकैं।
कोटा बसी करिके अनीकि सज्यो नकीवन सब्दकैं।
सक सक्करी खट इक्क१६१४लग्गत भूप हद्द९ान संकम्यौ।
जबतैं सु ग्राम चिघट्ट लंघि रु बंद्व जुज्झनपैं जम्यौ ॥ २२ ॥
अभिधानसिंह१८९।१रु सान१८९।२भैरव१८९।१सत्य अर्थन अंकये।
त्रय३ही पितृव्यतनूज भ्रात हरोल निर्भय इंकये।
नरबद१८८।१तनूभव भ्रात नरहरि१८९।१ईस खटपुर कोइतैं।
नगराज१८८।१नंदन जो चंदधनि२ईस राघव१८९।१हू जितैं।२३।
पुनि कुंभ१८८।१अंगज संगही जगमाल१८९।१पिप्पलदा३पती।
नवग्राम४नाह दलेल१८८।१सुत जगमाल १८९।१अंग महामती।
ब सदारि५सासक मेव१८७।१कूतुत लाल१८८।१सुत जयपैं बढ्यो।
सामंत१८७।१सुत बलकर्ण१८८।१बंसिसद्धपाइ प्रसिद्ध धी पढ्यो।२४।
गैनोलि७सासक रामसाहि१८८।१सु पुत्र पर्वत१८८।१को गज्यो।
संग्रामप्रिय जुज्झार१८८।१सुत संग्राम१८९।१ठिक्कर८पालि सज्यो।
जिम लाडपुर९पति भरत१८७।१नंदन कित्तिसिंह१८८।१बढ्यो जई।
लगि चाव पित्थल१८६।१अनघड़ा१०पति गंग१८८।१सुत बग्गा१६ लई२५

शाह हुए सो ही गिने हैं रजिया नामक एक स्त्री पादशाह हुई सो नहीं गिनी ॥ २० ॥ १ अवस्था से बालक के समान और २ बुद्धि से वृद्धों के समान ३ न्याय में रत होकर ४ अतोल ॥ २१ ॥ ५ देवी ६ वर्ष अर्थात् दो वर्ष के अन्तर से ७ सेना ८ नकीबों के शब्द से ९ युद्ध करने के मार्ग पर जमा ॥ २२ ॥ १० अपने नामों के अक्षरों के अर्थ सत्य करनेवाले या अपने नामों को सत्य अर्थ से चिन्ह युक्त किये "यहां अङ्क शब्द अक्षरार्थ वाची है जैसे ब्रह्मा के अङ्क कहते हैं" ११ काका के बेटे भाई १२ फार्सी भाषा में आगे को हरोल और पीछे को चन्दोल कहते हैं १३ पुत्र ॥ २३ ॥ १४ पुत्र १५ श्रेष्ठ रीति अथवा अपनी कुल परम्परा ॥२४॥ १६ डिंगल भाषा में घोड़ा दौड़ाने को बाग उठाना अथवा बागलेना कहते हैं ॥ २५ ॥

खज्जूरि१ सासक खेम१८८।२सुत भरतेस१८९।२दास१८९।२हु-
आत यौं ।
जज्जाउरा२ अधिप भीम१८७।१सुत हरिसिंह१८८।१गब्बर्ते जात यौं ।
हडू१८७।२कुलाधिपै लाकव१८९।२सुत ऊम्मी३ इस भीम १९०।१
बली हुतो
हम्मीर१८९।२नंदन हत्थ१८९।२कुल संग्राम१९०।१खिन्न४पती
सुतो ॥ २६ ॥
पुनि सोहनोसरप्रताप१८६।२देव१८८।२तनूज वच्छोला५पती ।
तेजल१८९।२सुत हरि१९०।२नेमडा६धिप घुग्घुलोत्तरतनी तेती ।
इत्यादि भ्रात गनैं सनाभि७सगोत्र८अल्पहु उप्फनें ।
परसगोत्र९जे भट भग्ग क्षत्रिय जोध सौं तिनके जनैं ॥२७॥
छुंदीस १०क्षत्रिय सव पिट्ठि यौं इतके प्रवीर कहे नवी ।
सहिपाल हुंम्महि नीति निच्छनपैं इतौ करि हुक्कली ।
रविमल्ल१८८।२भरतहि सून्य ग्रू सुरतान१८९।१बाल बिचारिकैं ॥
ताके प्रमोद दई तुम्हैं सु छत्तीस२६हायनं हारिकैं ॥ २८ ॥
अब साहि११ जागिय प्रान लै तुम जोर भग्गहु अज्जहीं ।
करनौं १२ ईसीकि ततो विलंब न होउ सस्तुह कज्जहीं ।
सुनिं एह केसरखान१डागरखान२हँकिय सन्मुहे ।
छनैं ज्यों १३ भुजंगन होत सन्मुह मंत्रवादिन पैं छुहे ॥ २९ ॥
रन भू मसानौं आसतैं दिसं पुब्ब कोस१४मित रही ।
पलं फेरमिले तहँ तेग उन्नाट वेग छैर दिग्गंतै दही ।
इक्कइसाम १५ क्षत्रियमुज्जैं रज सौकि इप्परहु धक्कयो ।

१ अर्थ करता हुआ २ कुल का स्वामि ३ खीच्या नामक ग्राम का पति ॥२६॥
४ निवासी ५पंक्ति ६ हरिव्ही ॥२७॥ ७ पहिले ही ८ सूर्यमल्ल के मरने से ९
बालस्य अथवा अन्नमना के कारण १० छत्तीस वर्ष पर्यन्त ॥२८॥ ११ अब साह-
हुकार जगा है सो तुम भोर भागो १२ युद्ध करना है तो १३ कार्य्य सर्पों के
समान १४ स्पर्श किया ॥२९॥ १५ एक कोस १६ अजय नामक सारथि से एक

धरनी मचक्कत धक्क लगि नागेस को नत नक्कभो ॥ ३० ॥
पलचर[2]१भैरव२जुग्गिनी३सिव४सक्ति५नारद६पाहुँने ।
लघु[3] आइ इच्छित पाइ वाह कहैं नहैं सिर लै लुँने ।
वचिवो नवंछत जवन जे झटकेनमैं झटके झुके ।
[6]कटकेसलौं वटके वनावत रंगमैं भट के रुके ॥ ३१ ॥
नृपके चमूपति मान१८९।१भ्रात तुरंग सम्मुह नक्खयो ॥
किय रुंड केसरखान१सिर तस चिल्ह१गिद्ध२न चक्खयो ॥
असि झारि डागर२मानके सिर मान१८९।१के सिर एकही ॥
करि रुंड तिहिं निजभ्रातलौं वलकी कथा खल के कही ।३२।
भिरि सीसहीन हु मान१८९।१ कछुखिन भानँ ज्यौं हनतोभयो ॥
गैनालिसासक रामसाहि१८८।१सराहि डागर२पैं गयो ॥
दुवखीर जुत रहि दाव कै झटके परस्पर दै झरे ॥
वर अच्छरी दुलहीन डागर१रामसाहि२उभे२वरे ॥ ३३ ॥
मिहराव मिच्छ भतीज ह्वाँ वढि घोर संगर मंडयो ॥
भट स्वीय१भग्गत थंभि गन परकीय२खग्गन खंडयो ॥
जज्जाउराधिप भीम१८७।१सुत हरिसिंह१८८।१कौं हनि मिच्छजो ॥
अधिराज सोदर राम१८९।३पैं गय अप्प प्रान अनिच्छ जो ।३४।
जिहिं कुंतैं मारिय सत्रुपैं सहि सो खिजे वढि संभरी ॥
करवालदे अरिकंधरा धरतैं जुदी लैरतैं करी ॥

पहर पर्यंत रथ रोकने को सूर्य ने कहा. शेषनाग की १ नासिका झुकगई ॥३०॥ २ मांस खानेवाले ३ शीघ्र आकर ४ कटेहुए मस्तकों को लेकर ५ शीघ्रताकरके खड्गों के प्रहार से ६ सेनापति नर्क ७ टुकड़े करतेहुए युद्ध में ८ कितने ही वीर रुके ॥ ३१ ॥ ९ मानसिंहके मस्तक पर धमण्ड के साथ एक खड्ग मारा ॥३२॥ १० जिसप्रकार पेंत सहित मारे तिस प्रकार मारता रहा ११ खड्ग ॥ ३३ ॥ १२ शत्रुओं के वीरों को १३ जज्जावर के पति १४ अपने प्राण की इच्छा नहीं करनेवाला ॥ ३४ ॥ १५ भाला १६ खड्ग के प्रहार से १७ कन्ध (गरदन) १८ छहते

मिहरावश्रुंड हि मारि आसि सामंत१८७१सुत सिव१८८६संहरयो ॥
वल्लकर्ण१८८९तँहँ तस बंधु काय कबंधको सुॐद्विरधा करयो ।३५॥
हुवसूसर गुलामनवी४इतँ वाढि भूप सुर्जन१९०१कै दये ॥
तिहिँवेर तुरकन मानलोभ तक्यो न गंजतही गये ॥
नृपभ्रात अक्खय१८९१मारि†तोमर हाँ गुलामनवी४हन्यों ॥
वढि अग्ग मारि रहीम५कौं जयथंभ बुंदियको वन्यों ॥ ३६ ॥
प्रभु राम२०३१४मिच्छन यौं प्रबंध हुतो न जीवत हारिहैं ॥
पर भूप सुर्जन१९०१भाग्य सुरूप१हनैं रु खिल्ल२अव पारिहैं ।
भट सेस जवनन देस छोरि रहीम३तुट्टतही भजे ॥
कोटापुरी पहुँचे रु जित्तन सूर सुर्जन१९०१के सजे ॥ ३७ ॥
ततकाल पत्तन पैठि हड्ड६१न जुज्झि सत्रु हने तहाँ ।
जवनेस डागर२भ्रात रोग असाध्यतैंहु जुरयो तहाँ ॥
सालारगाजी२नाम जो तजिमंच सम्मुह संक्रम्यों ॥
दल फार हड्ड६१न द्वार पूगत खग्ग१हड्डन२लै दम्यों ॥ ३८ ॥
तस भ्रात१भट२गन रोगबिलु तजि जुद्ध बाहिर ज्यों जुरयो ॥
सहँरोग तिनसन सो१००गुनों यह३वाग्ता रन अंकुरयो ॥
असि झारि कीरतिसिंह१८८१टोप रु मारि खट६भट सो मरयो ।
तस नाम अज्जहु द्वार बज्जत जत्थ जो भवनें तरयो ॥ ३९ ॥
सालारगाजिय३पारि संभर सत्रुगन खिल्ल संहरयो ॥
कोटा सु अब्द छवीस२६तैं गते गंजि अप्पन यों सुरयो ॥

[illegible] ॥ ३५ ॥ † घाव(?)भाला मारकर ॥ ३६ ॥ १ इ[illegible] २ परन्तु ३ पार्वती के छिनको अब मारेगा ४ बाकी के यवन ॥ ३७ ॥ ५ सम्मुख चला. हाडों की सेना का समूह द्वारपर पहुंचे ही खड्ग और ६ रोग के कारण अपने शरीर के [illegible] पार्वती के थे जिनको तलवार मारे ॥ ३८ ॥ ७ रोग सहित था तो भी उन [illegible] से सोगुना ८ युद्ध में [illegible] ९ [illegible] भी जिसके नाम द्वार प्रसिद्ध है १० संसार को तिरा ॥ ३९ ॥ ११ [illegible] १२ [illegible]

तहँ मान१८९।१सिव१८८।६,८हरि१८८।१रामताहि१,८८।१स्वजा-
त ए चउ४लुट्टये ॥
असगोल वेर भट अट्ठ८के अरु छोह लोहन छुट्टये ॥ ४० ॥
पहिलैं त्रिविक्रम१स्वामिसौं रन ठानि सैंगर ज्यौं पर्यो ॥
इहिँ मंतु तस सुत सोहु बंधन गाम धाम सु उत्तर्यो ॥
सैंगर प्रताप२तथापि ताकिय सरन भूप सुभांड१८६।४ही ॥
महिपाल लखि इम सुद्ध पुनि ताकीहि ताहि दई मही ॥ ४१ ॥
उही१मही२अन्त्यानुप्रासः १॥
जुग२घाय बावर३०जुवनैं लरि दीप३तास तनैं लहे ॥
सुत तास इहिँ रन स्याम४।१वपु तजि स्वर्गके सुख संग्रहे ॥
प्रतिहार मल्हन२स्यामजुत सोलंखि सिव सुत मेन३त्यौं ॥
हरि४कछवाँसरबाडिया तनै दहिया प्रतापज हेम५त्यौं ॥ ४२ ॥
तोमर सुमेरु६प्रतापनंदन कन्हरत्न तनै नरू७ ॥
बलराजपुत्र प्रमार त्यौं वसुदेव ८ बुंदिय बाहरू ॥
नरू १ हरू २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
असगोत्र अठ्ठ ८हि साँटि ए सब मिच्छ सुर्जन१९०।१ संहरे ॥
जिम भ्रात चउ४ असगोत्र पंचक५ पिंड धारनमैं जरे ॥ ४३ ॥
नृपआदि त्रिक३ सहजात दुव दुवर इक१ छतं क्रम निब्बह्यो ॥
लरि घाय इक१ सामंत१८७केर कुमार१बलकर्ण१८८।१।४हु लह्यो
असगोत्र वीरनमैं सुजान १ कुबेर२केसरि ३अगनी ॥
अमरेस ४ संकर ५ घाय पाइ हनी सु मिच्छनकी अनी ॥४४॥
मृधे ज्यौं मरे नृप जात बुंदिय मिच्छ सौं सबही मरे ॥

---

१ मारेगये २ अंष्ट वीरों के ३ प्राण शस्त्रों से गये ॥ ४० ॥ ४ इस अपराध से ५उसकी भूमि पीछी उसी को दी ॥ ४१ ॥ ६ प्रतापसिंह का पुत्र ॥ २४॥ ७ सहायक ८ पदले में देकर ॥ ४३ ॥ ९ सगेभाई १० पावों का एक ला माल निबाहा ११ यवनों की सेना को मारी ॥ ४४ ॥ १२ युद्ध से बुन्दी जाने के समय ज्यों बुन्दी के राजा मरे त्यों कोटा जाने के समय सब म्लेच्छमरे

कोठा १ लि परवस प्रांत लांते निसान निज वजतेकरे ॥
इम जुब्बि जिल्लि १३ प जौं लाई पर श्रो सवै छर आनिकैं ॥
सूरसैं नरपति रामसहर प्रसादियलुं तव सालिकैं ॥ ४५ ॥
खिल किय अर्जीन पर्वलु नंद १८७।१।१३ किरिसिंह १८८।१।२ इहाँ खिरे
घट वीर बलि अजमोल नाम अरुंद दावनमैं किरे ॥
ताहि पै मल २ सन प्रांत पच्छिम हुड ६१ केलि बिनै ताहो ॥
रनमल्ल पायल यस दुदिप आप उन्छनतैं रह्यो ॥ ४६ ॥
इस१ नाम आपि रुमान१८९।१ तुलादुल्वीर१९०।१ [illegible]तिहित आदरयो ॥
जन्म रामसाहि१८८।१ तनूज यालिदन बाढेसान१८९।१ पली कह्यो ॥
हरिसिंह१८८।१ तोग्रिर राम[illegible]१८८।१ हमनोद दै हिय लाइकैं ॥
पवि किरिसिंह१८८।१ तनूज करन१८९।१ हि अनिघै नाण बजाइकैं ४७
म सवारिकै वघरोव१८७।१ के सुत लाल१८९।१ तैं हिल बिनतयो ॥
पवि करा१८८।१।१ नंदसव१८६।१।२ अंबादि बापल डुँडरयौं हितलैंवरयो
तिन्द थान१ मान बढाय सुर्जन१९०।१ सुत यौं सबैं तप्यो ॥
अरे जंत नरेसन देलदेसन रक्खि सेसन चौंलप्यो ॥ ४८ ॥
कछुकाल अकबर३७।१ पट्ट बैठतही व्यतीत इतैं करयो ॥
तैंहि हेम२८ उसरंज३ अग्रवाल अभीष्ट छिद्र नवी तरयो ॥
बहुँरान१ गुरुजुत काहि अकबर३७।१।२ नप्प अोरसैं बली ॥
यहि पट्ट दिल्लियको लह्यो अब कोन मिच्छनकौं गली ॥ ४९ ॥
इम जाति बनिक३ हु साह ह्वै नरनाह२ अैजनकौं हसैं ॥

---

१ कोटा के भाला[illegible] के अन्त तक अपने नगारे बजाये २ [illegible] ॥ ४५ ॥ ३ [illegible] के ४ [illegible] ५ जिनके [illegible] मालूम नहीं हैं वे [illegible] सामों की शाखाओं में जानिये ६ [illegible] ॥ ४६ ॥ ७ आद र करके ॥ ४७ ॥ ८ [illegible] को [illegible] में [illegible] ९ इसके व- श को १० कहा ॥ ४८ ॥ ११ हेमू [illegible] १२ अपने [illegible] १३ [illegible] के समय में बलात्कार हुआ ॥ ४९ ॥ हेमू बनिया [illegible] भी बादशाह होकर १४ आदि

विधिजोग¹ अब जय छोरि यह तजि भीरु बीरनमैं बसैं ॥
धरि दर्प यौं वह हेम३८ ऊरुज३ भोग विलसनमैं धस्यो ॥
दुव२जुद्ध जित्ति सतद्रु³पार उतारि मुगलद्दन उल्लस्यो⁴ ॥ ५० ॥
जिहिं लखि प्रमत्त रु मुगल६ इत लाहोर पुनि जयकौं जुरे ॥
घन थट्ट संचय बंब⁵ बहुविध जंगपैं जिनके घुरे ॥
जउ⁶ हेम३८ बानिज३ अग्रवाल सु भोगमैं प्रविसै न जो ॥
तैमूर२२को कुलतंतु इक्क१हु अत्थ दै रहिबै नतो ॥ ५१ ॥
पै बनिक३ दुर्लभ राज्य पाइ प्रमत्त भोगनमैं परयो ॥
बिधि एह पिक्खि रु बनिक झखपर⁷ जाल मुगलद्दन बिस्तरयो
सब स्वीयजुत बहराम१ मत इत साह अकबर३७१सज्यो ॥
दल दाव बानिज हेम३८ पै बढि वेग मुगलद्दन व्हाँ⁸ दयो॥५२॥
सुनि साह१आवत साहजूर जयलाह सम्मुह संक्रमैं ॥
जुग२आत अभिमुख जंगयौं इम रंग पानीपथ जमैं⁹ ॥
रचि जुद्ध तोपन अग्ग होतहि खग्गमैं¹⁰ न रुकेरहे ॥
बल¹¹१हेति¹² २मूल¹³१कला२रु तोल¹⁴१तुलाँ२त्थ्था इतके बहे ॥५३॥
उतके प्रवीर कजाँक¹⁵ मुगलद्दन बानिक३बल बढि अंगम्यौं¹⁶ ॥
बपुरो सु बिक्रयकार¹⁷ बढत सोर बिक्रयको भ्रम्यौं¹⁸ ॥
बाजार गब्बनहार¹⁹ कूटछंइल्ल²⁰ संचय बिक्खरयो ॥
करि हेम३८बनिक३हि कैद मुगलद्दन भेट अकबर३७१की करयो

राजाओं को हसता है १ ब्रह्मा के योग से अर्थात् भाग्य से २ उत्साह ३ शतद्रुनदी के पार मुगलों को उतार कर ४ बढा ॥ ५० ॥ ५ नगारे ६ वह मूर्ख हेमू बनिया भोग भोगने में नहीं लगता तो तैमूर के वंश का एकतन्तु भी यहां नहीं रहनेदेता ॥ ५१ ॥ ७ बनियां रूपी मच्छी पर ॥ ५२ ॥ ८ वह हेमू नामक बनियां बादशाह को आया सुनकर जय लेने के लिये सन्मुख चला ९ सन्मुख पानीपथ में युद्ध जंचा १० तरवारों में ११ सेना १२ शस्त्र १३मूल और ब्याज (सूद) १४ तराजू ॥ ५३ ॥ १५ युद्ध करनेवाले १६ पकड़ा अथवा काबू में किया १७ बिचारा बेचनेवाला घेरने का शोर सुनकर १८ बेचने को भूलगया १९ बाजार में गर्व करनेवाला २० झूठे छैले का सन्चय बिखरगया ॥ ५४ ॥

हनतो न अकबर३७।१ ताहि पैं बहराम१ गुरु* असु दै हन्यौं ॥
बलि आइ दिल्लिय† गाह नाह सु साह अकबर ३७ही बन्यौं ॥
रनथंभमैं पहिलैं रहे भट सेरसाह ३२।१ सलेम ३३।१ के ॥
अब राज्य अकबर३७।१के सम्हारत भीति धारत अकबेके।५५।
मके१बके२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गढईसँ वह सामंत १८७।१हड्डहि एक१तिन्ह सरनौंगह्यो ॥
चलचित्तकैं सरनौं१न भाइपलाइ उब्बरनौं२चह्यो ॥
किय बिन्नती तुम दुर्गरक्खहु हमहिं जीवत कड्ढिकैं ॥
बलको धनी सु नतो ब अकबर३७।१दै हमैं पहु बड्ढिकैं॥५६॥
मन्नी सु सुनि सामंत१८७।१संत न मोहि दुर्ग यहै मिलैं ॥
गुरु ग्राम सुर्जन१९०।१भूपबिनु बनि साह सुर्जनको गिलैं ॥
दल भूपप्रति यह चिंतिकै सामंत१८७।१अतिहितसौं दयो ॥
गढ अप्प रक्खहु आइ होत नतोब मिच्छनकैं गयो ॥ ५७ ॥
दोहा ॥
हतपुब्बहि सुर्जन१९०।१अधिप, ब्याहे दुव२सुत बीर ॥
बल्लनोत बनबीरकी, सुता उभय बिधि सीर ॥ ५८ ॥
पुब्ब निहारहु राम२०३।४प्रभु, रुचित हुती यह रीति ॥
सुब्बकुलहि इक सोधते, न धन१धरा२ दृग नीति ॥ ५९ ॥
ग्रामनपति ब्याही गिनि रु, भूमिपतिन छतँ भूप ॥
क्रिय सुत दूदा१९१।१भोज१९१।२के, उपयम जगरअभिरूप।६०।

अकबर उस हेमू को नहीं मारता परन्तु अकबर के उस्ताद बहराम ने *चित्त देकर अथवा ताप देकर " यहां असु के स्थान में 'असि' होना संभव है जिसका अर्थ 'गुरु बहराम ने तलवार की देकर मारा यह है" मारा फिर दिल्ली के † स्थान (फारसी भाषा में स्थान जगह को 'गाह' कहते हैं) में आकर अकबर ही बादशाह हुआ १ घबराए ॥ ५५ ॥ २ किल्लापति ३ भागकर ॥ ५६ ॥ ४पत्र ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५ यह रीति अच्छी लगती थी ६ भूमि और धन पर दृष्टि नहीं देते थे ॥ ५९ ॥ ७ राजाओं के होतेहुए भी ८ विवाह ९ सुन्दर ॥ ६० ॥

जेठी लच्छी नाम जुन, दूजी लाडिय उदार ॥
राजकुमरि छोटी वरिय, भोजकुमर जस भार ॥ ६१ ॥
दुर्जनसल्ल मवीरहड, व्याहन संझिधि[1] येर ॥
सीमा पुर सीसोरकी, धावे गोधन घेर ॥ ६२ ॥
तीर प्रगंड[2] हत्थतलर, सहि दुवर दुर्जनसल्ल ॥
कुमर छुराये सो निकर[3], हनि सिल्लन करि हल्ल ॥ ६३ ॥
धीर हनें बहु धाहिर्धर[4], बिनुसिर इहिं रनबीच ॥
तुलाराम किय जस अतुल, द्विजन[5] व्यास दाधीच ॥ ६४ ॥
पीछैं धरि उपनाह[6]पट्ट, कर जोरयो कुमरेस ॥
प्रथित[7] चालुक्किन इम परनि आयो साहुज एस ॥ ६५ ॥
कंकनडोरन[8] पुव्व किय, पीछैं वह[9] करपट्ट ॥
दूजा बरस वय, द्विजय लये दुलवट्ट ॥ ६६ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बीतिहोत्रवसुधेश्वरबीजप्राख्यानबीजहट्टाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याघ्रार्यबुन्दीन्द्रपार्थिवसुरताणसिंहचरित्रे दिल्लीन्द्रहुमायुंसुताजो मासपोपदेशेनाम्बेरराजकूर्मभगवंतसिंहपुत्र्या स्वसुताकब्बरपाणिग्रहणसंपादन१ आर्यपुत्रीभिः स-

॥ ६१ ॥ १ विवाह के दीप के समय में ॥ ६२ ॥ २ कलाई (कुहनी के ऊपर का भाग) और हथेली पर दो बाण खाकर ३ गौओं के समूह को छुड़ाया ॥ ६३ ॥ ४ धाड़ायतियों का. इस युद्ध में धीर के बिना मस्तक होकर बहुतों को मारे जिसका अत्यन्त यश दाधीच वंश के ५ ब्राह्मण तुलाराम ने किया अर्थात् उसने इस युद्ध का काव्य रचा ॥ ६४ ॥ ६ पाटा (घाव मिटाने का उपचार) बांधकर कुमर ने हथलेवा जोड़ा ७ प्रसिद्ध ॥ ६५ ॥ ८ कंकणडोरड़ा पहिले खोला और ९ घाव के पाटे को पीछे खोला ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीच हट्टाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तान्त की व्याख्या में चौहान बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में दिल्ली के बादशाह हुमायूं का ईरान के बादशाह तामसप के उपदेश से आमेर के राजा भगवन्तसिंह कछवाहे की पुत्री से अपने पुत्र अकब्बर का विवाह करना,

हास्य यवनप्रथमपाणिग्रहणावसरस्य समर्थनं २ पुस्तकालयाट्टप-तितहुमायुमरणोऽकबरसाम्राज्यासादनं ३ बुन्दीन्द्रसुरजनस्य केशरखानडागखानविजयनेन कोटाराज्यस्य पुनर्बुन्दीराज्यसंमिश्रणं ४ अग्रवालवंश्यहेमूवैश्यस्य मुगलयवनान् शतद्रूपरतीरमुत्तार्य दिल्ली-सिंहासनारोहणं ५ पानीपथसमरबद्धहेमूवैश्यस्य बहरामविहितवधेऽ-कबरस्य दिल्लीपतित्वासादनं ६ बुन्दीन्द्रसुरजनज्येष्ठसुतदुर्जनसालस्य गोग्रहणयुद्धक्षतावस्थायां पाणिग्रहणकथनं चतुर्थो मयूखः ॥४॥

आदितः सप्ताशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम ग्रामनपति-अंगजा, पुत्तजुग २ हि परिनाइ ॥
सुता नृपन सुर्जन१६०।१ समय, अब ब्याहहिं अधिकाइ ॥ १ ॥
इक्खहु पै प्रभु राम२०३।४पह, सिसु बय दुर्जन१९१।१ सल्ल ॥
सत्रह सोलह१६१७ सकसमय, बढ्यो बिजय मृध मल्ल ॥२॥
रायमल्ल१९१।३ सिसुतर रहत, इम यह अबहि अनूढ ॥
वयग्यारह११नव९क्रम वरस, बुध भ्राता जुग२ब्यूढ ॥ ३ ॥

आर्यों की पुत्रियों का यवनों से विवाह होने के इस प्रथम अवसर का समर्थन करना, पुस्तकालय की छत के ऊपर से गिरकर हुमायुं की मृत्यु और अकबर के बादशाह होने का कथन, बुन्दी के राजा सुरजन का केशरखान और डागरखान को जीतकर कोटा को फिर बुन्दी के राज्य में मिलाना, हेमू नामक अगरवाला वंश के वैश्य का मुगलों को शतद्रु नदी के पार उतार कर दिल्ली का बादशाह होना, पानीपथ के युद्ध में पकड़े हुए हेमू को बहराम के मारने पीछे अकबर का दिल्लीश होना, बुन्दी के पति सुरजन के बड़े पुत्र दुर्जनसाल का गौओं को छुडाने के युद्ध में घायल अवस्था में विवाह करने की कथा का चौथा मयूख समाप्त हुआ ॥४। और आदि से एकसौ सत्यासी मयूख हुए ॥ १८७ ॥

१ ग्रामों के ठाकुरों की पुत्रियां २ दोनों पुत्रों को ब्याहकर ॥ १ ॥ ३ युद्ध करनेवाला मल्ल ॥ २ ॥ ४ विना विवाह ५ विवाहे ॥ ३ ॥

कियअक्खय१८९।२सोदर कुमति[1], आगेस तब अवनीस ॥
इम दिय इक१नवताड़[2] इहिं, तजि पट्टनि१ मुख तीस ३०[3] ॥४॥
बुंदीपति बनिबे बिमति[4], यह रनथंभ उदंत[5] ॥
दिय दिल्लिय किय जोहिट्ढ, मत सुर्जन१९०।१सामंत १८७।१ ॥५॥
सांधिबिग्रहिक[6] सचिवसुत, हो दिल्लिय तब हेम ॥
लहि पिहिंत सु अक्खय१८९।१ लिखित, पठयो तिहिं पति प्रेम ॥६॥
लै पट्टनिसुख छर्द सु लिखि, अक्खय१८९।२ सोदर अंत्थ[9] ॥
अप्पिय नृप नवताड़ इक१, तजि बिसासपन तत्थ ॥ ७ ॥
दुर्‍यो[10] निलयकोनें[11] सु दुमेन[12], लै अक्खय१८९।२यह लज्ज ॥
मर्‍यो अरहि[13] न दिखाइ मुख, खावन न लहि अखज्ज[14] ॥ ८ ॥
तस पत्निन जेठो तनय, पट्टु दयालु१९०।१ खिन पाइ ॥
पटक्यो बुंदिय नृप पयन, प्रमुदित[15] नियंत[16] पढाइ ॥ ९ ॥
पट्टनि तदपि दई न पहु, इत१ चउ४ ग्रामहिं अप्पि ॥
सालहरा१ तारज्ज२ सह, थिर पर[17]तट दिय थप्पि ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

चिंतिय नृप नयचतुर[18] पुनिहु जिन राम१८९।३ पलाट्टिय ॥
इतर[19] बंधुकुल अयनें[20] खोइ नृपपन कै खट्टिय ॥
इम अकबर३७।१आतंक[21]गंजि नभ दृग सोलह१६२०सम ॥
अस्व खर्ब[22] आरूढ़[23]पत्ति चउसत४००बिसास प्रेम[24] ॥
लै भूप अद्रिसिर छन्न लहु[25] पहुँचन द्रुत[26] करवाइ पथ ॥
रनथंभ प्रविसि अद्धी२ रजनि वे लिय जवन बिसासि अथ ॥ ११ ॥

---

१ अपराध २ ग्राम का नाम है ३ पाटण आदि तीस ग्राम छोडकर ॥ ४ ॥ ४ मूर्ख ५ वृत्तान्त ॥ ५ ॥ ६ सन्धि और विग्रह करनेवाला ७ छाने ॥ ६ ॥ ८ पत्र ९ यहां ॥७॥ १० छिपा ११ घरके कोने में १२ उदास १३ शीघ्र ही १४ अभक्ष्य नहीं खाया ॥ ८ ॥ १५ प्रसन्न मन से १६ निश्चय ॥ ९ ॥ १७ चामल नदी के परले किनारे ॥ १० ॥ १८ नीति चतुर १९ अन्य २० बन्धु कुल का घर २१ अकबर के भय को दबाकर २२ छोटे घोड़े पर चढकर २३ चार सौ पैदल २४ परम विश्वासवाले के साथ २५ शीघ्र २६ शीघ्र ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

दुर्गअधिप सामंत १८७।१ हढ, जवन हुते बस जास ॥
तिन जुत मुख्य अजीम तिन्ह, प्रनम्यों[1] तँहँ पहुपास ॥ १२ ॥
अक्खिय बिन्नति अगहि अग[2], निजभुव हमहिं निकासि ॥
अहँ[3] कछु रक्खि रु लखि अभय, भेजहु घर हितँ[4]भासि ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिन्ह सुर्जन१९०।१ तब कहिं अगहि अग मग[5] निज आश्रय ॥
ऊमरथूनाँ अत्थदये छिपिरहन महासँय[6] ॥
इक्क१ बरसलग अवधि[7] निखिल रक्खे तँहँ निर्भय ॥
पुनि अवसर तिन्ह पर्त्त्य[8] पिहित[9] पठये जनाइ जय ॥
मिलि तेहु सिकंदर३६।१कुल मुदित जानतहुव अब आँहि[10] जिय ॥
गहि इत नरेस रनथंभगढ क्रम प्रसन्न सामंत१८७।१किय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

गहिय भूप मम गेह गढ, थित जोलौं रनथंभ ॥
किल्लापति सामंत १८७।१ कुल, थिर तोलौं पनथंभ[11] ॥ १५ ॥
इम सामंतहिं तँहँ अधिप, अप्पि दुर्ग अधिकार ॥
लखि संचित सम्मद लह्यो सत्र जुज्झन संभार[12] ॥ १६ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूप सकल भंडार खुल्लि संचय पिक्खन खिनं[13] ।
अतसी[14]१कोद्दव[15]२आदि अन्न निरखे हद्ड६१न इनं ॥
तैल१मधु२रु सन तूँल२गंजवारूद१रु गोलन२ ॥
संभृतवत्थ१रु सत्थ२मुहुर१रूप्पय२कितेहि मन ॥

---

१ नमस्कार किया (झुका) ॥ १२ ॥ पहिले ही विनंति की २ पर्वत अर्थात् इस रणतभँवर के पर्वत से हमको बुन्दी की भूमि में निकालकर वहां ३ कुछ दिन रखकर ४ हित का प्रकाश करके घर भेजा॥ १३ ॥ तब सुरजन ने उन को पर्वत के मार्ग से वृक्षों में अपना आश्रय देकर निकाल दिया ५ महाशय ने ६ एकवर्ष पर्यंत ७ सबको रक्खे ८ घर ९ छाने भेज १० हैं ॥ १४ ॥ ११ प्रतिज्ञा का धर्म ॥ १५ ॥ १२ युद्ध करने की सामग्री देखकर ॥१६॥ १३ देखने के समय १४ अलसी (धान्य विशेष) १५ कोदूँ (धान्य विशेष) १६ हाडों के राजा ने १७ रूई १८ भरेहुए.

कनकादि[1] धातु३अघटित[2] सकल इति[3]मुख चिरतन१नव्य२अब ॥
गुड़१आज्य[4]२लवन३पशु४खाद्यगन[5] सुमन[6]१जवा२दिक धान्य सब १७

दोहा ॥

सोरा१गंधक२शाल३सह, इम नाना उपहार[7] ॥
निजगढ कोस खुलाइनृप, देखे अखिल उदार ॥ १८ ॥
अतसी संभृत कोस इक१, देख्यो ताबिच दोइ२ ॥
कर्मन[9] विष्णुप्रतिमा कढी, हद्द६१लई नर्त होइ ॥ १९ ॥
प्रतिमा जे बुंदीपुरहि, पुनिभेजहिँ महिपाल ॥
मन्निय मोद गिनाइ गढ, त्रिसत३००नौलि[11]चउ४ताल ॥२०॥

वेताल ॥

चहुवानराज डुराइ, चामर थान लिय रनथंभ ॥
सुनि ओद[12]के चहुँ४ओर सात्रव[13] आनि सत्व अचंभ[14] ॥
सामंत१८७११कों करि दुर्गसासक स्वीय सो गढ साज्जि ॥
दिल्लीस चित्त खटक्कि दब्बिय ग्राम चउसत४००गज्जि ॥२१॥
बुंदी१रु पट्टनि२तव दये सुत दुजनसल्ल१९१।१हिं सूर ॥
पुनि द्वै२हि दिय लकखेरि१ खटपुर२भोज१९१।२हित वसुपूर[15] ॥
सिसु रायमल्ल१९१।३हिं त्यौंहि अप्पि पल्हायथ१रु मंगोद२॥
रनथंभअप्प बली रह्यो करि स्वीय भुव चहुँ४कोद[16] ॥ २२ ॥

---

१ स्वर्ण आदि २ विना घड़ीहुई ३ इत्यादि बहुत समय की थी और अब नवीन ४ घृत ५ पशुओं के खाने के पदार्थ ६ गेहूं ॥ १७ ॥ ७ नाना प्रकार की सामग्री ॥ १८ ॥ ८ अलसी धान्य से भराहुआ भण्डार देखा जिसमें विष्णु भगवान् की ९ सुन्दर दो मूर्तियां निकली १० झूककर ॥ १९ ॥ ११ तोपें ॥ २० ॥ १२ डर १३ शत्रु १४ पराक्रम से ॥ * आश्चर्य करके ॥ २१ ॥ १५ धनसे पूर्ण १६ चारों दिशा

---

* मेवाड़ के इतिहास में रणतभँवर का गढ चित्तोड़ के आश्रित होना लिखकर राव सुरजन को उसका क़िलेदार करना लिखा है यही वार्ता कर्नल टॉडने "टॉडराजस्थान" मे भी लिखा है और महाराणा रत्नसिंह के समय रणतभँवर चित्तोड़ के आधीन था जिसकी साक्षी तुजकबाबरी से भी होती है राव सुर्जनने अपने लाभ करके महाराणा का यह गढ अकबर को देदिया जिसकी निन्दा टॉडराजस्थान में बहुत लिखी है।

सुत भोज१९१।१खटपुर बास कारि तब किय स्वदेस सम्हारि।
पगि प्रीति अग्रजसौं मिले बुंदीहु कबहु पधारि ॥
ही बल्लनोति जु भोज१९१।२की कुमरानि रूपविहीन ॥
निज भ्रू हु इक्क१न ही सु कज्जलकी रचैं सु नवीन ॥ २३ ॥
बहिनी बडी ढिग जो रहैं तिहिं लेन खटपुर बुल्लि ॥
बुंदीहु आइ रु जाइ बलि तिय मैंन हिय हित तुल्लि ।
भनि इक्क रत्ति प्रजावती बुंदीहि रक्खहिँ भोज१९१।२ ॥
आधान रत्न१९२।१कुमारको रहिहै तबहि अति ओज।२४।
सूचकन सूचित सूचना सुनि साह सुर्जन१९०।१सीस ॥
चढि दुर्ग जित्तन चिंतयो इहिं, आक्खि बुंदियईस ॥॥
इहिबीच बत्त सुनी अचानक दुसह काठिय दोरि ॥
गुजरात हाकिम गर्वगंजत वित्त देस बिलोरि ॥ २५ ॥
भगवंत तब आमेरभूपति पुब्ब तत्थ पठाइ ॥
बहुरचो सुन्यौं बढतोहि बिग्रह नेर अहम्मद नाइ ॥
पठयो सु मानकुमार तस पुनि सहँसदस१००००दल सत्थ।
सुत आत सुनि आरिसीसही तसँ तात रुकिगय तत्थ ॥ २६ ॥
मिलिकैंपिता१सुत२द्वै२तहँ मद मंद कठिनँ मारि ॥
गुजरातहाकिमपैं लगाइ मुरे परस्मर्थ गारि ॥
करजोरि हाकिम मानकुमर सु रक्खयो कछुकाज ॥
चित्तोर चिंतिय रानतैं मिलिबोहि कूरमराज ॥ २७ ॥
इहिँआत सुनतहि रान उदयहु प्रांत बंधु पठाइ ॥

की भूमि को अपनी करके ॥ २२ ॥ १ बिना रूपवाली २ एक भौंह नहीं था सो काजल का बनाती थी ॥ २३ ॥ ३ भोजाई कथन करके भोज को अंकराणि बूंदी में रक्खेगी ४ गर्भ ५ बडा प्रतापी ॥ २४ ॥ ६ सूचना करनेवालों की कीहुई सूचना ७ काठी लोग दौड़कर गुजरात के हाकिम का घमण्ड मिटाते हैं ८ मथकर ॥ २५ ॥ ९ आमेर के राजा भगवन्तसिंह के पुत्र मानसिंह की १० उस मानसिंह का पिता ॥ २६ ॥ ११ दुर्लभ काठियों का घमंड मारकर १२ यहुओं का गर्व मिटाकर ॥ २७ ॥ १३ महाराणा उदयसिंह ने सीमा तरफ अपने भाईको

पहुगम्य सीमहु आइ प्रविसत अप्प गो अलसाइ ॥
निज रीतिपथ मिलि डेरहि नृपचित्तोर आये चाहि ॥
प्रविसाइ डेरन कुम्म पहु गय रान हित अवगाहि ॥ २८ ॥
तिहिँजाइ दुर्ग बिसेस स्वागत दै कही गुरु ताहि ॥
जे लै गये तिन्ह तत्थ जंपिय अप्प गौरव आहि ॥
हमरे नरेस कह्यो बडोदिन आत कूरम अज्ज ॥
तुमहूबिचारि सु प्रीति लक्खहु यों रहैं सम अज्ज ॥ २९ ॥

रमअज्ज१समअज्ज२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

महिपाल उदय कहाइ दिय तुमकों बडे नृप मानि ॥
बल ईस अकबर३७।३तैं बचावहु अप्प इत हित आनि ॥
सुनि एह हुव भगवंतके कटि पोथ फुल्ल समान ॥
रतिकौं दिखाइ कह्यो बडे निजधर्म रच्छक रान ॥ ३० ॥
तनया दई अपनी सु बिधि लकि चाह मन्निय चित्त ।
सीसोदहू अब दैन संतति मोहि मन्नत मित्त ॥
इम जानि रान निकेत जाइ रु कुल बडे कछवाह ।
एकांत आक्खिय हमहु हेरत चित्तसौं हितचाह ॥ ३१ ॥
सुनि रान उत्तर ना दयो कछु जोध बोधक सोधि ।
बढती कही भगवंत त्यौंहि गिनी महत्व प्रबोधि ।

भेजा और वह राजा भी १ जब जाने योग्य सीमा में पहुँचा तब आप २ आलस्य करके गया अर्थात् बादशाहों के संबंधी होने से अग्रगामिता उत्साह पूर्वक नहीं की ३ कछवाहे राजा को डेरों में पहुंचाकर ४ हित का थाह लेकर ॥ २८ ॥ ५ आये का आदर करने की सामग्री देकर अपने मनुष्यों को भेजे जिनने जाकर कहा कि आप बडे हैं और हमारे राजा (महाराणा) ने कहा है कि ६ कछवाहे के आने से ७ आज बडा दिन हुआ ८ बराबर आर्यपन ॥ २९ ॥ ९ नितंब फूल गये "घमण्ड पूर्वक प्रसन्न होने में यह लोकोक्ति है" १० प्रीति दिखाकर ॥ ३० ॥ भगवंतदास ने जाना कि मैंने मेरी पुत्री बादशाह को विवाही जिसकी चित्त में चाहना करके राणा भी अपना संतान बादशाह को देना चाहता है ११ राणा के घर में जाकर ॥ ३१ ॥ १२ कुछ उमराव समझा देवेंगे यह जानकर राणा ने उत्तर नहीं दिया १३ बडप्पन जना

सह असनं[2] खिन पुनि कुम्मं अक्खिय रान बैठहु सत्थ ॥
तब उदय जंपियै[3] अज्ज मम व्रत इक्क१भोजन तत्थ ॥ ३२ ॥
भगवंत भाखिय भो[4]नभो व्रत इक्क१छोरहु अप्प ॥
इत रानके भट सु सुनि बुल्लिय रक्खि निज कुल दप्प[5]।
तुम संग भोजन हमहु न करहिं दूर रान उदंत[6] ॥
दिल्लीसकौं दुहितां[7] बिबाहतहो[8] बडे कुल हंत ॥ ३३ ॥
देखो इहाँ असगोत्र[9] सुभटनं रान पुत्रिय देत।
हमहू नदेहैं अप्पघरं[10] अब जानि मुगलन हेत ॥
यह सुनत कूरम छिज्जि मन खिजि छोरि भोजन उट्ठि।
चलतैं[11] चंवी इत मान आवहिं तिहिं न सूत्रहु तुट्ठि[12]॥ ३४ ॥
चवि एह कूरम रुट्ठिगो प्रतिकूल[13] गिनि चित्तोर।
जिहिंसंक अज्जनखंड[14] सो लखि हो ब अकबर३७१२जोर ॥
कछवाह नृप इम ठानि गो इन्ह दर्प नासन कज्ज।
सुत तास मानहु सोहि सुनि मिलिबेहि आयउ सज्ज ॥३५॥
भगवंततैं जुहि बत्त हुव सुहि मान सुनि मद भार।

कर २ साथ भोजन करने के समय कछवाहे ने, राणा से कहा कि शामिल बैठो ३ उदयसिंह ने कहा कि आज मुझको एकासना है ॥ ३२ ॥ ४ भगवन्तसिंहने कहा कि अेकव्रत हुआ न हुआ इससे अेकव्रत को छोडदो ५ अपने कुल का दर्प (घमंड) रखकर ६ राणा के भोजन करने का वृत्तान्त तो दूर रहा हम भी आपके शामिल भोजन नहीं करते ७ पुत्री ८ खेद है ॥ ३३ ॥ ९ असगोत्र उमराओं को १० आपके घर में हम भी पुत्री नहीं देवेंगे ११ चलते समय कही १२ इस बात से प्रसन्न होकर ॥ ३४ ॥ १३ चित्तोड़ को विरुद्ध जानकर १४ आर्य्यावर्त पर जिसका भय है तिस अकबर का जोर अब देखोगे ॥ ३५ ॥ जो वार्ता भगवन्तसिंह से हुई वही भगवन्तसिंह के पुत्र * मानसिंह से हुई सो

---

* यह कथा महाराणा प्रतापसिंह के समय की है उदयसिंह के साथ इस कथा का होना भ्रम से लिखाजाना प्रतीत होता है, उदयपुर से तीन कोश के अन्तर पर पूर्व दिशा में उदयसागर नामक तालाव की पाल पर यह वार्ता हुई थी अर्थात् सम्वत् १६३० के प्रथम आषाढ में महाराणा प्रतापसिंह और आमेर के कुमर मानसिंह से भोजन के कारण विरस हुआ जिसकी कथा जयसिंहचरित्र नामक जयपुर के इतिहास में भी लिखा है और अकबरनामे में भी इसकी साक्षी है, और टाडराजस्थान, व मेवाड़ के इतिहास में तो विस्तार पूर्वक है।

तुमरी कनी जवनी करौं इम उट्ठिगो कहि तार[2] ॥
सुनि रान बीर गये मनावन मानकुमरहिं सुद्ध ।
तोहू न मन्नि कुमार गो तिम करन अकबर३७।१क्रुद्ध ॥ ३६ ॥
मिलि बप्प१सुत२जुग२वंधि अक्खिय साह प्रति अतिमान ।
रनथंभकौं तजि पुब्ब कंटक बेग दब्बहु रान ॥
सुनि स्वसु१साल२बत्त अकबर३७।१है बली तिन्हसंग ।
चित्तोर गंजन रुट्ठि चल्लिय चक्कलै[3] चतु४रंग ॥ ३७ ॥
सुरतान१८९।१तोपनसंग दै लक्खरिमग गय साह ।
तिहिं मूढ चिंतिय साह तोपन लैन बुंदिय लाह ॥
जिहिं बाम सुरि भगवंतगढ सन दूर सुर्जन१९०।१जानि ।
दल[४] देसको कपतानकौं दिय लोभ परधन दानि ॥ ३८ ॥
सब तोप बाम मुराइ इम कपतान१सुत सुरतान२ ।
अतिलोभ बुंदिय लैन आयउ मन्नि नृपपन[5] मान ।
हो राम१८६।३सुर्जन१९०।२ भ्रात बुंदिय सोहु तच्छल[6] हेरि ।
सब हड्ड६१ लै रु भिरयो समीं धिय रत्ति खग्गन खेरि ॥ ३९ ॥
तँहँ सो सक्यो न सम्हारि तुंदहु[8] रत्तिरनं[9] सुरतान१८९।१ ।
सठ निट्ठिनिट्ठि घंसीटि तोपन भज्जिगो बिनु भान[10] ॥
पहिलैं१८७।१ जु मेव गुढा बसायउ तत्थ जाइ परंत ।
वह राम१८९।३ तत्थहु गो अचानक हंक्कि हड्ड६१न हंत ॥ ४० ॥
दूजो[7] दयो रतिवाह पुनि तँहँ जाइ राम१८९।३ उदार ।
सुरतान १ सह कपतान २ भजिगय छोरि सब संभार[11] ॥

सुनकर १ तुम्हारी पुत्री को मुसलमानी करूंगा इसप्रकार २ उच्चस्वर से कहकर उठगया ॥ ३६ ॥ ३ चतुरङ्गिणी सेना लेकर ॥ ३७ ॥ ४ कप्तान को आधा देश देने का लोभ देकर सुरताणसिंह ने पीछी बुन्दी लेना चाहा ॥ ३८ ॥ ५ राजापन का मान करके ६ उस वा उसके छल को देखकर ७ युद्ध में रात्रि के समय ॥ ३९ ॥ ८ वह सुरताणसिंह बडे पेट को नहीं सम्हाल सका ९ रात्रि के युद्ध में १० विना ज्ञान ॥ ४० ॥ ११ सब सामान छोडकर

पहिलैं१ समीधिय लुट्टि लिय बिज्जुतोप कछु वसु व्रात३ ॥
दूजैं२ गुढा रतिवाह देत भज्यो सब तजि भ्रात ॥ ४१ ॥
सुरतान१तैं कपतान २ हू खिजि भिन्न भो तजि संधि ॥
बलकेर तोपन आदि सब वसु राम१८९।३ लिय जय बंधि ॥
वृखँ४ तोप१ सकटर२न जोरि जवनन लुट्टि वैभव वीर ॥
धरि अग्ग राम१८९।३ सबै लिवायसु पैल५ बुंदिय धीर ॥ ४२ ॥
सुरतान २ ओ कपतान२ खिजि उत होइ सत्रुसमान ॥
अतिनेह बंटन रंग लग्गिय माँहिं माँहिं अमान ॥
कपतान१ अक्खिय मूढ तव मत६ मन्नि मैं हुव क्रूर ॥
सुरतान२ अक्खिय जित्तिआवहिं अबहु अप्पन सूर ॥ ४३ ॥
उत होत भ्भ्क्ट७ राम १८९।३ इत सब लुट्टि बुंदिय आइ ॥
भट मुख्य बुल्लि रु बुल्लयो करतव्य९ को अब भाइ ॥
तिन कहिय अकबर३७।१ की चमूसनँ१० प्रान लैं लिय तोप ।
कैलि११ जित्ति तिन्ह उपहार इतरहु लै लये अतिकोप ॥ ४४ ॥
सुरतान१८९।१ मान हरयो जु अप्पन सो न सहि सुलतान१२ ॥
मुरिआइहैं चित्तोर तजि इत ग्रसन अप्पनमान ॥
जवनेस अग्ग कितीक बुंदिय कोन अप्पन जोर ।
मुरि आइ लरि सुरतान१८६।१कौं पुनि करहिं हड्ड६१न मोर१३।४५।
नरनाह है रनथंभ ईंम१४ हम तुमहिं गिनि नरनाह ।
सुभ कहत न गिनहु अप्प जय प्रभु गिनहु अकबर३७।१साह ॥
सब अप्पि वृखँ१५ १ गनजुत्त तोपर२न आदि दिल्लिय साँज१६ ॥

१ युद्धमें २ धन का ३ समूह ॥४१॥ तोपों के चरखों में ४ वृषभ जोतकर ५ बुन्दी में गया ॥४२॥ हे मूर्ख तेरी ६ सलाह मानकर ॥ ४३ ॥ ७ विवाद ८ मुख्य उमरावों को बुलाकर कहा कि ९ अब क्या करना चाहिये. १० सेना में प्राण तोपें ही थीं सो लेलीं ११ युद्ध जीतकर उनकी अन्य सामग्री भी लेली ॥ ४४ ॥ १२ बादशाह नहीं सहन करके १३ हाडों का मुकुट करेंगे ॥ ४५ ॥ १४ इसकारण १५ बैलों के समूह सहित १६ सामग्री

कपतान बुल्लि रु ठानि स्वागत भेजिये हितकाज ॥ ४६ ॥
इत साह अकबर ३७।१ क्रुद्ध हुव सुरतान१८९।१ कृत सुनि एह ।
नृपभ्रात राम१८९।३ हु बुल्लि इत कपतानसन किय नेह ॥
सच तोप१ बल्लरन जुत समप्पि रु भुजनधरि जय भार ।
कपतानकों कछु द्रव्य दै किय स्वीय परबंधकार ॥ ४७ ॥
किय अरज नालिनं लै रु जानहि साहसन कपतान ।
सुरतान१८९।१ मूढ नहै यहै बुंदीस भ्रात समान ॥
तिहिं राम याहि भजाइ लै पुनि मोहि अप्पिय तोप ॥
याको विसास अहोन अब इम करत कालहु कोप ॥ ४८ ॥
दिन्नों बिडारि इतीहि गिनि इक साहनैं सुरतान१८९।१ ।
सु गयो मऊ बलि रायमल्लहिं मन्नि रक्खन मान ।
जवनेस इत चित्तोर जाइ रु विंटयो बहु वीर ॥
धुंर रान कहि रु अंकुरे गढकेहु प्रतिभट धीर ॥ ४९ ॥
जयमल्ल१ मेरतिया पता२ सीसोद ए दुव२ जोध ।
गरैं बंधि निज चित्तोरगढ बिफुरे रखाइ बिरोध ॥
कतिदुर्गबाहिर गुल्म हे तिनकों सम्हारनकज्ज ॥
करि अन्य बेस निसा कढे सह द्वैरहि गढपति गज्जैं ॥ ५० ॥

दोहा ॥

निकसि पता१ जयमल्ल२ निस, बाहिर बिकिय प्रबंध ॥
सत्थ अलप आवंत सम्प, सबरनं मिलिय सुसंधं ॥ ५१ ॥
भिल्लन मन्नें साह भट, जे छन्नें गढ जात ॥
वेढिलये लुंटाकें बनि, चापन प्रदंर चलात ॥ ५२ ॥

॥ ४६ ॥ अपने १ शत्रुओं को मारनेवाला किया ॥ ४७ ॥ २ तोपें ॥ ४८ ॥ ३ मुख्य ॥ ४९ ॥ ४ चित्तोड़गढ को अपने गले से बांधकर ५ कुपित हुए ६ सेना के टुकड़े थे ७ गर्जना करके ॥ ५० ॥ ८ भीलों से मिले ९ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाले ॥ ५१ ॥ भीलों ने इनको बादशाह के वीर जाने १० गुप्त ११ लूटनेवाले होकर घेर लिये १२ धनुष से बाण चलाते ॥ ५२ ॥

अक्खिय तहँ जयमल्ल१ इम, हित मरिबो कित होइ ॥
पता२ कहिय उत१ जस प्रचुर[1], धन इत२ देहु धकोइ ॥ ५३ ॥
को हो तुम सबरन[2] कहिय, सुनतहि यह[3] संलाप ॥
किम उत१ इत२ संकेत किय, अंगमि मरनहु आप ॥ ५४ ॥
होहु निडर ढिग आत हम, पहिलैं[4] स्वमत प्रकासि ॥
बहुरि देहु आयुध१ बसन२, तुम यह संसय[5] नासि ॥ ५५ ॥
जाइ निकट इम अक्खि जिन्ह, परिचित[6] कछु पहिचानि ॥
निजरच्छक मन्नैं निडर, जुगरहि दुर्गपति जानि ॥ ५६ ॥
पानि जोरि प्रत्युत[7] प्रनमि, मंतु[8] सु छमन छमाइ ॥
जंपिय हम जानैं जवन, जिन गढ अवन जाइ ॥ ५७ ॥
तिन्ह किंकर[9] पछिताइ तें, अरज भिल्ल इम अक्खि ॥
गढलौं पहुँचावन गये, रंच न मन भय रक्खि ॥ ५८ ॥
दुर्गपतिन तब दुर्गके, दक्खिन२ दिस लघु[10] द्वार ॥
बाहिर चोकी तहिं बुधे[11], इसिकिय रक्खनहार ॥ ५९ ॥
बारह१२ हायन[12] कति बदत, औदित[13] त्रि३ चउ४ कति ग्रंथ ॥
भो चिर[14] घेरा हम भनत, पै न मिल्यो गढपंथ ॥ ६० ॥
अनुचर[15] इक जयमल्ल जहँ, आगस[16] कछु अनखाँइ[17] ॥
करन१ सिंघिनी२ हीन करि, नापित दिय निकसाइ ॥ ६१ ॥

---

१ बहुत ॥ ५३ ॥ २ भीलों ने कहा ३ यह बोलना सुनकर ॥ ५४ ॥ ४ पहिले अपना विचार कहो ५ सन्देह मिटाकर ॥ ५५ ॥ ६ कुछ जानेहुओं को पहिचान कर ॥ ५६ ॥ ७ उलटा नमस्कार करके ८ वह अपराध उन समर्थों से क्षमा कराके ॥ ५७ ॥ ९ उनके सेवक ॥ ५८ ॥ १० दक्षिण दिशा के छोटे द्वार पर "चित्तोड़गढ के दक्षिण में कोई द्वार नहीं है यह छोटा द्वार उत्तर दिशा में है जिस को लाखोटा की बारी कहते हैं" ११ चतुरों ने ॥ ५९ ॥ १२ कितने ही लोक बारह वर्ष तक युद्ध होना कहते हैं और कितने ही अन्य तीन चार वर्ष १३ कहते हैं परन्तु हम (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ बहुत समय पर्यन्त घेरा रहा ॥ ६० ॥ १५ एक सेवक पर १६ कुछ अपराध से १७ क्रोध करके कान और १८ नासिका काटकर उस नाई को निकाल दिया था ॥ ६१ ॥

पारि मेल जिहिँ साहपति, अति बसु[1] दिय सु अवेरि ॥
बिगरायउ रचि भेद बिधि, गढजल गोपॅल[2] गारि ॥ ६२ ॥
दुर्गाधिप[3] जानि सु दुरित[4], अररहि प्रात[5] उघारि ॥
वेस[6] मरन समुचित बनैं, फोज परन रन फारि ॥ ६३ ॥
गढ सम्हारि गढपति प्रगुन[7], अद्धा[8] रजनि अनेह ॥
इक[9] गवक्ख बैठे उभय, सुंडा[10] पिवन सनेह ॥ ६४ ॥
जिहिँ दिन गिनिय अपेयजॅल[11], तास निसीथ हु तत्थ ॥
दिय दिखाइ बैठे दुवहि, नापित[12] बिरचि अनत्थ ॥ ६५ ॥
जरीवॅसन[13] रुचि जगमगत, मुख्य सु गिनि जयमल्ल ॥
पल्लेकी[14] भारिय तुपॅक[15], साह निगॅमपथ[16] सल्ल[17] ॥ ६६ ॥
पटु[18] निजतोप चलाक प्रति, दिय कॅतिकहत[19] निदेस ॥
होहु किम्हु जिमतिम हन्यौं, जयमल्ल सु जवनेस ॥ ६७ ॥
मेरतिया अक्खियमरत, विदित प्रतापॅ[20] बकारि ॥
कहहु प्रात तवलैकढहु, वॅपु[21] मम गज बैठारि ॥ ६८ ॥
यिरचि निरर्गॅल[22] द्वारबुध, बिधि सुहि सद्धि[23] बिहान ॥
जयमल्लहिँ गज थप्पि जिन्ह, परदल[24] किय प्रस्थान ॥ ६९ ॥
दुजन सुॅद्धि[25] न परन दियउ, मरन निसहि जयमल्ल ॥

१ बहुत धन दिया जिसको इकट्ठा करके. गढ के जल में २ गौओं का मांस डलाकर बिगड़ा डाला ॥ ६२ ॥ ३ किल्लादार ने ४ वह पाप जानकर ५ प्रभात ही किवाड़ खोलकर ६ मरने के उचित पौसाक (केसरिया) करके ॥ ६३ ॥ ७ विशेष गुणवान् ८ आधी रात्रि के समय ९ एक झरोखेमें दोनों बैठे १० मद्य पीने को ॥ ६४ ॥ ११ पानी को नहीं पीने योग्य समझकर उसी आधी रात्रि को १२ नाई ने अनर्थ करके दोनों को बैठे दिखाये ॥ ६५ ॥ १३ जरदोजी के वस्त्रों की कान्ति १४ दूर पर लगनेवाली १५ बन्दूक चलाई १६ वेद मार्ग के १७ साल बादशाह अकबरने ॥ ६६ ॥ १९ कितने ही कहते हैं कि १८ चतुर अपने तोप चलानेवाले को आज्ञा दी ॥ ६७ ॥ २० आमेट के रावत पत्ता से मेड़तिया जयमल्ल ने मरते समय कहा २१ मेरे शरीर को हाथी पर बैठाकर ॥ ६८ ॥ उस दिन ने २२ द्वार खोलकर २३ प्रभात समय में २४ शत्रुओं की सेना पर प्रस्थान किया ॥ ६९ ॥ शत्रुओं को २५ खबर नहीं होने दी ॥ ७० ॥

जान्यौं तव बचि अब जुग२ हि, आवत विरचि उछल्ल ॥७०॥
जिहिं निस मृत जयमल्ल जहँ, सो जुग२ *जामहि सेस ॥
नटन१गान२वादन३निचित, बिलसियँसुमह बिसेस ॥ ७१ ॥
हिसेस१ बिसेस२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
देखि तवहि बहु दीपिका, निजगढ उच्छव जानि ।
साह कबंधहिँ संहरन, मोघ जतन लिय मानि ॥ ७२ ॥
अबकुणप१हिँ बैठारि इभँ, प्रातहि निकसि प्रताप२ ॥
मथि अनीक मुगलेसको, इम तिलतिल हुव आप ॥ ७३ ॥
तँहँ पम्मार असोकसुत, बिंझोलीपति बीर ।
इक१घरी सिरबिनु अस्यो, मारि पस्यो बहु मीरँ ॥ ७४ ॥
अकवर पहुँ किन्नौं अमल, चढि तव गढ चित्तोर ॥
गढ पुनि कुंभिलमेरु गय, उदय प्रतीची ओर ॥ ७५ ॥

* दो प्रहर रात्रि बाकी रहते | रचकर ‡ श्रेष्ठ उत्सव भोगा ॥ ७१ ॥ बादशाह ने १ राठोड़ जयमल्ल को मारने का यत्न २ झूठा माना ॥ ७२ ॥ ३ मुर्दे जयमल्ल को ४ हाथी पर बिठाके ५ बादशाह की सेना को मथकर ॥ ७३ ॥ ६ बादशाह के अमीरों को मारकर ॥ ७४ ॥ ७ * शत्रु ८ उदयसिंह पश्चिम दिशा में कुम्भलगढ गया ॥ ७५ ॥

* दिल्ली के बादशाह अकबर का चित्तोड़ पर चढाई का पूर्ण विचार देखकर महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह ने जो महाराणा की अप्रसन्नता के कारण पहिले से बादशाही सेवा में चलागया था अकबर को छोड़कर चित्तोड़ में आकर महाराणा उदयसिंह से बादशाह के आने की खबर दी, तब सबकी सलाह से महाराणा अपने कुटुम्ब सहित पश्चिमी पर्वतों में चलेगये और चित्तोड़ का गढ आठ हजार क्षत्रियों के साथ, मेड़ता के राव वीरमदेव के पुत्र जयमल्ल राठोड़ और आमेट के रावत चूण्डावत पत्ता के आधीन किया, विक्रमी सम्वत १६२४ मार्गशिर कृष्ण ६ को अकबर ने चित्तोड़ के किले को घेरा औरदोनों ओर से भयंकर युद्ध होतारहा एक दिन रात्रि के समय किलेकी दीवार पर फिरता हुआ हजारमेखी चमकदार सिलह पहने, जयमल्ल मोरचे सम्हाल रहा था उस समय बादशाह अकबरने बन्दूककी गोली चलाई जिससे जयमल्ल का पैर घुटना में से टूटगया, और इस समय गढ में खानपानादि सामग्री भी छूट चुकी थी इसकारण प्रभात होतेही राजपूतोंने किले के किवाड़ खोलकर बादशाही सेनापर हल्ला किया, इस समय जयमल्ल का पैर टूटजाने के कारण, उसके भाई कल्ला राठोड़ने जयमल्ल को अपने कन्धे पर चढालिया और दोनों वीर खड्ग चलातेहुए हनुमानपोल और भैरवपोल के बीचमें मारेगये और रावत पत्ता भी वीरता के

कति जयमल्ल१प्रतापकौं, समय बिभावी सीस ॥
छितिपति रान प्रताप छत, अक्बरहिं दुर्ग अधीस ॥ ७६ ॥
इम भगवंत१रु मान२रन, जनक१सुत२न उत जाइ ॥
सँह भोजन टारयो समुझि, खल मच्छर४ अनखाइ ॥ ७७ ॥
रान कुलहु निज सम करन, पिसुनभाँव मन पूरि ॥
अकबर२७कौं चित्तोर इम, आनि आन्यौं फल भूरि ॥ ७८ ॥
रान तदपि कुलरक्खिवे, छिति१पुर२दुर्ग३न छोरि ॥
वनचरपन धारि लिय बिपति, जीवन धर्महिं जोरि ॥ ७९ ॥
संतति दैवे प्रमुख सब, दिल्ली अभिमत दाहि ॥
सुख तजि स्वभट१कुटुंब२सह, उदय गह्यो दुख आहि ॥ ८० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठदशराशौ वीतिहोत्रवंशसुधेश्वरबीजव्याख्यानवीजहड्डाधिराडऽस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यवि

कितने ही लोग इस १ प्रभावशाली जयमल्ल और पत्ता को २ महाराणा प्रतापसिंह के समय में ३ किल्लादार होना कहते हैं ॥ ७६ ॥ ४ शामिल भोजन कराने से जुदा जानकर दुष्टोंने ५ मत्सरता से क्रोध करके ॥ ७७ ॥ ६ राणा के कुल को अपने समान भ्रष्ट करने को ७ चुगली करने से मनको पूर्ण करके ८ बहुत फल दिखाकर लाये "शामिल भोजन नहीं करने के कारण कछवाहे मानसिंहने बादशाह अकबर को क्रुद्ध करके मेवाड़ पर बादशाही फौज चढा लाया था वह युद्ध महाराणा प्रतापसिंह से हलदी घाटी के स्थान पर हुआ था जिसका वर्णन आगे आवेगा" ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ९ सन्तान द्रव्य आदि सब दिल्ली की १० इच्छा को जलाकर ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीज हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृ

साथ मारागया, जिसपीछे सम्वत १६२४ चैतवदि १२ को मध्यान्ह के समय बादशाह अकबरने चित्तोड़ गढ पर अपना झन्डा खड़ा किया वहां पर गढ के पानी को गौओं के मांस डालने से अपेय कर देना लिखा सो नहीं बनसक्ता क्योंकि इस गढ के जलाशय गढ के ऊपर हैं वहां शत्रु किसी प्रकार से भी नहीं पहुंच सक्ते थे और गोली लगने से जयमल्ल राठोड़ का उसी रात्रि में मरजाना लिखा सो आईनअकबरी के अनुसार है परन्तु यह सत्य नहीं है वह टूटेहुए पैर से ऊपर सूचना किये हुए स्थान पर प्रभात समय में मारा गया जिसके अनेक प्रमाण विद्यमान हैं सो स्थानाभाव से नहीं लिखेजाते, जिनको देखना होवे, मेवाड़ इतिहास वीरविनोद में देखें, इस युद्ध का बारह वर्ष तक होना लिखा सो भी असत्य है.

हितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरित्रे बुन्दीपतिसुरजनस्य रणस्तम्भवरदुर्गस्थशेरशाहसलेमभटाश्रयप्रदानेन रणस्तम्भवरदुर्गस्वाधिकारसंपादन १ रणस्तम्भवरविजिगीषुदिल्लीशाकबरसम्राजोऽहमदाबादपत्तनाधिकारिगर्वगञ्जककाठीजनतोपद्रवोदन्तश्रवणादाम्बेरराजभगवन्तसिंहेन सह स्वसैन्यसंप्रेषण २ गुर्जरविजयिप्रत्यावृत्ताम्बेरराजभगवन्तसिंहस्य निजकुमारमानसिंहसहितस्य सहभोजनानङ्गीकारकारणेनापकारिमहाराणोदयसिंहपुत्रीणां यवनीकरणप्रतिज्ञापूर्वकमकबरान्तिकागमन ३ चित्रकूटप्रयायिसम्राट्सैन्यं लोभेनाकृष्य तत्सहायाद्बुन्दीपुरीप्रत्यादित्सुसुरताणान्नृपतेर्बुन्दीरोधे रात्रिसंगरे पराजित्य पलायन ४ चित्रकूटरोधात्प्रागेव महाराणोदयसिंहेऽवाचीदिशं संप्रस्थिते चित्रकूटदुर्गाधिकारिमेड़तियाराष्ट्रकूट (राठौड़) जयमल्लस्याम्बेटपतिपत्ताभिधेयस्य च चित्रकूटमधिष्ठायाकबरेण सह समरकरण ५ अकबरकरवन्हिबाणविद्धजयमल्ले पञ्चतामवाप्ते प्रातरेव दुर्गकपाटोद्घाटनेन पत्तादिवीराणां रणशय्या

न्त की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के भूपति सुरजन का रणतभँवर के गढ में रहेहुए शेरशाह और सलेम के वीरों को अपने शरण में रखकर रणतभँवर को अपने अधिकार में करना १ रणतभँवर को विजय करने की इच्छावाले अकबर का अहमदाबाद के हाकिम का गर्व मिटानेवाले काठी लोकों के उपद्रव का वृत्तान्त सुनकर आमेर के राजा भगवन्तसिंह को साथ लेकर प्रथम गुजरात पर भेजना २ गुजरात को विजय करके पीछे फिरे हुए आमेर के राजा भगवन्तसिंह और उसके कुमार मानसिंह का चित्तोड़ के महाराणा उदयसिंह के शामिल भोजन नहीं करने का अपमान होकर राणा की पुत्रियों को यवनी बनाने की प्रतिज्ञा करके बादशाह अकबर के पास जाना ३ चित्तोड़ पर जातीहुई बादशाही सेना को लोभ से मिलाकर बुन्दी को पीछी लेने की इच्छावाले सुरताण का बुन्दी के घेरे में रात्रि के युद्ध में पराजय होकर भागना ४ चित्तोड़ गढ को घेरने से पहिले महाराणा उदयसिंह पश्चिम दिशा में निकल जाने पीछे चित्तोड़ के किल्लादार मेड़तिया राठोड़ जयमल्ल और आमेट के रावत पत्ता का चित्तोड़ के किल्ले में रहकर दिल्ली के बादशाह अकबर से युद्ध करना ५ अकबर के हाथ की बन्दूक लगने से जयमल्ल के मारे जाने

शयन ६ एतत्समरसमयसंबन्धिन्यूनाधिकावधिप्रतिपादकमतभेदसूचनादिकथनं पञ्चमो मयूखः ।५। आदितोऽष्टाशीत्युत्तरशततमः॥ १८८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

अकबर३७१लै चित्तोर इम, रच्छक अप्पन रक्खि ॥
गिनत बंधु[1] आमैरगढ, सबल मुरयो जय सक्खि[2] ॥ १ ॥
दरकुंचन रनथंभट्टुतें[3], आयो जित्तन आस ॥
समुझावन भगवंत सुहि, प्रेरयो सुर्जन१९०१पास ॥ २ ॥
साह पाइ कूरम सुतॉ१, महँ नोरोज मनाइ ॥
गुरु[6] स्वधर्म नासक गिन्यौं, भूपन सासकँ भाइ ॥ ३ ॥
आन न दिय गढमाँहिं इम, अकबर३७१स्वसुरहि अक्खि ॥
हुव सम्मुह सुर्जन१९०१हरखि, दुर्जन परखि दुस्सक्खि ॥४॥
न बनें कछु आयैंहि नृप, बनैं कहँ मत बैन ॥
तातैं पठवहु दूत तुम, इत हु यहै मत[1] ऐनं ॥ ५ ॥

मदनावतारः ॥

भेजि यह दूत इम कुम्म भगवंतपैं, अप्पनिजधर्म थिति रुयात किय अंतपैं ॥

के प्रभात ही गढ के द्वार खोलकर पत्ता आदि वीरों का माराजाना ६ इस युद्ध के समय की न्यूनाधिक अवधि बताने के मत भेदकी सूचना आदि कथाओं का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ इठ्यासी मयूख हुए ॥ १८८ ॥

१ सम्बन्धि २ जय की साक्षी से सेना सहित पीछा फिरा ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ॥२॥ ४ भगवन्तसिंह कछवाहे की पुत्री को पाकर ५ उत्सव. राव सुरजनने भगवन्तसिंह को अपना धर्म नाश करने में ६ बडा समझा ७ राजाओं को बादशाही आज्ञा में करने की रीति से ॥ ३ ॥ ८ उसको अकबर का सुसरा जानकर ऊपर कहीहुई दोनों साक्षियों के कारण शत्रु जानकर गढ में नहीं आनेदिया ॥ ४ ॥ ९ इस स्थान में यही सलाह है ॥ ५ ॥

दूत तब भेजि इम कुम्भ लिपिदूत दिय, लाहँ खिन वाह तुम साह

भरि जानिलिय ॥ ६ ॥

हुकम तस होइ बिक्खो दबेले बडे, महत धन १ धाम २ जिन्हँ

नाम जसमैं मडे ॥

अकबर३।४।हिं अज को अर्जि रन अंगमैं, निखिल५ यह खंड

भरि दंड जिहिपै नमैं ॥ ७ ॥

तुमहु रनथंभ करि भेट हठ देहु तजि, भोग बहु जोग अर्प रोग

बिनु लेहु भजि ॥

मान करि रान७ लघु प्रान तजिगो सही, स्वान अफगान बिनु

त्रान भजिगो सही ॥ ८ ॥

समय अनुसार बल अप्पनों ए सहँ, बिक्खि इन्ह जोर इस सिर

हि अप्पन वहँ ॥

परहु यह जानि हित मान दिल्लीस पय, देहु रनथंभ सुगलेइस

जिम हे सदय ॥ ९ ॥

दुर्ग लिय चोर जिम ध्वांत बिनुदी दयो, अब न रहि है सु महि

साह रवि उग्गयो ॥

कहिदिय जियत तुम वध्य अफगान के, दोउहि अपराध गिनि

ये न प्रभु दानिके ॥ १० ॥

पै वैं रनथंभ करि भेट सुख पाइहो, जो न यह वत्त तजि भोन

भजिजाइहो ॥

---

१ पत्र दिया २ लाख के रुपये ॥६॥ ३ देखो ४ आज अकबर को कौन आगे युद्ध में खड़ा रहता है ५ सब ॥७॥ ६ शत्रु रूपी रोग के बिना ७ स्थूल पराक्रमवाला राणा और बिना रक्षा के पठानों का कुत्ता ८ कुत्ता भाग गया ॥८॥ ९ समय के अनुसार अर्थात् बादशाह का हाथ मस्तक पर रहै तो यही अपना मन है १० दयावान होवे ॥९॥ ११ अन्धेरे में चोर के समान बिना दिखाहुआ गढ लिया के सो आज रूपी सूर्य उदय होने पर अब नहीं रहेगा १२ मारने योग्य जिनको भी पठानों को तुमने जीवित निकाल दिये ये दोनों अपराध प्रभु के १३ देने योग्य नहीं हैं ॥१०॥ परन्तु १४ अब

*कुम्म दल बंचि यह हड्ड६१ नृप कुप्पयो, अंग निजभंग गढ
संग गिनि † उप्पयो ॥ ११ ॥
वीर गढमें हि ‡परदूत ढिग बुल्लयो, खग्गमत मग्ग तिहिं अग्ग
हढ खुल्लयो ।
कुम्मपति जाइ हमवैन क्रम यों कहो, लुंभि तुम आप्पि हुहि
तों हु वसु१भू२लहो ॥ १२ ॥

चोर१हम साह लखि जो व भजिवो चहैं, साह नाहिंतो हमहिं
लाहलंछ क्यों सहैं ॥
हल्लकरि मोहि गढद्वार अबही हनहु, यह रनथंभ करि गेह छक
उप्फनहु ॥ १३ ॥
होत निज सरन अफगान दिय कढि हम, सरनगत त्रान कुल-
धर्म गिनि प्रानसम ॥
साह बरजोर वचिवो न मम है सही, मोहि हनि लखहु रनथं-
भगढकी मही ॥ १४ ॥

अधिप इम अक्खि परदूत पठवाइकैं, नालि दगिवेहिदिय सेन
निधराइकैं ॥
सूचि पहिलैं न तुम हनहु परसत्थकों, वे करैं घात तव सद्धनौ
अत्थकों ॥ १५ ॥

---

* कछवाहे का यह पत्र बांचकर † क्रोधित हुआ ॥ ११ ॥ ‡ शत्रु के दूत को पास बुलाया १ मार्ग चलाने का विचार २ हमारे वचन कछवाहे से इस क्रम से कहो कि ३ लोभ करके ४ पृथ्वी देकर धन और भूमि तुम ही लो ॥ १२ ॥ बादशाह को देखकर जब जो हम भगजावें तो चोर हैं नहीं तो हम ही शाह (साहूकार) हैं और दमड़ी ५ मिलेहुए लाभ के ब्याज को (लाहा हुआ अर्थ सिद्धि के अन्य अर्थ का कहना ब्याज है) क्यों सहन करें ॥१३॥ ६ शरण आये हुए की रक्षा करना कुल धर्म है ७ बलवान् है ॥ १४ ॥ ८ शत्रु दूत को ९ तोप चलाने को १० समीप लेकर ११ शत्रु के साथ को १२ अपना अर्थ साधना चाहिये ॥ १५ ॥

दुजनदल[1] टारि तब तोप गढकी दगी, लाय मुगलेस उर तदपि बढती लगी ॥
चहत रन दुर्ग सिर नालि उतकी चली, आइ गढमें लगी गिरन[2] गोलावली ॥ १६ ॥
सुर्जन१६०।१हु अक्खि[3] तब साह दल संहरन[4], सज्ज[5] हुव लरन धुवमरन असरनसरन ॥
तोप दुहुँ२ओर दगि भूत पंचक[6]५तप्यो, जनन डरि मनन संवर्त्त[7] आगम[8] जप्यो ॥ १७ ॥
भुम्मि डगमग्गि[9] गिरि शृंग जंगम भये, छित्ति निभ[10] काल करमाल[11] लहरू[12] छये ॥
सांम[13]बिधि जानि कति दुर्गढिग हे सिविर[14], कदन[15] निज टारि लहि तेहु गय दूर किर[16] ॥ १८ ॥
फेरपर फेर बालि दहन[17] दिसदिस फुरयो, जानि कपिदत्त[18] लंकाहिं जारन जुरयो ॥
गोल लागे सीस गजभद्र[19] मुक्ता गिरे, करन भुव चित्र[20] करकों[21] निकर[22] ज्यों किरे[23] ॥ १९ ॥
तुंग[24] गृह कलस१ध्वज२छत्र३इत उत्तरे, पत्ति[25]१गज२बाजि३वोसंत[26]४उत ढहिपरे ॥
लुत्थिपर लुत्थि बहु बुत्थि[27] संचितलगें, पार पलचार[28] दलकार पल नाँ पगें ॥ २० ॥

---

१ शत्रु की सेना को बचाकर २ गोलों की पंक्ति गिरने लगी ॥ १६ ॥ ३ कहा ४ संहार करने को ५ तैयार हुआ ६ पंचभूत (पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश) तपगये ७ प्रलय का ८ आना कहा ॥ १७ ॥ ९ चलायमान होगये १० सदृश ११ तरवारों की १२ लहरें छागई १३ सिलाप होजाने की विधि जानकर १४ डेरे १५ अपना नाश बचाकर १६ किल (निश्चय) ॥ १८ ॥ १७ अग्नि १८ हनूमान को दिया हुआ १९ भद्रजाति के हाथियों के मस्तक पर गोले लगकर २० पृथ्वी पर आश्चर्य करते हैं २१ ओलों (गड़ों) के २२ समूह २३ गिरे ॥ १९ ॥ २४ ऊंचे २५ पैदल २६ ऊँट २७ मांस के टुकड़ों के समूह लगते हैं २८ मांस खानेवाले ॥ २० ॥

यौं विजय आस कछुमास अकबर ३।७।१ अरयो, काल नृप तास दलग्रास तोपन करयो ॥
कुम्भ भगवंत तब साहपति यौं कह्यो, लग्गि *चिर निष्ठि चित्तो र अप्पन लह्यो ॥ २१ ॥
मुरुध †दुर्गेस जयमल्ल१ जो नाँ मरैं, पुनिहु जयलाँहिं बहु अंबदसंसय परैं
तोहु तिम न्हासि बहु आस दलको तहाँ, ज्योंहिं अब आँहिं गढ-लाँहिं सुर्जन १।९०।१ जहाँ ॥ २२ ॥
इष्ट तिहिं अप्पि यह दुर्ग अब अंगमैं, जिम सु निज होइ इत अमल अप्पन जमैं ॥
पहहि बहरामसुख भटन हित उच्चरयो, कुम्भ तब साह सुहि राह रच्छक करयो ॥ २३ ॥
कुम्भ गढद्वारगत एह कहि सुक्कली, सुहि ढिग सोहि बलि इष्ट अक्खहु बली ॥
दुर्ग बिच कुम्भ१ चउ४ जुत्त तब बुल्लि हुत, पीठ इक१ बैठि सुदीस मिल्यो पहुत ॥ २४ ॥
कहिय कछवाह मम मंतु विस्मृत करहु, इष्ट लहि अप्पगढ दै रु जस उद्धरहु ॥
बलिय सामंत१।८।७।१ तहँ साह बलवान है, मरिहु गढ देत तु-मरो न इम मान है ॥ २५ ॥
लेहु लिखवाइ मनचाह थित लाह जो, सोहि अब देहिं गढ लेहिं इम साह जो ॥
सत्त७ लहि बत्त तब देन गढ स्वीकरिय, इमहि नरनाह कछ-वाह प्रति उच्चरिय ॥ २६ ॥

---

* बहुत समय पर्यन्त ॥ २१ ॥ † किल्लादार १ वर्ष २ सेना का नाश ३ हुआ ४ है ॥ २२ ॥ ५ उसकी इच्छा के अनुसार देकर ६ तोपें ७ बारूद आदि ८ उस मिलाप के मार्ग की रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ ९ गढ के द्वार पर जाकर १० एक संघ (आसन) पर बैठकर ॥ २४ ॥ कछवाहे ने कहा कि ११ तेरे अपराध को १२ भूल जाओ ॥२५॥ १३ सात बातें लेकर गढ को देना स्वीकार किया॥२६॥

पुलि दिय अप्प तिम हम न परिनाइहैं१, जु किय नोरोज तँहँ न हम तिय जाइहैं२ ॥
अटक नदि पार पठवें सु नहिं उत्तरैं३, आम१ अरु खास२ इक१ सस्त्रह अनुसरैं४ ॥ २७ ॥
लालप्राकारलग बंब हमरो बजैं५, तुरगतन लग्गत सु दग्ग जवन न तजैं६ ॥
कज्ज कछु सज्ज नहिं अर्ज्ज अनुगतकरैं७, सत्त७ ए वत्त लहि साह हित अनुसरैं ॥ २८ ॥
अधिक सुव साह अब दै सु तुम उच्चरहु, कुम्म नरनाह तब चाह गढकी करहु ॥
सुनि सु नृप मंत भगवंत गय साहपैं, रक्खि रीति कहिय हित होत इहिं राहपैं ॥ २९ ॥
चविय[12] खिजि साह तुम हिंदु हिंदुन चहो, क्यों हमहिं वंचि[13] यह स्वीय कल्पित[14] कहो ॥
कहिय भगवंत चलि अप्प सुनिये कथा, तेहु लखिलैन[15] वपु बेस बदलहु तथा ॥ ३० ॥

पलटि तब वेस मुगलेस गहि दूतपन, संग गय हद्दु६१ हठ वैन निहचै सुनन ॥

आपने पुत्री दी तैसे हम नहीं परणावेंगे१ जो नोरोजों का उत्सव नियत किया है उसमें हमारी स्त्रियां नहीं जावेंगी २ अटक नदी के पार भेजें सो नहीं उतरेंगे ३आम दरबार और खास दरबार में एक शस्त्र लेकर जावेंगे॥२७॥४ लालकोट तक हमारा ५नगारा बजेगा ६घोड़ों के शरीर में दाग लगता है वह दाग लगाना यवन छोड़देवें ७ किसी कार्य पर लज्जित करने में ८आर्य का ९सेवक नहीं करै अर्थात् किसी आर्य्य को सेनापति करके हमको उसके साथ नहीं भेजें ॥ २८ ॥ १० राजा सुरजन का मंत्र (सलाह) सुनकर ११ प्रीति रखकर ॥२९॥ १२ कहा १३ हमको ठगकर १४ यह अपनी कल्पना की हुई वार्ता क्यों कहते १५ देखने के लिये शरीर का वेश बदलदो ॥ ३० ॥

इक१*जलधार दुव२ दास तिम दूत इक१, संगगढमाँहिँ गय पुच्छ यह साहसिक ॥ ३१ ॥
दूत१वह टारि तँहँ धारि मुगलेस२दुत, तत्थ गय कुम्भ२पुनि सत्थ जन च्यारि४जुत ॥
कहिय बुंदीसपति एह हठ नाँ करहु, धरनिप्रभु साह आदेस मत्थैं धरहु ॥ ३२ ॥
कोल करि एह करिये न तिहिँ कोपमैं, अप्पि गढ दै सु भुव लेहु जस ओपमैं ॥
सु सुनिनृप कुप्पि गहि मुच्छ आसि संग्रह्यो, कहि कुल हद्द८१ रनथंभ दव्वहु कह्यो ॥ ३३ ॥
अद्ध५ तुम जवन इम जवनहित आचरत, धरनि१धन२चाहि मिरजाहि उपपद धरत ॥
हमहिं बहिकाइ तुम ज्यों करहु सो न है, कुल्य८ नृप अज्ज चहि मिच्छसम कोन है ॥ ३४ ॥
कोल हम पुव्व कुलधर्म रक्खनकरैं, उचित लहि देस पुनि सेस कृति आदरैं ॥
तो व रनथंभ हम अप्पि आश्रय तकैं, नाँहिं यह होइ तव छुद्र लोभहि नंकैं ॥ ३५ ॥
धर्महित सीस दिल्लीस सासनधरैं, कज्ज निज धर्महित रज्जं त्यागहु करैं ॥
धर्महित रान१सहबाम१२वन धाम किय, कुंडल१रु बंस२तजि कर्ण३जग नाम किय ॥ ३६ ॥

---

* जल रखनेवाला १ हठी ॥३१॥ पृथ्वि का पति बादशाह है जिसकी २आज्ञा मस्तक पर धरो ॥ ३२ ॥ ३ नियम ४ शोभा में ॥ ३३ ॥ ५ तुम आधे यवन हो इसकारण यवन का हित ६ करते हो ७ पदवी (खिताब) ८ कुलवान आर्य ॥ ३४ ॥ ९ तुच्छ लोभ १०नहीं करेंगे ॥ ३५ ॥ ११ अपने राज्य को भी छोडदेवैं १२ स्त्री सहित १३ कुण्डल और कवच देकर ॥ ३६ ॥

भूप सिबि३मंस जिहिँकज्ज अप्पन भयो, देहजिहिँकज्ज जीमूत वाहन४ दयो ॥
ताकि जिहिँ भूप अजमीढ५प्रभुता तजी, भूप हरिचंद६ जिहिँ कज्ज छवता भजी ॥ ३७ ॥
सोहि हम रक्खि मुगलेसढिग संचरैं, कोहि तिहिँ खोइ जड स्वामि मिच्छहिँकरैं ॥
जो रुचत एह करिदेहु तो लेख जिम, अकबर३७१हिँ नाह गिनि तजहिँ रनथंभ इम ॥ ३८ ॥
है न यह लेख तब आपि सिरधर्महित, इक्क१जस रक्खि हम हड्ड९१कारिहैं उचित ॥
कहि अफगान रनथंभ लिय नीति करि, ओर विधि ताहि लहिहो न तुम धर्मअरि ॥ ३९ ॥
साह१तुमरो रु तुम२मोहि जबसंहरहु, कलह जय पाइ तब दुर्ग सासन करहु ॥
कुम्भ सुनि दूत निभ साहप्रति यों कह्यो, सुनत तुम हड्ड६१बिनु लेख सासन सह्यो ॥ ४० ॥
साह मम बेन बिच ढ्वापरहि स्वीकरैं, कहहु तुम हड्ड६१ बिनु कोल रनही करैं ॥

स्वीकरैं१हीकरैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ध्वस्त लखि धर्म बुंदी कुलनलोँ तजैं, भूप निजधर्म अनुरूप तुमको भजैं ॥ ४१ ॥

---

१ मांस २ जीमूतवाहन नामक राजा ने " यहां जितने उदाहरण दिये हैं तिनकी कथा ऊपर आचुकी है इसकारण यहां पर टीका करना अनावश्यक है "३ चार गाल बन लिया॥३७॥४जा पेंगे॥३८॥१धर्म के शत्रु "अकबर को पुत्री विवाहने से भगवन्तसिंह को यहां धर्मअरि कहा है" ॥३९॥ ६शुल्क को मारडालेंगे ७इन के सदृश पेश धारण किये हुए बादशाह से कछवाह ने कहा॥४०॥८सन्देह करें तो ९ धर्म का नाश देखकर १०बुन्दी को भी ११अपने सदृश धर्म रखकर तुमारी

दूतमिससाह१कछ्वाह२इम तत्थ हुव२, हड्ड६१नृप बैन सुनि सैन पुनि जातहुव ॥

साहप्रति कहिय कछवाहअप्पहु सुनी, गाढसह हड्ड६१जुहिटेक किय सोगुनी ॥ ४२ ॥

अज्ज हम अप्पसन कज्जे३ छल आदरहिं, पाप सहि ताप तब क्यों न दोजख४ परहिं ॥

साह तब छापसह कोल लिखि सत्त७ही, कुम्मकर भेजि दैआहु हड्ड६१हि कही ॥ ४३ ॥

भू५ अधिक लैन जो बैन सुर्जन१९०१भनैं, परगनैं६ सत्त७तो देय तिहिं अप्पनैं ॥

करहि इच्छा पुनिहु लैन छिति तो कहो, लोभ मितं देस गुडवान जित्ति रु लहो ॥ ४४ ॥

जेहु पुनि दुर्ग गय सत्त७हद लेख जुत, देस सप्तक७सहित दैन लग्गो सु हुत ॥

सत्त७हदलेख नृप हड्ड६१ तँह स्वीकरयो, देस लैबो सु गुडवान जय आदरयो ॥ ४५ ॥

कहिय गुडवान जय साह उपदे९ करौं, धरनि इच्छा प्रमितं१० तबहि बढती धरौं ॥

देय भुव लेख करिदैन जो आदरहु, सोहु लिखि साह रनथंभ अपनौं करहु ॥ ४६ ॥

कुम्म इम लैन भुव हड्ड६१इच्छा कहिय, बावनी५२११दैन तब सा

सेवा करेगा ॥ ४१ ॥ १ रंगा में पीछे गये २ दृढता से ॥ ४२ ॥ ३ कार्य में ४ नरक में ॥ ४३ ॥ ५ अधिक भूमि लेने का वचन ६ फिर पृथ्वी लेने की इच्छा करें तो ७ छोटा देश वा लोभ के माफिक ॥ ४४ ॥ ८ गुडवान देश को विजय करके लेना स्वीकार किया ॥ ४५ ॥ गुडवान को विजय करके जब बादशाह की ९ नजर करूंगा तब इच्छा के १० अनुसार अधिक भूमि लूंगा ॥ ४६ ॥ ११ बावन परगने देने की बादशाह ने

ह संधावहिय ॥
पत्र लिखि साह सुहु हड्ड६१ढिगप्रेसेयो, दुर्ग खालीकरन तदनु
सासन दयो ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

भगवंतहिँ सुर्जन१९०।१भनिय, अब निसिबेला आत ।
कल्हि दुर्ग खाली करहिँ, पावहु साह प्रभात ॥ ४८ ॥
कुम्भ सुनत तँहँ इम कहिय, सुर्जन१९०।१प्रति सामंत१८७।१।
गढ दै तुमसासन गहहु, इहाँ चहत हम अंत ॥ ४९ ॥
जब बुंदिय सुरतान१९६।१जड, मारनलग्गो मोहि ॥
मैं तब निकस्यो रन मरन, हढहि जरठपँन द्रोहि ॥ ५० ॥
तब सलेम३३।१करि दुर्गपति, थप्यो मैं रनथंभ ॥
ओर सुभट ममबस अखिल, रक्खे जयआरंभ ॥ ५१ ॥
अबलग तबतैं किय असन, या गढको मैं अन्न ॥
अब मोहि न जीवन उचित, अतिबाढ्ढक आपन्न ॥ ५२ ॥
तँहँ सुर्जन१९०।१भगवंत२तिहिँ, सुपहु रहे समुझाइ ॥
तदपि सज्ज सारन१८६।१तनुज, भयो मरन रन भाइ ॥५३॥

षट्पात् ॥

इम तँहँ कूरम इनहिँ कहिय सामंत१८७।१जोरि कर ।
बडे१रिपुन कर बहि बनत लँहुरे२हु कित्तिवर ॥
अफगाननको अन्न परयो मम जठँर वृद्धपन ।
जियत मँहि तिन्ह जोध सकल दिय कढ्ढि इहाँ सन ॥
अकबर३७।१हि मारि निर्भय अवहु हुलासि सिकंदर३६।१चहत हम ।

१ प्रतिज्ञा की २ भेजा ३ जिसपीछे ॥४७॥ ४ रात्रि का समय आगया है ॥४८॥ ५तुम गढ देकर बादशाह की आज्ञा ग्रहण करो ६ हम यहीं मरना चाहते हैं ॥४९॥ ७ बुढापे से द्वेष रखनेवाला ॥५०॥ ८ सब ॥ ५१ ॥ ९ भोजन १० अत्यन्त वृद्धपन से ११ दुःखी हूं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ कछवाहों के राजा को हाथ जोड़ कर सामन्त ने कहा कि १२ छोटे भी बड़े शत्रुओं के हाथ से मारेजाकर कीर्ति के पति होते हैं १३ पेट

आगमं पहे न सहिबो१उचित दुजन हमहिँ हनिबो२हि दमं ॥५४॥
कूरम नृप तब कहिय हड्ड६१सामंत१८७१२सुनहु हित ।
उहाँ तुमहिँ गढअधिप अबहु रक्खहि जसअंकित ॥
पटा१सरातबँ२पाइ भुग्गि खंडारि१प्रमुख भुव ।
थिर बिलसहु रनथंभ दुर्ग दुस्सह सारन१८६१सुवं ॥
साहकौँ जिते परिकँरसहित आवनदेहु तितोहि अब ।
गढमैं स्वसंग लावहिँ मुगल६सिर झेलहु यह भार सब ॥५५॥

दोहा ॥

हड्ड६१नृपहु दैबे कहिय, अधिक परगनाँ१एक१ ।
तदपि जरठ सामंत१८७१२तँहँ, टारी नैंक न टेक ॥५६॥
सारन१८६१सुत अक्खिय सुपहु, चित्त न दिल्लिय चाह ।
हमहि दुर्गके द्वारहनि, लवजुत प्रविसहु साह ॥५७॥
दै सपथहु याकौं दुवरहि, सुपँहु रहे समुझाइ ।
तदपि न हठ सामंत१८७१२तजि, लरन खरो हित लाइ ॥५८॥
पहु कूरम यह साहप्रति, आनि कहिय पट ऐन ।
पंचलक्ख५०००००दम्मन पटा, दिल्लीसहु किय दैन ॥५९॥
हठो तदपि सामंत१८७१२हुव, तृनासित मन्नत ताहि ।
महिपति इत कहि मुकलिय, अब खिनदागम आहि ॥६०॥
कलिह दुर्ग खाली करहिँ, अप्पन बिभव अवेरि ।
संझ दुहाई साहकी, हिय अँफसोसहु हेरि ॥६१॥

॥ षट्पात् ॥

कूरम पहु अधिप कहाइ बिष्णुप्रतिमाँ दुव१२वंदित ।
व्यवहितँ कहिय बीर दुर्गबाहिर आनंदित ॥

मं १ आना २ दण्ड ॥५४॥ ३ जय से जाना जावै ऐसा करके ४ इज्जत ५ हे सारण के पुत्र! ६ परगने सहित ॥५५॥५६॥५७॥ ७ राजा ५८॥ ८ डेरों में ॥५९॥ ९ अब रात्रि का आगम है ॥६०॥ १० चिन्ता करके ॥६१॥ ११ विष्णु भगवान की दो मूर्तियां १२ सावधान होकर

अग्गैं निकसी एहि उभयरआलय¹ अलसीके ॥
ते पठई निस तबहि नेर बुंदिय बिधि नीकें² ॥
तोपहु निकासि रकिखय अतुल³ गढबाहिर दुवरगर्तगैंत⁴।
तबुमात्र तेहु पठई तिम्हहि निज निकेत⁶ दुर्लभ नियत ॥ ६२ ॥

पथ्यागीतिः ॥

इक्क१चतुर्भुज१आढ्य⁷, दूजी२कल्यानराज२नामा है२ ।
मूरति स्याम सिलाय, पुरबुंदिय तोप दोइ२जुत पठई ॥ ६३ ॥
सिव मंदिर पहिली१ सो, प्रतिमा१ बुंदीपुरहि पधराई ॥
महिप सुभक्ति मिली सो, उदित तिलक चोक च्यारि४भुज वारी ॥
घुरे⁹१ नालि धूंरिधानी¹⁰, जिम दूजी२ करॅक¹¹ बिज्जुली २ जानी ॥
ए२ सुभटन पुर आनी, तारागढ तेहु चरखन चढाई ॥ ६५ ॥
दुव२प्रतिमा नाली दुव२, व्यवहित¹² ए चउ४पठाइ इम बुंदी ॥
सुर्जन१९०१नृपअर्जुन१८८१सुत¹³, पुनिगढ रनथंभ अप्पन प्रमान्यौं ॥
वैभव निज कढ़ि बहुरि, कारि खाली दुर्ग प्रातहि कहाई ॥
जवनें¹⁴जवन आवहु जुरि, दिल्लीपतिकी वैं फेरहु दुहाई ॥ ६७ ॥
दलें¹⁶पठयो जब अकबर३७१२, सम्मुह सामंत१८७१२कढि तब किलेसौं ॥
प्रधनें¹⁷ बिरचि तोरनपर¹⁸, भट निज सतसत्त७००जुत तिलतिल भो ६८
जाहि भरोसा जानत, अफगान सलेम३३१साह गढ अप्पो ॥
मस्तक संटें¹⁹ मानत, ताकौं सामंत१८७१यौं असिनं²⁰ तुट्टयो ॥ ६९ ॥
सुर्जन१९०१कोसत्कारहु, सबनृपन अधिक आनि अकबर३७१सों

आलसी के १ भण्डार में निकली २ उज्ज्वल रीति से ३ तुलना रहित (बड़ा) ४ गढ के बाहिर होनहुँ में ५ बिना चरख गाड़ी (नाली) मात्र ६ अपना घर निश्चय ही दुर्लभ जानकर ॥६२॥ ७ नायक ॥६३॥ ८ पत्ता जिन ॥६४॥ ९ बुजन तोप १० धुँआधानी नामक ११ कड़क बिजली नामक ॥ ६५ ॥ १२ सावधान होकर या कर्के १३ मार्जुन का पुत्र ॥६६॥ १४ यवन लोग इकट्ठे होकर जीव आवो १५ घाव ॥६७॥ १६ सेना १७ युद्ध १८ बाहिर के द्वारपर ॥ ६८ ॥ १९ मस्तक के बदले २० तरवारों से

प्रथित सुजस करिनिजपहु, अप्पनअकगान लोन उद्धारयो ॥६९॥
साइभट सहँस१०००संहरि, बिनुसीसहु बढ़ि मुगल बहु मानी ॥
कुलहहु१६न उज्जल करि, सोयो सामंत१८७१चौर भटसज्जा ।७१।

सतसत्त ७०० संग सुभटहु, जो बिरुदहु सेरसाह३२ सत्रु जई ॥७२॥
प्रभु रावरे कुल प्रथम, सुर्जन१९०।१चउ नेत्र अष्टि१६२४मित सकमैं
सत्तहि७हद अकबर३७१सन, लिखाइ गढ दै तदाश्रय लयो यौं ७३
राजा च्यारि४ सम्हारहि, भुग्गि सु रनथंभ होइ तस भेदी ॥
गढ दै पुनि आश्रय गहि,इम हुव सुर्जन१९०।१सहाय अकबर३७१ कै।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे सुरजनस्यामेरराजभगवन्तसिंहद्वारा नियमसप्तकपुरस्सरं रणातभँवरदुर्गस्याकबरसम्राडायत्तीकरणसूचनं १ समरकराकबरसंशीतिदूरीकरणार्थं भगवन्तसिंहस्य दूतवेषावृताकबरसम्राजः सुरजनान्तिकप्रापणं २ तादृशाकबरसम्राजः सुरजनहठावलोकेन तद्विहितानियमसप्तकस्वीकरणं ३ प्रतिज्ञापत्राप्तरणस्तम्भदुर्गेऽकबराधिकारकरणं प

तूटा ॥ ६९ ॥ १ प्रसिद्ध ॥ ७० ॥ २ वीरशय्या सोया ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ३ उस का आश्रय लिया ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुरजन का आमेर के राजा भगवन्तदास द्वारा सात नियम कराकर रणतभँवर का गढ बादशाह अकबर के आधीन करने की सूचना करना १ उस युद्ध करनेवाले अकबर का सन्देह दूर करने के कारण दूत के वेस में उस अकबर को राजा भगवानदास को हाडा के पास लेजाना २ बादशाह अकबर का दूत के वेस में सुरजन का हठ देखकर उसके कहे हुए सात नियमों को स्वीकार करना ३ अकबर से नियम पत्र पाए पीछे रणथम्भ के गढ को अकबर के आधीन

ष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥ आदितो नवाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

पहिलैं अमल कराइ पुनि, अकबर३७।१गढपर आइ ॥
रनथंभहि कतिदिन रह्यो, जोध स्वकीय जमाइ ॥ १ ॥
कुम्म१ बघेल२नतैं कियउ, सुर्जन१६०।१ अधिक प्रसन्न ॥
भूपहु सो अकपट[1] भज्यो, स्वामिधर्म संपन्न ॥
याहीं जिन नृप १६२४साक इत, भूप उदय जस भव्य[2] ॥
गयो जानि चित्तोरगढ, नगर बसायउ नव्य[3] ॥ ३ ॥
प्रथित[4] नाम तस उदयपुर१, ताके ढिगहि तड़ाग[5] ॥
रुचिर उदयसागर२ रच्यो, रान उदय जसराग[6] ॥ ४ ॥
उदयरानके सुत उदित, बीस२०प्रमित वरबीर ॥
जैठो१कुमर प्रताप२जँहँ, धर्म सहायक धीर ॥ ५ ॥
सगतासिंह२जगमाल३सम, अतिधृति१९मित सुत और ॥
अष्ट८भये कुलधर[7] अडर, जिनमें रन घनजोर ॥ ६ ॥
सगत२जग्ग३अगर४रु सगर५, पंचायन६गन७नाम ॥
कन्ह८रु लवनादिक करन९, कुलतानक[8] जसकाम ॥ ७ ॥
कुल तिनके तिन्ह नाम करि, अग्ग कहावत उत्त ॥
सगताउत्त[9]प्रमुख्य सब, जानहु इम जसजुत्त ॥ ८ ॥

करने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ निवासी १८९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ कपट रहित स्वामिधर्म से सेवन किया ॥ २ ॥ २ शुभ यश से ३ नवीन * नगर बसाया ४ प्रसिद्ध ५ तालाव ६ यश में प्रीति कारक ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ आठ पुत्र कुल बढानेवाले निर्भय हुए ॥ ६ ॥ ८ कुल को फैलानेवाले ॥ ७ ॥ ९ सगता

* मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि चित्तोड़ छूटने से पहिले सम्वत् १६१६ में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया और इसी सम्वत् में उदयसागर नामक तालाव बनाना प्रारम्भ किया सो १६१९ में समाप्त हुआ और सम्वत् १६२२ की वैशाख सुदि ३ को इस तालाव की प्रतिष्ठा हुई ।

किते उदयनृपकै कहत, जेठा१सुत जगमाल२ ॥
पै कछु हेतु अमोघ परि, भयउ प्रताप१सुवाल ॥ ९ ॥
पहिलैं हुव इत जोधपुर, मालदेव नृप नाम ॥
ताकै चउ४अकटे तनय, रीति सुनहु मभु राम२०३४ ॥१०॥

पादाकुलकम् ॥

जेठो चंद्रसेन१ तँहँ जानहु, पहु तस बंस भनाय प्रमानहु ॥
तनु छोरिय नृप मालदेव तँहँ, जरिय अछुत्त उमा रानी जँहँ ॥११॥
इम भट१बंधु२जोधपुर आये, पुत्र सदन जिम्मन पठवाये ॥
जिनदिवसन बंधुन कुमारजन, जाते सब अंतहपुर जिम्मन ।१२।
जाइ सिसुन इम असन चह्यो जब, तरजे चंद्रसेन१जननी तब ॥
भाखिय तुमहिं असन खिनभावत, पहु अबाहि मेरो सुत पावत ।१३।

उत आदि ॥ ८ ॥ १ सच्चा ॥ ९ ॥ १० ॥ २ मालदेव का देहान्त हुआ तव ३ अ-स्पर्श कीहुई उमादे नामक राणी जली ॥ ११ ॥ ४ जनाने में जीमने जाते थे ॥ १२ ॥ जब बालकों ने भोजन मांगा तव चन्द्रसेन की माता ने ५ धमकाकर कहा ६ भोजन करने का समय ॥ १३ ॥

॥ मारवाड के इतिहास में राव मालदेव का देहान्त सम्वत् १६१९ के कार्तिक मे होना लिखा है औ १ कुटुंब के बालकों को भोजन नहीं करानेवाली माता के ज्येष्ठ पुत्र को राज्य से वञ्चित रखना और बाल कों को भोजन करानेवाली माता के लघु पुत्र को राज्य बिठाने आदि कथा लिखी सो इस समय की नहीं है, किन्तु राव सूजा के समय की है. जिसका संक्षेप वृत्तान्त इस प्रकार है, कि राव सूजा को असाध्य रोग हुआ तव उस समय के समीपी सभी भाई एकत्रित हुए उस समय सूजा का बड़ा पुत्र बाघा कुमरपन में ही परलोक चलागया था और बाघा के पुत्र वीरम, गांगा आदि विद्यमान थे, जब जोधपुर के समीपी भ्राताओं के बालक जनाने में भोजन करने गये तव वीरमदेव की माता ने कहा कि मै भटियारी नहीं हूं सो इतने लोकों का भोजन बनाऊं यह सुनकर गांगा की माता ने उन बालकों को अपने स्थान पर लेजाकर भोजन कराया इसके कुछ दिन पीछे राव सूजा का देहान्त होगया, तव राज्य के हकदार वीरम को निकाल कर उमराव सरदारों ने विक्रमी सम्वत् १५७२ के कार्तिक में राव गांगा को जोधपुर का राजा बनाया, उस समय बगड़ी के ठाकुर जैता ने तिलक की सामग्री नहीं मिलने के कारण अपने हाथ के अंगूठे को चीरकर रुधिर से तिलक किया, तभी से जोधपुर के सिंहासन पर बैठते समय राजाओं को बगड़ीवालों के तिलक करने की प्रथा चली आती है ॥ और उस समय बगड़ी के ठाकुर जोधपुर के सिंहासन बैठनेवाले नये अधीश को निवेदन करते हैं कि आप को जोधपुर मुबारिक हो इसके उत्तर में अधीश कहते हैं कि तुमको बगड़ी मुबारिक हो.

यातैं मोहि नैंकहु[1] न अवसर, घनी भूख तो जाहु खाहु घर ॥
सौति अपर[2]ए सौतिवचन सुनि, पिक्खि बिमुख[3] जावत कुमरन पुनि
तिहिँ निजगृह लेजाइ जिमाये, असन[4] बिरचि बाहिर सिसु आये ।
निजजनकन यह सिसुन निवेदिय, कुप्पि[5] बिलोम प्रपंच[6] भटन किय ॥ १५ ॥

पठई कहि यह चंद्रसेन[१]प्रति, अबही पट्टमुहूर्त्त बिघ्न अति ॥
पट्ट गाहिय अच्छे छिन[7] पावहु, बासर[8] कछु ऐसैंहि बिहावहु[9] ॥ १६ ॥
इम खिजि भटन लगाइ रोक उत, सिसु भोजे[10] ताको बुल्ल्यो सुत ।
उदय[२]नाम मातुलगृह[11] हो वह, लालदेव सुत दूजो अघमह[12] ॥ १७ ॥
सो अतिजव बुल्ल्यो करभासन[13], आतहि भटन धर्यो नृप आसन ।
बगरीपति[14] जैताउत बंधव, न लखि त्वरासैं[15] तिलक बस्तु नव[16] ॥१८॥
उदय[२]भाल[17] तिहिँकाल असंकित, अंगुलिरुधिर काढ़ि किय अंकित[18]
अधिपति होत तास तिम हो उत, जबतैं तिलक करत जैताउत ॥१९॥
जिहिँमाता स्वकुमर भोजे जिम[19], अधम सु उदय[२]भटन नृप किय इम ।
तातैं चंद्रसेन[१]अग्रज तस, बिनुगाद्दिय रहिगो भावीबस ॥ २० ॥
अब मनापसासक तस अन्वय[20], भो नृप उदय[२]उहाँ अघ[21] निर्भय ।
तीजो[३]भ्राता सत्रुसल्ल[३]तस, भद्राजन[22] कुलभव[23] जानहु जस ॥ २१ ॥

इसकारण मुझको कुछ भी १ अवकाश (समय) नहीं है २दूसरी सौत ने पहिली ही सौतके ये वचन सुनकर ३भूखे जाते हुए बालकों को देखकर ॥१४॥ ४भोजन करके ५ क्रोध करके उलटी ६रचना की ॥१५॥ ७अच्छे समय में ८कुछ दिन ९बिताओ ॥१६॥ १० बालकों को भोजन कराया उसके पुत्र को बुलाया ११ मामा के घर था १२ पापी "यहां पापी कहने का कारण आगे बतावेंगे ॥ १७ ॥ १३ ऊंट पर बिठाकर शीघ्र बुलाया १४ बगड़ी नामक ग्राम का पति १५ शीघ्रता में तिलक करने की १६ नवीन वस्तु नहीं देखकर ॥ १८ ॥ १७ उदयसिंह के ललाट में शंका रहित अंगुली से रुधिर निकाल कर १८ तिलक किया ॥ १९ ॥ जिसकी माता ने अपने कुमरों को भोजन कराया १९ जिससे अधम उदयसिंह को उमरावों ने राजा बनाया ॥ २० ॥ २० उसका वंश मनाप में हुकूमत करता है २१ पापी २२ ग्राम का नाम. २३ कुल में उत्पन्न ॥ २१ ॥

ताको अनुजराम४चोथो४तँहँ, तिहिँ कुल मालवँ आमभ्करा जँहँ॥
दूजो२उदय२चउ४न बिच दारुनें, रागाहुव साधुन रोखारुनें ॥ २२ ॥
कलिमलजो इहिँ घोर कुमायो, अब कहियत अवसर तस आयो।
पहिलैं यह जब हुतो बालपन, जननी तब याकी सह परिजन ।२३।
जानलगी तीरथ या सुत जुत, दासिन रथ वृख इक१तब मृत हुतें।
स्व प्रतिसीम मग जँहँ बहु सासन, नियति कियउ तँहँ तिहिँ वृख नासन ॥ २४ ॥
दस१०दस१०कोसहिरायाचहुँ४दिस, नमिल्योकहुँपतिग्रामभईनिस
सासन ग्राम मिलो मंडल सब; तिनमैं नमि इक१वृख मंग्यो तब ।२५।
कहुँ द्विज१कहुँ चारन दुंविधि करि, मिलि रु मूढ बोल्ले देहैं मारि।
भेजैं हमन तुनहु आजूँ भनि, बालिसं वके बिबिध परज्यौं बनि ।२६।
मुल्लहु दै रानी वृख मंगिय, सोहु दयो न नटेहि कुसंगिय ॥
रत्ति रही तत्थहि तब रानिय, अह दूजे२अनुगनें वृख आनिय ।२७।

१ उस रामसिंह * का कुल मालवे में आमझरा नामक नगर में है. २ भयंकर ३ श्रेष्ठ पुरुषों पर क्रोधित ॥ २२ ॥ ४ इसने घोर पाप किया ॥ २३ ॥ दासियों के रथ का एक बैल ५ शीघ्र मरगया ६ अपनी सीमा के मार्ग में ७उदक के बहुत ग्राम थे वहीं पर ८ भाग्य ने बैल को मारा ॥ २४ ॥ ९ अपने पति का कोई ग्राम नहीं मिला १० उस प्रान्त में सब उदक के ग्राम ही मिले ११ नम्रता करके एक बैल मांगा ॥ २५ ॥ १२ खोटी सलाह करके १३ चगल १४ मूर्ख ॥ २६ ॥ १५ खोटे संगवाले १६ दूजे दिन सेवकों ने बैल आना ॥ २७ ॥

* मारवाड़ के इतिहास में लिखा है कि विक्रमी सम्वत् १६१९ में राव मालदेव का देहान्त हुआ जिस पहिले ही मालदेव ने अपने बड़े पुत्र रामसिंह जिसको रामराजा भी लिखते हैं देश बाहिर निकाल दिया क्योंकि रामसिंह पिता (मालदेव) को मारडालना चाहता था, बाकी १९ पुत्र रहे जिन में बडा उदयसिंह था उसको माता की अप्रसन्नता के कारण मारवाड़ से निकाल के छोटा भाई चंद्रसेन गद्दी बैठगया, परन्तु रामसिंह और उदयसिंह, बादशाह अकबर के पास पुकारू हुए इसकारण बादशाहने सेना भेजकर चंद्रसेन को दूसरे ही वर्ष निकाल कर जोधपुर को खालसे कर लिया, चन्द्रसेन शिवाणे में रहकर शाही सेना से १६३६ तक लड़ता भिड़ता रहा, फिर उसका देहांत हुए पीछे सम्वत् १६४० में बादशाह अकबर ने राजा का पद देकर उदयसिंह को जोधपुर देदिया, जिसका इतिहास यहां आगे लिखा है। और इस चन्द्रसेन का वंश इस समय अजमेर के जिले भणाय में है ॥

जब आदरवारी दासिन जुत, द्वारावति सु गई रिसमैं द्रुत[1] ॥
रानीकोहि कहत कति वह रथ, पै निज देसह्न दुक्ख लह्यो पथ ।२८।
इहिँसिसु उदय[2]प्रसू दुख इक्ख्यो, सु न्रृप लैन बदला अबसिक्ख्यो ।
जिते नटे सासनवारे जन, सासन तिन्ह लियँ छिन्नि क्रोधसन ।२९।
मरुधर रीति यहै हठ मानैं, इक[3]दुख सब सासनधर आनैं ॥
जातैं द्विज[4]चारन[4]मुख सब जन, संगी हुव तिनके तन[1]मन[2]सन ३०
पुर खैरवा हुतो जब पापी, थिर लै दत्त[5] कुमति तँहँ थापी ॥
सुनत मिले सासन[6]जीवी सब, तिन्ह इतरँन[7] दत्तहु छिन्नैं तब ॥३१॥
खट[8]दरसन इम अखिल खिजाये, इहिँ सिर मरन आउवा आये ।
करि इक सिवमंदिर बिचमैं किर[9], सब बैठे लंघत[10] धरनाँ सिर ॥३२॥
चंपाउत गोपाल मुखनैं[11] चहि, सुभटन न्रृप बरज्यो कुबैन सहि ।
मन्नि न तदपि कह्यो उत धरि मन, धरनाँ तुमहि दिवायो धुत्तनैं[12] ३३
यह बिखतरु[13] तुम कुमति उपायो, अरु खैहो[14] ब फलहु तस आयो ।
लंघत[15] दिन सप्तम७इत लग्गो, भ्रम तब जियन[16] सबन मन भग्गो ३४
अक्खयराज बारहठ अप्पन, सुंध्याहरपति बुल्लि स[17]धन ।

१ शीघ्र ॥ २८ ॥ इस उदयसिंह बालक ने २ माता का दुःख देखा था ॥ २९ ॥ ३ सांसणवाले एक का दुःख सबका दुःख समझते हैं ४ ब्राह्मण, चारण, आदि सब लोक साथी हुए ॥ ३० ॥ उस समय वह पापी उदयसिंह खैरवा ग्राम में था ५ सांसणों को लेने की कुमति करी सो सुनकर ६ सांसणों से जीनेवाले सब लोग जब एकत्रित हुए तब ७ अन्य लोकों के उदकग्राम भी छीन लिये ॥ ३१ ॥ इस कारण सभी ८*खटदर्शनों को क्रोधित किये सो इस (उदयसिंह) पर मरने को आउवा पुर में आये और ९ निश्चय ही एक शिवमन्दिर का बीच में करके १० उपवास करके धरणा देने को बैठे ॥ ३२ ॥ ११ गोपालदास चांपाउत आदि १२ तुम ही धूर्तों ने धरना दिवाया है ॥ ३३ ॥ १३ विष का वृक्ष १४ अब खाओगे १५ उपवास करते १६ जीने का भ्रम ॥ ३४ ॥ १७ राजा ने

* मारवाड़ में संन्यासी (रामावत, नीमावत, हिन्दू साधु, जो विशेष कर देवमंदिरों के पुजारी भी होते हैं) १ ब्राह्मण २ चारण ३ जती (जैनमत के साधु) ४ फकीर (यवनमत के साधु) ५ देवताओं के पुजारे क्षत्रिय, जैसे रामदेवजी के पुजारे तँवर वंश के क्षत्री हैं ६ इन छहों को खटदर्शन कहते हैं अर्थात् ये छहों दर्शन करने योग्य हैं, इन्हींको डिंगळभाषा में खटभ्रन भी कहते हैं ।

भेज्यो वह रु कह्यो इम भाखहु, रसा अमंतु लै रु जिय राखहु ।३५।
अपराधिन संगति पै उज्झहु, गिनि तिन्ह हेय देह तजि गुज्झहु ॥
अक्खय इतर पठावन आक्खिय, राजा वहहि भेजि हठ रक्खिय ३६
पटगृहतैं सु निकासि नयँ पावन, स्वामि निदिष्ट चल्यौ सखुझावन
जब नृपको दुंदुभिवादक जो, संगहि गय गोविंद नाम जो ॥ ३७ ॥
अक्खय जब धरनाँ बिच आयो, जाचकजूह बिविध बिरुदायो ।
खुल्ले बिरुद चारन रु बिप्र रहु, छोरन बपुनैं भये हम छिप्रहु ॥३८॥
अक्खय सब स्वामीजब ऐहैं, वसुधेसहि तब खेल बतेहैं ।
अहँ लंघाइ इते प्रभु आये, स्वजन तदपि हम आधिक सुहाये।३९।
अक्खय कहिय मंडि बिच आसन, समुझावन आयो नृप सासन ।
अब पै मरत१ जाँति१ द्विज१ आदिक, मरन१ हित नर१ जावन१ पा-
सादिक१ ॥ ४० ॥
इम कहि ह्रीत अक्खयहु इनमैं, रहिगो मरन धरनधारिनमैं ॥
गह्यो मरन बादकैं गोविंदहु, उत यह सुनत कुप्पि नरइंदहु ।४१।

अपने बारहठ सूँधियावाड़ के पति अखैराज को बुलाकर जिनसे अपराध नहीं है वे अपनी १भूमि लेकर जीव को रक्खो अर्थात् मत मरो ॥३५॥ परन्तु अपराधवालों का साथ २ छोड़ दो उन अपराधियों को ३ त्याज्य जानकर ४ दूर से देह को छोड़ने दो ५ अखयसिंह ने दूसरे को भेजने के लिये कहा परन्तु राजा ने हठ करके उसीको भेजा ॥ ३६ ॥ ६ डेरे से ७ पवित्र नीतिवाला ८ स्वामि की आज्ञा से ९ राजा का नगारची (ढोली) ॥ ३७ ॥ १० चारणों के याचकों के समूह ने अखैसिंह को ११ उत्साह बढानेवाली स्तुति से बिरुदाया १२ हम शीघ्र ही १२ शरीरों को छोडनेवाले हुए हैं, हे अखैसिंह जब सब का स्वामि आवेगा तब उस १४ राजा को १५ इतने दिन लंघन कराकर आप इधर आये हो ॥ ॥ ३९ ॥ अखैसिंह ने सबके बीच में १६ आसन लगाकर कहा १७ अपनी जातिवाले (चारण) और ब्राह्मण आदि मरते हैं इसकारण मरना ही अच्छा है १८ महलोंवाले (राजा) के पास जाना अच्छा नहीं; अथवा महलों में जाना अच्छा नहीं ॥ ४० ॥ १९ लज्जित होकर २० धरणा लगानेवालों में रहगया २१ गोविन्द नामक ढोली ने भी मरना ही स्वीकार किया २२ राजा भी क्रोधित हुआ ॥ ४१ ॥

भेजि कटार कहाई निर्भय, यहै तुमहु मारहु गुदै अक्खय ॥
इम लखि लयो सुहु उठि बारहठ, हुव प्रातहि अब मरन कौर हठ ॥४२॥
जरठ इक३खाटिक४आयो जहँ, तिहिँ प्रातहि छुव मरन सुन्यौँ तहँ ॥
जो चारन भाजिगो घर डरजुत, सर्दन परनि आयो तव तस सुत ॥४३॥
पुच्छ्यो तिहिँ वह करत प्रवेसहि, दैवविलोम५ बच्यो किम देसहि ॥
किम हुव साम६ उलट्यो धरनौं किम, जंपहु तात उदंत७ बन्यौं जिम ॥४४॥
कीर्ति जनक लुल्ल्यो खय होतैं, मरिजैवो न बन्यौं सुत मोतैं ॥
आलय मैं यातैं भजिआयो, सह दुलही८ तू दुलह सुहायो ॥४५॥
यह सुनि लेपित९ छुराइ सु अंचल, चढि देहलि दुलही तजि चंचल ॥
सुरजन बसन१०मोर कंकन सह, आयो भजि धरनौं तस सुत वह ॥४६॥
अहैं खट११लंघि दिवस सप्तम७इत, छिप धरि छुव प्रातहि मरनो हित
विविध सुरस भोजन बनवाये, इकठौँ सब जिम्मन जुरिआये ॥४७॥
पंति बनत वह दुलह पैइट्ठो१२, हठ करि नर्म१३ कतिन हसि दिट्ठो ॥
परिवेसैन१४ पैवहु१५ इम अक्खय, पिता१पुत्र२ए हुव२हि असनैं१६ प्रिय ॥४८॥
पत्तैरि१७ हुवरतातैं परिवेसहु, इक लें२जाइ खाय इक१एसहु ॥
इम रिस दुलहु खाटिकैंहिँ१८ आई, पत्रावलि द्वैरही परुसाई१९ ॥ ४९ ॥
उमामूर्ति२० थप्पी सु पूजि अब, सप्तम७दिन वित्तत जिम्मे सब ॥
अंबाकी प्रतिमाके अग्गैं, ज्वलन हविर्ग्रूप२१ धूप जहँ जग्गैं ॥५०॥

१ हे अर्जुनसिंह यह गुदा में मारना २ हठ के समूह से प्रभात ही मरना निश्चय हुआ ॥ ४२ ॥ वहां पर एक ३ बूढा खड़िया जाति का चारण आया ४ उलटे भाग्य से उसका पुत्र ब्याहकर आया ही था ॥ ४३ ॥ ५ देश का उलटा भाग्य कैसे बचा ६ मेल कैसे हुआ ७ हे पिता जैसा वृत्तान्त हुआ होवे वैसा कहो ॥ ४४ ॥ ८ लज्जित ॥ ४५ ॥ ९ लज्जित होकर वह गठजोड़ा छुटाकर १० उन आगे जानेवाले खड़िया चारण का पुत्र ॥ ४६ ॥ ११ छः दिन को लांघन करके इधर सातवें दिन ॥ ४७ ॥ १२ पंक्ति में घुसा १३ हँसी करके १४ परोसने के १५ समय की १६ भोजन के प्यारे हैं ॥ ४८ ॥ इसकारण इनको दो १७ पत्रावली परोसो १८ खड़िया चारण के बुड्ढे को इसकारण क्रोध आया और १९ दो ही पातलें परोसाई ॥ ४९ ॥ २० देवी की मूर्ति २१ अग्नि में घृत का धूप ॥ ५० ॥

वाद्य पटह¹दुंदुभि²मुख वग्गैं, लक्खन विध पद्यन³ नुति लग्गैं ।
भीरु सुनत सिंधुव स्वर भग्गैं, मरुप⁴ उदय पीठहु⁵ डगमग्गैं ॥ ५१ ॥
अस्त्रन मैं हु उमा आवाहन⁶, करिकरि कढ्डि जजन⁷ लग्गे जन ॥
बैठैं सबन निसा सु बिहाई, इम इच्छित बेला⁸ ढिग आई ॥ ५२ ॥
अर्द्धउदित रवि जानि तजन असु⁹, सिवगृह¹⁰ सिर थप्पो गोबिंद¹¹ सु ॥
खिन्न¹² रहि मैं न लखौं इतनौं खय, इम गल छेदि गिर्यो सु इनोदय¹³
पिक्खि गिरत गोबिंदहिं दृढपन, जिततित मग्गनलगे जाचकजन ॥
वह खाटिक दुल्लह बिच आयो, बप्प¹⁴तनय²जुग²मरन बतायो ५४
पहमेरी¹⁵ जनककी²है यह, बिधि इम छिन्न भिन्न किय विग्रह¹⁵॥
सवन अरज किय इष्टदेवसन, जिम हम मरत संग¹⁶ नहिं द्वै²जन ५५
जीवहिं इक¹दुरसा²अढ्ढा जँकि¹⁷, तो इहिं नृपहिं लजावे¹⁸ खल तकि ।
जीवहिं यह दुल्लह¹दूजो²जिम, तियजुत आयु समय बिलसैं तिम ५६

उमा¹⁹ सवन बिन्नति मन्नी यह, जुग²ए बचे छिन्नभिन्नहु जह ॥
जन खिल मृत¹घायल हुव जानहु, मानव लक्ख१००००० अधिक तहँ मानहु ॥ ५७ ॥

---

१ ढोल नगारे आदि २ छन्दों में देवी की स्तुति होती थी ३ सिन्धवी रागिनी के स्वर लगने से अर्थात् बडे राग के दोहे लगने से कायर भागने लगे ४ मारवाड़ के राजा उदयसिंह का ५ सिंहासन हिलने लगा ॥ ५१ ॥ अस्त्रों में देवी का ६ आव्हान (निमन्त्रण) ७ पूजन करने लगे ८ चाहाहुआ समय ॥ ५२ ॥ आधा सूर्य उदय होनेपर ९ प्राण छोडना जानकर १० शिव के मन्दिर के शिखर पर ११ उस गोविन्द नामक राजा के नगारची (नगारखाने की नौकरी करने वाले) ढोली को बिठाया १२ उस गोविंद ने सोचा कि मैं बाकी रहकर इतना नाश नहीं देखूं इसकारण गला काटकर वह सूर्य १३ उदय होते ही गिरा ॥५३॥ वह खेड़िया दुल्हा सेवक बीच में आया और १४ पिता और पुत्र दोनों का मरना बताया अर्थात् एक घाव अपने नाम का और एक पिता के नाम का दोनों अपने ही शरीर पर मारे ॥ ५४ ॥ १५ शरीर का १६ दो जने साथ नहीं चले अर्थात् नहीं मरे ॥ ५५ ॥ एक तो दुरसा आढा १७ गिरकर जी जावे १८ तो राजा को दुष्ट देखकर लज्जित करै ॥ ५६ ॥ १९ देवी ने ॥ ५७ ॥

बपु गोविंद तज्यो बिनुबाचक, जिहिं कुल हम किन्नों निज जाचक
लखि बध यह फाटिगो सिवलिंगहु, हठि नृप बहुरि भत्त दिय ढिंगहु
भूपहिं सुनि मरतहु नहिं आये; पीठिबिदारन अनुगँ पठाये ॥
जब पल्ली पुरपति परिकरजुत, अढि गोपालदास चंपाउत ॥ ५९ ॥
अड्यो रहि रु रोकि नृप अनुगन, पीठि भजावतभयो निबहि पन ।
इम खल नृपपल्लीहु उतारी, धीर सु बहि गोपाल सु धारी ॥ ६० ॥
संग निजहि लेकैं जाचक सब, तजि पल्ली मेवार सु गो तब ।
उदयरान जो पट्ट पाहि लिय, सु सबन बंटि स्वयंमत बिलासिय ६१
इम गोपालदास चंपाउत, जाचक अखिल निबाहे जसजुत ।
जब खल नृप मरिहै तब जैहैं, द्विज१सूतन२न पुनि थान दिवैहैं ॥६२॥
करि भुव त्यागी बारहठ संकर२, बीकानैर तबहि गो बुधवर ।
पाइ पल्लोधि१ग्राम दुवसतदस२१०, खिल खट६वरन जिवायो ले जस
परदुखदुखित देखिइहिं भूमिपं,पुरनागोर२त्रिलक्ख३०००००पटादिय
अखय१मर्यो संकर२कढिगो इम, तहँ गल भिन्न वच्यो दुरसाँ
ऽतिम ॥ ६४ ॥
न हुव नाममालानृपन्यारो, इक संदूँ जु भदोरेवारो ।
बहुदिन खल सु जातिके बाहिर, जिहिं अपराध रह्यो जगजाहिर ६५

१गोविंद ने बिना बोले शरीर छोड़ा "गोविंद को मन्दिर के ऊपर बिठाया था कि सूर्य उदय होने की खबर देवे तो सब मरें, सो गोविंद ने मुख से कहने में सब के मरने का पाप समझा इसकारण मुख से कुछ नहीं कहकर सूर्य उदय होते ही आप अपना गला काटकर मरगया" उस गोविन्द के कुल को हम (चारणों) ने याचक बनालिया २ फिर भोग का साता दिया ॥ ५८ ॥ ३ निकालने को ४ सेवकों को भेजे ५ पालीपुर का पति ६ परगह सहित ॥ ५९ ॥ ७ राजा के सेवकों को ८ इसकारण उस दुष्ट राजा ने पाली उतार ली ॥ ६० ॥ ९ स्वमत्त होकर ॥ ६१ ॥ १०चारणों को ॥ ६२ ॥ ११ भूमि छोड़कर १२ [illegible] १३ चारों रहे जिन सवर्णनको जिलाए "मारवाड़ में जिनको षटदर्शन कहते हैं, जिनको षटवरन भी कहते हैं" ॥ ६३ ॥ १४ राजा ने १५ अचयसिंह मर गया इसकारण शंकरदान निकल गया १६ दुरसा आढा ॥ ६४ ॥ १७ सांदू शाखा

॥ दोहा ॥

पापी नृप हुव जोधपुर, इम सु उदय अभिधान ॥
नामतज्यो जाको नरन, मानि अवांच्य समान ॥ ६६ ॥
इन१२मित सुत हुव उदयके, कुलधर तहँ जसकाम ॥
सूर१कृष्ण२दलपति३सहित, माधव४सगत५सनाम ॥ ६७ ॥

॥ वैतालः ॥

भगवानदास६रु रतन७पुनि जगनाथ८भूपति९नाम ॥
नव९ए भये कुलवृद्धि जनक रु महिप चउ४प्रभुराम२०३।४।
पहु सूर१रु पट्ट रु कृष्णकुल नृप कृष्णगढ अब आँहिं ॥
रतलामआदि नरेस दलपति३वंस मालवमाँहिं ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

माधव४चोथो४महिप प्रथित हुव पुर पीसंगनि ।
महर्यों१जुन्न्या२प्रमुख नदी खारी तस कुल खानि ॥
ए चउ४नृप खिल इतर पंच५कुल अबपहिचानहु ।
सगतसिंह५खैरवा सु प्रभु१मि२०३।४प्रमानहु ।
गोइंदगढ१रु बडली२बहुरि बज्जूथल३खरवा४दि बहु ॥
भगवानदास६कुल बस भनत सेस त्रिक११३ज ग्रामन सुपहु६९

दोहा ॥

लहैलुट्टी१२७अरु चोसला१८, निंडोठी१९प्रमुख नाम ।

का चारण भदोरा नामक ग्रामवाला राजा को छोडकर चारणों की नाममाला में शामिल न हुआ वह दुष्ट बहुत दिन तक जात बाहर रहा ॥ ६५ ॥ १ उदयसिंह नामक २ नहीं कहने योग्य समझकर लोकों ने उसका नाम लेना छोडदिया ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ३ पिता के कुल की वृद्धि करनेवाले ४ चार राजा हुए ५ हे प्रभु रामसिंह! ६ अब कृष्णगढ में हैं ॥ ६८ ॥ ७ प्रसिद्ध ८ आदि ९ उसके कुल की खान खारी नदी के पास है अर्थात् उपरोक्त सब ठिकाने खारी नदी के समीप हैं १० हे प्रभु रामसिंह! सगतसिंह के कुल को खैरवा में जानो ११ बाकी के तीन पुत्रों के वंशवाले ग्रामों के ठाकुर हैं ॥ ६९ ॥ १२ ग्राम का नाम है जिसको लैवोटी कहते हैं १३ बीठोठी आदि

क्रमतैं ए नव९उदयकुल, रमों भजत अविरामैं ॥ ७० ॥
पीछैं छिप्रहि पाप पक्कि, मरहिं सु उदय महीप ॥
तखत लहहिं सुत सूर१तस, दुँरित दूर कुलदीप ॥ ७१ ॥
अकवर३७१निज रनथंभ इत, थप्पि रु जावत थान ॥
पठयो जित्तन हड्ड६१पहु, गढवारी गुडवान ॥ ७२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिपास्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे चित्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहस्योदयपुराभिधनवनगरोदयसागराख्यतडागनिर्माणं १ उदयसिंहस्य विंशतिपुत्रेषु नवसूनुसंततिकथनं २ योधपुराधीशरावमालदेवस्य मृतौ पट्टपुत्रचन्द्रसेनदायापहृतिपुरःसरं तदनुजोदयसिंहसिंहासनसमारोहणं ३ मातुस्तीर्थाटनसमयकुपथ्यदानास्वीकारकुपितोदयसिंहस्य ब्राह्मणचारणादिभूम्यपहरणं ४ धरापहरणकुपितब्राह्मणचारणादेराउवाभिधग्रामेऽनशनव्रतोत्तरसात्मघातेन लक्षमनुष्यमरणं ५ अवशिष्टब्राह्मणादीनां गोपालदासचाँपावत

---

१ लक्ष्मी का सेवन करते हैं अथवा क्रीड़ा करते हैं २ निरन्तर (विश्राम रहित) ॥ ७० ॥ ३ शीघ्र ही इस पाप का फल पककर ४ पाप दूर करके ॥ ७१ ॥ ५ हाडों के राजा को ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के प्रसंग हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा चलाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में चित्तौड़ के महाराणा उदयसिंह का उदयपुर नामक नवीन राजधानी और उदयसागर नामक तालाब बनाना १ उदयसिंह के बीस पुत्रों में नौ पुत्रों के कुल की वृद्धि का कथन २ जोधपुर के राजा मालदेव का शरीरान्त होने पर पाटवी का हक मिटाकर छोटे उदयसिंह का राजा होना ३ माता के तीर्थाटन समय कुपथ्य देना अस्वीकार करने के कारण क्रोधित होकर उदयसिंह का ब्राह्मण और चारण आदि की उदक भूमि उतारना ४ इन ब्राह्मणादिकों का क्रोधित होकर आउवा ग्राम में अनशन व्रत का धरना लगाकर बहुत मनुष्यों का आत्मघात करना ५ शेष ब्राह्मणों को मेवाड़ में लेजाकर गोपालदास चांपावत का अपना

कृतखेदपाहनयनेन निर्वाहकरणं ६ बीकानरेशदत्तदशोत्तरद्विशत-२१०ग्रामप्रदानेन बारहठशंकरदानस्य षड्वर्षापालनं ७ उदयसिंह नृपतिपुत्रद्वादशके नवानां वंशवृद्धिवर्णनं तेषु च चतुर्णां राज्यकरणं सर्वेषां च वंशजस्थानसूचनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥ आदितो नवत्यु त्तरशततमः ॥ १९० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९०।१इम जिन आष्टि१६१४सक, सत्त वचन अनुसार।
लै आश्रय मुगलेस६कौं, दिय रनथंभ उदार ॥ १ ॥
सर्ज भरोसाके सुभट, थप्पि अचल रनथंभ ॥
पुर दिल्लिय प्रस्थानको, अकबर३७।३किय आरंभ ॥ २ ॥
साह कहिय तब सुर्जन१९०।१हिँ, जो गुडवान विजेय ॥
जो जयकरि आवहु तुमहिँ, देस इष्टं तव देय ॥ ३ ॥
कुम्महिँ तब सुर्जन१९०।१कहिय, साह बलहु कछु संग ॥
मंगैं वा नहि मंल मत, अप्प बदहु नय अंग ॥ ४ ॥
कुम्म कहिय जो नृप करहु, इच्छितदेसनंआस ॥
चित्त सहाय न तो चहहु, पौरुष करहु प्रकास ॥ ५ ॥

हरिकम् ॥

जवँकरि करि सिक्ख तवहि सुर्जन१९०।१जवनेसतैं ॥
पहिलैं बुंदिय पधारि दल सब लिय देसतैं ॥

और से निर्वाह करना ६ बीकानेर के राजा के दिये हुए २१० ग्रामों को देकर बारहठ शंकरदान का खटवर्ष का पालना ७ राजा उदयसिंह के बारह पुत्रों में नौ का वंश वृद्धि करना और उनमें चार का राजा होना तथा सबके वंश के स्थानों की सूचना करने का सातवाँ ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ १९० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ तैयार करके ॥ २ ॥ २ वाञ्छित देश ३ फिर देवेंगे ॥३॥ ४ बादशाह की सेना भी ॥ ४ ॥ ५ वाञ्छा कियेहुए ६ पराक्रम ॥ ५ ॥ ७ शीघ्रता से

दूदा१११अरु भोज१९१२दुवरहि रच्छक धरि देसमैं ॥
सूरहु कति तिन्ह सहाय रक्खिय अवसेसमैं ॥ ६ ॥
नवबय गृह रक्खि इमसु माइ पयनमैं नम्यौं ॥
सुर्जन१९०२समुचितै अनीकैं संगत पुनि संक्रम्यौं ॥
रोप रु दग अष्टि१६२५लगत संवत ऋतुराजमैं ॥
हंकिय इम हड्ड६१नृपति कोबिदैं जयकाजमैं ॥ ७ ॥
बारी गढ गय सबेग गंजत गुडवानकौं ॥
घेरि रु जरि नालि जाल मंडिय घमसानकौं ॥
लोपन गढ गोलन जर तोपन दगि लग्गयो ॥
मच्छत भरमार भारै भूतल डगमग्गयो ॥ ८ ॥
कसमसि फनदेस सेस१फुंकारि हुव कुंडली ॥
त्रासत किरि जास२मचाकि जानुनबिच टुंड ली ॥
पत्थरनिभ अंग समिटि कच्छप३चिपटो पर्यो ॥
प्रोथित अतलौ१दिपुट७न संकट घन स्वीकर्यो ॥ ९ ॥
गोलन बमती प्रलंब नालिन आरि भू ग्रसैं ॥
निट्ठिन नरहल्ल१गज टल्ल२न पुनि निक्खसैं ॥
मानहु बनि ग्रासकैं निजनासक निगिलैं मही ॥
कट्ठन इत जानि निज कि पीलुंव प्रबिसे पैंही ॥ १० ॥

---

१ धाकी ॥६॥ २ उचित ३ सेना साथ लेकर ४ चला ५ वसन्त ऋतु में ६ चतुर ॥ ७ ॥ ७ तोपों की जाली लगाकर ८ युद्ध रचा ९ तोपों की भरमारी के भार से ॥ ८ ॥ १० फणों को हिलाकर शेषनाग ११ अपने अंग को कुण्डलाकार करके १२वराह को त्रास देने लगा १३ वराह ने उससे मचककर १४ घुटनों में १५ तुण्ड कर ली १६ अपने अंगों को समेटकर कच्छप पत्थर के समान चिपटा होगया १७ प्रसिद्ध अथवा घोड़ों (घोड़ों की दौड़) से १८ अतल आदि नीचे के लोकों ने ॥ ९ ॥ १९ गोले उगलती हुई लम्बी तोपों के पहियों को २० सो मानों अपना नाश करनेवाली जानकर भूमि उन तोपों का ग्रास करके निगलती है और २१ हाथी उनको अपनी जानकर घुसे हुए २२ पहियों को निकालते हैं ॥ १० ॥

जाम१हु इक१ठाम दगत तोपन पकैं जथा ॥
परिपरि छिति दूर पूर पलपल पलटैंप्रथा ॥
संतत[2] तम रत्ति१दिवस२घैंत्ति[3] बिवस संकुल्यो ॥
हैर१न गढकेर२न मन आँन्हिक[4] बिधिमैं डुल्यो ॥ ११ ॥
भासत इक धुंधि[5] भू१नभर्प्रसरीभई[6] ॥
दिनकर[7] उपरागं[8] मनहुँ ख[9] ग्रसि प्रथनौं[10] दई ॥
दिग्गज[11]१ सुख ईह न रत चीहैं[12] करत दिग्गजीर२ ।
लीह डरत श्रीह भरत सीहैं[13] परत ज्यों लजी ॥ १२ ॥
पावत इक१ हत्थिय गढ तोपन उडिके परे ॥
पावत उत२ पंथ परन दुग्ग[14] बैरन[15] जे परे ।
बाहिर कति गौडनगन सौप्तिकैं[16] रन बित्थरैं ।
सुर्जन१९०१ भट सज्जित[17]करि लज्जित तिन्ह संहरैं ॥ १३ ॥
बावन ५२ दिन हड्ड६१ लरत गढबिच बल वित्तयो ॥
जोधन रतिवाहहु[18] तनि गौडप[19] नहि जित्तयो ।
कोटहु ढहि ठामठामं पैठन पदवी[20] करी ।
निश्रेनिन दै तब नृप उच्च चढन उच्चरी ॥ १४ ॥
सासकैं[21] सह व्याकुल तब बारीगढ सूर है ।
दुर्जन इम दै कहाइ सुर्जन१९० रन दूर है ।
तो हम बचिबो बिचारि संभरैं[22] सरनौं तकैं ।

---

१ रीति २ निरन्तर ३ दिन में ही रात्रि घालकर अंधेरा भरगया ४ अंधेरा हो-जाने के कारण सन्ध्या करना भूलगया ॥ ११ ॥ ५ अंधेरा ६ फैली हुई ७ सूर्य के ८ ग्रहण में मानों ९ खग्रास का १० विस्तार दिया ११ दिग्गजों को सुख की इच्छा नहीं होने से दिग्गज की स्त्री १२ चीख मारने में रत हुई, नगारों के उत्कट शब्द से सीमावधि डरन लगी १३ जैसे सिंहके ऊपर पड़ने से लज्जित होवे तैसे वे दिशाओं की हथनियें लज्जित हुई ॥ १२ ॥ १४ गढ के १५ कोट १६ रातिवाह १७ सजे हुए ॥ १३ ॥ १८ रात्रि का युद्ध १९ गौड़ क्षत्रियों का पति २० मार्ग (पग डण्डी) ॥ १४ ॥ २१ मालिक सहित २२ चहुवाण का शरण

अप्पहु गुडवान तउ न अप्पहु इम ओदकैं ॥ १५ ॥
जो अब बिगरैं न मान१ थानहु नहि जाइ२ तो ।
अप्पहिं प्रनमैं चुहान गौडनगन आइ तो ।
सुर्जन१९०।१ यह सुनि बिचारि गौडन मत स्वीकरयो ।
चीरन गढ़ बीरन कति धीरन तँहँ उच्चरयो ॥ १६ ॥
भाखिय नृप मारन१ सन धारन सरनाँ२ भलो ।
चारन सुनि कारन इन्ह लार न किम लैचलो ।
अप्पन अरजीसन इन्ह सासहु भुव अप्पिहै ।
थान जु गुडवान सु सुनि गौडन घर थप्पिहै ॥ १७ ॥
अक्खि तँहँ राम१८९।२ अनुज पुच्छहु पहिलैं पहूं ।
लावहिं१ छिग कै इन्ह हनि आवहिं२ भनिये लहूं ।
संभर सुनि बिन्नति लिखि आसय लिय साहको ।
लावन१हनि आवन२ सन सूचिय जस लाहको ॥ १८ ॥
पुब्बहु त्रय३ बेर कटक्क गौडनपर प्रेरयो ।
हटिहटि उलटो गयो सु काहुन जय हेरयो ।
काहु न सित दम्मन व्यय कोसनसन लग्गयो ।
भी करि रन गौडन मन गब्बन तउ भग्गयो ॥ १९ ॥
सुर्जन१९०।१ तिन्ह लावन१हनि आवन२ दुव२स्वीकरैं ॥
तो अब गहिलावन तिन्ह धी हम जह महीधरैं ॥
साहहु यह सोधि रीति सुर्जन१९०।१प्रति सूचई ॥
आनहु गहि तो इम आति जानहु जस है जई ॥ २० ॥
लखि यह फ़रमान नृपहु गौडनदल लेखयो ॥

आप गुडवान नहीं होंगे इसकारण १डरते हैं ॥ १५ ॥ २ नमस्कार करें ॥ १६ ॥ ३ हलकारों से कारण सुनकर ॥१७॥ नहिके ४ राजा से पूछा ५ शीघ्र ॥१८॥ किसीने भी ६ न्यून खर्च नहीं किया ७ भय ॥ १९ ॥२०॥ ८ गौडों को पत्र लिखा

दै बच निज इष्ट[1] उनहिँ अप्पहु लिखि त्यौँ दयो ॥
गौडहु तजि बारियगढ नतें[2] तब नृपपैं गये ॥
भनिभन्ति सरनौं स्वकीय बिन्नति रचतेभये ॥ २१ ॥
गौडन तिन्ह दै बिसास भूपहु गढमैं गयो ॥
अकबर३७।१ध्वज गहि आन फेरत जब उन्नयो[3] ॥
नृप तँहँ निजनाम पोलि उच्छ्रित[4] इक१निर्मई ॥
भो[5] तिम दिनदिन बिसेस बारियगढकी भई ॥ २२ ॥
पोलि[6]१सु बनवाइ पतित साल२हु सुधराइकैं[7] ॥
लक्खनमित जनपद[8] कर जन पद कर लाइकैं ॥
घन जिम जयके निसान[9]१दुंदुभि घुरवाइकैं ॥
टल्लन[10]१थरकाइ दुर्ग चामर२ढुरवाइकैं ॥ २३ ॥
गौडनजुत हंकिय इम जय करि गुडवानमैं ॥
दिल्लिय पहुँच्यो उदार प्रतिपल अतिमान[11]मैं ॥
दिल्लिय बिच थान[12] यहाँ सो न लियउ संभरी ॥
बाहिर करि दल मुकाम निर्भय तिथिही बरी ॥ २४ ॥
जानिय बिनुबंधन लखि गौडहिँ पकरैं जथा ॥
पातल[13] कबहू खिजैं हु अप्पन कुलकी प्रथा ॥
यौं लखि भुव[14]१काल२नगर बाहिर नृप उत्तरयो ॥
अवसर गुडवान बिजय अकबर३७।१उपदा[15] करयो ॥ २५ ॥
अक्खिय नृप गौड हुकम है प्रभु तव आदरयो ॥

---

१ अपने इष्ट का वचन देकर २ नम्र होकर ॥२१॥ ३ उठा ४ ऊंची बनाई ५ क्रान्ति ॥२२॥ ६ द्वार ७ पडीहुई शाला को सुधरा कर ८ देश के लाखों रुपयों का हांसिल और मनुष्यों के हाथ अपने पांवों में लाकर (लगवाकर) ९ नगारे "यह निशान शब्द नौबत का और दुन्दुभी शब्द नगारे का वाचक है" १० बडे झन्डे खडे करके ॥२३॥ ११ अत्यन्त बल में १२ दिल्ली में स्थान नहीं लिया १३ शरणागत की रक्षा लेकर ॥ २४ ॥ १४ देशकाल देखकर १५ नजर ॥ २५ ॥

बंधव कति हे *विलोम †विग्रह तिन विस्तरयो ॥
तिन्ह मरतहि गौडनृपति अप्पन सरनौं तक्यो ॥
बारीगढ साह आन फेरन पहिलैं बक्यो ॥ २६ ॥
देस१हिं कर देस२लेत१रोकन हमकौं२दई ॥
सासन वस जो कही सु लज्जित सिरही लई ॥
बारीगढ बाहिर निज परिजन सब बुल्लये१ ।
द्वारन निज रक्खि हमहि केवल रहिबेदये ॥ २७ ॥
अग्गहु पठये अनीक तब जब मिलिबो तक्यो ॥
इतरन२ अटक्यो यह तिहिं आगैस३ पुनि ओदक्यो४ ॥
पिसुनन५ मत श्रुति परैं सु अप्प न उर आनिये ।
गौडन पति पय लगाइ मोदित६ सनमानिये ॥ २८ ॥
संभरपर रीझि साह सूचित सब स्वीकरयो ॥
याकँहँ कृत लेख देय अप्पन पुनि उच्चरयो ।
यह सुनि फरमाँ७ वजीर१ मुनसी२ प्रति मंगयो ।
संत्वर८ विरचि सु ससुद्र दिल्लियपतिकौं दयो ॥ २९ ॥
बावन ५२ मित जनपद लिपि९ ताबिच पहिलैं बनी ।
भाखिय अकबर ३७।१ वर१० को भुव तुमरो भनी ॥
कासी१ सबसौं वर नृप अक्खिय हमरै कहैं ।
मरतहि जन जत्थ मुक्ति लाह सु सहजैं लहैं ॥ ३० ॥
हड्ड६१ हिं सुनि एह साह अकबर३७।१ अति तुष्ट ह्वै ॥
जुहु दिय वढती लिखाइ कासिय१ हित जुष्ट११ ह्वै ।
जंपिय किय साफ तुमहि कासिय १ हद हाजरी ।

गौड़ के कितने ही भाई * विरुद्ध † इन्होंने युद्ध किया ॥ २३ ॥ १ अपने सब सेवकों को बुलाए ॥ २७ ॥ २ अन्य लोकों ने रोका ३ उस अपराध से ४ डरा ५ चुगलों का मत कान पड़ें उसको आप मत मानो ६ प्रसन्न होकर ॥ २८ ॥ ७ फरमान ८ शीघ्र छाप लगाकर ॥ २९ ॥ ९ देशों की लिखावट १० तुमको श्रेष्ठ भूमि कौनसी दीखती है ॥ ३० ॥ ११ हित में प्रीति करके

चाहत हित सद्धहु खिल बावन ५२ की चाकरी ॥ ३१ ॥
जनपद तब नृप छबीस २६ कासियाढिग जंच्चये ।
दल[2] करि इनके छबीस २६ दल[3] बिच रहिबेदये ।
इहिं क्रम फरमान अपर[4] २ लिपि जुत करवाइकैं ।
लेख सु दिय सुर्जन१९०।१ हित घन हित मन लाइकैं । ३२।
पदवि रावराजा निज करि हय[5] पट[6] अप्पिये ।
भूखन अरु हेति[7] पंच सहँस हु मुनसब दिये ।
अकबर ३७।१ बर बैभव इम सुर्जन १९०।१ हित अप्पयो ।
बारीगढ गौडनपय लाइ रु बहुर्यों दयो ॥ ३३ ॥
अग्रज १ हित बुंदिय इत मध्यकुमर आइकैं ।
भोज१९१।२ सु मिलिजावहिं द्रुत[9] खट्टपुर निस[10] भाइकैं ।
राजकुमरि १९१।१ भोज१९१।२ रमनि[11] बुंदिय बिमना रहैं ।
अच्छ न वपु[12] आकृति इम चित्त न तिहिं जो चहैं ॥ ३४ ॥
हुव रन रनथंभ तबहु मध्य२ कुमर पत्त[13] व्हाँ ।
ही वह कुमरानि न्हाइ पति रीत अनुरत्त[14] व्हाँ ।
अग्रज[15] १ तिय देवर तहँ रक्खिय निस इक्क१ ही ।
गर्भ स्थिति ताहि रजनि देवरजुवती गही ॥ ३५ ॥
प्रातहि चढि गो कुमार भोज१९१।२ सु अपनी पुरी ।
क्रम करि इत बुंदिय वह गर्भस्थिति अंकुरी[16] ।
सायक हग सोलहं १६२५ सक्क सावन५ दल[1] स्वेत[17] १ मैं ।

---

[1] [illegible] बावन परगनों की चाकरी मांगी ॥३१॥ [2] सेना [3] उन बावन परगनों को [illegible] छबीस परगने इधर बुन्दी के समीप [4] पत्रमें रहने दिये [4] अन्य ॥३२॥ राव राजा [illegible] [5] घोड़ा देकर [5] हाथी [6] वस्त्र [7] शस्त्र [8] ओर ॥३३॥ इधर बुंदी में मध्यम कुंवर भोज अपने बड़े भाई दूदा से मिलकर [9] शीघ्र [10] रात्रि में खटकड़ा नाम क ग्राम को जाता था [11] भोज की स्त्री बुन्दी में उदास रहती थी [12] उसके शरीर की आकृति अच्छी नहीं थी ॥३४॥ [13] वहां गया [14] प्रीतियुक्त [15] बड़े भाई की स्त्री ने ॥ ३५ ॥ [16] उठी [17] श्रावण के शुक्ल पक्ष में

चउदसि १४ जनम्यौं कुमार गणकन[1] खिन चेतमैं ।
जयवति १८८।१ नृपमाइ जवहि मोक्षित मह[2] मंडयो
द्रेय सु बहुस्वापतेय[3] मग्गनगनकौं दयो ।
दुर्जनसल्ल१९१।१ हु भतीज[4] जँनि सु बसु१ भूर दये ।
बुंदिय महके[5] बिनोदैं भोज नन बढतेभये ॥ ३७ ॥
सुर्जन१९०।१ अब दिल्लिय इम नत्तिय[6] जनम्यौं सुन्यौं ।
लक्खन करि दान इतर दानन[7] बढिबो लुंन्यौं ।
नत्तिय अभिधानहु नृप रत्न १९२।१ हि चहि रक्खयो ॥
ए हहि गणकनअधीस होवहि इम अक्खयो[8] ॥ ३८ ॥
अति जस लहि सिक्ख बहुरि बुंदिप नृप आत भो ।
जेठो १ सुत सम्मुह तस पत्तनसेन जात भो ।
पहु करि पुरमैं[9] प्रवेस पय परि प्रनमी प्रसू[10] ।
बुल्लि सु सुतसुत बिथारि बलि मह बक्खस्यो बसू[11] ॥ ३९ ॥
बुंदिय तव आइ भोज१९१।२ खटपुरसन बेगही ।
बंदित निज तात[12]१ भ्रात२ आसिखैं[13] सुखमाँ[14] वही ।
नूतन नृपमाइ पुव्व सर[15] १ मंदिर २ निर्मये ।
दोउन्न इक१ उच्छव जव संचयँ[16] खुल्लिवे दये ॥ ४० ॥
पल्वल[17] जुहि मैंनन किय तारागढ पुव्वघाँ ।
हड्ड६१ नपति माइ हाल विस्तृत किय ताल१ हाँ ।
लक्खन खनिबे[18] लगाइ दीनन अवलंवदै ।

१ज्योतिषियों को॥३६॥२उत्सव३धन ४भतीज के जन्मपर ५बुंदी में आनंद और गौनैं बहुत हुई; वा बुंदी में तो आनंद बहुत हुआ परंतु भोज को विशेष नहीं क्योंकि यह पुत्र दुहागिन स्त्री के हुआ था ॥३७॥ ६पोते को ७अन्य राजाओं के दान बढ़ने को काटदिया ८ज्योतिषियों ने कहा कि यही राजा होवेगा ॥३८॥ ९पुर में १०माता को नमस्कार किया ११धन दिया॥३९॥ १२पिता को १३आशीर्वाद की १४शोभा धारण की १५तालाब १६धन॥४०॥ १७तालाब जो मीणों ने तारागढ के पूर्व दिशा में किया था वहां पक्का तालाब बनाया १८खोदने को

रक्खन निज कित्ति दम्मन लक्खन *निकुरंब दै ॥ ४१ ॥
ताल१ सु गहिरो खुदाइ अंकिय निजनामतैं ॥
पद्धलिहु गिरि प्रमान तास बंधिय बिधि बामतैं ।
बापीसम द्वार तास †सेतुहि बिचबंधयो ।
सीढिन सुधराइ पंति पव्वर पथ संधयो ॥ ४२ ॥
अंदर ‡अपसव्य१ +सव्य२ रक्खिय दुवर ओवरी ।
¶बीजक लिपि सव्य२ सुद्ध पत्थर तँहँ बिस्तरी ।
अच्युतगृह बीजक लिपि तत्थहि खुदवाइकैं ।
प्रतिकृति हरिकी[२] पुनि दिय मंदिर पधराइकैं ॥ ४३ ॥
गोल्हा[३] कृत बापी दिग सिखिदिस[४]२ हरिगेह जो ।
नूतन बिरच्यो अपुब्ब जयवति १८८।१अति नेह जो ।
लच्छी१ सह[५] नारायन२ थप्पिय तँहँ लाडसौं ।
उच्छ्रितपन[६] मंदिर वह छन्न न कहुँ आडसौं ॥ ४४ ॥
नव इम सर१ मंदिर२ जुग२अर्जुन १८८।१ तिय निर्मयो ।
भूपति अब आतहि तिन्ह उच्छव बिधिसौं भयो ॥
व्यंय[७] परि धन लक्खन सर१मंदिर२दुवर२ यों बनैं ॥
लक्खन पुनि उच्छव लखि घाँघाँ[८] उघरे घनैं ॥ ४५ ॥
सायक द्दग सोलह१६२५सक उच्छव यह इव्हभो[९] ॥
सुनिसुनि जसँ[१०] जस बिसाल बैरिन हिय विद्धभो[११] ॥
दूदा१०११दुभगासुत[१२] इम ताहि न नृप आदरै ॥
वर्ण[१३]१स्याम२नक्कै[१४]१वक्र१धीग्हु छबि नाँ धरै ॥ ४६ ॥

---

* समुद्र॥४१॥ †पालमें॥४२॥‡दाहिनी+बांई¶ओवरी में शुद्ध पत्थर पर उसका बीजक लिखाया१विष्णु भगवान् के मन्दिर का बीजक उसी में खुदवाकर २मूर्ति ॥४३॥ ३गोल्हाकी बनाईहुई बावड़ी४अग्नि दिशा में५लक्ष्मी सहित६ऊंचे-पन में॥४४॥ ७खरच८दिशा दिशा में ॥४५॥ ९ बड़ा उत्सव हुआ १० जिसका बडा यश सुन सुनकर ११वेधन हुआ १२ दुर्जनशाल दुहागन का पुत्र था इसरकाण १३ कालारङ्ग १४ बांकी नासिका ॥ ४६ ॥

भोज१९१।२आसेचनक१रु वल्लभ तियकै भयो२ ॥
तकि इम अति नेह ताहि लालनैपन सो लयो ॥
तीजो३सुत रायमल्ल१९१।३जाहि हु हितसौं तकैं ॥
नैंकहु जनकत्वैनेह जेठे१सुतपै नकैं ॥ ४७ ॥
बनिता जेठे१रु मध्य२इक१इक१पहिलैं बरी ॥
अब नृपसुत तीन३न जिम व्याहन माति आदरी ॥
पुत्रनत्रिक३व्याहिय तिम वेगहि महसौं पहू ॥
बर१जुत जितनी बधाइ घर लिय दुलही बहू ॥ ४८ ॥
नाम१रु मिति२जाति३नैर४कहियत क्रमकी कथा ॥
जे अब प्रभु राम२०३।४सुनहु रविकैवि बरनैं जथा ॥
कर्मध्वज छत्रसिंह अव्हरप्रतिकी कनी ॥
जेठे१सुत उमा१९१।१नाम दूजी२परनी जनी ॥ ४९ ॥
रानाउति धन्यकुमरि१९१।३भारत तनया भनी ॥
बिजयनगर यह तीजी३दूदा१९१।१बिबही बनी ॥
भूपति इम तीन३हि तिय व्याहिय सुतकौं भली ॥
चंद्राउति चोथी४पुनि अप्पहिं बरिहै बली ॥ ५० ॥
बुंदियपति तिम बिबाह भोज१९१।२हिं खट६व्याहयो ॥
गदियत जिम रूच्यं दान अर्णव अवगाहयो ॥
जगन्नाथ कूर्मपुत्रि जसोदा१९१।२सनाम जो ॥
आनी तिय भोज१९१।२कुमर दूजी अभिराम जो ॥ ५१ ॥
पंचानन पुत्रिय पट्टु रहोरि जु छप्पनी ॥
जसकुमारि१९१।२सु भोज१९१।२कुमर तीजी३परनी जनी ॥
मालदेव मरुपतिसुत रामसिंहकी सुता ॥

१अत्यन्त रूपवान् २लाड से ३पितापन का स्नेह ४नहीं करता ॥४७॥५ स्त्रियें ॥४८॥ ६ सूर्यमल्ल कवि वर्णन करता है सो सुनो ७ कमधज (राठौड़) आहोर के पति की कन्या ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ८ कहते हैं ९ दुलहह ने १० दान के समुद्र का ११ थाह लिया १२ सुन्दर ॥५१॥ १३ चतुर १४ छप्पन देश की "ईडर के देश को छप्पन

जो ब्याही भाग्यवती१९१४चुत्थी४गुनसंजुता ॥ ५२ ॥
पुत्रि झल्लसिंहकी सु लालकुमरि१९१५पंचमी५ ॥
मानकुमरि१९१६खाद्दिराट गजेससुताहीं छमी६ ॥
तनया बलकर्णकी अभिजनकुमरि१९१७तोमरी ॥
पट्टनिपुर पहुँचि वीर सप्तमी७यहँ बरी ॥ ५३ ॥
भोज१९१२हिं पुनि इम छ६व्याह व्याहि रु अब भूपती ॥
सत्त७हि दिय व्याह रायमल्ल१९१३कुलजा सती ॥
बिक्रम भुवनांगवंस द्रौपदि१९१२तनया दई ॥
इम चालुक्क पित्थल तिहिं रंगकुमरि१९१२अप्पई ॥ ५४ ॥
कृष्णाकुमरी१९१३तीजी३कछवाह कुंभकी कनी ॥
जिम चोथी४अमकुमरि१९१४कुम्म अचलजा जनी ॥
कावंधिय राजकुमरि१९१५चंद्रसुता पंचमी५ ॥
छत्रकुमरि१९१६चंद्राउति अचलकी सुता छमी ॥ ५५ ॥
सप्तम७सीसोदनी सु रामसुता रुक्मिनी१९१७ ॥
गहि क्रम ए दुव२छ६सत्त७सुत त्रय३बिबही गिनी ॥
जंपहि अवसरे समस्त संतति इनकी जथा ॥
करि हित प्रभु राम२०३४सुनहु संभव पहिलीकथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रत्रिक३हिं इम व्याह पहु, अवनि बिभागहु अप्पि ।
रुचिर कनी उपयमँ रचिय, थान१लगन२वर थप्पि ॥ ५७ ॥
लालकुमरि१९१२मध्या२ललित, मदनकुमरि१९१३लघु नाम ।
ए कन्याभावहि उभय२, बिनु असु किय विधि बाम ॥ ५८ ॥
इन दोउ२नसन अग्रजा१, कन्या पूरकुमारि१९११ ॥

कहते हैं और इस छप्पन का थोड़ा सा भाग उदयपुर और डुंगरपुर के अधिकार में भी है" १ चौथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ राठोड़ी ॥ ५५ ॥ ३ कहेंगे ४ समय पर ५ सब ६ सन्तान को ॥ ५६ ॥ ७ विवाह ॥ ५७ ॥ ८ सुन्दर ९ कन्या

व्याहन नृप संचय विविध, सह मह दिन्न प्रसारि ॥ ५९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जोधपुरभूप कीनों पंचम उदय२प्रापी भाख्यो भू विहीन चंद्रसे-
न१ताको जेठो भ्रात ॥
ताके उग्रसेननाम पट्टपकुमार हुतो बुंदीपति ताहि न्यौंतिबुल्ल्यो
वहु लै वरात ॥
भोज१६१।९वारी सोदर स्वसा जो पूरकुमारि १९।११ सो उचित
सुदाय अप्पि ताकौंहँ विवाही तात ॥
स्वीय आरतीके नेग सासूसों हुराइदीनों सुर्जन१६०।१पुरोहितन
तबतैं मिल्योहीजात ॥ ६० ॥
चोथो४चंद्रसेन१जो भाख्यो रामसिंह४भाई भाग्यवती१९।१४ ता-
की धिय चोथी४तिय व्याह्यो भोज १९।१२ ॥
पीछैं कहि आये सो उदंत रु इहाँतो इम कन्या उग्रसेनही वि-
वाही भूप अति ओज ॥
दीनों आयु अवधि स्वकन्याकौं सुरथपुर कीनों जसविदित वि-
वाहत महत सोज ॥
पीछैं कर्मसेन१कन्ह२आदि सुत ताके भये भागिनेय भोज १९।१२
के फिरावन आरिन फोज ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इम विवाहि कन्या अधिप, सह दुल्लह दिय सिक्ख ।
रस वहत दुव२दिस रह्यो, त्याग१असन२दुव२तिक्ख ॥ ६२ ॥
सुन पट्टप सामंत१८७।१को, मलकर्ण१८८।१जु अविचार ॥
भुजनगरी१तिहिं सह विभव२, धर्नीपति दिय धार ॥ ६३ ॥
कुनपुंस्कप२जेठो कुमर, दूदा१९।१सूर१उदार२ ॥

सन में हुई सगाई ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ १ अंट दहेज देकर २ अपनी ॥ ६० ॥ ३ पु-
त्री ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ४ राजा ने ॥ ६३ ॥ ५ शरीर से कुरूप

पितरभक्त१कुलधर्म पटु४, अवनी१जस२रखवार५ ॥ ६४ ॥
तदपि जानि दुभगातनय, राच्यो सुभगा रंग ॥
भूप न रक्खै भूपनहु, इक्क१हु याके अंग ॥ ६५ ॥
रजतकेहु भूखन रहित, वाजि१रु स्वधाहि बस्त्र२ ॥
अनुजनसम नहिं आदर३हु, सुबरन खचित न सस्त्र४ ॥६६॥
दुजनसल्ल१९१।१दुर्विध दसा, पट रहि तदपि प्रसन्न ॥
अनय न चिंतै कबहु यह, वसु१०व्यय बिरह बिपन्न ॥ ६७ ॥
पै याकों बुंदी२पुरी, दिय सह पट्टनि२ढंग ॥
यातैं अब कासी१अधिप, मंडै रहन उमंग ॥ ६८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबीज०याख्यानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्त०याख्यानावसर०याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे दिल्लीदेशाद्बुन्द्यागतसज्जसेनसुरजनस्य गुडवानवारीदुर्गावरणं १ आवरणयुद्ध०याकुलशरणागतगौडराजमकबरयवनेन्द्रान्तिकमानीय सुरजनस्य तदर्थतद्दुर्गदापनं २एतत्समरपारितोषिकंद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्त्यनन्तरं वाराणसीमासाद्य सुरजनस्य रावराजापदप्रापणं३ कनिष्ठा-

१ पिता का भक्त २ भूमि की ॥६४॥ ३ दुहागिन का पुत्र ४ सुहागिन के रङ्ग में रचा ५राजापन का चिन्ह एक भी नहीं रखता था ॥६५॥६ अल्पमूल्य के वस्त्र ७ छोटे भाइयों के समान ही उसका आदर नहीं था ८ स्वर्ण में जड़ेहुए शस्त्र नहीं थे ॥६६॥ ९ दरिद्रता में १० धन के खरच के विरह से आपदा से पीड़ित था तो भी अनीति का स्मरण नहीं करता था ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में सुरजन का दिल्ली से बुन्दी आकर सेना सज्झकर गुड़वान में वारी गढ को घेरना १ उस घेरे के युद्ध से व्याकुल होकर शरण आयेहुए गौड़ों के राजा को बादशाह अकबर के समीप लेजाकर सुरजन का वह गढ पीछा उसीको दिलाना २ इस युद्ध की प्रसन्नता के दान में बावन परगने और काशी का निवास पाकर सुरजन का रावराजा पद पाना ३ सुरजन के छोटे पुत्र भोज के पुत्र

त्मजभोजस्य रत्नसिंहाख्यसुतजन्माकर्णनेन यवनेन्द्राज्ञया सुरजनस्य बुन्द्यागमन ४ बुन्दीनगरेऽर्जुनपत्नीसुरजनजनन्योः कासारमन्दिरप्रतिष्ठाकरणानन्तरं सुरजनसुतासूनुपाणिपीडनसूचन ५ कुरूपदुर्भगापुत्रहेतोर्ज्येष्ठकुमारदुर्जनशल्योपरि सुरजनस्याप्रसन्नत्वभणन ६ मष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥ आदित एकनवत्युत्तरशततमो मयूखः ॥ १९१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वारीगढ जयपैं बनी, बावन५२गढ बखसीस ॥
अदे२६३त१अदे२६हि उत२, बंटिलये बुंदीस ॥ १ ॥
ग्रामक सह कासी१नगर, मिल्यो इजाफामाँहिं ॥
यातैं तँहँ रहिवे अधिप, अब मन चिंतन आँहिं ॥ २ ॥

॥ मनोहरम् ॥

बावन५२दये जे देस तिनमैं छ सात गढ विमुखन दाविराखे ते-
हू साहनैं दये ॥
सवहि लये ज्यौं फरमानमैं लिखाइ नृप त्योंहीं काढि विमुख
स्वकीय करि ते लये ॥
खीची१ ३रायमल्लहिं फिराऊ सो समुझि मऊ१ताकी राजधानी
दैन अछर जबैं भये ॥
भूपं तव भ्रातनमैं भेद न उचित भाखि गो नटि मऊ१पैं ताके
वर्ण बदलेगये ॥ ३ ॥

रत्नसिंह का जन्म सुने पीछे बादशाह से बिदा लेकर सुरजन का बुन्दी आना ४ बुन्दी में अर्जुन की स्त्री और सुरजन की माता के तालाव और मन्दिर की प्रतिष्ठा हुए पीछे सुरजन के पुत्रों के विवाहों की सूचना और सुरजन की पुत्री के विवाह का कथन ५ कुरूप और दुर्भागन का पुत्र होने के कारण बडे कुमार दुर्जनसाल से सुरजन के अप्रसन्न होने के कथन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से १९१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्रामों सहित २ अधिकाई में ॥ २ ॥ ३ शत्रुओं ने ४ अक्षर ॥ ३ ॥ ४ ॥

बुंदीके समीप हिंगुलाजगढ१साहाबाद२मालपुर३टोडा४टौंक५ रामपुर६मांनिये ॥
सेरगढ७केकरी८सिरोंज९खरवाडा१०बलि बालाभेट११खातांखे· री१२भेलसा१३वखानिये ॥
खंडारि१४रु मल्लारनां१५चैनपुर१६बारी१७खैरी१८रैनगढ१९सैं घोली२०रु भैंसरोर२१जांनिये ॥
केथोली२२रु साढोरा२३गुगौर२४पुनि खल्लीपुर२५प्रीतसह आग र२६छवीस२६पहिचानिये ॥ ४ ॥
कासी१के समीप *प्रांत †प्रथित छवीस२६पाये जांनौंजिते नाम तिनहूके अवधारिये ॥
गढ चरनाल१मांडौं२रामगढ३सैनपुर४सैदाबाद५भब्बलपूर६आ वर७निहारिये ॥ ५ ॥
कोटापतिभीम१९११ रावराजा बुधसिंह१९७११सैं बुंदी लूटि लेखालय[2] लेख सब लेगयो ॥
जह सह नाम फरमान इन देसनको जाइ सरवस्व साथ कोटा- गढमैं ठयो[3] ॥
मागधंन कल्पित कितेक लिखिदीनैं यातैं साक्खिसह पायो ति- न्हैं मन कहिबे भयो ॥
कासी१बिनु हाजरी इजाफा सब ग्रामनसौं तहाँ रहिबेकौं नृप नियम अबैं लयो ॥ ६ ॥
रानी मध्यमा२जो सुर्जन१९०११कै कनकवती१६०१२दुर्गापुरी ता- कैं तहँ तालँ१तिंहिं निर्मयो ॥
सो कनकसागर१कहावत अबहू ख्यात राम२०३१४नरनाह देखो तवकों खन्योंगयो ॥

---

* प्रदेश † प्रसिद्ध १ सुनो ॥ ५ ॥ २ दफ्तर लूट कर ३ रहा ४ बड़्याभाटों ने ५ झूठे ६ साखी सहित ॥ ६ ॥ ७ तालाव वनाया ८ हे राजा रामसिंह

सो मानी बनिक बेनीदास१रु मथुरादास२अधिक अमात्य जु-
गश्नृपसौं करयो नयो ॥
दिल्लीहोइ कासी रहिबे पर प्रयान कीनौं नूतन अमात्यजुग२सं
ग यहही लयो ॥ ७ ॥
पट्टनि१सहितबुंदी२हूदा१९१।१कौं दई बिचारि लाखेरी रु खटपु-
र२भोज़१९१।२कैं बिचारिकैं ॥
पल्हायथे१सौं साँगोद२दीन्ही रायमल्ल१९१।३हित अप्पन उचित
यातैं कासी धिय धारिकैं ॥
आगैं भो अमात्य जाजपुरके मुकाम़न जो सेवराके भाखैं भावी
नृपहिं निहारिकैं ॥
देसमैं सो नारायन बनिक खटोर राखि लीनैं संग नूतन अमा
त्य दुव टारिकैं ॥ ८ ॥
उभय२अमात्यन निवेदी नृपतैं यौं कासी रहिबोही आयु अवधि
—बिचारयोतो ॥
छाया सम संगी अवरोधन१अनुग२आदि संग चलिहैंही दिल्ली पंथ
किम धारयो तो ॥
भिन्न मग स्त्रीयन पठैबो पहिलैं जो होइ स्वामिबिनु काहू नयो
अमल निवारयो तो ॥
माँडा१दिक दुर्ग लाह राह रुकि जैहैं हाहा हैहैं लिख्यो हुकम
हजूरको हु हारयो तो ॥ ९ ॥
पहिलैं पधारि कासी अमल जमाइ यातैं अंतेउर१ आदिक ध-
नीके धाम धरिये ॥
स्वामि अनुरागिनी प्रजाहू सौंरिहै ही संग ताकौं बास बिहित बि
सास दै बितरिये ॥

---

१ नवीन ॥७॥ २ बुद्धि से ॥८॥ छाया के समान साथ रहनेवाले ३ जनाना और सेवक आदि ॥ ९ ॥ ४ जनाना ५ साथ चलेगी ६ उचित ७ दान करो

माँडा१मुख जो न फरमान मानैं ताकौं जीति आन एक अपनी अमोघ[1] अनुसरिये ॥
पीछैं पातसाहकी पधारि पीछे प्रीति पहु इच्छित[2] अनहेतौं संने ह सेवा करिये ॥ १० ॥
———मानि अरजी यौं जवनेसकौं दै सीख लै सुहायो जस बागके[3] बगरमैं ॥
अंतहपुरा१दि लै स्वकीय सब संग चल्यो दायादन[4] देकै देस जगर[5]मगरमैं ॥
बुन्दी तजि द्वैसत२०० गृहस्थ पुरवासी गये सबन निबाहि भक्ति लै गर[6] सगर[7]मैं ॥
सुरजन१९०१[8]जाइ स्वामी भो स्वकीय[9] झंडे झटिति[10] झुकाइ विश्वनाथके नगरमैं ॥ ११ ॥
पीछैं चरनाद्रिगढ१आदि चउवीस२४प्रांत कासीके समीप उतर पाये अपनाइकैं ॥
रामगढ१माँडा२दुवर२दस्युनैं[11] दये न दाबि दीनौं तँहँ बेनीदास१स-चिव पठाइकैं ॥
खो हा लहु जाइ लै दिन त्रय३मैं रामगढ१ दूजे२ दुर्ग गोलन को गजेर[12] लगाइकैं ॥
सुर्जन१९०१ के धीसख पलेटा पृतनाको[13] डारि खाँडोके खि-ल्हार लयो माँडा२ गरदाइकैं ॥ १२ ॥

१खाली नहीं जावै ऐसी२वाञ्छित समय पर्यंत॥१०॥३याग के४चगड़ (चौक) में ४ दायभाग पानेवालों को ५ चमकता हुआ ६ गैल (साथ) में ७ सगड़ (शकट), "यहां सगड़ शब्द एक वचनांत है परंतु ऊपर कहेहुए दो सौ गृहस्थों के संबंध से बहु वचनांत जानना चाहिये" ८ मालिक हुआ ९ काशी में अप-ने झन्डे १० शीघ्र खड़े करके ॥ ११ ॥ ११ शत्रुओं ने १२ निरन्तर प्रहार १३ मन्त्री ने १४ सेना का १५ खड्ग के खिल्हाड़ी ने ॥ १२ ॥

वज्जभर गोलनकी सोलह१६दिवस *वूठि दावी द्युति कल्पके
धुमंडेघोर घनकी ॥
तोरन१वरन२अट्ट३गढके गिराइ अधिरोहिनी भिराइ माँहिं पैठो
माँडि मनकी ॥
दुर्गी किते दाटि करवालन कितेक काटि पाटि जस खाटि यों
बडाई वीरपनकी ॥
सो मानी सचिव माँडा२सौं मानी फिराइ आयो सत्रह१७दिव
स दुहाई सुर्जन १९०१२ की ॥
ईसपुरी अंतिके छबीस२६ ही परगनाँ यों अमल जमाइ अप-
नाइ चराचरकौं ॥
थानथान थानाँ धरि आपुनौं उचित इत मध्यभाग कासीको
लयो दै मोल पटकौं ॥
नाम राजमंदिर १ बनाइ तहाँ धाम निज प्रासादन चहुँ ४ घाँ
वसाइ परिकरकौं ॥
राखि बीच अवरोध अमित अनीक ऐसैं आराधन आयो अब
आप अकबर ३७१२ कौं ॥ १४ ॥
सौध १ नव रचन उपक्रम लगाइ सिल्पी चिति रचनाँमैं मति-
मान चुनि चाहसौं ॥
वेल्ल २ विबुधालय ३ निपान ४हु बनाइबेकौं विविध विदग्ध रा
खि राज रुचि राहसौं ॥
संगरकी सामग्री समस्त चरनाल सजि सेना सविसेस देस बा
वन ५२ के लाहसौं ॥

---

* घृष्टि करके १ कान्ति २भलगे के ३बुरज ४निसरनी लगाकर ५किलेवालों को ६ वैश्य जाति विशेष ७ मानवाला ॥ १३ ॥ काशी के ८ समीप ९ चर और अचर सब को अपना करके १० महलों के ११चारों ओर १२परमल को १३ पहुत १४ सेना के बीच में जनाने को रखकर १५सेवन करने को ॥१४॥ १६ महल १७ नवीन १८ आरम्भ १९ सिलावट २० चुनावट (महल) बनाने में अनुभव रखने-वाले २१ बाग २२ मन्दिर २३ जलाशय २४ चतुर २५ युद्ध की ॥ १५ ॥

कासीअधिराज इम सुर्जन १९०।१ विलासी वीर आइ पुर आ-
गरा सभामैं मिल्यो साहसौं ॥ १५ ॥
आगैं लोन आगरतैं ग्राम आगरा जो कीनों नैर गढ बादलसौ
सिकंदर २८।१ साहनैं ॥
सो स्वनाम अंकितकों अकबर३७।१ साह बडो विधिसौं बसायो
अब स्वर्ग सुखमा हनैं ॥
जमुना³तटीपैं जथा जा समैं बनतहो जों व्हाँ पाँ जवनेस ही तहाँ
यों बग्वाहनैं ॥
आपुनी अपुव्वआठअयुत ८०००० अनीकिनीसौं दिल्ली नर-
नाह१भेव्यो कासीनरनाह२नैं ॥ १६ ॥
तबहु कहाई ऐसैं सुर्जन१९०।१ तैं सुलतान आगराके अंदर रहो
धवल धाममैं ॥
तदपि न मानि रहि बाहिर कहाई ताहि माँहिं बास बंधन बनैं-
गो द्रुत काममैं ॥
साधिहो समीप रहि सासन निसीथहुको सोंही स्वीकराइ स-
मुझाइ सोही सामसैं ॥
लालकोट तोरनलों राहतैं बजत बंब साहतैं मिल्यो सो एक १
आयुधसौं ओममैं ॥ १७ ॥
कहत कितेक बहराम सब अंगमिकैं आगैंहो बजीर बयबाल
अकबर३७।१ को ॥

पहिले १ नमक (खारी) बनाने के आगर के कारण जिस ग्राम का नाम आगरा था जिसको बढ़ाकर सिकन्दर ने पुर बनाया उसको अपने नाम से जानाजावे ऐसा अकबर ने विधि पूर्वक बसाया सो अब स्वर्ग की २ परम शोभा को मिटाता है ३ जमुना नदी पर ४ सेना से ॥१६॥ ५ आधी रात्रि को भी ६ मिलाप में ७ लालकोट के दरवाजे तक नगारा बजाता हुआ ८ बडी सभा में एक शस्त्र लेकर मिला ॥१७॥ बहराम ने सब को ९ दबाकर

तानैं छलघात हनि साहकौं चह्यो तखत सो सुनि भज्यो सिसु
डरायो काल डरको ॥
आगरालौं आत खानखानाँ वहराम सुव जाइकैं मिल्यो ले सि
र काटि पाप परको ॥
जाइमिले खीय सबही जहाँ तहाँ तबतैं नियत बढ्यो बन्यौं
आगरा नगरको ॥ १८ ॥
कोबिदै[3] वजीर खानखानाँ आगराही करि पूछि प्रिय अध्याप-
क[4] दूजेर वहरामकौं ॥
स्वामी बनि दिल्लीआइ प्रकृति[5] सुधारि सब नीतिनिपुनत्वकैं[6]
निकारयो निज नामकौं ॥
मोहिकैं प्रजामन स्वकोस[7] १ देस २ दुर्ग ३ सेना ४ जोग[8] १ खे-
म[9] २ प्रेर सुचि[10] सचिव छ ६ जामकौं ॥
आनि आन १ अंदुकैं[11] २ मैं राज्य १ इभ २ साह ऐसैं कंदुकै[12]
कुमार ज्यौं उठायो कर कामकौं ॥ १९ ॥
अज्जनैं[13]को विद्या उपयोगिकी अधिक जानि आदरी वढ़ै हू खो-
लि खतम[14] खजानाँसे ॥
वानिज टोडरमल्ल १ नरहरि १ गंग २ वंदी सूरि १ कवि २ नाना
सभ्य पावै सुधापानाँसे ॥
विप्र पंच५ गौडनमैं कान्यकुब्ज बीरबल १ बाँधैं जो विहासैं १
प्रतिउत्तर २ मैं बानाँसे[15] ॥

१बादशाह को छल घात से मारकर तखत लेना चाहा २निश्चय तभी से आगरा बढा ॥ १८ ॥ ३ पण्डित ४ पढानेवाले ५ राज्य के अंगों को सुधारकर ६ नीति की निपुणता से ७ अपना खजाना ८ उपाय ९ क्षेम में १० चतुर सचिवों को दिन रात्रि के आठ पहर में छः प्रहर तक प्रेरणा की और अपनी आणा रूपी ११ सांकल में राज्य रूपी हस्ती को लाकर राज्य कार्य का ऐसा उठाया कि जैसे बालक १२ गेंद को उठाता है ॥ १९ ॥ १३ आर्य लोगों की १४ सम्पूर्ण १५ हंसी के १६ पीछा नहीं हटने का चिन्ह

अज्ञनकी १ आपुनी २ उभै २ ही अपनावैं उभै २ स्वामी बुध
आप १ से वजीर खानखानाँ २ से ॥ २० ॥
पंडित१रु मोलवी२समान जानैं जाकी प्रीति अज्ञनकी१विद्या
तऊ मन अति आकैं ॥
मिच्छनतैं पहिलैं गयो घटि द्विजन मान एधमान सो अब स-
नाथ सुखमाँ धरैं ॥
स्मृति१श्रुति२नीति३आदि आसय सबै सबुज्झि काम१अर्थ२तं
त्र्हु प्रमान प्रभु एकरैं ॥
सादकों सुहावैं तिते तदपि समाँजो१सूरि२जदपि निमाजीआदि
जवन किते जरैं ॥ २१ ॥
कलमाँ१निमाज२रोजा३आदि अपनो जो कर्म साधि अर्थसहि-
त कुरान२मान कहतो ॥
आखरी जमेंके मजहबके अकांम१ अर्चि सासनौ सकाम२
हु फकीरनकी सहतो ॥
विद्यामैं विसेस जानि तदपि स्व बुद्धिवल चित्त अज्ञ सूरिनैं स
वित्त१सित्त२चहतो ॥
धोतैंपटधारक क्रिपा अवधि आप्लवतैं कच्छौं एक१करि कि-
तेकैंकाल रहतो ॥ २२ ॥
नित्य जगि नित्यहिं निवेरि१मैंडैं मूलमंत्र२ज्पाहीं तसंदीमतो सबै
सचिव जातपै३ ॥

१ आर्यों की और यवनों की दोनों विद्याओं का २ चतुर ॥ २० ॥ ३ आर्यों की विद्या का अधिक आदर करता था ४ बढ़कर ५ परम शोभा ६ शास्त्र ७ मनोरथ ८ पण्डित ॥२१॥ ९ महीना के अन्तिम शुक्र वार के दिन अपने धर्म के कार्य १० कामना रहित करता था ११ पूजन करके फकीरों की आज्ञा की कामना सहित सहन करता १२ आर्य पण्डितों को धन सहित १३ मित्र चाहता था १४ धोती पहिनकर १५ कृपा की अवधि पर्यन्त १६ स्नान से १७ एक कच्छा १८ कितनेक समय तक रहता ॥ २२ ॥ १९ सबेरे

निज पर देसनकी सूर उदै सुद्धि सुनि४बिविध नियोगै दै सुनत
तिन आतपैं५ ॥
रीति के नई पुनि प्रजा सुख निमित्त रचैं६नीति दै नियोगिनैं७
गिनैं न श्रम गातपैं८ ॥
राज्यलखि९एक१भोजी१०सूरिनं समाँज रहि१९जाम जुग२सो-
इ११जगैं पहर१के प्रातपैं१३ ॥ २३ ॥
जानैं पच्छपात व्यवहारमैं न कहुँ जान्यौं सर्वकौं१सदाही साव
धान सरसायो२जो ॥
सिथिलभयोन गुनवाननको जाके संग३कोऊ मतनिंदक न
कबहु कहायो४जो ॥
भीतनको त्राता५सुभकाज औंदिलंबी६भयो लोकनकौं द्वैलन
निवारि मग लायो७जो ॥
ईश्वरउपासक८अलोलुप९सदय१०सूर११दाता१२मिले दुक्खहु
प्रसन्नमुख१३पायो१४जो ॥ २४ ॥
दिल्ली१अरु आगरा२उभै२ही राजधानी राखि नीति१धर्म२प्रेरत
सगहो नरनरनैं ॥
दैदै जोर अमल जमायो नये देसनमैं कोसैंनमैं आवतदयो न छेह
करनैं ॥
चरनैं निहारयो निज१पर२न जथा चरनैं सरनविहीन ह्वैरहे के
दीन सरनैं ॥

१ खबर २ आज्ञा ३ समूह पर ४ आज्ञा पालन करनेवालों को नीति देकर ५ शरीर पर श्रम नहीं जानता ६ दिन में अेक समय भोजन करता ७ पण्डितों की सभा में रहकर दो प्रहर शयन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहे उठता ॥ २३ ॥ ८ पचपात डरे हुओं का ९ रक्षक १० शुभ कार्य में विलंब नहींकरने वाला हुआ ११ लोकों के अपराध को मिटाकर मार्ग में लाया ॥ २४॥ १२ खजानों में हांसिल ने छेह नहीं दिया अर्थात् हांसिल निरंतर आता रहा १३ हलकारों से अपने और पराये को जाना १४ चरणों में आने के विना, ही दीन

पहिले छत्तीस३६पातसाहन न जैसी पाई ऐसी एक अदल१ जमाई अकबर३७।१नैं ॥ २५ ॥

सीकरी१फतेपुर२मुकामन रहत साहि जोग्य वय जानि रु प्रमानि पहिरैबे परैं ॥

दूदा१९।१।१.भोज१९।१।२बुंदी१खटपुर२तैं बुलाइ द्वैरही भूप हाँ मिलाये जाइ कुमर सभामैं ॥

मुख्य सस्त्र१वस्त्र२रूप३भूखन४न मानि मुख्य भोज१९।१।२हि मिल्यो सो पहिलैं१खिलत भी धरैं ॥

पीछैं मिल्यो दूदा१९।१।१सो लयो पै पहिर्‍यो न पेलि पूछैं कह्यो इष्टहिं चढाइ पहिरयो करैं ॥ २६ ॥

स्यामरंग१बाँकीताक२साधारन वस्त्र१सस्त्र२दीस्यो जो१अमुख्य यौं न तातैं पहिलैं दयो ॥

जानि मुख्य आदर सुहागिनितनूज८ सुकों नायकैं जनाइबेसैं मौन नृपहू लयो ॥

सीख लैकैं पीछैं स्वीय सिबिर सिधारतहू निरखि विलोमैं दूदा १९।१।१अनौंखि रु नाँ नयो ॥

यौंहिं चल्यो मानी स्तब्ध१३ जानिकैं सि साहि याकौं भाख्यो खान लक्कर१९।१।१ सुनाम तबतैं भयो ॥ २७ ॥

राजा रह्यो हाजिर कुमार २ चले डेरनकौं भोज १९।१।२ रह्यो पीछैं तब तैसी सोधि भयतैं ॥

लोग शरण में रहे अर्थात् दीन लोग दूर रहने पर भी निर्भय रहे १ इन्साफ ॥ २५ ॥ २ जानकारी में आवे. शस्त्र, वस्त्र, रूप और भूषण से बड़े कुमर को मुख्य नहीं जानकर भोज का ३ मिलना पहिले किया ४ कान्ति ५ हठधार, पूछने पर कहा कि पहिले ६ इष्टदेव को पहिनाकर पीछे पहिनते हैं ॥२६॥ ७ बड़ा नहीं दीखा इस कारण पहिले इसको नहीं दिया ८ सुहागिन का पुत्र जानकर ९ पादशाह को सूचना करने में राव सुरजन भी चुप रहा १० डेरों में ११ यह उलटी रीति देख कर १२ क्रोध करके दूदा ने सलाम नहीं की १३ मान अशिक्षित जानकर बादशाह ने इसको १४ लक्कड़खान कहा तभी से इसका नाम लक्कड़खान हुआ ॥२७॥

जान्यो मोहि लैं दयो सुहि असह जानि अग्रज इनैं ही * छद्म
घातके अनयतैं ॥
यातैं पहिराइ अनुगतकौं खिलत एह आप बेस और करि जो
बचोतो अँयतैं ॥
संकल्प ऐसो कैं गनेस जोइसीकों स्वीय खिलत उतारि पहि
रायो स्वीय संयतैं ॥ २८ ॥
श्रीगोड़ १ रु सेवार२ उदीच्य ३ तिम सढोदरे ४ कासके प्र-
संगकरि बुंदी बसते भये ॥
पूरकुमरि १९१।१ के ससुरालयप्रसंग परि ठान लै इहाँहीं आइ
विष्णुनगरे ५ ठये ॥
अधिप बिवाह्यो रानी मध्यमा १ कनकवती १९०।२ दान जहँ
सुर्जन १९०।१ बिधान सबकौं दये ॥
बाँरावहालेको लै प्रसंग बडबीस ६ बिप्र ऐसैं ए गनेस १ आ-
दि बुंदीपुर आगये ॥ २९ ॥
सो गनेस १ हो तब कुमार भोज १९१।२हीके संग ईख्यो छल
माँहिं तिहिं दीख्यो दान इतहीं ॥
अग्रजों १ बिचारी अग्र भेद जननीको यातैं हेरि हिय धारयो
नाँ पिताहू सम हितहीं ॥
मुख्य मानि अनुजें २ न बोल्यो तिहिं लैहों मारि मानी उत
ऐसैं इत भोज १९१।२ भयभितहीं ॥
अग्रज १ तैं दुरिबो १ बिचारयो सो उचितपै १० यौं चिंत्यो वध बि
प्रको करैबो २ अनुचितहीं ॥ ३० ॥

---

* छलघात करके बड़ा भाई मारेगा इसतरह १ सेवक को २ यह अपना खिलत पहिना कर ३ आनेवाले समय के शुभ कर्मों से ४ ऐसा विचार करके ५ अपना खिलत अपने ६ हाथ से गणेश नामक ज्योतिषी को पहनाया ॥ २८ ॥ ७ ये ब्राह्मणों के जाति भेद के नाम हैं ॥ २९ ॥ ८ बड़े भाई ने, दूसरा ने ९ छोटे को बड़ा मानकर १० परन्तु ब्राह्मण का वध विचारा सो अनुचित ही है ॥ ३० ॥

वस्त्र द्विजकों जे पहिराइ भोज १९१।२ दूजे ७ बेस टोकि न स
कैं को ज्यौं चुकाइ चिन्ह टरिगो ॥
खार[1]माँहिं आगैं नीलीखेतके समीप खरो पंथ रोकि दूदा१९१।१
रह्यो ऐसो द्रोह परिगो ॥
आतहि निसामैं जानि हरित[2] दुकूलवारी कारों[3] कढि तापैं एक१
कुंत[4] हाथ करिगो ॥
सो पै उर बिद्ध[5] बिप्र गिरत कँराह्यो[6] सुनि मानीं मानी[7] भोज-
१९१।२तो बच्यो को रंक[8] मरिगो ॥ ३१ ॥
भोज१९१।२की भुजा हु हनी प्रास[9] बेधी एक१भट इतर गये भ
जि अचानक [10]भै आनिकैं ॥
हैं[11] तजि सु घायल कुमार दुरयो खेतहीमैं दीपिकातैं[12] दूदा१९१।१
सुत बिप इत मानिकैं ॥
बुंदी भजिआयो इत एह सुनि बुंदीपति तत्थ लहि सिक्ख आइ
उच्च स्वर तानिकैं ॥
हेलौं[13] प्रियपुत्रकौं दयो तिहिं कुमर हेरि नीलीतैं[14] सु निखर्यो
पिताही पहिचानिकैं ॥ ३२ ॥
देखत तराजि कह्यो भीरुसम क्यौं तू दुर्यो भाख्यो भोज१९१।२
अग्रजतैं दुरिबो भलाई ही ॥
सो सुनि सराहि बिद्धबाहु[15] सिबिकामैं[16] सुत लाजित सिबिर[17] ला-
यो भाखि रिपु भाईही ॥
भजि उपचार[18] कल्प[19] मध्यम२कुमार भयो साबहु तथा सुनि प्रमाद

---

१ खाल (नाले) में नील के खेत के समीप २ हरे वस्त्रोंवाला ३ वह काले रङ्गवाला (दूदा) ४ भाले का ५ हृदय बेधन होने से ६ दुःख का वचन (हाय हाय) किया सो सुनकर जाना कि ७ मानवाला भोज तो बचगया और ८ कोई गरीब मरगया ॥३१॥ ९ भाले से एक वीर ने भोज की भुजा को भी बेधन की १० भय ११ घोड़े को छोड़कर १२ चिराग से १३ बुलाया १४ नीली के भीतर से ।३२। १५ कटे हुए बाहु से १६ पालखी में १७ डेरे में १८ इलाज से १९ नैरोग्य.

तपा पाईही ॥
कह्यो नृपतैं यो तैं जनायो बडो दूदा१।९।१क्यौं न ता१हि दैकैं
दै तो या२हि तो मो पटुताई ही ॥ ३३ ॥
चीनी हमहू व मुख्य१मध्यम२कौं कियोचहत नबिनु बिसेस है
सो रीति मनसौं नई ॥
दूदा१९।१हू दुबुद्धि मनतैं तो भोज१६।१२कौं गो मारि हमरे
छिगहि ठानि कानि हेमरी हुई ॥
पहिलैं परंतु मंतु भासैं पिता१ पुत्र२नमैं गोई रिस तातैं गई यह
तो गिर्नागई ॥
दूदा१९।१हु बुलाइ इक१बेर तो बिसासि देनौं भूपहि यौं उपा-
लंभि साहकै छमा भई ॥ ३४ ॥
बुंदीसहु जानि साह आसय यहै बिदित दूदा१९।१कौं बुलैवै
पुर बुंदी दल यौं दयो ॥
इतके प्रमादं जो भई पै जानि जेठो१अब गिनिहै प्रथम१साह मं
तुहुं करयो गयो ॥
आवहु निसंक प्रीति पावहु कुमर इहाँ लावहु न संसै लखि भा-
वहु भलो लयो ॥
कीनोही अजानैं बिप्रपातकको प्रतीकार भ्रातक२को जातंक
को पै मन मनैं भयो ॥ ३५ ॥
पिताके निदेसपहिलैं इत बुंदी आइमारयो द्विज यातैं मृत आ-
पुनकौं मानतो ॥

उस भूल की १ लज्जा २ चतुराई थी ॥ ३३ ॥ हम ने भी ३ जाना कि मध्यम पुत्र को पाटवी किया चाहते हो ४ अदब मिटाई ५ अपराध ६ क्रोध छिपाकर ७ उहलना देकर बादशाह के क्षमा होगई ॥ ३४ ॥ बादशाह का ८ अभिप्राय जानकर ९ पत्र १० भूल ११ अपराध क्षमा किया १२ वैर शुद्धि १३ भाई के मन में वैर उत्पन्न हुआ था परंतु वह भी मिटगया है सो निःशंक होकर यहां आ-जाना ॥ ३५ ॥

जानैं बिनु कीनैं को बनाइ प्रतिकार जथा दीनैं और द्विजन असेस बिधि दान तो ॥
तनय गनेसको बुलायो ग्राम[1]दै वे तहाँ जोहु जड बुन्दीतैं गयो भजि भै जानतो ॥
तातनैं बुलायो अब लै सिरनिदेस ताको पुनि गो हजूर दूदा १९।१।१ प्रीति पहिचानतो ॥ ३६ ॥
तातके अनीकि[1]पास जातहि तुरंग[2] तजि एकाकी[3] असस्त्र कारि बस्त्र बंधि[4] करसौं ॥
प्रनम्यौं पिताकौं जाइ नाइ सिर पायनमैं भूप सये[5] छायो उर लायो नेह भरसौं ॥
पाइही[6] खिसाइ दूदा १६।१।१ भोज १९।१।२ व्हाँ बुलाइ पुनि उरहिं मिलाइ भाइ भेट्यो धाइ अरसौं ॥
आगसँ[7] छमाई[8] पीछैं लाइ नृप ओसरमैं आदर दिवाइ जो मिलायो अकबरसौं ॥ ३७ ॥
साह सनमान्यौं दूदा १९।१।१ जेठो भोज १९।१।२ हू सौं जानि भ्रातहु परस्पर[9] व्हाँ स्निग्ध[10] दुव २ ही भये ॥
साधि साह सेवन समाँ[11] इक १ यौं सुर्जन १९०।१ हु ठाम गयो कासी उभै २ कुमर इहाँ ठये ॥
कूरमनरेस भगवंत इतछोर्यो काय मान व्है महीप दान प्रेतै[12] बिधिके दये ॥
उदयपुरी यौं रान उदय हु होत अस्त ता सुत प्रतापलाभ धर्म १ जस २ के लये ॥ ३८ ॥
बिधिके प्रसाद[13] आउवाके धरनाँतैं बच्यो आढा दुरसा जो बे-

॥३६॥ पिता की १ सेना के २ घोड़ा छोड़कर ३ अकेला ४ वस्त्र से हाथ बांधकर. राजा ने मस्तक पर ५ हाथ रक्खा ६ शीघ्रता से ७ अपराध ८ क्षमा कराके ॥ ३७ ॥ ९ माहोंमाह (एक दूसरे से) १० स्नेह युक्त ११ एक वर्ष पर्यंत. मानसिंह ने आमैर का राजा होकर १२ प्रेतकर्म में दान दिया ॥३८॥ ब्रह्मा की १३ प्रसन्नता से

धि कंठ छुरिका अनी ॥
पढत सभासैं स्वरभंग किम सोह[1] पूछी भनी स्वान काट्यो तोहू
को ह्याँ पहुँच्यो भनी ॥
उदय कवंध रोखि ढिगहि बतायो उहाँ ताकी जवनेस तहाँ निं-
दा रिसकैं[3] तनी ॥
पापी सो इतैं अब परासु भयो जोधपुर धाम तस जेठो सूरसिंह
सुत भो धनी ॥ ३९ ॥
दूजा १६२।१ भोज १६१।२ दिल्ली रहे सेवन कुमार द्वैरही मानैं
जानि सुद्धमन साहहु महरपैं ॥
एतेमाँहिं गुज्जरधरालौं[6] डर डारि इतैं साह भो जवन कोऊ सूर-
ति सहरपैं ॥
कोहु कहैं हो जो कुलवर्ग १ मैं कितेक कहैं ओरन २ मैं द-
क्खिनी पै दंस दै अहरपै ॥
दिल्ली १ भू दबावन प्रपंचमैं परयो सो सुनि लीनी जय संधा
साह साहस लहरपैं ॥ ४० ॥
मेघहिं दै लाज गाज भेरिनें दराजैं मची फाबी फौजैं11 फीलन12
पताका पंति फरकी ॥

१बादशाह ने पूछा कि स्वरभंग क्यों है इसपर दुरसा आढा ने कहा कि कुत्ते ने काटा है. बादशाह ने २ कहा कि यहां तक कैसे पहुँचा तब दुरसा आढा ने क्रोध करके राठोड़ उदयसिंह को समीप ही बताया. तब बादशाह ने ३ क्रोध करके उस (उदयसिंह) की निन्दा फैलाई. वह पापी अब *जोधपुर में ४ मरा ॥३९॥ ५ कृपा पर ६ गुजरात तक ७ अधर पर दांत देकर अर्थात् होठ चबाकर. जय करने की ८ प्रतिज्ञा ॥ ४० ॥ ९ नगारों की गर्जना १० बडी ११ समूह १२ हाथियों पर.

* यहां आमेर के राजा भगवानदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदैसिंह का देहान्त अेक ही समय पर होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का देहान्त विक्रमी सम्वत् १६२८ में और आमेर के राजा भगवानदास का देहान्त १६४६ में और जोधपुर के राजा उदयसिंह का देहान्त सम्वत् १६५२ में होना इन तीनों राज्यों के इतिहासों में लिखा हुआ है।

* अंबरमैं † धावके फिराव हय लैलै आत ‡ संबरमैं नावके
तिराव भूमि सरकी ॥
लाखन कटक मिल्यो पाखन हिलोर लेत फैलत § फनी१के
फन२ कोल १ दह्ह २ करकी ॥
सूरतिके लाह पर वाह लै सनाह सजी ऐसे राह सेना चढी
साह अकबर ३७१२ की ॥ ४१ ॥

सुरजन १९०११ राखी नये लाभतैं अधिक सेना बुंदीको वरूथ
लै कुमार जुग बरसो ॥
दूदा १९११ भोज१९१२ संगहि लये ए सुलतान द्वै २ ही सज्ज
सु चल्यो यौं दिल्ली चापसैं न सर सो ॥
मग्गके मिंवासनकौं पद्धर करत पूगि झारि जव लोलनको
गोलनको झरसो ॥
तीनौं ३ दिस लीनौं बेढि बाहिर छबीनौं तोरि सूरतिमैं तापी
कोस भास दरँ हर सो ॥ ४२ ॥

झरसो १ हरसो२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

वासर बहु तोपन बन्यौं, मृध जन मारनमूल ॥
वाँरि रह्यो सीतल १ बिमल२, कछु तापी परकूल ॥ ४३ ॥
रहती बनि रन रत्तिके, सो नदि अग्गि समान ॥
जनु कहती सूरति नजरि, परि पायन चहि प्रान ॥ ४४ ॥

---

* आकाश में † दौड़ने के फिराव लेकर घोड़े फिरे और ‡ जल में नाव तिरै इस प्रकार भूमि डिगी § शेषनाग के ॥ ४१ ॥ १ सेना २ सज्जित होकर दिल्ली रूपी ३ धनुष से बाण के समान चला ४ मेवासों (चौर आदि के स्थानों) को सीधा करता हुआ वेग युक्त ५ चपल गोलों का झड़ लगाकर ६ सूरत नगर में तापी नामक नदी के कोश में प्रकाश करके ७ भय मिटाया ॥ ४२ ॥ ८ बहुत दिन ९ युद्ध १० जल ११ पैले किनारे का ॥ ४३ ॥ १२ रात्रि के १३ अग्नि के समान होकर वह तापी नदी यह कहती थी कि सूरत शहर नजर है ॥ ४४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठदराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सनिश्चयज्ञातसुर्जनद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्तिगणन १ बुन्दीप्रस्थितसावरोधवाराणसीप्राप्तसुर्जनस्य सैन्यसहितस्वामात्यप्रेषणेन रामदुर्ग-मांडाप्रान्तविजयीकरण २ आगरासंज्ञाप्रसिद्धिकारणातवृद्धिकथनेन सहाकवरस्यवनेशगुणावर्णन ३ स्वानुजभोजार्थयवनेन्द्रदत्तपारितोषिकप्रथमप्राप्तिनिमित्तभोजवधोत्सुकदूदाकृतभोजभ्रमहेतुकगणेशज्योतिर्विद्धनन ४ कनिष्ठसूनुपट्टपचिकीर्षुसुर्जनस्य यवेनन्द्रोपालम्भप्राप्तिहेतुकपट्टपकुमारदूदाबुन्दीसमानयनतन्मन्तुक्षमापन ५ आढागोत्रदुरसाचारणप्रोत्साहितयवनेन्द्रकृतोदयसिंहधिक्करण ६ आमेरराजभगवन्तदास-उदयपुरमहाराणोदयसिंह-योधपुरेशोदयसिंहपरासुत्वसूचनानन्तरयवनेन्द्राकबरससैन्यसूरतपुरवेष्टनं नाम नवमो मयूखः ॥ आदितो द्विनवत्युत्तरशततमः ॥ १९१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन को बावन परगनों के मिलने में निश्चयता पूर्वक जानेहुओं की गणना १ बुन्दी से जनाना सहित काशी गये हुए सुर्जन का अपने मन्त्री को सेना सहित भेजकर रामगढ और मांडा नामक परगनों को विजय करना २ आगरा नाम के प्रसिद्ध होने के कारण सहित आगरा नगर की वृद्धि के साथ अकबर बादशाह के गुण कथन ३ अपने लघुभाई भोज को बादशाही खिलत अपने से पहिले मिलने के कारण भोज को मारने की इच्छावाले दूदा को भोज के धोखे से गणेश जोशी को मारना ४ छोटे पुत्र को पाटवी बनाने की इच्छावाले सुर्जन का बादशाह से उपालम्भ पाने के कारण पाटवी पुत्र दूदा को बुन्दी से बुलाकर उसका अपराध क्षमा करना ५ आढा शाखा के चारण दुरसा का बादशाह से राजा उदयसिंह को धिक्कार दिलाना ६ आमेर के राजा भगवन्तदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदयसिंह के देहान्त की सूचना ७ गुजरात में सूरत नगर में शत्रु के प्रबल होने की सूचना पाने पर बादशाह अकबर का सेना सहित सूरत नगर को घेरने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ बानवें १९२ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

जगि तोपन सूरति जरत, उच्छरत झरत अलात ॥
पंथ चरन १ अहीन २ परत, जोथ तारत झकिजात ॥ १ ॥
जलजंतुन जुर डिग जन सु, छोरयो आतप छिजि ॥
द्विज पर्यंकनी अब वहन, थामहु वहन न भिज्जि ॥ २ ॥
जान्यों सूरति साह जब, परे हगिहे अब पेठि ॥
जय संगबभय काढि जुरयो, वप आतिरंप हय बैठि ॥ ३ ॥
निजसेनासह निकस्यो, जौंपे मन इम साह ॥
इनहु भई तोपन अटक, तौन रटक असिताह ॥ ४ ॥
वीर हाक वीरन वजी, धीरन अभिमुख धाव ॥
मिलि तीरन की रन मिले, दल चीरन असि दाव ॥ ५ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

ऐसे सूरति साह चाह अपनी देखो वृथा दुर्गतैं ॥
केते वाहिर तोप जौं करिकैं सो हौं कढ्यो सज्जौंही ॥
द्विल्लीकेहु वहैथ देखि हढता ताकी सराही तहाँ ॥
किल्ला तो भरि है परस्पर कह्यो लग्गीं इहाँ लज्जही ॥ ६ ॥
यों होत लगे चितवहु रा प यों प्रसंसा ऐंग ॥
पश्चायें जितनें निरंद्र उतन्कै लोहा नचैंनें लगे ॥

[illegible]

ताजी बेग मिलाइ एहु तबतो मित्रत्व मानी मिले ॥
ओछे अंतर देत लेत उरझे जेजे समीपी जिले ॥ ७ ॥
फाटे बाजि गिरैं१भिदे गज कहाँ लैलै तँवारे फिरैं२ ॥
खंडाधार खिराइ हड्ड बिखरैं३के लुत्थि बुत्थी किरैं४ ॥
पै पै ईस हसैं रु गान बिलसैं५त्यों ताल दै पब्बई६ ॥
ज्यों रीझे चउसट्ठि६४बावन५२भनैं यों ए१रु यों ए२जई७ ॥८॥
मज्झैं नारदहू बजात महती घूमैं सँगनैं घनैं८ ॥
लूमैं रक्खस१भूत२डाकिनि लटी बँटैं स्व दाँई बनैं९ ॥
भूमैं सीस गिरैं न ज्यों भटनके त्यों खेल संभू तनैं१० ॥
झूमैं साकिनि झुंड रक्त झगरैं अच्छे पिबैं उप्फनैं११॥ ९ ॥
पैठे कंक१रु गिद्ध२चिल्ह३पलमैं गोदादि मेदैं गिलैं१२ ॥
पावैं यों पल दूर पूर पसरैं मंगैं जुही ज्यों मिलैं१३ ॥
कंकाली डमरू बजाइ किलकैं कंकाल संचैं करैं१४ ॥
काली खप्पर ओडि[12] ईडि[13] कलिहैं मूखी बँपासौं धरैं१५॥१०॥

गे तब तो दिल्लीवाले भी १ घोड़े उठाकर मित्रों के समान छाती भिड़ाकर मिले और थोड़े अंतर से देते लेते समीप के दोनों तरफ उलझे ॥ ७ ॥ घोड़े फटफट (कटकट) कर गिरते हैं और कहीं पर भिदे हुए हाथी २ झोखे लेकर (लगकर) फिरते हैं तरवारों की धारें खिरकर हड्डियां बिखरती हैं और कितने ही लूथ बुत्थ होकर गिरते हैं जहां पैर पैर पर महादेव हँसते हैं और ३ पार्वती ताल देकर गाने का सुख लेती है और रीझे हुए चौंसठ जोगिनी और बावन भैरव इधर इनको और उधर उनको विजयी बताते हैं ॥ ८ ॥ बीच में नारद ४ महती नामक वीणा को बजाकर ५ मस्तक घुमाते हैं. डाकिनियों की ६ केशों की लटी से लटक कर राक्षस और भूत ७ दायभागी बनकर बंट करते हैं और वीरों के मस्तक भूमि पर नहीं गिरने पावें इसतरह का महादेव खेल फैलाते हैं. साकिनियां होकर झगड़ा करती हैं और उफना हुआ अच्छा रक्त पीती हैं ॥ ९ ॥ मांस में कंक गिद्ध और चीलहें घुसती हैं और ८ मज्जा आदि ९ मांस खाते हैं इस प्रकार मांस का समूह दूर तक फैला हुआ पाते हैं जिसमें फैलकर जो मांगते हैं वही मिलता है १० किलकारें करती हुई कालिका डमरू बजाकर ११ हड्डियों का संचय करती हैं और कालिका खप्पर १२ मांडकर १३ स्तुति करके १४ मज्जा को धारण करती हैं ॥ १० ॥

के बानैत कटैं१अटैं२रु उलटैं३फूटै४रु फाली फटैं५ ॥
हत्थी१घोरन२तैं किते आसि हनैं ह्वै व्यंग६ह्वै भू७हटैं८ ॥
घोटे४ स्वास बिनासमैं बिछुरिबे घाँघाँ घनैं के घटैं९ ॥
रीझै देखत मारते१रु मरते२श्लाघाँ सुपर्वा रटैं१० ॥ ११ ॥
वैत्री७ ह्वै बहिकाइ प्रेत पतिभू घाँघाँ भिरावैं घनैं११ ॥
ते तुट्टैं भर मुंडमाल तिनकी वैढैं कपाली बनैं१२ ॥
हत्थीकृत्ति प्रसारि अंसु हुलसे जे छत्त सूली जनैं१३ ॥
भृंगी१नंदि१०२भुल्लाइ१४भजंते१५उमा भै पाइ लड्डे भनैं१६॥१२॥
मंड्यो प्रातहिसौं महामृध मजाकुप्पी चमू द्वै१२कटी ॥
घोरे१गैं२भर३द्वै१३हि पंति घँटतैं पैलीर अनीही घटी ॥
त्यौं बेधी रु--क(?) छोरि१५ तजिकैं ठौ अद्ध नाँ ठाहरे ॥
तोहू सूरति साह मंडि तुमुलैं१६ धाराहि पै पै धरे ॥ १३ ॥
जो दिल्लीदलकी हरोलैं१७ हनिकैं अग्गैं बढ्यो यों जहाँ ॥
पैने१८ सस्त्रन पाइ सूर प्रसभी तुट्टे दुहूँ२घाँ तहाँ ॥

कितने ही १ बाणविद्या जाननेवाले अथवा युद्ध का बाना बांधनेवाले २ फिरते हैं और ३ छलांग मारनेवाले फटते हैं तरवारों के मारेहुए हाथी घोड़े जुदे होकर भूमि को छाकर हटते हैं ४ श्वास घुटकर नाश के समय बहुत शरीर बिछुड़ते हैं और मारते और मरते हुओं को देखकर ६ देवता ५ प्रशंसा करते हैं॥ ११ ॥ ७ बेत हाथ में रखनेवाले अर्थात् छड़ीदार होकर बहकाते हुए प्रेत जामिन हो हो कर ठौर ठौर पर बहुतों को भिड़ाते हैं उन टूटे हुए (कटे हुए) वीरों की महादेव युद्ध में मुंडमाला बनाते हैं और कन्धे पर ८ गजचर्म को फैलाकर प्रसन्न होते हैं ११ भगते हुए ९ भृङ्गि और १० नन्दि नामक गणों को भूलकर पार्वती भय पाकर फिर मिल जाना कहती है॥ १२॥ प्रभात से ही १२ युद्ध का मजा रचकर कोपी हुई दोनों सेनाएं कटीं, घोड़े हाथी और१३ वीर दोनों पंक्ति के१४ घटते ही सूरत की सेना घटी त्यों( )१५ छोडकर और अपने स्थान को तजकर वहां पर आधे भी नहीं ठहरे तोभी सूरत के बादशाह ने१६ भयंकर युद्ध करके तरवारों की धार में पग पग आगे दिया ॥ १३ ॥ दिल्ली की सेना की १७ हरोल (सेना के अग्रभाग) को मारकर इसप्रकार जहां सूरत का बादशाह आगे बढा तहां १८ तीखे शस्त्रों को पाकर

कंचुकी भोज१६।१कुमारको हु कटिगो संबाध संग्राममैं ॥
है पाइकै खग्ग हरौल करिबेलग्गो त्वैरा काममैं ॥ १४ ॥
रुट्ठो जत्थ कुमार खग्ग पटकैं वध्दीन लग्गीरहैं ॥
अप्पैं वाह सिपाह रीझि इतके खासा चढैबो चहैं ॥
सोहू जानि बखानि पानि चलते उच्छाह दै साहहू ॥
वाजी किर्यांव१नाम खास बखस्यो आरोहिदै वाहहू ॥ १५ ॥
वाजी खास अरोहि भोज१९।२बढिकैं ज्यों खग्ग झारयो बली
चक्ख्यो सूरति साह अग्र चमू छैं छैं सु पच्छी चली ॥
सोहू सत्रु हरोल तुट्टत समैं गैं गाहि नीरैं गयो ॥
भाला छातिय मारि पारि अरिकों जै पुब्ब ग्राही भयो ॥ १६ ॥
गौहैं[12] झैंकि रु सीस-पट्ट गिरतैं ताको लयो तोरिकैं ॥
जामैं इक्क१अतुल्लय वज्र१निकस्यो भा इंदु जो जोरिकैं ॥
मानिक्यादि महर्घ सर्व मनिमैं जो हो असंभू तथा ॥

दोनों ओर के हठवाले वीर छूटे (मरे) वहां २ भयंकर युद्ध में बुन्दी के कुमर भोज का १ घोड़ा कटगया तहां ३ पैदल होकर आगे खड़ा हुआ और युद्ध के कार्य में ४ शीघ्रता करने लगा ॥ १४ ॥ वह कुमार क्रोधित होकर जहां खड्ग पटकता था तहां पाधी (चमड़ी) भी लगी नहीं रहती थी जिसकी सिपाह प्रसन्न होकर ५ प्रशंसा करते थे और इधरवाले उसको खासा घोड़े पर चढाना चाहते थे और उसकी ६ प्रशंसा जानकर और ७ हाथ चलते देखकर बादशाह भी उत्साह देता था और अपनी सवारी का किर्यांव नामक घोड़ा ८ चढकर ९ प्रहार करने को दिया ॥ १५ ॥ उस बलवान् ने खासा घोड़े पर चढकर आगे बढकर खड्ग चलाया सो १० आगे चलनेवाले सूरत के बादशाह ने उस खड्ग को चखा और उसकी सेना ११ टपक टपक कर पीछी चली उस शत्रु की हरोल टूटते समय उसके हाथी को मारकर समीप गया और उस (सूरत के बादशाह) की छाती में भाला मारकर और शत्रु को गिराकर विजय को प्रथम लेनेवाला हुआ ॥ १६ ॥ १२ घोड़े को झपटाकर गया सो शाह के गिरते समय उसके मस्तक से शिरपेच तोड़लिया जिसमें एक १३ तुलना रहित हीरा निकला जो चन्द्रमा के समान १४ कान्तिवाला था १५ माणिक आदि सब १६ महँगी मणियों में वह १७असंभव हीरा था तोभी

तोहू ता सिरुपेचमैं तरनिलौं भास्यो सु हीरा १ जथा ॥१७॥
सो लैकैं सिरुपेच भोज१९।१।२मुरर्यो भाला तज्यो सत्थही ॥
तीखे तोमर १ संगि २ तेग ३ मृतपैं पीछैं चले तत्थही ॥
जाहीठाँ मुगलेस जाइ रिपु जो पिक्ख्यो मर्यो भू परयो ॥
भाला फूटिरह्यो कुमारकरको जामाँहिं सोभा भरयो ।१८।
कोनैं एह हन्यों कह्यो बहु तहाँ झूठेहि हंतां बनैं ॥
याको मारक जास प्राँस सुहि यों भाखे हु मो मो भनैं ॥
अक्खी कुंत कढाइ देखि कर लै दिल्लीस काको यहै ॥
नाना तोहु धनी बनैं भर नये जो कोन जाको यहै ॥ १९॥
काको यहै १ जाकोयहै २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
दिल्लीसासक पूछि पासहि लख्यो आँकुंत दूदा१९।१।२ हुको ॥
बुल्लयो दुर्जनसल्ल १९।१।२ कुंत यहतो मो भ्रातके बाहुको ॥
भू नातौं कछवाह मानहु भनीभाला यहै भोज १९।१।२ को ॥
फूटो सूरतिसाह जाकरि अहो स्वामी इती फोजको ॥ २० ॥
दाहुको १ बाहुको २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
भाला तावकै है कि भोज१९।१।२ प्रति यों दिल्लीस पृच्छा भई ॥
भाख्यो भोज१९।१।२ धनैं धनीन घन भो जो क्यों वजैं मो जई ॥
मोकों सूरति१तैं दई मुगलद्यों भाखी बली भोज १९।१।२ सों ॥
यातैं बुंदिप २ तोहि मैं दिप अबैं जान्यों जई ओजसों ॥२१॥

उस १ शिरपेंच में २ सूर्य के समान वह हीरा दीखा ३ वह हीरा लेकर भोज पीछा फिरा और वह भाला वहीं पर छोडा, उस मरेहुए बादशाह पर ४ तीखे भाले ५ बरछी और तरवारें पीछे चलीं ॥ १८ ॥ झूठे ही ६ मारनेवाले बने ७ जिसका यह भाला है वही इसका मारनेवाला है सो यह सुनकर यह भाला 'मेरा है, मेरा है' ऐसा सभी कहने लगे ८ भाला निकलवाकर ९ अनेक वीर उस भाला के धनी बने ॥१९॥ १० यह भाला किसका है सो दूदा से पूछा ११ भूमि के सम्बन्ध से ॥ २० ॥ १२ तेरा है क्या? १३ दिल्लीश ने पूछा १४ इस भाले के बहुत स्वामी होगये हैं. तहां बादशाह ने कहा कि मुझ को सूरत शहर तूने दिया है इसकारण तुझ को बुन्दी दी १५ पराक्रम से ॥ २१ ॥

वैतालीयम् ॥

भाखत इम साह भोज१९१।२तैं, हनि रिपु सूरति१ तैं दई हमैं ॥
किय दुष्करे मन्त्रिमोजतैं, हम दिय बुंदियरतोहि तुष्ट है॥२२॥
दुर्नय प्रभु राम२०३।४देखिये, सुनत कुमार इतीहि भोज१९१।२सों॥
हुलस्यो गिनि लाभ जो हिये, करतभयो हि सलाम राज्यको॥२३॥
विरची नटि यों न विन्नती, बुन्दीतो हमरैहि है वनी ॥
प्रभु रीझे सर्व भूपती, अप्पहिं देन कहा न ओर है ॥ २४ ॥
न इमहु बुल्ल्यो बरानसी, जनक अनंतर मोहि देहु जो ॥
बुंदिय इक१वित्त१धी रवसी, लखि पारक्क कवड्ड रंकलों ॥ २५ ॥
बुंदिय इम देत वेगही, करतहि भोज१९१।२सलाम राज्यको ॥
मन्निय दूदा१९१।१गईमही, न अबहि पै उपदा निवेदई ॥ २६ ॥
यह इक्क न लेन आसहै, बदलैं रीझ बहोरि बोधसों ॥
इहिं मृगतृष्णा लग्यो यहै, दूदा१९१।१हू रिसकों दबातभो॥ ॥२७॥

॥ सहै१यहै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

इत सूरति ठानि अप्पनी, रच्छकराक्खि विसासके बली ॥
अथ अकबर३७।१मोरिकैं अनी, पलट्यो दक्ष दक्खिनमाँहिंपद्धरो॥२८॥
चंदा अभिधान वीयसों, अहमदनेर जु राज्य अंगमें ॥
सुहि वेगम संपरायसों, विधवा भ्रातिभट साहपें वनी ॥ २९ ॥
करि गोला हेम१तार२के, बहु मासन तस दुर्गतें बहे ॥
क्रम अकबर३७।१वीर वारके, तोपनभार भुनें भरे तहाँ ॥३०॥

---

१ कठिन २ रीझ ३ प्रसन्न होकर ॥ २२ ॥ ४ हे प्रभुरामसिंह उक्त कार्यों को देखो ५ प्रसन्न हुआ ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह नहीं कहा कि पिता के पीछे का भी मुझको दो ६ बुद्धि में ७ पराई ८ कौड़ी को रङ्क होने इसप्रकार उसने बुन्दी को दिया ॥२५॥ ९ जीतके भी १० परन्तु नजराना नहीं किया है यही एक ॥२६॥ ११ चाहता है १२ विचार से बुन्दी देने का यह रीझ-बदला देवे १३ झूठे लोभ में लगकर ॥ २७ ॥ १४ सीधा ॥ २८ ॥ १५ इच्छा से १६ अहमदनगर के राज्य को दबाए हुए थी १७ युद्ध से ॥२९॥ सोना १८ चाँदी के गोले चलाए १९ वीरों की मार; अथवा मारने के वीर ॥ ३० ॥

जिम सूरति१ जंग भो जई२, तत्थ२हु भोज१९१।२कुमार ठानि त्यौं।
दुर्गहि अधिरोहिनी[1] दई, गो चढि जो उतके गिराइकैं ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

सत्थ सहिल्ली[2] सत्तसत७००, चहि लहि खग्गचलाक ॥
जो बेगम सम्मुह जुरी, तुट्टत गढ रढ[3] ताक[4] ॥ ३२ ॥
सूरति१सम अत्थ२हु सबल, भट निज पिल्लित भोज१९१।२ ॥
गढसिर चढि पहिलैं[5] गयो, आँजि[6] अतुल[7] अति ओज ॥ ३३ ॥
बाहिर कढि इम बेगमहु, तुमुल[9] झारि तलवारि ॥
जुरी सत्तसत७०० सखिनजुत, परी तिय सु बहु पारि ॥ ३४ ॥
रन जवनी चंदा रच्यो, ऐसो बहुरि न ओर ॥
सेना अकबर३७।१ साहकी, घनी हनी वनि घोर ॥ ३५ ॥
करत कतल बाहिर कढी, सुनि गढ तुट्टत सद्द[10] ॥
कथित सखिन सह जो कटी, हसत नरन रनहद्द ॥ ३६ ॥
अहमदनैर[11]हु बिजितयह, करि गढ भोज१९१।२ कुमार ॥
इक्क सफरमैं बस उभय २, किय अकबर३७।१जसकार ॥३७॥
रीझि साह पुनि भोज१९१।२ रन, अहमदपुर अपनाइ ॥
कहिय इष्ट[12] मंगहु कुमर, भनहु जुदी मन भाइ ॥ ३८ ॥

षट्पात् ॥

रीति लखहु प्रभुराम २०३।४ मझ्झि बुंदिय संटनैं[13] मम ॥
भू इतर न लिय भोज १९१।२ सोहि दृढ किय साहस सन ॥
इम जंपिय जिम अचल आहि दिल्लिय तुम आलय[14] ॥
इम बुंदिय मम अचल निबहि भुग्गैं कुल निर्भय १ ॥
हसि साह कहिय इतर[15]हु लहहु मंगिय तव पंच ५ हि कुमर ॥

१निसरनी लगाकर॥३१॥॥सात सौ २सहेलियों को साथ लेकर३हठ४देखकर।३२। ५ भेज कर ६युद्ध में ७तुलना रहित८बड़े प्रताप से॥३३॥ ९भयंकर॥३४॥३५॥१० शब्द॥३६॥११अहमदनगर॥३७॥१२इच्छा होवे सो मांग॥३८॥ १३बुन्दीको बदल कर१४जैसे आप के घर में दिल्ली दृढ है तैसे बुन्दी मेरे दृढ रहै१५और भी लो

सुनि लेहु तेहु नरनाह सब बिरुद[1] रूप दिय जेहु बर ॥ ३९ ॥
थप्पि कोल रनथंभ सत्त ७ पहिलैं किय सुर्जन१९११२ ॥
तिनमैं सप्तम ७ तुच्छ मन्नि पछिताइ रहिय मन ॥
गो१ सुरमूरति[2] २ गेह ३ नसत ढिग कबहु निहारे ॥
करि प्रसन्न साहकौं बहुरि ए ३ लैन बिचारे ॥
न मिल्यो तथापि अवसर[3] नृपहिं रीझन खिन हेरतरह्यो ॥
अवभोज१९११२प्रथम त्रिक३लैन यह करन जोरि इहिं बिधि कह्यो४०
देसढिग१ रु दैवलढिग२ हु न व्है यह त्रिक ३ कहुँ नासन ॥
गो१सुरमूरति२गेह३लहैं हम लखत बिनास न ॥
यह त्रिक३जब दिय अप्प बहुरि दुव२तब मंगौं बर ॥
बरखा लहि सिक्खबिनु घुमँडि ऋतु छबि[6] जैहौं घर१ ॥
चढि अप्प चलंत हित यान चढि सह चलिहैं बिनु सासनहु२॥
इम त्रिक ३ रु जुगल २ मिलि पंच ५ ए बरहि भोज १९११२
लहि कहिय बहु ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

त्रिक३ जुग२मिलि ए पंच ५ तँहँ, मंगे इष्ट कुमार ॥
साह रीझि दे तेहि सब, दिय असि छठ६ उदार ॥ ४२ ॥
[10]जास गदा अभिधान जग, कहत हु सुख्य कृपान ॥
छठो ६ अकबर३७१रीझि छैम[11], दयो अधिक हित दान ॥४३॥
बुंदी नहि संटी[12] बुधहु, जातैं हानि अनात ॥

१ स्तुति रूप ॥ ३९ ॥ रणथम्भ के गढ में सुरजन ने सात कौल किये थे जिनमें अन्तिम कौल को तुच्छ मानकर पछिताया और मन में यह माना कि गौवें, २ देवताओं की मूर्ति और देवताओं के मन्दिरों को नाश होते समीप में कभी नहीं देखेंगे ये तीनों बातें बादशाह को प्रसन्न करके फिर कभी लेवेंगे परन्तु राजा को ३ समय नहीं मिला ॥ ४० ॥ ४ सेना के समीप ५ देवमूर्ति ६ ऋतु की शोभा देखकर ७ इच्छा पूर्वक सवारी पर चढ़कर ८ विना आज्ञा भी ॥ ४१ ॥ ९ खड्ग ॥ ४२ ॥ १०जिसका नाम 'गदा' कहते हैं ११ समर्थ ॥४३॥ १२बुन्दी नहीं बदली इसकारण उसकी बुद्धिमानी

जँहँ इक१त्रिक३जुग२सब जुरत६, आसि तँहँ सप्तम७आत ।४४।
कुमरहिँ ए सब७ कति कहत, सूरतिहीँ दिय साह ॥
हुव पीछैं बेगम हनन, रन सु भिन्न मत राह ॥ ४५ ॥
दूदा १९।१ तब जानिय दुमनैं[2], अब बुंदिय गत आहि ॥
सत्रु भयो यह साइहू, जानत हे प्रभु[3] जाहि ॥ ४६ ॥
पै कैसी भवितव्यपर, संग रह्यो यह सोधि ॥
अब दिल्लिय पहुँचाइ इहिँ, बनी निवेरहिँ[5] बोधि ॥ ४७ ॥
गढ जित्यो अहमदनगर२, ह्वै रन भोज१९।१।२ हरोल ॥
भोजबुरज१ विरची भली, तँहँ निजनाम अतोल ॥ ४८ ॥
इमहि ख्याँत कहियत अगहु, अहमदनैर सु अट्ट१ ॥
अकबर३७।१ दिल्लिय पत्त इम, वैरिन कारि दहबट्ट[9] ॥४९ ॥
गदत किते अहमदनगर, सफर अंत्यँ[10] लिय साह ॥
तो न कुमर१नृप२भोज१९।१।२तँहँ, इम ठहै मति अवगाह[11] ।५०।
सूरति ही तब संभवंत[12], रीझ लहन कुमरेस ॥
प्रचुर[13] प्रमान मिलाइ पैं, अक्खिय हम दृढ एस ॥ ५१ ॥
जानी दूदा १९।१ हू तजी, अहमदपुर भुव आस ॥
जित्यो कुमरहिँ भोज१९।१।२जँहँ, गढ चढि करि पर ग्रासँ[14] ।५२।
साहहिँ दिल्लिय पत्त[15] सुनि, पहु सुर्जन १९०।१ जँहँ पत्त ॥
तँहँ उर लायो भोज१९।१।२तिम, हुत हित जिम सब देत्त[16]॥ ५३॥
दूदा१९।१ हू चिंतिय दुमन, करैं जनक अब कोन ॥

में हानि दीखती है १ सात की गणना आती ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ २ उदास होक र ३ जिसको स्वामि जानते थे सो शत्रु होगया ॥ ४६ ॥ ४ आगे क्या होता है ५ जैसी बनेगी तैसी निवेड़ेंगे ६ यह विचार के ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ७ प्रसिद्ध ८ बुरज ९ बरबाद ॥ ४९ ॥ १० अंतिम सफर में लिया था ११ इसप्रकार बुद्धि का थाह होना है ॥ ५० ॥ १२ नव सूरत के युद्ध में ही बुन्दी आदि रीझ का मिलना सम्भव है १३ बहुत प्रमाणों से ॥ ५१ ॥ १४ शत्रुओं का नाश करके ॥ ५२ ॥ १५ गया हुआ सुनकर १६ देकर ॥ ५३ ॥

पै तिम इक्कल्यो भोज१९।१प्रिय, दिय आसा तजि दो२न ॥५४॥
सहँसा सत्थ स्वकीय सजि, रत्ति चल्यो चढि रुट्ठि ॥
सरनि फतेपुर१सीकरी२, पति साहहिँ दियपुट्ठि ॥ ५५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

साहको तबेला सीकरी करा हो सो सकल लूटि आयो पुर बुंदी दूदा१९।१अनखाइकैं ॥
सुनत सु सोर साह अकबर३७।१घोर सेना सजिय कितीक बुंदी लैन दरसाइकैं ॥
मेरतिया नाम बलभद्र इक१रट्ठऊर खूनी अकबर३७।१को भयो जो धन खाइकैं ॥
सगपन स्वीय जानँ रामपुर कीनौँ पर परानिसकै न अब दिल्ली डर पाइकैं ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सुर्जनकनिष्ठसूनुभोजकृतयवनेन्द्रशत्रुसूरतपतिमारणतच्छिरोरत्नानर्घवज्रतत्करपतनं १ एतत्समरप्रसन्नयवनेन्द्राकबरकृतभोजार्थबुन्दीप्रदानाज्ञोत्तरमहमदाबादविजयपरितुष्टयवनेन्द्रप्रसादेनभोजस्य स्वसमक्षगोदेवमूर्तिदेवमन्दिरविध्वंसनाभाववरप्रापणं २ यवनेन्द्रदिल्लीयानानन्तरभोजबुन्दीप्राप्तिसुर्जनप्रसाददर्शनरुष्टदूदाकृतफत

अकबर और राजा सुरजन १दोनों से बुन्दी मिलने की आशा छोड दी॥५४॥ २ अचानक अपने साथ को सज्जकर ३ मार्ग. बादशाह को स्वामि समझने में ४ पूठ दी ॥ ५५ ॥५ अपना सम्बन्ध ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के लघुपुत्र भोज के हाथ से बादशाह के शत्रु और सूरत नगर के पति का माराजाना और उसके मस्तक का अमूल्य हीरा भोज के हाथ लगना १ इस युद्ध की प्रसन्नता में बादशाह अकबर का भोज को बुन्दी देने की आज्ञा दिये पीछे अहमदाबाद को विजय करने के कारण बादशाह को प्रसन्न करके गौ, देवमूर्ति और देव मन्दिर अपनी दृष्टि के आगे खण्डित नहीं होने का भोज का वर पाना २ बादशाह के दिल्ली गये पीछे भोज

हपुरसीकरीस्थितयवनेन्द्रहयशालालुण्टनोत्तरबुन्द्यागमनं नाम दश-
मो१०मयूखः ॥ आदितस्त्रिनवत्युत्तरशततमः ॥ १९३ ॥

॥ प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सूर * मुरड़ि इम साहसूँ, लूटे हय जय लाह ॥
हणि रच्छक हूदा१९१।१हठी, आयो धरत उछाह ॥ १ ॥
बुंदी आइ सम्हालि बळे, सावधान करि सर्व ॥
हूदो१९१।१मुंड़ि रहियो दुसह, पावण जस रणे पर्व ॥ २ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय बलभद्र१नाम मेड़तियो राठोड़ धाड़ायतोंमें धुरंधर कहावै। अर जिणरा आतंककरि दूरहूरै मार्गभी सोदागर न हालै र केही देस निरंकुसै बसण नपावै ॥

जिण राठोड़ कँवर हूदा१९१।१नूँ अकबर३७।२हूँ मुरड़िआयो जाणि जिकोही आपनूँ अवलंबरो देणहार विचारियो ॥

अर रामपुरे आपरो सगपण हुवो जिणरा विवाहणमैं दसोररा फोजदारनूँ नीड़े जाणि केहीवार संकल्प पाछो पाड़ि तुरकाँरा पेचमैं केदहोणरो डर धारियो ॥ ३ ॥

मेड़तिये बुंदी आइ हूदा१९१।१थी कहियो आपरो सहाय मिलै तो रामपुरे चंद्राउताँरे ढंगै विवाहणरै काज जाईजै ॥

अर आप न हालो तो कन्यानूँ तरुणी हुई जाणि चंद्राउताँ पुरोहितरो धरणोँ दिवाइ मोनूँ बींदरो वेस कराइ साहसथी आणियो तोभी दिल्लीरा दूत दसोर पूगा जाणि पाछोही पैलाईजै ॥

को बुन्दी मिलने में राव सुर्जन की प्रसन्नता देखकर फतेपुर सीकरी में बादशाह की हयशाला को लूटकर हूदा के बुन्दी आने का दशवाँ १० मयूख समाप्त हुआ ॥ आदि से एकसौ तरानवे १९३ मयूख हुए ॥

* बदल कर ॥ १ ॥ १ सेना २ विरुद्ध होरहा ३ युद्ध के समय ॥ २ ॥ ४ भय से ५ चले ६ निर्भय ७ आधार ८ समीप ९ विचार ॥ ३ ॥ १० नगर ११ आगे

दूदो १९१।१ कँवर सरणाई[1]साधार सुणताँही सहाइ देर लार हुवो जिकण आपरा अनादररै अँटै[2] अकबर ३७।१ जिणड़ा पात साहथी तोड़ि तिणरो प्रतीकार[3] दिखावणरैकाज केवल वीरभाव रो जस चाहियो ॥

अर घणाँ देसाँरा लूटणहार धाराँरा अधीस पराईभूमिरा भो-हणहार[4] मेड़तिया वल्लभद्र १ नूँ रामपुरै लेजाइ विवाहियो ॥ ४ ॥

जरैँ चंद्राउताँभी पहली ओराँरा विनाहणहार कुमार दूदा १९१।१ नूँ बडा साहसरैसाथ एक १ पुत्री विवाहि पछैँ बींदणी[5] हुती जिका दूजी २ पुत्री राठोड़ वल्लभद्रनूँ विवाहि दीधी ॥

अर आवस्यक कृत्य[6] वणिसाकियो जिको करि दसोरथी फ़ौज चाली जाणि दो २ ही बराताँ प्रातही विदा कीधी ॥

दो २ ही जानाँ[7]तो रामपुराथी आइ भाणपुर मुकाम दियो ॥

अर निसीथ[8]रैसमय दसोररै फोजदार दो२ ही बर आइ नेड़ा[9] किया जिको सुणताँही वल्लभद्र १ नूँ ऊढाँ उभय[10] २ रैसाथ आगैं चलाइ कँवर दूदा १९१।१ पाछैँ रहि मरणीक[11] थियो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सउँच[12] १ न्हाण२ मुख साधि सब, राचे राजसराह ॥
क्रम बेठो संझ्या करण, दूदा १९१।१ कँवर दुबाह ॥ ६ ॥
करि संझ्या १ जप २ आदि क्रम, पूजि इष्ट गोपाल३ ॥
स्वँ[13] कराँ करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ ॥ ७ ॥
आप करै सोही असँण[14], इष्ट भोग अँवसेस[15] ॥
इम पूँपी[16] जुग२ करि उठै, प्रभुरै कीधी पेस[17] ॥ ८ ॥

---

१ शरण आये हुओं का आधार २ बदले ३ वैर मिटाना ४ भागनेवाला ॥ ४ ॥
५ दुलहन ६ जरूरी काम ७ बरातें ८ आधी रात्रि के समय ९ समीप किया १० दोनों दुलहनों के साथ ११ काम आने (मारेजाने) को तयार हुआ ॥ ५ ॥
१२ शौच जाकर स्नान करने आदि ॥ ६ ॥ १३ अपने हाथ से भोजन पका कर ॥ ७ ॥ १४ भोजन १५ बाकी १६ रोटी १७ भेट धरी ॥ ८ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जतरैंतो दसोररा चालिया प्राणांरी बाजीरा खेलहणहार अक बर ३७।१ रा वानैंत काळरा किंकर[2] अणाचींतिया पाहुणा साँके[3] ड़ैही आयपूगा ॥

जिकाँनूंदेखताँहीं पुळियार कायराँरै कंप १ वीराँरै वीररसरा सोगुणाँ जोस २ ऊगा ॥

दूदो १९।१२ प्रभुरो भोगावसेस[4] भोजन करि इष्टदेवरो बटवो गळे बाँधि साँवळिया तुरंगरी पीठि आयो ॥

जतरैं इणारा साथियाँ तुरकाँरो संपात[5] नीठि रोकियो ॥

अर कँवरभी आरूढहोताँहीं त्रि[6]भागो तोमर[7] भुजादंडथी भ्रमाइ सत्रुवाँरै साम्हैं आपरो वाह झोकियो ॥ ९ ॥

पैलाँमैं पविर्पात[8]रै प्रमाण पूगताँही उठीराभी कायर चळविचळ थिया॥

अर सूर हूँता तिके कँवर दूदै १९।१२ मं[9]झमानी मिलाइ निहालकिया॥

भालारी भचाकाँ चखाइ केही पटैताँनूं[10] पाडि कुमार आपरैं देसरी दिसा आडै पग आवणानूं भरतैमारतै प्रयाण[11] कीधो ॥

अर तुरंग साँवळियारा वेगहूं पैलाँरा बाजियाँरा वेग थकाइ एकला १ फौजदारनूं आपरै समीप आवणादीधो ॥ १० ॥

दो२ ही वीर साँकड़ै[12] भिळियाँ दावकरता १ बचता २ हडोतीके मार्ग वहियाआवे ॥

अर औरभी दो २ ही तरफरा प्र[13]वीर जुदाजुदा जुद्धकरता याँ दो २ ही महावीराँरैं पाछैं रहियाआवे ॥

आगैआवताँ एक खाळ[14] बारह१२हाथको चोडो १ घणों ऊँडो २

१ बाण चलानेवाले; अथवा बानाबंध २ यमराज के सेवक ३ समीप ४ भोग से बाकी रही वस्तु ५ प्रहार ६ भाला चलाते समय उसके दो भाग आगे को और एक पीछे को रखकर थामने से उसको त्रिभागा कहते हैं ७ भाला ॥९॥ ८ वज्र प्रहार ९ मद्दमानी १० पट्टा फैंकनेवालों को ११ चला ॥१०॥ १२ समीप १३ विशेष वीर १४ नाला

आडै आयो जठै कुमार दूदो१९१।१तो सहजमैं सांवळिपानैं झंपाइ खाळरै वार आइ भालो ऊंचाइ साम्हों खड़ो रहियो ॥

जिको दुष्कर देखि परैंही रुकिपेथकै जवन नाम पूछियो जरैं कुमारभी आपरा सहाय देणरो सारोही उदंत[2] अभिधान[3] सहित कहियो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९१।१सुत१बुंदी सदनैं२, संज्ञा३दुरजणसाल१९१।३ ॥
व्याहणहूं बलभद्रनूं४, हुवो सहायक हाल ॥ १२ ॥
सरणसहायक बिरुदसिर, पहलीही कुळपांण ॥
अकबर३७।१हूं मुड़ियो अबैं, त्रस्त करूं तुरकांण ॥ १३ ॥
जिम थांरो खूनीं जिको, किरै बलभद्र कबंध ॥
अठै विवाहण आणियो, सरणों मैं वळसंध ॥ १४ ॥
भड़ म्हांरा पाछैं भिड़ै, जिकां वहोड़ो जाइ ॥
अब जै झड़ियो एक१भी, तो पड़ियो पैंबि तांइ ॥ १५ ॥
ऊजड़[12] दसपुर अंगसूं[13], वळै तिकांरै वैर ॥
निज घर थे जावो नतो, खान विचारो खैर ॥ १६ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

या सुणतांही कुमाररा पाणिर्पनूं प्रमाणकरि पाछो जाइ फोजदार आपरा वीरांनूं वहोड़ि दसोर पूगो ॥

अर पाछैंसूं आपरोसाथ आइमिळियांपछैं कवँरभी आगलासाथमैं आइ मेडतियानूं अभयरोमहामह मनाइ अर्करै[15] उपमान ऊगो ॥

इणरीति बुंदीसरो बडोकुमार दूदो१९१।१सहाय देर मेडतिया बलभद्रनूं विवाहण रामपुरै गयो जठै आपभी आपरा वीरपणारा

१ छलाकर २ वृत्तान्त ३ नाम सहित ॥ ११ ॥ ४ वर ॥ १२ ॥ ५ कुल के पराक्रम से ६ तुरकों के राज्य को कम्पित करूंगा ॥ १३ ॥ ७ निश्चय ८ बल की प्रतिज्ञा से ॥ १४ ॥ ९ पीछा फेरो १० वज्र ११ तहां ॥ १५ ॥ १२ शून्य १३ मन्दसोर को दबाऊंगा ॥ १६ ॥ १४ पराक्रम १५ सूर्य

लुभाया. चंद्राउतनरेस दुर्गदासरा पुत्र रामपुराशा अधीस गजसिंहरी कन्याजसकुमारि१९१४कुमराणीनूँ विबाहि बुंदी आयो ॥

अर राठोड़नूँ रमणीसहित केहीदिन राखि भरोसारा भडसाथ देर उणारै आगारै पुगायो ॥ १७ ॥

जिको सुणतॉंही अकबर ३७।१ रै जाणैं बारूदरा गंजमैं दमंग झडे जिणरीति क्रोधानळरो प्रकर्ष छायो ॥

तिको तबेलारी लूटरा घावपर वडा खूनीनूँसहाय देर लूण लगायो ॥

पातसाह सुर्जन १९०।१ नरेसनूँ कहियो बुंदी छुडावणरैकाज फोजमैंथाँरोबी जावणौं होइ तो ठीकहै ॥

जठै नरेस कहियो फोजरै अर भोज १९।२ रैसाथ म्हारा जावणमैंतो पिता१पुत्राँ २ रै दोनूहीतरफ अपजसरो अनीक है ॥ १८ ॥

जिणथी म्हारा भाई काका भीमरा १८८।२पुत्र सिंह १८९।१ नूँ भेजीजै तो सुजसरैसाथ हुकम सधसी ॥

अरजुद्धमैंजय हुवाँ दूदा१९१।१ जिसा दुष्टांरैऊपर हजरतरो अप्रमाण असह आतंक वधसी ॥

जिणथी भाइनूँ बधारो देर भोज१९१।२रै सहाय फोजरै साथ कीजै ॥

अर जुद्धरा जीतणहार टळिया वानैत भरोसारा होइ तिके लार दीजै ॥ १९ ॥

जरैं जवनेस सुर्जन १९०।१ रै कहियाँ भीमाउत १८१२ हाडा सिंघदेवनूँ १८९।१।१ सहस्राप १ सहररैसाथ अढाईहजारी २५०० रो मुनसब देर बुंदीरैं ऊपर विदाकीधो ॥

अर जवनाँमैं मालिक करि भोज१९१।२ रोभीडूँ नवाव मुहब्बतखान २ साथ दीधो ॥

---

१ स्त्री सहित २ घर पहुँचाया ॥१७॥ ३ समूह में ४ अग्नि ५अधिकता ६ बुराई ७ सेना ८ इसकारण से ९ भय ॥ १९ ॥ १० सहायक

लक्कडखान १ रै ऊपर चलावणारा कारण करि जिको नबाब मार्गहीमैं कुठारखान २ कहायो ॥

इणरीति सिंघदेव १ मुहब्बतखानसहित मध्यम २ कुमार भोज १९१।२रैं सहाय बडाकँवर दूदा१९१।१नूँ मारणारैकाज बुंदीऊपर अकबर ३७।१रो अनीक[1] आयो ॥ २० ॥

ग्राम बडधा १ कुमारती २ रै बीच मुकाम हुवो ॥

अर रात्रिरे आगमैं[2] तिकाँरै प्रमादैं[3] राखणारो कुकाम हुवो ॥

निसीथरै समय कुमार दूदै १९१।१ तिकाँमाथै जाइ नत्रीठा[4] बाजी[5] पटाकिया ॥

अर दिल्लीरा बीराँनूँ कोरैडो[6] लोह चखायो जिणआगै बडाबडा दुरैबाह[7] बानैंत[8] न टकिया ॥ २१ ॥

नागराजरा भोगे[9] फेणाँभरिया लटाकिया ॥

अर तुरकाँरा हाडाँपर हाडाँद१रा खारा खड्ग[11] खटाकिया ॥

चंद्रहासाँरा[11] चीरिया जठीतठी बकतर१टोपाँ२रा टूक चटाकिया[12] ॥

अर कायराँरा प्राण केवल नाँडियाँमाँहैं अटाकिया ॥ २२ ॥

जठै कुमार लक्कडखान१चौडै खेत जाइ कुठारखान२भाँजियो ॥

अर आपणाँ अनुज भोज१९१।२काका सिंहदेव१८९।१समेत अवसेस दिल्लीरो दळ गाँजियो[13] ॥

मुहब्बतखान२रै मरताँही दिल्लीरा दोइहजार२०००बीराँरो खेत पडियो जाणि कुमार भोज१९१।२रो बचिबो न मानि तिकणनूँ लेर सिंहदेव१७९।१हाडापणाँनूँ फीको दिखाइ नीचा नेत्र करि पाछो दिल्ली पूगो ॥

---

१ सेना ॥२०॥ रात्रि २ आने पर ३ गफलत ४ बहुत शीघ्रता पूर्वक; अथवा अत्यन्त दौड़कर ५ घोड़े डाले ६ निकेवल ७ यह वीर का विशेषण है ८ नहीं भागने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले; अथवा बाण विद्या का जाननेवाले ॥२१॥ ९ फण १० झाग से ११ खड्ग १२ यह तूटने के शब्द का अनुकरण है ॥ २२ ॥ १३ विजय किया, अथवा मारा

अर जठीतठी वडाकुमार लखकडखान१.९१।१रा पराक्रमरो सुजस ऊगो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

ले सुनमव पट्टकी पडेखा, आयो सिंह१.८१।१ऐवीह ॥
भांजिकुठार१भजाडियो, सोश्लकड१९१।१बारीह ॥ २४ ॥
करि वळ दूरखां कोपियो, जिको दुसह जवनेस ॥
सुर्जन१९०१हू कहियो सजे, अब मारो सुत एस ॥ २५ ॥

॥ सप्तरशगचम् ॥

अठी कुमार दूदे १९१।१ विजयरा वंव घुराइ बुंदी आइ आप समैं भरोसा मागो जखाड कुमार रत्न १९२।१ सहित अनुज भोज १.९१।२ री वडी कुमराणि बालगांति रायकुमरि १९३।१ बुंदीहूँ दिल्लीनरेसरैं कनैं भेजिदीधी ॥

तिको सुर्जन१९०।१ भी पुत्रसहित कासी भेजि धर्मरा धारणमैं वडा कँवररी तारीफ कीधी ॥

अकबर ३.७।१ भी वडा साहसरैसाथ सुर्जन १९०।१ नूँ सजाइ बुंदीमाथे विदाकीधो ॥

अर नवाव रणमस्तखान २ नूँ भोज १.९१।२ री लाज भळाइ तिकोभी लार दीयो ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुर्जन१९०।१नृप रणमस्त२सह, भोज १९१।२कुमारक भीड ॥
भामी अकबर३.७।१ भेजिया, नामी प्रतिभट नीड ॥ २७ ॥

सप्तरशगचम् ॥

अकबर३.७।१ कपटकरि आंखियो जे दूदो१९१।१आगे समुझायो चाकरीकरणनूँ आवै तोनां फेरभी बुंदी१ रो पदनू तिकणनूँ नी

॥ २३ ॥ १ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible] १ न्योछावर अंगरे [illegible] अपना दूदा के समीप ॥ १ ७ ॥ १ कहा

जोरस्थान दीधोजावै ॥

अर नहीँतो हरामखोर इण आर्यावर्तमैं कठैही बचणा न पावै ॥

इसड़ो हुक्म सुणि नरेस सुर्जन१नबाब रणमस्तखान२ कुमार भोज १९।१२ नूँ लेर बुंदी आया ॥

अर दूदा १९।११ नूँ सोमरैसाथ आइमिलणामैं अनेक लाभ जणाया ॥ २८ ॥

दोहा ॥

कालिह मिले दूदै १९।१२ कही, वळे करे रणबात ॥
पगे पडण निहचै पछैं, तजि असि आऊँ तात ॥ २९ ॥

सचरणगद्यम् ॥

इसड़ी कहाइ दूजै२ हीदिन कुमार दुर्जनसाल १९।११ आखेटरा रमणाहूँ परभारोही घोडाँरा चाकराँनूँ बरजाई दोडाँरा साधिया घोडाँरा पचास ५० ही छडाँ असवार साथ लेर पितारै पगेलागणानूँ दिल्लीरी फोजरैसमीप आयो ॥

अर पचास ५० ही घोडाँनूँसूनाँ छोडि तिकाँरै हाँनैं भाला लगाइ जनकरै आगैं प्रणामपूर्वक माथो नमायो ॥

नरेससुर्जन १९।१२ भी पुत्ररो खाँधो थापलि हृदयहूँ लगाइ विस्वासियो ॥

जिको दोरही पिता १ पुत्राँ २ रो मिलाप सुणि अंतरमैं एक जाणि तुरकाँरो तोम त्रासियो ॥ ३० ॥

नरेस १ भी दूदा १९।१२ रा आवणारी जणाइ रणमस्तखाँ २ बुलायो तिकणभी आइ दूदो १९।११ सादगीरैसाथ न पहिचाणियो ॥

अर बेठाँ पछैं नरेसरै काहियाँ च्यारिपाँच साथियाँरै हेठैं बेठो

---

१ मिलापके साथ॥२८॥२९॥रचना कराकर३थाड़ा डालने में सिखाए हुए घोडों को ४ अश्व अथवा केवल ५ बिना रक्षक ६ आसन के अगले भागपर ७ मन में ८ समूह ॥ ३० ॥ ९. नीचे

जाणियो ॥

जवनभी उणहूँ लगाइ कहियो जिण वीरशचोडाँमैं इसडो एको तिकणनूँ पाणिग पाणरैसाथ पातसाहरो प्रेरियो किसड़ो वानैत आरांगमें आणौं ॥

अर सामरैसाथ सत्कारहूँ मिलायोथको सीसरैसाँटै स्वामीरोही सासन प्रमाणौं ॥ ३१ ॥

जठै नरेस १ नवाव २ हूँ कहियो आपणौंआवताँ अकवर ३७। १ रो आदेस इसड़ो हुवो सो बुंदी१रैएवज औरस्थान२ लेर चाकरीकरणौं न मानैंतो दूदा १९।१ नैं पकडिआणौं ॥

अरु नहींतो भेजणौं उणग सीसरो नजराणौं ॥

अब ए दूदा १९।१ रा साथीभी पचास ५० ही दूदा१९।१रै साथैंह जिणाथी समस्तराही सीस वढि सैलीतो भरि दिल्ली पुगावो ॥

अर पुत्र १ रा मारणमैं पिता २ रो अखंड अपजस उगावो ।३२।

॥ दोहा ॥

भणि जवन१ जदि भूप२ हूँ, सूरकँवर करि साहि ॥
हाँलि मिलावो साहहूँ, चुगली मेटण चाहि ॥ ३३ ॥
अधिप कही जदि हालि अब, सुत तू म्हारैसाथ ॥
मिलि पाछो लै मह महर, अकवर ३७।१ सूं सह साथ ॥३४॥

॥ षट्पात् ॥

कवँर जरै जोडिकर प्रणमि कहियो नरेसप्रति ॥
प्रभुरो आपाँ पत्र निडर आतो धारे नैंति ॥
पणारण भरत १ पटैत भोज २ भाई करि भेळा ॥
अण अवसरैं इम आइ खोळिदीधा डर खेळा ॥

१ प्राण के पराक्रम के साथ २ भेजा हुआ ३ काबू में करसक्ता है ४ मस्तक के बदले ॥ ३१ ॥ ५ सब के मस्तक काट कर ६ ऊंट का बोरा भरकर ॥ ३२ ॥ ७ प्रवलकर ॥ ३३ ॥ ८ कृपा इथन सहित ॥३४॥ १० नम्रता धारण करके ११ बिना समय १२ क्रीड़ा ॥ ३५ ॥

जिणहेतु कालिह रणएक जुडि पछैं लागि प्रभुरै पगाँ ॥
कैद है चालि मुजरो करूँ लार सुजस १ अपजस २ लगाँ ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

वदियो जदि रणमस्त वहु, मानि कवँर सो वैण ॥
बिण[1] रण हालो दास बणि, अप्पण पावण[2] ऐण ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सो सुणि दुरजणसाल १९१।१ कोपि रणमस्त वकारे ॥
कहियो थाँ जिम कवण[3] मान भाँजे छळ मारे ॥
पहली भेजण पत्र हुकम करतो है हाजरि ॥
अब सो सुर्जन १९०।१ आण[4] प्रधन[5] पहली ईखूँ अरि ॥
है जेर बळे सह हालिहूँ कपट बिलंब न खिण १ करूँ ॥
नरनाह१ टाळिजै इम नहीं तोतो[6] दळ नड्डो[7] तरूँ ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

दूदो इम भाखे दुसह, आयो ऊठि अगार[8] ॥
मग गहियो रणमस्त२ मिलि, प्रकटे निज मन प्यार ॥ ३८ ॥
दूदा १९१।१ सुणि माने अदल[9], सम्मद ता१ मोर२ साखि ॥
मौरैं नँहँ मिळियाँ मुगलद, राज१ धरा२ धन३ राखि ॥ ३९ ॥
कहियो सुणि दूदै१९१।१ कवँर, ईळा न लेणी ओर ॥
लेहालो बुंदीलगा, जाणूँ मालिक जोर ॥ ४० ॥
बिहसे तदि सुर्जन१९०।१ बदी, बुंदीही तव बाँहँ ॥
बाबर ३१।१ सुत बाँधे बळे, छत्रहेठ दे छाँहँ ॥ ४१ ॥
कर जोडे पाछो कवँर, कही जनक बळ कोडि[11] ॥
एक१ बुलावण आवतो, दास धाँवतो दोडि[12] ॥ ४२ ॥

१ बिना युद्ध किये. अपना २ घर पाने के लिये ॥ ३६ ॥ ३ कौन ४ सौगन ५ युद्ध में ६ झुक कर ७ नाडा (तुच्छ जलाशय) रूपी ॥ ३७ ॥ ८ घर ॥ ३८ ॥ ९ इन्साफ ॥३९॥ १० भूमि ॥४०॥४१॥ ११ कोड़ बल है तो भी १२ दौड़ता "यहाँ दौड़ने की अधिकता बताने के लिये एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग है"॥४२॥

॥ षट्पात् ॥

जरैं कुमर हठ जाणि जनकआगैं इम अक्खी ॥
आप टळै दिस एक सकल वळ आइ * समक्खी ॥
किंकर दूदो १९।१।१ काढि अनुज१९।१।२ बुंदी अवधारो ॥
आंजि भचक लै एक१ वळे डर मूझ विचारो ॥
जे डर न होइ जाणौं जनक प्रणौंत कालिह लागूं पगाँ ॥
सो जैं न होइ दीजै सहज सुत अपजस अँसगाँ१सगाँ २ ॥४३॥

॥ दोहा ॥

आयो वूंदी भाखि इम, संधाँ लडण समाहि ॥
करण विजै दूदै१९।१।२ कँवर, चुणिया भड अर्ड चाहि ॥४४॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

दूजै१दिन कँवरतो पहली सुरथपुर जाइ रक्तदंतारो पूजन कीधो ॥
अर पैलाँरै कटक जोझूरा तँडागरै उत्तरतट आइ मुकाम दीधो ॥
जठाहूँ दोइहजार२०००असवाँरा सुरथपुर आइ कुमार वेढियो ॥
अर दूदै१९।१।२भी अंबारा अँर्चनरै अनंतर आपरासाथियाँ समेत साम्है आइ घोर घमसाण कियो ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

पैला रण जिण छूटि पग, पुळियाँ डेराँ पाइ ॥
जरैं कहाई जनकहूँ, दूदै१९।१।२ सपथ दिवाइ ॥ ४६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

विजयरालोभी रजपूत चाहै जिणसमय आइ सम१ विसम २ जुद्धकरै ॥

* सन्मुख १ धारण करो २ युद्ध में ३ प्रणाम करके ४ यदि नहीं होवे तो ५ बिना सम्बन्धवालों में ६ सम्बन्धवालों में ॥ ४३ ॥ ७ प्रतिज्ञा ८ हठ करके ॥ ४४ ॥ ९ रक्तदन्ता नामक देवी का १० तालाब ११ देवी का पूजन करने पीछे ॥४५॥ १२ भागे ॥ ४६ ॥

अर जनकादिक गुरुजनाँनूँ टाळि तिकाँरैसाम्हैतो अनुगत भाव धरै ॥

जिणथी आपरो सिबिर ऊँचास्थलपर होइ तो कुपुत्रनूँ आदाब राखणरी सुद्धि रहै ॥

अर वाँकीरा बीर डो२ ही तरफ आपसमैं असिवर चखाइ बानै- तपणाँरा बिरुद वहै ॥ ४७ ॥

इसडी कहाई तोभी नरेस सुर्जन १९०।१ आपरा डेरा जुदा न टाळिया ॥

अर एक१ ही घररो जुद्ध जाणि अठी १ उठी२ दोही २ तर्फरा सर्वही स्वकीय भाळिया ॥

जरैं दूदे१९११ कुमार जोभूरा सरोवररो उत्तरतट फुडाइ जळ काढियो ॥

अर वूडता बचता बीजा२ चतुरंगनूँ चळविचळ हुवो जाणि रति- वाह देर अचाणक आइ बाढियो ॥ ४८ ॥

जिण घोरसमयमैं सस्त्राँरा प्रहारकरि व्याकुळहुवो नवाब रणम- स्तखाँन१ तो कुमार भोज२ नूँ लेर एक गर्त्तमैं तृणाँरासमूहहेठै द वि रहियो ॥

अर महीपभी आपरी माळानूँ मंचपरही मेलि एक दिसारो मा- र्ग गहियो ॥

वाजी साँवळियारा चरण डेराँरा तणाँवाँ उळभिया जाणि कु- मार दूदा१९११ रा चाबक वहियो ॥

जरैं परवस भाँप लेताँ आँत तूटी जिणथी कवँररै घोडैभी पर- लोक लहियो ॥ ४९ ॥

---

१ बडे लोकों को २ डेरा ३ खबर ४ बाना धारण करने के यश को धारण करै ॥ ४७ ॥ ५ सेना को ६ काटा ॥ ४८ ॥ ७ खड्डे में ॥ ४६ ॥

दोहा ॥

जठै भोज१ रणमस्त२ जुग२, बचिया गर्त्त बिचाळ ॥
पुळियो जिम सुतहूँ पिता, महीपाळ तजि माळ ॥ ५० ॥
ईखे हय मृत आपरो, दूदा १९।१२ कुमर दुबाह ॥
बाजी खास नवाबरो, लो चढियो जयलाह ॥ ५१ ॥
जनक१ सिबिर १ टाळे जिको, जवनसिबिर २ धन जोडि ॥
आयो पुर दूदो १९।१२ अडर, माम्झी परदळ मोड़ि ॥ ५२ ॥
गो दिल्लीदळ जैतगढ, मंडे समय मुकाम ॥
बीजे२ दिन दूदै१९।१२ बळै, कीधा मिळण मुकाम ॥ ५३ ॥

सखरणगद्यम् ॥

इणरीति मान बोरखंडीरा घमसाणमैं दिल्लीरा दळनूं भजाइ दूजै २दिन दूदो १९।१२ हाथबाँधि जैतगढराडेराँ जाइ पितारा पगाँ पड़ियो ॥

जिणरा वीरपणाहूँ रीम्झियेथकै रणमस्तखानभी उरहूँ लगाइ हितरो संलाप घाडियो ॥

नरेसहूँ नवाब२ कहियो अब दूदो १९।१२ आइमिळियो जिणथी इणनूं लेजाइ साहरा कदमाँ लगावाँ ॥

अर बूँदीरै ऐवज कुमार भोज १२।१२ बीजीरठाम दिवाइ दोरही भाइयाँरै आपरामैं वधियो बिरोध मगावाँ ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

हाँलो धाम दिवाडिहाँ, अथवा इणनूं ओर ॥
पण अब मेलाँ साहपग, जाखो जय१ नय२.जोर ॥ ५५ ॥
जंपि सपथ रणमस्त जदि, बीच अलाह पताइ ॥
लीधो दूदो १९।१२ लारही, कटकाँ कूँच कराइ ॥ ५६ ॥

१ खड्डे के २ बीच में ३ भगा ४ माला छोड़कर ॥ ५० ॥ ५ अपने घोड़े को मरा देखकर ॥ ५१ ॥ यवन के डेरे का धन ६ इकट्ठा करके ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ७ वार्तालाप ॥ ५४ ॥ ८ चलो ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

पातसाह अकबर ३७।१ पगे, जिको लगायो जाइ ॥
सोधे भूप१ नबाब२ सुभ, स्व धरम सपथ सुणाइ ॥ ५७ ॥
तोभी अकबर ३७।१ ताकिया, उणरा खून अमोघ ॥
करि मिळियो अंतर१ कपट२, ऊपर १ आदर२ ओघ ।५८।
नृप १ नबाब २ सकियो नथी, जिको साह छळ जाणि ॥
कँवर मिळायो हेत करि, पावन आण प्रमाणि ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्य (दूदा) सहायेन मेड़न्तिकबल्लभद्रारामपुरपरिणायनोत्तरं तत्रैव तत्परिणायन १ स्वानुसृतदशपुराधिकारिविजयपूर्वकोभयजन्यसहितबुन्द्यागमन २ एतदपराधश्रवणारुष्टयवनेन्द्रससैन्यसुर्जनलघुसूनुभोजबुन्दीप्रस्थापन ३ दुर्जनशल्यपराजितभोजप्रत्यागमनातिरुष्टयवनेन्द्राकबररणमस्तखांसहितरावसुर्जनबुन्दीप्रस्थापन ४ सरणमस्तखांसुर्जनपराजयोत्तरविनयसमागतकुमारदुर्जनशल्येन सह रावसुर्जनस्य यवनेन्द्रान्तिकगमन ५ दुर्जनशल्यकृतामोघमन्तुनिमित्तकान्तश्छलेऽपि बहिरादरदर्शनपूर्वकयवनेन्द्रमेलनवर्णनं नामैकादशो११ मयूखः ॥ आदितश्चतुर्नवत्यधि

अपने धर्म के १ सौगन सुनाकर२॥५७॥२खाली नहीं जावें ऐसे३मनमें१॥५८॥५९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पाटवी पुत्र दुर्जनसाल(दूदा)का मेड़तिया बलभद्र को अपनी सहायता से रामपुरे परणा कर वहीं पर अपना भी विवाह करना १ अपना पीछा करनेवाले मन्दसोर के हाकिम को विजय करके दोनों बरातों सहित बुन्दी आना २ इस अपराध के सुनने से कुपित होकर सुर्जन के लघु पुत्र भोज को सेना सहित बादशाह का बुन्दी पर भेजना ३ दुर्जनसाल से पराजित होकर भोज के पीछे आने से अत्यन्त कोपवाले बादशाह अकबर का रणमस्तखां सहित राव सुर्जन को बुन्दी भेजना ४ रणमस्तखां सहित पिता को जीतकर नम्रता पूर्वक आयेहुए कुमर दूदा को साथ लेकर राव सुर्जन का बादशाह के समीप जाना ५ कुमर दूदा को अमोघ अपराधों के कारण मन में छल और ऊपर से आदर दिखाकर अकबर के मिलने के वर्णन का ग्यारह-

कशततमः ॥ १९४ ॥

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इंदु राम नृप १६३१ साक इत, द्विज कवि तुलसीदास ॥
किय नूतनपुर कोसला, रामायन मतिरासं[1] ॥ १ ॥
सदंन[2] छोरि यह हरि सरन, भयो रामपद भक्त ॥
मधु१सित२नवमी९कुज[3]३मिलत, सो तिहिं रचन प्रसक्त[4] ॥ २ ॥
प्रकट१ प्रीति२ अंतर १ कपट २, सह्नि मिलत इतसाह[5] ॥
किन्न छलि रु दूदा १९५।१ कुमर, राज्य मुदित कछु राह ॥३॥
सिक्ख दई नृप सुर्जन १९०।१ हिं, कासी यह करि कज्ज ॥
अरु पठयो रनमस्त इत, सूबा लवैंपुर[6] सज्ज ॥ ४ ॥
तस सहाय दूदा १९१।१ हु तँहँ, हित दिखाइ लाहोर ॥
संगहि पठयो साहनैं, जानि पिहित[7] छल जोर ॥ ५ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अैसैं कुमार दूदा १९१।१ तो रणमस्तके संग करि पहिलँही पंजाबमैं भेजिदीनों ॥

अरु पीछैंसों आमेरकेअधीस कूर्म मानसिंहकौं कावलके सूबापर बिदाकीनौं ॥

सिंधुनदीकेपार दिल्लींको अमल रह्यो सो कावलकी सीमाकरि तांहाको सूबा कहायो ॥

ताको प्रबंध कराइबेकौं राजा मानसिंहकौं सासनगहायो॥६॥

॥ दोहा ॥

वां ११मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ चोरानवे १९४मयूख हुए ॥
१ बुद्धि का समूह ॥ १ ॥ २ घर. चैत्र सुदि नवमी ३मङ्गलवार. रचने में ४ आसक्त हुआ ॥ २ ॥ ५ बादशाह अकबर ॥३॥ ६ लाहोर के सूबे पर ॥४॥ ७ गुप्त
८ काबुल की सीमा के सम्बन्ध से उस सूबे का नाम काबुल का सूबा हुआ ॥६॥

कुम्महिँ इम जावत कह्यो, साह कपट अनुसार ॥
दूदा १९१।१ हनि लाहोर द्रुत, पीछैँ जावहु पार ॥ ७ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

ऐसैं साह१को सासकच्छवाह२ सौँ गुप्त भयो तथापि रणमस्तखाँनके पुत्रनैं यह दूदा१९१।१कौँ मारिवेकी बात जानिलीनीं ॥

अरु तबही आपुनैं पिताप्रति एक १ पत्रिका ऐसीरीति लिखिके भेजिदीनीं ॥

सो दूदा १९१।१ अपनैं बाँहबचनसैं बिस्वास करिआयो ॥

अरु अब ताको कपट करि मारिवेकौं १ वा गहिभेजिवेकौं २ पीछैंसौँ साहनै साळा मानसिंह पठायो ॥ ८ ॥

दोहा ॥

तासौँ अब हे तात तनु, दूदा१९१।१ संगहि देहु १ ॥
कहि रु भेजहु पिहित कै २, अति अधर्म लखि एहु ॥ ९ ॥

सचरणागद्यम् ॥

या पत्रिकाके पढतही रनमस्तनैं दूदा१९१।१ सौँ समस्तही अभिप्राय खोलिदीनों ॥

अरु कुमारनैंहू दूजी २ कुमरानी राष्ट्रकूटी उमाकुमारि १९१।२ संगही ताकौं एरुसके बेस बनाइ द्वैर्दा पति १ पत्नी२न तीजे ३ तुरंगी जोइसी जगन्नाथ ३ सहित प्रच्छन्ननिकसि आपनैं देसकौं प्रयान कीनौं ॥

साहनैं राजामानकौं काबलके सूबापर भेज्यो तबही नवाब नोसेरखान१ कौं मध्यम२ कुमार भोज १९१।२ कौं अमल कराइबे काज बुंदी पठायो ॥

अरु इतकौं कुमर १ कुमरानी २ जोइसी जगन्नाथ ३ इनको

बादशाह के कपट के १ साथ २ शीघ्र ३ सिन्धु नदी के पार ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ४ शरीर को ॥ ९ ॥ ५ घोड़े का सवार ६ ज्योतिषी ७ छाने

त्रिक ३ ही कहीगिति प्रच्छन्न कढि कासीकी समताके महातीर्थ कुरुक्षेत्र आयो ॥ १० ॥

तहाँ जोइसी जगन्नाथकों ग्राम खानखेडा १ दान देकैं पीछैं रा खि मिथुन२ ही मथुरा आवतभयो ॥

तहाँ आपुनों सात्तक अहस्नास एक १ ग्रामके अधीस रहोड छत्रसिंहको कुनर मिल्यो ताके साथ दैकैं कुमरानीं राष्ट्रकूटीकूँ ताके पिउहर पठावतभयो ॥

आप इक्कल१ असवार आमेर आइ उहाँसों ओर वाजी बदलि जायो सोहू टूँकनगरके परिसरलों पहुँचत पंचमीप्धाराके मयान करि थकिरह्यो ॥

तब टूंकके चाहुकन वीस २० सादी संग दैकैं आपुनें ख्वासा हयपैं चढाइ भेज्यो तानैं नंदनांग्रामलों आवत कितोक आपुनों परिकरहू सम्मुह लह्यो ॥ ११ ॥

दोहा ॥

नृपसुत आवत नंदनां, बुंदियभट विस्वस्त ॥
सम्मुह जाइ कुमारसन, मिले सगोद समस्त ॥ १२ ॥
बानैंधर तिनमैं बली, ईसत २० वीर दुवाहैं ॥
मिले तिनहि कुमरहु मिल्यो, रक्खि भरोसागाह ॥ १३ ॥
कुमरानीढिग सिबिरैंकोर, सुन्यों परयो नोसिर ॥
तिहिं जितन पठियो तकगो, सुंदा१११ विरचि नदेर ॥ १४ ॥

षट्पदम् ॥

नंदनांसों चलाइ कुमार सुंदा११११ रतिवाहदेकैं अकबर ३०१३

काशी की १ बराबरी करनेवाले ॥१०॥ २ जोशी ने ३ पीछे ४ मथुरा की भूमि तक ५ वाहिकन्दिन, भाद्रिन, ... मिथुन, ... इन ... प्रकार की धा रा में अन्तिम धारा में (हुगाहआ) चलने के कारण ६ रास्ता ७ परवाह ॥११॥ ८ चौसा के ९ आनन्द पूर्वक ॥ १२ ॥ १० बाना को धारण करनेवाले वीर ॥ १३ ॥ ११ डेरा ॥ १४ ॥

के अनीकपैं अचानक आइपरचो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरख्वानकौं भजाइ पहिलैं सत्रुनके सिबिर लूटि पीछैं पुरमैं प्रवेसकरचो ॥

पितामही जयवती १८८।१ के पयन परि ऐसैं अकबर ३७।१ सौं तोरि आपुनैं साहसकरि बुंदीको राज्य सम्हारयो ॥

अरु तारागढके तरैं निजनामकरि नयेमहल१ तथा गीहड़गढर से दुर्ग२ बनाइ अपुनौं आतंक प्रसारयो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९१।१ के कृष्णावती १९२।१ रामा १९२।२ स्यामा १९२।३ भानुकुमरि१९२।४ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमैं पहिली१ तो आमेरकेराजा मान२ कौं परिनाई दूजी२ रामपुराके अधीस गजसिंहके कुमार चंद्राउत चन्द्रसिंह२ कौं बिवाहदई ॥

तीजी३ अरु चोथी४ के स्वसुरालय न जानैंगये ॥

अरु ऐसैं ही या बडे१ कुमार के चतुर्भुज १९२।१ परसुराम १९२।२ स्यामसिंह १९२३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमैं पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२।१ सोहि दूजे२ नाम करि अमरसिंह १९२।१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही बंसनैं दूदाउत२२।१८ कहाइ हड्ड६१नमैं बावीसमौं२२ भेद पायो ॥

ऐसैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२।१ के अनंतर रामसिंह १९२।२ बुद्धिचंद्र १९२।३ दीपचंद्र १९२।४ पृथ्वीसिंह १९२।५ स्यामसिंह १९२।६ प्रद्युम्न ११२।७ पद्मसिंह १९२।८ भगवद्दास१९२।९ कल्यान १९२।१० सोही भुवनांग १९२।१०ए दस१०ही भये तिनमैं कुलधर पंच५नके बंसके हड्ड६१नमैं तेवीसमौं २३ भेद रायमल्लोत २३।२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दादी ४ नीचे ५ भय फैलाया ॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वैरहीं नयेभेद भावीबातके प्रसंगमैं आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, वर्त्तमान अब वत्त ॥
सोह भज्यो नोसेर सुनि, पूरे कोपहिं पत्त ॥ १८ ॥
दल दुवलक्ख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९।२॥
सक रद नृप १६३२ लग्गत समय, मची बहुरि रन मोज॥१९॥
जानिय दूदा १९।१ कुमर जब, बुंदिय अब रहिबो न ॥
चहि हित जो धारैन चढैं, करैं राज्य तब कोन ॥ २० ॥
यह बिचारि रनझारि असि, दोहिन हत्थ दिखाइ ॥
कथित १६३२ साक दूदा १९।१ कुमर, कढिगो भय न कहाइ॥
निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १९।१ कुमर उदार ॥
दिल्लीमंडल दोरिबे, सज्ज भयो गहि सार ॥ २२ ॥
कह्यो परसुधर १ कुमरकैं, स्वीय पुरोहित सत्थ ॥
मनतैं गो हम्मीर १९०।१।२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्थ॥२३॥
अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस बिनास ॥
सुनि पुरतैं अवरोध सब, पठयो सुर्जन १९०।१ पास ॥ २४ ॥
कढि रद नृप१६३२सक इम कुमर, जिहिं दूदा१९६।१अति जोर॥
बुंदिय १ जुत मंडिय बहुल, दिल्लिय २ मंडल दोर ॥ २५ ॥
कुमरभोज १९।१।२ इत स्वीय करि, बुंदिय बिरचि प्रवेस ॥
नये सचिव लय ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ।२६।

॥ सचरणगद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायन परलोक पायो जानि भोज१९।१।२ कुमार बुंदी बैठतही खड्गरा चालुक जोगीदास१ दहिया दोलतसिंह२इन दोउनको जकुटँरतो कर्म सचिव कीनों ॥

॥ १७ ॥ कोप में १ प्राप्त होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारेजावें तो ॥२०॥२१॥ ३ खड्ग लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराड़ा का ७ जोड़ा

के अनीकपैं अचानक आइपर्यो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरखानकौं भजाइ पाछि-लैं सत्रुनके सिबिर लूटि पीछैं पुरमैं प्रवेसकर्यो ॥

पितामैंही जयवती १८८।१ के पयन परि ऐसैं अकबर सौं तोरि आपुनैं साहसकरि बुंदीको राज्य सम्हार्यो ॥

अरु तारागढके तरैं निजनामकरि नयेमहल१ तथा गीहड़गढ से दुर्ग२ बनाइ अपुनों आतंकै प्रसार्यो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९१।१ के कृष्णावती १९२।१ रामा १९२।२ स्या-मा १९२।३ भानुकुमरि१९२।४ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमैं पहि लौ१ तो आमैरकेराजा मान२ कौं परिनाई दूजी२ रामपुराके अ-धीस गजसिंहके कुमार चंद्राउत चद्रसिंह२ कौं विवाहदई ॥

तीजी३ अरु चोथी४ के स्वसुरालय न जानैंगये ॥

अरु ऐसैं ही या बडे१ कुमार के चतुर्भुज १९२।१ परसुराम १९२।२ स्यामासिंह १९२३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमैं पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२।१ सोहि दूजे२ नाम करि अमरसिंह १९२।१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही वंसनैं दूदाउत२२।१८ कहाइ हड्ड६१नमैं बावी-समौं२२ भेद पायो ॥

ऐसैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२।१ के अनंतर राम-सिंह १९२।२ बुद्धिचंद्र १९२।३ दीपचंद्र १९२।४ पृथ्वीसिंह १९२।५ स्या-मसिंह १९२।६ प्रद्युम्न ११२।७ पद्मसिंह १९२।८ भगवद्दास१९२।९ कल्पान १९२।१० सोही भुवनांग १९२।१० ए दस१०ही भये ति-नमैं कुलधर पंच५नके वंसके हड्ड६१नमैं तेवीसमौं २३ भेद रा-यमल्लोत २३।२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दाढ़ी ४ नीचे ५ भय फैलाया ॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वैरही नयेभेद भावीबातके प्रसंगमें आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, बर्त्तमान अब बत्त ॥
सोह भज्यो नोसेर सुनि, पूरे कोपहिँ पत्त ॥ १८ ॥
दल दुवलक्ख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९।२॥
सक रद नृप १६३२ लग्गत समय, मची बहुरि रन मोज॥१९॥
जानिय दूदा १९।१ कुमर जब, बुंदिय अब रहिबो न ॥
चहि हित जो धारैन चढैं, करैं राज्य तब कोन ॥ २० ॥
यह बिचारि रनभ्भारि असि, दोहिन हत्थ दिखाइ ॥
कथित १६३२ साक दूदा १६।१ कुमर, कढिगो भय न कहाइ॥
निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १६।१ कुमर उदार ॥
दिल्लीमंडल दोरिबे, सज्ज भयो गहि सार ॥ २२ ॥
कढ्यो परसुधर १ कुमरकै, स्वीय पुरोहित सत्थ ॥
मनतैं गो हम्मीर १९०।१।२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्थ॥२३॥
अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस बिनास ॥
सुनि पुरतैं अवरोध सब, पठयो सुर्जन १९०।१ पास ॥ २४ ॥
कढि रद नृप१६३२सक इम कुमर, जिहिं दूदा१९६।१अति जोर॥
बुंदिय १ जुत मंडिय बहुल, दिल्लिय २ मंडल दोर ॥ २५ ॥
कुमरभोज १६।१।२ इत स्वीय करि, बुंदिय बिरचि प्रवेस ॥
नये सचिव त्रय ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ।२६।

॥ सचरणगद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायन परलोक पायो जानि भो-
ज१९।१।२ कुमार बुंदी बैठतही खड्गगा चालुक जोगीदास१ दहि-
या दोलतसिंह२इन दोउनको जकुटँ२तो कर्म सचिव कीनों ॥

॥ १७ ॥ कोप में १ मास होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारेजावें तो ॥२०॥२१॥ ३ खड्ग लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराड़ा का ७ जोड़ा

अरु सनाढ्यविप्र लछमन३कों वरूथेस[1] बनाइ चोरीके प्रबंधपर प्रेरयो ताहीनैं पीछैं खानखवास३औसो उपटंक[2] रुप्यौ[3]तिमैं लीनौं ॥

इतकों आमेरके अधीस मानसिंह कावलके सूबामैं अच्छीरीति अकबर३७।१ को अमल जमाइ हजूर आयो ॥

अरु लवपुरतैं[4] आपुनैं स्वसुर कुमारदुर्जनसल्ल१९।११को पहिलैं ही कढिजैबेको उदंत[5] सुनायो ॥ २७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सेना नगर मऊ इत साजैं, रायमल्ल खिच्ची १३ नृप राजैं ॥
भट पित्थल रट्ठोर तास भो, सु वसु रींछवानगर जास भो ।२८।
हय निमित्त जिहिं सठ बिरच्यो[6]पसुं, मातुल निज खिच्ची१३महराज सु।
तापर चंद२पुकारयो सुत तस,तब अकबर३७।१पठये दल जुत तस २९
जे दुवरबेर[7] क्रंबध सु जित्त्यो, बलि बिस्वास दुरघौं[8] मन बित्त्यो ॥
रायमल्ल हुव पित्थल रच्छक, धरी न भ्रात हन्यौं तापर धक ॥३०॥
बलि यातैं दै संग कटक बहु, पठयो साह सु कुम्म मान पहु ॥
लक्खैरिय दरं[9] निकसि भग्ग लहि, चम्मलिपुनि लंघ्यो सत्वर[10] चहि ३१
जो दूदा१९।११ब गिन्यौं न जमाई, धाटि[11] पटकि दल लूट धमाई ॥
जिहिं बहीर पीछैं सन धनजुत, दल[12] नदि लंघत लुट्टिलई द्रुत॥३२॥
मान जाइ पित्थल वह मारयो, नृप खिच्ची१३लै मऊ निकारयो ॥
संगहि तास कढ्यो सुरतान१८।९।१सु, बलि पच्छवारा रन सु भयो[13]उस सु
रायमल्ल लखिप्रतापरानहिं, गो सु उदैपुर उज्झि[14] गुमानहिं[15] ॥
जु इक१समौं[16] लरि जित्ति मऊ जिम,मान मुरयोकरि साह अमलइम ३४
दूदा१९।११कुमर असह हित दोरयो, बुंदिय१दिल्लिय२मुलक बिलोरयो[17]

१ सेनापति २ पदवी ३ प्रसिद्ध ४ लाहोर से ५ वृत्तान्त ॥ २७ ॥ घोड़े के कारण ६ मारा ॥ २९ ॥ ७ दोनों ओर ८ क्रोध ॥ ३० ॥ लाखैरी के ९ दर्रे से निकलकर १० शीघ्रता ॥ ३१ ॥ ११ धाड़ा १२ आधी नदी उतरने पर ॥ ३२ ॥ १३ मारागया ॥ ३३ ॥ १४ छोडकर १५ गुमान (घमंड) को १६ एक वर्ष लड़कर ॥ ३४ ॥ १७ मथा

मातुलकुलरट्ठोर मिलाइ रु, इकसमय थाँनालग आइ रु ॥ ३५ ॥
कहिपठई बुंदिय *जुज्झनकँहँ, तापर दल भोज १९१।२हु पठयोतँहँ
कटकमाँहिँ कल्यान १९२।१० मुख्य किय, भोज १९१।२हु इम
सम्मुह तिहिँ भेजिय ॥ ३६ ॥

कुमर मारि दूदा १९१।१।१ कल्यानरहिँ, स्व हय कटक मन्न्यौं
अवसाँनहिँ ॥

जिम इतनैं हम्मीर १६०।१ भ्रात जब, तिहिँ दिप पिहितें खास नि-
ज हय तब ॥ ३७ ॥

तिम निकस्यो दूदा १९१।१ चढि तापर, भीर भये ते बहुत कटे भर
जीवित पुनि जुज्झन जय जानत, मुरिगो तव दूदा१९१।१ भय मानत
दास १९०।१ भरत १९०।२ खज्जूरीके ७।३ दुव २, हद्दे ६१ एहु
कुमरसंगी हुव ॥

दूदा१९१।१अनुमतें लखि तिन्ह दौरि रु, जुट्टिलयो धन देस बिलोरि रु॥
कुमरभोज१९१।२उच्छिन्न तेहु किय,द्विज तिन्ह पिट्ठि खवासखानकिय
जिहिंलगि पिट्ठि उभै३इम ताँरे, न बलि बसत कहुँ सुनैं१निहारे२ ।४०।
खानखवास बिरचि जिहिँ खेटे, मैंने हनि रु प्रजादुख मेटे ॥
पुर बरोद धारुव रखिची१३ पहु, लरि सु कुमर दूदा१९१।१दंड्यो लँहु ॥
धिंगरमल्ल २ पकरि खिची १३ धन, सुलैव लटे छ अयुत ६०००
लिय तासन ॥

पकरि बहोरा चंप३भानपुर, अयुत १००००दम्म लै तज्यो सु आतुर ।
सारंगपुर१ दसोर२ सिरोञ्ज३ हु, लुंटि सेरपुर४ मालपुरा५ लहु ॥
बलि सह डाबरी६ रु बंभोरी७, लुट्टि पट्टनि८ रु मऊ९बिलोरी ॥४३॥
बलि सुखेत१०रींछवा ११ बकानी १२, मुरि इतिमुखैं लुट्टे बहु मानी ॥

॥ ३५ ॥ * युद्ध करने के लिये ॥ ३६ ॥ १ अन्त २ छाने ॥ ३७ ॥ ३ भट ॥ ३८ ॥ ४ सलाह ५ मथकर ॥ ३९ ॥ ६ उच्छेदन (नाश) ७ ताड़े (निकाले) ॥४०॥ ८ युद्ध ९ मैनों को मारकर १० शीघ्र ॥४१॥ ११ तांबे के साठ हजार टके लिये १२ पीड़ित ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ १३ इत्यादि

इम दूदा१९११द्वोरत भुव उत१इत२, [1]मृध सव करे वेद सर भू१५४मित।
सत्तावन ५७ तिनमैं हठ दीसौं, दूदा १९११ रन किन्न दिल्लीसौं ॥
रन पचास५०[2]समताके राजन, सैंतालीस४७[3]धाटिपातिनसन ॥४५॥
कलह१इते१५४दूदा१९११कुमार करि, धकतिम अकबर३७१हनन
चित्त धरि ॥
पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्रन भयो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥
क्यों न लेहु दिल्ली तापति कहि, बुल्ल्यो ताहि सहाय अप्प बहि ॥
तिहिं दूदा१९११सु बुलायो तत्थहि, सुनत कुमार चल्यो [4]चरसत्थहि।
मालवमैं देवग्रामनामक, हुतौ वसति पहुँच्यो सु तहाँतक ॥
ताके जनन महादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दिन्नौं विप ताकँहँ ॥ ४८ ॥
इम वसु गुन खट सासि१६३८सक अंतर, तजिग देह दूदा१९११[5]तदनंतर
भोज १९१२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जितातित स्वभुव जमाइ
रह्यो जय ॥ ४९ ॥
वसि कासी सुर्जन१९०१इत भू[6]वरं, पूरवमग निर्भय किय प[7]द्धर ॥
विप च्यारि४बुंदिय बसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥५०॥
पूर१भट्ट सहोदर प्यारा, उपाध्याय लोहार मेवारा ॥
श्रीगौड़ जु गोविंद३[8]जोईसिय, क्रम संगहि औदीच्य वेनु४किय ।५१।
बुंदी ए चउ४भेजि बसाये, पुर कासी बहु जस नृप पाये ॥
कनकतुला जुग२अप्प दान किय, हढदय रजततुला[9] पंचक५दिय
पुरटतुला[10] इक१ ठानि प्रभूपँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥
दुहितौ[11] निजकर इक१दिवाई, इक१हि पौत्र रतन१९२१वढ आई ।५३।
ए दुव२ रजततुला हुव औसैं, जानहु अब आलय क्रम जैसैं ॥
उपवन इक१पुरढिग [12]तँनवायो, वसन राजमंदिर२वनवायो ॥ ५४ ॥

१ युद्ध ॥ ४४ ॥ २ बराबर के राजाओं से ३ धाड़ा पटकनेवालों से ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४ हलकारे के साथ ही ॥४७॥ ५ जिस पीछे ॥४८॥ ६ भूपति ७ सीधा ॥ ५० ॥ ८ ज्योतिषी ॥५१॥ ९ चांदी का तुलादान ॥ ५२ ॥ १० एक सोने की तुला माता से कराई ११ पुत्री के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को फैलाया ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरबिच चोरासिय८४, कुंड बीस२०करि किय बर कासिय
सग जगदीस अवधि भय मेट्यो, भयद चोर काहु न जन भेट्यो ।५५।

॥ सचरणगद्यम् ॥

हड्ड६१नको बेद साम ३ यातैं राज्यमैं हस्त१३ नक्षत्रपर हो तो श्रावनिका को भई तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमा १५ केदिन रहतो ॥

नरेस सुर्जन १९०१२ नैं यहउत्सव पूर्णिमा१५ केदिनहू राखि दै२ ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६१३ केपुत्र हम्मीर १९०१३ नैं अब शुक्लबापीकेसम्मुख है सो बापी १ अरु गैंडेकोबाग २ कहावै सो उपबन२ ए दोर हीस्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकौं आमेरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगतसिंह २ सहित अकबर ३७१२ नैं आर्यावर्तके ईसानकोन८ के अंतर आसामदेसके बिजयकौं पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्रनदमैं नावनकौं पेलिपेलि सत्रुनको दुर्ग पायो सो ही तोपनको ताप दै रु नैठायो ॥

याहीसमरमैं भोज१९३२कुमारको जामाता ऐसो राजामानसिंह १ को कुमार जगतसिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताके सोक करि द्विर गुन कोपारुन कूर्मराजके बिक्रम करि परर्नसौं पलटि आसाम अकबर ३७१२ के आवतभयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥
करि रन दुष्कर काम, जित्तिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥
ब्रह्मपुत्र नदबीच, जाही रन नावन जुरत ॥
मानकुमर लिय मीचं, जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

---

१ भय देनेवाला ॥५५॥ २ श्रावण मास का ३उत्सव ४बाग ॥५६॥ ५ नष्ट किया ६क्रोध में लाल ७पराक्रम से ८ शत्रुओं से ॥५७॥ ९काटिन॥५८॥ १०मृत्यु॥५९॥

इम दूदा१९।१दोरत भुव उत१इत२, मृध सब करे बेद सर भू१५४मित।
सत्तावन ५७ तिनमैं हठ दीसौं, दूदा १९।१ रन किन्नें दिल्लीसौं ॥
रन पचास५०समताके राजन, सैंतालीस४७धौंटिपा।तिनसन ॥४५॥
कलह१इते१५४दूदा१९।१कुमार करि, धकतिम अकबर३७।१हनन चित्त धरि ॥
पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्रन भेप्यो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥
कयौं न लेहु दिल्ली तापति कहि, बुल्ल्यो ताहि सहाय अप्प वहि ॥
तिहिं दूदा१९।१सु बुलायो तत्थहि, सुनत कुमार चल्यो चरसत्थहि।
मालवमैं देवग्रामनामक, हुती बसति पहुँच्यो सु तहाँतक्क ॥
ताके जनन महादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दिन्नौं बिष ताकँहँ ॥ ४८ ॥
इम बसु गुन खट ससि१६३८सक अंतर,तजिग देह दूदा१९।१तदनंतर
भोज १९।२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जितातित स्वभुव जमाइ रह्यो जय ॥ ४९ ॥
बसि कासी सुर्जन१९०।१इत भूवर, पूरबमग निर्भय किय पद्धर ॥
बिप्र च्यारि४बुंदिय बसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥५०॥
पूर१भट्ट सहोदर प्यारा, उपाध्याय लोहार२ मेवारा ॥
श्रीगौड़ जु गोविंद३जोईसिय, क्रम संगहि औदीच्य बनु४किय ।५१।
बुंदी ए चउ४भेजि बसाये, पुर कासी बहु जस नृप पाये ॥
कनकतुला जुग२अप्प दान किय, हढद्दय रजततुला पंचक५दिय
पुरटतुलौं इक१ ठानि प्रभूपँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥
दुहितौं निजकर इक१दिवाई, इक१हि पौत्र रतन१९२।१वह आई।५३।
ए दुवर रजततुला हुव ऐसैं, जानहु अब आलय क्रम जैसैं ॥
उपवन इक१पुरढिग तँनवायो, वमन राजमंदिर२बनवायो ॥ ५४ ॥

१ युद्ध ॥ ४४ ॥ २ बराबर के राजाओं से ३ धाड़ा पटकनेवालों से ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४ छलकारों के साथ ही ॥ ४७॥ ५ जिस पीछे ॥ ४८ ॥ ६ भूपति ७ सीधा ॥ ५० ॥ ८ ज्योतिषी ॥ ५१ ॥ ९ चांदी का तुलादान ॥ ५२ ॥ १० एक सोने की तुला माता से कराई ११ पुत्रों के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को फैलाया ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरबिच चोरासिय८४, कुंड बीस२०करि किय बर कासिय
मग जगदीस अवधि भय मेट्यो, भयद[1] चौर काहु न जन भेट्यो ।५५।

॥ सचरणगद्यम् ॥

हड्ड६१नको बेद साम ३ यातैं राज्यमैं हस्त१३ नक्षत्रपर हो तो श्रावनिका[2] को मह[3] तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमा १५ केदिन रहतो ॥

नरेस सुर्जन १९०।१ नैं यहउत्सव पूर्णिमा१५ केदिनहू राखि द्वैर ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६।१ केपुत्र हम्मीर १६०।१ नैं अब शुक्लवापीकेसम्मुख है सो वापी १ अरु गैंडेकोवाग २ कहावै सो उपवन[4]२ ए दोर हीस्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकौं आमेरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगत्सिंह २ सहित अकबर ३७।१ नैं आर्यावर्तके ईसानकोन८ के अंतर आसामदेसके बिजयकौं पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्रनदमैं नावनकौं पेलिपेलि सत्रुनको दुर्ग पायो सो ही तोपनको ताप दै रु नैठायो ॥

याहीसमरमैं भोज१९।१।२कुमारको जामाता असो राजामानसिंह १ को कुमार जगत्सिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताके सोक करि द्विर गुन कोपारुन[6] कूर्मराजके विक्रम[7] करि परर्नसौं[8] पलटि आसाम अकबर ३७।१ के आवतभयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥
करि रन दुष्कर[9] काम, जित्तिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥
ब्रह्मपुत्र नदवीच, जाही रन नावन जुरत ॥
मानकुमर लिय मीचं[10], जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

---

१ भय देनेवाला ॥५५॥ २ श्रावण मास का ३उत्सव ४वाग ॥५६॥ ५ नष्ट ६क्रोध में लाल ७पराक्रम से ८ शत्रुओं से ॥५७॥ ९कठिन॥५८॥ १०मृत्यु॥५९

सुभमति १९२।१ व्याह्यो सोहि, कुमर भोज १९१।१ वारी कनी ॥
जास सुता हुव जोहि, दारा[2] ४०।१ कहँ पीछैं दई ॥ ६० ॥
सुत हुव जास सलेम ४१।१, नत्ती[3] साहजिहान ३९।२ को ॥
वाको नाना एम, मानकुमर यह यहँ मर्‌यो ॥ ६१ ॥
सुनि आमैर सतीसु, ज्वलन[4] बैठि सुभमति १९२।१ जगी ॥
गहि कुलतियन गती सु, स्वर्ग गई निज पतिसहित ॥ ६२ ॥
सैसव[5] बय लहि श्रेय[6], तनय हुतो रघुनाथ तस ॥
जोहि रतन १९२।१ जामेय[7], कुमर भोज१९१।२ दौहित्र कहि।६३।
सो सिसु कछु भय साहि, आयो भजि नाना अयन[8] ॥
इम बुंदीपुर याहि, भोज १९१।२ रतन १९२।१ रक्ख्यो भलैं।६४।
अक्खिय एह उदंत, तनु[9] अंतर भावी तथा ॥
उत कूरमसुत अंत, भयो तदपि बिजई भयो ॥ ६५ ॥
भिरतहि हनि १ रु भजाइ २, कामरूपके कौलजन[10] ॥
इम देस सु अपनाइ, मान रह्यो कछुदिन मुदित[11] ॥ ६६ ॥

॥ षट्पात् ॥

कामाख्या जहँ कहत आहि देवी बर आलय ॥
वाकी प्रतिकृति[12] अपर २ दिपंत[13] कौलन दुर्गालय ॥
ते हारत[14] खिन्न ताहि गेरि संपू ह्रदबिच गय ॥
पहु मानहिं[15] इम स्वपन दयो देविय तिहिं सोदय[16] ॥
मोकहँ निकासि लैचलि महिप जुरिहै बलि[17] १ अर्चन २ जथा ॥
सेवक कहाय अनुकूल सुभ तव निकेत[18] रहिहौं तथा ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

१ जिसके पुत्री हुई सो २ दाराशाह को ॥ ६० ॥ शाहजहां का ३ पोता ॥ ६१ ॥ ४ अग्नि में ॥ ६२ ॥ ५ बालक अवस्था ६ श्रेष्ठ. रत्नसिंह का ७ भानजा ॥ ६३ ॥ नाना के ८ घर ॥ ६४ ॥ यह वृत्तान्त कहा सो ९ कुछ देरी से होनेवाला है ॥ ६५ ॥ १० वाममार्गवाले लोकों को ११ प्रसन्न ॥ ६६ ॥ उस देवी की १२ मूर्ति १३ शोभायमान. हारते १४ समय १५ मान को १६ दया पूर्वक १७ बलिदान. तुम्हारे १८ घर में

आनी तब कूरम अधिप, जलतैं उद्धरि जोहि ॥
गिनहु विदित आमेरगड, सल्लहादेविय सोहि ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे रणमस्तखांसहितदुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्यलाहोरगमनतच्छलघातवधसूचनात्तगनिभृतनिःसरणबुन्द्यागमनं १ दूदाकृतस्वसेनापतिनवशेरखांपराजयपलायनश्रवणात्तरुष्टाकबरलक्षद्वयसैन्यसहितभोजप्रेषणदूदानिःसारणोत्तरभोजार्थबुन्दीवितरणं २ यवनेन्द्राकबरस्वसैन्यकूर्ममानसिंहमऊप्रस्थापनं ३ राष्ट्रकूटपृथ्वीसिंहवधोत्तरखिचीन्द्रपरायमल्लनिःसारणकमऊग्राहककूर्ममानसिंहयवनेन्द्रान्तिकप्रत्यागमनं ४ कुमारदुर्जनशल्यकृतबुन्दीदिल्लीप्रमुखराष्ट्रलुण्टनरणगणनानन्तरविषप्रयोगतन्मरणं ५ आमेरभूपमानसिंहासामदेशविजयनवाममार्गीयदेवीमूर्तिसमानयनमल्हादेवीसंज्ञयाऽऽमेरदुर्गतत्स्थापनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः पञ्चनवत्युत्तरशततमः ॥ १९५ ॥

॥ ६७ ॥ जल से १ निकाल कर ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पाटवी पुत्र दुर्जनसाल का रणमस्तखाँ के साथ लाहोर में जाकर अपने छल घात से मारने की सूचना मिलने पर छाने निकल कर बुन्दी आना १ अपने सेनापति नौशेरखान के दूदा से पराजित होकर भागने की खबर से क्रोधित अकबर का भोज के साथ दो लाख सेना देकर दूदा को निकाल कर बुन्दी का राज्य भोज को देना २ बादशाह अकबर का कछवाहा मानसिंह को सेना सहित मऊ की ओर भेजना ३ उस मानसिंह का पृथ्वीसिंह राठौड़ को मारकर और खीची राजा रायमल्ल को निकालकर मऊ लेकर पीछा बादशाह के पास जाना ४ कुमार दूदा के बुन्दी और दिल्ली आदि देश लूटने में युद्धों की गणना के अनन्तर विष देने के कारण दूदा की मृत्यु होना ५ आमेर के राजा मानसिंह का आसाम देश को विजय कर के वाम मार्गवालों की देवी की मूर्ति को लाकर सल्हा देवी के नाम से आमेर के गढ पर स्थापन करने का बारहवाँ १२ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से एकसौ पचानवे १९५ मयूख हुए ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भगिनी मान भुवालकी, अकबर३७१२०याह्यो अग्ग ॥
तक्कँ[1] तस कूरम्म नपाँ[2], मिलि संबंधिन मग्ग ॥ १ ॥
द्रम्म[3]१ रु गज२ ग्रामा३दि दिय, जिहिँ तब भरनाँ जोरि ॥
कूटँहि[4] कित्ति कराइबे, कूटँहि[5] कविन छकोरि६००००००० ।२।
विप्र१ सूत[6]२ बंदि३न तबहि, गनिकाँ[7]मत अवगाहि ॥
अनर्थ[8]दान लै बंटि वह, आप्पिय[9] ध्रौंति जस याहि ॥ ३ ॥
हड्ड६१नको कुलबारहठ, सुकवि धीर सामोर ॥
पुव्वहि बिनुसंतति परयो, अन्वय[10] न रह्यो ओर ॥ ४ ॥
हम तुमरे हुव बारहठ, रीति सु अब प्रभु राम२०३१४ ॥
सुनिय जिम सच्चे सुकवि, धूरि गिनहिँ धर[11]१ धाम२ ॥ ५ ॥
मृग मृगया[12] जब अग्ग मृत, महिप रत्न१ रविमल्ल२ ॥
सीसोद१न हड्ड२न सहज, हुव बिरोधपन हल्ल ॥ ६ ॥
रत्न१ अनुज बिक्रम२ रह्यो, तस गहिय चित्तोर ॥
निज कवि जिहिँ मेरे निखिल[13], अग्रज कत्थन ओर ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूसुर[14]१ चारन२ भट्ट३ सबन बिक्रम निदेस[15] सुनि ॥
रान रतन काव्य रचि चविय[16] तस जस प्रँकर्प[17] चुनि ॥
मिहिरमल्ल[18]१८८।२ कहि मूढ कुजस बरनिय ताको किल[19] ॥
प्रभु ममकुल परपुरुष ख्यात कवि भानु१६४।२ रहे खिल ॥
रंचँ[20] न निदेस किय गनको बिक्रम हुव तिनपर बिमन[21] ॥

---

१ भूपति की २ लज्जा ॥ १ ॥ ३ रुपय ४ झूठी कीर्ति कराने के लिये ५ झूठे कवियों को ॥ २ ॥ ६ चारण ७ वेश्या के मत का ८ अनीति का दान ९ दिया ॥ ३ ॥ १० वंश ॥ ४ ॥ ११ भूमि ॥५॥ हरिणों की १२ शिकार में ॥६॥ १३ सब ॥७॥ १४ ब्राह्मण. विक्रमादित्य की १५ आज्ञा सुनकर १६ कहा. रत्नसिंह का १७ विशेष यश किया १८ सूर्यमल्ल को १९ निश्चय २० कुछ भी आज्ञा नहीं मानी २१ उदास

संसद[1] गये न तबतैं सु कवि मन्निजडहि तिहिं खैंचि मन ॥८॥
बिमन१ चिसन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सासन उंटोलाव १ सह, इनके लै सब इट्ठ[2] ॥
असन१ बसन२ हित ग्राम इक१, रक्खिय केवल रिट्ठ[3] ॥ ९ ॥
किय तत्थहि निर्वाह कवि, पै न गये जडपास ॥
ह्वै नृप बुल्ले उँदय[4] इठि, आये तबहु उदास ॥ १० ॥
पधराये जिन्ह उदयपुर, गदियँत भानुगनेस ॥
प्रचुर[6] ताल१ मंदिर२ प्रमुख, मोज्झित[7] रचिय प्रदेस ॥ ११ ॥
आक्खिय तिनप्रति नृप उदय, मुख्यं कविन यह मग्ग[8] ॥
चवहिं सत्य१ अनृत२ न चवहिं, लोभहि रंच न लग्ग ॥ १२ ॥
छिति[9] गंत लेहुव हमहिं[10] छॅमि, अघज कृत अपराध ॥
अरु रजपूतन आचरन, बरनहु जिम अघबोध[11] ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृपहिं भानु१६४१२तब नहि रु निजहु सासन गत लिय नन ॥
रक्खिय इक्क१ हि रिठ्ठ अंतहु[12] बरन्यौं न पुव्व रन ॥
पीछैं तदनुज पुत्र सुकवि ईस्वर१९५।१आख्यौंसह[13] ॥
पहु अब रान प्रताप बहुरि बुल्ले अति आग्रह ॥
अरु कहिय कविन कुलरीति यह कहत तिमहि जिम हम करहिं।
अब रन सु सत्य बरनहु अभय धरहु स्वीयँ करि गत धरहिं ॥ १४ ॥
वनैं जिम न तुम वदहु त्रास वाहुजन[15] न भजैं तव ॥

---

१ सभा में ॥ ८ ॥ २ इष्ट (उत्तम अथवा अनुकूल) ३ रीठ नामक ग्राम ॥ ९ ॥ ४ उदयसिंह ने ॥ १० ॥ ५ कहते हैं कि उनों ने भाणा गणेश को पधराये ६ बहुत ७ छोडे हुए प्रान्त में ॥ ११ ॥ ८ मार्ग ॥ १२ ॥ ९ गईहुई भूमि को हम को १० चमा करके लो ११ पाप मिटानेवाला ॥ १३॥ पहिले के युद्ध को १२ सत्य नहीं कहा १३ नाम. गईहुई भूमि को १४ अपनी करके धारण करो ॥ १४ ॥ भागनेवाले १५ चत्रियों को डर नहीं है

तिनहुमाँहिँ हम मत्त करी चहि सृनि[1] इच्छैं कव ॥
इष्ट सपथ१मम सपथ२अप्प बरनहु ऋत[2] वत्तहिँ ॥
इम निहोरि नृप इमहिँ मुदित[3] गत दैनलग्यो महि ॥
सु लई न तदपि ईस्वर१९५।१सुकवि पै निदेस करनौं परयो ॥
जब रैनँ[4] कुजस१रविमल्ल[5]१८८।१जस२कारि कवित्व ख्यापित[6]
करयो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

निरपराध कहि हड्ड६१नृप१, सत्यसंध[7] प्रभु सूर ॥
रान२चकित जडपापरत, कह्यो कुतर्क सठ क्रूर ॥ १६ ॥
पै रहिबो न बिचारि पुनि, तजि रिड्ढ१हु कवि तत्थ ॥
जायन चिंत्यो जोधपुर, स्व कुलधर्म नय[9] सत्थ ॥ १७ ॥
महिप प्रतापहु सुद्धमन, सपथ१प्रनति[10]२ अनुसार ॥
लहि साहस३रक्खन लग्यो, प्रकटि ऋतवंद[11] प्यार ॥ १८ ॥
पै न रहै ईस्वर१९५।१सुपहु, राम[12]२०३।४सुनहु कुलरीति ॥
कहिय अधम कहि स्वामिकँहँ, आश्रित[13] रहन अनीति ।१९।
इत बुंदीहु उदंत यह, कुमर भोज१९१।२करि कर्न[14] ॥
पठई बिन्नति जनकप्रति, पुर कासिय लिखि पर्न[15] ॥ २० ॥
तब सुर्जन१९०।१यह सुनि त्वरित[16], पठयो इम प्रतिपत्र[17] ॥
तुम सुत सादर बुल्लि तिन्ह, तकि हित रक्खहु तत्र ॥ २१ ॥
जो न रहहिँ तो कछु जुक्ति[18], इहाँ तिनहिँ लै आहु ॥
कित कवि जैहैं सत्थ करि, निज कुल सुजस निबाहु ।२२।

मस्त हाथी हैं तो १ अङ्कुश २ सत्य ३ प्रसन्न होकर गईहुई भूमि को देने लगा ४ राणा रत्नसिंह का ५ सूर्यमल्ल का ६ प्रसिद्ध किया॥१५॥ ७ सत्य प्रतिज्ञावाला ८ छत्री ॥ १६ ॥ ९ नीति के साथ ॥१७॥ १० नम्रता ११ सत्य बोलनेवाले से प्यार करके ॥ १८ ॥ १२ हे राजा रामसिंह. जिस स्वामि को अधम कहा उसी के १३ आश्रित रहना अनीति जानकर ॥ १९ ॥ १४ सुनकर १५ पत्र लिखकर ॥ २० ॥ १६ शीघ्र १७ पीछा पत्र भेजा ॥ २१ ॥ १८ कुछ युक्ति करके ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत ईस्वर१९५।१कवि उज्झि[1] निलय मेवार धरा निज ॥
चलिय जोधपुर चाहि वृत्ति कविता जस वा[2]निज ॥
सावर[3] पहुँचे सुनत भोज१९१।२निजकर दल[4] भेजिय ॥
दोला१.जोगियदास२दमिक[5]१चालुक्य२संगादिय ॥
ए सचिव जाइ सावर उभय२पट्टु तिन्ह इत लाये प्रनमि[6] ॥
प्रभु राम२०३।४स्वककविकुल परपुरुष जब आये हितभाव जमि ।२३।
नगर बरोदन निकट अचल दक्खिन [7]दर अंतर ॥
संक्रमि[8] कुमरहु सुमुख भोज१९१।२ प्रकट्यो हित निर्भर ॥
इम बुंदिय तिन्ह आनि जिम सु आकूत[9] जनायो ॥
एह न भायो[10] इनहिं भावकुमरहिं सु न भायो ॥
तब कहिय होइ कासी तुमहु जावहु कवि निज इष्ट[11] जित ॥
रंचक अनेहँ[12] सम्मिलि रहे१अरु अलभ्य व्है तीर्थ२ इत ॥ २४ ॥
कासी गो यह कुमर निजहिं लै संग मुदित तब ॥
अधिपहु तोरन अवधि[13] आप सम्मुह लैगो अब ॥
सह गौरव[14] समुझाइ बदिय वितत कछु वासर ॥
करि तिम हमहिं कृतघ्न तुमहिं जेबो न उचिततर ॥
हमतें न होहिं जो अप्प हित बलि[16] कहुँ गमन विचारिये ॥
कछु काल सफल यह गेह करि इतहु नेह अवधारिये[17] ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बित्ते हड्ड८१न बारहठ, संतति बिनु सामोर ॥
जिम सगोल सिसु बुल्हि जिन, अंकस्थ[18] न किय ओर ॥ २६ ॥

---

१ छोड़कर. यश का २ व्यापार करने को ३ सावर नामक ग्राम में ४ पत्र ५ दक्षिया चत्रिय ६नमस्कार करके ॥ २३ ॥ दक्षिण के पर्वत तक ७दरा के भीतर ८ जाकर. अपना ९ अभिप्राय. जो इस कवि को नहीं १० रुचा सो कुमरको भी नहीं रुचा. अपनी ११इच्छा होवे जहां. कुछ १२ समय ॥ २४ ॥ बाहिर के द्वार १३तक १४वचन सहित १५दिन १६फिर १७ धारण करो ॥२५॥ १८गोद

तातैं लै कुलवृत्ति तुम, पय हम सपन[1] पुजाइ ॥
होहु व हड्ड६१न बारहठ, प्रकटि कृपा हित पाइ ॥ २७ ॥
कवि मन्त्री नृपके कहत, अति आग्रह करि एह ॥
हुव हड्ड६१न कुलबारहठ, गिनि बुंदिय निज गेह ॥ २८ ॥
कुंकुम१ मुक्ता२ प्रमुख[2] करि, पूजि सु पहु कवि पाय ॥
थिर१जो दिय जो पुनि अथिर[3], ग्राम२०३-४सुनहु नरराय ॥ २९ ॥
आत१ जात२ गौरव[4]१ उभय२, मिलतहि अप्प महीप ॥
बलि हुव२ सासन वृत्तिमैं, दये दुलभ[5] कुलदीप ॥ ३० ॥
सुत१रु सुता२ उद्भव१ समय२, बलि दोउ२न संबंध२।४ ॥
पुनि दोउ२नके व्याह२।६ पर, सिद्ध वृत्ति करि संध[6] ॥ ३१ ॥
पुंसवन[7]२।७ रु सीमंत२।८ पुनि, नियतहि अट्ठ८ अनेह[9] ॥
दई वृत्ति तिनमैं दयो, आढ्य[10] ग्राम जुग२ एह ॥ ३२ ॥
वम्हनखेट१ स नाम बलि, भीमखेट२धनमूरि ॥
दंग मऊ१के ग्राम दुव२, पहु अप्पे हित पूरि ॥ ३३ ॥
निलय राजमंदिरनिकट, उचित हवेली१अप्पि ॥
छमँ[11] कुटुंब सब लेखछद[12]२, थिर महा[13]दि दिय थप्पि ॥ ३४ ॥
अधिपमरन कुमरहिं उचित, दर्ल२।३रु निमंत्रन२।४दैन३ ॥
व्याह१मरन२मुख हेतु बलि, आवन नृप कवि ऐन[15]४ ॥ ३५ ॥

नहीं रक्खा ॥ २६ ॥ हमारे १ हाथों से पैर पुजाकर ॥ २७ ॥ २८ ॥ २ आदि-स्थिर करके दिये थे सो बुन्दी का देश जाने के कारण ३ अस्थिर होगये, अर्थात् हमारे वे ग्राम भी बुन्दी के परगने बारां मऊ के साथ ही जो उन प्रांतों में थे वे सब गये ॥ ॥ २९ ॥ ४ ताजीम ॥ ३० ॥ ५ जन्म के समय ६ प्रतिज्ञा करके ॥ ३१ ॥ ७ संस्कार विशेष जो गर्भाधान से दूसरे अथवा तीसरे महीने में किया जाता है ८ आगरणी जो पञ्चमासी के नाम से प्रसिद्ध है. ९ दृग आठ ९समय पर १०धन युक्त ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ समर्थ १२ लिखावट के पत्र में अर्थात् परवाने में १३ महा शब्द स्थिर कर दिया अर्थात् पहिले महा-शब्द लिखकर पीछे कवि शब्द लिखने की रीति दृढ की ॥ ३४ ॥२८॥ १४ पञ्च-कवि के १५घर पर ॥ ३५ ॥

पच्छिम१सूरजपारितैं, चउ४हट्टन ढिग चाहि ॥
रव पुरहु इक१ *हट्टा१सहित, जु दिय हवेली२जाहि ॥३६॥
सब इतिसुख आदर१सहित, दै † समुचित सब ‡ देय२ ॥
§ अच्छतै मुत्तिय३दै अलिक, पोलिपात्र किय प्रेय ॥ ३७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दुव२हि वृत्तिमाँहिं दिय ग्राम चम्बलि पर२तट गत ॥
कहि सब सासनमुकुट मही दोउ२न निश्चलमत ॥
वम्हनखेट१रु भीमखेट२जिन्ह नाम विदित जग ॥
बलिनिज भुव क्रयं बस्तु मुल्ल नृप कर जिहिं जिहिं मग ॥
वीसम२०बिभाग३ताको हु बलि देय निर्यंत करि तिन्ह दयो॥
इममैं प्रजाहु प्रेरतै महिप उपदा करि कछु४अप्पयो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

गढ बंबावद बस गयो, धर मेवार अधीन ॥
सामोरन सासन सबहि, हुव ते नृप राव हीन ॥ ३९ ॥
समर१८१७दये इत संवसथ, मन कवि इच्छित मानि ॥
कच्छोला१दिक खट६कथित, जेहु लेहु इम जानि ॥ ४० ॥
कच्छोला१संगढि कथित, रोसुंदा२हरिना३रु ॥
दोडुंदा४गिंडोलि५दिय, पंचक खेट६हु चारु ॥ ४१ ॥
तेहु टारि रक्खे निग्रहि, निज अभुक्त नरनाह ॥
अप्पे सासन तेहि अब, रक्खी सासनें राह ॥ ४२ ॥
पै तिन्ह तुच्छहि जानि पहु, गुरु अप्पिय खट६ग्राम ॥
पटानिपुरके परगनैं, करि सासन जसकाम ॥ ४३ ॥

---

* दुकान ॥ ३६ ॥ † उचित ‡ दान. मोतियों के § अक्षत १ ललाट में लगाकर २ प्रिय ॥३७॥ अपनी भूमि में बेचीजानेवाली वस्तु के मूल्य पर बीसवाँ हिस्सा ४ निश्चय. राजा की ५ प्रेरणा से ६ नजराना॥३८॥३९॥ ७ ग्राम ८ वाकिफ़न॥४०॥ ९ सुन्दर ॥ ४१ ॥ १० राजा के खाने खालसे में नहीं मिलाकर अनुकूल रक्खे थे ११ उदक में हाथ नहीं डालने की रीति रक्खी ॥ ४२ ॥ १२ बड़े ॥ ४३ ॥

तहँ लबान१गोहट्ट२तिम, देवीखेट३हु देत ॥
इम खट३मैं कोटा४अपर२,पर्पट५बक्क६उपेत ॥ ४४ ॥
ते हे पट्टनि१तंत्र तव, अब लक्खंरि२अधीन ॥
जे ए अधिक छ६गाम जहँ, पहु अप्पे बसुंपीन ॥ ४५ ॥
सासबसु८ खट६ ग्राम२ संह, निर्यंता१ नियंत२ निदान ॥
ए चउदह१४ नृप अप्पिकैं, दिय वैभव बहु दान ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात्॥

दुव२ अलिपुंजित द्विरद१ तुरग२ चालीस४०त्वरागति ॥
मय३ बसु ससि१८ मय मत्त भये मरुचपल भानमति ॥
सिबिका४।१ रथ५।२ सिरुपाव६।३दुल्लभ अंतिम६इक१इक१ दिय
आयुध ७।१ अरु आभरन ८।२ सु रुचि सब खास समप्पिय ॥
तिम अयुत पंच५००००रुप्पय१।१बितरि१कुंकुम१मुत्ति२न तिलककरि
पूजितन प्रनमि भोज१९।१२हि भनिय धर्म बिरुद अभिलाखं धारि ।७४।

॥ दोहा ॥

हे सुत अब बय वृद्ध हम, संधा तुम इमसाहि ॥
क्रम मूढन बोधहु स्वकुल, ए व बारहठ आहि ॥ ४८ ॥
पय निज खंध दिवाइ पहु, इम चढाइ इम अक्खि ॥
पहुँचाये डेरन प्रथित, राजा स्व बिरुद्द रक्खि ॥ ४९ ॥
निज सगोत्र१ असंगोत्र२ नृप, पुनि कवि थान पठाइ ॥
प्रथित करायउ सबन पहँ, उपदादिकैं१ अधिकाइ ॥ ५० ॥
सक ख बेद रस ससि१६४०समय, गहि इम वैभव१ग्राम२ ॥

१ सहित ॥ ४४ ॥ पाटण के २ अधिकार में थे ३ धन से पुष्ट ॥ ४५ ॥ पहिले-वाले ४ निश्चय उदक और पीछेवाले ५ अनिश्चय (जागीर) ॥ ४६ ॥ ६ भ्रमरों के समूहवाले (मस्त) ७ हाथी ८ शीघ्रगतिवाले ९ मस्त ऊंट १० मारवाड़ के उत्पन्न ११ देकर १२ पूजन कियेहुओं को भोज ने भी प्रणाम किया १३ यश की १४ अभिलाषा धरकर ॥ ४७ ॥ १५ प्रतिज्ञा. अपने कुल के मूर्खों को १६ समझाओ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १७ नजराना आदि ॥ ५० ॥

हुव हम तुमकुल बारहठ, रसारमन[1] प्रभु राम२०३।४ ॥ ५१ ॥
हायन[2] दुव२तत्थहि रहिय, कवि१जुत भोज१९१।२ कुमार ॥
धराधीस यह छत्रधरि, हुव तत्थहि अघहार[3] ॥ ५२ ॥
दुव२आश्रम नृप१६४२ सक तदनु, मिलत दोजि२सित१मग्ग[4]९॥
सुर्जन१९०।१नृप अंतिमसमय, इम किय उचित उदग्ग[5] ॥५३॥
कथित घट्ट मणिकर्णिका, पहु गंगातट पत्त ॥
दै बिधि देय रु तजिदयो, गंगोदक[6] रहि गत्त[7] ॥ ५४ ॥
सुर्जन१९०।१नृपको जनु[8]समय, सर हय तिथि१५७५मित साक ॥
पहु हुव सिव नृप १६११साकपर, छकि बुंदिय जस छाक ॥५५॥
अब दुव आश्रम४२साक इम, दिय इहिं नृप तजि देह ॥
तनु हुत[9] करि रानी त्रि३कहि, गय संगहि सुरगेह ॥ ५६ ॥
भोज१९१।२स्व माताप्रति भनिय, अबहि जरहु क्यों अप्प ॥
दूदा१९१।१सो टरिगो दुसह, दाहक तुमहिं सदप्प[10] ॥ ५७ ॥
बिरचहु सुतके राज्यबिच, दै निदेस सब दान[11] ॥
सद्वि व्रतादिक२बिहितैं सब, स्वर्गभजहु अवसान[12] ॥ ५८ ॥
कनकवती१९०।२पच्छोकह्यो, सुत तैं न कहिय साहु[13] ॥
जसुदा१९०।१न भज्यो सुतहि जिम, दुभग्ग[14] जिहिं दूदा१९१।१हु ॥
सु तो जरैं पतिसंगही, मैं ब रहौं सुत मांहि ॥
मो पहिलैं जो तू मरै, तो दुव२हत्या तोहि ॥ ६० ॥
यह लिखि दै सु लिखो न इहिं तीन३हि रानिन तत्थ ॥
तनु हुत किय गंगातटहि, स्वामीके बपुसत्थ ॥ ६१ ॥
ब्रह्मनालिबिच तिहिं लिखित, अब तस चौंरा१आहि ॥

१ हे सूर्यपति रामसिंह ॥ ५१ ॥ २ वर्ष ३ पाप को मिटानेवाला हुआ अर्थात् देहान्त होगया ॥ ५२ ॥ ४ मार्गशिर ५ उदय ॥५३॥ ६ गङ्गा के जल में ७ शरीर रखकर ॥ ५४ ॥ ८ जन्म ॥ ५५ ॥ शरीर ९ होमकर ॥ ५६ ॥ १० सदर्प (घमंड सहित) ॥ ५७ ॥ ११ उचित १२ अन्त में ॥ ५८ ॥ १३ साधु (श्रेष्ठ) १४ दुर्भाग्य ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

कथित छिगहि माणिकर्णिका, जु पै जनावत जाहि ॥ ६२ ॥
न रच्यो सुर्जन१६०।१कछु निलय, बुंदीनगर बिसेस ॥
कासी सब बिस्वे कहे, अब ऐसैं सुत एस ॥ ६३ ॥
प्रेतकरम सब किय प्रथित, अप्पनविधि अनुरूप ॥
मग्ग१ विमल१तेरसि२ ३तदनु, भोज१६१।२कुमर हुव भूप ॥ ६४ ॥
कवि ईस्वर१६५।२जुत दिवस कछु, रहि तँहँ हड्ड१नरेस ॥
आयो पुनि पुर आगरा, अकबर३७।१सेवन एस ॥ ६५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे आमेरनृपमानसिंहस्य स्वस्वभूयवनेन्द्राकबरपाणिपीडनजन्यलज्जानिवारणार्थब्राह्मणचारणमागधषट्कोटिद्रव्यवितरणं १ हड्डक्षत्रियद्वारहठसामोरगोत्रचारणधीरवंशविनशनानन्तरहड्डद्वारहठीभूतमिश्रणगोत्रचारणेश्वरदासदेयवस्तुनियमनं २, वाराणस्यामधयरावसुर्जनपञ्चत्वानन्तरभोजभूपतीभवनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥ आदितः षण्णवत्युत्तरशततमः ॥ १९६ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पतारान[3] इत उदयपुर, अप्पन बिधि अनुसार ॥
अज्जधरम[4] प्रेरिय अखिल, भुज धरि सासक भार ॥ १ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १ प्रसिद्ध २ अपने महल ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

१ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में आमेर के राजा मानसिंह का अगली पीढ़ि बादशाह अकबर को परवाने की लज्जा मिटाने के कारण ब्राह्मण, चारण और भाटों को छः करोड़ का दान देना १ हाडा क्षत्रियों के बारहठ सामोर शाखा के चारण धीर का वंश नष्ट होने पर ईसरदास नामक मिश्रण शाखा के चारण को हाडों का बारहठ होकर नेग नियत कराना २ काशी में राव सुर्जन का देहान्त होने पर भोज के भूपति होने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ छिनवें १९६ मयूख समाप्त हुए ॥

३ महाराणा प्रतापसिंह. सम्पूर्ण ४ आर्य लोकों को धर्म में चलाए; अथवा आर्यों के सब धर्मों की प्रेरणा की ॥ १ ॥

* दसपुर१मुख पत्तनदुल्लभ, लिय दिल्लिय धर लुट्टि ॥
इत उत बहु गंजे अडर, † करवालन अरि कुट्टि ॥ २ ॥
कहिय पुब्ब तिम कति कहत, यह हुव सब भुव ईस ॥
वदत किते हुव यह बिदित, अद्धी‡ अवनि अधीस ॥ ३ ॥
चित्तोरहु कनि जवन चहि, जसगाहक१ लिय जित्ति ॥
जिमतिम तपिमेवार जिहिं, किय निज बिक्कम२ कित्ति ॥४॥
चेटक१नाटक२मुख प्रचुर३, रान लये हयराज ॥
न दयो पै भ्रातन निजन, इक१हु अस्व बर बाज ॥ ५ ॥
इम रुट्ठो ताको अनुज, सँप्ति न लहि सगतेस२ ॥
सेवन अक्कबर३७।१निजन सह, आयो दिल्लिय एस ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

दिल्ली१अकबरदंग२उभय२अकबर३७।१निवास इम ॥
कहुँ यह१कहुँ यह२कहिय तदपि समुझहु संभव तिम ॥
सगतासिंह२ सीसोद साह भ्रातहि सनमान्यौं ॥
पहु इत रान प्रताप१ प्रवल प्रतिभट पहिचान्यौं ॥
सजि वरूथ बहुरिहु अखिल प्रस्थित हुव मेवारपर ॥
सीमा प्रवेस पावतसमय कहत चल्यो असि रानकर ॥ ७ ॥
अडर रान इक्क१लहि अर्व चेटक चढि आयो ॥
व्यवहित रहि कछुबेर साहदल मिलित सुहायो
सैरत जवहि निजसीम अंघ्रि दुव२ दिय अक्कबर३७।१इभ ॥

* मन्दसोर आदि नगर † खड्गों से ॥ २ ॥ आधी ‡ भूमि के स्वामि ॥ ३ ॥ १ यश के ग्राहक ने. अपने २ पराक्रम से ॥४॥ ३ बहुत घोड़े ॥५॥ ४ घोड़ा नहीं मिलने के कारण सगतासिंह रूठगया ५ अपने सेवकों सहित ॥ ६ ॥ ६ आगरा ७ कहीं पर दिल्ली और कहीं पर आगरा कहा है परन्तु जिस समय जहां पर बादशाह होवे वहां उसी स्थान को जानना चाहिये. यहां स्थान बताने का प्रयोजन बादशाह की समीपता से है ८ शत्रु ९ सेना १० चले. कहते हैं कि राणा के हाथ का ११ खड्ग चला ॥ ७ ॥ चेटक नामक १२ घोड़े पर चढ़कर १३ गुप्त. बादशाह अपनी सीमा में १४ चला तब १५ चरण. अकबर के १६ हाथी ने

तहँ झारिय तरवारि नृपति जमकी रसनानिभ[1] ॥
कछवाह मान गज अग्ग कछु भैंयद[2] खानबहलोल भट ॥
हो तहँ प्रताप तस सिर१हरयो कटि पक्खर१हय२जुत प्रकट ॥८॥
बहुत वह बहलोल खग्ग उततैंहु चल्यो खर[3] ॥
इक१तिहिं चेटक अंघ्रि अवनि[4] कट्टि रु प्रकटयो अर ॥
सो नृप जानि सक्यो न कढत अतिवेग यहै करि ॥
त्रय३ पय चेटक तुरग धुरंग[6] मारयो सु पँटी धरि ॥
जिहिं पिट्ठि बहुतलग्गे जवन जँहँ पहुँचत दुव२ जानिकैं ॥
कर जोरि अरज सगतेस२किय मन अग्रज१हित मानिकैं ॥६॥
अग्रज जब लिय अस्व याहि तिनमैं दिय इक१न ॥
तब रिसाइ सगतेस२मंगि भूखन मातासन ॥
तैसोही इक१ तुरग लोल[10] सोदागरतैं लहि ॥
इम अकबर३७१ पँहँ आइ रक्खि कछु दाँय गयो रहि ॥
अब जानि त्रि३पय हय अग्रज१हिं चहत बचावन इमैं चविय ॥
जो होइ हुकम मैं पुगि जिहिं जातहि हनि आऊँ जविय[12]॥१०॥
साह कहिय सगतेस२ जाहु मारहु रान१ हिं जब ॥
बाजि दपटि यह वीर त्वरित सज्जित पहुँच्यो तब ॥
उभय२जवन ह अग्ग तिनहिं हनि अग्ग बढ्यो तिम ॥
रान१हिं अक्खिय रहहु अनुग[13] यह सगतसिंह२ इम ॥
पुगतहि जवन तिन्ह मारि पथ कछु अप्पैंहि[14] आयो कहन ॥
हय त्रि३पय छोरि चढि जवनहय[15] अजहु भ्रात पन निव्वहन ॥११॥

॥ दोहा ॥

यमराज की १ जिह्वा के सदृश २ भयंकर ॥ ८ ॥ ३ तीक्ष्ण ४ भूमि पर ५ शीघ्र ६ बहलोलखां को मारकर ७ घोड़े की अत्यन्त दौड़ का नाम पट्टी है ॥ ६ ॥ ८ माता से भूषण मांग कर ९चपल१०अपने कुछ दायभाग को छोडकर ११ बडे भाई के घोड़े को तीन पैरोंवाला जानकर १२ बेगवाले को ॥ १० ॥ १३ सेवक १४ आप को १५ यवन के घोड़े पर चढकर जाओ ॥ ११ ॥

असंभूत सम दत्त यह, वाढत मन न विसास ॥
जे अक्कर३७१२ बानैत जिम, पहुँचै इक१ न पास ॥ १२ ॥
कै२ ही पहुँचत जानि हठ, तिनहिं हनैं सगतेस ॥
पहुँचे यह याकोहि पुनि, अद्भुतसूचक एस ॥ १३ ॥
किये जात कुकरहु३ अवहु, मन कज्जन महिपाल ॥
तनुके कज्ज बनैं न तिन, बनैं सु विरचैं बाल ॥ १४ ॥
पिहित लोहउल्ल भिदि पता, करिखै पुव्व कही सु ॥
अनुजरहिं पहुँचैं नहिं इतरैं४, रीति अचिज्ज५ रही सु ॥ १५ ॥
पै धुरधार६ अबके नृपन, तब हुव रान प्रताप ॥
विपिनैधर्म हित जो बस्यो, आपत्तिहु सहि आप ॥ १६ ॥
वीरपनहु याकोहि वलि, उघर्‌यो सब सिर एक ॥
हठि इम तहँ संभव चहत, अद्भुत जसहु अनेक ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक१आकृति कति कहत हुते उभय२हि बंधुन हय ॥
पहुँचि अनुज३इन पास रान हय लिय सु लिर४पैप्र रय ॥
चपल ज्व हय अग्रज१चढाइ पठयो पन पालन ॥
यात्तिखय साहहिं आइ कंटि जवनन करवालन ॥

---

१ यह बात असम्भव ही है ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ २ कुक्कर. मन से राजाओं के ३ कार्य अब भी करते हैं परंतु शरीर के कार्य उसप्रकार नहीं बनते ॥ १४ ॥ ४ कुछ ? अन्य नहीं पहुँचे ५ यह आश्चर्य की रीति है ॥ १५ ॥ ६ इस कलिकाल के राजाओं में से धुरा को धारण करनेवाला महाराणा प्रतापसिंह हुआ जिन्होंने धर्म के कारण ही वन में वास किया ॥ १६ ॥ १७ ॥ १ इसप्रकार इस कथा का होना संभव मालूम होता है क्योंकि जिनके अनेक अर्जुन बस हैं १० एक से रूपवाले ११ तीन पैरों से चलने वाला १२ नहीं है ॥ १८ ॥

पुनि छंडि इक्क१लग्ग हय पयहु दुस्सह भय जय खिन दयो ।
सो रान मक्खा हजरत सुनहु गंजि सवन बचि इक्क१गयो ।१८।
संकाभि अक्कबर३७१२सुनत*पत बंक अतुल उदैपुर ॥
चित्तोरहि† कति चवत धारय बहुबिध जुज्झन धुर ॥
जिहिं बहुदिन लरि जित्ति‡ पुहवि मेवार लई पुनि ॥
रक्खन धर्महि रान बसिय बन बलि चित्रन चुनि ॥
पठई कंहाइ दिल्लीस पहु सासन मम कछु अनुसरहु ॥
नहिं ओर नृपन सम तुम नृपति रहि दिल्लिय सेवन करहु ।१९।

॥ दोहा ॥

हनरे रक्खहु दाग१हय२, नौबँ चिन्ह१निसान२ ॥
कहिहैं हमरे२पक्षहि करि, राज्य करहु पहु रान ॥ २० ॥
नैंक न मन्नी रान नटि, सुनहु राम२०३१४प्रभु सोहु ॥
पठई कहि रहिहैं स्वपथ, हम नासहि किन होहु ॥ २१ ॥
इत अकबर हठ अंकुरयो, प्रतिभट उतसु प्रताप२ ॥
मन्न्यौं नन तुव२धाँ मिलन, आप मतहिं तजि आप ॥ २२ ॥
सूनु रानके दस१०सुनैं, पै तिहिं समय प्रवीर ॥
पट्ट कुमर अमरेस१ पहु, भये जनकें मत भीर ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

उभय२ पिता१ सुत२ अतुलाँ कछि नारि१न संगहि करि ॥
सब भट २ परिजन३सहित धर्म न तजन मन पन धरि ॥
गहन वरुनदिसि१गिरिन रहिय चिरलौं तहँ रानाँ ॥

---

* गया † किले को चित्तौड़ कहते हैं ‡ भूमि १ आश्चर्य करके २ मेरा कुछ हुक्म मानो और दूसरे राजाओं के समान दिल्ली में रहकर सेवा मत करो ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ हठ से ३ खड़ा हुआ ४ दोनों ओरवालों ने मिलना नहीं माना, पहले ५ आपे को छोड़कर, अथवा जल (पराक्रम) को छोड़कर ॥ २२ ॥ ६ पिता के मत का सहायक हुआ ॥ २३ ॥ ७ तुलना रहित ८ सेवक ९ पश्चिम की दिशा (पश्चिम) के पर्वतों में १० बहुत समय पर्यंत

भोगे दृढ सब भांति खुल्लि आपत्ति खजानाँ ॥
कंटकी[1] तरुन आवृति[2] कलित[3] तिहिं अंतर तृन१पत्र२तनि ॥
इम विविध कायसान[4]१ रु उटज[5]२बनवाये नृप बन्य[6] बनि ॥२४॥
तँहँ अंतहपुर[7] तिमहिं रक्खि रानि१न कुमरानि२न ॥
अप्प१कुमर२कछु ओट[8]रहे बाहिर छद छानिन ॥
आवृति[9] बाहिर अखिल बीर१ अरु अनुग२ बसाये ॥
पिउहर निज पठई न लार ना१रिन कतिलाये ॥
अवरोध[10] तेहु अक्खिय अधिप निज पुत्रिन सम हित नियत[11]॥
साहस अमोघ इहिं संकटहु जवन भृत्य न बजैं जियत ॥२५॥
रह्यो इत सु भुव रुंधि[12] सबल छोरैं हठ साह न ॥
अधिक अधिक दुख देत रोकि अन्नागम[13] राहन ॥
दूजे२ तीजे३ दिवस स्वजन[14] जुहि अन्न प्रवेसहिं ॥
बंटि सबन इक१ बेर अप्प[15] लै तब अवसेसहिं ॥
कोद्रव[16]१गवेधु[17]२ न मिलैं कबहु साक१फल२न ह्वै तब असन[18] ॥
कल्हिको[19] खिलहु[20] बिच डारि कछु रंधिलहहिं हेरहि रसन ॥२६॥

॥ दोहा ॥

पै जब ह्वै तब पंति परि, बिचजिम्महिं नृप बैठि ॥
निजनिज स्वामिन खिल्ल[21] अनुग, पावहिं अवसर पैठि ॥२७॥
रीति सु तँहँ पीढिन रहैं, जँहँ बिपदा बढिजाइ ॥

१ कांटोंवाले वृक्षों के २ घेरा लगाकर अर्थात् कांटों की बाड़ करके ३ विदित उन के भीतर तृण और पत्र छाकर अनेक प्रकार के ४ तृणकुड्य (तृणों की झोंपड़ियें, ५ पर्णकुटी (पानों की छाईहुई टपरियें) बनाकर वह राजा ६ वनवासी हुआ ॥ २४ ॥ ७ जनाना. बाहर की ८ टपरियों में ९ बाड़ के बाहर के १० जनाने में ११ निश्चय ॥ २५ ॥ १२ भूमि को भर कर १३ अन्न आने के मार्गों को रोककर १४ अपने लोकों में जिस अन्न की परोसगारी होती थी वह सब को दिन में एक समय बांटकर बाकी रहता सो १५ आप लेता १६ कोदों १७ गेहूं १८ भोजन. कल का १९ बाकी रहा हुआ २० स्वाद नहीं देखते थे ॥ २६ ॥ २१ बाकी के सेवक ॥ २७ ॥

पै सहभोजन[1] उदयपुर, होत अबहु यह हाइ ॥ २८ ॥
पताराम इम धर्मपर, संधा[2] अवितथ[3] साहि ॥
रोर[4] दुखहु सहि सुरिरह्यो, निजजन सब निर्बाहि ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिहिँ विपत्ति[5] गर्भजुत रहतकोउक कुमरानिय ॥
बासर तीजे[6] कबहु अन्न स्वजनन तहँ आनिय ॥
हुव तस रुट्टी[7] होहि अखिल बट अद्धी[8] अद्धी ॥
गुरुपन[9] कारन द्वि२ गुन लाभ ताकँहँ इक१ लद्धी ॥
आहार करत आतापिनी[10] गगन झपटि तिहिँलैगई ॥
अमरेसनारि[11] करि त्राहि वह भयाबिहाल क्रंदत[12] भई ॥ ३० ॥
स्वसुर१ सुनत बट स्वीय[13] अद्ध[14] पूपिय[15] तिहिँ अप्पिय ॥
सो१ हि स्वबट सस्सूर२ हु दइत[15] मग रहि बधुहिँ दिय ॥
इम ताके हुव इक्क१ जोहु न लगी खावन जँहँ ॥
सस्सूरतह सह सपथ[16] कठिन भोजी[17] स्वबधू२कँहँ ॥
दुखको न सेस अन्नहु दुलभ सूर तदपि संगर[18]रसिक ॥
अरि जवन[19]तिमिर भास्यो उदित अज्जन[20]नृपन रवि गन इक्क१ ॥ ३१ ॥

१ साथ भोजन ॥ २८ ॥ २ प्रतिज्ञा ३ सत्य ४ भयंकर दुःख सहन करके ॥ २९ ॥ उस ५ विपत्ति में ६ तीजे दिन ७ रोटी ८ सब का आधी आधी रोटी का बण्ट होता था ९ गर्भवती के बडप्पन के कारण उस कुमरानी को एक रोटी मिलती थी भोजन करते समय १० संवली (चील्ह) ने झपट मारकर ११ अमर सिंह की स्त्री १२ रोने लगी ॥ ३० ॥ १३ अपने बंट की आधी १४ रोटी उस कुमरानी को दी १५ प्यार के मार्ग से बहू को दी १६ सौगन सहित १७ कठिनाई से भोजन कराया तो भी १८ युद्ध के रसिक थे सो १९ यवन रूपी अन्धेरे में २० आर्य्य राजाओं में एक महाराणा का ही सूर्य के समान उदय दीख-

* यहां पर अब भी यह रीति होना लिखकर ग्रन्थकर्ता ने खेद प्रकाश किया है सो अपने सरदारों को पंक्ति में बिठाकर अपने सन्मुख भोजन कराना तो राजाओं को शोभा दायक है परन्तु सरदारों के सेवक पंक्ति में आकर सरदारों की उच्छिष्ट पातलें बिखा की रीति के अनुसार उठा ले जाते थे यह रीति अनुचित समझकर महाराणा स्वरूपसिंह ने तोड़ दी सो अब नहीं है ॥

॥ सोराष्ट्रि दोहा ॥

स्व धरम्म दृढ संवादि, दै सीस[1]हु को भूर[2]द्रविन[3] ॥
अग्गहु लक्खनआदि, रानहि बहु मुरेरहे ॥ ३२ ॥
याहीतैं जन अज्जँ[4], अज्जनइन[5] भाखैं इनहिं ॥
लुपत धर्म कुल लज्ज, तक्की इन इतरन[6] न तिम ॥ ३३ ॥
जवन कहत लँघु[7] जानि, अप्पन अज्जन[8] हिंदु इम ॥
मति जड सुहि दृढ मानि, हिंदु हम अज्जहु[9] कहत ॥ ३४ ॥
हिंदुस्थान कहंत, अज्जावत्त[10]हिं अज्ज इम ॥
लज्ज न सुनि हु लहंत, मिच्छन हिंदुस्तानमित ॥ ३५ ॥
भाख्यो हिंदुन भानु, जनन इम्महि रानन जनैं[11] ॥
सो जँहँ ज्वलित कृसानु[12], हुव प्रताप अरि करन हुव[13] ॥ ३६ ॥
भोज१मान२से भूप, सचिव खानखाना१हि सब ॥
रहे स्व स्व[14] अनुरूप[15], करन संधि[16] समुझाइकैँ ॥

॥ षट्पात् ॥

पठई कहि मानप्रति रान यह वत्त धर्मरत[17] ॥
दुहितौ[18] जवन न दै रु तुम्हहु संबंध उताहि[19] तत ॥

अपने धर्म को दृढ १ करके अपना मस्तक देते हैं जिनके भूमि और २ धन क्या है ३ गढ लक्ष्मणसिंह आदि ॥ ३२ ॥ इसी कारण से ४ आर्य लोक इनको ५ आर्यदिवाकर कहते हैं ६ अन्य लोकों ने देखी ऐसे इन्होंने नहीं देखी अर्थात् अपने धर्म में दृढ रहे ॥ ३३ ॥ यवनलोक ७ छोटे जानकर हम ८ आर्यों को हिन्दुवा कहते हैं सो मूर्खों ने उसी बात को दृढ मानकर ९ आर्य भी कहने हैं कि हम हिन्दू हैं; जो आज भी हिंदू कहते हैं ॥३४॥ इसी कारण आर्यलोक भी ॥ ३५ ॥ १० आर्यावर्त को हिन्दुस्थान कहते हैं सो यवनों के समान हिन्दुस्थान कहने में लज्जा नहीं पाते ॥ ३६ ॥ इसकारण लोकों ने महाराणा के ११ वंश को हिन्दुवासूरज कहा सो वहां जलते हुए १२ अग्नि के समान शत्रुओं को १३ होम करनेवाला प्रतापसिंह हुआ ॥३६॥ १४ अपने अपने १५ सदृश १६ मिलाप ॥३७॥ १७ धर्म में रत महाराणा प्रतापसिंह ने कछवाहा मानसिंह को कहलाया १८ पुत्री १९ इसकारण से

अकबर३७१जामिपअग्ग क्यों न नत२ हमहिं करावहु ॥
अब पै सगपन१असन३पंति पैलेभव पावहु ॥
जो पुनि न देहु लिखि देहु जव लवकुल पुत्रिन तब लहहु ॥
हम स्वीय भटन देतहि हरखि रुचत नतो मिरजा रहहु ॥३८॥

॥ दोहा ॥

करौं जवन लवकुल कनी, कहिय अग्ग तुम कुप्पि ॥
बिग्गरायो सु न करि बचन, लज्ज१धरम२कुल३लुप्पि ॥३९॥
कनी दूर जवनी करन, कछवाहहु लै कोहु ॥
तनया लवकुलजा ततो, हमकौं तुम अघ होहु ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

जब प्रताप असु जाइ कुम्भ व्याहहु तब मो कुल ॥
तनपा१ व्याहहि न तनु तनय२ व्याहहु अतीततुल ॥
कहा रुठि तुम किपउ सिंह इत आनि फेरु सम ॥
हत्थी समुझे हमहिं तुल्य समुझे न अंध तिम ॥
कंदरा लिय सु बहु मिलि किनहु तिम जो सबैं हुकम तस ॥
तो हमहिं धर्म तुमसों तजे बदहु सिंह१कित सिंह२बस ॥४१॥
सुख जो रक्खहु मुच्छ साह श्रुति गहि समुझावहु ॥
दग्ग१ सु हय२ न दिवाइ चिन्ह१ध्वज२निजहि चलावहु ॥
उत उत्तर यह अप्पि भूप भोजज१९१२हिं इम आक्खिय ॥

१ पतिनोई, अकबर के आगे हमको २ नम्र क्यों नहीं कराया ३ भोजन ४ हम लव के वंश के. हम अपने ५ उमरावों को ही मुसलमानों को पुत्रियें देते हैं ६ मिरजा पद पानेवाले यवन ही रहो ॥ ३८ ॥ ७ कन्याओं को ॥३९॥ कन्याओं को ८ यवनी कराना तो दूर रहा परन्तु ९ कछवाहा भी कोई १० लव वंश की कन्या को लेवे तो हमको ११ पाप होवो ॥ ४० ॥ प्रतापसिंह के १२ नाश आवे जब १३ बराबरी को छोड़कर १४ गीदड़ के समान, किसी प्रकार बहुतों ने मिलकर १५ सिंह के रहने का स्थान लेलिया १६ तुम्हारे समान ॥४१॥ बादशाह का १७ कान पकड़ कर १८ घोड़ों के दाग दिवाकर ध्वजा में बादशाही चिन्ह चलाओ

उतमैं न दैन दुहिता[1] यहहु जो बलि[2] दै सोहू जवन ॥
दूदा१९१।२रु तुम१६१।२हु तनया[3] दई कहहु धर्म रक्खहिं कवन ।४२।

॥ दोहा ॥

मन्नहु अप्पहु अबहि किम, रक्खत ए छलराह ॥
कछवाहनके जिन करहु, बिनु लिपि[4] पुत्रन व्याह ॥ ४३ ॥
अंतर१ मिच्छन बंधुर[5] इम, ए ठग उप्पर१ ओर२ ॥
अज्ज कवन[6] धिज्जैं इनहिं, चोरैं[7] दीसंत चोर ॥ ४४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम कहाइ रान इत बस्यो गिरिदुर्ग[8] दुर्गबन[9] ॥
जँहँ सकैं न अरि जाइ जाइ दिन निंहि निजहि जन ॥
साक पलास[10]१ पलास२पलासनके उटजन[11] पहु ॥
रहैं जलन तँहँ रंच बिसैं[12] झर जदपि लगैं बहु ॥
बरखा अनेहँ[13] तँहँ कछु बिघन अमर उटज प्रच्युत[14] उदक ॥
कुमरानि१सहित अनुताप[15] किय जगिनिस कुमर१न पाइ जग ।४५।
पिहित सुनत सब पास रजनि बिचरैं उठि रानहु ॥
कुमर उटजढिग[16] कहत कथन[17] परिगो वह कानहु ॥
अमर दुखित उच्चरिय अहो हम सम न अभागे ॥
बन यह सहत बिपत्ति जलहिं टारन निस जागे ॥
थिर सुर्जन१६०।१ रनथंभ कोल हम सुनिय सत्त७ किय ॥

---

१ पुत्री नहीं देना २ फिर ३ पुत्री ॥ ४२ ॥ ४ विना लिखावट कराए ॥ ४३ ॥ भीतर से ये यवनों के ५ सम्बन्धी हैं ६ कौन आर्य इनका विश्वास करे ७ चौड़े (प्रसिद्ध) ही चोर दीखते हैं ॥ ४४ ॥ ८ पर्वतों के गढ में ९ दुर्गम होकर; अथवा दुर्गम वन में १० वृक्षों के पत्तों का शाक और मांस का भोजन. इसी प्रकार ११ पत्तों की छाई हुई झोंपड़ियों में रहे. अधिक झड़ लगता है जब उनमें जल १२ प्रवेश होजाता है १३ समय. अमरसिंह की झोपड़ी में पानी १४ टपका १५ सन्ताप किया ॥ ४५ ॥ कुमर को १६ झोंपड़ी के समीप. अमरसिंह का यह १७ कहना महाराणा प्रतापसिंह ने सुनलिया

सब अधिप धन्य हमरे सगे महलन चिंतवत यह समय ॥
अबलहिं बुलाइ पद करि महत न क्यों गहत नृप संधि१नय ।४६।
छंदन निलय निज छन्न आइ सुत्तो सुनि नृप यह ॥
परिकर बुझ्झि रु प्रात सबन प्रति भनिय सूनुसह ॥
तुमहिं संधि जो रुचत करहु तो है अनुमत किल ॥
इक१ मो सठ अपराध वसहु क्यों सब कारा बिल ॥
यह सुनत भीत१विस्मित२अखिल कहतभये यह अंज किम ॥
प्रभुसंग दुख१रु सुख२परिजनन जानहु हमहिं स्वछाँह जिम ।४७।
कहिय रान जलकनन कुमर अनुतापँ रत्ति किय ॥
छिज्जि मिलहु पीछैंहिं जु अब किन गिनहु उचित जिय ॥
करन राज्य नामि कुमर बुरे बोलि हमहिं बतावैं ॥
हम छत सादर मिलहु जिम न अरि अरुचि जतावैं ॥
तब न्हीत१भीत२अक्खिय अमर गति दरिद्र१आढ्य२न गदत ।
मिलिबोहि मन्त्रि किम प्रभु कहहु निज१पर२परदासहु नदंत ।४८।

॥ दोहा ॥

कुमर लजानो इम कहि रु, रह्यो सदा तिहिं राह ॥
जुगरन रिपुन नैनं जिमहि, पैने तिमहि सिपाह ॥ ४९ ॥

॥ षट्पात् ॥

अकबर१७१पाउसयंत गयो तँहँ धरिम्लेच्छकगन ॥

अन्य १ राजा यह समय लाखों ही रु[illegible] निकालते हैं. राजा पन के पद का २ नाश करके राजा संधि की ३ नीति क्यों नहीं ग्रहण करते ॥४६॥ आपने ४ पत्तों के घर में ५ [illegible] को ६ पुत्र सहित ७ पुत्र की मिलाप करना कहता है और. नि-श्चय ही सुन लिया ९ कहता है तो १० कैदखाने में [illegible] ११ [illegible] में [illegible] [illegible] १२ यह आज नया हुआ १३ सेवकों को १४ अपनी छाया के समान साथ रखनेवाले जानते ॥४७॥ रात्रि में कुमार ने १५ पश्चाताप किया १६ [illegible] १७ फिर. भगवान और १८ लज्जित होकर. दरिद्री की भांति १९ धन पाकर नहीं रखते हैं २० मालूम करना है ॥४८॥ जिसप्रकार नेत्र और पुत्र दोनों शत्रुओं को २१ [illegible] में, तिसप्रकार उनके सिपाही भी [illegible] ॥४९॥

इम प्रताप असु[1] अवधि प्रथित[2] निबस्यो स्वधर्मपन ॥
स्वकुल समप्पन सुजस धर्म अप्पन थप्पन धुर ॥
स्वामि[3] सुनहु जिहिं समय इक१हुव पहहिउदैपुर ॥
बिपदाह सहि रु अब्दन[4] बहुन बिहित[5] बहि रु थिति चहि बिपिन[6] ॥
बितयो स्व आयु तस देस१बसु२अमल गयो करि साह इन ॥५०॥

॥ दोहा ॥

आतहि दिल्ली साह इम, सब भूपन हुव सिक्ख ॥
पास रह्यो इक१मानपहुं, तहँ सालर्कपन तिक्ख ॥ ५१ ॥
पुर आमैर१रु जोधपुर२, आदि बहुत अवनीस ॥
तियनजुतहि जे जाइ तिन्ह, सिक्ख रुचैं[10] रुचि सीस ॥ ५२ ॥
रहैं साह पुरबाहिर१हिं, जेहु कतिक लेजाइ ॥
बुंदी१मुखैं[11] लखि बाहुरैं, पुर निज साह पुगाइ ॥ ५३ ॥
इम भोज१९१२हु हुव२अब्दकी, लाहि सिक्ख रु जसलाह ॥
पहीलैं बुंदिप स्वीयपुर, आयो सबल१उछाह ॥ ५४ ॥
कुमर रत्न१९२१संबंध किय, इन दिवसन आमैर ॥
कूरमतैं जु लिखाइ क्रम, वदहिं सु अग्ग बिबैर[12] ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जान्यौं बुंदिप जाइ, प्रतिमग मुरि रहि साहपहँ ॥
पुनि उत सिक्खहिं पाइ, कासी रहिहैं अब्व कछु ॥ ५६ ॥
इम हड्ड६१नकुल ईस, पुर बुंदी आयो प्रथम ॥
सब निजकरि बखसीस, बिसवासे इतके बिबिध ॥ ५७ ॥
अप्पन बंचित[13] अग्ग, जो गनेसद्विज जोइसी ॥

---

१ प्राण रहा तब तक २ प्रसिद्ध ३ हे स्वामिरामसिंह ४ बहुत वर्षों तक ५ उचित धर्म धारण करके; अथवा उचित मार्गमें चलकर ६ वन में ॥५०॥ ७ राजा मानसिंह ८ सालापन की बडाई से ॥ ५१ ॥ ९ राजा १० प्रसन्नता ॥५२॥ बुन्दी ११ आदि "यहां अजहत् स्वार्था लक्षणा से बुन्दी आदि का राजा जानना चाहिये" ॥५३॥५४॥ १२ विना द्वेप से आगे कहेंगे ॥५५॥५६॥५७॥ १३ ठगाहुआ.

दूदा१९११कुमरउदग्ग, आरयो निज खिन रोकि मग ॥५८॥
महादेव जिहिं नाम, सो नृप बुल्लि गनेससुत ॥
दिय तिहिं वसु उद्दाम, निवसथ सासन ढिम्मली२ ॥५९॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे उदयपुराधिपमहाराणाप्रतापसिंहयवनेन्द्राकबररणानन्तरविपत्समयगिरिनिवासस्वधर्मदृढरक्षणं १, आर्यकुलकमलदिवाकरख्यातिकारणप्रसिद्धीकरणं २, बुन्दीभूपभोजामेरनृपमानसिंहसचिवखानखानादिसंधिवचनानादरकधर्मदृढीभूतराणाकृतपरुषोपालम्भमाननृपलज्जितीकरणं ३, विविधापत्प्राप्तिहेतुकुमारामरसिंहदुःखितवचनश्रवणसमकालमहाराणाकुमारत्रपासादनं, ४, यावज्जीवमहाराणाप्रतापसिंहधर्ममार्गस्थितिसहितान्यार्यनृपार्थदिल्लीन्द्रात्स्वस्वराज्यगमनाज्ञावर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः सप्तनवत्युत्तरशततमः ॥ १९७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल दायाद रज्ज, इत करि ईस्वरदास ॥

---

१ वदध ॥ ५८ ॥ २ ग्राम ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह का बादशाह अकबर से युद्ध करके विपत्ति के समय पर्वतों में निवास करके अपने धर्म को दृढ रखना १ हिन्दुवासूर्य कहलाने का कारण प्रसिद्ध करना २ बुन्दी के राजा भोज, आमेर के राजा मानसिंह और सचिव खानखाना आदि के सन्धि के वचनों को नहीं मानकर धर्म में दृढ रहनेवाले राणा का कठोर उपालम्भों से राजा मान को लज्जित करना ३ अनेक आपत्तियें भोगने के कारण कुमर अमरसिंह के दुःख के वचन सुनकर महाराणा का कुमर को लज्जित करना ४ जीवन पर्यंत महाराणा प्रतापसिंह के धर्म पथ में रहने के सहित अन्य आर्य राजाओं को दिल्ली से अपने अपने राज्यों की सीख दिलाने के वर्णन का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ सत्तानवे १९७ मयूख हुए ॥

रायमल्ल का २ भाई युद्ध करके

पैठो नगर मऊ१सु पुनि, नृपपन तजन निरास ॥ १ ॥
रहत साहके रच्छकन, भिरि वह कढ़ि१भजाइ२ ॥
भो खिची१३गतभूमिको, अधिप मऊ१अपनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि असहन यह साह हयो बुंदिय भोज१९१२रहिं दल ॥
नृप तव सीमा निकट भयो प्रतिभट खिची१३खल ॥
गहि१वाहनि१तिहिं गहहु हड्ड६१दिय तुमहिं मऊ१हम ॥
सब ग्रामनजुत सीम करहु निज कारि निज विक्रम ॥
सुनि यह निदेस बुंदिय सुपहु सबल सज्जि हंकिय सजव ॥
मनरत्तामिलाय पत्तन मऊ१लिय गरदाइ लग्यो न लव ॥ ३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम बेढि मऊ१पुर असह अप्प, दै तोप दु२दिन हरि अरिन दप्प ।
हल्ला करि तीजे३दिनहि हड्ड६१, अंदर पहु पैठो तोरि अड्ड ॥ ४ ॥
वज्जिय तहँ खग्गन निसित वाढ, गज्जिय१भट२भज्जिय१चकित गाढ२ ॥
भूपतिको तिहिं रन भागिनेय, जिहिं नाम कन्ह मन रन अजेय ।५।
सो पूरकुमारि१९१लघुतनैय[11] सूर, पानिपं[12]कारि मातुल अग्ग पूर ।
पीवत कबंध रन पग्ग प्रान, वह कन्ह खिग्यो खग्गन अमान[13] ।६।
इक जाम मच्यो मृध तहँ दु२ओर, घोटक१नर२लोटक असह घोर ॥
पैनैं[17] असि हड्ड६१न करि प्रतीत, भजिगो वह ईस्वरदास भीत ।७।
पहु भोज१९१२मऊ१सह विजय२पाइ, झंडे तस प्रातहु दिय झुकाइ ।
कै कथित मान जय अनथलित्थ, पहिलैं हन्यो जु रट्ठौर पिथ्थ ।८।

॥ १ ॥ २ ॥ १ पत्र २ शत्रु ३ अथवा मारकर ४ पराक्रम ५ शीघ्र ६ क्षण भी नहीं लगा ॥ ३ ॥ ७ दर्प ८ आड़ (रोक) ॥ ४ ॥ ९ तीक्ष्ण १० भानजा ॥ ५ ॥ ११ छोटा पुत्र १२ पराक्रम १३ अतोल ॥ ६ ॥ १४ युद्ध १५ घोड़े १६ मारनेवाला १७ तीक्ष्ण ॥ ७ ॥ १८ राजा मानसिंह ने प्रसिद्ध जय करके १९ पृथ्वीसिंह को ॥ ८ ॥

नंदन तदीय जो भानुनाम, पैठो सु रीछवा पुनि प्रकाम[2] ॥
वस ह्वै मऊ रहि खिच्चि१ ३न प्रबंध, क्यों तब लहैं न तिन भट कबंध ।९।
यह बहुरि रीछवानैर आइ, निज जानि रह्यो तब सब नमाइ ॥
भूपति जब खिच्ची१ ३गो सु भागि, तस भटहु भजे गृह स्वस्व[3] त्यागि १०
छलि तब कबंध तस संग छोरि, बैठो सु रीछवा रुपि बहोरि ॥
इहिँ हेतु मऊ२सन चढि अधीस, संक्रमिय भानु रह्योरसीस ॥११॥
विंट्यो पुर जातहि तोप वार, दुरमुहूर्त सही पुर भू दशार ॥
कढि जान असंभव लखि कबंध, सय जोरि पर्यो पय प्रहतसंध[6]।१२।
न हन्यो१न गह्योरतव पटु नरेस, आन्यों गिनि निज भट संग एस ।
तदपि न दयो सु जिँत पुर हि ताहि, बुध ओर पटा दियनय निबाहि।१३।
बुंदीके अनुगत नय प्रबंध, कहियत तबतैं तस कुल कबंध ॥
अब तिहिँ कुल स्वानुज[11] साल एस, निवसथ गागरनी हेनरेस ॥१४॥
अहँ[13] कछुक मऊ पहु रहि अग्रंस्त[14], सीमाके ग्रामहु लखि समस्त ॥
सब ठाम रक्खि परिचित[15] सिपाह, बलि आयो बुंदिय नरननाह । १५ ।
प्रभु राम२०३१४मऊ१आमन उपेत, तबतैंहि भई हड्ड६१न निकेत[16] ॥
बुंदिय दुरअब्द सिक्खहिँ बिताइ, जिम स्व कुलधर्म राज्यहिँ जमाइ १६
खइरारौं[17] चालुक सचिव खास, अभिधा[18] जिहिँ जोगीदास१ आस ॥
दोलतसिंह२सु दहिया द्वितीय२, रक्खे स्वराज्य निवहन गरीय ॥१७॥
जगभाखत खानखवास३जाहिं, सुद्धि द्विज सनाढ्य सलमन३सराहि
लखि चोरनजारनरोध[19] लाह, सेनानी[20] रक्ख्यो प्रिय सिपाह ॥ १८ ॥

---

१ उसका पुत्र २ विशेष कामना से ॥९॥ ३अपने अपने घर छोडकर ॥१०॥११॥
४ घेरा ५ दो घड़ी ६ प्रतिज्ञा छोडकर हाथ जोड़ कर चरणों में गिरा ॥१२॥
७ विजय किया हुआ पुर ८ चतुर ॥ १३ ॥ ९ सेवक १० राठोड ११ आप के छोटे भाई का साला है १२ गागरणी में रहता है ॥ १४ ॥ १३ कुछदिन १४ निर्भय १५ परिचय पाएहुए सिपाहों को ॥ १५ ॥ हाडों के १६ घर में ॥ १६ ॥
१७ खैराड़ा १८ नाम ॥ १७ ॥ १९रोकने का लाभ २० सेनापति ॥१८॥

हनि बारह१२खेटनन२गिनि हेय३, मैंनैं खल गंजे जिहिं अमेय४ ॥
नृपभोज१९।१२करतकासीनिवास,इहिंछुतनखलनजियआसआस ॥
रच्छक रचि चोरी१लूट२रोध, गुन्न गन पजाहिं दिय द्विज सबोध ॥
जिहिं त्रास अग्ग वय१काल२जाँहिं, मैनीन प्रजागर रोगमाँहिं ।२०।
बुंदी वलप्रति तीजो३प्रवीर, सो द्विजहु इहाँ रक्खयो सु धीर ॥
अधिकार कुमरपन जिनहिं अप्प, दियपुव्वहि दुजनन दलन दप्प २१
उन तीनन बुंदीवल्ल उपेत, नृप रक्खि चल्यो दिल्लीनिकेत ॥
सेना नव बावन५२प्रांतसत्थ, पहुँच्यो नृपतिहिं जुत इंदपत्थ ॥ २२ ॥
जिन दिक्खन असह सब रिपु लजाइ, वसुधातल डंका इक१बजाइ ॥
इम राज्य अकंटक बिरचि ईस, सो अक्कबर३७।१पतपत सबन सीस॥
निज सचिव खानखानाँ नवाब, आनिय जिहिं सत्तम स्वकुल आव ॥
नासेरखान१सम अदल न्याय, दाता हातम२सम सकल दाय।२४।
परको विक्रम३सम हरन पीर, बानौंधर रुस्तुम४उपम वीर ॥
भाखाखट६संस्कृत मुखनैं ओज५, मंजुल पर दूजो२जनु मनोज ।२५।
अरवी१मुख निजभाखा अगाध७, बिरचैं सब बादिनैं बचन बाध८।
रिझवार९काव्यकर१०गुनन रासि११, पहुमैंनि१२गुनगाहक१३ज-
स प्रकासि ॥ २६ ॥
धुरधारक कर्ण१४कि स्वामिधर्म, सब दईत१५सील साकैं१६सु-
कर्म१७ ॥

मैनों के बारह खेड़ों को मारकर (विध्वस्तकर के) १ त्याज्य २ प्रमाण रहित. ३ दुष्टों का जीने की ४आशा नहीं ५हुई ॥१९॥ मैनों की स्त्रियों को ६जागरण में. यह लोकोक्ति है कि 'जिसके भय से थेपड़े हुए छोकरे सोते हैं'; अथवा जिसके त्रास से मैनों की स्त्रियों की अवस्था और उनका समय जागरण के रोग में ही बीतता है ॥२०॥ ६दर्प॥२१॥७ इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ॥२२॥ ८भूतल पर ॥ २३ ॥ ९ कान्ति ॥ २४ ॥ १०नहीं भागने का चिन्ह धारण करनेवाला. संस्कृत ११ आदि १२ सुन्दरता में १३कामदेव ॥२५॥ १४शास्त्रार्थ करनेवालों के १५ चतुरलोकों का मणि ॥२६॥ सब का १६ प्यारा १७ शक्कर के समान

जिहिं छत खल कत्थन * मूकजोह १८, सरल१९हि † अज१अग्गहु रहत सीह२ ॥ २७ ॥

‡लौकिकपटु१९§सकरुन२०¶ऋजु२१सलज्ज२२, सतपुरुखन संगति सततं सज्ज२३ ॥

निज स्वामि अभ्युदय तेहु२४नेक२५, दृढ पन२६समदरसी२७यहहि एक१ ॥ २८ ॥

इक बुध दरिद्र द्विज रिस उपेत, द्रुत होहु मिच्छ खय साप देत ॥
सुनि कहिय होहु पंचमि५समासं, तब द्विज प्रसन्न हुव बचन तास २९
पग्घहि निज फैंकी रीझि पास, नहिं विफल उदारन रीझ नास ॥
वहु छिद्र१मलिन२जनु कूट बीस२०, सुहि लै नवाब बंधी स्वसीस ३०
माँ१बानी२दुव२इक१घर मिलाइ, द्विज किय सु आढ्य बहु बसु दिलाइ
इक धनिक नारि बय१मदन२अंध, सो कबहु लख्यो जावत सुसंध ३१
तब लज्जहिं जुब्बन मत्त तोरि, नवबय नवाब बुल्ल्यो निहोरि ॥
तस पिहित जतन अनुकूल तत्थ,सो गो हु खानखानाँ समत्थ॥३२॥

जिसके होते हुए दुष्ट लोक दुष्टता की कथा करने में *गूंगे थे † बकरे के आगे सिंह भी सीधा रहता था ‡ लौकिक के कामों में चतुर ॥ २७॥ § करुणा सहित ¶ सीधा १ निरन्तर सत्पुरुषों की संगति करनेवाला २ प्रताप ३ निर्बल और सबल को समान देखने वाला ॥ २८ ॥ एक दरिद्री ४ पण्डित ब्राह्मण ने क्रोध सहित श्राप दिया कि यवनों का शीघ्र नाश होजावे यह सुनकर खानखाना ने कहा कि यहां पञ्चमी विभक्ति का ५ समास होवे (अर्थात् तुमने षष्टी विभक्ती के समास से श्राप दिया है कि म्लेच्छों का नाश होवे यहां पंचमी विभक्ति का समास होवे अर्थात् "म्लेच्छों से नाश होवे" व्याकरण का कायदा है कि समास में विभक्ती का लोप होजाता है) ॥२९॥ नवाब ने वह पगड़ी लेकर ६ अपने मस्तक पर बांध ली ॥ ३० ॥ ७ लक्ष्मी और ८ सरस्वती को एक घर में मिलाकर उस ब्राह्मण को ९ धनवान् कर दिया १० एक धनवान् की स्त्री. अवस्था और ११ कामदेव से अन्ध थी उसने १२ उस श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाले खानखाना को जाते देखा ॥ ३१ ॥ १३ जोबन में मस्त होने के कारण लज्जा को तोड़कर १४ छाने १५ उस व्यभिचार के अनुकूल ॥ ३२ ॥

वखि बुल्ल्यो बुल्ल्योक्यौं बिकोल, बुल्ली वह तुम सम लइन[2] बाल।
आधानहि[3] संसय[१]कहिय आप, बलि है सुताहु[२]बिथरैं बिलाप ३३
है सुत हु मरैं[३]अल्पायु होइ, खल है[४]तो प्रत्युत[५] हृदयखोइ ॥
अरु व्यंग[६] है[५]सुख देन ऐन, है मूढ[६]तोहु मनकाम है न ॥ ३४ ॥
हायँन इतके मम[७]तुल्ल्य होन, कायहु रहै न[८] तो लखहिं कौन ॥
तातैं तू जननी[१]मैं तनूज[२], सासन सिर वहिहौं कृत सुपूज ॥ ३५ ॥
सुत गेह पधारहु जो सुहात[१], मैं वा मिलिजैहौं नित्य[२] मात ॥
इम कहि लगात निज मुख उरोज, मिटिगो व्रीडा[१०] करि तस मनोज[११] ३६
संध[१२] जोरि भनमि तबतैं सनेह, आजन्म[१३] गिनी लिहिं भाइ एह ॥
अरु लोटि सीसकरि तास अंक, आयो पहिले[१]घर वह असंक ।३७।
स्मर[१४][१]पारत[२]जारत इहिं समान, प्रभु राम[२०३]१४न जोगी भति प्रमान
इहिं[१]तजिय बिजैन तिय सेक्क आइ[२], जोगी[२]हग मुंदि[१९] बनहु जाइ ३८
मोलविन[१]द्विज[२]न कहुं ओड[१५] माँहिं, अक्खिय गुन निजनिज महतआहिं
मध्यस्थ नवाबहि द्विजन मंडि, खत लिय कराइ मत पग्न खंडि ।३९।
यह लिपि नवाब किय कृष्ण अंत[१७], मैं जानत इकसन इक महंत
वंसी बिभूषिता[१८]दिक बनाइ, दिय मुख्य हरि[१९] संस्कृत[२]दिखाइ । ४० ।

---

१ मुझको बिना समय क्यों बुलाया. तुम्हारे समान बालक २ लेने के लिये अर्थात् तुम से सम्भोग करने में तुम्हारे सदृश ही बालक होवेगा. खानखाना ने कहा कि प्रथम तो ३ गर्भ रहने में ही सन्देह है और जो गर्भ रहकर पुत्री हुई तो अधिक विलाप होवेगा ॥ ३३ ॥ पुत्र होकर ४ थोड़ी अवस्था में मरजावे तो भी दुःख है, और दुष्ट होवे तो ५ उलटा हृदय खावेगा. घर में सुख देने में, ६ व्यंगवाला अर्थात् दुःख देनेवाला ॥ ३४ ॥ मैं जितने ७ वर्ष में हुआ हूं उतने ही वर्षों में मेरे समान होसक्ता है जब तक तू जीवित ही नहीं रही तो कौन देखेगा इसकारण तू माता और मैं तेरा ८ पुत्र हूं सो तेरी आज्ञा मस्तक पर धारण करूंगा ॥ ३५ ॥ ९ स्तन के मुख लगाते ही १० बस लज्जा से. उसका ११ कामदेव मिटगया ॥ ३६ ॥ १२ हाथ जोड़कर १३ जन्म पर्यन्त ॥ ३७ ॥ १४ कामदेव को १५ एकान्त में ॥ ३८ ॥ मोलवियों ने और ब्राह्मणों ने कुछ १६ आड़ में अपने अपने गुणों को बड़े बताए जहां पण्डितों ने इस नवाब को मध्यस्थ किया और मोलवियों के मत को खण्डन करके विजय पत्र लिखवा लिया ॥ ३९ ॥ १७ अन्त में कृष्ण को मुख्य बताकर यह लेख किया १८ वंशी आदि के भूषण युक्त करके विष्णु और संस्कृत को मुख्य दिखाया ॥ ४० ॥

छितितल[1] वसंततिलका सु छंद, अज्जहु[2] बढात भक्तन अनंद ॥
सु[3]रबानि१जवनबानि२रु दुहुँ[4]सीर३, बरनैं[5] बहु इति१सुख जिहिं प्रवीर ४१
इक कहिय अरि१न अपकार२अप्पि[6], थिर मित्रजन१न उपकार२थप्पि
बंधु१न सतकार३हि तिम बनाइ, प्रख्यात[7] होत अधिकार पाइ ।४२।
इहिं[8] बिहसि कहिय तजि फल उमंग, सोहत उपकारहि सबन संग ॥
ऐसो नवाब यह बुध बजीर, वहरामतनय हत अनय[9] वीर ॥ ४३ ॥
सुनि वंदि[10] गंगकृत काव्यसीस, त्रि३००००० रहित दिय रुप्पय ल-
क्खतीस २७००००० ॥
प्रभु जैसो अकबर३७।१पातसाह१, तैसोहि सचिव२किय दैव ताह ४४
इक सेख जवननत निपुन आस, जग अबुलफजल३फुट नाम जास
अकबर३७।१सौं तीजो३रत्न एह, कूर्म[11] सर्व सोलाविन मति अछेह ४५
आईनअकबरी१ग्रंथ आदि, तिहिं रचिय जवनबानीं[12] बिनादि[13] ॥
पुनि अज्जर्न[14]के दफतर२प्रबंध३, बहु किय जवनीनि[15] लख बंध ।४६।

प्रबंध १ खबंध २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अरु टोडरमल्ल४हु पट्टु अलभ्य, सु बनिक हुव चौथो४रत्न सभ्य[16] ४७
जासहि सहाय तिहिं सेख३जात, बिरची निजलिपि[17]मय आर्ज्ज वात ॥
कूर्म[18] कान्यकुब्ज बंच फुरन क्षिप्र[19], बीरबल५रत्न पंचम५सु विप्र ॥४८॥
इम रत्न अपूरब गानथैनं[20], सलुझहु नृप छट्टो६ तानसेन६ ॥

---

१ भूतल पर उस खानखाना का बनाया हुआ वसंततिलका छंद २ आज भी ३ संस्कृत ४ दोनों मिलीहुई भाषा ५ इत्यादि ॥ ४१ ॥ किसी एक ने कहा कि शत्रुओं को अपकार ६ देकर मित्रों का उपकार करना चाहिए ७ विख्यात ॥ ४२ ॥ ८ इस नवाब ने हँसकर कहा कि पीछा फल लेने की आशा छोडकर सब के साथ उपकार ही करना चाहिये ९ अनीति को मिटानेवाला ॥ ४३ ॥ १० भाट ॥ ४४ ॥ ११ समर्थ कुंनबा के समान ॥ ४५ ॥ १२ फार्सी भाषामें १३ विशेष कथन करनेवाला होकर; अथवा वाद रहित १४ आर्यों के दफ्तर ग्रंथ १५ फारसी में लख बंध किये ॥ ४६ ॥ १६ सभासद ॥ ४७ ॥ जिस टोडरमल्ल की सहायता से उस अबुलफजल ने अपनी १७ भाषा में आर्यों की वार्त्ता (कृषि वाणिज्य आदि का ग्रंथ) रची १८ समर्थ १९ वचन की शीघ्र स्फुरणा में ॥ ४८ ॥ २० गान के स्थान में

इतै[1] साह१सचिव खट६रत्न अत्थ, ए तिहिँ अनेह सुनियत समत्थ ४९
रत्न नव९ कहत कति नृपति[2]राम २०३१४, न बिदित तहँ तीन३न खि[3]ल्लन नाम ॥
इह चोथो४टोडरमल्ल४आहि, जन कति कायस्थहु कहत जाहि ।५०।
तिम साह पुब्ब[4] बितये छतीस३६, अकबर३७१२ सम तिनबिच न हुव ईस ॥
अरु श्रुति[5] १ कुरान २ मत जुग२ हि एह, सिरधरहिँ तदपि इतै[6] १ अति सनेह ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

बहुत न्याय इतरन बिसम, सुमति निबेरे साह१ ॥
उदधि खानखानाँ१ हु इम, थाहे[7] दुगम[8] अथाह ॥ ५२ ॥
मुलक किते जित्तन१ मथन२, मन्न्यों[9] समुचित मान ॥
जिहिँ काबल१ आसाम२ जिम, थिर दब्बे बहु थान ॥ ५३ ॥
अज्जन[10] बिच कूरम यहहि, गिन्यों भरोसा गैल[11] ॥
हुरम[12] अनुजके बिदित हुव, फोजनवारे फैल ॥ ५४ ॥
भगिनी कति भगवंतकी, नृपति मानकी नाँहिँ ॥
ब्याह्यो अकबर३७१२ जो बदत[13], मति तहँ द्वाँपर[14]माँहिँ ॥ ५५ ॥
वत्त रहहु तिम जिम बनी, आग्रह[15] हमहिँ न अत्थ ॥
बिमूल[16]हि जन जो बदत, सो न लिखहिँ हठ सत्थ ॥ ५६ ॥
अकबर ३७१२ सो दिल्ली अयन[17], न इक १ भयो जवनेस ॥
साहित समर्थन प्रभु सुनहु, अग्ग किरन[18] बिच ऐस ॥ ५७ ॥

---

१ उस अकबर के समय में ॥ ४९ ॥ २ हे राजा रामसिंह ३ बाकी के तीन रत्नों के नाम प्रसिद्ध नहीं हैं ॥ ५० ॥ ४ अकबर से पहिले छत्तीस बादशाह बीत गये ५ वेद ६ वेद में अधिक स्नेह था ॥ ५१ ॥ ७ उलटे ८ दुर्गम ॥ ५२ ॥ ९ राजा मानसिंह को उचित माना ॥ ५३ ॥ १० आर्यों में. भरोसा के ११ साथ १२ छुरम का छोटा भाई ॥ ५४ ॥ १३ कहते हैं. ग्रंथकर्ता कहते हैं कि हमारी मति में यहां १४ सन्देह है ॥ ५५ ॥ १५ हमको हठ नहीं है १६ निर्मूल कहानी को नहीं लिखते हैं ॥ ५६ ॥ दिल्ली के १७ घर में १८ अगले मयूख में उस का समर्थन करते हैं सो सुनो

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोजचरित्रे भोजमऊप्रान्तप्राप्तिहेतुमऊविजयोत्तरदिल्लीगमन ५, यवनेन्द्राकबरसचिवखानखानागुणवर्णनेन सहाकबरपरिषत्षड्रत्नगणन२, अकबरगुणवर्णनेन सह गुणसमर्थनप्रतिज्ञाकरणं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितोऽष्टनवत्युत्तरशततमः १९८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पातसाह अकबर ३७।१ प्रतिम, न भयो दिल्लियनेर ॥
कितहु राम२०।३।४ प्रभु स्वीय कवि, बंधैं प्रीति१ न बैर२ ।१।
तथ्य३ न व्है कथितव्य तो, अप्पहिं ध्रुव४ अवनीस ॥
कबहु सुकवि अनृत५ न कहत, सहत जदपि दुख सीस॥ २ ॥
यह प्रभुसंगतिको असर, पायो निज रहि पास ॥
तथ्य१हि प्रिय लग्गत तिनहिं, अनृत२कारि न आसु६ आस ॥३॥
बैठे रजियाँ५।१हेम३८।२बिनु, तखतहु साह छतीस३६ ॥
लखहु हुमायौं३६।१अवधिलग, अकबर३७।१सम को ईस ॥४॥

॥ पद्धतिका ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में भोज के चरित्र में भोज को मऊ का प्रान्त मिलने के कारण मऊ विजय करके भोज का दिल्ली जाना १ बादशाह अकबर के सचिव खानखाना के गुण वर्णन के साथ अकबर के सभासदों में छः रत्नों की गणना करना २ अकबर के गुण कथन के साथ गुणों के समर्थन की प्रतिज्ञा का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ अठानवे १९८ मयूख हुए ॥

१ सदृश २ हे राजा रामसिंह आपका कवि (सूर्यमल्ल) किसीके साथ प्रीति और वैर नहीं रखता किंतु जो इतिहास सत्य होवे वही लिखता है ॥ १ ॥ कहने की वार्ता ३ सत्य नहीं होवे तो हे राजा रामसिंह ४ निश्चय ही आपका कवि ५ झूठ नहीं कहता ॥२॥ झूठ बोलकर ६ प्राण की आशा करना भी अच्छा नहीं लगता ॥३॥ ७रजिया बेगम और हेमू बनिया इन दोनों के विना ॥४॥

सप्तम७कह्यो जु महमूद७साह, तेवीसम२३सयपद खिजर२३ताह।
बिरलें हुव इतिसुखं नय निगाहि, सुख दिय प्रजाहिं जिन धर्म साहि।
इक्कदसम११अलाउद्दीन११आदि, अधिगय कति निर्दय जुलम बादि।
निर्लज्ज१प्रमत्त२हु कछु सलाम, रैमनी१मदिरा१रत सुनहु राम
२०३।४ ॥ ६ ॥

हुव चोथो४रुक्नुद्दीन४।१हाइ, लज्जा तजि तिय१मधुरहिय लगाइ।
अंतहपुर रहि जड जाम अट्ठ, रंचहुँ न सम्हारे रज्ज१रट्ठ२ ॥७॥
रजिया५।१तस भगिनी तब रिसाइ, इहिं कीलिं रु बैठी तखत आइ ॥
सब निज मिलाइ लहि साह सब्द, इहि भोगी दिल्लिप च्यारि अब्द।८।
यह जानि पठंताको अधीस, सजिकैं दल आयो तास सीस ॥
अभिधानजास अलतूनिया१सु, मन इत वढाइ पहुँच्यो मियाँसु ॥९॥

॥ नियाँसु१मियाँसु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

रजिया५।१हु समुह जुरि रचिय रारि, गहिलिय तिय तँहँ तिंहिंवल
बिगारि ॥
तबही वनि प्रत्युत नारि तास, आई इत पतिजुत पट्टआस ।१०।
ताको द्वितीय१बहराम५।२भ्रात, भगिनीसैं जवन हनि खिल अगात ॥
डरघर रजिया१कहँ कैद डारि, साह सु हुव पंचम५।२सब सम्हारि ११।
तस अग्रज रुक्नुद्दीन४।१तत्थ, कारा हि मर्यो कामुक बिकत्थ।
बलि इमहि नवम९सठ कैकुबाद९।१, पायो सुराप१कामुक२
प्रमाद ॥ १२ ॥
तिहिँ इम प्रजाहु लखि संक तोरि, बहु हुव प्रमत्त घर मद्य बोरि ।

१ इत्यादि. धर्म को २ पकड़कर ॥ ५ ॥ ३ स्त्री ॥ ६ ॥ ४ मद्य ५ जनाने में। आठों प्रहर ७ कुछ भी ८ राज्य के सात अंग "स्वाम्यमात्यौ पुरंराष्ट्रं कोशदण्डौ सुहृत्तथा॥ सप्त प्रकृतयो ह्येताः सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते" इति वरदातन्त्रे॥ ९ राष्ट्र (देश) ॥ ७ ॥ १० कैद करके ॥ ८ ॥ ११ नाम ॥ ९ ॥ १२ उजाड़ी उसीकी स्त्री बनकर ॥१०॥ १३ बहिन के पति को ॥११॥ १४ कैद में ही १५ कामी १६ नहीं कहने योग्य १७ मद्य पीने से १८ भूल अथवा आलस्य अथवा चापलापन ॥१२॥

मस्जिदनमैंहु छकि मद अमान, हुव रत[1] प्रसक्त[2] करि लाज हान १३
को निज१पर२परतहि दृग कलत्र[3], मुख दिय लगाइ आसव[4] अमत्र[5] ।
तेरह्म१३मुबारिक१३।१तजि नरत्व१, बनितात्व[6] भीरु समझ्यो बरत्व[7]२ ॥ १४ ॥
बिरुझ्झि सु बनाइ पननारिबेस[9], सजिकैं पट१भूखन२अंतिम-असेस ॥
जुग बंधि अभीरन[10] गेहजाइ, बनि ठलि नाचि१गावैं२ह्या[11] बिहाइ १५
पंडत्व[12] हाव१भाव२न प्रसारि, सुरतैं[13] संगह लौं राहमारि ॥
अरु बैठैं नग्गहिँ खास१आम२, नासौं१सह रक्खैं नपट२नाम ।१६।
पट्टप सु अलाउद्दीन११पुत्त, अैसो हुव कुल गल जस अछुत्त ॥
पंद्रह१५मसुहम्मद१५।१पातसाह, रच्यो[15] एनि तुगलक३जुलम-राह ॥ १७ ॥
बीरत्व१संजम[16]२रु भक्ति३बास, पहदानी४पंडित५तदपि आस[17] ॥
खल जिमहि तपियइहिं आलिफखान१५।२, किन्नो यह अनुचित धरहु कान ॥ १८ ॥
सूबा गत जित्तन स्वापतेय[18], लग्यो सु प्रजासिर डारि लेय ॥
अवनिपर[19] बढायो कर इतोक, जो देसके न कर्षुक[20] जितोक १९
जन तबहि गेह१खल जान२जारि, सब भजनलगे जिय धन सम्हारि ॥
अप्पहि तब ह्वै द्रुत अस्ववार[21], सहँसन जन मारे रमि सिकार ।२०।

१ मैथुन में २ आसक्त ॥ १३ ॥ ३ स्त्री दृष्टि में आते ही ४ मद्य का ५ पात्र (प्याला) ६ स्त्रीपन को ७ श्रेष्ठ समझा ॥१४॥ ८ उस नकटे (नासिका विहीन) ने ९ गणिका का वेष १० अहीरों (गवालों) के घर जाकर ११ लज्जा छोड़कर ॥ १५ ॥ १२ नपुंसकपन के १३ बादशाहों के मार्ग को मिटाकर १४ काष्ठ के खम्भे के समान होकर; अथवा नासिका सहित होकर भी नाम मात्र को वस्त्र पास नहीं रखता अर्थात् नकटा मनुष्य तो लज्जा छोड़कर नग्न होजाता है परन्तु यह नासिका सहित होकर भी नग्न रहता था ॥ १६ ॥ जुलम के मार्ग में १५ रचा (रक्खा) ॥ १७ ॥ वीरपन और १६ इन्द्रियों का रोकना १७ हुआ ॥१८॥ १८ धन १९ पृथ्वी पर हासिल इतना बढाया २० करसे (खेती करनेवाले) ॥१९॥ शीघ्र २१ घोड़े पर बैठकर ॥ २० ॥

तिन्ह भजत गरीबन सीस तोरि, प्रति कपिसिर[1] बंधे पोरिपोरि।
ऐसैं हि हुमायों३१।२१काम अंध, विरच्यो इकतीसम३१पहु प्रबंध ३१
वर१जो नवं[2] निकस्यो मग हु व्याहि, तो भोगि प्रथम दिय बरनि[3]
२ताहि ॥

करुनाको जम जिम लावनं[4] लाइ, चूसो प्रजाहु कर अति चढाइ २२
समुझायो सो जड संग्लाई३.२, इकस्यो तव दुक्खहु बस्तुवाह।
इम पहिले साहन अति अधर्म, किय तिनहि सुनहु इतरहु[5]
कुकर्म ॥ २३ ॥

पहिलैं अज्जन सुरगृहं[6]१पराइ, लगवाये मस्जिद२प्रसभं[7] लाइ१ ॥
किय द्विज[8]१हु जवन२मुख थूकिथूकि२, कति जन बचेहु परि
पयन कूकि३ ॥ २४ ॥

जिंजिया[9]१दि दंड तिनपर जुराइ, महसूल लये बहु४नयं[10] मुराइ।
दधि१दुग्ध२दारु[11]३तृन४आदि दम्म, कटकन[12] दये न कहुँ अटनं[13]
कम्म५ ॥ २५ ॥

खिन रन केते संपन्न[14] खेत, कटवाइदये किल[15] हयनहेत६ ॥
सुंदरपन ह्वेबो तियनसंग, तव हुव कलंक७राहि धर्म तंग ॥ २६ ॥
लग्गे जे दुहिता[16] नृपन लेन, इतरन किम टारे गिनहु ऐनं[17]८ ॥
जिन कियहु रोध[18] दुहिता१दि जान, तोप१नजुत लिय तिन्ह स-
वन प्रान९ ॥ २७ ॥

---

१ कोट के कांगरे कांगरे पर ॥ २१ ॥ २ नवीन वर जो कोई विवाह करके मार्ग में निकला ३ दुलहन ४ लेशमात्र ॥ २२ ॥ ५ अन्य भी ॥ २३ ॥ ६ आर्यों के देव मन्दिर गिरवाकर ७ हठ करके ८ ब्राह्मणों के मुख में थूक थूककर ।२४॥ ९ आर्यों के तीर्थों पर एक प्रकार की लागत १० नीति मिटाकर ११ काष्ट१२ काटनेवाले को १३ फिरने नहीं दिये ॥ २५ ॥ १४ युद्ध के समय में तो खेती से भरे हुए खेत १५ निश्चय ही घोड़ों के लिये कटवादिये ॥ २६ ॥ १६ जो राजाओं से पुत्रियें लेने लगे वे अन्य के १७ घरों को कैसे छोड़ें १८ पुत्री देने को रोका ॥ २७ ॥

भनजहु भय दैदै बिष्टि[1] माँहिं, निखिलन गहि पेरे[2] नाँहिं नाँहिं।
थाँती[3] मित जेलै सिपह थट्ट, बिनु भय चलै न कहुँ पथिक[4] बट्ट ॥ २८ ॥

तोहू तिन धाँटिन पटकि त्रास, बहु खिन लागि छुट्टे[5] हानि बिसास
लानत[6] कबांक तिनके हु लग्ग, अकबर[7] के तुल्य न कोहु अग्ग ॥ २९ ॥

प्रभु एह सबन अपजस पखारि, जन सुखित करतहुव दुखहिं जारि ॥
सुनिये जिहिं बिहरन कग्ग सम्भ[8], भक्क मीर लखे जन बिंहि कम्म[9] ३०
बिरचत कुंकुम[10] पथ तिन्ह बिसासि, मानिक बसु करिदिय भासि[11] भासि ॥
पै जे लखे न आजू प्रसंक[13], वे अवस रहे व्है दुख बंक ॥ ३१ ॥

जिहिं नीति रीति राजहिं जमाइ[1], लिय प्रीतिरीति सब हृदय लाइ[2]।
हुव द्विजन कल्पतरु बुधै[4] चहैहि, कबिलोक अबहु तस जस कहैहि ॥ ३२ ॥

लखिये सु संजमीपनहु[6] लेन[5], बलि रबिपूजन रतइसवल देन[7]।
आदित्यवार दिन सीस अंत, हिंसा न होनदिय जिहिं[8] महंत ॥ ३३ ॥

---

१ बेगार (बिना तनखा दिये बलात्कार कार्य कराने) में २ बड़ों नाहीं की भी नाहीं रही अर्थात् बेगार कराने का नाम भी न रहा ३ धरोहर (अमानत अर्थात् सौंपा हुआ धन) ४ मार्ग चलनेवाले ॥ २८ ॥ ५ भाला डालनेवालों ने ६ यह यवन भाषा का धिक्कार वाची शब्द है ॥२९॥ अकबर के उपवन को ७ बोकर. गमन करने के ८ समय में ९ बेगार के काके से भीरों ने भी भग था अर्थात् कोई बेगार नहीं करा सकता था ॥ ३० ॥ केदार के १० स्वस्तिक रचनेवाले अर्थात् केसर का तिलक करनेवाले (पुजारियों) को विश्वास देकर उनके माणिक्यों का धन कर लिया "सब रत्नों में माणिक्य बहुमूल्य है इसको [illegible] के [illegible] होना लिखा है" ११ प्रकाशमान १२ माणिक्य (लाल) [illegible] १३ [illegible] और [illegible] अर्थात् बादशाह के [illegible] १४ [illegible] ॥ ३२ ॥ १५ पवित्रता ॥ ३३ ॥ १६ [illegible] में [illegible] का [illegible] ॥३३॥

प्रतिअब्द[1] जन्मदिन स्मृतिप्रधान[2], देतो स्वतुल्य भर[3] कनकदान९
इक१बेर असन२हिंसा बिहेय११, धरतो सु जवन इक नामधेय।३४।
चहती प्रजाहु जिहिं इक स्वचेत, हुव बहु तस छात्रहि१२समुज्झहेत
जिहिं राज्य कबहु कछु दुक्खजोग, जान्यौं न जनन१३भरि
भौंन भोग ॥ ३५ ॥
सुमन१न बिक्रय वासष्ठि६२सेर१४, जव२सेर नवति चउ जुत९४
न जेर१५ ॥
इहिं राज्यकरत इम न कछु ईति[9], प्रकृतिन कहुँ जानी आनि
प्रीति ॥ ३६ ॥
सीमा निज किय यह नियम साह, बिनु तरुन ठैन सिसु मि-
थुन[11]२०व्याह१६ ॥
सूबा१७सरकार१८महाल१९सुद्ध, पटवारी२०कानूगो२१प्रबुद्ध[12] ३७
आईन[13] थप्पि ऐसे अनेक, इहिं रक्खे सब कुलधर्म एक१ ॥
प्रस्थान जास इसतबल[14] पास, इभ[15]१पंचसहँस५०००हय२अयु-
त१००००आस ॥ ३८ ॥
किमखाब[16] फरस१प्रसरात कंति[17], परदे मखमलमय मुत्ति२पंति३
पारि कोसनलग डेरन प्रसार[19], हुव मध्य सिबिर इम निज बिहार ३९।
जिजिया१दि जानि कर सबन सीस, पहिले प्रवृत[20] अटके इकीस२१ ॥

१ हरसाल २ आर्यों के धर्मशास्त्र को मुख्य मानकर अपने शरीर के ३ भार के बराबर स्वर्ण देता था, एक समय भोजन करता और हिंसा बहुत ४ त्याज्य थी. मुसलमानी एक ५ नाम ही धरता था ॥ ३४ ॥ ६ शिष्य ॥ ३५ ॥ ७ गेहूं इससे ८ कम नहीं थे ९ कभी ईति (अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः। स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः) का भय नहीं हुआ १० राज्य के अङ्गों ने ॥ ३६ ॥ बालकों के ११ जोड़े का विवाह नहीं होवे १२ बहुत चतुर ॥ ३७ ॥ १३ कानून १४ जिसकी हय शाला के पास पांच हजार १५ हाथी और दस हजार घोड़ों का गमन होता था ॥ ३८ ॥ १६ जरी की बिछायत १७ क्रान्ति फैलाती थी १८ मोतियों की पङ्क्तिवाले १९ फैलाव ॥ ३९ ॥ पहिले २० जारी हुए जिजिया आदि कर रोके.

*महमूद इते२१ अज्ज१हि स्वमत्थ, सहते सब हिंदू२२रहन सत्थ ४०
मन †सदय तिन्हैं अक्कबर३७१मिटाइ, बिस्वस्त करे सब भद्र भाइ।
ऐसे उदंत समुचित अनेक, अक्कबर३७१हि करे प्रभु राम २०३।४एक ॥ ४१ ॥
पै अब बुरे हु जे किय प्रगल्भ, बिख्यात असह बिस्वास बल्भ।
तिन्ह देहु श्रवन जँहँ गुन१इतेक, तउ दबि बढत अवगुन२कितेक ॥ ४२ ॥
कूरमनृप कन्या पुब्ब[5] काल, ब्याह्यो जु तात[6] तब हो सु बाल।
पै अबहु ताहि न बुरी प्रमानि, तिम चाहिय प्रत्युत[7] प्रसभ तानि ४३
जोधपुर सूर[8] भूपति जनी[9] सु, कुल रट्ठोरन तारक कनी सु ॥
सुत निज सलेम३८१के अर्थ साह, ब्याही१करि अज्जन[10]बिधि बिबाह ॥ ४४ ॥
सूरहु तस डोला आनि संग, मुगलेससुतहिँ दिय छिति उमंग।
इतरहु बहुकुलजा सहठ आक्खि, रानी१न होनादिय हुरम२रक्खि ।४५।
भट्टी१सोढा२दिक बहु भुवाल[12], सद्धतह्वन हुकम सु जदपि साल ॥
जिहिँ करि प्रवृत्त मीनाबजार, देखी नोरोजहु सबन दार[13] ॥ ४६ ॥
निजदारन बनिठनि निक्कसि नारि, सब जे रहि ठड्ढे[14] कुल बिसारि ॥
[15]उमरा१गरीब२सबकीहि आइ, देती तिहिँ उपदा[16] नति दिखाइ ॥४७॥
अतिरूप जु होती ताहि अप्प[17], बसु[18] दै रु बुलातो४ जिम स्व बप्प[19] ॥

* महमूद के मत की इक्कीस लागतें † आर्य्य लोक अपने मस्तक पर सहते थे ॥ ४० ॥ ‡ अकबर ने दया सहित उन लागतों को मिटा दी. कल्याण करने की रीति से सब को १ विश्वास युक्त किये २ वृत्तान्त ॥ ४१ ॥ ३ उस बुद्धिमान् ने नहीं सहने योग्य बुरे कार्य किये वे विश्वास के ४वल्लभ अर्थात् मानने योग्य सुनो ॥ ४२ ॥ ५ पहिले समय में ६ पिता ने ७ उलटा हठ फैलाकर ॥४३॥ ८ सूरसिंह की पुत्री ९ कन्या १० आर्य्यों की रीति से ॥ ४४ ॥ ११ राजाओं को नहीं विवाहने दी ॥ ४५ ॥ १२ राजा १३ सबकी स्त्रियों को देखी ॥ ४६ ॥ १४ खड़े रहे १५ उमराव १६ नजर ॥ ४७॥ १७ आप १८ धन देकर १९ जिसप्रकार इसका पिता हुमायाँ बुलाता था तिस प्रकार

करतो परंतु पह *पिहितकर्म, †किति कहत धरयो नन जारधर्म ।४८
सोनाँबाजारहि इक्क मंडि, छबि लखि खुस होतो कुमग छंडि ॥
सो पुनि निज ‡गुरुजन मृति समीप, मुंडित करवातो सब महीप ।४९
§इतिमुख्य ब्रुरेहु कछुकछु उदंत, सुनिये प्रभु तासहु बदत संत ॥
नोरोज१रु होला२है२अनीति, राजनलग पेरी असह रीति ॥ ५० ॥
पै करि प्रजाहिँ बहुविधि प्रसन्न, नसलग चही न दारिद ¶ बिपन्न।
जो राज्य इक्क१सासन जमाइ, प्रतप्यो समस्तासिर वाह पाइ ॥५१॥
सिर[१]कसहु सुन्यौं जिततित जुसाह, सुहि कियउ नम्रसुभट१रु सिपाह
इहिसमय सिरोहीवत्त एह, ससुझहु हुव अनुचित हेत[२] सनेह ॥ ५२ ॥
सुरतान करत जहँ राज्य सूर, पै वय किसोर[३] सारल्य[४]पूर ॥
चहुवान देवरा९धर्मचार, रक्खैं रन१वितरन[५]२नहिँ नकार ॥ ५३ ॥
तासहि सगोत्र भट बिजय तत्थ, सचिव सु हुव धन१वय२मद समत्थ॥
सब प्रकृति[६] गंजिभोगत असंक, आनँन स्वामि भय मत्तअंक[७] ।५४।
कालिंदीनामक द्रंगकेर, स्वामी सु बिजय हुव सबन सेर ॥
मुखपर न केस तउ बल महान, मन्नौं[८] खिल सुभटन मसकमान ५५
संबंध स्वामि१को निजसमेत, कहुँ भिन्नगोत्र बाहुज[९]२निकेत[१०] ॥
जिहिँ किय बहिनीजुग२सुनि सुरूप, भल व्याहन अप्प१रु अप्प भूप२
वलि लग्न गये परिनैय[११] बिचारि, परिसर[१२] मिलान दिय समय पारि
अनुजा[१३]१सन प्रभु२संबंध आनि, जेठी१सन निज किय बिजय[१४]२जानि

---

*छाने †कितने ही कहते हैं कि इसने व्यभिचार नहीं किया ॥४८॥ ‡ अपने बडे लोकों के मरने पर सब राजा लोकों को मुंडन कराता था ॥४९॥ § इत्यादि ॥५०॥ ¶ आपदा (कष्ट) ॥ ५१ ॥ १ अनञ्ज २ स्नेह का नाश करनेवाली ॥ ५२ ॥ ३ बालक ४ सीधा ५ दान से ॥ ५३ ॥ ६ राज्य के सब अङ्गों को दबाकर ७ मस्तपन के चिन्ह से ॥ ५४ ॥ उसके मुख पर बाल नहीं था तो भी बडे बल से ८ मल्लर के समान ॥ ५५ ॥ ९ क्षत्रिय के १० घर में किया ॥ ५६ ॥ ११ विवाह के विचार से १२ ग्राम के समीप की भूमि में मुकाम किया १३ छोटी बहिन से राजा का और बडी से १४ विजयसिंह ने जानकर अपना सम्बन्ध किया था ॥ ५७ ॥

उततैं हुव सचिवहिं विदित उक्त, जेठी१कुरूप लघु२रूपजुक्त ॥
गहिपठई तव तिहिँ स्वसुरगेह, हमरो लघुबहिनी२सौं सनेह ।५८।
सुनि जान्यौं तिन एहहि समर्थ, अनुजा२तव ब्याही विजयअर्थ ॥
जेठी१सुरतानहिं सिचैय[3] जोरि, पहिलैं तिन ब्याहिय मुरैव्य[4] पोरि॥५९॥
दिन चोथे४मिलतहिं ऊँढ[5] दार, वरन्यौं पति नृपप्रति छल विथार॥
चैल[6] निज १ जुरयो प्रभु अप्प चेल २, मम भाग्य उदित सुभ कर्म मेल ॥ ६० ॥
पै प्रभु प्रधान कपटिन प्रधान[7], किय अति अधर्म सुहु धरहु कान
जेठी १ मैं भगिनी बिजय जंत्थ, अनुजा २ मम ही प्रभु अप्प अँत्थ[9] ॥ ६१ ॥
पै सुनि सुरूप अनुजा प्रधान, इम सोहि बरी सठ दर्पवान ॥
मैं[10] अति प्रसन्न हुव इम अहीप, पति पैंत्त[10] देवर९न बंस दीप ।६२।
पै निज प्रमत्तपन[11] असह पिक्खि, समुझहु नरेस नय अंबहु सिक्खि
अप्पहिं किसोरवय जानि एह, सनुझयोमैं प्रभुजिम प्रभु सनेह ।६३।
यातैं तिहिँ संगी जैं १ सु अप्प, दे तुमहिँ बरी अनुजा२सदर्प[12] ॥
अक्खहु अधीस १ को को अधीन२, लखि नय न होहु आलस्यलीन ॥ ६४ ॥
नृपतिन प्रभुताबिनु है न नाम, अटकी सुहि अप्पन बिजय बाम[13]
कुल जदपि बाहुज[14]१न व्है २ किसोर, तोहू नृप न तजत नृपन तोर[15] ॥ ६५ ॥

सचिव को १ मालूम हुआ कि २ कहला भेजा ॥ ५८ ॥ ३ वस्त्र जोड़ा अर्थात् गठ जोड़ा लगाकर ४ मुख्य द्वार पर ॥ ५९ ॥ ५ दुलहन ने ६ वस्त्र ॥ ६० ॥ ७ आपका प्रधान कपटियों में प्रधान (मुख्य) है. विजयसिंह है ८जहां अर्थात् मुझ बडी बहिन का सम्बन्ध विजयसिंह के साथ हुआ था. मेरी छोटी बहिन आपके ९लिये थी ॥ ६१ ॥ देवड़ा के पति के यहां १० पहुंची ॥६२॥ ११ अपने प्रमत्त पन से ॥६३॥ १२ घमण्ड सहित, हे स्वामि आपके अधीन कौन कौन है ॥६४॥ विजयसिंह ने १३विरुद्ध होकर १४ क्षत्रियों के कुल में १५प्रताप ॥ ६५ ॥

अक्खत[1] मैं यह्हु न अबहि अप्प, दलि याहि राज्य बिलसहु सदप्प ॥
पै अक्खत यह रहि सब प्रजाप[2], प्रभु सक्ति धरहु नन बजहु पाप ॥ ६६ ॥
सुनि यह गहि अमरख संभरीक[3], पिक्खे समर्थ तस प्रत्यनीक[4]
इक आनमाँहिं सुरतानईस, सो गिनतहुतो खिल्ल भार स्वसीस[5]॥६७॥
निज भटन कल्प[6] यह सुनि निहारि, इक[7] निम्मदेव बुल्ल्यो बिचारि ॥
याकै हे[8] विधिकारि कर अलंब, सो नर्म करतहो सचिव संब[9] ॥६८॥
अँचन असि परिहै कबहु कम्म, अँचहुगे कैसैं तव असम्म[10] ॥
नृप[11] बिजन बुल्लि वह निम्मदेव, अक्खिय प्रगल्भ[12] हुव बिजय एव ॥ ६९ ॥
मेरीहु कानि न करत प्रमान, मानत बली न कहु मोससान ॥
रक्खैं जु राज्यमुद्रा मदीय[13], तिहिं छिन्नि गंजि बल मद तदीय[14] ॥७०॥
कै दुष्ट हनहु[16] कै देहु कड्ढि, बैठारहु कारा[15] कैनै बड्ढि ॥
चेताइ स्वभट सब मोरि चेत, पठयो इम निम्म सु बलउपेत[17] ॥७१॥
गरदाई[18] बिजय तिहिं तबहि गेल, डारयो डर चटकनै[19] मनहु डैल[20]
जंपिय तू कहतो बिजय जत्थ, असि कैसैं गहिहै लरन अत्थ ॥७२॥
सुहि निम्म मैंहु लघुकर सलज्ज, असि अँचन[1]बाहन लखहु अज्ज

मेरा १कहना २ प्रजा के पति ॥ ६६ ॥ ३ चहुवाण ४ उसके शत्रुओं को आण के विना बाकी का ५ भार अपने मस्तक पर जानता था ॥६७॥ अपने उमरावों के ६समूह को ७नीमदेव के हाथ छोटे थे ८ हँसी किया करता था ९ वज्र के समान ॥ ६८ ॥ १० समानता रहित ११ राजा ने उस निम्मदेव को एकान्त में बुलाया १२ विजयसिंह धीठ होगया है ॥ ६९ ॥ राज्य की१३मेरी छाप १४ उसके मद को ॥ ७० ॥ १५ कैद में १६ मारने के लिये १७ सेना सहित ॥ ७१ ॥ १८घेरकर १९चिड़ियों मंसानों २० ढेला (ढकल) डाला ॥ ७२ ॥

सुरतानभूप भाखत सकोप, अब बचहु अप्पि मुद्रा[1]रु ओप[2] । ७३ ।
दब्ब्यो सु अचानक इम दिखाइ, जिम रन तदीय मद बिफल जाइ।
मुद्रा लहि तासन स्व बल मंडि, छर्म निम्म[1] अछम दिय बिज-
य[2]छंडि ॥ ७४ ॥

नृप देत गहन[1]मारन[2]निदेस, असु देत तदपि मैं निम्म एस ।
मुछहु उपकार न बचहु भज्जि, सीमा हु न पबिसहु बहुरि सज्जि ७५
लघु कर मम कहतो ते लखेहि, असु दै भजात अब तोहि एहि।
अरु कतिक रहे तब ढिग अजान, भट तेहु सुरहु इत भूपमान।७६।
बिजय[1]हिं भजाइ इम खिल्ल बिसासि, रहि निम्म[2]सचिव बी-
रत्व[8]रासि ॥
सुरतान[1]हुक्कम बहि सतत[9] सीस, आजन्म गिन्यौं निम्म[2]सु
अधीस ॥ ७७ ॥
पापी भजि तियजुत रानपास, बिजय सु हुव आश्रित लहि
बिसास ॥
तब हो प्रताप[1]वा अमर[2]तत्थं[10], सहि बिपिन[11]बास आपत्तिसत्थ।७८।
तिहिं रान अन्न बांटि[12] ढब्बि ताहि, स्व सरन गिनि रक्ख्यो प-
द समाहि[13] ॥
बहुबेर पिछि वह डमर[14]पात, अर्बुदभुव आयो मद अघात[15] ॥७९॥
तबतबहि निम्म भिरि मद उतारि, पठयो सु बिजय[1]श्रम मोघ[16] पारि।
पै डरत सिरोहीकी प्रजासु, आई ढिग पुनिपुनि क्राक्कि आसु[17]।८०।
सुरतान[1]विजय[2]लखिलखि समीप, मत दूर भजावन गिनि महीप॥

छाप और सचिव पन की यह १शोभा देकर बचो ॥७३॥ २उसका ३आप ४समर्थ निम्मदेव ने उस असमर्थ विजयसिंह को छोडदिया ॥७४॥ ५मैं तुम्हारा ५प्राण देता हूं।७५।६ मेरे छोटे हाथ कहता था सो देखो- येही हाथ तुझको ७प्राण देकर भगाते हैं ॥७६॥ ८वीरता का समूह ९निरन्तर ॥७७॥ १०जहां पर राणा प्रतापसिंह था अथवा अमरसिंह था ११वनवास॥७८॥ १२छहराकर १३अपने पद को ग्रहण करके अर्थात् शीपोदिया को चारणाई साधार कहते हैं इस पद को ग्रहण करके १४ धाड़े डालकर १५ पद से दूर ॥ ७९ ॥ १६ निरर्थक करके १७ शीघ्र ॥ ८० ॥

पिक्खी यह रानहु सहि बिपत्ति, प्रेरत इम बिजयहिँ जदपि पत्ति ॥ ८१ ॥

॥ बिपत्ति१पिपत्ति२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

प्रेरहिँ उपाय ऐसो प्रमानि, जिमैं रान बिडारहिँ अधमजानि ॥
इम मंडि उपह्वर मंत्रआप, पठयो इक चारन राहि अपाप ।८२।
कछु छल तिहिँ बिजय सु दिय कढाइ, पुनि पाइ इत१हु थतु उत२हु पाइ ॥
इत बिजय गिनी ए भूपअंज्ज, लखि माँहिँमाँहिँ सगपन सलज्ज। ८३।
सुरतान १ कानि तिम न मन संग, इम अखिल चहत कछु भय अभंग ॥
सबको गुरु पातैँ सेइ साह, पुनि ढुंढु२न दहों लहि बल सिपाह ॥ ८४ ॥
इम गिनि गो दिल्लिय बिजय एह, सबरीति कह्यो अक्कबर३गा१सनेह ॥
बुल्ल्यो कहि सीसोद१न बिराह, रठोर२ कुम्म ३ वलि पाहि राह ॥ ८५ ॥

बिराह १ हिराह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भिन्न कति१कतिक अप्पँहिँ भुलाइ, निज पन दिखात छलि रुव सिर नाइ२ ॥
पै आइ करत ठगमत पनाम, बिक्खहु तिनको मन कपट बाँम ॥ ८६ ॥
लघु राज्य सिरोही अल्प लाँह, सोहू न गिनत प्रभु तुमहिँ साह ॥
अब स्वामि मोहिँ भेजहु उदग्ग, मद मारि करों सुरतानमग्ग ।८७।

१पैदल ॥ ८१ ॥ २ जिसकारण से ३ निकाल देवें ४ एकान्त में ॥ ८२ ॥ ५ धन ६ आर्य्य राजा हैं ७ परस्पर ॥ ८३ ॥ राजा को जैसी सुरताण की ८ कानि है ऐसी मेरी नहीं है ॥ ८४ ॥ ९ डनार्ग ॥ ८५ ॥ १० आप को भुलाकर ११ देखो १२ विरुद्ध है ॥ ८६ ॥ १३ लाभ १४ उदग्र ॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

दै कछु बल साहहिं बिदित, भेजहु साह अभीत ॥
जो करि आऊँ बिजय जब, पिक्खहु बिजय प्रतीत ॥ ८८ ॥
बुल्लि मीरबखसी तबहि, सासन इम दिय साह ॥
कहत बिजय जिमतिम करहु, रोकत लघु नृप राह ॥ ८९ ॥
कछु दल इम इहिं अरज करि, दिय तस संग दुरूह ॥
गढ सिरोहि बिजय सु गयो, जित्तन प्रभु बल जूह ॥ ९० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशभोजचरित्रेऽकबरभूतपूर्वदिल्लीशषट्त्रिंशद्यवनेन्द्रदुर्गुणगणन १ अकबरगुणवर्णनानन्तरतद्दुर्गुणभणन २ सीरोहीपरावदेवड़ासुरताणस्वसचिवविजयसिंहानीतिनिमित्तातन्निष्कासनोत्तरनिम्मदेवप्रधानामात्यकरण ३ कियत्कालपर्यन्तलब्धोदयपुरमहाराणाश्रयदेवड़ाविजयसिंहयवनेन्द्राकबरान्तिकगमनयवनेन्द्रचमूसहितविजयसिंहसीरोहीविजयार्थयानवर्णनं षोडशो मयूखः ॥ १६ ॥ आदितो नवनवत्युत्तरशततमः ॥ १९९ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

---

१ सेना २ देखो विजयसिंह की प्रतीति ॥ ८८ ॥ ३ छोटे राजा भी मार्ग रोकते हैं ॥ ८९ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी. सेना के ५ समूह से ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में अकबर से पहिले हुए दिल्ली के छत्तीश बादशाहों के अवगुणों की गणना १ अकबर के गुण वर्णन करने के अनन्तर उसके कुछ अवगुणों का कथन २ सीरोही के राव देवड़ा सुरताण का अपने मन्त्री विजयसिंह की अनीति के कारण उसको निकालकर निम्मदेव को प्रधान करना ३ कुछ समय पर्यन्त उदयपुर के महाराणा से आश्रय पाए हुए देवड़ा विजय का बादशाह अकबर के समीप जाकर बादशाही सेना के साथ विजयसिंह का सीरोही विजय करने को जाने के वर्णन का सोलहवां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ निन्यानवे १९९ मयूख हुए ॥

बनि अकबर३७१बल कारि प्रबल, बिजय देवरा१बीर ॥
चल्यो सिरोही लैन चहि, गहि सुरतान गहीर२ ॥ १ ॥
तीजो३रान प्रतापतैं, जु हुव अनुज जगमाल३ ॥
हो अकबर३७१आश्रित बहहु, संग दिय सु रिपु साल ॥२॥
सगतासिंह१अग्रज उपम, रानहिं यहहु टराइ ॥
गढ सिरोहि जगमाल गो, ढिग दिय सिबिर ढराइ ॥ ३ ॥
महडू चारन नाम करि, जडै३१८ यह जगमाल२ ॥
रहत बाढ मैत्री रचे, चिरतैं इक४मन चाल ॥ ४ ॥
जगमाल१सु कवि जडु२जुत, बिजैय५बीर इम बीर ॥

१ विजयसिंह देवड़ा २ गम्भीर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ जाडा नामक ४ बहुत मित्रता करके ॥ ४ ॥ ५ ※ विजयसिंह की बड़ाग ॥ ५ ॥

※ यहां विजादेवड़ा के साथ जगमाल का जाना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि सिरोही के राव सुरताण और विजादेवड़ा मे परस्पर विरोध होने के कारण बीकानेर के राजा रायसिंह के द्वारा सिरोही का आधा राज्य बादशाह अकबर के खालसे में होगया था सो अकबर ने उदयपुर के महाराणा उदयसिंहके छोटे पुत्र जगमाल को देदिया था जिस पर अमल करने के लिये बादशाही सेना सहित जगमाल सिरोही गया जिसके साथ विजादेवड़ा भी था क्योंकि जगमाल ने विजा की बेटी से विवाह किया था, सम्वत १६४० के कार्तिक सुदी ११ के दिन महाराज जगमाल और चारण जाडा महडू आदि वीरता से मारेगये सो सिरोही के इतिहास मे विस्तार पूर्वक लिखा है और जगमाल का दिल्ली में अकबर के पास रहने का कारण यह था कि संवत १६२८ मे उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का गोगूंदा नामक नगर में देहांत हुआ तब पाटवी कुमर प्रतापसिंह तो महाराणा के दाग मे चलेगये और उदयसिंह का छोटा पुत्र जगमाल पीछे रहा. जगमाल की माता से महाराणा उदयसिंह अधिक प्रसन्न थे इसकारण अपनी माता की सहायता से जगमाल मेवाड़ की गद्दी पर बैठगया परंतु जब महाराणा का शरीर दग्ध करके युवराज प्रतापसिंह अपने उमरावों सहित पीछे गोगूंदा में आये उस समय मेवाड़ के उमरावों ने जगमाल को गद्दी से उतारकर महाराणा प्रतापसिंह को गद्दी बिठादिये इसकारण जगमाल वहां से आमेर के राजा मानसिंह के पास चलागया और जाडा नामक महडू को जीविका का उपाय करने को दिल्ली भेजा जिसने अपनी योग्यता और कविता के बल से अकबर के वजीर खानखाना अब्दुररहीम को प्रसन्न करके जगमाल के नाम मेवाड़ का परगना (जो जहाजपुर के नाम से प्रसिद्ध है)लिखवादिया सो जब जगमाल को सीरोही का आधा राज्य मिलगया तब जगमाल ने वह जहाजपुर का परगना चारण जाडा नामक महडू को देदिया परंतु जाडा ने जहाजपुर का परगना पीछा जगमाल को देकर उसमें से 'तरस्था' नामक एक ग्राम अपने अधिकार में रखलिया जो इस समय जाडा के वंशवालों के अधिकार में है ॥

सजिआयो सुरतानसिर, स्वामिधरम धरि सीर ॥ ५ ॥
इतरहु बहु गुरु१लघु२आधिप, आये संग अमाते ॥
ग्राम दतानी सीमगत, पटक्यो कटक प्रपाते ॥ ६ ॥
अह्रौ तिम दुरसा बहहु, पृतना संगहि पत्त ॥
गरदावन चहि प्रात गढ, रत्ति रहे अनुरत्त ॥ ७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुरतान देवरा९नृप सिरोहि, सन्नद्ध इतहु सुनि असह सोहि ॥
अव्बूपति आतहि दल अखर्व, सुमिरायो विजयहिं दुरित सर्व॥८॥
करि तैं सठ पहिलैं वह कुकर्म, अब कौन भुवहिं मंडिय अधर्म।
द्विप१जानि हमहिं सिंह२न दिखाइ, लायो सृगाल१०फल कौन लाइ।९।
ऐसे हि हैन सिंहहु अनेक, इतकेहु सहहु अब एक१एक१ ॥
विजयहु प्रतिउत्तर तजिविलास, पठयो इम नृप सुरतानपास।१०।
तुम उद्धत११ न गिनत साहजोर१२, जितजित सुन उज्जन विथरि जोर।
गिनते सदा जु साहन गनीम१४, सो रानभज्यो इत छोरि सीम ॥११॥
तुम दिय सहाय सब रीति ताहि, अक्कहु पख ताको उचितयाहि ॥
सुरतान सुपहु इम सुनि असंक, करि मान करन सगुन ससंक ।१२।
सुहि निम्म जु पिल्ल्यो विजयसीस, वहकरि समस्त निजबल अधीस ॥
छिति ग्राम दतानो कोप छाइ, पविपात१५ पर्यो इम रत्ति आइ॥१३॥
पैनैं अव्बूपति निज कृपान, दिल्ली दल मेरे जय निदान ॥
गज१वाजि२भटन३जितजित गिराइ, परदल फिराइ दिय द्विय पिराइ

१बहुत२पड़ाव।३।३जो आढवा के घेरे में घायल होकर बचा था और जिसने पादशाह अकबर के मुख से जोधपुर के राजा उदयसिंह की निंदा करवाई थी वह आढा शाखा का चारण दुरसा ४सेना के साथ ही पहुंचा ५अनुरक्त ॥७॥ ६सज्जित हुआ ७ बड़ा. विजयसिंह को ८पाप स्मरण कराया ॥ ८ ॥ ९. हाथी १० गीदड़ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११अकड़ १२ प्रताप १३ फैलाकर १४ शत्रु ॥११॥१२॥ १५ वज्रपात के समान ॥ १३ ॥ जय के १६ कारण १७ पीड़ित करके ॥ १४ ॥

बल भजत साहको भय प्रबादि, अठ८नृप परे जगमाल१आदि।
बहु पारि सिरोहीके प्रबीर, धारन चढ्यो सु सीसोद धीर ॥१५॥
इकओर परयो कवि जड्ड२१एह, दुरसा२हु परयो कहु विकलदेहु।
इकओर परयो बिजय३सु अधर्म, कति कहत भज्यो फलि पु-
ब्बकर्म ॥ १६ ॥
इम जत्रकुत्र करि परअनीक, सुरतान नृप सु जित्त्यो समीक॥
खोजन पुनि निज४पर५सून्य खेत, अब्बूपति प्रबिस्यो हित
उपेत ॥ १७ ॥
पहिलैं छँत विकल सु सुद्धि पाइ, अह्वा कवि दुरसा लिय उठाइ।
अहिफेन पाइ तिहिं हितउपेत, नृप धरि नृजा६न पठयो निकेत।१८।
निज१पर२कितेक जीवत निहारि, सब लिय उठाइ बैरहु बिसारि॥
सो जड्ड१कविहु कछु आयुसेस, निरखत बिसासि ढिग गो
नरेस ॥ १९ ॥
अहिफेन दैनलग्गो उठाइ, सो जड्ड१नख्यो यह नय सुनाइ ॥
जगमाल२सुहद मम आहि जत्थ, तह लैंन उचित लैचलहु
तत्थ ॥ २० ॥
इहिं छलि नृजान धरि भेजि औन, सीसोद२लख्यो व्यसु म-
ध्य सैन ॥
बिनुस्वास मुच्छ भौंहन फबाइ, बलि कोहु देवरा९तर दवाइ २१
सुत्तो तस उरपरै कर कटार, पायो मृत सुहु करि सत्रु पार ॥
सुरतान राजकुल अति सराहि, तब किय विधि समुचित द-
हन ताहि ॥ २२ ॥

१ललकार (मारमार) का भयंकर शब्द करके; अथवा भयंकर कोलाहल करके ॥ १५ ॥ २ जाड़ा नामक महडू शाखा का चारण ॥१६॥ ३ युद्ध ॥१७॥ ४घावों से ५ अमल ६ पालखी में ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेरा ७ मित्र जगमाल है तहां ॥ २० ॥ ८ वर ९ मराहुआ. किसी देवड़ा को १० नीचे दबाकर ॥२१॥ ११ छाती पर ॥ २२ ॥

जह१हु जगमालहिँ अनसु जानि, गल छेदि मर्यो पुनि असह ग्लानि ॥
जगमाल१आदि तिहिँघोर२जुद्ध, पहु अठ८परे इत१के प्रबुद्ध३ ।२३।
सुरतान पितृव्यक समरसीह१, इत्यादि मरे उत२के अबीह ॥
जगमाल१विजय२समरा३दि जारि१, सन्नुहु सब घायल इम सम्हारि२ ॥ २४ ॥
दुरसा१इक१रक्खिय स्वीयसंग, पठ्ये खिल करि पटु साहसंग।
अर्द्धा हु रह्यो तब गिनि सुचैन, लखि उचित देवर९न अन्न लेन २५
अब्बूपति तब तिहिँ वास अप्पि, थानक निज रक्खिय स्वीय थप्पि ॥
तबतैँहि देवर८न वृत्ति तास, कुल धरत राम२०३।४प्रभु जस प्रकास ॥ २६ ॥
कति कहत हारि यह सुनत क्रुद्ध, पठ्यो दल अकबर३७।१पुनि प्रबुद्ध ॥
रानाँजिम कुल मग हठ रहंत, कढिगो सुरतानहु कति कहंत ।२७।
इत जो बुंदीपति भोज१९१।२एह, गो सक्न सासन साह गेह।
पै वत्त कतिकै अनुचित प्रमानि, जिहिँ नृप करी न कुल हेय जानि ॥ २८ ॥
जान्यों सुर्जन१९०।१छत्र१प्रनति जोरि, कूरमँ कनीसु व्याहत२ वहोरि ॥
पै हुव सछत्र११ जबतैँ नृपाल, हम मानत तबतैँ इतर हाल ।२९।
दिल्लीविच वहुरि हु थान देत, न लयो१जु पुव्व सुहि गिनि निकेत ॥

१ मराहुआ जानकर २ राजा ३ बहुत चतुर ॥२३॥ ४ निर्भय ॥ २४ ॥ ५ अपने नगर में ६ आढा शाखा का चारण दुरसा ७ देवड़ा का ॥ २५ ॥ २६ ॥२७॥ ८ त्याज्य ॥ २८ ॥ ९ नम्रता १० कछवाहे की कन्या ११ छत्र सहित (राजा) हुए पीछे ॥ २९ ॥

इक खिन गोमारेंन गहत ऐन, निरखे नृप मारके अप्प नैन ।३०।
वरजे न रुके जे कछु विसास, ताडित तब तिन्ह करि असह त्रास॥
पुनि छोरे तिनहु न किय पुकार, अकबर ३७।१ गिनि अर्ज्जन हित उदार ॥ ३१ ॥

हो कुम्भ सुताको स्वसुर हाइ, इतको सब जानतहो अथाइ ॥
कौमि ढिग जिहिं मान सु साह कान, दिय डारि वज्रआगम निदान ॥ ३२ ॥

सुनि वहुत काल पुव्वहि सु साह, गंभीर सिंधु मन किन्न ग्राह ॥
सुर्जन १९०।१ नृप पीछैं अवधि सेस, न इतेक काल पुच्छ्यो नरेस ॥ ३३ ॥

संसदं कहुँ अक्खिय सहज साह, लद्धो तैं सूरति वज्रं लाह ॥
नहि कवहु दिखायो हे नरेस, अवतो सु दिखावहु हुकम एस ।३४।
इम कहिय अधिप कर धरि कटार, वो पविको जानहु पह आगार ॥

पामाँहिं रहत हीरासु एक१, कबहुक लखिलेहैं खल कितेक ।३५।
सुनिएह गईकारिगो सु साह, अक्खिय जगा भोज १९१।२ हि वाहवाह ॥

मुगलेस सहन पह सुभ न मानि, जरिगो सु मान कूर्म नृपहि जानि ॥ ३६ ॥

---

१ गौओं को मारने के लिये मार्ग में पकड़ते हुए २ मारने वालों को देखे ॥३०॥ ३ ताड़ना करके ४ आर्यों के ॥ ३१ ॥ ५ कछवाहा मानसिंह बुन्दी के राजा भावसिंह की पुत्री का स्वसुर था तो भी खेद है कि ६ पास जाकर, सूरत के युद्ध में ७ हीरा हाथ लगा था सो कारण सहित बादशाह को सुनादिया॥३२॥ ८ समुद्र रूपी मन में ९ मगर रूपी उस बार्त्ता को छिपाली ॥ ३३ ॥ १० सभा में ११ हीरे का लाभ ॥ ३४ ॥ १२ उस हीरे का मह घर है ॥३५॥ १३ चामा कर गया अर्थात् सुनी अनसुनी करगया, बादशाह की इस १४ सहनशीलता को बुंदीश को १५ समर्थ जानकर मानसिंह जलगया

खट अयुत ६०००० दम्म जिहिं अर्घ ख्यात, देखन हु न दिय सो पंबि बँदात ॥
इहिं मंतु साह नृप हनन आदि, करतो कितिक प्रभुता प्रबादि ॥ ३७ ॥
सागर गभीर पै सहिय साह, बलि नृपहि गिन्यो निज जय निबाह ॥
ओरन असक्य तउ किय अनेक, इनराम २०३।४ सुनहु तिन एकएक ॥ ३८ ॥
जननीहु साहकी मरिय जत्थ, सब अंज नृपन बुल्लि रु समत्थ
इम अक्खिय तुमकुल रीति एह, हैं मुंडित गुरुजन मृति अनेह ॥ ३९ ॥
हम जननि मरन तिन क्यों न होहु, सब नृपन धरयो सिर हुकम सोहु ॥
आमेर१ जोधपुर २ मुख्य अधीस, सब मुंडित हुव गिनि हुकम सीस ॥ ४० ॥
बुंदीस भोज१९१।२तहँ पैसभ बंधि, सुहु कथन न किय कुल धर्म संधि ॥
इम भोज १९१।२ साह परिखद हु आइ, भास्यो तिन्ह संढ १ न पुरुख २ भाइ ॥ ४१ ॥
मन्नत कति बैम्हनि साह माइ, मत भेद इहाँ संभव मनाइ ॥
जनम्यों यह ऊमरकोट जात, बरनी जु हुमायों ३१।१ समय बात ॥ ४२ ॥

उस हीरे का १ मूल्य साठ हजार प्रसिद्ध है. उस ३ उज्वल २ हीरे के इस ४ अपराध पर ५ ललकार कर भोज को मारता तो उस की क्या प्रभुता थी. ॥ ३७ ॥ ६ये राजा रामसिंह ॥ ३८ ॥ ७ आर्य राजाओं को बुलाकर बड़े लोकों के मरने के ८ समय मुंडन कराते हैं ॥ ॥ ९ आदि ॥४०॥ १० हठ करके ११ सभा में आकर १२ उन हींजड़ों में पुरुष की भांति दीखा ॥४१॥ १३ बादशाह की उस माता को कितने ही ब्राह्मणी मानते हैं ॥ ४२ ॥

पै जवन१ खिलन इम निज *प्रबंध, सुनिये †ब ख्याति अप्प-
२न जु संध ॥
भजिगो सु हुमायूँ२१।१ जबहि भीत, तब तजि अंतहपुर दुख
प्रतीत ॥ ४३ ॥
सब हुरम भजी जिततित ससंक, इकके तँहँ उघरे भाग्य अंक ॥
जिहिँगर्भ साह सो भजतजात, बंधूगढ पहुँची दुख बितात ॥४४॥
तत्थहि हुव अक्कबर३७।१तनय तास, उभयर हि तँहँ कछुबिधि
बिदित आस ॥
तब नृप बघेल लैजाइ ताहि, सादर सपुत्र रक्खी सराहि ।४५।
पुनिदिल्ली अक्कबर ३७।१ [3]जनक पाइ, [4]बनिता जिततित सुनि
लिय बुलाइ ॥
नृप तब बघेल धरि तिन्ह नृजान, पहुँच्यो हजूर सासन प्रमा-
न ॥ ४६ ॥
बनिसोहि बघेलन उदय बीजँ, धी धारत अज्जन करत धीजँ ॥
अग्गहु कछु सूचित यह उदंतँ, मन्नहु प्रसंगकारि पुनि सुमंत ।४७।
जवनर्न निज ग्रंथन जत्थजत्थ, लिखिदिय अलीकँ अज्ज २
न अनत्थ ॥
रन प्रथम१ सहाबुद्दीन हारि, पित्थ १७७।१ हिं हनि दूजैं२ गो
पधारि ॥ ४८ ॥
लैगो गहि ३ वहु जन यहहु लाप, इम कातिक कहौं व्है दुख
अमाप ॥
[12]प्रभुके चरित्र अवसर प्रसंग, सूचित सु होहिँ निज१पर२प्रसंग।४९।

यवनों ने अपने *ग्रन्थों (तवारीखों) में लिखा है † अब अपनी ख्याति में जो लिखा है सो सुनो. १ जनाना दुःख की प्रतीति से ॥ ४३ ॥४४॥ २ प्रसिद्ध हुआ ॥४५॥ अकबर के ३ पिता ने ४ स्त्रियों को ॥ ४६॥ बघेलों के उदय का ५ कारण हुआ ६ बिश्वास ७ वृत्तान्त ८ बुद्धिमान् ॥ ४७ ॥ ९ मिथ्या १० पृथ्वीराज को ॥ ४८ ॥ यह भी ११ कथन है १२ हे प्रभु रामसिंह आपके चरित्र में प्रसंग के

निज निलय बीरबल इक अनेह, साहहिं निमंत्रि बुल्ल्यो सनेह ॥
परिजन १ नवाबर नृप ३ मुख्य पास, इम गो सु बीरबलद्विज
निवास ॥ ५० ॥
उतरत वसंत१ऋतु ग्रीष्म२आत, प्रसरत निदाघ असहन प्रपात ॥
सब कुंकुमादि जल बहु सुगंध, विरचि सु भरि कृत्रिम कुंड
बंध ॥ ५१ ॥
किय अरज बीरबल उचितकाल, हजरत इहिं प्रविसहु करि
निहाल ॥
पहिलैं तँहँ अकबर३७१ करि प्रवेस, बुल्ले भट१ सचिव २ अ-
नुग२ बिसेस ॥ ५२ ॥
तब मान१ खानखाना२दि तत्थ, सब लग्गे प्रविसन हुकम सत्थ ॥
प्रविस्यो न भोज१९१२ तँहँ हठ प्रमानि, ठह्यो असि १ अहुन२
सज्ज ठानि ॥ ५३ ॥
मुगलेंद्रसहु आग्रह जदपि मंडि, छ्मँ बुल्ल्यो तदपि न प्रस-
भ छंडि ॥
बुल्ल्यो प्रमत्त सब इम विचारि, ठह्यो में रच्छके हृदय धारि ।५४।
इक१अकबर३७१अंतिके होहु अल्प, पट्टु बीर बहुत चहियत
प्रकल्प ॥
जिन्ह करत सत्रुमन न बढिजाइ, है चोकी बहु भट उचित
होइ ॥ ५५ ॥
सो बीरबलहु करि सवन साखि, आँमहजुत बुल्ल्यो विसेंहु आखि

अवसर पर गरमी के और आदमी के तन भेद की सूचना की जावेगी ॥ ४९ ॥
एक १ समय. बारबल ब्राह्मण के २ घर पर ॥५०॥ १ पवन अर्थात् अगह गर्मी
पड़ी तब केसर आदि सुगंधित जल भरकर ४ बनाए हुए कुन्ड में ॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥ ५ मानसिंह कछवाहा ६ तरवार ढाल लेकर ॥ ५३ ॥ ७ समर्थ अकबर
ने बुलाया तो भी हठ नहीं छोड़कर बोला ८ रक्षक ॥ ५४ ॥ ९ समीप १०
विशेष ज्ञानवाले चतुर बहुत चाहिये ॥ ५५ ॥ ११ साक्षी १२ हठ १३ मेवाड़

मेरे घरही मम न अपमान, बुंदीस करहु लखि सब विधान ।५६।
तुम सब प्रमत्त इम अक्खि ताहि, सो भोज१९१।२खरो इक हठ समाहि ॥
इहिँ आगस³साहहु कोप आनि, पँबि१मुच्छ२न दैनहु हठ प्रमानि ॥ ५७ ॥
पहिलैं रिझाइ अकबर३७१हिं पूर, सुर्जन१९०।१लिय बावन५२ प्रांत सूर ॥
बुंदी१समीप तिनमैं छबीस२६, वलि कासी२ढिग एकोनबीस१९ ॥ ५८ ॥
॥ छबीस१नवीस२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
ए पैंतालीस४५हि लिय उतारि, सप्तक७जुत कासी दिय सम्हारि॥
तहँ सुर्जन१९०।१लक्खन व्यय प्रतान⁴, नव थान१दुर्ग२सुरगेह३ निपान४ ॥ ५९ ॥
माँडा१कासी२चरनाद्रि३मुख्य, सब ठाम रचे निज धाम मुख्य ॥
पच्छें नलये ते अब्द८प्रांत, भोज१९१।२हिकैं रक्खे अनय भ्रांत॥६०॥
नृप मन्त्रिय बुंदिय क्यों न लेहु, उज्झैं न धर्म सुचिबंस एहु ॥
रहिगो वल्ल अद्धो, तदपि राज, मुदितहि रह्यो सु तिहिं खिन समाज ॥ ६१ ॥
जिहिं पुनि कहुँ अवसर करन⁹ जोरि, बिन्नति जवनेसहिं किय बहोरि ॥
समुझत हम प्रभुकी छिति¹⁰ असेस, दैहो सुहि रक्खहिं जियन देस ॥ ६२ ॥

करो यह कहकर १ विधि ॥ ५६ ॥ २ इस अपराध से ३ हीरा और डाढी मूंछ के बाल नहीं देने के कारण अर्थात् बादशाह की माता के मरने के समय मुण्डन नहीं हुआ था सो हठ जानकर ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ४ लाखों रुपये खरच करके ५ मन्दिर ६ जलाशय ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ७ धर्म नहीं छोड़ेंगे ८ अग्निवंश ॥ ६१ ॥ ९ हाथ जोड़कर १० सब भूमि आप की ही समझते हैं ॥ ६२ ॥

जित लरन काम तित मरन जाँहिं, निज स्वामि अनुगं हम नाँहिंनाँहिं ॥
हनि धर्ममाँहिं कहुँ किमहु होइ, गति कर्म नाँहिं रक्खै सु गोइं ६३
प्रभुकोहि भरोसा तबहु पाइ, हम वजत अज्ज लज्जन बिहाइ ॥
न करहिं बिलंब सिर देन नैंक, कुलधर्म मिटत कछु चित्त चैंक ।६४।
इहिं रक्खि हमहिं छिति देहु तुच्छ, मति लेहु कुबिध इम नरन पुच्छ ॥
जिजियाशदि तज्यो प्रभु दम जितोक, वाकौंहु अनुग न गिनत इतोक ।
कुल मग्ग रक्खि जो लेहु काम, लघु असन१बसन२तो अतिललाम।
अकबर३७१हु अरज यह सुनि प्रसन्न, छितिपहिं ऋजु जान्यौं न छलछन्न ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

लवपुरको देबे लग्यो, इहिं सूबा अधिकार ॥
नृप अक्खिय कासी निलय, ह्वै आवत दुख हार ॥ ६७ ॥
हौं दु२करम दुकरहु हुकम, सद्धनहौं प्रभु सज्ज ॥
सिर जो रक्खहु स्वामिसंय, किरं को दुष्कर कज्ज ॥ ६८ ॥
अतिप्रसन्न साह सु अरज़, मन्नि कहिय नृंपमोर ॥
ह्वै कासी आवहु बहुरि, लघु जावहु लाहोर ॥ ६९ ॥
नृप गो तब कासीनगर, मंगि बिलंब छक्मास ॥
कुमर रैन१६१।२मुख प्रकृति कुल, आनंदित सब आस ॥ ७० ॥
अकबर ३७।१ जौरति करन इन, आत अनय अजमेर ॥
दुव २ मिलान आमैर दिय, स्वसुरालय बल सेर ॥ ७१ ॥

---

१ सेवक २नांहीं करने की नांही है अर्थात् कभी नांही नहीं करते ३ छिपाकर नहीं रक्खेंगे ॥ ६३ ॥ चित्त पर ४ क्रोध होता है ॥६४॥ ६५ ॥ ५ सीधा ॥ ६६ ॥ ६ लाहोर का सूबा ॥६७॥ ७दुष्कर कार्य और दुष्कर आज्ञा को साधने में तैयार हूं ८ हाथ ९ किल (निश्चय) कठिन कार्य कौनसा है ॥६८॥ १० राजाओं के मुकुट ॥ ६९ ॥७० ॥ ११ यह यावनी भाषा का देश वाची शब्द है १२मुकाम ॥ ७१ ॥

सस्सू तँहँ मुगलेसकी, माननृपतिकी माइ ॥
दिय महिमानी दुवरहि दिन, मह[1] बहु पुरहु मचाइ ॥ ७२ ॥
बुल्ल्यो वह अवरोध[2] ब्लि, जामाता[3] निज जानि ॥
साहहु गो सस्सू[4] सदन, उर आदर भर आनि ॥ ७३ ॥
नजरि१ निछावरि२ सब्धिनिज, बहुरि बधूगन[5] बुल्लि ॥
सुबिधि कराई सबन[6] सन, भाग्य सराह न भुल्लि ॥ ७४ ॥
हड्डीहू दुव२ तँहँ हुती, इक सुभमति१९२१ अभिधान[7] ॥
जगतसिंह निज कुमर जिहिँ, मह करि व्याह्यो मान[8] ॥ ७५ ॥
सु तो जरी जब मृत सुन्यौँ, अप्पन पति[9] आसाम ॥
भोज१९१।२सुता दुव२कुल भले, उज्जल किय अभिराम[10] । ७६ ।
बुंदीहीं तस सुत बस्यो, नाम जास रघुनाथ ॥
भोज१९१।२सु रक्ख्यो प्रेष्ठ[11] भनि, सुता तनय हित साथ ॥७७॥
कृष्णावति१९२१जेठी१कँन्नी[12], दूजी२तँहँ दूदा१९१।१हु ॥
माननृपहिँ व्याही कुमर, बिधि१ मह२ सह करि व्याहु[13] ॥७८॥
दाहु१ व्याहु२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सोहीं तब पै तिँहिँ समय, अति प्रसभहु आई न ॥
गई लैन सस्सूहि गहि, हा कुबधू मतिहीन ॥ ७९ ॥
तबहि खाइ कर्पूर तिहिँ, पिहितँ[14] छुरी लै पास ॥
कछु अंतर सन गमन किय, अनुचित जियन उदास ॥ ८० ॥
पठई सस्सू अग्ग पुनि, आई व्याकुल एह ॥
दिट्ठिपरत साहहु दुखित, देखी कंपतदेह ॥ ८१ ॥
पग डारत इतउत परत, बुल्ले अकबर३७।१ बिक्खि[15] ॥

---

१ उत्सव ॥ ७२ ॥ २ जनाने में. अपना ३ जमाई जानकर बुलाया ४ सासू के घर में ॥ ७३ ॥ ५ पुत्र की बहुओं को बुलाकर ६ सब से विधि पूर्वक नजर न्यौछावर कराई ॥ ७४ ॥ ७ नाम ८ मानसिंह ने ॥ ७५ ॥ ९ अपने पति का १० सुन्दर ॥ ७६ ॥ ११ प्यारा कहकर ॥ ७७ ॥ १२ बड़ी कन्या १३ विवाह ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १४ छाने ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १५ देखकर

को आवत यह असु[1] बिकल, सासन[2] निवहन सिकेख ॥८२॥
यह दूदा१९१।२की अंगजा, सुनि बुल्ल्यो[3] उठि साह ॥
सस्सू जड तैं किय बिरस, लेत सभा रस लाह ॥८३॥
जो हड्डी६१ यह तो सजवँ[4], जिम तिम गृह लै जाहु ॥
खायो कछु इहिं मरनकहु, सस्सू जदपि सुहाहु ॥८४॥
जाहु१ साहु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
बिरचावहु बैद्यन बिहितँ[5], आसु[6] जियन उपचार[7] ॥
सस्सू गय ढिग यह सुनत, लखी बिकल ह्वी लार[8] ॥८५॥
औषध दिय बैद्यन उदित, जिहिं पच्छी लैजाइ ॥
छन्नैं ढिग निकसत छुरी, हेतु[9] कह्यो करि हाइ ॥८६॥
मैंयाकँहँ उर मारती, मुख लखतो जो मिच्छ ॥
ताहु लखी हड्डी६१हु तिंहिं, यातैं जियन अनिच्छ ॥८७॥
तुमरे सुतके अब तँलप[10], जैबो पँरभव[11] जोग ॥
कहि इम पुरबाहिर कढी, भँवके[12] परिहरि भोग ॥ ८८ ॥
पृंथक[13] ग्राम हड्डीपुरा, बाहिर रहिय बसाइ ॥
जब मृत मान[14] सु तब जरिय, रुव कुलहि सुरुय लँसाहि[15] ।८९।
यह भावी[16] पै इम सु अब, अकबर३७।१ है अजमेर ॥
दिल्लीपुर गो पुनि दुसह, बाहुरि[17] संभवँ[18] बेर ॥ ९० ॥
श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोज चरित्रे सीरोहीविजयार्थयुद्ध शीर्षोद्दिजगमालादिनरखारावसुरताणावि

१प्राण २आज्ञा ॥८२॥ ३ पुत्री ॥८३॥ ४ शीघ्र ॥८४॥ ५उचित ६शीघ्र ७ इलाज ८लज्जा सहित ॥ ८५ ॥ ९ कारण ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ १० शय्या पर ११ दूसरे जन्म में १२ संसार के भोग छोड़कर ॥ ८८ ॥ १३ भिन्न १४ मानसिंह मरा तब १५ शोभायमान करके १६ यह वार्ता आगे होनेवाली है १७ पीछा फिरकर १८ सम्भव समय पर ॥८९॥९०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में सिरोही को विजय करने के युद्ध में जगमाल शीशोदिया आ-

जयासादन १, यवनेन्द्राकबरबुन्दीशभोजकृतानेकापराधक्षमनभोजस्वधर्मदृढीभवन २, अजमेरनगरपीरयात्रार्थप्रस्थितयवनेन्द्राकबरस्वश्वशुरगृहामेरगमनादिकथावर्णनं सप्तदशो १७ मयूखः ॥

आदितो द्विशततमः ॥ २०० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक छ बेद सोलह१६४६ समय, इत कासीनृप ऐन ॥
कुमर रत्न१९२।१ के हुव कुमर, दुर्जय पर भय दैन ॥ १ ॥
असित१ भाद्रपद६ दोजि२ अह, जन्म तास लिय जानि ॥
आह्वय३ गोपीनाथ १९३।१ इहिं, पायो गनित प्रमानि ॥ २ ॥
अधिप मान दौहित्र यह, लीला१९२।१ औरस सूर ॥
सुनि जनम्यो बरख्यो सुपहु, पुरहमेह४ यह पूर ॥ ३ ॥
कछु कासी१चरनाद्रि२कछु, रहिय भोज१९१।२अधिराज ॥
बुंदी जिम बिलसिय बिभव, सुरपति५ प्रतिम६ समाज ॥ ४ ॥
हुतो पुरोहित संगही, द्विज इक१ देवीदास ॥
गैल इतर कोउ न गयो, बुंदीही करि बास ॥ ५ ॥
दिष्ट७ ज्वरी८ किय सोहु द्विज, यातैं नृप अनखाइ ॥
पलट्टन और पुरोहितन, भोज१९१।२चहिय हिय भाइ ॥ ६ ॥
किय बिन्नति तँहँ जोरि कर, व्यास चक्रधर बिप्र ॥
पुव्व पुरोहित गर्वपर, छोर न समुचित९ छिप्र१० ॥ ७ ॥

दि मारे जाकर राव सुरताण का विजयी होना १ बुन्दी के राव भोज के अपराधों को बादशाह अकबर का क्षमा करना और भोज का अपने धर्म में दृढ रहना २ अजमेर में पीर की जारत करने को प्रयाण करनेवाले बादशाह अकबर का अपने श्वसुर गृह आमेर में जाने आदि कथाओं के वर्णन का सत्रहवां मयूख १७ समाप्त हुआ और आदि से दोसौ २०० मयूख हुए ॥

काशी के १ स्थान में ॥ १ ॥ २ द्वितीया के दिन ३ नाम ॥ २ ॥ ४ स्वर्ण के मेरु ॥ ३ ॥ ५ इन्द्र के ६ सदृश ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भाग्य ने ८ ज्वर युक्त किया ॥ ६ ॥ ९ उचित १० शीघ्र ॥ ७ ॥

पैढवाल¹द्विज तजि सुपहु, चोलंख्या²पुनि चाहि ॥
करहु पुरोहित प्रीति करि, निज कुल रीति निबाहि ॥ ८ ॥

॥ मनोहरम् ॥

चोलंख्या धनेस्वर जो भूसुरसों भूपभोज१९१२,
करन पुरोहित बिचार्यो जानि जबही ॥
देबीदास ज्वरकी दसाहुमैं दुसह दुक्ख,
ताको ताकि देसमैं पठायो पत्र तबही ॥
नाभा¹सिवदास²दूदा³रामा⁴ओझा⁵केदार⁶,
रु परसा⁷स्वदेसतें ए सात७आइ सबही ॥
द्वार रहि ठाढे दीन बिन्नति करन लागे,
क्यों तजो हमैं यह करी न काहू कबही ॥ ९ ॥

॥ पद्धतिका ॥

नृप कहिय हाल कल्लोल नाम, जो रहत मत्त इभ² अष्ट८जाम ॥
इहिं पूजि पुरोहित रहहु अप्प, द्विज तजहु नतो अब मोघ³ दप्प १०
नाभा तब पूज्यो वहहि नाग, भाख्यो न जाइ हम वृत्ति भाग ॥
इम नम्र बिबिधकर जोरि आक्खि, सुंडाधरि हड्डन सबन साक्खि⁴ ११
पूजनबिधाइ किन्नौं प्रनाम, करिराज भयो सुभ द्विजन काम ॥
पहिलेहि बिप्र इम रहत पोरि, रहिगो सु धनेस्वर मनहिं मोरि ।१२।
नाभाहित पुहवी कछु नरेस, बखसन जँहँ लग्गो हित बिसेस ॥
भाखिय तँहँ नाभा जिम स्वभग्ग⁵, एकासी=१बीघा⁶अवनि अग्ग ।१३।
पाई कुलपुरुखन बिधि प्रमान, लहि हेतु कछु सु गत हुव लँबान⁷ ॥
सुहि मोहि देहु नृप धर्म सोधि, बारहठ सुकवि ईस्वर१९५।१प्रबोधि
महिपति तब ईस्वर१९५।१मन मनाइ, भुव सोहि दिवाई उचित भाइ
आक्खिय नृप कवि तुम लहु ओर, जो पै न लई कवि सुमति जोर ॥१५॥

॥ ८ ॥ १ देखकर ॥ ९ ॥ २ हाथी ३ झूठा घमंड ॥ १० ॥ ४ साक्षी ॥ ११ ॥ १२ ॥
५ अपने भाग (हिस्से) की ६ भूमि ॥ १३ ॥ ७ ग्राम का नाम ॥ १४ ॥ १५ ॥

लिखि सुतहिं पत्र सुहि छिति लवान, दिय सर्व पूर्वगत द्विजन दान॥
द्विज नाम धनेस्वर१कौं स्व देस, निबसथ सु धोहरा१दिय नरेस ।१६।
रहि दूदा१९११ढिग जिहिं परसुराम१, किय अति विरोधमय विविध काम ॥
तोहू ब ग्राम गग्घोस२ताहि, सुर्जन१९०१२ सुत अप्पिय गुन सराहि
चरनाद्रि१रु कासी२मास च्यारि४, संभरनरेस रहि सब सम्हारि ॥
रच्छक तँहँ रक्खिय कुमर रैन १९२१२, अक्खिय सुत आनहु सवन अैन ॥ १८ ॥
पुर दिल्ली पुनि सासनप्रमान, आयो बुंदीपति बल अमान ॥
संसद बुलाइ तिहिं कहिय साह, सचि डमर२ मिटत लाहोर लाह ।१९।
निज बल सिख हीरासिंहनाम, नानक विनेय४ जगहित निकाम॥
अनुमंत्रि नरन रचि धाहि एस, बपुरी प्रजाहिं लुट्टत बिसेस ॥२०॥
तासौं बचाइ नृप जाइ तत्थ, सूबा सम्हारि बिरचत समत्थँ ॥
पुहवीस सु सुनि लाहोर पत्त, सूबापति तँहँ हुव चाहि स मत्त ।२१।
जुतधर्म१नीति२राज्यहिं जमाइ, पटु चर पठाइ सिख सुद्धि पाइ ॥
बेढ्यो हि जाइ खल इड्ड६१वोर, सुभिराइ बिलुट्टन पाप सोर ।२२।
तरवारिझारि तिम रन रचाइ, मारयो सु धाटिधर जस मचाइ ॥
सूबा अभीत करि संभरीक, प्रतप्यो सम्हारि तस सब प्रतीकें ।२३।
बुंदीस स्व बल जिम सिख विपन्न, सुनि तिम उदंत अकबर३७१ प्रसन्न ॥
मालपुर१टौंक२टोडा३समेत, यह त्रिक३बहोरि दिय हित उपेत २४
इतकौं बुंदेलन बल उफान, थानाँ बहु कट्टिय थानथान ॥

---

१ ग्राम ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ सभा में ३ उपद्रव ॥ १९ ॥ नानक का ४ शिष्य होकर. संसार के हित में ५ निकम्मा ६ अपनी सलाह में लेकर ॥ २० ॥ ७ समर्थ ॥ २१ ॥ ८ चतुर ९ हलकारा भेजकर १० लूट हमरवा कराके ॥ २२॥ ११ बस सूबा के सब अंगों को सम्हाल कर ॥ २३ ॥ १२ विपद् ग्रस्त ॥ २४ ॥

प्रकटहि दुश्आबलग लूट पारि, अति धन बहु निवसथ दिय उजारि ॥ २५ ॥

सूबा प्रयागको अप्पि साह, पठयो सिरीफखाँ१बल प्रबाह ॥
तिहिं जात अरज किय हित बताइ, हड्ढ१नबस गढ चरनाद्रि१ हाइ ॥ २६ ॥

अधिकारी तैसे गढ उपेत, खल सब जुरि जित्तहिं बीर खेत ॥
वह मोहि देहु तिनसौं उतारि, बलि लखहु प्रजा सुख सुभ विचारि।
जाकेहिसंग फरमान तत्थ, अकबर३७१२पठयो गढ दैन अत्थ ॥
लाहोर तिमहि दूजो४लिखाइ, भेज्योसु भोज१९१२पति उचित भाइ ॥ २८ ॥

नृप१बंचि वह रु कुमरहिं निदेस, पठयो लिखाइ गढ करहु पेस ॥
पहुँच्यो सु बिलंबि रु कुमरपास, सूबापति अग्गाहि गो सकास २९
जिहिं गढ प्रयाग प्रभुता जमाइ, लैवे गढ पठयो दल१लिखाइ ॥
सौंपै फरमानरहु ताहि सत्थ, सूबापति पठयो बल समत्थ ॥ ३० ॥
इत रैंन१९२१कुमारहु जिहिं अनेह, अधिबीरं हुतो चरनाद्रिएह ॥
गो तँहँ फरमान१ सु तिहिं गिन्यौं न कहि हमहिं देत नृप हुकम२ क्यौंन ॥ ३१ ॥

पच्छो सु दूत पुनि गो प्रयाग, भाख्यो न देत गढ गिनि स्वं भाग ॥
सुनि यह सिरीफ लहि अल्प सत्थ, समुझावन कुमरहिं गो समत्थ ॥ ३२ ॥

जिहिं रैंन१९२१कुमर चरनाद्रि जाइ, समुझायो छोरहु गढ सुनाइ
नृपको हि कुमर मंग्यो निदेस, सूबापति बुल्ल्यो खिजि बिसेस ॥
तू बप्प हुकम क्यौं चहत तोंनि, मुगलेस बडे अप्पहिं प्रमानि ॥

---

१ ग्राम ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ तहां ३ अर्थ (गढ देने के लिये) ॥ २८ ॥ गढ ४ नजर करदा ५ देर से पहुंचा ६ समीप ७ पत्र ॥२०॥ जिस ८ समय में ९ वीरों का पति ॥ ३१ ॥ १० अपने हिस्से का जानकर ॥३२॥३३॥ ११ पिता का हुक्म १२ खैंच करके

कुमरहु यह सुनि खिंचि हनि कटार, फारयो सिरीफ उर[1] गर्व फार[2] ॥ ३४ ॥

महिपति भोजा१९१।२नुज[3] रायमल्ल९९१।२, सुत रामचंद१९२।१ तस स्वं[4] कुल सल्ल ॥

सिसु बैहि जनक संग जो रिसाइ, पति कछुदिन दूदा १९१।१ कुमर पाइ ॥ ३५ ॥

पुनि रहि सिरीफखाँ स्वामिपास, बहिकाइ करायो तस विनास ॥

मरतहि सिरीफ मुहु राम १९२।१ मूल, अरि कुलको गो भजि तहँ अँगूल ॥ ३६ ॥

जुज्झे इत१उत२के कछुक जोध, बलि जवन भजे असहन विरोध ॥

पुनि भोज १९१।२ हुकम गो कुमरपास, सुन देहु दुर्ग सासन[5] विनास ॥ ३७ ॥

अंतर इतेक पहिलेंहि एह, इत हुव उदंत आगस[6] अछेह ॥

सो असह सुनत अति क्रुद्ध साह, चितयो हड्ड६१।२सिर हनन चाह ॥ ३८ ॥

औरनसम अकबर३७।१पै न[7] आँहि, गंभीर सिंधुमन[8] नयवगाहि[9] ॥

सिवपुरिंप१परगनाँ सत्त७सत्थ, सब लिय उतारि अष्ट८हि समत्थ ॥

सुर्जन १९०।१ के विरचे थान साह, लिय नहि कासीविच गिनिकुलाँहि[10] ॥

मौंडा१चरखादिक२आदि माँहिं, वाकेहु रचे लिय सर्व आँहिं ॥४०॥

अधिकार दये लवपुर१उपेत, मालपुर१टोंक२टोडा३समेत ॥

इतकेहु लये हैं अप्रसन्न, दुल्ल्यो नृप भोज १९१।२ हिं चढि विपन्न[11] ॥ ४१ ॥

---

१ हृदय २ समूह ॥३४॥ ३ भोज का छोटा भाई ४ अपने कुल का स्याल ॥३५॥ ५ प्रसिद्ध ॥३६॥३७॥ ६ अपराध ॥३८॥ ७ अकबर अन्य बादशाहों के समान नहीं था ८ मन का गम्भीर समुद्र ९ नीति का थाह लेनेवाला ॥३९॥ १० लोदाखान ॥ ४० ॥ ११ विपद्ग्रस्त ॥ ४१ ॥

पहु भोज१९११२तबहि सासन पठाइ, बुंदी सब अपनैं लिय बुलाइ
रनवाससहित तब कुमर रैन १९२१९. आयो सब स्वीयन स्वीय
ऐन ॥ ४२ ॥
इहि वेद अष्टि१६४८संवत अनेह, इम पत्तो बुंदिय रत्न१९२१एह
इत भोज १९११२ हु दिल्ली सजव आइ, जवनेसहिं सेयो नीति
जनाइ ॥ ४३ ॥
इहिं कृत बहु रन जय चित्त आनि, जवनेस बुलायउ स्वीय जानि
दिय नृपहिं उपालंभहु हु २ पार, किय यह अति हेलन तब
कुमार ॥ ४४ ॥
तब कानि तज्यो नहिं तो मत्रास, हनतो मैं रैन१९२१हिं हेर्न हास
मान्यो सिरीफ जिहिं निगुहि अंतु, तस मैं न रक्खतो कुलहु तंतु ४५
सुर्जन१९०१९के१तेरपै सुकर्म, मैं अटक्यो सुमिरत विविध मर्म ॥
इम होइ होत कछु दिन अतीत, पच्छोनरेस किय साह प्रीत ॥४६॥
इहिं समय नाम जाको अयाज, सु जवन तातारी रहित साज ॥
बिगरयो विपत्तिआगमैं विसेस, इतकौं तब आयो दुखितएस ॥४७॥
बनिता सगर्भ संगहि विहाल, कन्न्या हुव ताकै प्रसवकाल ॥
तातार१४अज्जअुत्र१५अंतराल, वन गहन प्रसूता हुव सुबाल ॥ ४८ ॥
कै भूख पुव्वहि सत्वहीन, दुखमैं पुनि यह दुख दिष्ट दीन ॥
इम रूपवती कन्याहु उज्झि, वनमैं रु चले मग अग्ग बुज्झि ॥४९॥
तिम सिसुसन कछुकछु दूर जाइ, मुरि मुरि तिम देखत बप्प१ माइ२
कन्न्या परी सु पद्धति किनार, माताकौं तँहँ दिय मोह मार ॥५०॥
बच्चा बच्चा कहि तबसु बाल, छिलपात गिरी भुव अति विह्वाल ॥

१ जनाना २ सेवकों सहित अपने ३ घर में आया ॥ ४२ ॥ ४ शीघ्र ५ जनाना दिखाकर ॥ ४३ ॥ ६ ओलम्भा ७ अपराध ॥ ४४ ॥ ८ यह दूसरा नहीं है ९ बिना अपराध ॥ ४५ ॥ १० व्यतीत ॥ ४६ ॥ ११ बिना सामग्री १२ विपत्ति आने से ॥ ४७ ॥ १३ स्त्री. तातार और १४ भारतवर्ष के १५ बीच में ॥ ४८ ॥ १६ पराक्रम हीन १७ छोड़कर ॥ ४९ ॥ १८ उस छोटेहुए बालक से १९ वह कन्या मार्ग के किनारे पर पड़ी थी ॥ ५० ॥ २० बच्चा बच्चा कहकर विह्वल होकर भूमि पर गिर पड़ी

तिहिँ लखि अयाज पच्छोहि जाइ, लायो कनी सु उरतैं लगाइ ५१
कति कहत लख्यो सिसु कहनकाल, बपु बेढिरह्यो तस काल व्याल
वह गो भजि इहिँ तनया उठाइ, अप्पी निज नारिहिँ बहुरि आइ ५२
तँहँ मग मिलि सोदागरन ताहि, बसु कछुक दयों करुना निबाहि॥
वाके बल लवपुर तिनहु आइ, बासर कछु कहे दुख बिताइ ।५३।
बनिता१रु सुता२जुत सुनि सु बत्त, पुनि यहअयाज दिल्लीहि पत्त॥
साहहु तिम पटु सुनि लखि समाजँ, वह कियउ मीरबखसी अयाज
ताकें दुव२सुत हुव जदपि तत्थ, सो प्रीत तदपि तनयाहि सत्थ॥
अति रूप सुता वह लखि अयाज, बिवाहु स्वीय सिखई सवाजं५५
गुन१रूप२उभय२लहि वहि गरीय, बय मध्य२।३लहत हुव बढि वरीय
पहिलेँहि फिरंगी पोर्तुगेज१, आये पुनि निज भुव अंगरेज२ ॥५६॥
अधिराज राम२०३।४जिम यह उदंत, सब सुनहु सोहु क्रम अब सुमंत ॥
अग्गैं यूरुपजन मग अजानि, अज्जनभुव सोदागरन आन ॥ ॥५७॥
मग हेरि थके जिततित महीप, पथ उत्तर४।१पच्छिम३।२लखि प्रतीप
बहु बरफ फसे जिनके जिहाज, सहँसन जन मरिगय तउ सलाज५
उद्योगिन न तज्यो प्रसभ एह, आयेदक्खिन२।३दिस जिहिँ ९
समय१रु सोदागर नाम२संग,प्रभु राम२०३।४सुनहु अब हुव प्रसंग॥
प्रसंग१ प्रसंग२ अन्त्यानुप्रासः १॥
संवत जब गुन सर तिथि१५५३समान, पावत तब नृप इह इहिँ ।

१ कन्या को छाती से लगाकर लाया ॥ ५१ ॥ कितने ही कहते हैं उसकी माता ने बच्चा बच्चा कहा उस समय उस लड़की को काले २ ने घेर रक्खी थी ॥ ५२ ॥ ३ धन ४ लाहोर ५ दिन ॥५३॥ वह अयाज ६ गया ७सभा में ॥ ५४ ॥ ८शीघ्रता से ॥ ५५ ॥ ९ भारी १० सुन्दर ॥ ५ ११ हे राजा रामसिंह जिसप्रकार यह वृत्तान्त है सो सुनो १२ आगे के लोग आर्य्यावर्त का मार्ग नहीं जानते थे १३ आर्य्यों की भूमि का ॥ ५ १४ उलटे १५ हजारों मनुष्य ॥ ५८ ॥ तो भी उद्योगियों ने १६ हठ छोडा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

संग्राम१रान चित्तोर२सीस, इत बुंदी२नारायन१८७।१।२अधीस॥६०॥
गढ जोधपुर३ सु जब गंगदेव, आमेर भूप भगवंत एव ॥
लोदी५जु.सिकंदर२८।५दिष्ट लाह,सो हो जब दिल्लिय५पातसाह॥६१॥
बलि ग्राम आगरा जिहिँ विथारि,पुर किय बादलगढ नामपारि॥
घल्लिय तस अकबर३७।१अधिक घेर, बलि सुनहु सिकंदर२८ही
हि बेर ॥ ६२ ॥
रानाँ संग्रामा१दिक नरेस, बरनैँ जब तब हुव यह बिसेस ॥
पुर१ लिसबन२ जनपद२ पोर्टुगाल२, जब सज्जिय सोदागरन
जाल ॥६३॥

॥ दोहा ॥

सासन लिसबन साहको, पोर्टुगेज जन पाइ ॥
आवन तव अज्जन अवनि, भये सज्ज हितभाइ ॥६४॥

॥ हरिगीतम् ॥

बास्कोडिगामा नाम तिन बिच मुख्य सोदागर बन्यौं,
॥
राजा१ प्रजा२ बरज्यौं कह्यो बहु पोत फसि हिममैं रहे,
बहुतैं मरे१ कछु बाहुरे२ जन व्यग्रभाव वहे वहे ॥६५॥
पहुँचे न अज्जनखंड तू जिन जाहु जल मग पोततैं,
जन बरफ५तैं न बचे तथापि जथापि सागर स्रोततैं ॥
बास्कोडिगामा१ कुल्लयो तजिकैं उदीचि६।१ प्रतीचि ७।१त्यौं,
लै हौं दँ दक्षिन८।३ पंथलैं पहुचै जिहाज सभद्र९ ज्यौं ॥६६॥
तिनतो जथापि [illegible] रहतो [illegible] तथा,

॥ ६३ ॥ लिसबन नामक बादशाह की १ आज्ञा लेकर २ आर्यावर्त में ॥६४॥ ३. जहाज बर्फ में फसे ४ व्याकुल ॥ ६५ ॥ ५. समुद्र के प्रवाह में ६ उत्तर ७ पश्चिम को छोड़कर ८ अद ९. कुशलता पूर्वक ॥ ६६ ॥

पृथु द्रव्य तीन३जिहाजभरिलिय अफ्रिका मगकी प्रथा ॥
जो उत्तमासा १ केप अब गुडहोप २ नाम उभैं भजैं,
तिंहिं अंतरीप गयो यहै जन साहसी पन क्यों तजैं ॥ ६७ ॥
वास्कोडिगामा१ केप अब गुडहोपतैं मुरि वामकों,
ध्रुव अब्द जुत दस१०मास करि पहुँच्यो सु अंज्जन धामकों॥
प्रभुराम२०३१४तँहँ सक अप्पनौ चउ पंच तिथि१५५४मित पिक्खयो,
भुव अप्पनी पहिलो१फिरंगी१एह तब प्रविसतभयो ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

मंदराज हाता२महिप, अनल कोन२ दिस आहि ॥
अंग्रेजन परतंत्र अब, तातैं नैऋत५।४ ताहि ॥ ६९ ॥
केरलभुव आयो कहत, जलनिधि तट पुर जत्थ ॥
कलीकोट जु नाम करि, तरिनैं लगाई तत्थ ॥ ७० ॥

॥ युग्मम् ॥

पुर दिल्ली कोटहि प्रथम १, सब उतारि संभांर ॥
लाभ अधिक तानैं लह्यो, बेचि सु वस्तन बार ॥ ७१ ॥
इहाँ फिरंगी पुव्व यह, प्रविस्यो इम मग पाइ ॥
लाभ बहुत धन लैगयो, लिसबन बिभव लसाइ ॥ ७२ ॥
पातसाह१ अरु सब प्रजा२, लखत ताहि हिय लाइ ॥
हुलसि बधाई करतहुव, जिततित हरख जनाइ ॥ ७३ ॥
ताको इम जस१ जुत तबहि, सब भूरूप हुव सोर२ ॥

१वडे अंन गे. आफ्रिका के मार्ग की२गिनि ली३दोनों नामों को धारण करता है अर्थात् उस प्रान्त के दोनों नाम से प्रसिद्ध है ४साहसी पुरुष अपनी प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ते। ६७। ५ आर्य्यावर्त में पहुंचा ॥६८॥ ६अग्निकोण में है ।६९। कहते हैं कि यह ७केरल देश की भूमि में आया था ८ समुद्र के किनारे के ९ जहाज ॥ ७० ॥ १० सामग्री ११ समूह ॥ ७१ ॥ यहां सब से पहिले यह फिरंगी १२आया लिसबन नामक बादशाह के १३वैभव को १४ शोभायमान करके ॥ ७२ ॥ १५ प्रसन्न होकर ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

आयो लखि जलमग्ग यह, अब किन चलखहु ओर ॥७४॥
पोर्टुगेज[1] आदिक प्रचुर, लघु[2] तब यूरुपलोक ॥
धरि पोतनं[3] विक्रेय धन, आनलगे इहिं ओक ॥ ७५ ॥
धातैं सबनैं अति अधिक, लद्धो विक्रय लाह ॥
लखि सु क्रातिन पुर लंडनहु, चित्त बढी सुहि चाह ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशभोजभूपचरित्रेभोजस्य लाहोराधिकारभोजनानकपन्थिहीरासिंहमारणतत्प्रान्ततापनिवारणं १ कुमाररत्नसिंहकाशीचरणाद्रियवनेन्द्राधिपत्यार्थप्राप्ताज्ञपस्थितसिरीफखांयवनमारणं २ एतदपराधात्काश्यादिषुयवनेन्द्राधिपत्याच्च कुमाररत्नसिंहस्य वाराणसीतो बुन्द्यागमनभोजस्य दिल्लीगमनोत्तरसप्रश्रययवनेन्द्रप्रसादापादनं ३ तातारागच्छन्नूरजिहांजनकायाजार्यावर्तागमनसमयाध्वान्तर्नूरजिहांप्रादुर्भवनलाञ्छितलाहोरदरिद्रदशापन्नायाजदिल्लीगमनानन्तरसेनापतिपदवितरणं ४ आर्यावर्ताध्वान्वेषकयूरपजनानेकपोतहिमग्रासनाशोत्तरपोर्टुगीजेशलिसबनाज्ञावर्तिवास्कोडिगामानामवणिज आर्यावर्तप्रथमागमनं ५

१ बहुत २ शीघ्र ३ जहाजों में ४ बेचने का धन भरकर ५ इस स्थान में आने लगे ॥ ७५ ॥ ६ बेचने का लाभ ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में भोज का लाहोर के सूबे पर जाकर नानक पन्थी हीरासिंह को मारकर उस सूबे का ताप मिटाना १ काशी और चरणाद्रि को खालसे करने की आज्ञा लेकर गये हुए सिरीफखां को कुमर रत्नसिंह का मारना २ इस अपराध के कारण और काशी आदि के खालसा होजाने से कुमर रत्नसिंह का सकुटुम्ब काशी से बुन्दी आना और भोज का दिल्ली जाकर नम्रता पूर्वक बादशाह को प्रसन्न करना ३ नूरजिहां के पिता अयाज का तातार से आर्य्यावर्त में आते समय मार्ग में नूरजिहां का जन्म होकर दरिद्र दशा में लाहोर होकर दिल्ली आने पर मीरबखशी के पद पर नियत होना ४ यूरुप के लोकों के आर्य्यावर्त के मार्ग में ढूंढने में अनेक जहाज बर्फ में फसकर नष्टहुए पीछे पोर्टुगेज के बादशाह लिसबन की आज्ञा से बास्कोडिगामा नामक सोदागर का सब से प्रथम आर्य्यावर्त में आना ५ इसके अपूर्व लाभ को देखने

एतदपूर्वलाभदर्शनोत्तरयूरुपान्यवणिजांलण्डननिवास्यांग्लानांचार्यावर्तागमिषावर्द्धनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥ आदित एकोत्तरद्विशततमः ॥ २०१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत नृप रान प्रताप मृत, सुनि अकबर३७।१कछु सोचि ॥
सस्त्र पठाये सस्त्रधर, अब न काम आलोचि ॥ १ ॥
इम न भई तो डारि आसि, बुल्ल्यो न अब विधान ॥
मोहि सस्त्र अवधानमैं, रक्खतहो इक रान ॥ २ ॥
सुनि यह अमर प्रतापसुत, खेटक४दुव२दुव२खग्ग ॥
पठये अकबरसाहप्रति, इम कहि वचन उदग्ग ॥ ३ ॥
रक्खहु अप्प प्रसन्न रहि, सस्त्र द्विरगुन अबसाह ॥
पुत्रहुरानप्रतापकै, रक्खत निज कुल राह ॥ ४ ॥
पै पीछैं काति जन कहत, अति लोभी असुरेस ॥
हुक्कम साहको सब्दि हुव, उदयनैर प्रभु एस ॥ ५ ॥
सो भावीपै अब सुनहु, बर्नान खिन सक वत्त ॥
महि अज्जन अंग्रेज मिलि, आये जिमि अनुरत्त ॥ ६ ॥

॥ वेतालः ॥

दिल्ली सिकंदर२८।१हो जहाँ बुंदी नरायनदास१८७।१।२ ॥
अवनी इलाँ मग लखन जस तव पोर्टुगेज१न आसं ॥
जवतैंहिं यूरुपरके घनैंजन आनलग्गिय अत्थं ॥

से यूरुप के अन्य सौदागर और लण्डन के अंग्रेजों की आर्य्यावर्त में आने की चाहना बढने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ एक २०१ मयूख हुए ॥

इन शस्त्रों से अब काम नहीं है यह १ विचार कर ॥ १ ॥ २ प्रवृत्त अथवा विधि अर्थात् अब शस्त्र रखने का काम नहीं है ३ शस्त्र रखने की सावधानता में ॥ २ ॥ ४ ढाल ५ खड्ग (निरंकुश) ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ प्रीतियुक्त ॥ ६ ॥ ७ भूमि और भूमि के मार्ग को देखने का यश पोर्टुगेजवालों को ८ हुआ ९ यहां

सबकेहिं लाभ बिसेस संचित भो ज़िहाजन सत्थ ॥ ७ ॥
अंग्रेज२लोकहु चाहि तब[1]सैंन अज्जजनपद[2] आन ॥
अब सज्जि च्यारि४जिहाज इन मिलि किन्न सीर प्रमान ॥
नर[3] साहतो जब हो नहीं नहिं इंग लंडन लाह ॥
तिय नाम ऐलीजबथ१ही तँहँ साहजादिय साह ॥ ८ ॥
अब है जैंथा बिक्टोरिया तिनसी हुती प्रभुतत्थ ॥
सासन तदीय लिखाइ इम लिय बनिज सीरिन सत्थ ॥
हमरे हि वस्तुनको उंहाँ क्रय अब्द पंद्रह१५ होइ ॥
बानिज्यतो हम जाइ बिरचहिं छक्कतैं न बिगोइ ॥ ९ ॥

॥ सामान्यलक्षणोल्लालाविशेषेणाकर्षगेवा ॥

तब सासन ऐलीजबथ तिन्ह, अप्पि तिम रु पठये हि अँर ॥
कहि ईस्ट१इंडिया२कंपनी३, पुब्ब१अज्जभुव२बनिक३पर ।१०।
सब सीरिदार सोदागर१न, कहत उहाँजनकंपनीर ॥
दिस पुब्ब१ईस्ट२अरु इंडिया१, भुव अज्जन१जावत भनी ।११।
कति सीरदार बानिज्य कर, ऐलीजबथ निदेस इम ॥
अंग्रेज१ प्रथम आये इहाँ, जोहु समय सुनिये वँ जिम ॥ १२ ॥
इत दिल्लीपति यह अकबर३७।१।१हि, इतं बुंदी नृप भोज१९।३।२यहँ
अमरेस[13] रान सीसोद इन, सूर[14]जोधपुर इत सु मह ॥ १३ ॥
आमैर मान[15] छत बनिक[16] ए, चउ४ जिहाज भरि द्रव्य[17] चय[18] ॥
अंग्रेज२प्रथम आये यहाँ, सक रस सर सोलह१६५६संमय ।१४।

॥ ७ ॥ १ तब से २ आर्य देश में आने लगे. उस समय ३ पुरुष बादशाह नहीं था ॥ ८ ॥ ४ जिसप्रकार इस समय विक्टोरिया है तिसप्रकार उस समय एलीजेबिथ नामक मलका थी ५ उसकी आज्ञा ६ छल से ॥ ९ ॥ ७ बीज ८ आर्यावर्त के पूर्वदिशा के व्यापार पर ॥ १० ॥ ९ हिस्सेदार व्यापारियों को वहां कम्पनी कहते हैं १० पूर्वदिशा को ईस्ट, और आर्यावर्त को ११ इंडिया कहते हैं ॥ ११ ॥ १२ अब ॥ १२ ॥ १३ शीसोदियों का सूर्य राणा अमरसिंह १४ सूरसिंह ॥१३॥ १५ मानसिंह १६ व्यापार करनेवाले १७ धनके १८ समूह से॥१४॥

प्रभुराम२०३।१ आइ इम निज पुहवि२, साधुभाव३ सह रीतिसन ॥
बानिज्य करनलग्गे बिबिध, चिंतवत दृढ अप्पन चलन ।१५।
अक्कबर३७।१हु साह दिल्लीस इत, कंटक हत राज्यहिं करत ॥
सासन तदीय४ भूपाल सब, धन१तन२मन३बचन४न धरत ।१६।
सक अठ्ठ पंच सोलह१६५८सु कवि, केसव बिप्र कवित्व करि५॥
श्रीरामचंद्रिका१ ग्रंथ सुभ, प्रारंभिय पद्धति पकरि६ ॥ १७॥

त्वकारि१:पकारि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

अप्पिय मुनसब अग्ग हड्ड१कहँ पंचहजारी ५००० ॥
सत्तहजारी७०००सहित कुम्मँ७किय निज अधिकारी ॥
रीति इहाँ प्रभु राम२०३।४बिबिध जन बिबिध बतावत ॥
पै वहु बुधन प्रमान जथा निज सुकवि जतावत ॥
रुप्पय१तृतीय३अंस जु रहत१० वह मन्नहु११ इक१दाम अब ॥
तिन्ह त्रिक३सु इक्क१रुप्पय तिमहिं१२ तिनकरि हो व्यवहार तब॥

१ हे प्रभु रामसिंह २ अपनी भूमि (आर्यावर्त) में ३ श्रेष्ठ भाव से ॥ १५॥ ४ उसकी आज्ञा ॥ १६ ॥ ५ केशव नामक ब्राह्मण कवि ने ६ कवियों का मार्ग पकड़कर ॥ १७ ॥ ७ कछवाहे को ८ हे प्रभु रामसिंह अनेक लोग ८ अनेक बताते हैं परन्तु ९ बहुल विद्वानों के मत से आपका कवि कहता है एक रुपये के तीसरे १० हिस्से को ११ एक दाम जानो इसीप्रकार १२ उन तीन* दामों का एक रुपया जानो जिससे सब व्यवहार होता था

* यहां पर ग्रन्थकर्ता ने रुपये के तीसरे हिस्से को एक दाम रक्खा है परन्तु निश्चय नहीं होता कि ग्रन्थकर्ता को यह प्रमाण कहां मिला है क्योंकि दाम का यह प्रमाण बहुत अधिक है, हमने बादशाही फरमानों में छोटे छोटे परगनों की आमदनी (रेख) के क्रोड़ों दाम लिखे देखे हैं सो यदि उन दामों का प्रमाण रुपये का तीसरा भाग समझाजावे तो उन परगनों की आमद किसी अवस्था में भी इतनी नहीं होसक्ती, हमने जहां तक फारसी तवारीखों में इस प्रकरण की जांच की तो दाम की तादाद एक रुपये के चालीसवें हिस्से की निश्चय हुई सो ही ठीक समझी जासक्ती है, अर्थात् चालीस दाम का एक रुपया होता था इसका अधिक विवरण देखना होवे तो तवारीख "गयासुल्लुगात" में देखो और मुन्सब के विषय आईन अकबरी में लिखा है कि बादशाह अकबर के समय में दश से लेकर दश हजार पर्यंत मुन्सब थे मुन्सब के जात का बराबर सवार हो तो वह प्रथम श्रेणी का मन्सब माना जाता है और जात से आधे

अयुत च्यारि४००००दाम इम जु इक१बिस्ती२०मुनसब जँहँ ॥
दोइ२लक्ख२०००००मिलि दाम तिमहि इक१सद्दी१००को तँहँ
बीस२०लक्ख२००००००दाम बलि हुतो पद इक्क१हजारी१०००
पंच५हजारी५०००प्रथित कोटि१००००००दामन अधिकारी ॥
मुनसब हि कहत सेना प्रमिति१क्रम तिन दामन करि किते ॥
कति कहत हुते इँहिँ मान करि इन दामन पर हय२इते ।१९।

॥ दोहा ॥

सूबा अकबर३७।१ सीमके, बिदित सद्ध बाईस२२ ॥
कहुँ देस१न कहुँ पुर२न करि, मन्नहु ख्याति महीस ॥ २० ॥

॥ पद्धतिका ॥

तँहँ सूबा दिल्ली१प्रथम१जानि, पुनि सोहु लेहु दहली१प्रमानि ॥
सूबा द्वितिय२पुर आगरासु, जिम नाम अकबराबाद२जासु ।२१।
लाहोर३सु लवपुर३गेय गम्य, रावी तट बाम सु बसत रम्य ॥
मुलतान४नाम बलि पुर४समेत, कसमीर५श्रीनगर५पुर निकेत
पैसोर६पिसावर६कहतकेहु, त्रय३बढ मिलि काबल७।१इक१रु तेहु ॥
उत्तर४।७अफगानिस्तान१आस, जमँ ओर२।२बलूचीस्तान२जास
हैं चरम३।५खुरासान३सु हिरात३, दावल७इक१ए त्रय३मिलि

१प्रसिद्ध २ सेना के प्रमाण से ३ इस प्रमाण से इन दामों पर इतने घोड़े होते थे ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ उसी दिल्ली को दहली कहते हैं ॥ २१ ॥ ५ कहते हैं ६ सुन्दर ॥ २२ ॥ ७ दक्षिण दिशा ॥ २३ ॥ ८ पश्चिम

सवार हो तो वह दूसरी श्रेणी का मन्सब है और जात से आधे से भी कम सवारहों तो वह तीसरी श्रेणी का मन्सब है, इस प्रत्येक मन्सब के साथ घोड़े, हाथी, ऊंट नियत थे और प्रत्येक मन्सब के साथ वेतन(तनखा)भी नियत थी जिसमें विशेष कर परगने दिये जाते थे, इसका उक्त ग्रन्थकर्ता अबुलफज्ल ने एक नक्शा भी लिखा है परन्तु वह विस्तार के भय से यहां नहीं लिखा जासक्ता. बादशाही समय में एक प्रकार के तोल का नाम भी दाम था. और वर्तमान समय में एक पैसे के पचीसवें हिस्से को दाम कहते हैं अर्थात् पैसे के २५ दाम होते हैं परंतु यह व्यवहार वाणिज्य में है बादशाही दाम तो एक रुपये के चालीस ही मानने चाहिये ॥

कहात ॥

पुर गजनी१सुहि जाबुल१पुरान, पुर काबुल२नूतन१ अब प्रधान॥२४॥

ता२केहिनाम मुलक सु७प्रतीत, बाला हिसार३।१तहँ गढ बिगीत॥
हे ता७सन नैर्ऋत४कंदहार८।१, कादि रू८।२खंधार८।३हु तस प्रकार॥ २५ ॥

इँ८हिंसीम अमल किय बरुन३ ओर५।३, दक्खिन३।२दिस१।८ इनसन सुनहु दोरं ॥
सूबा अजमेर९।१हु पुर२सनाम, गुजरात१०दसम१०पुनि सहँस १०००ग्राम ॥ २६ ॥

अहमदआबादक१०।१पुर२अधीन, जो मिलि सुरठ्ठ१गुज्जर२ज-मीन१० ॥
मानत सुरठ्ठ११कति भिन्नमान, थप्पत बहु दु२हि गिनि दसम १०थान ॥ २७ ॥

ठठो११।१पुर१भक्खर२दुर्ग२ठानि, जो सिंधु११ग्यारहम११देस जानि।
इत सूबा मालव१२पुर अवंति१२।१, पुनिखानदेस१३सुख थान पंति ॥ २८ ॥

बुरहानपुर१३।१सु पुर प्रथम१बास, अब न०्य२धूलिया१३।२दं-ग आसं ॥
औरंगाबाद१४।१हिं भिन्न भक्खि, सूचत कति तत्थ१३हि न-गर सक्खि ॥ २९ ॥

सूबा बीजापुर१५।१समनं ओर२।३, अरु भागनगर१६।१बल दं-मन ओर२।१ ॥
॥ समनओर१दमनओर२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पुर नाम हैदराबाद१६।१पाइ, सुहि भागनगर१६।१अब जग

१नवीन॥२४॥२कहते हैं ॥ २५ ॥ ३ पश्चिम दिशा ४फैलाव ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८॥ नवीन धूलिया नगर ५है ॥ २९ ॥ ६ दक्षिण दिशा में ७ अग्निकोण ॥ ३० ॥

सुहाइ ॥ ३० ॥

कर्णाट१७हु सूबा कति कहंत, सूचत पुर अरु अटि१७।१तँहँ सुमंत ॥

थिर खानदेस१३सन पुब्बथान, सूबा बरार१८जानहु सुजान ३१

अंचलपुर१८।१ *पुरातन ढंग अत्थ, जग ख्यात नागपुर१८।२ नैंय जत्थ ॥

इत पुब्ब१।१ इलाहाबाद१९।१आँहि, सोही प्रयाग१९।१ अघहर सदाहि ॥ ३२ ॥

जिहिं उत्तर४।७ सूबा अवधि२०।२ जानि, पुर आदि१ अयोध्या २०।१सुहि प्रमानि ॥

नृप गिनहु बंगला २०।१ मध्य२नैर, सुहि फैजाबाद२०।२ हु रम्य सैर ॥ ३३ ॥

तँहँ पुर लखनेऊ२०।२अब तृतीय३, कहियत लक्खनउर २०।३ प्राकृतीय ॥

सूबा बिहार२१।१ पूरब१।१दिसा रु, चित गयपुर२१।२ पाटलि पुत्र२१।२ चारु ॥ ३४ ॥

तृतीय१कृतीय२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दिस पुब्ब१।१हि सूबा बंगदेस२२, बरनत जँहँ ढाका२२।१पुर विसेस

उड्डीसह२३उत्कल२३ निज दु२ नाम, जो सूबा पूरब १।१ जल धिजाम ॥ ३५ ॥

गढ १ बारह भट्टी २३।१ जँहँ गिनात, पुर२ कटक २३।१ नाम तँहँ धाम पात ॥

इनमैं इक१कोउक गिनत अब्द३ ,सूबा इम ए बाईस सब्द२२३ ।३६।

सीमासुत अप्पन बंटि साह, बंधे इम जय करि नैय निबाह

---

*पुराना १नवीन २ पाप मिटानेवाला ॥३२॥ ३३ ॥ ३ प्राकृत भाषा जाननेवाले ४ समुद्र से उत्पन्न अर्थात् समुद्र के किनारे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ नीति

इत पुव्व१।१ज़ीति आसामअंत, दब्बे प्रदेस सब बल दुरंत ॥ ३७ ॥
दक्खिन२।३कर्णाटक२लग दवाइ, निज किय बहु भूपति पयन नाइ
इत कंदहार३काबल३उपेत, दब्बिय दिस पच्छिम३।५जोर देत।३८।
उत्तर ४।७ हिमाद्रि४ लग स्वबस आनि, प्रतप्पो सु अखिल सिर जित प्रमानि ॥
अरु सासन बाहिर लखत आप, पायो इक१रानाँ वह प्रताप ॥३९॥
साहस बल बिनु दल खग्ग साँहि, बाजी प्रानावँधि गो निबाहि ॥
अब सुनहु राम२०।३४ प्रभु वृत्त एह, अकबर३७।१ सुत मोहित जिम अछेह ॥ ४० ॥
नोरोजन समं सब नगरनारि, निजनिज घरबाहिर थितनिहारि ॥
स्व जनक सन छन्नैं जिहिँ सलेम३८।, प्रमदा वह पिक्खी धारि प्रेम
भाखी अपाजतनया जु भूप, राची निज गुन१बय२कांति३रूप४ ॥
इहिं पुव्व अनूढा पिक्खि एह, सबबिधि धारतहुव दृढ सनेह ।४२।
पै तिहिँ अपाज यह सुद्धि पाइ, स्वीकार न किय अनुचित सुनाइ
अरु ब्याहि सेर अफगानअर्थ, सबबिधि सुदाय दिय बसु समर्थ ।४३।
सो तक्कि मुखहि रहिगो सलेम ३८।१, न सक्यो सफली करि प्रीति नेम ॥
बनितांहु सलेम३८।१हिँ प्रिय बिचारि, ही रत्त तदपि हुव एह हारि
इम पुनि नोरोज१२हिके अनेहैं, अंखिनकरि मिलतहि यह१रु एह२
प्रछन्न हुव१हि कढि बिजनपत्त, निकटहि कहुँ निष्कुट रमन रत्त

१ दूर है अन्त जिसका ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ हुक्म के बाहर एक राणा प्रतापसिंह ही पाया सो २खड्ग लेकर ३ दाव ४ जीवन पर्यंत ५वृत्तान्त ॥ ४० ॥ ६ स्त्री को ॥ ४१ ॥ ७ अविवाहिता (कुमारी) ॥ ४२ ॥ ८ दायजा ॥ ४३ ॥ अपनी प्रीति के नियम को ९ सफल नहीं करसका १० वह स्त्री भी ११ प्रीति युक्त थी ॥ ४४ ॥ नोरोजों के १२समय में १३ नेत्रों से मिलकर अर्थात आंख से आंख मिलते ही १४ छाने १५ एकान्त में गये १६ घर के समीप का बाग १७ रमण करने में आसक्त होकर ॥ ४५ ॥

धरि इच्छक अनुचर उचित धाम, कामुक[1]जुग२मिलि गय तहँ प्रकाम[2]
वनिता[3] सब तब नौरोज१वार, अति तंग पहिरि आती इज़ार[4] ।४६।
तस बंध स्वस्व[5] पति जरत ताल, कुंची ढिग रक्खत गमनकाल ॥
पट अंतरंग[6]१वह बिवस पाइ, बहिरंग[7] तिलक[8]१लहँगा२बनाइ ।४७।
आयी घरबाहिर तिमहि एह, निकसी अयाजतनया सनेह ॥
पै अब सलेम३८।२ सन रमन प्रीत; वह रीति करी[9] तिहिं इम अतीत ॥ ४८ ॥

निष्कुट[10] तरु साखा लुंबि नारि, तालित[11] इजार वह दिय उतारि
लहि इष्ट बहुरि वपु तिम लफाइ[12], लुंबी सुहि साखा करन[13] लाइ ४९।
जिम पुब्ब[14] तिमहि तिहिं सुहि इजार, पहिराइ कुमर दिय करत प्यार॥
ऐसे प्रबंध मोघहि[15] अधीस, संसय ह्वै प्रत्युत[16] तियन सीस ॥ ५० ॥
उघराइ वस्त्र लै साहि इष्ट, दीसैं न किमहु सीलोपदिष्ट[17] ॥
इम ताहि सुपिहितासक्ति[18] आनि, चाहत रह्यो हि नय[19] न पहिचानि ।५१।
पै जोर जनक अकबर ३७।२ प्रताप, अल्पहु न सक्यो करि किमहु आप ॥

इतरहु करि हत नय बहु उदंत[20], इहिं जनक कुपायउ[21] जियन अंत ॥ ५२ ॥

पहु भोज १९।२ हु अकबर३७।१ सिक्ख पाइ, बुंदीपुर हायन[22] चउ ४ बिताइ ॥

---

१ कामी २ विशेष कामना से. सब ३ स्त्रियें ४ पैजामा ॥ ४६ ॥ उनके पैजामों के नाड़ों में ५ अपने अपने पति ताले लगा देते थे ६ वह वस्त्र भीतर रखकर ७ ऊपर ८ यवन वस्त्र विशेष जो गले से पैरों तक लहँगे के आकार रहता है ॥ ४७ ॥ ९ उस रीति को दूर करी ॥ ४८ ॥ १० बाग के एक वृक्ष की शाखा से लटक कर ११ ताला जुड़े हुए उस पैजामे को उतारदिया १२ शरीर को पतला करके १३ हाथों में उस शाखा को पकड़कर लटकी ॥ ४९ ॥ १४ जैसा पहिले था तैसा १५ वृथा १६ उलटा ॥ ५० ॥ १७ उसके शील में उपदेश नहीं दीखे १८ छाने आसक्ति लाकर १९ नीति को नहीं पहिचान कर ॥ ५१ ॥ और भी अनीति के बहुत २० वृत्तान्त किये. जीवन पर्यंत पिता को २१ क्रोधित किया ॥ ५२ ॥ २२ वर्ष ॥ ५३ ॥

जे बिबिध कृत्य किय तहँ जनेस, अग्रिम मयूख कहिहैं असेस॥५३
पुनि सिक्खअवधि गय *इंद्रपत्थ, तनु छोरिय अकबर३७।१तबहि तत्थ
[1]प्रभुभाव अब्द इक१घटि पचास४९, भूमी जिहिं भोगी असह भास॥
अब ससि रस सोलह१६६१सक अनेह, परलोक पत्त बपु उ-
ज्झि एह ॥

प्रभु सुनहु इहाँ मतभेद पाइ, दुव रीति लिखत संसयदिखाइ ॥५५॥
कति कहत तीन३अकबर३७।१तनूज, पहिलो१सलेम३८।१तहँ
अजस पूज ॥

परेज३८।२नाम दूजो२प्रबीन, कछवाहिगर्भ जिहिं बास कीन ५६
तीजो३तनूज कहियत जुतास, अभिधाँ तस दाना।साह३८।३आस
अब साह मरत आमेरईस, सब पंच फोरि कछु लोभ सीस ॥५७
परेज३८।२स्वंसासुत धरन पट्ट, किय मंत्र स्व भुव बाढन कुबट्ट ॥
परेज३८।२अनुज तब भोज१९।१।२पेल्लि, थप्पिय सलेम३८।१
पर मत उथेलि ॥ ५८ ॥

सुत इक१सलेम३८।१हि कति कहंत, मग तजि पै इच्छत अ-
नयंत ॥

पुनि हे सलेम३८।१कै उभय२पुत्त, जेठोतहँ खुसरो३९।१नीति
जुत्त ॥ ५९ ॥

ताकोहि नाम परेज३९।१तत्थ, सिसु अनुज खुरम३९।२सुत
हो समत्थ ॥

* इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) [1] स्वामिपन ॥ ५४ ॥ १ समय में २ शरीर छोडकर ३ सन्देह ॥ ५५ ॥ ४ पुत्र ५ अपयश में प्रतिष्ठा पाया हुआ ६ आमेर के राजा भगवानदास कछवाहा की पुत्री के गर्भ ॥ ५६ ॥ ७ नाम ८ हुआ ॥ ५७ ॥ ९ बहिन के पुत्र को १० कुमार्ग से. उस छोटे * परेज को बुन्दी के राव भोज ने ११ हटाकर ॥ ५८ ॥ १२ अनीति ॥ ५९ ॥ १३ बालक

* अकबर के तीन पुत्रो मे छोटे दो तो अकबर के समय मे ही मर चुके थे, उसके देहान्त के समय एक सलीम ही बाकी था सो पिता के सिंहासन पर बैठा ॥

यातैं सलेम३८।१की लखि अनीति, परतेज३९।१ माँहिं किय मानं प्रीति ॥ ६० ॥

तातैं बैठारतहो सु ताहि, चहुवान भोज१९१।२तव धर्मचाहि ॥
अक्खिय न जनकें१छत सुतरहिं जानि, करिहैं सलाम हम स्वामि कानि ॥ ६१ ॥

पहु तबहि बघेलन करि सपीर, सब हुव बुंदीस१हुभोज१९१।२सीर
रामगढ१श्रीनगर२केहु राज, अरु हुव२ नवाबरतीजो३अयाज३।६२।

इम जवन तीन३नृपतीन३अज्जं, सह बल बुंदीपति ओर सज्ज ॥
इम न हुव मानं चिंतित अनीति, रक्खिय हड्ड६१नपति धर्मरीति॥
थिर गहिय थप्पो सुहि सलेम३८।१, पै हो यह अघकर कुमग प्रेम ॥

जिहिं हनन सेरअफगान जानि, पठये बहु घातक छल प्रमाँनि।६४।
यह जानि सोहु बचि खिन अनेक, कढिकढिगो मारक बंचिं क्रक ॥

बचिवो परंतु कवलग बनाइ, जँहँ लक्खेन दलपति रुट्ठि जाइ।६५।
मारयो सु सेरअफगान मंद, छिन्नी तस जाया कॉमछंद ॥
पुत्री अयाजकी जो सँपंक, निजगृह सलेम३८।१डारी निसंक।६६।
धरि अप्प जहाँगीर३८।१भिधान, दिय नूरमहलरतिहिं नाम दान ॥

इहिं जनक अयाज१सु किय वजीर, सालेरहु बडे अधिकार सीर
इम हैसलेम३८।१दिल्ली अधीस, सठ रुँट्ठो जेठे१पुत्र सीस ॥

---

१ मानसिंह ने ॥ ६० ॥ २ पिता के होते हुए ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ३ आश्चर्य ४ इस कारण मानसिंह की विचारी हुई अनीति नहीं होसकी ॥ ६३ ॥ ५ पाप करके ६ कुमार्ग में प्रेम करनेवाला ७ छल के प्रमाण से अर्थात् छल करके ॥६४॥ मारनेवालों को ८ ठग कर ९ लाखों सेना का पति क्रोधित होजावे तव कव तक बचै ॥ ६५ ॥ १०काम के वश होकर उसकी स्त्री को छीन.ली ११कलंक युक्त ॥ ६६ ॥१२जहांगीर नाम रखकर१३ दिया ॥६७॥ वडे पुत्र पर १४ क्रोधित

वैठारतहे इंहिँ इम बिचारि, दिन्नौं खुसरो३९१२वह कैद डारि ।६८।
हत्थी१हयार२दि बिहितोपहार१, सब नृपन निवेद सबन सार ॥
वलि किय उत्तारन२वसु विसेस, इम सब सचिवादिन किन्न एस

॥ दोहा ॥

तदनंतर कछु दिवस तँहँ, रहि हद्दू६१न अधिराज ॥
पुर बुंदिय लहि सिक्ख पुनि, सो आयउ वल साज ॥७०॥
गुन रस सोलह१६६३सक लगत, पंचमि५मधु१सित२पाइ ॥
कुमर रत्न१६२।१के कुमरकैं, भयो कुमर जसभाइ ॥ ७१ ॥
सत्रुसल्ल१९४।१तस नाम सुभ, भाख्यो भूपति भोज१९१।१॥
यह पैहैं सबतैं अधिक, अवनि१धर्म२जस३ओज४ ॥ ७२ ॥
पाई भोज१९१।२हु जे प्रजा, परिनाई जिम पुव्व ॥
सुनहु तिन्हहु स्वसुरन सहित, दिय जिंनजिन दधि१दुव्व२ ।७३।
भूप व्याह पुव्वहु भनैं, अवहु प्रसूचँन अत्थ ॥
जथा अनूढ खवासि जन, सबै सुनहु क्रम सत्थ ॥ ७४ ॥
कुलवर्द्धक१अरु अलपकुल२, पुत्रन हित महिपाल ॥
दये थान जेजे उदित, सुनहु तेहु रिपुमाल ॥ ७५ ॥
नृप१इतइत रानिन निकर२, बहुरि खवासिन व्रातँ३ ॥
कृत्य करे कछु दुष्करहुं, उनबिच जस अवदात ॥ ७६ ॥
सुरगृह१ सौध२निपान३सुभ, उपबन४आदि अनेक ॥
सती तियनपतिसह गमन५, विदितँ सुनहु सविवेक ॥ ७७ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ्दराशौ बुन्दीशभो-

हुआ १ इसको तख्त वैठाते थे सो विचार ॥ ६८ ॥ २ उचित नजराना ३ न्यौछावर ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ४ चैत्र सुदि ॥ ७१ ॥७२॥ ५ सन्तान ६ दूर्वा (विवाह के समय पर दही दोब देने की आर्यों में रीति है) ॥ ७३ ॥ ७ विशेष सूचना ८ विना विवाही ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ९ समूह १० समूह ११ काठिन कार्य १२ उज्वल ॥ ७६ ॥ १३ मन्दिर १४ महल १५ जलाशय १६ बाग १७ प्रसिद्ध १८ विचार पूर्वक ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज

जचरित्रे उदयपुराधिपप्रतापसिंहवधत्यक्तायुधाकबरान्तिकराणाऽम
रसिंहद्विगुणशस्त्रप्रेषण१प्राप्तलण्डनाधीशराइऐलीजबथाज्ञेङ्गले-
ण्डदेशागतेण्डियाकम्पनीतिसंज्ञाधरवणिग्जनकृतसूचितशकसम--
यार्यावर्त०पापारप्रवर्तन२दिल्लीशकालिकद्रम्माधिकारविवेचनपूर्वा--
कबरसामयिकसार्द्धद्वाविंशतिप्रान्तपरिगणन३नवाहमहजहांगिरनू-
रजहांप्रथमसमागमभणन४ अकबरमरणानन्तरसुतमतभेददर्शनोत्त
रजहांगीरराज्यसमासादन५कृतशेराफगानवधजहांगीरतत्स्त्रीनूरजहां
पत्नीकरण६बुंदीशभोजप्रपौत्रशत्रुशल्यप्रादुर्भवन७भोजस्त्रीसन्त---
त्यादितत्कृतस्थानसूचनमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

आदितो द्व्यधिकद्विशततमः ॥२०२॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भोज१६१२नृपतिकै सुत भये, सप्त७प्रमित अति सूर ॥
सुता तीन३ प्रकटी सुगुन, प्रगुन धर्म१ कुल२पूर ॥ १ ॥
पुत्र च्यारि४ रानिन प्रसव, तीन३तथा दुहिताहु ॥

के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह के मरने से शस्त्र त्यागनेवाले अकबर के समीप राणा अमरसिंह का द्विगुण शस्त्र भेजना १ लंडन की रानी एलीजबथ की आज्ञा लिखवाकर इंग्लिस्थान से आये हुए व्यापारियों का सूचना कियेहुए सम्वत् में ईस्ट इंडिया कम्पनी के नाम से आर्य्यावर्त में व्यापार खोलना २ बादशाही समय के दाम और मुनसबों के विवेचन के साथ अकबर के समय के साढे बाईस सूबों की गणना करना ३ नौरोजों के उत्सव में जहांगीर और नूरजहां के प्रथम समागम का कथन ४ बादशाह अकबर के शरीर छोडने पर उसके पुत्रों के मत भेद दिखाने पश्चात् जहांगीर का बादशाह होना ५ बादशाह जहांगीर का शेर अफगान को मारकर उसकी स्त्री नूरजहां को घरमें डालना ६ बुन्दी के राजा भोज के प्रपौत्र शत्रुशाल का जन्म होना ७ भोज के सन्तान तथा रानियें आदि स्त्रियों के अथवा उनके बनाए हुए स्थानों की सूचना करने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से दोसौ दो २०२ मयूख हुए ॥

१प्रमाण २ विशेष गुणवान् ॥ १ ॥ ३ रानियों के प्रसव से ४ पुत्रियां

तीन३खवासिनकै तनय, बिदितभये बल बाहु ॥ २ ॥
रतन१९२।१हृदयनारायन१९२।२रु, दृढबल केसवदास१९२।३ ॥
रानिन प्रसव मनोहर१९।४हु, यह चतुष्क४प्रभु आस ॥ ३ ॥
सुता बडी सुभमति१९२।१ सुही, कहियत रत्नकुमारि१९२।१ ॥
महितकुमरि१९२।२तिम भानुमति१९२।३, सुद्ध द्विरकुल अनुसारि
इत बल्लू१रु संकर२ अतुल, बलि गोबर्द्धन३बीर ॥
तीन३खवासिनकै तनय, *सनय भये जय सीर ॥ ५ ॥
जाया सप्तक७ भोज१९१।२कै, बरनिय सुद्ध दुरवंस ॥
तस खवासि चउ४हुव तिमहि, अधिक सतीपन अंस ॥ ६ ॥
पहिली१ फुल्ललता१ रु पुनि, रूपलता२ अभिराम ॥
बलि कर्पूरलता ३ बिदित, दिव्यलता ४उद्दाम[२] ॥ ७ ॥
जिन [३]अपत्य जे जे जनिय, कहनभयो तिन्ह काल ॥
ग्रथित नाम छप्पय गिनहु, प्रथित राम२०३।४ भूपाल ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

वल्लन चालुक्कवंस राजकुमरि१९१।१ जु पटरानिय,
सुत रयन१९२।१रु सुमति१९२।१ सुता सु [६]जाठर तस जानिय ॥
क्रम तीजी३ जसकुमरि१९१।३ जनँ रठोरिजुग२हि जिम ॥
हृदयनरायन१९२।२बहुरि महितकुमरि१९२।२ सु अपत्य इम ॥
रानीद्वितीय२जो कूरमिय जाहि जसोदा१९१।३ भनत जग ॥
सुत केसव१९२।३भानुमति१९२।३सुता संतति तस उभय२हि सुभग ॥

॥ दोहा ॥

भाग्यवती१९१।४चोथी४ भनिय, रामसुता रठोरि ॥
तनय मनोहर१९२।४ प्रसव तस, जानहु इत क्रम जोरि ।१०।
फुल्लता१सुत छबि फबत, बल्लू१कुमर इत बुद्ध ॥

॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ * नीति सहित ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ सुन्दर २ निरंकुश ॥ ७ ॥ ३ सन्तान ४ गुथे हुए ५ विदित ॥८॥ ६ उदर से ७ सन्तान ८ सुन्दर ॥९ ॥१०॥

रूपलता२ सुत संकर२सु, रक्खन चोरन रुंद्द ॥ ११ ॥
गोवर्द्धन ३ तीजो ३ गदित, सुत कर्पूरलता ३ सु ॥
जन्यौं महाभुज करन जय, अरि दुर्गन चढि आसु ॥ १२ ॥

॥ पद्धतिः ॥

रतनेस१९२कुमर हड्डुन नरेस, उँपयम नव९व्याह्यो सुकुल एस
सुत हृदय नरायन१९२।२व्याह सत्त७, पहु रैन१९२।१बिबाह्यो अप्रमत्त
अपनैं मन पीछैं कुमर एह, स्व बिबाह पंच५ व्याह्यो सनेह ॥
व्याह्यो पुनि केसव१९२।३पंच व्याह, नृप रैन१९२।१ठानि मह हड्डु६१नाह
त चउम४मनोहर१९२।४संभरीक, उपयम दुव२व्याह्यो रन अभीक
आमैर कुमर जगतेसअर्थ, सुभमति१९२।१सुता सु व्याहिय स-
मर्थ ॥ १५ ॥
अनुजा तनुजा दुव२मृत अनूढ, त्रिक३तुल्य बलू१मुख त्रिक३
हु व्यूढ ॥
वलि सबन स्वसुरपुर१नाम२बंस३, अब सुनहु राम२०३।४प्रभु
कुलवंतंस ॥ १६ ॥
नृप भोज१९१।२पुब्ब दिल्लीनिवास, कूरम निमंत्रि बुल्ल्यो स-
कास ॥
तँहँ मान कहिय मम इक१सुता सु, सुत रत्न१९२।१हिं व्याहहु१
आदि१आसु ॥ १७ ॥
नृप कहिय जाइ बुंदी निकेत, पुनि दूत पठैहौं हित उपेत ॥
संबंध करन उपहार सत्थ, तब अप्प पठावहु सुजन तत्थ।१८।
यह कहि तब बुंदी भोज१९१।२आइ, पुच्छ्यो इम रान सु दत्त
पठाइ ॥

१ रोकनेवाला २ कहते हैं ३ शीघ्र ॥ १२ ॥ ४ विवाह ५ सावधान ॥१३॥१४॥ ६ निर्भय ॥ १५ ॥ राजा की पुत्रियें जो सुभमति की७छोटी बहिनें थीं ८विना व्याही मरगईं ९ विवाह १० कुल के मुकुट ॥१६॥ ११ समीप ॥ १७ ॥ बुन्दी के १२ स्थान में १३ सामग्री सहित॥ १८ ॥ १४पत्र

मम सुतहिँ सुता निज देत मान, रुचि अप्पन कैसी लिखहु रान॥
पच्छी कहिपठई तब प्रताप, अग्गैं सु ताहि दूदा१९१।२रु आप
१९१।२॥

आमेर मान१जगतेस२अत्थ, तब दिय हम पुच्छे क्यों न तत्थ२०
हुव सु बिधि जनकबस कहिय हड्ड६१, अब अप्पहिँ पुच्छत न
कछु अड्ड॥

पुनि रान पत्र दिय इम पठाइ, लेहु ब तिन कपटिन यह लि
खाइ॥ २१॥

व्याहैं न सुता जवनन बहोरि, चुक्कैं न बचन कहुँ चित्त चोरि॥
कूरम१लिखिदै सुहि तो कुमार, परिनावहु है जिम जस प्रसार२२
पुनि यह हि कबंध२न देहु पत्र, तिम भट्टी३सोढ४न लिखहु तत्र॥
सुहि नृप लिखाइ पठई सुबोध, रान सु प्रताप हठि करत रोध२३
उनके अनुमत४बिनु नहम ईस, हिंदुरवि५बजत अब जे महीस॥
दुहिता तुम जवनन पुनि न दैन, भेजहु लिखि अकपट६गिन
हु भै न॥ २४॥

नहिंतो सीसोद१नके निकेत, हड्ड२न मति ह्वैहैं व्याह हेत॥
अनखाइ सुनत यह महिप मान, किल चिंतिय डारन साह कान॥
पंचन तहँ आक्खिय हे नृपाल, ज्ञाति सन चलत१०व्यवहार जाल९॥
जातिसन रुकत२तहँ इतर जोर, अल्पहु चलिसकत न न्याय
ओर॥ २६॥

दै अकबर३७१हड्ड६१न जो हु दंड, खिल भूप तोहु पलटैँ अखंड॥
सिलगावहु११क्यों दवे गिरिन सीस, अनुमत लिखिभेजहु पिहि
तैं१२ईस॥ २७॥

भेजकर महाराणा से पूछा ? आप की क्या रुचि है॥ १९॥ २०॥ २१॥ २ फैलाव॥ २२॥ ३ रोकते हैं॥ २३॥ ४ सलाह बिना ५ जो हिन्दुवासूरज बजते हैं ६ कपट रहित॥ २४॥ ७ घर में ८ निश्चय॥ २५॥ व्यवहार का ९ समूह॥ २६॥ १० बाकी के भूपति पर्वतों पर ११ अग्नि क्यों सिलगाते हो

अप्पन टरि को गति लहहिं अज्ज, किल परत जाति१सन जाँ-
तिरकज्ज ॥
सोढा१कबंध२भट्टी३असेस, इम जो लिखिदेहैं पिहित एस ।२८।
अप्पहि टरि तोतो वजत अज्ज, करिहो कित व्याहन सिसुन कज्ज।
यह सुनत मान हग२ दूर आनि, पठयो दलँ सुहि लिखि सुहि
प्रमानि ॥ २९ ॥
सु दिखाइ जोधपुर लेख सोहि, जिनसौंहु लिखायउ मत जितोहि
यहु पत्र गंग रानहु स्व पत्र, तकि धर्म पठायउ तत्रतत्र ॥ ३० ॥
इम सोढे१भट्टिन२नियम आनि, पुनि नृप सुत व्याहन लिय
प्रमानि ॥
नृप मान सुता बहु गुनविधान, जिहिं नाम रामशीला१९२।१ सु
जान ॥ ३१ ॥
सोरत्न१९२।१ प्रथम कर तास साहि, बुंदीसकुमर आयो विवाहि॥
सीला१०२।१हु यहहि दुजे२ सनाम, रामकुमरि१९२।१ तीजैं३ सु
अभिराम ॥ ३२ ॥
सुत चौथैं४राहिबदेवि१९१।२सोहि, अभिधा चतुष्क४इम जास जोहि
बरिकुमररत्न१९२।१ पहिले१बिबाह,बँसुभ्रातबितरिलाहिकित्तिलाह॥
पुर बुंदिय दंपति२ किय प्रवस,प्रनमैं पूज्यन पय साद्धि सेस ॥
तोमर नृसिंह तनया द्वितीय२, राजकुमरि१९२।२नाम जुगुनंगरीय ॥
सुहि सहजकुमारि१९२।२अभिधाँ दुरसार, व्याहो पुर पट्टनि जाइ वीर
तीजी३जु जांबवति१९२।३नाम तास, भो जाउति चालुककुल सुभास
दुहिता मिलापकी सुगुन देह, आयो बिबाहि तिहिं कुमर एह ॥
चौथी४कछवाही बहुरि चाहि, बरनाथ सुता आयो बिबाहि ॥ ३६ ॥
अभिधा अमानकुमारि१९२।४सु असढ, बुंदीपुर आई कुमर व्यूढ ॥

गुप्त १ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २ दूरदर्शिता (दूरंदेशी) करके ३ पत्र ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ ४ नाम ५ धन का समूह देकर ॥ ३३ ॥ ६ गुण में भारी ॥ ३४ ॥ ७
नाम ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ८ चतुर ९ व्याहकर ॥ ३७ ॥

पित्थल१सद्दूल२दु२नाम पात, सोलंखी तस तनुजा सुहात ॥ ३७ ॥
स्यामा१९२१५ लाडकुमरि१९२१५ नाम सीर, व्याही सु पंचमा५ रत्न
१९२१९ बीर ॥

गोपालस्वसा गंगा१९२१६जुगोरि, बिबही सु कुमर छट्ठी बहोरि ।३८।
निजभट तो जुग्गियदास नाम, लघुतनया ताकी यह ललाम ॥
बुंदीपुरीहि हुव तस बिबाह, रुप्पय व्यय बहु किय कित्ति राह ।३९।
स्यामा१९२१७हि दहर मोहनसुता हु, बरिश्रानी सप्तम बिरंचि व्याहु
सीसोद भीमसुत अजबसीह, लहि देवकुमरि १९२१८ तनया सु
लीह ॥ ४० ॥

व्याहतहुव रत्न१९२१९हिं यह बिसेस, अष्टम बिबाह बरि ताहि एस ॥
अचलेससुता नवमी९उदूढं, गदियतं कुल१नाम२हु तस सगूढ ।४१।

॥ दोहा ॥

पंतारानको अनुज पट्ठ, सगतसिंह तस नाम ॥
तस बहु सुत अचलेस तँहँ, लहिय सुता जु ललाम ॥ ४२ ॥
अभिधाकरि रंभावति १९२१९सु, नवमी९आनि निकेत ॥
रत्न१९२१९कुमर बिलस्यो बिभव, हह्ह६१न कुल जस हेत ।४३।

॥ पादाकुलकम् ॥

नंदन दूजो हृदय नरायन१९२१२, व्याह सप्त७व्याह्यो धरनीधन॥
आदिनाम कमला१९२१९चंद्राउति, निपुन कुंभतनया पावन नुँति ॥
कुल सीसोद कृष्णाकन्याही, ब्रजकुमरी१९२१२दूजैं२इहिं व्याही
कुल कवंध तीजी ३ अखैकुमरि १९२१३, बलि जिहिं अनुपम
सुता लई बरि ॥ ४५ ॥

गंगाउत दुल्लह सुत गायो, नाम भवानीसिंह जनायो ॥

गोपाल की १बहिन ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ २ विवाही ३ कहते हैं ॥ ४१ ॥ ४ महाराणा
प्रतापसिंह का छोटा भाई ॥४२॥४३॥ ५ पुत्र ६ राजा ने ७ स्तुति योग्य ॥४४॥४५॥

तनुजा नाम जसोदा१९२।४ताकी, भरचोथी४०पाहिय खनि भाकी॥
रानाउति खुम्मानसुता रुचि, सो दोलतकुमरि१९२।५पंचमी५ सुचि
पुनि दलेल मंझ जु निंबड़िपति,वाकी सुता छठी६रंभावति१९२।६
तिमचालुकबग्घसुतासप्तमि७,जदुकुमरि१९२।७सु७पाहीबपहितजमि ॥ ४८ ॥

बिवही पंच५भोज१९१।२पीछैं वर, सुनहु तेहु भावी सब संभर ॥
जादव धनपालकी सुता जिम, अष्टम८सह बरि इंदुमती१९२।८इम
कृष्ण गोर कन्या कमलावति१९२।९, नवमी९बरि सो पुर जस उन्नति
प्रामारी गनपति सुता प्रनुत, दसमी १० अभिजनकुमरि १९२।१० वरीद्रुत ॥ ५० ॥

चिर ग्यारही ११ सुजानकुमरि १९२।११चहि, लौनकरन रठोर सुता लाहि ॥
बल्लभोत धनराज सुता बलि, अम्रतकुमरि १९२।१२ बारही१२ कलिथलि ॥ ५१ ॥

इम पहिलौं१अरु जनक अनंतर २, बारह२२ हुदय नरायन १९३।२ बरि वर ॥
अप्रजं हुव अंतिम चउ४इनमैं,तोकं जनिय सोलह१६खिल८तिनमैं५२
अठ८नमैं तेरह१३हुव अंगज, सुता तीन३ प्रकटी तस संगज ॥
जनतभई जोजोतिय जिहिंजिहिं,तुमप्रभु सुनहुजथाक्रमतिहिंतिहिं५३

॥ हरिगीतम् ॥

तँहँ जैत्रसिंह१९३।१बडो१सुत रु जसवंत१९३।१पंचम५जानिये,
चौथी४जसोदा१९२।४ हेर हि सोदर ए जने पहिचानिये ॥
दूजीर प्रिया ब्रजकुमरि१९२।२ सुत बलराम१९३।२दुजो२ देखिये,

१खान२कान्ति की ॥४६॥३ पवित्र ४ मध्य॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ५ हे चक्षुचाण ॥४९॥
६ विशेष स्तुति योग्य ॥ ५० ॥ अम्रत कुमरी रूपी ७ कली का भ्रमर ॥ ५१ ॥
८ विना सन्तान ९ बालक ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

तीजो३ वडी१ कमला१९२१ तनै लघु विजयराम१९३।३सु लेखिये
क्रम बालकृष्ण१९३।४ चतुर्थ४सुत शृंगारकुमरि१९२।१ बडी जनी,
जिम रहऊरि अखेकुमरि१९२।३ तीजी३हु एह द्वैयों जनी ॥
तँहँ छह६ केसव१९३।६ सोहि कृष्ण१९३।६ दुर नाम सप्तम७चंद्र
१९३।७ त्यों ॥
पंचमी५दोलतकुमरि१९२।५पतनी उभय२जनिय अतंद्र त्यों ॥५५॥
कन्या अमानकुमारि१९३।२ जो इनकीहि सो अनुजा कही ॥
लहि दिष्ट तिम रंभावती१९२।६ छट्ठी६हु पुत्र द्वयी२ लही ॥
इहिँ गर्भ दोलतसिंह१९३।८ अष्टम८ पुत्र नवम९प्रयाग१९३।९भो॥
भनिये ब सत्तमि७चालुकी जदुकुमरि१९२।७सुत जुग२भाग भो५६॥
तस दहम१० मान१९३।१० अमान१९३।११ एगारहम११ द्वैर हुव ए,
तथा ॥
जहांनि अष्टमि८ इंदुमति१९२।८ त्रितयी३ जनी सुनिये जथा ॥
सुत बारहम१२ अमरेस१९३।१२ अक्खय१९३।१३तेरहम१३तीजी३
सुता ॥
जिहिँ नाम अमृतकुमरि१९३।३ यह हुवसोलही१६ सब संजुता५७
जसवंत१९३।५पंचम५पुत्रजुत तनुजात अंतिम१२।१२।१३तीन३ही॥
लहि दिष्टवल इन च्यारि४ भ्रातन ऊढ अग्रजता लही ॥
नव९ के चले कुल जो भिंदा लहि अग्ग करन सनामहे ॥
रु अनूढ१ ऊढ२ सुता त्रयी३न लिखी तहाँ उपराम है ॥५८॥

॥ पादाकुलकम् ॥

बदत किते जेठो१ बलराम १९३।२हिँ, किते विजयराम१९३।२
हिँ चहि कामहिँ ॥
वडो जैत्र१९३।१ तस कुल हुव विधिबस, अब दुर्विधइम भजत

१दो सन्तान २आलसी ॥५५॥ ३छोटी बहिन ४भाग्य ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ६ विवाह करके ६बिना सन्तान ७ भेद ८ निवृत्ति है अर्थात् इन तीनों के विवाह कहां हुए सो हमने नहीं जाना ॥ ५८ ॥ ९ दरिद्री ॥ ५९ ॥

थान अस ॥५९॥
केसवदास१९२।३तृतीय३कुमार सु, ब्याह पंच५ ब्याह्यो नृप दै वसु
रूपकुमरि१९२।१ पहिली१कुमरानी,जो कूरम खेमसुता जानी ६०
रसु१ वसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥
रानाउति दूजी२ राजकुमरि१९२।२, बर खंडारि उदयदुहिता बरि
सुता प्रताप की जु सीसोदनि, तीजी३ रामकुमरि१९२।३ बरि ज-
स तनि ॥६१॥
रूपकुमरि१९२।४ चोथी४ रट्ठोरिय, पित्थलकी पुत्री गुनगोरिय ॥
मैंह पंचम५ गोरि किसोर कुमरि१९२।५,सत्तलसुता बरी हित
अनुसरि ॥६२॥
अग्रज यहहि पंचमी५ इनमैं, चतुर पंच५ सुत हुव च्यारि४नमैं ॥
जेठो रूपनरायन१९३।१ जानहु, पहिलो१ सुत सहि कर्म१९३।१
प्रमानहु ॥६३॥
सुंदरदास१९३।२ स्याम१९३।३ तीजे३ सह, तनय जकुंट२ दूजी२
कै हुव तह ॥
अजबसिंह१९३।४ चोथी४ तीजी३ तिम, तरनिमल्ल१९३।५ पंचम५
चोथी४ इम ॥६४॥
पहिली१चउ४न जनें ए पंच५हि,इक्क१हु न हुव सुता कि अलंचहि॥
पंच५सुतनमैं चउ४मृत अग्रज, वड कर्म१९३।१कोहि चल्यो कुल
ब्रज ॥६५॥
वढन१ घटन२ सवकै हि नियति वस, तँहँ बुध व्है जु न मोद१
सोक२ तस ॥
क्रम दुव२ ब्याह मनोहर१९२।४ के किय, तँहँ प्रभुराम२०३।४सुन

१धन देकर।६०। ग्रहा२विस्तार कर ।६१।३उत्सव ।६२।६३।४जोड़ा५सूर्यमल्ल।६४।६
मानों निषेध चाहकर अर्थात् अब वस है ऐसा चाहकर७समूह।६५।८भाग्यव-
श ९. चतुर होता है उसको न तो हर्ष होता है और न शोक होता है।६६॥

हु जिम जे किय ॥६६॥
सीसोदनि प्रथम१सिंहसुता, जो गंगा१९२।१ *अभिधान गुनजुता॥
जद्दव रामसुता स्यामा१९२।२ जिम, यह दूजी२कुमरानी तस इम६७
सबलसिंह१९२।१ गोपालसिंह१९३।२ सुव, †हिर दुव२ एहि मनोह-
र१९२।४ कौ हुव ॥
जानिय सु न प्रसव जास जनिय, भेद नाम अग्रिम ‡किरन भनिय६८
तीन३ बलू१मुख ¶भुजिष्या तनय, सभकुल ब्याहे तेहु नृप सनय
जिहिंजिहिं रानी संतति जोजो, सूचित किय पहिले क्रम सोसो ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रन दिय जेजे पटा १, किय सहतिय जे कृत्य २ ॥
सुनहु राम २०३।४ प्रभु तेहु सब; संतति क्रम अनुसृत्य ॥७०॥
हृदयनरायन १९२।२ कुमर हित, दै कोटा १ बरढंग ॥
जिम दूजी २ आंवाँ जुतहि, सुपहु दये हितसंग ॥ ७१ ॥
कति चोमाँ दिय केसव १९२ हिं, कहत बड़ोद १ कितेक ॥
जंपत कति अप्पिय जुग २ हि, इम संसेहु अनेक ॥ ७२ ॥
बंमोरी १ अरु डावरा २, अप्पि मनोहर १९२।४ अत्थ ॥
तिमहिं बलू १ आदिक त्रिक३हिं, समुचित दिय हित सत्थ ॥

॥ षट्पात् ॥

रानी जेठी १ राजकुमारि १९१।१ वापी इक १ कीनी ॥
बुंदीपुर वह विदित चतुर लोकन इम चीनी ॥
पहिले १ कटले पार द्वार पच्छिम ३ सैन दक्खिन२ ॥
जुपै वहनोति जस सारसवाळत कवि सक्खिन ॥

---

* नाम ॥ ६७ ॥ † स्वर्ण रूप अथवा हीरे के समान ‡ अगले मयूख में ॥६८॥ ¶ पासवान के पुत्र १ नीति पूर्वक २ क्रम से ॥६९॥ ३ स्त्रियों के साथ ४ हे रामसिंह ५ अनुसार ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ६ संदेह ॥ ७२ ॥ ७ अर्थ ८ उचित ॥७३॥ ९आवड़ी १० पड़िहारी ११ से

प्रभु[1]गृह१निपान[2]२उपवन[3]३पुनि सु रतन१९२१राज्यकरतहु रचहि
द्वारावतीहु[4] इक१ हरिसदन मंडत मह[5] भावी[6] सचहि ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

भोज १९१।१ सुजिष्यां[7] जो भनिय, फुल्ललता१ गुन[8] फार ॥
तिहिं लघु झोझू तालको, किय सु महा[9] कासार ॥ ७५ ॥
बहु सहँसन करि दम्मँ[10] व्यय, निपँत[11] फुल्लसर १ नाम ॥
जिहिं सक नव सर अष्टि १६५९ जहँ, रचिय ताल अभिरामँ[12] ।७६।
पुनि सहँसन उच्छव परहु, दम्मन खरचि उदार ॥
तस अप्पन१ सुत भोज १९१।२ को, किय कारि जग उपकार ।७७।
बिरच्यो उपवन १ भोज १९१।२ सुधँ[13], नवलक्खा१ तस नाम ॥
अब जँहँ १ ताल२ रु पुब्बँ[14]१ इत, रामबाग१ अभिराम ॥ ७८॥
मह्लन बिच बहल महल १, फुल्लमहल २ छवि फीत ॥
तिनके तर गजसाल ३ तिम, पहुँ[15] बिरचे जस प्रीत ॥ ७९ ॥
संभरनृप तीजो ३ सचिव, कायस्थहु इक कीन ॥
अभिँधा[16]करि जयमल्ल ३ वह, अबिरँत[17] हुकम अधीन ॥ ८०॥
बालचंद नामक सुधहि, जो मितनय हुव जास ॥
बालचंदपौंडा[18]१ बिदित, अबहु तदंकित[19] आसँ[20][21] ॥ ८१ ॥
तिन पहिलँ गहिलोतनी, अर्जुन १८८।१ पतनी अत्थ ॥
ताल १ रच्यो जो जयवतिय १८८।१ श्रीहरिमंदिर सत्थ ॥८२॥
तौल[22] कास पर नियत तव, किय माधव कायस्थ ॥
अबहु तदंकित घट्टँ[23] इक १, तारागढ दिस तत्थ ॥ ८३ ॥

---

१ मंदिर २ जलाशय ३ बाग ४ द्वारकामें ५ उत्सव ६ आगले समय में होनेवाला ।७४। ७पासवान ८ गुणों की समूह ९ बड़ा तलाव बनाना ॥७५॥ १० रुपये ११ निश्चय १२ सुन्दर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ १३ चतुर १४ पूर्व दिशा में ॥ ७८ ॥ १५ राजाने ॥ ७९ ॥ १६ नाम १७ निरन्तर ॥ ८० ॥ १८ भानजा १९ मुहल्ला २० उसके नाम से जाना जाता २१ है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ २२ तालाव के कामपर २३ घाट ॥ ८३ ॥

समय न है सुमिरन[1] सब न, जो सेसंहु[2] रहिजाइ ॥
सुमिरि सु माधव[3] घट्ट १ सम; अग्गैं कहियत आइ ॥ ८४ ॥
सक बसु नभ सोलह १६०८ समय, पंचमि[4]माघ प्रकास ॥
भँव[5] तँहँ भूपति भोज १९।२ को, अतुल ओजको[6] आस ॥८५॥
नयन बेद नृप १६४२ सक नियत, मिलि सित तेरसि १३ मग्ग॥
जनक पट्ट बैठो सु जँहँ, खंट्टि बिरुद गहि खग्ग ॥ ८६ ॥
समय बेद रस आंट्टि १६६४ सक, सुक्क[7] चउत्थिय[8] ४ स्वेत ॥
उज्झो वपु नृप भोज १९।२ अब, आपति[9] उचित उपेत ॥८७॥
है जु चूलियारामहद, तासौं दक्खिन ३।२ तत्थ ॥
कुमर रत्न १९२।१ तस दाह किय, सतीनं[10] अष्टक८ तत्थ ॥८८॥
रानी दूजी२ कूरमी१, निपुन जसोदा १९।१।२ नाम ॥
कोंबंधी[11] २ जो जसकुमारि १९।१।३ वह तीजो ३ अभिराम ॥८९॥
भाग्यवती १९।१।४ चोथी४ भनिय, रानी सुहि रट्ठोरि३ ॥
पुनिलालकुमारि १९।१।५ पंचमी, जँहँ झल्ली ४ हित जोरि ॥९०॥
इन चउ ४ रानिन कुल उभय२, सोभित करि बिहसंत ॥
धव[12] वपु कुशांप[13] स्व अंधकरि, अग्गिं[14] न्हान किय अंत ॥ ९१ ॥
चवी जु झल्ली पंचमी, ५ तुलसीबाट तदीय[15] ॥
सु अब रंगमंडप सबिध, पूजित समुभि[16] पदीय ॥ ९२ ॥
आदि१ रु छट्टी६ अन्तिम।७, रानी तीन३ जरी न ॥
जरी भुजिष्या[17] चउ४हिं जिम, हुती जदपि कुलहीन ॥९३ ॥

॥ मनोहरम् ॥

फुल्ललता १ रूपलता २ ललितकपूरलता ३,

---

१ स्मरण नहीं होता है वह २ बाकी रहजाता है ।८४। माघ ३ सुदि ४ जन्म ५ घर ॥ ८५ ॥ ६ यश उपार्जन करके ॥ ८६ ॥ ७ ज्येष्ठ सुदि ८ चौथ ९ भाग्य ।८७। १० आठ सतियों सहित ॥ ८८ ॥ ११ राठोड़ी ॥ ८९ ॥ ९० ॥ १२ पति के १३ मृतक शरीर को गोदी में धरकर १४ अग्नि स्नान किया ॥ ९१ ॥ १५ उसकी १६ चरण चौकी को पूजते हैं ॥ ९२ ॥ १७ पासवानें ॥ ९३ ॥

दि०पल्लता४ च्यारि४ हु भुजिष्या जरी जानिये ॥
दाह जँहँ कीनौं तिहिँ ठाम पीछै राजा रैन१२१२,
बाग जो बनायो छारबाग सु बखानिये ॥
दूजी२ तीजी३ जे भनी भुजिष्या तिनके हु तेनैं,
संकर १ रु गोवर्द्धन ३ प्रथित प्रमानिये ॥
रत्न १९२१ नरनाहको चरित्र अब ऐहैं तहाँ,
उनकी पूरी रजपूती पहिचानिये ॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥

अट्ठ८ सतिन जुत अधिपको, कुमर साह्नि मृतकर्म ॥
रवि१२ दिन संजम१नियम२रहि, भोजि द्विजन दिय भर्म ।९५।

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशभोजचरित्रे भोजसंततिपाणिपीडनतत्सन्तानवर्णनं १ भोजतद्राज्ञीतत्पार्श्ववर्तिनीनिर्मापितस्थानवर्णनं २ भोजपरासुभवनतदष्टसहधर्मिणीसहगमनं विंशतितमो मयूखः ॥ २० ॥

आदितस्त्र्यधिकद्विशततमः ॥ २०३ ॥

---

१ रत्नसिंह ने २ पुत्र ३ विदित ॥ ९४ ॥ ४ भोजन कराके ५ स्वर्ण दिया ॥९५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में भोज के सन्तानों का विवाह और उनके सन्तानों का वर्णन १ भोज के और भोज की रानियों तथा पासवानों के बनाए हुए स्थानों का वर्णन २ भोज का देहान्त और उसके साथ आठ सतियां होने का बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ तीन २०३ मयूख हुए ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा—बरस ऊन चालीस ३९ बय, ¹असित ²आदि १ आषाढ ॥
हड्ड६१न पति तँहँ रत्न१९२।१ हुव, पाइ पट्ट गुन गाढ ॥ १ ॥
हृदयनरायन१९२।२ कुल हुव जु, हिरडाउत२४।२० कहाइ ॥
चउबीसम २४ भेद सु चल्यो, इम हड्ड६१न विच आइ ॥ २ ॥
केसव भोजपउत्त५।२१कहि, केसवदास१९२।३ कुलीन ॥
उदित पचीसम २५ भेद यह, हुव हड्ड६१न अघहीन ॥ ३ ॥
सूनु मनोहर१९२।४को सकल१९३।१, जहाँगीर३८।१ढिगजाइ॥
रक्खि लोभ आश्रितरह्यो, पटा उचित कछुपाइ ॥ ४ ॥
तापीछैं लुपिगो सु तिम, जनन³ मनोहर १९२।४ जात ॥
न चली संतति दुहुँ४न के१९३।१, पलिशोधक विधि पात ॥५॥
न तो छवीसम २६ भेद नृप, हड्ड६१न यह होतोहि ॥
पै अब माधव१६३।२ वंस पर, जेहँ अंकहु जो२६हि ॥ ६ ॥
बैजनाथ सिवतैं बिदित, अनल दिस२ रु ढिग आहि ॥
बाग मनोहर१९२।४ को अबहु, तुम प्रभु जानहु ताहि ॥ ७॥
रायमल्ल१९१।३ सुत राम१९२।१जिहिं, पाहिलैं दूदा१९१।१ पास॥
कछु दिन कड्ढे सिसु कुमर, अंतर जनक उदास ॥ ८ ॥
बारह१२ हायन अव⁶ बय, इम दूदा१९१।१ ढिग एस ॥
बाहिर रहि खल इक१ बरस, दोस्यो बुंदिय देस ॥ ९ ॥
मुव दूदा१९१।१ तब रहि कुमति, सिरीफखाँ ढिग सोहि ॥
तस पंचन बनि सुरूप तँहँ, दुष्ट बल्यो कुलद्रोहि ॥ १० ॥
गो लैवे चरनाद्रिगढ, सोहु सिरीफ प्रसंग ॥
बहु अवाच्य बदि जवन जब, अरि१ हुव प्रत्युत¹¹ अंग ॥ ११ ॥

---

१ कृष्णपच ॥ १ ॥ २ ॥ २ भोजपोते ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ पिता ४ रोकनेवाला अथा ही पाया जाता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ अग्निकोण में ॥ ७ ॥ ८ ॥ बारह ६ वर्ष पर्यंत ७ बारह वर्ष की अवस्था से दूदा के पास रहकर ॥ ९ ॥ दूदा ८ मरा तब ॥ १० ॥ शरीफखां के ९ संबंध से १० खोटे वचन ११ उलटा ॥ ११ ॥

वेताल॥खिजिरैन१९२।१कुमर सिरीफखान सु मिलत तिम खिपमारि
रन भीरु गो भजि रामचंद्र१९२।१हु आस्यें बारि उतारि ॥
किय रीस बुंदिय सीस अकबर३७।१ईस सुनि यह काम ॥
मृत जो नवाब तदीय मनुजन धीर दिय धन१ धाम२॥१२॥
पठयो प्रयाग सिरीफसुत इहिँ बहुरि सूबा आप्पि,
रहि तास पासहु रामचंद१९२।१ थक्यो न रिपुपन थप्पि ॥
पुरकासिका१चरनादि२ सुख तजि रत्न१९२।१ बुंदिय पत्त,
अपनाइबे लिय रामचंद्र१९२।१।१ सिरीफसुत२अनुमत्त॥१३॥
पुनि राजमंदिरकी बिभूति सु लुट्टिलाइ प्रयाग,
हुव२ बेर बुंदिय देस दोरि दयो स्ववंसहिँ दाग ॥
अब रत्न१९२।१ भूप हन्यौं यहै बलि भ्रात तीजो३ बेर ॥
कछु काल पुब्बहि रायमल्ल१९१।३हु बास किय दिवंकेर१४
संगोद१ सहित पल्हापथार२ पुर यो तदीय उतारि,
मग सुद्धि रक्खि रु रामचंद१९२।१ लयो सु बोरत मारि ॥
कति ताहि ओज१९१।२ हन्यौं कहैं नृप है रु अब रतनेस,
बलि बुद्धिचंद१९२।३ तदीय भ्रात सु बुल्लयो सविसेस॥१५॥
सुत रायमल्ल१९१।३ पितृव्यका तीजो३ यहै सनमानि,
हय१ हत्थि२ दै रु कह्यो करी खल रामचंद्र१९२।१हि हानि॥
जिहिँ बुद्धिचंद्र१९२।३हि ब्हाँ दयो पुरसारथल१ हित जोरि,
बलि जाइ कैँ २ताके हि कुल घर आई है सु बहोरि॥१६॥
दस१० रायमल्ल१९१।३ तनूँज तिन बिच पंच५कुल धरे दिठ्ठ,
उनमैं बडो वह रामचंद्र१९२।१ बज्यो दिवान अनिठ्ठ१२ ॥
सुरि सत्रु भो कुलकोहि रत्न१९२।१ सुतो लयो तिन मारि,

१रत्नसिंह ने २सुख विगाडकर ३स्वामि ४ उसके लोगों को॥१२॥ ५ आदि ॥१३॥ ६ स्वर्ग गया ॥ १४॥ ७ उसके ८ खबर रखकर ॥१५॥ ९ काके का ॥१६॥ १० पुत्र ११ कुल को धारण करनेवाले १२ बुन्दी के भूपति का अनिष्ट ॥

तस रामसिंह१९२।२ द्वितीय२ भ्रातहु टेक निर्गुन टारि॥१७॥
बुध तास भ्रात तृतीय३ बिक्खि सु बुद्धिचंद१९२।३बिसासि,
पट्टा दयो ल्खि सारथल१ पुर रैन१९२।१ नृप गुनरासि॥
इम अप्प भूपति व्है इहाँ सब राज्य स्वीय सम्हारि,
बलि नैर दिल्लिय पत्त सद्दन साह चित्त बिचारि ॥१८॥
जिहिँ स्वीय नाम सलेमगढ१किय जो सलेम३८।१सजोर,
अब बज्जि साह जहाँनगीर२८।१ सु प्रबल न गिनत और॥
पतनी अयाजसुता करी घर डारि जो अति प्रेम,
सो हुरम नूरजहाँ१ कहाइ बढी बिमोहि सलेम३८।१॥१९॥
चउ४ अब्द तो पति तास सेर हन्यौं सु व्हीं हिय चाहि, ॥
न सक्यो सु मिलि रहि दूर दुक्खित नारि संक निबाहि॥
इक१ कालपरतहि दिट्ठि हुरम सु संक तस तजि एह ॥
उरसौं लगाइरहयो अचानक दोरि नेह अछेह ॥ २० ॥
अति नम्रता करि पाय चुंबि प्रसन्न तिहिँ करि आप ॥
लिय मंतु माफ कराइ दुव२दिस मंडि हित संलाप ॥
सर तर्क सोलह १६६५ मान सक इम होइ तस बस साह ॥
बाजीगरी जबुं सिक्ख बंदरकैं तदुक्ति निबाह ॥ २१ ॥
किन्नौं वजीर१अयाज१तास पिता मुसाहब काम ॥
अरु भ्रात आसिफखान२कौं किय दंडनायक२आम ॥
अनुजात तास द्वितीय२।३कौं दिय और कछु अधिकार३ ॥
भेज्यो महोबतखान४ दे सूबा सम्हारन भार४ ॥ २२ ॥
ऐसो वजीर भयो कृती पह साह स्वसुर अयाज१॥

।१७। १देखकर २ अपने राज्य को ३फिर ४नगर ॥१८॥ ५ अयाज की पुत्री नूरजहां ६ विशेष मोहित करके ॥ १९ ॥ ७ लज्जा अर्थात् उसके पति शेरखां को मारा था इस लज्जा से चार वर्ष पर्यंत नूरजहां से नहीं मिल सका ॥२०॥ ८ अपराध ९स्नेह के वचन बोलकर १० प्रमाणवाले संवत् में ११मानों १२उसके कथन का निर्वाहकरके॥२१॥ १३सेनापति १४सब सेना का१५छोटा भाई२२ १६पण्डित

जिहिँ न्याय अदल जमाइलिय जस रक्खि अपजस लाज ॥
जगमैँ प्रवर्त्तन अदल*बीजहु गिनत सु जहाँगीर३८।१ ॥
पै नूरमहल†हि तास सूचत न्याय लंघन पीर ॥ २३ ॥
यहतो अयाज महा धुरंधुरकी अदालति†आँहिँ ॥
मृगराज१सोँ अज२ वादमंडिय न्यायमग जिहिँ माँहिँ ॥
अवरोध नूरजहाँ१ गरैँ लगि साह२ हुव जमु अस्त ॥
तोहू अयाज जमाइ राज्य करे सब रिपु त्रस्त ॥ २४ ॥
सुमर्‍यो३ प्रजाहु न साह सब बिधि याहि जानि सहाय ॥
रहिबे दयो दुख काहुके न समप्पि समुचित राय४ ॥
नहि साह१ नूरजिहाँ२ बिनाँ कबहू सक्यो रहि नैंक ॥
चुगली५ गिनी हितकी भनी तउ आनि तापर चैंक६ ॥ २५ ॥
नृप सूर७ जोधपुरेसकी तनयाहु नारि निकेत ॥
चिर८ तास वास अलंघि कहुँ अवकास उत दिय चेत ॥
जब नूरमहल१अगम्य९है रजे आदि कारन जानि ॥
तोहू सकैँ न सु और२सोँ मिलि ख्यात प्रभुपन तानि । २६ ।
प्रच्छन्न तासन ढेर घरी कहुँ क्योँहु अवसर पाइ ॥
जबहू सु संकित लंघि मासन ओर तिय ढिग जाइ ॥
इम तक्कि ओसर साह गो रत्तोरि१०केहु अगार ॥
मन भीत तोहु टिक्यो मुहूर्त्तहि मज्झि असहन मार ॥२७ ॥
गहि काच भाजन११ भिन्न ताबिच पेय१२ समुचित गेरि ॥
हसि नम्र सूचि भई सु हाजरि कालयति१३ मुख हेरि ॥

इन्साफ का* कारण ॥ २३ ॥ †है १ जनाने में २ मारों ॥ २४ ॥ ३ स्मरण नहीं किया४उचित धन देकर ५किसीने हित की बात कही वह भी चुगली (पिशुनता) जानकर ६ क्रोधित हुआ ॥ २५ ॥७सूरसिंह की ८बहुत समय तक ९ रजस्वला आदि कारणों से गमन करने योग्य नहीं रहे तब ॥२६॥ १०कामदेव को ॥२७॥ ११पात्र १२पीने का उचित पदार्थ डालकर १३ कटाक्षवाला मुख देखकर

सल हास*नक्कहिं दै कह्यो किम पात्र भिन्न असुद्ध ॥
विहसी सु बुल्लिय रावरे प्रिय भिन्न पात्रहि बुद्ध[1] ॥ २८ ॥
सुनि रुट्ठि आपउ साहसो रु गंदैं[2] किते पुनि गोन ॥
भो रत्त[3] नूतन नारिप्रति जिम बाल धात्रिय भोन[4] ॥
दिन१ रत्ति२ की नहि सुद्धि दिल्लिय यौं सलेम ३८।१ अचेत ॥
सिखवैं जु नूरजिहाँ१ सुही बिरचैं सु भीससवेत[5] ॥ २९ ॥
बैठै सभाहु अयाज[6] प्रेरित क्योंहु जो कछु बेर ॥
कर तोंहु[7] पिट्ठि लग्योरहैं पटछन्न वा तिपकेर ॥
जब ह्वैरहि अंग रहै जुरे तबही परैं जक[8] ताहि ॥
यह रीति साह गही चही हु न नीति नैंक उमाहि ॥ ३० ॥
इत भ्रात संकर२ कौं चमूपति[9] रक्खि बुंदिय अत्थ ॥
संबोधि पट्ट कुमार गोपियनाथ१९३।१कौं हित सत्थ ॥
इम रत्न१९२।१ भूपति साह सेवन पत्त[10] दिल्लिय अप्प[11] ॥
देखी सु साह दसा असाधु[12] प्रभुत्व[13] खोइ कुदप्प[14] ॥ ३१ ॥
जबही सभा अवकास भो तब तत्थ हाजरि जाइ ॥
उपदा[15] १ निछावरि २ कैं रह्यो निजठौं खरो नृप आइ ॥
कुसलत्व पूछि रु साह अक्खिय आत क्यौं चिर[16] किन्न ॥
नृप किन्न विन्नति देस दुष्टन सोध अंतर दिन्न ॥ ३२ ॥
कछु अन्द भूप रह्यो तहाँ इम ताहि सद्धन काज ॥
अवनीस अज्ज[17] गये सबै तिम को रहैं सुरि अज्ज[18] ॥

---

* नासिका में खल डालकर १ हे चतुर आपको भिन्न पात्र ही प्यारा है ॥ २८ ॥ कितने ही २ कहते हैं कि फिर कभी नहीं गया ३ आसक्त ४ जिसप्रकार धाय के घर में बालक रहै तिसप्रकार ५ डर के साथ यही कार्य करता था ॥ २९ ॥ ६ अयाज की प्रेरणा से ७ तो भी पीठ पर नूरजहां का हाथ लगा रहता था ८ चैन ॥ ३० ॥ ९ सेनापति १० गया ११ आप १२ बादशाह की बुरी दशा देखी १३ प्रभुता गुमाकर १४ कुदर्प ॥ ३१ ॥ १५ नजर १६ देरी क्यों की ॥ ३२ ॥ १७ आर्य १८ आज उससे मुड़

इत साहके स्वसुरत्व[1] मोदित जोधपुरपति एह ॥
नृप सूर[2] देह बिहातभो गिन तोहु[3] जीवन नेह ॥ ३३ ॥
कौंबांधि गद्दिय[4] तास लौं गजसिंह पट्ट कुमार ॥
आयो सु पै तँहँ साह सेवन एह निज अनुसार ॥
इहिँ रत्न१कौं गजसिंह२ कौं गज खास इक१ इक१ अप्पि ॥
मन्न्यौं स्वसालक[5] तोहु निज इक१ हे[6] बिसेस समप्पि ॥ ३४ ॥
अंग्रेज २ अकबर[7]३७।१ बेँर छप्पन आष्टि१६५६ संबत आइ ॥
करते भये क्रय[8]१बिक्रया[9]२ दिक जे स्वसत्य[10] जमाइ ॥
अबलौं सबै लखते भये पटु अज्ज[11] मिच्छरन औन[12] ॥
बिपरीत त्यौं चलते लखे दुव२ काय१ मौंनस[13]२ बैन३ ॥ ३५ ॥
अब आइ दिल्लिय अष्ठ रस खट इंदु१६६८ संबत एहि ॥
उपदा[14] निवेदि अनेक अद्भुत साह मन सु बिसेहि[15] ॥
निज बुद्धितैं कलके रचे घटिका[16]१दि जंत्र अनेक ॥
के दूर[17] देखन जंत्र दर्पन२ तुपक३ क्रीडन४ केक ॥ ३६ ॥
नाना प्रकार दुकूल[18]५ दर्पन[19] भाजनादि निवेदि ॥
भरि भेट नूरजिहाँ१ नबाब२ नृपा३दि सब मन भेदि ॥
करि त्यौं वजीर ४ हु कौं प्रसन्न निकासि अप्पन काम ॥
धन मुल्ल[20] दै लिखवाइ लिय कछु नैर सूरति१ धाम ॥ ३७ ॥
खाडी तदुत्तर[21] पास घोघा २ बंदर रु खंभात ३ ॥
बिरचे अहमदाबाद४ जुत चउ४ ठाम कोठिन ब्रात[22] ॥
सौराष्ट्र१तैं तापी२ नदी लग कोन नैर्ऋत४ सीम ॥

कर कौन रहे १ स्वसुरपन से २ सूरसिंह ३ जीने से स्नेह जानता था तो भी ॥ ३३ ॥ ४ राठोड़ों की गादी ५ साला ६ घोड़ा अधिक दिया ॥ ३४ ॥ अकबर के७ समय में ८ मोल लेना ९ बेचना १० अपनी सत्यता जमाकर ११ आर्य और यवनों के १२ घर देखे १३ मन और वचन से ॥ ३५ ॥ १४ नजर १५ उन्होंने बादशाह के मन में प्रवेश किया १६ घड़ी आदि १७ दूरबीन ॥३६॥ १८ वस्त्र १९ काच के पात्र २० मूल्य (कीमत) देकर ॥३७॥ २१ उसके उत्तर दिशा में २२ समूह

निज बासकौं इन पुब्ब यौं चउ४ ठाम डारिय नीस ॥ ३८ ॥
सोदागरी पट्ट पुत्र१ मित्र२ कलत्र[1]३ संगि[2]४न अत्थ ॥
अंग्रेज ए रहिबे लगे घर मंडि तब[3] सेन अत्थ[4] ॥
उपदा[5] अनेक प्रकार ओरहु अज्ज[6]ज१मिच्छँ[7]२न अप्पि ॥
मन१बैन२धर्म३ अधर्म४ लौं सबके लये सब मप्पि[8] ॥ ३९ ॥
बानिज्यके व्यवहारतैं बसु[9] संचि लक्खन[10] जांत ॥
लखि जेय[11] लंडनलौं रहे इतको उदंत[12] लिखात ॥
पहिलैं हि अकबर३७।१ के अनंतर[13] मान[14]१ इत खिन[15] पाइ ॥
भेज्यो अयाज बजीर दक्खिन ३।२ सेस[16] जितन भाइ ॥ ४० ॥
सुत जगतसिंह मरयो जु तस सुत मुख्य जु महासिंह३ ॥
वह स्वीय नत्तिय[17] संगलै तँहँ मान गो जय ईह[18] ॥
आसेर१गढ गत जित्ति जिहिँ बुरहानपुर२ अपनाइ ॥
जँहँ मंजरा१ तापी[19]१ धुंनी मिलि जात तँहँ पुनि आइ ॥ ४१ ॥
जिम सप्तपुट[20] गिरिको प्रदेस१ रु धूलिका२गत जित्ति ॥
किय वाह वाह कहाइ यौं कछवाह अप्पन कित्ति[21] ॥
जबही मुहम्मद १५।१ नाम तुगलक ३ पंद्रहम १५ जवनेस ॥
दिल्ली उजारि लग्यो बसावन देवगढ २ सह देस ॥ ४२ ॥
अरु देवगढ १ अभिधान[22] दिय आबाद दौलत आदि२ ॥
बसिबे लग्यो तिहिँ राजधानिय रक्खि जो हठ वादि ॥
सकको[23] चउद्दहमौं१४ सतक१०० जो होत पूरन जत्थ ॥
तुगलक३मुहम्मद साह१५।१०हाँ बसिबो बिचारिय तत्थ । ४३।

॥ ३८ ॥ १ स्त्री २ साथी ३ तब से ४ यहां रहने लगे ५ नजराना ६ आश्चर्य ७ यवनों को देकर ८ माप लिये ॥ ३९ ॥ ९ धन इकट्ठा करके १० समूह ११ जीतने योग्य देखकर १२ वृत्तान्त १३ पीछे १४मानसिंह को १५ समय पाकर १६ बाकी के देश को ॥ ४० ॥ १७ अपने पोते को १८विजय की इच्छा से १९ तापी नदी ॥ ४१ ॥ २० सतपुड़ा पर्वत २१ कीर्ति ॥ ४२ ॥ देवगढ का २२नाम दौलताबाद दिया २३ विक्रम के शाक का ॥ ४३ ॥

बसि पैं सक्यो न गयो सु दिल्लिय लौ प्रजाहिँ बहोरि ॥
कर प्राज्य[1] भार प्रजा तदीय[2] सहै महा दुख कोरि ॥
वह देवगढ अपनाइबै पठयो सु मान पउत्त[3] ॥
जिहिँ दुर्ग पत्तन जुद्ध मैं न भयो पहै जय जुत्त ॥ ४४ ॥
अन्नादि आगम[4] रोकि तिहिँ चिरं[5] बेढि न रह्यो एह ॥
हठ जुद्धमैं तहँ मान नत्तिय[6] स्वर्ग गो तजि देह ॥
सुनि काम आपउ स्वीय नत्तिय मान तहँ अति सोचि ॥
असुहीन[7] तुल्य भयो तथापि[8] सु साह हित[9] आलोचि ॥ ४५ ॥
जितँ[10] जोर१ लभो तिहिँ त्योँहि तजि जितँ[11] थान२ आन जमाइ ।
अरहौ[12] मरयो तिहिँसोक आकुल मान १ निज पुर आइ ॥
नत्ती[13] तनै जयसिंह४ तब आमेर हुव नरनाह ॥
जुज्झारसिंह ३।२ पितृव्य[14] जिहिँ बैठो झलाय दुबाह[15] ॥ ४६ ॥
ताकोहि बंस झलाय १ ईसरदा२दि डंगन तत्थ ॥
सु बजैं दुरनामन मानसिंहोत १ राजाउत २ सत्थ ॥
जुज्झार ३।२ को यह बंस जु महासिंह ३।१ को अनुजात[16] ॥
भो भोज १९।१।२ को दौहित्र सो रघुनाथ३।३तस लघुभ्रात ॥
इनको भतीज सु भूपव्है जयसिंह ४।१ पुर आमेर ॥
निज साह सेवन एह आयउ सोहु दिल्लिय नेर ॥
गजसिंहसौं पहिलैं गजा१दिक २ तत्थ अप्पिय ताहि ॥
यह वत्त आँ[17]दि १ तदंतर[18]२ हह्ह ६।१।१ कबंधर२ आगम[19] आहि ॥ ४८ ॥

---

१ हासिल के बहुत भार से २ उसकी प्रजा ने ३ मानसिंह ने अपने पोते को भेजा ॥ ४४ ॥ ४ आना ५ बहुत समय तक घेरा देकर ६ मानसिंह का पोता ७ मरे हुए के समान होगया ८ तो भी ९ हित विचारकर ॥ ४५ ॥ १० विजय नहीं हुआ उसको उसी प्रकार छोडकर और ११ विजय कियेहुए स्थान में आण जमाकर १२ शीघ्र ही १३ पोता का पुत्र १४ काका १५ वीर ॥ ४६ ॥ १६ छोटा भाई ॥४७॥ १७ यह वार्त्ता पहिले की है १८ जिसपीछे १९ आना हुआ ॥४८॥

अंग्रेजर कोठिन बंधिबो इनसौंहु उत्तर एह ॥
अब साह लघु सुत खुरम ३११२ बिरचित अनेय सुनहु अछेह ॥
खुसरो ३९१२ जु अग्रज कैदहो खल ताहि कछु बिधि खंडि ॥
मन बप्प गद्दिय लैन चाहि बिरोध तासन मंडि ॥ ४९ ॥
जगतेस २ पुत्र रु स्नान १ नत्तिय काम आयउ जत्थ ॥
तजि नैर दिल्लिय भज्जिगो सु सहाय पावन तत्थ ॥
मिलि वप्प बैरिनसौं छली तिनकोहु बंट मनाइ ॥
लग्गो सु दिल्लिय देस दव्वन जोर तोर जनाइ ॥ ५० ॥
पठयो महोवतखान तापर साह दै दल पूर ॥
करि जुद्ध जातहि खुरम ३९१२ कौं सु भजाइ आयउ सूर ॥
जनके कहंत बजीर प्रेरित साह गो तिहिं जुद्ध ॥
बरनैं किते सु नवाब गो तिहिं त्यों लह्यो जय बुद्ध ॥ ५१ ॥
बीजापुरा१दि अपाच्य मिच्छन लै सहाय बहोरि ॥
दिल्लीस देस लग्यो सु लुट्टन नर्मदा लग दोरि ॥
इम होत दिस दिस चिक्ख बिग्रह गर्व गोरंहु आनि ॥
बदलेहि बारियदुर्ग बलि जवनेस घातसहिं जानि । ५२ ।
खिच्ची१३ हु ईस्वरदास सो लहि छिद्र जो गहि खग्ग ॥
इतकौं मऊ१पुर पैठि गो पुनि लै स्वबीरन अग्ग ॥
इम रत्न१९१११सौं तब साह अक्खिय गोरवारिय गंजि ॥
भिरि हड्ड६१ जातहि लै मऊ१ इत दर्प खिच्चि१३न भंजि ।५३।
मम बीर जात कुपुत्र पैं तुम जाहु पुनि तिनमाँहिं ॥

अंग्रेजों का दक्षिण में कोठियें बांधकर रहने की वार्ता इनसे भी १ पीछे की है. खुर्रम की रची हुई २ अनीति को सुनो ३ मारकर ॥ ४९ ॥ ४ तहां ५ पिता के शत्रुओं से मिलकर ६ हिस्सा ॥ ५० ॥ कितने ही लोक कहते हैं कि वजीर की ७प्रेरणा से बादशाह ही उस युद्ध में गया था ॥ ५१ ॥ ८ दक्षिण के यवनों से ९ गौड़ क्षत्रिय भी घमंड लाकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

नृप बंधि१ आनहु मारि२ कै तिहिँ छोरिबो सुभ नाँहिँ ॥
इम सिक्ख लै नृप आइ बुंदिय सज्जि अद्ध३ अनीक ॥
पठयो सु बारिय दुर्गपैं बहु पुज्जि बाहु प्रतीक ॥ ५४ ॥
तँहँ पुत्र कर्ण कबंध को जिहिँ नाम अबिदित१ ताहि ॥
जिम गोर जुग्गियदासको लघुपुत्र सुंदर२ जाहि ॥
करिकैं चमूपति पिठ्ठयो दल गोरँ जित्तन कज्ज ॥
रट्ठोर१ गोर२ उभैर गये बनि सुरूप दब्बन रज्ज ॥ ५५ ॥
जयभो न ह्वाँ तँहँ होत संसय घोर१ गोर२ जुरे१ कि ॥
मन क्योंहु गोर१ कबंध२ के इत माँहि माँहि मुरे२ कि ॥
प्रतिमल्ल गोर बलिष्ठ बारिय त्यों सहेन परे३ कि ॥
कछु छद्मसौं जुरिकैं अचानक ए अधीर करे४ कि ॥ ५६ ॥
बिधि कोहु होहु परंतु बुंदिय चक्क आस्य बिगारि ॥
मुरिकैं भज्योहि चमूप जुग२ जुत भीर गति मति मारि ॥
इत गोर गज्जिय दुर्ग बारिय रक्खि अप्पन आन ॥
सुनि हारि सो इत दुर्मनाँ हुव रत्न१९२१ तैं सुलतान ॥ ५७ ॥
इत आत भज्जि अनीकिनी पहु रत्न१९२१ त्यों अनखाइ ॥
रट्ठोर१ गोर२ उभैर दये निज देसतैं निकराइ ॥
रट्ठोर कर्ण१ प्रसन्नभो निज पुत्र कह्वन रैन१९२१ ॥
न परंतु जुग्गियदास२ भो रिस आनि स्वसुरहु नैन ॥ ५८ ॥
चढिगो मऊ१ पुर लैन भूपहु सज्जि दुद्धर चक्क ॥
वह काढि खिड्डिय१३ अप्पनों करि देस हड्ड१८न अक्क ॥

आधी १सेना सज्जित करके २अङ्गों सहित भुज पूजकर ॥५४॥ जिसका नाम ३नहीं मालूम है ४ सेनापति करके ५ भेजा ६ गौड़ों को ७ राज्य ॥५५॥ ८सन्देह ९गौड़ और राठोड़ों के मन परस्पर मुड़े १०शत्रु ११ छल से युद्ध करके ॥५६॥ १२ बुन्दी की सेना १३मुख बिगाड़ कर १४ उदास ॥ ५७ ॥ १५सेना १६ राजा रत्नसिंह ने क्रोध करके ॥ ५८ ॥ १७ चक्र (सेना) १८ हाडों का सूर्य

थित नैर बुंदिय भ्रात संकर२*दंडनायक थप्पि ॥
स्व कुमार गोपियनाथ१९३।१कौं तिम राज्य भार समप्पि ।५९।
जवनेसके दलमैं मिल्यो नृप रत्न१९२।१ हू द्रुत जाइ ॥
उततैं सु दिल्लिय†वाहिनी नृपतैं मिली मग आइ ॥
गजसिंह१ भूप कबंध त्यौं जयसिंह२ कूरम गज्जि,
सह त्यौं महावतखान३ मिच्छ अजीमबेग४हु सज्जि ॥६०॥
इत्यादि साह प्रबीर मिलतहिं रत्न१९२।१तैं हित आनि,
मन इक्क१ ठानि चले सबै गाहिलौन खुरम३९।२हिं मानि ॥
इत नैर बुंदिय उप्फन्यौं[2] सठ गब्ब१[3] जुब्बन२[4] साथ ॥
नरनाह रत्न१९२।१ कुमार पट्टप नाम गोपियनाथ१९३।१॥६१॥
दस इक्क१ व्याह दयो बिबाहिं जु भूप रत्न१९२।१ उदार,
परदार[6] संग रच्यो तथापि[7] सु मार[8] मत्त अपार ॥
चंदेरनी इक ब्रह्मनी[9] अति रूप सोभित चाहि,
तरुनत्व[10] दर्प[11] कुमार बुल्लि[12] भजै[13] तिरोहित[14] ताहि ॥ ६२ ॥
इक१ बेर२ अनेहँ[15] दुरै कुकर्म तथा न संतत[16] एह,
गिनि धर्महीन कुमारकी निंदा बढी प्रतिगेह ॥
जब रत्न१९२।१ बुंदिय नैर आयउ तत्थ तेहु द्विजात[17],
मिलि सर्व पुच्छत यौं भये पुर इक्क चोर न मात ॥ ६३ ॥
ताको ब[18] हाइ करैं कहा हम रत्न१९२।१यौं सुनि तत्थ ॥
सुतकौं न जानि कह्यौ करो तुम जो बनैं सु समत्थ ॥
जानैं स्व पुत्रहि चोर तो कारांधरैं[19] द्रुत जाहि,
ऐसो यहै नृप जास सर्व प्रजा स्वसंतति[20] आहि ॥ ६४ ॥

---

*सेनापति।५९। †सेना।१साथ ॥६०॥२ पढा ३गर्व (घमंड) ४ जोबन के साथ५राजा रत्नसिंह का ॥ ६१ ॥ ६ पराई स्त्री ७ तो भी ८ अपार कामदेव से मस्त होकर ९ ब्राह्मणी १० तरुणपन के ११ घमंड में १२ बुलाकर १३ सेवन करैं १४ गुप्त ॥ ६२ ॥ १५ समय १६ निरन्तर नहीं छिपता १७ ब्राह्मणों ने मिलके पूछा कि ॥ ६३ ॥ १८ अब १९शीघ्र कैद करदेता. सब प्रजा २० अपने सन्तान के सदृश है

सुनि गुप्त चोर पुकार सो दँन आक्खि समुचित दैन,
गय साहके दलसंग दक्खिन१।२ खेह ढंकत गैन ॥
बुंदीस पट्ट कुमारसों अवसान जो हुव वत्त,
सुनिये वँ हे प्रभुराम२००।४ सूचनं ठाम सोहु समत्थ ॥६५॥

॥ दोहा ॥

गोपीनाथ१९३।१ कुमार गुन, इतर सु जस अवदात ॥
लंपटपन१हि कलंक रलगि, विदित मूढपन वात ॥ ६६ ॥
क्रम उपँयम आदिक कथन, अखिलहि तास उदंत ॥
आयो अवसर सुनहु अब, समुझि जथातथ संत ॥६७॥
गोपीनाथ१९३।१ प्रसंग गत, सब भ्रात१ रु संतान२ ॥
निश्चित इहाँ कहिपन नतो, संभव रत्न१९२।१ वसान ॥६८॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठ६राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे बुन्दीदेशधावकरामचन्द्रवधोत्तररत्नसिंहदिल्लीगमन १ नूरजहांवशवर्तिजहांगीरास्तप्रायीभवनमूरजहांजनकप्रधानामात्यायाजप्रशंसासादन२ योधपुरेश्वरशूरसिंहमरणोत्तरपट्टपपुत्रगजसिंहासिंहासनाक्रमण ३ विविधवस्तुनिवेदनप्रसन्नजहांगीरक्रीतसूरतिनगर१ घोघाबन्दर२खंभात३अहमदाबाद४प्रदेशाङ्गलपण्यगृहनिर्माणनिवसन ४

॥ ६४ ॥ उचित १ दण्ड देना कहकर २ आकाश को ३ अन्त में जो वार्ता हुई सो ४ अब हे प्रभु रामसिंह ५ सूचना करने के स्थान पर सब सुनो ॥ ६५ ॥ ६ उज्ज्वल ॥ ६६ ॥ ७ विवाह ८ उसका वृत्तान्त ६ हे सन्त (श्रेष्ठ) ॥ ६७ ॥ १० निश्चय ११ रत्नसिंह के अन्त पर कहना सम्भव था ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में बुन्दी के देश में दौड़नेवाले रामचन्द्र को मारकर रत्नसिंह का दिल्ली जाना १ नूरजहां के वश में होकर जहांगीर का अस्तप्राय होना और नूरजहां के पिता वजीर अयाज का प्रशंसा पाना २ जोधपुर के राजा सूरसिंह के देहान्त होने पर उसके पाटवी पुत्र गजसिंह का गद्दी बैठना ३ अनेक पदार्थ भेट करने से बादशाह जहांगीर को प्रसन्न करके मूल्य देकर सूरति नगर, घोघाबन्दर, खम्भात और अहमदाबाद में अंग्रेजों का कोठियें ब-

अमात्यप्रेषितकूर्ममानसिंहाशेरदुर्गबुरहानपुरादिप्रदेशविजयप्रशंसा-पात्रीभवन ५ स्वपौत्रमहासिंहमरणमृतप्रायामेरागतमानसिंहमरणो त्तरतत्प्रपौत्रजयसिंहभूपतीभवन ६ जहांगीरात्मजखुरमपितृप्रतीपादि ल्लीनिष्क्रमणानन्तरपठानमोहोबतखांपराजयन ७ बारीदुर्गगौड़प्राती प्यहेतुयवनेन्द्रादेशबुन्दीशरत्नसिंहनिजनेम्यसैन्यबारीदुर्गप्रस्थापनत-त्पराजयप्रत्यावर्तन ८ विजितमऊपुरस्वरत्नसिंहखिचिनिष्कासनान-न्तरस्वपुत्रगोपीनाथायत्तीकृतबुन्दीप्रकखुरमप्रस्थितबलसंमिलन ९ र त्नसिंहपट्टपुत्रगोपीनाथदुराचरणविवहनतत्सहोदरसंततिशंसनसंधा नमेकविंशो मयूखः ॥ २१ ॥ आदितश्चतुरुत्तरद्विशततमः ॥२०४॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम मयूखहि राम२०।१४अनु, बरनैं रत्न१९।२१ बिबाह ॥
संतति[1] क्रम तस अब सुनहु, रक्खैं निज कुल राह ॥ १ ॥
कुमर च्यारि४नृप रत्न१९।२१के, खटदहु केतिन[2] मत ख्यात ॥
प्रकटिय दुव२ कन्या निपुन, अब क्रम निश्चय आत ॥ २ ॥

नाकर रहना ९ वजीर के भेजेहुए कछवाहा मानसिंह का आशेरगढ बुरहानपुर आदि प्रदेशों को जीतकर प्रशंसा प्राप्त करना ५ अपने पोते महासिंह के मरने से मरण प्राय होकर आमेर में आयेहुए मानसिंह के मरने पर पोता के पुत्र जयसिंह का राजा होना ६ जहांगीर के पुत्र खुरम का पिता से विरुद्ध होकर दिल्ली से भागे पीछे पठान मोहोबतखां से पराजित होना ७ बारीगढ के गौड़ों की विरुद्धता के कारण बादशाह की आज्ञा से बुन्दी के राव रत्नसिंह का आधी सेना को बारीगढ पर भेजने के अनन्तर उस सेना का पराजित होकर पीछा आना ८ राव रत्नसिंह का मऊपुर से खीचियों को निकालकर उसके पीछे बुन्दी को अपने पुत्र गोपीनाथ के आधीन करके खुरम पर भेजी हुई बादशाही सेना के शामिल होना ९ रत्नसिंह के पाटवी पुत्र गोपीनाथ के दुराचरण के साथ उसके विवाह और उसके भ्राताओं के सन्तान के कथन की प्रतिज्ञा का इकीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चार २०४ मयूख हुए ॥

१ सन्तान का ॥ १ ॥ २ कितनेक के मत से ॥ २ ॥

गोपिनाथ १९३।१ माधव १९३।२ गंदित, नाम हरि१९३।३रु जग-
नाथ१९३।४ ॥

बदनकुमरि१९३।१हरिकुमरि१९३।२बौलि,सुता उभय२गुन साथ॥३॥

बदनकुमरि१९३।१अनुजहिबदत,गनंकतिअखय१६३।५सुजान१३९६
बालहि मृत इम नहिं विदित, दोउ२न गिनत निदान ॥ ४ ॥

नव ९ रानिन विच जिन जनित, ए छ६ कि अठ ८ अपत्य ॥
सु पै राम २०।४ प्रभु क्रम सुनहु, मिथ्यापन अवमत्य ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

पहिलो १ तँहँ गोपीनाथ १९३।६ पूत, सीला१९२।१ कछवाही
जो प्रसूत ॥

तीजी३ जांबवती१६२।३ कै तनूज, पटु दूजो२ माधव १९३।२
प्राप्तपूज ॥ ६ ॥

या३कैहि चउम४जगनाथ१९३।४एह,सोदर दुव२भ्राता ते सनेह॥
जिम चोथी४ रानी प्रसव जात, हरिसिंह१९३।३कुमर तीजो ३
सुहात ॥ ७ ॥

जेठी१सुता बदनकुमरि१९३।१जोहि, है दूजी२रानी जनित सोहि॥
यह गिरिपुर राउल पुंज अँत्थ, स्वकँनी नृप व्याहिय रीति सत्थ ॥
जामाँहिं पुंजसनँ पुत्र जात, गिरिधर तस नामहु कवि गिनात ॥
सो दूजो२ तोमरिकी प्रसूति, यह बदनकुमरि १९३।१ पहिली१
सँऊति ॥ ९ ॥

तिम रानाउति रंभावती१९२।९जु,मंभर कलत्र नवमी९सतीजु॥
ध्रुव तास प्रसवहुव अवधि धारि, कन्या यह दूजी २ हरिकु-
मारि१९३।२ ॥ १० ॥

१कहते हैं २ पुनि ॥ ३ ॥३ छोटे भाई ४गिनते चतुर्थ ५ कारण ॥४॥ ६सन्तान ७ मिथ्यापन का अपमान करके अर्थात् सत्य सत्य सुनो ॥ ५ ॥ ८पूजने योग्य ॥ ६ ॥ ७ ॥ ९ डूंगरपुर के रावल पुंजा के १०अर्थ ११अपनी पुत्री को ॥ ८ ॥ १२ पुंज रावल से १३ सौति (सौत) ॥ ९ ॥ चहुवाण की १४स्त्री ॥ १० ॥

याकों हम भाखत मृत*अनूढ, वहु बीकानैरैप कर्ण व्यूढ ॥
सोतो न बनत तँहँ३ सूरसीहँ१, इत सत्रुसल्ल १९४।१ बुंदिस२ अबीह ॥ ११ ॥
जिम दिल्ली२पति साहेजिहान३।१।२, समकालहुते ए३हे सुजान ॥
वह सूरसिंह१ सुत कर्ण२ आंहि, सो भावसिंह१९५।१ उँपकृत सदाहि ॥ १२ ॥
सुत चउ४ तस अनुपम३।१ पद्मसीह३।२, इम केहरि३।३ मोहन रन अबीह ॥
सो मोहन ३।४ मृगरन कहुँ रिसाइ, इक मिच्छ हन्यो मद जोर आइ १३
सो मिच्छ हन्यौं जिहिं पद्मसीह ३।२, नानौं न रत्न १९२।१ तस अघ निरीह ॥
नृप चंद्राउत्तहु रत्न१नाम, रामपुर भयो इक भूप राम२०१४।।१४।
वह तस कनीजँ जो पद्म३।२ आस, सो हमहु न जानत ख्याति तास
बुंदीस रत्न १९२।१ चउ ४ सुत विवाह, सुनिये वँ राम २०।१।४ प्रभु सह सराह ॥ १५ ॥
पट्टप जो गोपीनाथ१९३।१ पुत्त, व्याह्यो एकादस११जस बहुत ॥
कुमरानी तैं अंवा कुमारि१९३।१, पहिली१रानाउति हित प्रसारि१६।
जगमाल रान तनयासु जाहि, वर उदयनैर आयो विवाहि ॥
सुहि दीपकुमरि१९३।१ कहियत सुधाम, नृप ताको दूजो२ पदहु नाम ॥१७॥

---

*विना विवाही मरी१वहुतलोक बीकानेर के राजा कर्णसिंह को२परनाई कहते हैं ३ उस समय वहां सूरसिंह था४निर्भय ॥११॥ ५एक समय में थे६हुआ७उपकारी ॥१२॥॥१३॥ ८रत्नसिंह उसका नाना नहीं होसक्ता९पाप की इच्छा नहीं रखने वाला १० हे राजा रामसिंह ॥ १४ ॥ ११ कन्या का पुत्र (दौहित्र) १२ हुआ १३ अब ॥ १५ ॥ १६ ॥ १४महाराणा उदयसिंह के देहान्त होने पर महाराणा प्रतापसिंह का छोटा भाई जगमाल उदयपुर की गद्दी पर बैठगया था जिस को मेवाड़ के उमरावों ने गद्दी से उतार कर प्रतापसिंह को राणा बनाया

सालहर अधिप पित्थल सुताहु, व्याही मदनावति१९३।२समंह व्याहु॥
चालुक्ककुल संभव सुभ प्रचार, दूजी२ कुमरानी यह उदार ॥१८॥
चंद्राउति तीजी३ उचित चाहि,अभिधान बदनकुमरी १९३।३उमाहि॥
कन्या जु चंद सीसोदकेर, व्याह्यो सु रामपुर लग्न बेर ॥१९॥
बलिभद्र जाहि चालुक बघेल, मेदिनि राजहु सुहि नाम मेल ॥
कन्या तदीय जु सदाकुमारि१९३।४,धुव लालमति१९३।४सु अभि-
धा दुरधारि ॥२०॥
बंधूगढ चोथी४ हित निबाहि, बुन्दीस कुमर लायो बिबाहि ॥
कुल तोमर साँईदासकेर, सुतिका जु रामकुमरी१९३।५सुबेर।२१।
सुहि पट्टमदेवी१९३।५ नाम साहु, बिवही पट्टनि पंचम५ बिबाहु ॥
गोपालदास सोपुर जु गोर, जसकर्त्त सोहि जुग२ नाम जोर॥२२॥
कहियत मदनावति१९३।६तस कनीसु,बर आनी छट्ठी६बरि बनीसु॥
जिम सप्तम७ बीकानेर जाइ, पट्ट रायसिंह दुहिताहु पाइ ॥ २३ ॥
अभिधान राजकुमरि१९३।७सु अगूढ, बरनी घरआनी लग्न व्यूढ॥
चिमनकुमरि१९३।८ अष्टम८ व्याह चाहि, स्व सुता दिय तोमर सब
ल साहि ॥२४॥
पट्टनि दुर तोमरिन व्याह पात, गुग्गेरहु दोउ२न कति गिनात ॥
सेखाउत कूरम भीमसीह, इम बुल्लि मनोहरपुर अबीह ॥२५॥
अप्पन सुतासु तिहिं सह उछाह, व्याही नाथकुमरि१९३।९ नवम९
व्याह ॥
मह सहँसमल्ल कूरम कनीसु, बिबही कमला१९३।१०दसमी१० बनी
सु ॥२६॥

इसकारण जगमाल को यहां राणा लिखा है ॥ १७ ॥ १ उत्साह सहित २ जन्म ॥ १८ ॥ ३ नाम ॥ १९ ॥ ४ दो नामवाली ॥ २० ॥ ५ श्रेष्ठ समय में ॥२१॥ ६ साधु (श्रेष्ठ) ७ विवाही ॥ २२ ॥ २३ ॥ ८ दुलहन को ९ लग्न पर विवाह करके ॥ २४ ॥ २५ ॥ १० उत्सव से ॥ २६ ॥ २७ ॥

कछवाह कन्ह तनुजा कुलीन, करगहि मह एगारहम११ कीन ॥
बर अंतिम गोपीनाथ१९३।१ ब्याह, आनी सदाकुमरि१९३।११सह उछाह ॥ २७ ॥

षट्पात्

पहिली१ तीजी३ पितर गिनहु सीसोद१वंस गत ॥
दूजी२ चोथी४ दुहुँ२न महिप चालुक२ अन्वय मत ॥
पंचमि५ अष्टमि८ सुपहु जथा तोमर३ कुल जाई ॥
रमनि गोरि६।४रठोरि५।७ पृथक इक१ इक१ कुल पाई ॥
कछवाह६ वंस अंतिम त्रिक३रु अंत्य ११ नरूकी गिनहु इत ॥
दसमी१०रु यहहि एकादसी११दोउ२न पिउहर नन बिदित।२८।

॥ दोहा ॥

अधिप रत्न१९२।१ सुत ज्येष्ठ १ इम, बरि एकादस११ ब्याह ॥
सुत तेरह१३ अरु इक१ सुता, लहे कुमर अर्य लाह ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रथम१सत्रुसल्ल१९४।१पुनि इंद्रसल्ल १९४।२ सु द्वितीय२ इम ॥
बैरिसल्ल१९४।३बल बिदित तदनु हुव राजसिंह१९४।४ तिम ॥
मुहुकम१९४।५ पंचम५ कुमर उदय१९४।६छट्ठो६ रन अद्भुत ॥
सूरसिंह१९४।७ सप्तम७ रु स्यामसिंह१९४।८ सु अष्टम सुत ॥
क्रम नवम९महासिंह१९४।९सु कुमर दसम१०केसरी १९४।१०दुजनँदम
जिम कनकसिंह१९४।११नगराज१९४।१२जँहँ रामसिंह १९४।१३ तँहँ तेरहम१३ ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

क्रम सन ए हुव कुमरके, सुत तेरह१३ अति सूर ॥
सदाकुमरि१९४।१हुव इक१सुता, पटुपन निजनिज पूर ॥ ३१ ॥

---

१ पिता २ वंश ३ भिन्न ४ प्रसिद्ध नहीं है ॥ २८ ॥ ५ अच्छे भाग्य के लाभ से ॥२९॥ ६ जिसपीछे ७ दुष्टों को दण्ड देनेवाला ॥३०॥ ८ चतुरपन ॥३१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सत्रुसल्ल१९४।१पट्टप पहिलो१सुत, चोथो४राजसिंह१९४।४रन अच्युत
कुलचालुक्क दूजी२कुमरानी, मदनावती१९३।२जने दुव२मानी॥३२॥
इंद्रसल्ल१९४।२दूजो२बल आकर, पंचम५मुहुकमसिंह१९४।५धर्म पर
तीजी३बदनकुमरि१९३।३चंद्रावति, सोदर ए दुव२जनैं बहन श्रुति ३३
बैरिसल्ल१९४।३तीजो३सोभित बल,उदयसिंह१९४।६छट्ठो६जसउज्जल
लालमती१९३।४चोथी४वाघेलिय, अवसर दुव२हि तनय जनि एलिय
सूरसिंह१९४।७नामकसप्तम७सुत,जानहुदसम१०केसरी१९४।१०संजुत
छट्ठी६मदनावती१९३।६गोरि छम, दुव२सगर्भ ए जनैं अरिंदम॥ ३५ ॥
अष्टम८ स्यामसिंह१९४।८ बिधि अनुसरि, कन्या तस अनुजा सदाकुमरि१९४।१ ॥
रामकुमरि १९३।५ तोमरि कुमरानिय, जुग२सुत१ सुता२ जने ए जानिय ॥ ३६ ॥
जु नवम ९ महासिंह १९४।९ तस जननी, नाथकुमरि १९३।९ नवमी९जस जननी ॥
तसजननी जस जननी२ अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥
एगारहम११ सु कनकसिंह१९४।११इम, जहँ नगराज१९४।१२ बारहम१२क्रमजिम ॥ ३७ ॥
राजकुमरि१९३।७सत्तमी७स्व औरस, जुग२छोरि जनैं ए आति जस।
कछवाही कमला १९३।१० दसमी१० क्रम, रामसिंह १९४।१३ इक१ तास तेरहम१३ ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

आदि१अष्टमी८अंतिमा११, त्रिक३कुमरानिन तत्थ ॥

---

१ सोलंखी ॥ ३२ ॥ २बल की खान ३ वेद को धारण करनेवाले ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ४ समर्थ ५ शत्रुओं को दण्ड देनेवाले ॥ ३५ ॥ ६ छोटी बहिन ॥ ३६ ॥ ७ यश की ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

रहिय अहो संतति रहित, स्वस्व बिफल विधि सत्थ ॥ ३९ ॥
आदि त्रिक३ रु पंचम५ नवम९, पंच५ सुतन कुल पोत ॥
चोथे४को कछु दूर चलि, बलि खिल सब८न बिलात ॥ ४० ॥
कहियत गोपीनाथ१९३।१को, जो माधव१९३।२ अनुजात ॥
परिनायो वह रत्न१९३।१पहु, व्याह नवक९विख्यात ॥ ४१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तोमर कुल डुंगरकी तनुजा, गढ गुग्गैर अमरकी अनुजा ॥
केसरकुमरि१९३।१नाम जिहिं कहिलिय, परन्यौं कुमर माधव१९३।२ सु पहिलिय१॥ ४२ ॥
कुल कबंध अभिधा स्याम कुमरि १९३।२, बर दूजी २ लिय उदय सुता वरि ॥
अरु सीसोद स्याम दुहिता इम, तीजी ३ सबलकुमरि १९३।३ व्याह्यो तिम ॥ ४३ ॥
तस सगोत्र संग्रामसुता तँहँ, करगहि चोथी४राजवती१९३।४कँहँ ॥
जिम चालुक्क भगवंत जु जाई, पंचम५व्याह चंद्रवति१९३।५पाई।४४।
इम प्रताप तनया रानाउत, भाग्यवती१९३।६छट्ठी६वरि भानुति ॥
कल्यान कबंध कनी क्रमकरि, विहित सप्तमी७चंद्रवती१९३।७बरि
गोर जसराज दुहिता करगहि, राजवती१९३।८अष्टमि८सोपुर लहि
अखय कबंध सुता जु बरअली, किय निज रायकुमरि१९३।९ नवम९कली ॥ ४६ ॥
क्रम पंचमि५सप्तमि७कुमरानिय,जथा नवमि९ अग्रज त्रय३जानिय ॥
हुवसंततिखिल८छ६कैचउहह१४,सप्त७कुमरसत्त७हिकन्यासंह ।४७।
जँहँ मुकंद१९४।१ मोहन१९४।२ सुत जानहु, पुनि कन्ह१९४।३ रु जुज्झार१९४।४ प्रमानहु ॥

---

१ आश्चर्य है ॥३९॥ २पाता है ३ बाकी ॥४०॥ ४ छोटा भाई ॥४१॥४२॥४३॥४४॥-
५ स्तुति योग्य कांतिवाली ६ कन्या ॥ ४५ ॥ ७ श्रेष्ट सखियोंवाली ॥ ४६ ॥
८ विना सन्तान ॥ ४७ ॥

सुत किसोर१९४१५ पंचम५ छट्ठो६ सुत, जु हमतसिंह१९४१६ हठी
१९४१६ दुर नाम जुत ॥४८॥
सुत संग्रामसिंह१९४१७ तँहँ सत्तम७,कन्या सप्त७सु सुनहु जथा क्रम
जे हरिकुमरि१९४१ महाकुमरि१९४१२ हु जिम, रु कुसलकुमरि
१९४१३ स्वरूपकुमरि१९४१४ इम ॥४९॥
अनुपमकुमरि१९४१५ पंचमी५ इक्खहु, पुनि छट्ठी१ सु सत्यभामा
१९४१६ पहुँ ॥
कनी सप्तमी७ हुवदीपकुमरि१९४१७, सबकी प्रसू सुनहु क्रम अ-
नुसरि ॥ ५० ॥
जेठो१ जनिय कुमर जेठो१ जँहँ, तस अनुजा जेठी१ कुमरी तँहँ ॥
सुत दूजो२ दूजी२ पंचमि५सह,त्रिक३ यह जन्यों वधू दूजी२तह।५१।
सुत तीजो३ चोथो४ छठो६ सुता, जनि अष्टमी८हुव त्रि३तोक जुता
तुक पंचम५ सप्तम७ तीजो३ तिम; यह त्रिक३ जनि सप्रज चोथी
४ इम ॥ ५२ ॥
छम६ कुमर रु सप्तमी७कनी छम, कुमरानी तीजी३प्रसूति क्रम॥
जनि छट्ठो६ सु कनी चोथी४ जनि,बहू छ६इम सप्रजा गई बनि५३
पहिले पंच५ तनय हुव सप्रज, अंतिम सिसुहि मरे दुव२ अप्रज ॥
जयसिंहा१दि बुझि व्याहहिं जिम, यह कति सुता मरी कतिसिसु
इम ॥ ५४ ॥
सो तीजो३ हरिसिंह१९३१३ रत्न१९३१ सुत, व्याह अष्ट८ व्याह्यो
जस संजुत ॥
उदय भन्यों जु जोधपुर अधिपति, तस लघु सुत दलपतिकी सं-
तति ॥ ५५ ॥

॥४८॥ ४९ ॥ १ देखो २ प्रभु ३ माता ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ४ तीन बालकों सहित ५ बालक ॥ ५२ ॥ ६ समर्थ ७ माता ८ सन्तान सहित ९ विना सन्तान ॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥

कन्या बडी नाम इंद्रकुमरि१९३।१; व्याह प्रथम१ हरिसिंह१९३।३ लई बरि ॥
याहीकी अनुजा वसुधावर सत्रुसल्ल१९४।१०व्याहहिं वय अनुसर५६
जिहिं सुत भावसिंह१९५।१ हैहै जिम, अग्रज१ स्वसा बरी तस हरि १९३।३ इम ॥
खंडेलापुर लहि सेखाउत, रायसल्ल प्रतप्यो बढि राउत ॥५७॥
पटकि त्रास निर्वान८ कछि पहु, बलि कलि सम्मुह भये बहि बहु
अग्रज१ लवन करनके अग्गैं, बढिबो चहि करि गहि बग्गैं॥५८॥
कहुँ यह अनुज२ साहको जयकरि, अधिक पाइ मनसुब हनि तस अरि ॥
निर्वान१न पुनि जित्ति वह नगर, खंडेला लिय झारि खग्ग खर ॥ ५९ ॥
कतिक कहत पोपाँ कुंभारिय, पत्तन यहै लैन ढव पारिय ॥
मिलि निर्वान८ कछि मर्दव मिस, यह पैठाइ दयो राकाँइस ।६०।
कुमर सत्त७ तसगिरिधरा१दि क्रम, परसुराम५ तिनमैं हुव पंचम५
तस हुवनाम अग्रमति१९३।२ तनया, सु हरि१९३।३ बरी दूजे२ मह सनया ॥६१॥
कच्छर सुता नरूकी गहि कर, वरि तीजी३ नरबद कुमरी १९३।४ बर ॥
कुंपाउत रट्ठोर उदयकी, कनी चित्रमति१९३।४चोथी४ सय की६२
पंचम५मह सदूल सुता पिय,वदनकुमरि१९३।५गंगाउति व्याहिय।
जद्दव सहँसपाल दुहिता जिम, ऊँढा छट्ठी६ महाकुमरि १९३।६ इम ॥६३॥

१भूपति ॥ ५६ ॥ २वहिन ॥ ५७ ॥ ३युद्ध में॥५८॥४ तीक्ष्ण ॥५९॥ ५नगर६भागने के मिष से ७ आश्विन सुदि पूर्णिमा को ॥ ६० ॥ ८ नीति सहित ॥ ६१ ॥ ९ हाथ, अर्थात् कर ग्रहण (विवाह) किया ॥ ६२ ॥ १० विवाही ॥ ६३ ॥

सुर्जन चालुक तनया त्रय सैन, सुजानकुमरि१९३।७ वरी सह सप्तम७ ॥

मेरतिया जगमाल सुता सह, अष्टम८ वरी उमेदकुमरि१९३।८ अह ॥ ६४ ॥

इनमें इन्द्रकुमरि१९३।१ पहिली१ इम, तीजी३ चोथी४ पंचमी५ हु तिन ॥

न लही संतति इन चउ४ नारिन, चले प्रसन ग्यारह११ खिल च्यारि४ न ॥ ६५ ॥

तिनके तनय अट्ठ८ तनया त्रय३, भये जथाक्रम सुनहु वीतभय ॥

वडो१ कुमार सुजानसिंह १९४।१ जु वलि, अनुजहु विजय१९४।२ अभय१९४।३ रनसुमं आलि ॥ ६६ ॥

चोथो४ अजबसिंह १९४।४ अरु पंचम५, छम राजसिंह १९४।५ रु जयसिंह१९४।६ छम६ ॥

परसुराम१९४।७ सप्तम७ अष्टम८ पुनि, सबन अनुज समरेस १९४।८ लेहु सुनि॥६७॥

कनी अनंदकुमरि१९४।१सहजकुमरि१९४।२, इंद्रकुमरि१९४।३ ग्यारह११ ए क्रमकरि ॥

प्रथम१चतुर्थ४सुतसुता पहिलिय१, गर्भ स्वीय दूजी२त्रिक३गहिलिय

दूजो२तीजो३रु कनी दूजी२, प्रसव तत्र पञ्चहि सप्तमि७पूजी ॥

छठी६जनित कुमर पंचम५छम६, अंतिम कुमर सप्तम७रु अष्टम।६९।

तीजी३सुता अष्टमी८औरस, तोकँ त्रय३हि अंतिम यह हुव तस ॥

कोहू कनी विवाही कोहू, सिसुहि मरी विदित न क्रम सोहू ।७०।

सुत तृतीय३पंचम५अरु सप्तम, सह अष्टम८अग्रज मृत चउ४सम ॥

चउ४सुत खिल तिनके वंस चले, वलि जगनाथ १९३।४व्या-

---

१ समान अवस्थावाली ॥ ६४ ॥ २ बाकी ॥ ६५ ॥ ३ छोटा भाई ४ युद्ध रूपी पुष्प का भ्रमर ॥ ६६ ॥ ५ समर्थ ॥ ६७ ॥ ६ ग्रहण किया ॥६८॥ ६९ ॥ ७ ८ किस कन्या को किससे विवाही

ह भनत भलें ॥ ७१ ॥
कुमरानी पहिली१दीपकुमरि१९३।१.कुल कबंधजगनाथस्वसुरकारि
परनी कुमर जाइ जुराखापुर, ठ्याह्न सुनहु दूजो२जसबंधुर[1] ॥ ७२ ॥
छठो६स्वसुर रत्न१९२।१नृपको छम[2], जोगादास गोर हत संजम[3] ॥
बुंदी पटा लहि रु भर बज्जैं, लज्ज गयेंहु नैंकहु न लज्जैं ॥७३॥
जाकै सुत गोपाल१ सु जिंठो[4], कहियत सुंदरदास२कनिंठो[5] ॥
पठयो जो बारीगढ उप्पर, भ्रातन सन आयोभजि जो भर[6] ॥७४॥
कुप्पि जु रत्न१९२।१देस सनँ कढ्यो,बैरहि जास स्वसुर हिय बढ्यौ
हुतो स्वसालक[7] जदपि कंन्ह[8] हर, सुपहु[9] तदपि बुल्ल्यो न सु सुंदर॥७५॥
कंनी[10] तदीय गोरि अमरकुमरि १९३।२, बर जगनाथ १९३।४
लई दूजी२ बारि ॥
परसुराम सेखाउतपुत्रिय,केसर कुमरि१९३।३प्रिया तीजो३किय॥७६॥

॥ दोहा ॥

सुंदर चालुककी सुता, इम गोरी१९३।४ अभिधान[11] ॥
आनी बर जगनाथ१९३।४ यह, बरि चोथो४ सविधान ॥७७॥
मागधलोकन[12] मूढता, यह जानी अधिराज[13] ॥
पत्निनके[14] प्रपिता१ पिता२, लिखत बदलि बिनुलाज ॥ ७८ ॥
यातैं स्वसुरन नाम यँहँ, जेजे न मिलैं जत्थ ॥
तियन पितामह नाम तें, तुम प्रभु जानहु तत्थ ॥ ७९ ॥
लगि खोजन सु कविहु[15] लयो, जँहँजँहँ निश्चय जानि ॥
दिन्नौं क्रम तँहँतँहँ बदलि, अभिधाँ[16] स्वसुरन आनि ॥ ८० ॥
कुमरानि१न रानिन कहैं, जनकन नाम जितेक ॥

॥ ७० ॥ ७१ ॥ १ यश में उच्च ॥ ७२ ॥ २ समर्थ ३चलायमान इन्द्रियोंवाला अर्थात् व्यभिचारी ॥ ७२ ॥ ४ ज्येष्ठ ५कनिष्ठ ६ भड़. यह शब्द यहां वक्रोक्ति में कहागया है ॥ ७४ ॥ ७ से ८ अपना साला ९ कन्ह का पौता ॥ ७५ ॥ १०उस की पुत्री ॥ ७६ ॥११नाम ॥ ७७ ॥१२बड़वा भाटों की मूर्खता १३हे स्वामिन् १४ स्त्रियों के ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १५ ग्रन्थकर्ता कवि सूर्यमल्ल ने १६ नाम ॥ ८० ॥ ८१॥

स्वसुर पिताके१ वे स्वसुर२, कहुँ कहुँ तिन बिच केक ॥८१॥
सुत चोथो जगनाथ १९३।४ सो, व्याह्यो इम चउ ४ व्याह ॥
इनमैं जेठी१ अपजा, लिय त्रिक३ सुत त्रिक लाह ॥ ८२ ॥
कुमर बडो१ तहँ केसरी १९४।१, मध्यम२के जुग२नाम ॥
जु फतैसिंह १९४।२ जु जैत जिम, कुल तानेंक जस काम।८३।
जगतसिंह १९४।३ तीजो३ तनुज, अपज प्रथम १ रु एह ३ ॥
मध्यम२कोहि कुल प्रसरि महि, लहि रहिगो बिधिलेहँ ।८४।
गोपीनाथ १९३।१ प्रसंग गहि, अनुजनकेहु अपत्यं १ ॥
पत्नि२न स्वसुर३न नाम पुनि, सह कुल४ अक्खिय सत्य।८५।
अनुजन व्याह१ अपत्य२ ए, अब१ रु रत्न१९२।१ अवसान२॥
किते भूत १ भावी २ किते, मन्नहु संभव मान ॥ ८६ ॥
अधिप जदपि सबतैं अधिक, निज सुत गोपीनाथ १९३।१ ॥
परिनायउ तेरह १३ प्रिया, सबय सबय १ बल २ साथ ।८७।
तदपि सु लंपट पर तियन, बिलसे पिहित बिलास ॥
तात रत्न १९२।१ सम डरत तिम, प्रकट न बुल्लै पास ॥८८॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ६राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे रत्नसिंहसूनुपाणिपीडनतत्संततिवर्णनं द्वाविंशो मयूखः।२२।
आदितः पञ्चोत्तरद्विशततमः ॥ २०५ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥

॥ ८२ ॥ १ कुल को फैलानेवाला ॥ ८३ ॥ २ ब्रह्मा के लेख से ॥ ८४ ॥ ३ सन्तान ॥ ८५ ॥ ४ छोटे भाइयों के ५ रत्नसिंह के अन्त पर ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में रत्नसिंह के पुत्रों के विवाह और उनकी सन्तानों के वर्णन का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पांच२०५ मयूख हुए ॥

अमर रान पुब्बहि इतसु, अनसु[1] उदैपुर[2] आस ॥
करनसिंह१ पट्टप १ कुमर, तब गहिय लिय तास ॥ १ ॥
अडर सरनपालक[3] अनुज[4], भ्रात करन १ को भीम ॥
कहि हैं अवसर ताहुको, सरनदैन रनसीम ॥ २ ॥
इत दिल्ली दल जाइ अर[5], घोर पटक्कि रनघात ॥
खुरम३।१।२ भजायो बहुरि खल, सह सहाय सकुचात ॥३॥
पहु[6] तीन३हि बुरहानपुर, जबहि रक्खि जवनेस ॥
दिल्लिय बुल्ल्यो जवनदल, समुज्झि विजय सविसेस ॥४॥
तब कूरम१ रट्ठोर२ तिम, हड्ड६।१।३ रहिय असिहत्थ[7] ॥
पहु तीन३हि बुरहानपुर, पत्तन[8] ढिग रनपत्थ[9] ॥५॥

वैतालः ॥

बलसह[10] महावत खान१त्योंहि अजीमबेग२ बुलाइ,
भूपाल तीन३हि साह ए रक्खे तहाँ जयभाइ ॥
कछुकाल तत्थ सबै रहे जय ठानि दिल्लिय कज्ज,
सब देस दक्खिनसो रसो सुनि सत्रु ते हुव सज्ज ॥६॥
इक१को स्वसापति[11]१खुरुस३।१।२ वह इक२को स्वसासुत[12] आहि,
तिम भीर दक्खिन बीर यों सखुभ्भ्यो बलिष्ठहु ताहि ॥
किय मंत्र कुम्म[13]१ कबंधर[14]२ तब पच्छोहि करन पयान,
बुंदीस सुनि बरजे उहाँ इन व्याजै[15] चिंतिय आन ॥७॥
दिन इक१ कुम्म१ कह्यो अहो किम जाइ वारिय दुग्ग,
भटरावरे सहही भजे अब गोंडको हुव उग्ग[16] ॥

---

१ प्राण रहित २ हुआ ॥ १ ॥ ३ शरण आये हुए की पालना करनेवाला राणा कर्णसिंह का ४ छोटा भाई भीमसिंह ॥ २ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३ ॥ ६ तीनों राजाओं को ॥ ४ ॥ ७ खड्ग हाथ में लेकर ८ नगर के समीप ९ युद्ध में अर्जुन ॥ ५ ॥ १०सेना सहित ॥ ६ ॥ खुर्रम उक्त दोनों राजाओं में एक के ११बहिन का पति और दूसरे का १२भानजा है १३कछवाहा १४राठोड़ १५छल ॥७॥ १६उग्र

निज देस लौकिक काकवाचक शब्दलै कटु[2]नर्म ॥
सुनि यों कह्यौ गजसिंह२क्यों भयमैं बनैं जय कर्म ॥ ८ ॥
सिसु बंधि[3] छट्ठन संघ[4] संघत जे सबै उडिजात ॥
धनि क्यों परैं तिनतैं उहाँ जय प्रानसंसय बात ॥
चहुवान३आक्खिय चक्र[5]मैं किय मुख्य गौड१कबंध ॥
सठ भीरु तेहि भजे अचानक प्रानलै हतसंध[6] ॥ ९ ॥
नेता[7] करैं जु भली१बुरी२सु गिनै अधीनहु न्याय ॥
करि संग कातर[8]१को प्रबीर२हु के बजैं प्रियकाय[9] ॥
हमतो गिनैं भय जत्थहैं दुंहितांहु[10] मिच्छन देन ॥
छिय छत्रधारि[11]१न भै[12] जु काक२नकेहु ता रिसहै न ॥ १० ॥
तुम१रे पितामहकी स्वसा[13] अरिकैं लजे हम य्यौंहु ॥
इन२के स्वसापतिको कह्यो न बन्यौं बै[14] दुर्मन[15] यौंहु ॥
पहिलैं मरे गिनि जे लरैं भट तेहु दै पयपिट्ठि ॥
इह हेतु है कछु ज्यौं पत्ता[16]१जयमल्ल२मिल्लन इट्ठि[17] ॥ ११ ॥
परभुम्मि आइ सुवाइ पुत्रिन लाइ मिच्छन पास ॥
हमसौंहु वैभवमैं बढै भय ह्यौं गिनौं न सुहास ॥
गंजैं बली अरि देवगढ तुम१रो इहाँ हनि तातै[18] ॥
इन[19]२कोपितामह स्वैं[20] बज्यौं भय ह्यौं न संसद[21] आत ॥ १२ ॥
रस१मैं गिन्यौं बिरसत्व२यौं कटु[22]नर्म होत रिसाइ ॥
भरि बारि[23]कोहु सखुद्र ह्यौं धारि यौं कह्यो अघभाइ ॥
हम नीर छुट्ठ१न दैबुके अबतो न सगपन ठैहैं ॥

---

१ काकुभाषा (वक्रोक्ति) में २ कटुई मसकरी की ॥ ८ ॥ ३ दबाकर ४ समूह ५ सेना में ६ प्रतिज्ञा छोडकर ७ आज्ञा करनेवाला (स्वामि) ८ कायर का ९ कायर बजते हैं १० पुत्रियें ११ राजाओं को १२ भय ॥ १० ॥ दादा की १३ बहिन १४ अब १५ उदास १६ चित्तोड़ का किल्लादार रावत पत्ता १७ इष्टि (इच्छा) ॥ ११ ॥ १८ पिता १९ कछवाहे का २० श्वान २१ सभा में ॥ १२ ॥ २२ खोटी हँसी होने से २३ पानी का तासला (सखुद्र नाम डिब्बे का है परन्तु यहां पा-

वदि यों खिजे उठि बेग जे दिल्ली चले चाढि व्है२हि ॥ १३ ॥
बुंदीस चाहिय जाइ तिन समुझाइ रक्खन बत्त ॥
रिस कैं कह्यो तँहँ बंधु१बीर२न अप्प क्यों अनुरत्त ॥
बजैं दुर२हत्थन तालि व्हाँ उनकोहि बाँरि उतारि ॥
तुमकों चढाइ गये उभै२बाजिहँ दये पहु तौरि ॥ १४ ॥
॥ उतारि१हुतारि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
जैहो निहोरि मनाइबे गिनिबे ततो हत जोर ॥
इम मन्निहैं डारि भीरु दह्व६१सहाय इच्छत ओर ॥
नृप अप्प द्वै२हि दये चमूपति देसतैंहु निकारि ॥
निज सालकत्व[4] गिन्यों न यों बहु क्यों चल्यो कुलबोरि ॥१५॥
सुनि बंधु१बीर२नकी यहे न गयो निहोरन सोहु ॥
दिल्ली गये अनखाइ कुम्म१कबंध२भूपति दो२हु ॥
तँरजे बजीर अयाज ते बरजे लये न बुलाइ ॥
उलंघि साह निदेस द्वै२रहिहो कहाँ इत आइ ॥ १६ ॥
बुल्ले उभै२नहि रत्न१९२१के हमरै बनी हितबत्त ॥
तिन्ह बुल्लिकैं१हमकों पठावहु तोहि कै२बहु तत्त ॥
सबमाँहिं मुख्य पठाइ ओरहि देहु कै३तस संग ॥
भनि यों सिटेहु जथा तथा दुवर व्हाँ रहे मन भंग ॥ १७ ॥
[10]अवधानतैं नृपरत्न१९२१हू इत साह सीम सम्हारि ॥
रुपि अद्रि सत्त[11]७ पुरे समीप रह्यो सु इच्छत रारि ॥
इत नैर बुंदिय रत्न१९२१ को जु कुमार पट्टप आइ ॥
व्यायाम[12] बिद्या सो बढै सिसुकालतैंहि समाहि ॥ १८ ॥

नी के सम्बन्ध से तासला लिखागया है) भरकर ॥ १३ ॥ १ आप अनुरक्त क्यों होते हो २ उनका तेज उतारकर ३ राजा ने निकाल दिये ॥ १४॥ ४ सालापन ५ नीर (तेज) ॥ १५ ॥ ६ क्रोध करके ७ धमकाए ८ बादशाह की आज्ञा को उल्लंघ करके ॥ १६ ॥ ९ तहां वही बहुत है ॥ १७ ॥ १० सावधानता से ११ सतपुड़ा पर्वत (विन्ध्याचल) के समीप १२ कसरत ॥ १८ ॥

जब आइ जुब्बन उप्फन्यौं याकेहु बाहुन जोर ॥
याकौं सहैं सु न ह्वाँ मिल्यो प्रतिमल्ल मल्लहु ओर ॥
करि अष्ट८ निर्जट[1] नालिकेर सरीर साखन[2] संधि ॥
बलवान सो ततकाल भंजत एक१ता बलबंधि ॥१९॥
दुव२ साख साखिन[3] चीरि बाहुन मध्य ग्रांव[4] दिवाइ ॥
जिहिंके तजे करि स्वीय अंकित[5] पै[6] पिवाइ जिवाइ ॥
बर ब्याह अष्टम८व्याहिबे तिय तोमरी१९३।८जु द्वितीय२ ॥
गय नैरपट्टनि प्रानगर्वित सक्ति सूचित[7] स्वीय ॥ २० ॥
मग अंधुपैं[8] कहुँ चर्ममय नव९मुट्ठि[9] मित जलमाप[10] ॥
वाकौं सटेक छुराइ बैलन अैंचिगो भरि[11] आप ॥
पति कूपके बरज्योहु प्रत्युत[12] हद्द गो हठि हद्द६१ ॥
प्रासंगैं[13] छोरन नाँ बन्यौं पुनि आइ अप्पहि अड्डि[14] ॥ २१ ॥
प्रासंग पायन हिट्ठि[15] दै तब स्कंपिजावत पार ॥
कछुरीति जोर पर्यो भयो सु नृजान[16] बाह्य कुमार ॥
व्याह्यो तथा[17]विधही बन्यौं पट्टु[18] आइ गेह बहोरि ॥
तिम मारि मुट्ठि बली दई कटि के जरंत[19]२न तोरि ॥ २२ ॥
कंठीरवा[20]२दिक हिंस्र[21] केहि हनैं प्रहारि कटार ॥
बहती खुरी[22] बिच किन्न के हतबेग बाजि३न बार ॥
जिनकै सुन्यौं बल दर्प[23] तेहु कुमार बुल्लि रु जित्ति ॥

---

१ आठ नालियरों की जटा दूर करके २कांख, कुहँनी आदि शरीर की शाखाओं की सन्धि में रखकर ॥१९॥ ३वृक्षों की दो शाखा को चीरकर उनके बीच में ४पत्थर दिवाकर ५अपने नाम से जानेजावें ऐसे ६पानी सींचकर ७ अपने पराक्रमकी सूचना करता हुआ ॥ २० ॥ ८ मार्ग के कुए पर चमड़े का ९ नौ मूंठ के नाप को (चड़स के नाप की पूर्ण अवधि नवमूठ की होती है) १० चड़स ११ पानी भरकर १२ उलटा १३ जूड़ा(बैल जूतने का काष्ट) १४ आडा आकर ॥२१॥ १५जूड़े को पैरों के नीचे दबाकर १६पालखी आदि में चलने योग्यहोगया १७ उसी हालत में व्याहा १८नैरोग्य १९महिषों(भैंसों)की कमर तोड़ डाली ॥२२॥ २०सिंह आदि २१ हिंसा करनेवाले २२ घोड़े को पूर्ण दौड़ में २३ घमंड

किय अद्वितीय वली भली चहुँ४ओर अप्पन कित्ति ॥ २३ ॥
गुन और बीर१बदान्य[1]२तादिक जे लये बलगर्ब ॥
[2]स्मरनैं दवाइदये अनर्गल[3] आत जुव्वन सर्ब ॥
याके जथापि करे महीपति इक्कदस११ उपयाम[4] ॥
न तज्यो तथापि कुमार अप्पन पारदारिक[5] नाम ॥ २४ ॥
जिहिं पुत्र तेरह१३ त्यौं सुता इक१ यौं चउद्दह१४ जात ॥
प्रछन्न तोहु नईनई परनारि संगति पात ॥
गुडवान जित्ति नरेस सुर्जन१९०।१ बाहुरयो जब गैल ॥
बहु ब्रात्य[6] चेदिपुरी[7] लखे द्विज बिंत्रई भरि बैल ॥ २५ ॥
सबही मिलैं जिनके परिक्रम[9] देसदेसन सुद्धि[10] ॥
बलि क्रय्य[11]१ क्रेय[12]२ महार्घ[13] देसहुमैं मिलैं सुख बुद्धि ॥
उनमैंहिसौं नृप विप्रबंधु[14] कितेक बुंदिय आनि ॥
कर अद्व१ रक्खि दये बसाइ बिसेस बानिजकानि[15] ॥ २६ ॥
चरनाद्रितैं आनैं तथा इनकौं कितेक चवंत[16],
है पंच५गौडन माँहिं पै किय लोभ बानिज हंत ॥
अब मूढ एहु कहैं बसे हम बंग१७९।१ देव१८०।१ अनेह[17],
इमहोहु पै न प्रमान सूचत अत्थ संसय एह ॥ २७ ॥
इक१ विप्रबंधु बँधू[18] हुती तिनमाँहिं सुन्दर अंग,
सम रूप१ जुव्वन२ द्वै२ परस्पर उज्झले तस संग ॥
लखि विप्रबंधु वधू वहै चंदेरनी अतिलाग[19],
रच्यो तहाँ सबतैं बिसेस कुमारको अनुराग[20] ॥ २८ ॥
मिलिजात दोउ२न नैन१ त्यौं मन२हू मिले रतिमाँहिं,
अतिप्रान[21] त्यौंहि भजैं कुमारहु छन्न नृप भय आँहिं ॥

॥ २३ ॥ १ दातार २ कामदेव ने ३ आड रहित ४ विवाह ५ पर स्त्री का ॥ २४ ॥ ६ संस्कार हीन ७ चन्देरी में ८ बनजारे ॥ २५ ॥ ९जिनके फिरने से देशदेशों की १० खबर मिले ११ बिकने की वस्तु १२ मोल लेने में १३ बडे मूल्य की १४ अधम ब्राह्मणों को १५ व्यापार करनेवालों को ॥२६॥ १६ कहते हैं १७ समय ॥ २७ ॥ अधम ब्राह्मणों की १८ की १९ प्रीति ॥ २८ ॥ २० प्रीति में २१ बडा

नृप रत्न१९२।१ धुंदिय आत बिप्रन लैलयो सु*निदेस,
चाहोसुही करि चोरको द्विज चैन रक्खहु देस ॥ २९ ॥
सु लयो निदेस कुमारहू सुनि आयुके अवसा[1]न,
हठ तोहु दुर्व्यसनी तज्यो नन होत निज जस हानि ॥
संकेत र[2]त्ति बलिष्ठता मद्यमत्तता जुत सोइ,
[3]हुलस्यो बिसैं जब गेह तासहु रि[4]क्त बंधुन होइ ॥३०॥
जो सर्व चेदि[5]पुरी द्विजातिन मन्निकैं तृन मान,
मृगराज [6]एननमैं मनो बिलसैं बसैं बलवान ॥
तक्केहि दाव घनैं द्वि[7]जातिन मोघ जे हुव मानि,
जिन जो तथापि तज्यो न उद्यम रत्न१९२।१ सासन जानि ।३१।
बहुबेर छन्नरहे निसा सब बाग१ बारि२न बे[8]ढि,
मन पै चल्यो न रुके सबै बहुबैलज्यौं इक मे[9]ढि ॥
अति सावधान कुमार गो तिनमाँहिसौं कढि एह,
न तज्यो परंतु कृं[10]तांत प्रा[11]घुन जा[12] द्विजा[13] सन नेह ॥३२॥
परकामिनी१ व्यसनी जु है व्यसनी सु ह्वै मधुपान[14]२,
इम द्वैरहि दोष लगे कुमारहि गेरिबे छल आँन ॥
अतिपा[15]न मत्त कुमार सो सुनि गो तदी[16]य अगार,
बिट[17]१ चेट[18]२ दूत[19]३ बिदूषका[20]४दिन सिक्ख दै तिहिं बार ॥३३॥

बलवान्*आज्ञा ॥ २९ ॥ १ अन्त में २ रात्रि में ३ प्रसन्न होकर प्रवेश करता ४ घर खाली होता तब ॥ ३०॥ ५ चन्देरी के ब्राह्मणों को तृण समान जानकर ६ हरिणों में सिंह के समान ७ ब्राह्मणों ने बहुत दाव देखे परन्तु निष्फल हुए ॥ ३१ ॥ ८ घेर कर ९ मेंढी (बीच के अपनी कक्षा पर घूमनेवाले) बैल के साथ बाहिरवाले वृषभ फिरैं इसप्रकार फिरै १० यमराज का ११ पाहुँना १२ उस १३ ब्राह्मणी से ॥ ३२ ॥ १४ मद्य पीने का व्यसनी होकर ॥ ३३ ॥ १५ अत्यन्त मद्य पीने से मस्त होकर १६ उस ब्राह्मणी के घर गया १७ सम्पूर्ण काम कला में निपुण सखा को विट कहते हैं और १८ नायक नायिका को सङ्केत किये हुए स्थान में मिलानेवाले चतुर सखा को चेट कहते हैं और १९ परस्पर नायक नायिका के सन्देश पहुंचानेवाले का नाम दूत है और २० कौतुक से नायक नायिका के प्रसन्न करने में समर्थ सखा का नाम विदूषक है ॥

पुनि पान[1]कैं घर सून्य सो गिनि ह्वै बिसेस प्रमत्त ॥
इक१ही रह्यो सब रत्ति[2] बिलसन बम्हनी[3] अनुरत्त ॥ ३४ ॥
निद्रा निसीथ[4]समैं फिरी अतिपानतैं बढिन्याय ॥
अब गेहस्वामिनकौं फुरयो वह छद्मघात[5] उपाय ॥
लहि सुद्धि सोवनकी तिरो[6]हित आइकैं तिन लार ॥
कछु रीति पैठि दयेहि मंच[7]क बंधि दार१ कुमार२ ॥ ३५ ॥
कछु हे सहायक छन्न बाहिर ते गये भजि कूर ॥
सहसा[9] सु जग्गतही उठ्यो सह[10]मंच१ बंधन२ सूर ॥
लहिहू सके न कुमारके कर१ पैर२ बिबंधन[11] होन ॥
मचकाइ[12] अंग न तोरि मंच सक्यो खरोरहि सो न ॥ ३६ ॥
इहिं छिद्रपैं गत[13]निद्रपैं करि गेहस्वामिन[14] वार ॥
किय लार दार१ कुमार२ दोउ२न पार सार[15] कटार ॥
भुजजुद्ध[16] मल्ल१न जित्तिकैं जिहिं सिंह२ कै[17] दिय भंजि ॥
गति दाव कोहु फुरयो[18]न यौं सु लयो भिखारिन गंजि ॥३७॥
गजमार[19]१ बीर२ रु सिद्धसस्त्र[20]३ अभै४ बली५ दृढगत्त[21]६ ॥
परनारि संगहनैं सुनैं भर[22] यौं अनेक प्रमत्त ॥
अति दुर्दसा करि मारि दोउ२न गेरि चत्वर[23] आइ ॥
जन सर्ब वा घरके जुरे भजिकैं दुरे कहुँ जाइ ॥ ३८ ॥
कति यौं कहंत हन्यौ यहै संकेत बेल[24] कुमार ॥
कैसैंहु होहु मर्‌यो सु बद्ध[25]हि चोरके अनु[26]कार ॥

---

१ फिर मद्य पाकर २ रात्रि ३ ब्राह्मणी से ॥ ३४ ॥ ४ आधी रात्रि में ५ छलघात का उपाय ६ गुप्त ७ मांचे पर ८ स्त्री और कुमर को बांध दिये ॥ ३५ ॥ ९ अचानक १० मंच सहित ११ हाथ पैर दोनों नहीं बंध सके १२ बल पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ जागृत हुए पर १४ घर के स्वामियों ने १५ छेदकर, अथवा तरवार और कटारी पार कर दिये १६ बाहु युद्ध में १७ कितने ही सिंहों को १८ कोई दाव स्मरण नहीं हुआ ॥ ३७ ॥ १९ हाथियों को मारनेवाला २० शस्त्रों को सिद्ध किये हुए २१ दृढ शरीर २२ वीरों को २३ चौक में आकर डाला ॥ ३८ ॥ २४ सङ्केत किये हुए बाग में मारा २५ बन्धा हुआ २६ चौर के सदृश मरा ॥

पहिचानि ताकँहँ दंग दूत१न पौर[1]लोक२न प्रात ॥
किय राजद्वार पुकारघल्लत छत्ति१मत्थ२न घात ॥ ३९ ॥
नृप पुत्र माधवसिंह१९३।२ज्यों हरिसिंह१९३।३त्यों जगनाथ१९३ ॥४॥
दहिया१रु गौर२प्रधानद्वै२सेनेस संकर३साथ ॥
क्रम अब्द नव९इक१मासचय पट्टु सत्रुसल्ल१९४।१कुमार ॥
लहि पौर१बर्ग[2]न जुत्त जोध२अमात्य[3]३बर्गहु लार ॥ ४० ॥
महिपाल रत्न१९२।१दह्यो पिता जिहिँ छार[4]उपबन मज्झ ॥
इन जाइ तत्थ दह्यो कुमारहिँ सद्दि सज्झ१असज्झ[5]२ ॥
सीसोदनी जु प्रतिव्रता पहिली१बधू व्रत सत्थ ॥
अंबा१९३।१मरी सु कुमारसौँ दिनदोइ२पुब्बहि अत्थ[6] ॥ ४१ ॥
इहिँ स्वामि भोजनके अनंतर[7] सर्वदा लिय अन्न ॥
पतिदुक्ख१ जो बिमना[8]२रही पतिके प्रसाद[9]१प्रसन्न ॥
किय एकदा[10] ज्वर आत लंघन एकबीस२१ कुमार ॥
अंबा१९३।१सतीहु करे इते२१तव अप्पव्रत अनुसार ॥ ४२ ॥
हत्थी जगम्मनि[11]तैं कुमार यहै परयो कहुँ दिट्ठि[12] ॥
अंबा१९३।१परी चढि अट्टतेँ[13] सुनि एह अप्प अनिट्ठ[14] ॥
धुर कुंचिका[15] डुलि थान कोहु खुल्यो न तालक धार[16] ॥
पटक्यो कुमार कपाटपैं तन्न अंस[17] फट प्रहार ॥ ४३ ॥
तोरयो किंवार गडे त्रि३ कंटक दाहिनैं भुज तास ॥
अंबा[18]१९३।१हु बाहु सही छुरी लय३ स्वामि दुक्ख उदास ॥
हुव सांत द्वै२दिन कांत[19]सौँ पहिलैँ वधू यह हाइ ॥

---

१ पुर के लोगों ने ॥ ३९ ॥ २ पुर के लोगों के समूह सहित ३ सचिव ॥ ४० ॥ ४ क्षार थाग में ५ असह्य ६ यहां ॥ ४१ ॥ ७ पीछे ८ उदास ९ प्रसन्नता में १० एक समय ॥ ४२ ॥ ११ हाथी का नाम है १२ देखकर १३ छत पर चढकर गिरी १४ अनिष्ट १५ एक समय कूंची गुमकर १६ ताला नहीं खुला देखकर १७ कन्धे की टक्कर लगाई ॥ ४३ ॥ उस किवाड़ के तीन कांटे दाहिने भुज में घुसगये १८ अम्बा नामक कुमरानी १९ पति से दो दिन पहिले मरगई ॥ ४४ ॥

जरती नतो सब अग्गठहे परती चितपर जाइ ॥ ४४ ॥
दूजी२।१रु चोथी४।२पंचमी५।३छट्ठी६।४रु सप्तम७।५दार ॥
लगि प्रीतिबस नवमी९।६तथा एकादसी११।७ पतिलार ॥
ए सप्त७कुमरानी जरीं इनसैं जु चोथी४ * आदि ॥
ज्वर१ । रेक२आदि असाध्य ठहै चिरतैं ग्रसी गदै जाहि ॥४५॥
क्रम रीति सब जब लैगये छह६ बधू समेत कुमार ॥
सस्पून रक्खिय रोकि यह तब घोर गद अनुसार ॥
चहिकैं भई मृततुल्य सो दृग१फेरि२स्वास१चढाइ२ ॥
छल तास जानि सकै न स्त्री जन सोक दुस्सह जाइ ॥ ४६ ॥
मृत जानि पीछैं सुक्कली सु सुनाइ सर्बरथ माँहि ॥
निज बिप्र लैहिगये निचोलैं ढकी सकै लखि नाँहि ॥
पतनीं छह६जुत कुमार१०।३।१चिति धरि अग्गिदेत प्रजारि ॥
सबनैं गई यह जानि सूचिय देहु चितिपर डारि ॥ ४७ ॥
खुल्ली यहै पट को न यौं करि न्हानि१आदि बिधान१ ॥
सृंगार२ ठाइ उमा३ पुजाइ चढाइ देहु सु ज्ञान ॥
तब द्विजन जीवत जानि तिहिं कथितादि कृत्य कराइ ॥
पीछैं चढाइ चिता दई पय बंदि बिस्मय पाइ ॥ ४८ ॥
उपयाम११क्रम चोथी४ बधू सहगोनैं१२ दूजी२ एह ॥
पीछैंगई इम सप्तमी७ पुनि सद्धि स्वामि सनेह ॥
पति१३तात२ बंस पुजाइ पै चढि रोगग्रस्त चिता सु ॥
सहगोन अद्भुत सद्धि बाघेली४।२।७ बढी इम आँसु ॥ ४९ ॥

---

* है । दस्त १ बहुत समय से २ रोग ॥ ४५ ॥ ३ छः स्त्रियों सहित ४मरने के समान होगई ॥ ४६ ॥ ५ मुरदे के रथ (सनेथी, तिरकटी) में सुलाकर ६ वस्त्र से ढकीहुई ७ मरी हुई जानकर ॥ ४७ ॥ ८स्नान आदि ९ देवी का पूजन कराकर १० कहेहुए कार्य कराकर ॥४८॥ ११ विवाह के क्रम से यह चौथी थी और १२ सती (पतिव्रता) के क्रम से यह दूजी थी अर्थात् प्रथम नम्बर पर अम्बा नामक कुमराणी और दूसरे नम्बर पर यह थी १३ पिता के १४ शीघ्र ॥ ४९ ॥

तासु१ आसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इक१ स्वामि सोति छह संग लै कुमरानि गदकृस[1] एह,
वसती भई दिव[2] जाइ बाढत अप्प कित्ति[3] अछेह ॥
जन कैं[4] कहैं वह ब्रम्हनीहु[5] दईसु तत्थहिं जारि,
कति यौं कहैं किय भिन्न दग्ध सु मंतुके[6] अनुकारि ॥ ५० ॥
खट वेद सोलह१६४६ साक[7] गोपियनाथ१९३१ उद्भव[8] ख्यात,
दसइक्क११ कुमरानी उदूह[9] प्रजा[10] चउदह१४ पात ॥
अब होत अब्द पचीस२५ मित वय दिष्टके[11] अनुसार,
ससि बाजि अष्टि१६७१ सनै सतीजन लै गये स्वरगार[12] ॥५१॥
अपकित्तिको[13] मरिबो१ तथा तौरुन्यपनैं[14]२ हुहु[15] आस,
हाकार१ हुव इम नैरबुंदिय२ दुर्जनालय[16]१ हास२ ॥
विट१ चेटकार२हि कुमारकोहु भज्यो सहायक[17] जात,
इक१ सौविदल्ल[18] रु दूतिका कितहू गये अकुलात ॥५२॥
किय सत्रुसल्ल१९४१ कुमार निजकर तातको मृत कर्म,
विधि उक्त सद्धि दयेसु विप्रन भूमि१ गोर पट[19]३ मर्म[20]४ ॥
ख तुरंग लोचन राम३२७० दिन[21] वयमैंहु[22] अंहति१ खग्ग२ ॥
एतो सम्हारि उभै२ लग्यो बढिवे अजस्र[23] उदग्ग[24] ॥५३॥
अवसौंहि सत्रह१७ अब्दलौं[25] गहि रत्न१९२१ हहु६१ अधीस,
मरिहै बढ्यो लखि धर्मभारहिं नप्तुके[26] सुत सीस ॥
परख्यो पितामह ज्यौं बढ्यो सुतपुत्र[27] बाढन प्रीति,
निरख्यो तऊ तिहिं अग्ग१ धर्म२ रु पिट्ठि[28]१ दै नृपनीति ॥५४॥

---

१ रोग से दुर्बल २ स्वर्ग में ३ कीर्ति ४ कितने ही लोग कहते हैं कि ५ उस ब्राम्हणी को भी वहीं जला दी ६ अपराध के सदृश ॥५०॥ ७ सम्वत में ८ जन्म ९ विवाहकर १० सन्तान ११ भाग्य के १२ स्वर्ग ॥५१॥ १३ अपकीर्ति का १४ तरुण अवस्था में १५ हुआ १६ शत्रुओं के घर में हंसी हुई १७ मसूत १८ एक नाजर ॥५२॥ १९ वस्त्र २० स्वर्ण २१ तीन हजार दो सौ सत्तर दिन की अवस्था में २२ दान २३ निरन्तर २४ उदग्र ॥ ५३ ॥ २५ वर्ष पर्यन्त २६ पौत्र के मस्तक पर २७ पुत्र का पुत्र २८धर्म को आगे और राजाओं की नीति को पीछे रखकर

॥ दोहा ॥

सक भू हय सोलह१६७१समा[1], मित जँहँ रत्न१९२।१कुमार॥
गोपीनाथ१९३।१हु स्वर्गगय, सती सप्त७ अनुसार[2] ॥ ५५ ॥
उज्जल१ पंचमि५ राध[3]२ अह[4], प्रथितं[5] पितामह पास ॥
विदित दाह छार[6]ोपवन, अष्ठ८नको इम आस[7] ॥५६॥

॥ षट्पात् ॥

सुपहु रत्न१९२।१ यह सुनत पत्र इम स्वपुर पठायउ ॥
जानतहे सब-जदपि मोहि क्यौं नहिँ समुझायउ ॥
करि सुतकों हुत[9] कैद इतहु आतो तदनंतर[10] ॥
तो अपजस होतो न नैंन नीचे करते नर ॥
पुर विप्र भजे बुलवाइ पुनि रहनदेहु कर माफ रचि ॥
इन मम निदेस लहि किय अखिल विधि लिपि[11]सैंन नन रहत बचि॥

॥ दोहा ॥

दै सहाय जे हुव दुजन, सुतहिँ बिगारन सूर ॥
तिन्ह देसहु बुल्लहु न तुम, देहु रहन अव दूर ॥ ५८ ॥
आतहि नृपको पत्र यह, वानिजा[12]विप्र बिसासि ॥
बुल्लि वसाये द्रंग[13] वलि[14], नीचन सवन निकासि ॥ ५९ ॥
भोज१९१।२भुजिष्या[15] जठर[16] भव, भट संकर२।१ नृप भ्रात ॥
सेनापति जिहिँ देस सुख, दिन्नौँ जस अवदात[17] ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदिय मुलक प्रबंध कियउ सेनापति संकर२।१ ॥
चोरी जिहिँ घर चोर रचि रु कहुँ वसु[18]१ बिस्तर ॥

---

१ सम्वत में २ सात सतियों के साथ ३ वैशाख ४ दिन ५ विदित ६ छार बाग में ७ हुआ ॥ ५६ ॥ ८ तो भी ९ शीघ्र १० जिस ११ ब्रह्मा के लेख से ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ व्यापार करनेवाले ब्राह्मणों को १३ नगर में १४ फिर ॥५९॥ १५ पासवान के १६ उदर से जन्म १७ उज्वल ॥६०॥ १८ धन.

स्वामि कहैं ताहि सम धरैं तस घर नृपको धन ॥
पुनि चोरन प्रकटाइ प्रबल बहुगुन लौ व्यप्पन॥
देसहिं असेस हुव सुख उदय विसत रुके तस्कर बहुल ॥
कोउ रुक्यो न ताको कबहिं किय संकर२।१ उच्छिन्न कुल ।६१।

॥ दोहा ॥

अति सुख बुंदिय देस अब, न जुरै अररँ निकेत ॥
जोलौं यह संकर२।१ जियत, हुव तोलौं सब हेत ॥ ६२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नदि बनास तट निकट अधम चालुक नाथाउत ॥
उत्थरनाँ अभिधान वसत निवसथ भय विद्रुत ॥
नाम सिंह नीच नर चोर चोरन हित चाहत ॥
मैंना१ भिल्ल२न मित्र ग्रंथ देसन अवगाहत ॥
पत्तन अलोद चोरी प्रचुर होतहि दे रुप्पय हरखि ॥
प्रकटाइ चोर संकर२।१ प्रबल किय प्रयान मुच्छन करखि ॥६३॥
स्वामी चोरन सिंह पुव्व ताकहँ सुनि प्रस्थित ॥
अड्डो अगबिच आइ दुरयो पव्वय दुर्ग स्थित ॥
अतिढिग संकर२।१ आत गूढ भारिय तुपकन गन ॥
इक१ गुटिका लागि भालिकें परयो हह६।१सु अचेतपन ॥
भोज१९।१।२सुत आनसु ततकाल भो नाथाउत आइ सु निकट ॥
सिर तास कट्टि लैगो सदन बुंदिय धर आन्यौ विकट ॥ ६४ ॥

प्रस्थित१।गस्थित२ अन्त्यानुप्रासः ॥

१घर का स्वामि कहै उतना २उसके पास राजा का धन धर देता ३प्रवेश करते हुए ४ बहुत चोर रुक गये ५युद्ध में दकुल का नाश कर दिया ॥६१॥ ७ घर के किंवाड़ नहीं जुड़े ॥६२॥ ८नाम ९ग्राम १० भय से भागकर ११ चोरों को एकट्ठे करके देश का थाह लेना १२ बहुत १३ मूंछें खेंचकर ॥६३॥ चोरों का स्वामि सिंह नामक उस शंकर को पहिले १४ जाना हुआ सुनकर १५ पर्वतों के दुर्ग में छिपकर आडा बैठा १६ ललाट पर १७मृतक १८ अपने घर १९ धन २० विना मस्तक भयंकर ॥६४॥

॥ दोहा ॥

हाहारव सब देस हुव, सुनि संकर २।१ अवसान ॥
जाख्यो धर विनु सिर ज्वलन[२], विधि उदर्क[३] बलवान ॥
संकर२।१ भ्रात निपात सुनि, सुपहु रत्न१९२।१ किय सोक ॥
पठयो छंद[४] लिखि भटन[५] प्रति, उपालंभ निजओक[८] ॥६६॥
तिस दक्खिन गढ तोम्मरनि, भुरि न गिनत सुगलेस ॥
जानि प्रथम तँहँ साध्य जय, चढन चहैं उत एस ॥६७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे षष्ठ६राशौ बुन्दीन्द्र रत्नसिंहचरित्रे उदयपुरमहाराणाऽमरसिंहपञ्चत्वानन्तरकर्णसिंह-पट्टसमासादन१, बुरहानपुरयोधपुराम्बेराधीशकृतकटुनर्मरत्नसिंहविरोधाक्रान्तद्वयदिल्लीगमन २, बुन्दीशरत्नसिंहपट्टपकुमारगोपीनाथबलप्रशंसापुरःसरव्यभिचारनिमित्तप्राप्तदुर्मरणातत्सहधर्मिणीसप्तकसहितदहन३, रावरत्नसिंहभुजिष्यात्मजभ्रातृशंकरचौराधिपसिंहकरमरणं त्रयोविंशो मयूखः ॥२३॥

आदितः षडुत्तरद्विशततमो मयूखः ॥२०६॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वारीगढ निजदल विजय, नभयो इम नरनाह ॥

१अन्त २अग्नि में ३भाग्य ॥६५॥ ४भाई शंकर का मरना सुनकर ५पत्र ६उमरावों के नाम ७ ओलम्भा ८ अपने घर से ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा अमरसिंह के देहान्त होने पर कर्णसिंह का पाट बैठना १ बुरहानपुर में कड़वी हँसी करने के कारण जोधपुर और आमेर के राजाओं से रत्नसिंह का विरोध होकर उक्त दोनों राजाओं का दिल्ली जाना २ बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के पाटवी कुमर गोपीनाथ के बल की प्रशंसा के अनन्तर व्यभिचार के दुराचार के कारण उसका दुर्दशा से मारा जाकर सात सतियों के साथ दग्ध होना ३ राव रत्न के पासवानिये भाई शंकर का चोरों के पति सिंह के हाथ से मारे जाने का तेईसवां २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छः २०६ मयूख हुए ॥

कछु भुव दिल्ली वस करन, सज्जे अंडर सिपाह ॥१॥
रहत निकट गढ तिम्मरुनि, जयहु साध्य तँहँ जानि ॥
इक्कसमय चढिगो अधिप, तिहिंउप्पर बलतानि ॥२॥

षट्पात्

गढ जातहि गरदाइ[1] महिप तोपन रन मंडिय ॥
गोलन गजव गिराइ खोम१ कपिसिर२ सिर खंडिय ॥
कलह वीर उतकेहु रूपे अंदर रावन रुख ॥
सहज ठानि गढ सिथल सिले निकटहि वढि सम्मुख ॥
नृप वीर चढत अधिरोहिनिन उभयर तुट्टिगय भेर अतुल ॥
तीजी३हुती न बुंदीस तव बुल्ल्यो निज गज बपु बिपुल[6] ॥६॥

॥ दोहा ॥

घटा सिरोमनि सघनघन१, रन अट्टालक रूप ॥
सबन तुंग प्राकार सन, भेरयो सो गज भूप ॥४॥

॥ षट्पात् ॥

जानिपरत इत जोर वान१ वंदूक२ प्रहारि[10] बहु॥
[11]समिटि लरत अरि सूर [12]प्रहत करि दूर दये [13]पहु ॥
[14]वारन सन कछु [15]वरन उच्च रहिगो तिहिं इक्खत ॥
भ्रात [16]भुजिष्या [17]प्रभव हेरि निजजय विलंब हत ॥
[18]साहि छंत अनेक गोवर्धन३ सु गहि नट गति गज पिट्ठि गय[19] ॥
गिनि चढत समिटि पुनि सत्रुगन मंडिय तँहँ झर हेतिमय[13] ॥५॥
बाहिर सन बंदूक१ वान२ [20]वाँना३दिक छुट्टत ॥

॥ १ ॥ १ सेना फैलाकर ॥ २ ॥ २ घेरकर, चोम (बुरजें) और ३ कोट के कंगूरे ४ नीसरनियों पर चढे सो दोनों नीसरनियें अतोल ५ भार से तूटगई ६ बडे शरीरवाले अपने हाथी को मंगवाया ॥ ३ ॥ युद्ध की ७ बुरज के रूप ८ ऊंचे कोट से ९ भिड़ाना ॥ ४ ॥ १० प्रहार करके ११ एकत्रित होकर १२ मारकर १३ राजा ने १४ हाथी से १५कोट कुछ ऊंचा रह गया सो देखकर १६पासवान से १७उत्पन्न भाई १८वाव १९शस्त्रों का झड़ लगाया ॥ ५ ॥२०धनुष के वा-

बहु मृत घायल बनत अधर दुरिवे तिन उद्धत ॥
गोवर्धन३ बलगाढ भ्रात भट खैंचि[1]खैंचि इभ[2] ॥
अंस[3] लै रु उप्परहि निखिल प्रेरे[4] मारुति[5] निभ[6] ॥
उर बाम भिन्न गुटिका१ असह विद्ध त्रि३सर उर मज्झ वलि ॥
इक१ सहि स्वसीस असद्दन उपल[7] किय गोवर्धन चिलकलि[8] ।६।

॥ दोहा ॥

भ्राताके सब श्रेष्ट भट, इभ चढाइ निज[10]अंस ॥
गोवर्द्धन३ पहुँचाइ गढ, दये स्वसाहस[11] दंस[12] ॥ ७ ॥
तिन दुरि बैठे हिट्ठ[13] तिन्ह, गहि असि कट्टि गिराइ ॥
रच्यो अमल गढ तिम्मरनि, फवि जय आन फिराइ ॥८॥

॥ षट्पात् ॥

रतन१९२।१ जित्ति तिम्मरनि दई दिल्लीस दुहाई ॥
बारिय मंतु[14] बिसारि साह मन सु सुनि सुहाई ॥
जु इत भुजिष्याजात[15] भ्रात गोवर्द्धन३ भूपहु ॥
किल्लापति तँहँ किन्न बिरचि धायन उपाय बहु ॥
बढतो न आयु प्रारब्धवस ताही रैनि[16] स्वकाय[17] तजि ॥
नृप भोज१९१।२ तनय गोवर्द्धन३ सु भो जैंससेस[18] स्वरोक भजि ।९।

॥ दोहा ॥

सबल१९३।३मनोहर१९३।४अनुजसुत, तिंहिँ गढपति करि तत्थ ॥
पहु आयउ बुरहानपुर, सीम सिबिर जससत्थ ॥ १० ॥
नैंकें[19] १ अगरतिम दक्खिनि१न, रह्यो सु रोधक रत्न१९२।१ ॥

ण और बारूद के भरेहुए बाण १ नीचे २ हाथी पर ३ अपने कन्धे पर लेकर ४ सबको ५ हनुमान के ६ सदृश ७ पत्थर ८ युद्ध में आश्चर्य किया ॥ ५ ॥ ९ भाई के श्रेष्ट वीरों को १० अपने कन्धे पर ११ अपने साहस रूपी १२ कवच से ॥ ७ ॥ १३ नीचे ॥ ८ ॥ बारीगढ विजय नहीं हुआ उस १४ अपराध को १५ पासवानिया भाई १६ उसी रात्रि को १७ अपना शरीर छोडकर १८ कीर्तिशेष हुआ अर्थात् मरकर देवताओं के स्थान (स्वर्ग) को गया ॥ ९ ॥ १० ॥ १९ नीति करके और पर्वतों से ॥ ११ ॥

कछु इत मविसन खुरम२९।२कौं, जोलौं न कुर्‍यो जत्न ॥११॥
पुर भऊ सु लहि छिद्र पुनि, इत लिय खिज्ञि१३नै आइ ॥
हहुवती हाकार१ हुव, परतट[1] घाटिन[2] पाइ ॥ १२ ॥
दै तब दिल्ली अरज दल[3], चहिय सिक्ख चहुवान ॥
आक्खिय अब रोधक[4] इहाँ, पठवहु अपर[5] मधान ॥ १३ ॥
पुब्बहि इत सु अपाज पहु, मर्‍यो स्वसुर तब मीर[6] ॥
सालक[7] निज किय तास सुत, आसिफखान वजीर ॥ १४ ॥
जामाताको[8] जिहिं जियत, मकटायो न प्रमाद[9] ॥
जिहाँगीर३८।१वारा वज्यो, अँदल[10] जास आबाद ॥ १५ ॥
॥ षट्पात् ॥
आदिल[11] मरत अपाज मच्यो हौरव[12] भुवमंडल ॥
जनकहिं[13] रोवत न जन जिते रोये दृग भरि जल ॥
पिताभरन खिन[14]पाइ हुरम दिल्लीसकी जु हुव ॥
अप्प हुकम अब एह भयद[15] लग्गी प्रेरन भुव ॥
अधिकार आदि बहुतन बदलि दासन निजन समप्पि दिय ॥
करिरहिय स्ववस पति अरु कतिक कहत वजीरहु और किय ॥१६॥
हुरम चलावत हुकम देस दिसदिसन उपद्रव ॥
डँमर१[16] डकैती२ डाह[17]३ जुलम४ सब मचिग बडे जव ॥
अधिप रत्न१९२।१लिपि[18] अरज एह पहुँची जिहिं अवसर ॥
हुरम सु वहतहुतीहि अँपर[19] हाकिम पठयो और ॥
बुंदीस बुल्लि गढपति सबल१९३।३रचि खाली सह तिम्मरनि१ ॥
हँदजुत[21] सु देस दै हाकिमहिं तब हंकिय हहुद१नँतरनि[22] ॥ १७ ॥

---

१ चामल नदी के पैले किनारे २ धाड़ायतियों को ॥ १२ ॥ ३ पत्र ४ शत्रुओं को रोकनेवालों को ५ अन्य ॥ १३ ॥ ६ बादशाह ने ७ अपने साले ॥ १४ ॥ ८ जमाई को ९ भूल १० न्याय ॥१५॥ ११न्याय करनेवाला १२हाहाकार शब्द १३ पिता को नहीं रोवे जितने १४समय १५भयंकर ॥१६॥ १६ उपद्रव १७ द्वेष १८लिखीहुई अर्जी१९अन्य २०शीघ्र २१ सीमा सहित २२ हाडों का सूर्य ॥१७॥

॥ दोहा ॥

अब्द छ सत्त बिताइ इम, रहि दक्खिन पहु रत्न१९२।१ ॥
जित्ति अधिक इक१ दुर्ग जँहँ, सब कियरुक्ख* सफल्ल ॥ १८ ॥
पुनि बुलाइ हाकिम अपर, अप्पि सु तिंहिं अधिकार ॥
आयो दिल्लिय अप्प इम, पायो सुजस अपार ॥ १९ ॥

॥ युग्मम् ॥

रन जय१किय लिय तिम्सरनि२, अरि कोउ न दिय आन३ ॥
आँसिफ सिखयो साह इम, लिल्यो बढावत मान ॥२०॥
इक१ हत्थी हय खास इक१, पविनजटित इक१ पेंच ॥
साह दये मिलतहि सभा, बहु सराहि कुलपेंच ॥२१॥
कतिक मास तँहँ वासकरि, सदन सिक्ख लहि सूर ॥
आयउ बुंदिय रत्न१९२।१ इम, प्रसरायउ जस पूर ॥२२॥
कुमर अरिहु कैर माफकरि, सिसवासे सब लिय ॥
परतट खिप्पि१३न हनन पर, छितिप चल्यो सजि छिप्प ॥२३॥

॥ हनुमत्फाल्तः ॥

इत देस दक्खिन३।२ एह, दुरि अब्द बहु प्रियदेह ॥
अब रत्न१९२।१के इतआत, सो खुरम३।४।२केहु प्रनात॥२४॥
बीजापुरा१दिकवीर, सह भागपुर२ करि सीर ॥
पुनि हाँ जु हाकिम पत्त, मन वाहि गिनि तृनमत्त ॥२५॥
औंबाद१ दौलत आदि, गढगंज सब संपादि ॥
अतिभार परत अनेह, अवलंब गिनि गढ एह ॥२६॥
बुरहानपुर दे वाम१, करि सज्जदलौं जमकाम ॥
मरहट्ठ भटहु मिलाइ, पथ सून्य अवसर पाइ ॥२७॥

---

*अश्रु॥१८॥ † अन्य॥१९॥ १ असिफखाँ का सिखाया हुआ ॥२०॥ २ हौदे का जड़ा हुआ ३ सिरपेच ४ मार्ग ॥२१॥२२॥ कुमर के बापों का ५ हासिल माफ करके ६ चावल के पैले किनारे ७ शीघ्र ॥ २३ ॥२४॥ ८ लापी ९ शुक के समान ॥२५॥ १०दौलताबाद ११सम्पादन करके १२तनय १३ आभार ॥२६॥ १४ लेना ॥२७॥

महि बंट लोभ उमंग, अब लै सहायक संग ॥
इम खुरुम३।९।२ बनि बलवान, प्रभु दर्प१ किय प्रस्थान॥२८॥
सुनि सोर यह इत साह, चतुरंग२ सजि जय चाह ॥
पहिलैं अटक नदि पार, प्रतिमास३ पाइ पुकार ॥२९॥
खड्गी महावतखान, पठयो सु जंग प्रधान ॥
तिहिं सिंधुनदि पर४तीर, सूबा सम्हारि सधीर ॥३०॥
दुख दूरिकरि तिहिं देस, इम देत हुव सुख एस ॥
जोलौं न ठैहै अर्र जत्थ, तोलौं घनौं इक्क१ तत्थ ॥३१॥
जँहँ साह आन जमाइ, सु रह्यो अनिष्ट समाइ ॥
सुत आत सुनि अब सीम, भट संगदै बहु भीम ॥३२॥
सुतरोध कज्ज सधीर, पठयो अजीम प्रवीर ॥
रट्ठोर१ कूरम२राज, छुल्ले उभै२ अतिबाज ॥ ३३ ॥
कछु हेतु तिन लहि कज्ज, सेनाहि निजनिज सज्ज ॥
पठई चमूपति पास, उनको न आगम आस ॥३४॥
जब किन्न अरज अजीम, सुत सत्रु प्रबिसत सीम ॥
रहितत्थ नृप रतनेस१।९।२।१, दिय जो न प्रविसन देस ॥३५॥
आयो सु अब निज ऐन, भुव सून्य आरि गिनि भैन ॥
लहि सर्व दक्खिन३।२ लार, अब आत चक्क उदार ॥ ३६ ॥
प्रभुको जु हाकिम पास, जान्यौं न कछु भय जास ॥
यातैं सु बुंदिय ईस, अब संगदेहु अधीस ॥ ३७ ॥
जिम खुरुम३।९।२गहि हम जंग, आनैं प्रकीलित अंग ॥
मुगलेंद्स तब फरमान, पठयो सु लेखप्रधान ॥ ३८ ॥
नृपरत्न१।९।२।१तोकँहँ न्याय, सब चहत लैन सहाय ॥

१ घमंड॥२८॥ २ सेना ३ मास मास प्रति ॥२९॥ ३०॥ ४ पार ॥३१॥ अनिष्ट ५ मिटाकर ६ भयंकर ॥ ३२ ॥ ७ पुत्र को रोकने के कार्य ८ बहुत शीघ्र बुलाए ॥ ३३ ॥ ९ कारण १० सेनापति के पास ११ उनका आना नहीं हुआ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ १२ अपने घर १३ सेना ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १४ कैद करके ॥ ३८ ॥

लखि सुज्झ गह्हिय लज्ज, करनौं[1] वे ध्रुव[2] यह कज्ज ॥ ३९ ॥
इततैं अजीम उपेत[3], बल[4] आत मम समवेत[5] ॥
तस संग जावहु तत्थ, सुत खुरम३९१ हनहु[1] समत्थ[6] ॥ ४० ॥
कै बंधि भेजहु[2] क्रूर, गहि बंग गंजि गरूर ॥
अरि तस सहायक ओर, जिनपैंहु डारहु जोर ॥ ४१ ॥
इतकौं मऊ[1] सिर एह, अधिराज चढत अनेह[7] ॥
मुगलेश[6]सको फरमान, पहुँच्यो सु प्रीति प्रधान ॥ ४२ ॥
वह इक्खि बंधि[8] विचार, किय चित्त कृत्य प्रकार ॥
लिपि हुकम यह इत[1] लद्ध[9], इत[2]भुम्मि जावत अद्ध[1][2] ॥४३॥
इहिहेतु[10] निज[1]पर[2]अज्ज, करतव्य[11] उभय[2]हि कज्ज ॥
सजि स्वीय चक्क[12] असेस, करि मुख्य तँहँ कुमरेस ॥ ४४ ॥
कलि[13] खुरम३९१२सद्दन कज्ज, लखि उचित भुजधरि लज्ज ॥
जो आष्टि[16]सम[14] वय जुत्त, पट्टु सत्रुसल्ल१९४१[2]पउत्त[15] ॥ ४५ ॥
फरमान मित[16] सजि भोज, इत[1] मुक्कल्यो अतिओज ॥
जँहँ गोर जुग्गियदास[1], अधिराज स्वसुर जु आस ॥ ४६ ॥
जिहिं रक्खि बलपति जंग, सुहु दिन्न सुतसुत[17] संग ॥
तब रत्न१९२[1] अक्खिय ताहि अब परख गोरन आहि ॥ ४७ ॥
अब स्वसुर इहिं वय[18] आइ, जिन देहु बंस लजाइ ॥
सुत स्वीय[19] सुंदरदास, पहिलैंहु लै जिय पास ॥ ४८ ॥
गुडवानसन भजि गोहि, जिनकरहु जनक[20]हु जोहि ॥
वनि पग्घ[1] मुच्छ[2]विहीन, दल ईस न बजहु जु दीन ॥ ४९ ॥
यह सुनत मन्नि अनिष्ट[21], मन गोर किय अघमिष्ट[22] ॥

१अब२निश्चय ॥ ३९ ॥ अजीम३सहित४सेना५साथ ६ समर्थ ॥ ४० ॥ ४१ ॥७सम‌य ॥ ४२ ॥ ८ कार्य ९ मिला ॥ ४३ ॥ १० कारण ११ करने योग्य १२ सेना ॥ ४४ ॥ १३युद्ध में १४ सौलह वर्ष१५पोता ॥ ४५ ॥ १६फरमान के माफिक ॥४६॥ १७पोता के साथ दिया ॥ ४७ ॥ १८इस अवस्था में आकर१९तुम्हारा पुत्र ॥४८॥ २०पिता ॥ ४९ ॥ २१बुरा मानकर २२पाप से मन मीठा किया

जो प्रकट१ प्रीति जनाइ, लघुवैर *अंतर२ लाइ ॥ ५० ॥
कह्यौ जु †सालक कूर, तवतैंहि स्वसुरहु सूर ॥
सो मुख्य सुतसुत संग, भो चहत ‡प्रत्युत भंग ॥ ५१ ॥
लहि सर्व §निजवल लार, ¶कमि सत्रुसल्ल१९४१कुमार ॥
मिलि साहदल सन मग्ग, इक१ ह्वै वढे सव अग्ग ॥५२॥
सजि अल्प खिलवल संग, इत भूप जंग अभंग ॥
तनुजनु तृतीय३ द्वितीय२, हरिसिंह१९३१माधव१९३१२हीय।५३।
लखि रहन ३स्वजनक लार, पहु संग लै नदि पार ॥
गय जयन खिज्जि१३न गज्जि, सब ठाम साधक सज्जि ॥५४॥
मग सत्रुभट दुव२ मारि, पैर पास त्रास प्रसारि ॥
घेरयो मऊ१ वलघोर, जिततित दयो अतिजोर ॥५५॥
जिम सून्य परघर जानि, मन चोर लो निजमानि ॥
जबही धनी मिलिजाइ, कैसैं सु लव१हु टिकाइ ॥५६॥
पवि रूप गोलन पात, दव कल्प कल्प दिखात ॥
पछिताइ खिज्जि१३न पंच, रहि ना सके रुपि रंच ॥५७॥
परिवेढ मध्य परंतु, मग क्यों लहैं करि मंतु ॥
इम भूप सम्मुह आइ, १०खैर अग्ग खग्ग चखाइ ॥५८॥
खिरि मुख्य सत्रह१७ खेत, सत उभय२०० भट समवेत ॥
नृप अनुज केसव१९२१३नाम, कैलि मुख्य आयउ काम।५९।
सत१०० भट परे तस संग, इतकेहु जुज्झि अभंग ॥
बुंदीस अनुजनु वहुर, हृदयादि नामक१९२१२ हडु ॥६०॥
सुहु सत्रुसल्ल१९४१ सहाय, उत मुक्कल्यो जय आय ॥

*मन में ॥५०॥ †सुर्ब साले को निकाला ‡ उलटा नाश चाहता है ॥५१॥ §अपनी सेना ¶ चलकर ॥ ५२ ॥ १ बाकी थोड़ी सी सेना के साथ २ पुत्र ॥ ५३ ॥ ३ अपने पिता के साथ ४ जीतने को ॥ ५४ ॥ ५ शत्रु के पास ॥ ५५ ॥ ६ चण मात्र भी नहीं टिकता ॥ ५६ ॥ ७ वज्र रूप ॥ ५७ ॥ ८ घर में पड़कर ९ अपराध करके १० तीक्ष्ण ॥ ५८ ॥ ११ साथ १२ युद्ध में ॥ ५९ ॥ १३ छोटे भाई ॥ ६० ॥

तनुजात[1] छह६ सु तास, दलि सत्रु केसवदास१९३।६ ॥६१॥
सब अग्ग अति जव[2] सिक्खि, दुरि[3] दैवत आरि नृप इक्खि ॥
पहुँच्यो सु खिसिय१३ पास, दिय रोकि ईस्वरदास ॥ ६२ ॥
हनि छत्ति आरि ढिग होत, पटक्यो सु तोमर[4] पोत[5] ॥
कति कहत तस यह तोल[6], सहिगो सु भजि सँगोत्र[7]॥६३॥
वहु वद्दत हनि अरि बिंध[9], आयो सु जय जस इद्ध[10] ॥
पुर यौं मऊ१ जयपाइ, सब देस दुक्ख नसाइ ॥६४॥
सरिता[11] अडीरिय सीम, भट थप्पि अप्पन भीम ॥
अनुजन्नु[12] मनोहर१९३।४ अक्खि, रच्छक[13] मऊ१पुर रक्खि ॥६५॥
उत फेरि बुंदिय आन, दिन अह८ रहिय दिवान[14] ॥
खुगलेदस दल[15] इत मत्त, घाति खुरुम३९।२ सम्मुह पत्त[16] ॥६६॥
रिपु चक्क[17] तहँ नियराइँ[18], हनिवेहि हह६१न हाइ ॥
गहि स्वामिद्रोहहिं गोर, चहि छन्न निकसन चोर ॥ ६७ ॥
बैदि[19] पुत्र कड्ढन बैर, खल बंछि परबल[20] खैर[21] ॥
पुर खुरुम३९।२सन छल पाइ, लक्खैरि१पिहितै[22] खिखाइ ॥६८॥
कलि[23] गोरै[24] जित्ति कुमार, दुव्वी जु देव १८०।१ उदार ॥
पुनि जोहि गोरन पेलि, हम्मीर१८३।१लिय कुलहेलि[25] ॥ ६९ ॥
लक्खैरि सोहि लिखाइ, पलट्यो सु यह खिनपाइ[26] ॥
दल देस पुव्व पठाइ, सिसु१नारि२निस निकसाइ ॥ ७० ॥

---

१ पुत्र ॥ ६१ ॥ २ वेग ३ शत्रु को भाग कर छिपता हुआ देखकर ॥ ६२ ॥ ४ भाला ५ प्रवेश किया; अथवा भाले में पोकर गिरा दिया ६ यह भाला सहन करके ७ गोत्र सहित ॥ ६३ ॥ ८ कहते हैं ९ वेधन करके १० बढे हुए यश के साथ आया ॥ ६४ ॥ ११ नदी १२ छोटे भाई १३ रक्षक ॥ ६५ ॥ १४ यह बुन्दी के राजा का उपपद है १५ सेना १६ प्राप्त हुआ ॥ ६६ ॥ १७ सेना को १८ समीप लेकर ॥ ६७ ॥ इसके पुत्र को बुंदी के देश से निकाल दिया था इस बैर को१९ कहकर२० शत्रु की सेना को२१ कुशलता२२ छाने लिखाकर ॥ ६८ ॥ २३ युद्ध में२४ गौड़ों को जीतकर२५ कुल का सूर्य ॥ ६९ ॥ २६ समय पाकर ॥ ७० ॥

संकेत निस खिन सोह, भूपाल दलपति[1] ओहु ॥
पुत्रादि निज सजि पास, हुतं[2] छन्न जोगिपदास ॥ ७१ ॥
जवनेस सुतके[3] जोर, गो बदलि स्वसुरहु गोर ॥
सो ताहि निस[4] चलि सूल, मृत स्वामिद्रोहिन मूल ॥ ७२ ॥
गोपाल तस सुत गोर, अब खुरुम३९१२गिनि जन ओर ॥
मिलि पुच्छि पर[5]दल मर्म, करिबे[6] जनक मृत कर्म ॥ ७३ ॥
बहु अप्पि ताहि बिसास, पठयो स्व[7]नारिन पास ॥
सब खुरुम३९१२तिय१सिसु२संत[8], हे देवगढ इम हंत[9] ॥ ७४ ॥
आवार[10]दोलत आदि, गोपाल१गय छल छादि ॥
तब अनुज[11] सुंदर२ तास, पहुँच्यो स्व अग्रज[12]१ पास ॥ ७५ ॥
भजि अब मिल्यो हिय भिन्न, दुदुकारि[13] ज्येष्ठ१सु दिन्न ॥
पै स्वामिद्रोहहिँ पाइ, हुव गोर आरि इम हाइ ॥ ७६ ॥

॥ चतुर्भिः कलापकम् ॥

छम[14] तास सुत रनछोर, इक१जो रह्यो नृप[15]ओर ॥
स्व कुटुंब निकसत सूर, पठ्यो न लहि जस पूर ॥ ७७ ॥
जानैं मऊ१पुर जाइ, सब वृत्त[16] दिन्न सुनाइ ॥
उततैंहु सुनि सु उदंत[17], महिपाल किय इम मंत ॥ ७८ ॥
पठयो करोलिय पत्र, तुम भेजि कछु बल तत्र ॥
जासात स्वीय सुता१९४१२जु, निर्बाहि तास नैता[18] जु ॥ ७९ ॥
इहिं पिहित[19] कछुन आहु, जंदु[20] लै करोलिय जाहु ॥

---

१ सेनापति २ थे ॥ ७१ ॥ ३ शाहज़ादे के बल से ४ उसी रात्रि में शूल का रोग होकर मरा ॥ ७२ ॥ ५ शत्रु की सेना को ६ पिता का मृतकार्य करने के लिये ॥ ७३ ॥ ७ अपनी स्त्रियों के पास भेजा ८ श्रेष्ठ ९ खेद है ॥ ७४ ॥ १० दोलताबाद ११ छोटा भाई १२ अपने बड़े भाई के पास गया ॥ ७५ ॥ १३ धिक्कार देकर निकाल दिया ॥ ७६ ॥ १४ समर्थ १५ राजा की ओर रहा ॥ ७७ ॥ १६ वृत्तान्त १७ वह वृत्तान्त सुनकर ॥ ७८ ॥ १८ सम्बन्ध ॥ ७९ ॥ १९ छाने २० हे यादव

*दल इतहु निज†दल दिन्न, कुबिरोध गौडन किन्न ॥ ८० ॥
इक१ दुष्ट मग अनुसारि, हरिजात बहु मन हारि ॥
‡कलि स्वामिद्रोह कुभाइ, हुव गौड आरिन सहाइ ॥ ८१ ॥
ताकि बेर §छुद्रहि तत्थ, मति घातदै सिसु मत्थ ॥
इहिहेतु जदुभट आइ, जो लै कुमारहिं जाइ ॥८२॥
सिसु कढ्ढितो तिन्ह सत्थ, तुमदेहु जावन तत्थ ॥
बल२ सब अप्पि३ बिसास, पटुरीति रक्खहु पास ॥८३॥
इतहू मऊ१ निज आहिं, मैं आत अब तुम माँहिं ॥
हृदयादि१९२।२ स्वानुज हत्थ, तिम पत्र पहुँचत तत्थ ॥८४॥
पुनि आत जदुभट पास, किय सत्रुसल्ल१९४।१ निकास ॥
कढि निढ्ठि वह गुरु कानि, मन पिहित लज्जित मानि ॥८५॥
इम कुमर तिनजुत एह, गो स्वसुर जदुनृप गेह ॥
जिम प्रकट व्याज जनाइ, मृगया गयो सु मनाइ ॥८६॥
सजि सावधान स्व सत्थ, जंपी अजीमहिं जत्थ ॥
सुरि गौड़ बदलत मात्र, मन मलिन करत कुपात्र ॥८७॥
इत खुरम३९।२ बल अधिकात, प्रतिदिवस बढतहि पात ॥
इहिहेतु चलि कछु अग्ग, मुरिहैं न लहि जय मग्ग ॥ ८८ ॥
तुम भीर बाहक तेग, बल सेस बुल्लहु बेग ॥
नृप अनुज कथन निदान, मन मन्नि मिच्छ प्रमान ॥८९॥
सुहि पत्रदै निज सीर, भट बहुरि बुल्लिय भीर ॥
जंपी जु नृप अनुजात, सुहि मिच्छ मन्नि सुहात ॥९०॥
मुरि किन्न कछुकछु मान, पथ अग्ग अग्ग प्रयान ॥

---

* पत्र † अपनी सेना में ॥ ८० ॥ ‡ युद्ध में ॥ ८१ ॥ § तुच्छ १ यादवों के ॥ ८२ ॥ २ सेना ३ देकर ॥ ८३ ॥ ४ है ॥ ८४ ॥ मन में ५ छिपीहुई लज्जा मानकर बड़े लोगों की कानि से कठिनाई से निकलकर गया ॥ ८५ ॥ ६ करो-ली गया ७ छल ८ शिकार ॥ ८६ ॥ ९ कही ॥ ८७ ॥ १० प्रतिदिन ॥ ८८ ॥ ११ खड्ग चलानेवाले १२ कारण ॥८९॥ १३ शामिल १४ सहाय १५ छोटे भाईने ॥९०॥

उत खुरम३।०।२ चक्क उदार, लखि भजत लग्गिय लार॥९१॥
सरि[2] घट्ट वो दल सैल, गहि पिछि दब्बत गैल ॥
इम सेरपुर लग आत, लुंदीस चिंति सु[1] बात॥९२॥
लक्खैरि पत्तन लुद्ध[3], सुरि गौड अरिहुव सुद्ध॥
अब सो[1]हि केसव१९३।६ अत्थ, सनमानि दिय गज२सत्थ॥९३॥
खिझी१३स जिहिं हनि खेत, किय कित्ति बल सम[4]वेत ॥
अनुजात२ सुत छल६ एह, नृप पूजि भुज अति नेह ॥९४॥
सुहि कृष्ण१९३।६ केसव१९३।६ सोहि, इ[6]भराज खास अरोहि ॥
लक्खैरि[1]।दै तिहिं लार, बहु दत्त[7] बैभव२ वार ॥९५॥
जिम भ्रात केसव१९२।३ नाम, सुहि कर्ण१९३।१रूप१६३।१सनाम
इहिं बुल्लि सह[8]गज१ इट्ठ, नृप थप्पदिय अर निट्ठ ॥९६॥
करि ताहि इत कं[10]टकेस, दिय सिक्ख रक्खनदेस ॥
तिम राम१८९।४रत्तिय लुल्लि, बलवंत१९१।१भ्रातहु बुल्लि ॥ ९७॥
इन्ह संगकरि बल[11] एस, हुव२रक्खि रच्छक देस ॥
असवार१[12]पत्ति२हु अल्प, करि संग नृप चढि कल्[13]प ॥ ९८ ॥
भ्राता१भतीज२सु भाड, खिल्[14]ल लार लहि अनखौड[15] ॥
चल्ल्यो खुरम३।०।२सिर चंड, खल करन खग्गन खंड ॥९९॥
इत सेरपुर तिहिं आत, पहुँच्यो सु होतहि पात ॥
अनुजात[16]१निज रु अजीमर, सुनि पत्त सम्मुह सीम ॥ १०० ॥
मिलि स्वीय भट सिरमोर, आनंद सब सवओर ॥
प[17]हु जाइ सिबि[18]र पइ[19]ठ्ठ, दल द्वैरहि दुर्मन[20] दि[21]ट्ठ ॥ १०१ ॥

---

१ सेना ॥ ९१ ॥ पर्वतों के घाटे में सेना २ चली ॥ ९२ ॥ लाक्खैरी नगर का ३ लोभी ४ सूर्य ॥ ९३ ॥ ५ सेना के साथ कीर्ति की ॥ ९४ ॥ ६ बडे खासा हाथी पर सवार होकर ७ वैभव का समूह दिया ॥ ९५ ॥ ८ हाथी सहित ९ इष्ट ॥९६ ॥ १० सेनापति ॥ ९७ ॥ ११सेना१२ पैदल१३प्रलय करने को ॥ ९८ ॥१४ बाकी१५क्रोध करके ॥ ९९ ॥ १६ छोटा भाई ॥ १०० ॥१७प्रभु १८ डेरों में१९ प्रवेश हुआ २० उदास २१ देखा॥१०१॥

इहि अंतराय वजीर, बहु कौ सहायक वीर ॥
खल दमन आसफखान, पहुँच्यो हि सर्व प्रधान ॥ १०२ ॥
मिलि नृप१अजीम४समोद, करि सज्ज बल चहुँ२कोद३ ॥
रहि रत्ति प्रातहि रंग, जयआस चाहिय जंग ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

निर्यराये खुरम३९।२हु निखिल, उततैं सँत्वर४ आत ॥
होडल५ पल्वल६ जुद्ध हुव, पंचम५दिवस प्रभात ॥ १०४ ॥

॥ षट्पात् ॥

उत्तर१दक्खिन२उभय२कटक उत्तर१दक्खिन२क्रम ॥
जुज्झे तोपन जाम८डुम्मह जयकाम अरिंदम९ ॥
वलि उत्तर१ दल वाजि१० तैरल११ पटके बिच तिक्खे ॥
मंगी फोजन मुलक१ विजय२न मिले कहुँ विक्खे१२ ॥
अंवमर्द१३ मचत चलि घोर असि चलन धार नर२ वाजिर चैय१४॥
उत्तर१ अनीक१५मैय नाहम१६तैं गय१७ दक्खिन२ पय छुट्टिगय।१०५।

॥ दोहा ॥

जुग२ मरहट्ठ रु त्रय३ जवन, परत मुख्य भट पंच५ ॥
सब भज्जे उत खुरम३९।२ सह, खपि सक्के न रहि रंच ॥१०६॥
बहु ठामन सन मंगि बैल१८, किन्न खुरम३९।२एकत्र ॥
इक मनसो किम अकुरैं१९, तैंत मत मन रत्त तत्र२० ॥१०७॥

शत्रु को १ दण्ड देने का ॥ १०२ ॥ २ चारों दिशा ॥ १०३ ॥ ३ समीप लिये ४ शीघ्र. सेना रूपी ६ छोटे तालाव में ५ नाव रूपी यद्ध युद्ध हुआ अर्थात् शीघ्र उसके पार निकलगये "होडः नौकाविशेष, इति शब्दार्थचिंतामणिः" दिल्ली की और खुर्रम की दोनों सेनाएं क्रम पूर्वक उत्तर और दक्षिण दिशा में रही ८ एक प्रहर ९ शत्रुओं को दण्ड देनेवाले १० बादशाही सेना के घोड़े ११ चपल. मांगी हुई फौज से विजय और मुल्क मिले कहीं नहीं १२ देखे १३ युद्ध १४ समूह. बादशाही १५ सेना रूपी १६ मृगपति (सिंह) से दक्षिण रूपी १७ हाथी के पैर छूट गये अर्थात् दक्षिण की सेना भगी ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १८ सेना १९ खड़े रहैं २० तहां अथवा तिनके ॥ १०७ ॥

आसफखान१ रु रैन२ इत, खरे जित्ति रनखेत ॥
कतिदिन तँहँ तकि अवधि कछु, बसे सुजस समवेत ॥१०८॥
सुरि भज्जेहु न दूर मग, लंघत हुव कछु लज्ज ॥
ठहराये जय लोभ ठगि, सकल होन पुनि सज्ज ॥१०९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीन्द्ररत्नसिंहचरित्रे रत्नसिंहतिम्मरानिविजयन १, जहांगीरश्वसुरायाजमरणहेतुकोपद्रवसमयनूरजहांशासनानुसाराधिकारिपरिवर्तनबुरहानपुराधिकारस्थरत्नसिंहदिल्लीगमनपुरःसरबुन्द्यागमन २, खुरमप्रतिरोधाजीमविनयानुसाररत्नसिंहाजीमान्तिकगमनार्थयवनेन्द्राज्ञावितरण ३, खुरमप्रतिरोधकस्वपौत्रशत्रुशल्यप्रेषणानन्तररत्नसिंहसऊविजयन ४, स्वपौत्रसंगतसेनापतीकृतस्वश्वसुरगौडयोगिदासप्रतीपभवनश्रवणखुरमप्रतिरोधार्थरत्नसिंहगमन ५, रत्नसिंहासफखानकृतसमरखुरमपलायनं नाम चतुर्विंशो मयूखः ॥२४॥

आदितः सप्तोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥२०७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

---

१ रत्नसिंह २ यश के साथ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में रत्नसिंह का तिम्मरानि को विजय करना १ दिल्ली के बादशाह जहांगीर के श्वसुर आयाज के मरने के कारण देश में उपद्रव होकर नूरजहां की आज्ञानुसार अधिकारियों की बदली होने के कारण रत्नसिंह का बुरहानपुर के सूबे से दिल्ली होकर बुन्दी आना २ खुरम को रोकने के कारण अजीम के विनय के अनुसार रत्नसिंह को अजीम के समीप जाने की बादशाह का आज्ञा देना ३ अपने पौत्र शत्रुशाल को खुरम को रोकने के लिये भेजे पीछे रत्नसिंह का सऊ विजय करना ४ अपने पौत्र के साथ सेनापति करके भेजेहुए अपने श्वसुर गौड़ जोगीदास के पलटने की खबर सुनकर रत्नसिंह का खुरम को रोकने के लिये जाना ५ रत्नसिंह और आसिफखान से युद्ध करके खुरम के भागने के वर्णन का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ सात २०७ मयूख हुए ॥

थक्कत इत रपं ठहरि थिर, दक्खिन१।२ दल लखि दाव ॥
दिन कछु कहुँक मिलान दिय, श्रम हरत जय भाव ॥ १ ॥
इतहु देवगढको असह, जव पहुँच्यो अति जोर ॥
पर्‌यो त्रास बुरहानपुर, सूवा, जितजित सोर ॥ २ ॥
हाकिम जो पठयो हुरम, देस१ काल२तिहिं देखि ॥
दल सहाय इच्छक३ दयो, लघु वजीर प्रति लेखि ॥ ३ ॥
आसफखान१हु वंचि वह, मंडि रतन१९।२१।२सन मंत ॥
अलप सत्थ पत्त उभय२, तव दिल्ली नेय तंत्र ॥ ४ ॥
जवँ६ करि कुम्भ१कवंध२जुग२, उपालंभ७ बुलवाइ ॥
कहिय मिलहु निजनिज कटकें, जँहँ आजीम तँहँ जाइ ॥ ५ ॥
रहिय रत्न१९२।२बुरहानपुर, तोलौं न सुन्यों त्रास ॥
यातैं सुहि सूवा इनहि, मिलिहैं दलनें सिवांस ॥ ६ ॥
सूवापति सतकार सव, दुंदर११ नृपहिं दिवाइ ॥
पठयो पुनि बुरहानपुर, साह हुक्कम दरसाइ ॥ ७ ॥
सहँस उभय२०००दल दिन सहित, महिप अनुज इत संगि ॥
कलह आजीम सहायकिय, रोकन रिपु रन रंगि ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

जवहि रत्न१९२।१नृप सजेव साजि इंकिय सूवा सिर ॥
उभय२मास गृहआइ थप्पि प्रकृतिन१३ प्रवंध थिर ॥
बुल्लि करन१९३।१बलवंत१९१।१भुजन तिन्ह अप्पि राज्य भर ॥
प्रसू१५ प्रमुख पय प्रनामि मऊ१चनाइ मनोहर१९२।४ ॥
निज अनुज उदयनारायन१९२।२हिं कथित२०००हयन जुत रहन कहि

१ वेग थकनें से २ मुकाम ॥ १ ॥ २ ॥ सेना से सहाय की ३ इच्छा करनेवाला ॥ ३ ॥ ४ प्राप्त हुए ५ नीति के आधीन रहकर ॥ ४ ॥ ६ वेग (शीघ्रता) करके ७ ओलम्भा देकर ८ सेना में ॥ ५ ॥ ९ नाश करने को १० लुटेरों के घरों को ॥ ६ ॥ ११ वर्णना में नहीं आवे ऐसा ॥ ७ ॥ ८ ॥ १२ शीघ्रता से १३ राज्य के प्रधान पुरुष १४ भार १५ माता १६ आदि के १७ ऊपर कहेहुए ॥

प्रस्थान करत बुरहानपुर*स्वबल ओर बुल्लिय सबहि ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

†स्वसुरालय सन पुनि‡सता१९४१, कुमर बुल्लि ततकाल ॥
सब सासक[1] रक्खि सु सदन[2], प्रस्थित[3] हुव भूपाल ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्रज१दल[4] लखि अनुज२हुक्कम परिमित[5]२०००रक्खे हय ॥
केसव१९३।८तस छम[6]कुमर भनिय जनकहिं तँहँ निर्भय ॥
न रहहु वहहुं[7] निदेस आत कूरम१कबंध२अब ॥
पिसुनन[8] सन वचि पाय सोधि मग धरहु बोधि[9] सब ॥
द्वारकादास१नामक बिदित सेखाउत कूरम्म सहित ॥
केसव१९३।८।२इतीक कहि लाहि कटक आनि मिलिय दब्बत अहित

॥ दोहा ॥

पृतना[10] सह बुरहानपुर, पत्तो पहु जैसपीन[11] ॥
कुम्म[12] द्वारकादास१ कँहँ, कटकईस[13] तँहँ कीन ॥ १२ ॥
भेजि रायमल्लोत२३।१९भट, बुद्धिचंद्र १९२।३ बर बंधु ॥
रक्ख्यो गढपति तिम्मरनि, अरिगन गेरन अंधु[14] ॥ १३ ॥
माधव१९३।२हरि१९३।३केसव१९३।८प्रमुख[15], सूनु१भतीज२न सत्थ
सूबा सीम सम्हारि सब, तप्यो निरंकुस तत्थ ॥ १४ ॥
सासक करि हम्मीर१९०।२सुत, पूराउत्त१७।२३प्रताप१९१।१ ॥
पठयो पत्तन अलचपुर, सुनि उत डमर[16] सताप ॥ १५ ॥
कहत किते आसेर पह१९१।१, रक्ख्यो गढ अनुरूप ॥
रहिय अप्प बुरहानपुर, भू नव[17] दब्बत भूप ॥१६॥

*अपनी सेना ॥ ९ ॥ †सासरे से ‡शत्रुशाल को १आज्ञा करनेवाला २घर में ३गमन किया ॥ १० ॥ ४पक्ष ५हुक्म माफिक ६आज्ञा धारण करो ७चुगलों से ८सबको समझा कर ९ शत्रुओं को दबाता हुआ ॥ ११ ॥ १० सेना सहित ११ पुष्ट पक्ष से १२ कछवाहा १३ सेनापति ॥ १२ ॥ १४ कुए में ॥ १३ ॥ १५ आदि ॥ १४ ॥ १६ उपद्रव ॥ १५ ॥ १७ नवीन भूमि दबाने के लिये ॥ १६ ॥

जंपहिं[1] कति आसेर जब, उत हो आरिन अधीन ॥
रक्खि तहां तिय१ सिसु२ खुर्रम३९।२, कलह उपक्रम[2] कीन ॥१७॥
पै दक्खिन१ बुरहानपुर२, उत्तर१ गढ आसेर२ ॥
परिबिच तापी[3]१ सत[4]पुट२, फलमैं भासत फेर ॥१८॥
तत्थहु ह्वै[5] संभव तदपि, अंतर डिल्लिय आन ॥
दक्खिन१ उत्तर२ आरि दुर२ दिस, तिम न जनश्रुति तान ॥१९॥

॥ षट्पात् ॥

हाकिम पठयो हुर्रम ताहि प्रतिमग्ग[6] भेजि तिम ॥
इत अवहित[7] हुव अप्प१ हेलिर[8] तुरकान[9]१ महा हिमर२ ॥
आसिफखान वजीर अकिल सत्वर[10] पहुँचन इत ॥
अटकन खुर्रम३९।२हिं उक्त महिप पठये बल सम्मित ॥
रट्ठोर१ साहदल सुर्ख[11]२ रहत चलात कुम्म१ चंदोल[12]२ चढि ॥
अक्खिय सु चिंति जयसिंह१ अब पलटन येह[13] यह मंत्रपढि ॥२०॥
सुनहु साह१ सह सचिव२ अयुत दुव२०००० दल मम आश्रित
सादी[14] पंचहि सहँस५००० अधिप गजसिंह२ तंत्र[15] इत ॥
निर्यंत[16] मोहि नासीर[17]१ थट्ट ईसहिं अब थप्पहु ॥
मिर्त[18] रट्ठोरन महित सहित चंदोल२ समप्पहु ॥
जय गिनहु जुद्ध बहु चंक्रबस[19] हजरत इम बदलहु हमहिं
करि सुहि कबंध दुर्मन[20] किय सु सूर[21]सुतहु टरि संक्रमहि[22] ॥२१॥

१कहते हैं युद्ध करने का विचार पूर्वक २आरम्भ किया ॥ १७ ॥ ३ तापी नदी ४ सतपुड़ा पहाड़ बीच में पड़ता है इसकारण इसके होने में फरक दीखता है॥ १८॥ ५. एसी दन्तकथा नहीं है ॥ १९ ॥ ६ पीछा ७ सावधान ८ सूर्य ९ तुरकान रूपी बरफ का १० शीघ्र ११ राठोड़ बादशाही सेना की हरोल में रहते हैं और कछवाहे १२ चन्दोल में (पीछे) रहते हैं १३ इस रीति को ॥ २० ॥ १४ सवार १५ आधीन १६ निश्चय १७ आगे (हरोल में) सेनापति करके १८ राठोड़ थोड़े पूज्य हैं जिनको १९ अधिक सेना के आधीन २० उदास २१ सूरसिंह का पुत्र सेना से टलकर २२ चला ॥ २१ ॥

दोहा

साह पठाये सुत सम्मुख, रहि तब मत अनुरूप ॥
अग्ग१ पिट्ठि२ क्रम तजि*अपन, भिन्नचले दुव२ भूप ॥२२॥

षट्पात्

रानअमर सुरतान करन१ अक्खिय पहिले क्रम ॥
भ्रात अनुज तस भीम२ दुसह सूचिय परबल दम[3] ॥
साह पटा लहि सोहु होहु कै१ तब तहँ हाजरि ॥
कै२ पठयो होहु कहुँ सरनि कै३ होहु तित्थ सारि ॥
कै४ पिक्खि बंस अनुकूल क्रम होहु भीर निर्बल हटत ॥
पै ऑप्पि सरन खुरम३९१रहिं प्रथित करहिं कित्ति काटत१कटत
इम इक१ आहव अंत सरन यह रक्खि साहसुत ॥
जातहि कासी जुरहिं मुरहिं अभिमुख धारन धुत ॥
मरहिं कवंधन माँहि कुम्म१ हड्डन विद्दुत करि ॥
इहिं मयूख सुहि अधिक होहि प्रभु सुनहु रामहरि२०११४ ॥
जौहो हजूर तातो१ जबहि पठयो वहहु स्व पुत्र पर ॥
हो दूर तोरहु अवसर हरखि भयो सरन सिर मरन भर ॥२४॥

दोहा

होहु कितहि यह भीमहरि, पै कुलधर्म प्रसंग ॥
रक्खि सरन खुरम३९१रहि खिरयो, अप्पन तिलतिल अंग ।२५।
वह उदंत[14] अहैं अबहि, इक्क१ समरके[15] अंत ॥
मिले अजीमहि इत उभयर, कुम्म१ कबंधर कुंकंत[16]॥२६॥

आगे पीछे चलने का * स्थान छोडकर ॥ २२ ॥ उदयपुर के राणा कर्णसिंह का १छोटा भाई भीमसिंह २ शत्रु की सेना को दण्ड देनेवाला ३ मार्ग में ४ अथवा तीर्थ करने गया होवेगा ५ खुर्रम को शरण देकर ६ कीर्ति प्रसिद्ध करेगा ॥ २३ ॥ ७ सन्मुख ८ राठोड़ों में जाकर मरेगा ९ कछवाहों और हाडों को १० भगाकर ११ हे रामसिंह १२ जो बादशाह के हजूर में था तो ॥ २४ ॥ १३ भीमसिंह ॥ २५ ॥ १४ वृत्तान्त १५ एक युद्ध होने के पीछे १६ भूपति ॥ २६ ॥

पठये दल दोउरन प्रथम, जिन्हजिन्ह सिबिरन[१] जाइ ॥
भूप मिले निजनिज भटन, सुनि१ पुनि कुसल सुनाइ ॥ २७॥
सीसोद३हु जो संग हो, ता अजीम मिलि ताहि ॥
[२]निवसायो अप्पन निकट, सिबिर प्रबंध सराहि ॥२८॥
महिपरत्न१९२।१ अनुजहु मिलिय रूपनरायन१९२।२हहु६१॥
नृप [३]अवंति सूबा [४]अनुग, बिविध मिले बल [५]बड्ड ॥ २९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुमरहु खुर्रम ३९।२ खलन बहिकायो, उततैं साजि दक्खिन ३।२ बल आयो ॥
[६]आजि मच्यो [७]सहसा दुहुँ२ओरन, हुव संकुल[८] जिम सिंधु हिलोरन।३०।
उत्तर पवन चल्यो तिहिँ अवसर, झरयो प्रथम लोलन[९] गोलन झर॥
गिरनलगे नर१ गँय[१०]२ हय३ मयँ[११]४ गन, फिरन लगे झेलन भुव [१२]अहि फन
[१३]किरन लगे छत्र१ चमर२ केतन[१४], खिरनलगे मनि१ कनिसँ[१५]२ किं[१६] खेतन
[१७]घिरनलगे कातर चिंतत घर, चिरन लगे गिरि चमकि चराचर ।३२।
तिरनलगे नभ१[१८]उदधि२ गिद्ध तिम, उभय२[१९]चँक्र तहँ भिरनलगे इम॥
कछु [२०]अनेहँ [२१]कलकल तोपन करि, बल बल बहुरि बडे [२२]जँव बिस्तारि ३३

---

१ डेरों में जाकर ॥ २७ ॥ २ निवास कराया ३ उज्जैन के ४ सूबाके सेवक ५ बडे बल से दोनों ओर ७ अचानक६ युद्ध हुआ सो समुद्रों के हिलोळों केसमान ८ भरगया ॥ ३० ॥ ९ चपल गोलों का झड़ लगा जिससे१०हाथी, घोड़े ११ऊँटों का समूह गिरने लगा, पृथ्वी को झेलनेमें१२ शेषनाग फण फिरानेलगे "यहां अहि शब्द सामान्य सर्प का वाचक है परन्तु पृथ्वी को झेलने के योग से शेषनाग का ग्रहण है" ॥ ३१ ॥ छत्र चमर और १४ ध्वजा १३ गिरने लगे और युद्ध में मणियें बिखरने लगीं सो १६ मानों खेतों में १५ डांखियें (धान्य की मंजरी) बिखरती हैं १७ कायर लोग चिन्ता के घर में घिरने लगे चर और अचर चौंक कर चीर होकर गिरने लगे ॥ ३२ ॥ इसप्रकार आकाश रूपी १८ समुद्र को ग्रीध तिरने लगे इसप्रकार दोनों १९ सेना भिड़ने लगीं १९ कुछ समय तोपों का २१ कोलाहल करके फिर दोनों सेना ने २२ शीघ्रता करके बल (पराक्रम) फैलाया ॥ ३३ ॥

कुंतन[1] सरन[2] असिन[3] संकुलि[4] कोलि[5], बत्थन कहँ पाइक्क[6] जुरत बलि ॥
इत१ के उत२ उत१ के पैठे इत२, मिलत मित्र[7] चिरतैं बिछुरे मित्त ॥ ३४ ॥
मचकि कपाल कढन लगि मज्जा[8], लचकि गिरत सुमिरत भट लज्जा ॥
अंत्रनजाल गिरत[9] कढि अग्गैं, लंघि तदपि[10] समुखहि पग लग्गैं ॥ ३५ ॥
उडत सीस१ रुंड[11]२ हि बहु उट्ठत, बिहसि कि कीर१ दसंगुल[12]२ बुट्ठत ॥
उत्तर१ अनिल[13] इतसु अनुकूलहि, सम्मुह दिस२ खटक्यो हिय सूलहि ॥
हेति[14]१ हत्थ२ इत१ कोलि सफल हुव, भज्जी उत२ अवतो जियत[15]२ हु सुव ॥
रन थल छहत मिच्छ१ मरहट्ठ२, निजजिय प्रिय[16] दक्खिन दल नट्ठे ॥ ३७ ॥
रतन१ फेट बीजापुर२ रंज्यो, इमहि अजीम१ भागपुर२ भंज्यो ॥
अतिबल सुरत देरहि दल ऐसैं, प्रतिहत[17] खिलहु कौन घर पैसैं ॥ ३८ ॥
जिन्ह बल खुरम ३९ ॥ खग्यौं साजि जोधक[18], अगमग झुरे बिमुख गति बोधक[19]
भंगी धारि[20] समय सुरकानी, मनहु लख्यो न खुरम२१ शंकित मानी
स्वबलैं[21] सुरत जान्यौं न राह सुव[22], हुलसि कूरम[23] बलाबिच जुज्झत हुव
अति भार[24] परत पिट्ठि[25] बल इक्ख्यो, समुझि सु सून्य प्रदेवहि[26] सिक्ख्यो

---

१ भालों से २ तीरों से ३ तरवारों से ५ उस युद्ध को ४ भरकर कितने ही ६ पैदल बाहु युद्ध करने लगे. बहुत समय के बिछुड़े हुए ७मित्र के समान मिलने लगे ॥ ३४ ॥ वीर आदि के समूहों के टूटने से ८गूद (अस्थिसार) निकलता है और नमकर गिरते हुए वीर लज्जा का स्मरण करते हैं आंतों का समूह निकल कर आगे ९गिरता है १०तोभी उसको लांघकर वीरों के पैर सम्मुख ही उठने लगते हैं ॥ ३५ ॥ मस्तक गिरते हैं और बहुत से ११ बिना मस्तकवाले धड़ हैं सो मानों कीर हसकर १२खरबूजों की वृष्टि करता है उत्तर की दिशा का १३ पवन दिल्ली की सेना के अनुकूल होकर खुरम की सेना के हृदय का शूल होकर चुभा ॥ ३६ ॥ १४शस्त्रों के हाथ१५जीते ही मृतक हुए१६अपने जीव को प्यारा जाननेवाली दक्षिण की सेना भागी ॥ ३७ ॥ १७नाश होने से बाकी रहे जिन्हों ने जाना कि अब किस घर में घुसेंगे ॥ ३८ ॥ सज कर १८योद्धा चला था १९बिना विचार भागे २० वह भांगीहुई धाड़ ॥ ३९ ॥ २२ खुरम ने अपनी २१ सेना को भगी हुई नहीं जानी इसकारण प्रसन्न होकर २३ कछवाहों की सेना में युद्ध करता रहा जब अत्यन्त २४भार पड़ा तब २५पीठ की सेना को देखी उस स्थान को शून्य देखकर वह भी २६ भागा ॥ ४० ॥

हो ढिग१कै कछुदूर२ पंताहर, संकट भीम सहायक संगर ॥
होहु कितहि पै तास सरन हुव, स्वसत नसत नासि त्रसत साहसुव४१
लखत सरन खुरम३९।२ सु हियलायो, साह पटा सु न अधिक सुहायो ॥
तस दल अग्गैं भजि सु भीरु तिम, अप्पन सरन लई कासीइम
किते कहत सूबा प्रयाग को, भीमतंत्रहो खुरम३९।२ भागको ॥
सो तँहँ जाइ भयो सरनागत, बाँहगहिय तिहिँ होहु कितहु बंत४३
ताहि उबारि मरन निश्चय तकि, थान पहुँचि सुररयो सु मनौँ थकि॥
धीर कतिक दै संग धीरधुर, पठयो खुरम३९।२ निकासि उदयपुर४४
करँन रान रक्ख्यो हु मास कति, भजिजैहैँ दक्खिन तस्कर भाति।
इत इहिँ कहि भीम रन अंकुरि, मरन खेत मिलतहि पच्छोमुरि४५
पिछिलगे पहुँचत दिल्ली दल, परयो सिंह तिनपर प्रहरि पंतल ॥
पिक्खहु चाहि मरे सु रांम२०३।४ पहु, बढ़ैं सम्मुख न गिनैं अल्प१ रु बहुर२ ॥४६॥
जावत सरन मरन कासी जब, सगताउत्त मान१ यह सुनि सब ॥
धूलिमित्र भीमरहि गति धारयो, बुध तिहिँ संगहि मरन बिचारयो॥
उज्झि सबन द जल सेवारहिँ, बंटन वेग ज्ञात सन भारहिँ ॥

१ महाराणा प्रतापसिंह का पौत्र समीप था अथवा दूर था परन्तु वह शीषोदिया भीमसिंह उस युद्ध के २संकट में खुरम का सहायक हुआ ४बादशाह का पुत्र(खुरम) ३ भाग कर उसकी शरण में हुआ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ५ भीमसिंह के आधीन था ६ यह वार्ता कैसे ही होओ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ७ महाराणा करणसिंह ने खुरम को कितने ही महीनों तक उदयपुर में अपने पास रक्खा ८ चोर की भांति भाग गया ९ भीमसिंह युद्ध में खड़ा होकर मरने योग्य १० काशी का क्षेत्र मिलते ही पीछा फिरा ॥ ४५ ॥ ११ हातल का प्रहार करके वह सिंह दिल्ली की सेना पर गिरा १२हे प्रभु रामसिंह देखो जो मरना विचार लेता है वह शत्रु के सन्मुख ही चलता है १३ थोड़ा और बहुत नहीं देखता ॥४६॥ १४ बालमित्र १५ उस चतुर मानसिंह ने ॥ ४७ ॥ १६ सब को छोड़ कर

* विक्रमी सम्वत १६७१ में महाराणा अमरसिंह के साथ बादशाह जहांगीर की सन्धि हुई तब शाह

जा दिन भीम जुरयो दिल्ली दल, पहुँचत तादिन तिहिं नलगी पल ॥४८॥

प्रथनैं उपक्रम मिलत महापटु, कछु कहि मिल्ल मरन हितकी पटु
सजि तिम मान १ भयो अग्रेसर, गोकुलदास २ सहित सजि संगर ॥ ४९ ॥

कासी मरन मोरि सब कच्छी, जुरे चार भट दक जिम मच्छी।
साह कटक भज्जत जानत सठ, हरखत पिछि लग्यो जित्तन हठ ॥ ५० ॥

तससिर मुरि सीसोद परयो तब, भैरन हार मन्नैं सु सहै सब ॥
बढिगो प्रतिबल जलधि बिलोरत, सुरत१ न सुन्यों सुन्यों पैर मोरत२ ॥ ५१ ॥

असि प्रसरयो सीसोदन ऐसो, कहँ सुकवि मारी गद कैसो ॥
दिस पूरव सन प्रबिसि साह दल, किन्नौं मरन मारि अरि कलकल ॥ ५२ ॥

बह्यो भीम असि प्रलय भीम बिधि,नमरयो मग्गलयो कासी निधि
सु मुरि पंचक्रोसी बिच सम्मुह, सत्तुन दैन लग्यो दुल्लहसुह॥५३॥

---

१ जिस दिन ॥४८॥ २ युद्ध के विचार पूर्वक ३ आरम्भ होते ही वह ४ अत्यन्त चतुर ५ अग्रणी हुआ ६ घोड़े ७ जल में जिसप्रकार मच्छी पीछी फिरै तिस प्रकार पीछे फिरे॥५०॥ ८सेना प्रति ९समुद्र को मथनाहुआ १० शत्रुओं को मोड़ता हुआ॥५१॥११ महामारी(मरी)रोग के समान नरमार चलाई १२ कोलाहल ॥५२॥भीमसिंह का१३खड्ग१४भयंकर प्रलय की विधि से चला १५दुर्लभ सुख॥५३॥

जादा खुरम ने भीमसिंह को अपने साथ लेजाकर बादशाह से भीमसिंह को राजा के खिताब के साथ बडा दरजा दिलवाया तभी से भीमसिंह बादशाही सेवा मे रहता था इसकेलिये ऐसा प्रसिद्ध है कि शाहजादा खुरम की माता भीमसिंह के राखी बान्धती थी इसकारण भीमसिंह खुरम को भानजा कहता था इसीकारण से भीमसिंह बादशाही सेवा से निकलकर अपने भानजे खुरम का सहायक हुआ. इस युद्ध का वृत्तान्त बहुतसी तवारीखों के हवालें से वीरविनोदनामक मेवाड़ के इतिहास में लिखा है जिसमें जोधपुर आमेर आदि को भगाकर सहजादे पर्वेज के समीप बादशाही सेना में भीमसिंह का माराजाना लिखा है. यह युद्ध विक्रमी सम्वत १६८१ में काशी के समीप हुआ था ॥

उभय[1] गोकुल[1] रु मान[2] पास इम, जय रन रमत चक्रच्छक्र[2] जिम ॥
परत वज्रगति सरन मरनपन, कूरम[1]हड्ड[2]जवन[3]किय कनकन[3]५४
टिकत कबंध[1] खरो इकदिस टरि, कलि वह लखत मत्त आसव करि ॥
सय[6] रंपमय[7] चलत सीसोदन, गय[1]हय[2]नर[3]न झरन लग्गे गन५५
कहुँक रुंड लै मुंड स्वीयकर[9], है हियदिट्ठि[10] पहुँचि पूजैं हर ॥
भूत दूतबनि बहुन गिरावत, धावन अतिभट सिरन खिसावत।५६।
परत भार लखि जियनपरायन[11], नंठो[12] हड्ड६[1]सु हृदयनरायन ॥
कुल कलंक[13] कानि न कछु किन्नी; लै गिपप्रान दिसा इकलिन्नी५७
अग्रज भयहु न कछु मन आन्यौं, प्रिय[14]जिय अप्रिय[15]नक्क प्रमान्यौं
इत सीसोद भीम कट्टत अरि,. कूरम[1]हड्ड[2]जवन[3]कनकन करि५८
संकट[16] पुव्व[17] भजत जान्यौं सुहि, सम्मुह सुरत काल मान्यौं सुहि
इक चित्तोर करन निज उज्वल, बाहुरि भिरत बरन पिक्ख्यो बल
कोउक रह्यो अछुत भीमकर[18], सब हुव जत्रकुत्र अग्रेसर ॥
समर खरो जयपाइ अमर सुव[19], दुजन अदिट्ठ हेति[20] जर्जर हुव।६०।
छिज्जत कूरम[1]जवन[2]लोह छकि, छिति लोटत कति भजत मोहछकि
विजय निसान[21] घुराइ भीम वलि[22], असह खेत ठह्यो जसउज्जलि ६१

---

१ अर्जुन और २ श्रीकृष्ण के समान; अथवा श्रीकृष्ण की रक्षा से अर्जुन युद्ध करै इसप्रकार युद्ध किया. कछवाहे और हाडों को ३ तितर बितर करदिये ॥ ५४ ॥ जोधपुर का राजा राठोड़ गजसिंह टलकर एक ओर खड़ा रहकर ४ युद्ध देखता रहा था ५ मद्य में मस्त होकर ६ हाथ ७ वेग सहित ८ हाथी ॥५५॥ ९ अपने हाथ से अपना ही मस्तक लेकर १० हृदय की दृष्टि से ॥ ५६ ॥ ११ जीने में तत्पर होकर १२ भागा १३ शंका ॥ ५७ ॥ १४ जीव को प्यारा और १५ नाक को अप्रिय माना ॥ ५८ ॥ १६ घेरा लगने से १७ पहिले ॥ ५९ ॥ १८ भीमसिंह के हाथ से कोई ही कहीं अछूता (घाव रहित)रहा१९राणा अमरसिंह का पुत्र शत्रुओं से नहीं देखा जासके ऐसा; अथवा उस युद्ध में शत्रुओं को खड़ा नहीं देखकर २० शस्त्रों से ॥ ६० ॥ २१ नगारे २२ फिर ॥ ६१ ॥

लोहछकि १ मोहछकि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रतिभट ओर टिकत नहिंपाये, दिसइक१खरे कबंध दिखाये ॥
इमहि भीम गजसिंहहिँ अक्खिय, रन जयलिरचि खेत मह रक्खिय
बंब[3] तुम न जयसूचि[4] बजावहु, पहहिँ दर्प[5] तो सम्मुह आवहु ॥
भाखी सुनि गजसिंह सुजुज्झ भट, अप्रतिहत[6] न रुकहिं वट१उब्बट२
तुम करिविजय खेत रक्ख्यो तिम, उँचित[7] करन अवजाहु सिबिर[8] इम
बजत बंब न रुकैं मामक[9] बल, फोरि देहु तब रुकैं स्रवन[10] फल ६४
क्यों बचेहु अब मरन कुमावहु, जय१जस२रक्खि सिबिर निज जावहु
मानी भीम यह न तब मानी, रट्ठौरन सन रारि रचानी ॥ ६५ ॥
ए१वपु भिन्न२हुते वे१अक्षत२, हुव तिलातिल सीसोद हेति[13] हत ॥
सिरतस हारधर्यो हसि संकर, बर्यो त्रिदिव दुलही अच्छरिबर ६६
मुख अग्गैं[14] सु झर्यो भट मान१हु, उँबर्यो[15] सु गोकुल२छतवानहु
जयलच्छी[17] सीसोद१लही जो, बहुरि जित्ति रट्ठोर२बही जो ॥ ६७ ॥
भीम अग्ग मान१हु तिलातिल भो, खग्गन[19] खिन्न गोकुल२सु खिलभो
रानाउत१सगताउत२जुग रन, परे प्रवीर निबाहि मित्रपन ॥६८॥
भीम१ मान२ इम स्वर्ग बसे भैर[21], गोकुल बच्यो आयुबल गैंत्वर[22]॥
पहिलैं दल साहको दल्यो पारि, अब गजसिंह लयो जय उद्धरि६९
जु सुनि साह छंद[23] हुकम भेजिजिम, उँपालंभ[24] कुंदीसहिँ दिय इम॥
स्वीय[25] अनुज न भजे जो सत्वर[26], तो न मुरैं समदल रनचत्वर[27] ।७०।

१ शत्रु २ राठोड़ ॥ ६२ ॥ ३ नगारा ४ जय की सूचना करनेवाला ५ घमंड है तो ६ अभंग बलवाले; अथवा रोकने से नहीं रुकनेवाले मेरे वीर नहीं रुकेंगे ॥ ६३ ॥ ७ उचित कार्य (घावों का इलाज) करने के लिये ८ डेरों में ९ मेरी सेना में १० कान फोड़डालो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ११ शरीर से घायल १२ घाव रहित १३ शस्त्रों से कटकर ॥ ६६ ॥ १४ मानसिंह भी भीमसिंह के मुख आगे गिरा १५ बचा १६ घायल होकर १७ जो जयलक्ष्मी सीसोद भीमसिंह ने ली थी वह १८ राठोड़ ने धारण की ॥ ६७ ॥ १९ खड्गों से क्षीण होकर २० बाकी रहा ॥ ६८ ॥ २१ वीर २२ गमन शील आयु के बल से ॥ ६९ ॥ २३ पत्र २४ ओलम्भा २५ तुम्हारा भाई २६ शीघ्र २७ युद्ध क्षेत्र से ॥ ७० ॥

जो गजसिंह वीर न लहैं जय, गवैं कुजस अप्पन रीढामय ॥
जोध हृदयनारायन१९२।२ जैसे, अब कहुँ काम न भेजहु ऐसे ७१
दल पठयो तिहिँ सुनि नृप बुंदिय, कुलहि कलंकित अहो अनुज किय ॥
मोतैं अब सु मिलैं न मंदमति, करहु रह्व कोटा१ रु ग्रामकति७२
कुमरसता१९४।१हु हुक्म लोपैं किम, तास रक्खि टुन्नी१आवाँर तिम ॥
ग्रामक१ सह छिन्न्यौं कोटा२ गृह, रह्यौ दुरि सु टुन्नी लज्जितरंढ ७३
केसव१९३।६कुमर हुतो पहुपासहि,[3] पाको सुत हुव किमहु[4] उदासहि
सु करि मंत्र निज नास भ्रातसन, मुरे दुहुँ२न खट्टनें बिसेस मन७४

॥ दोहा ॥

स्याम१९४।८ जु गोपीनाथ१९३।१ सुत१,
सुत केसव१९३।६ को स्याम१९४।१ ॥
पहुँचि महावत खान पहँ, रहे लोभ अबिराम[6] ॥७५॥
अटक पार दुव२ पत्त इम, भ्राता कुल मगभुल्लि ॥
अनुचित सुनि नृप रत्न१९२।१पहँ, खिज्यो दुरदिस रिसखुल्लि॥७६॥
एह महावतखान इत, रन वीरन रिझवार ॥
पंचसहँस५०० राउत प्रकर, लहैं छाहसम[10] लार ॥७७॥
[11]जैंत्थ किसोरहि बंधु जुग२, वयमैं तिथि[12] १५तिथि १५ वर्ष ॥
रीझि महावत रक्खये, पिक्खये लरत प्रकर्ष[13] ॥७८॥
खान अमानत नियत खलु, इत सूबा अजमेर ॥
रजपूतहि ताकौं रुचत, समरसमर[14] लखिसेर ॥७९॥

१ पीठ देने से ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ २ हठ ॥ ७३ ॥ ३ राजा के पास ४ किसी कारण से ५ सम्पादन करने को ॥ ७४ ॥ ६ विश्वास रहित लोभ से ॥ ७५ ॥ ७ गये ॥ ७६ ॥ ८ वीरों को ९ परगह १० छाया के समान साथ रखता है ॥ ७७ ॥ ११ जहां १२ पन्द्रह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में १३ विशेषता ॥ ७८ ॥ १४ युद्ध में सिंह के समान स्मरण करके और इसीप्रकार देखके; अथवा समरसिंहना-

संभर बंधु दयाल१९०।१ सुत, जई अखैराजोत१९।२५॥
जाइरह्यो भूपति१९१।२ जहाँ, सुनि कुल अपजस स्रोत ॥८०॥
सबल१९३।२ मनोहर१९२४ अनुज सुत, बहु इत्यादि बहोरि॥
रत्न१९२।२अनुज२रहीं करि रहे, जितातित श्रितही जोरि ॥ ८१ ॥
हड्डे६१भज्जत तो हमहु, भज्जहिं इम सबभाखि ॥
बिनु हुकमहु जुज्झन बढे, बंस बिरुद रुचि राखि ॥ ८२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीन्द्ररत्नसिंहचरित्रे शत्रुभीतिवारणार्थयवनेन्द्रजहांगीररत्नसिंहबुरहानपुरप्रेषणम् १ यवनेन्द्राज्ञानुसार राष्ट्रकूटीयसेनाग्रगामिताधिकारकूर्मप्रापितनिमित्तकभूपद्वयाग्रानुयायिताक्रमत्यजन २, समरपलायितशरणागतखुरमरक्षकशैर्पोद्दभीमसिंहहड्डकूर्मयवनेशसैन्यविजयानन्तरयोधपुराधीशगजसिंहप्रधनतनुत्यजन ३; रत्नसिंहसोदरहृदयनारायणरणापलायनयवनेन्द्ररत्नसिंहोपालम्भप्रदानं पञ्चविंशो मयूखः ॥ २५ ॥

आदितोऽष्टोत्तरद्विशततमः ॥ २०८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मक चहुवाण को युद्ध में सिंह के समान देखकर; अथवा युद्ध प्रति वीरता देखकर॥ ७९ ॥ १ चहुवाण का ॥ ८० ॥ २ लज्जा करके जहां तहां ३ आश्रय ही है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में बुरहानपुर के सूबे में शत्रुओं का भय होने के कारण बादशाह जहांगीर का रत्नसिंह को बुरहानपुर भेजना १ राठोड़ों का हरोल में चलने का अधिकार बादशाह की आज्ञा से कछवाहों को मिलजाने के कारण दोनों राजाओं का हरोल और चन्दोल का क्रम छोड़कर चलना २ युद्ध से भागेहुए खुरम को शरण रखकर शीशोदिया भीमसिंह का हाडा, कछवाहा और बादशाही सेना को भगाकर जोधपुर के राजा गजसिंह के युद्ध में मारा जाना ३ रत्नसिंह के भाई हृदयनारायण के युद्ध से भागजाने के कारण बादशाह का रत्नसिंह को उपालम्भ देने का पचीसवां २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ आठ २०८ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

इत जयसिंह१ अजीमर२ इन्ह, समुपालम्भन साह ॥
ले हरोल१ अधिकार लहु, रक्खे निज कुल राह ॥१॥
बिहित पटा१ गज२ बाजि३ बसु४, आयुध५ भूसन६ अप्पि ॥
गजसिंह सु अतिबल गिन्यौं, थानहरोल१हि थप्पि ॥२॥
तबहि साह इक१ पातुरिहु, निपुन अनारा७ नाम ॥
हुँलासि दई गजसिंह हित, कसवट्टी रसकाम ॥ ३ ॥
प्रभनैं कति सुहि खुरम३९१२ पुनि, जब हुव सांहजिहान३९१२॥
तब अप्पी पातुरि तिमहु, द्वापर फुरल निदान ॥ ४ ॥
पै तस बस गजसिंह पहु, अब भावी बस एस ॥
जेठ१ कुँमरहिं टारि जड, देहैं लघु२ हित देस ॥ ५ ॥

॥ उद्धरः ॥

रन इत खुरम३९१२ बिद्रव वह्नि, कछुदिन करन सरन हु कहि॥
छलबल खल उदैपुर छोरि, दक्खिन३१२गो हठी पुनि दोरि ॥६॥
इम आबाददौलत आदि१, बनितां१ सुत२न मिलि जयवादि॥
बीजापुर२हिं जाइ बहोरि, जय बट भागनगर३हिं जोरि ॥ ७ ॥
नवनव बजत साह१नबाब,सबमिलि लक्ख१०००००फौज हिसाव॥
फैज१ रु अमर चय२ फवि फुल्लि, हठमत आकबत३ अबदुल्लि४ ॥८॥
दरियाखान५ कुतब६ उदार, लिय तिम खाँ गुमान७हु लार ॥
अंततकी मुहम्मद आदि८, सब मिलि मंत्र इक१ मत सादि ॥९॥

१ बादशाह ने ओलम्भा देकर २ आगे चलने का अधिकार देकर ३ शीघ्र ॥१॥ ४ धन ॥ २ ॥ ५ वेश्या ६ चतुर ७ प्रसन्न होकर ८ कामरस की कसोटी ॥ ३ ॥ ९ कितने ही कहते हैं १० खुरम शाहजहां का नाम धारण करके बादशाह हुआ तब ११ दी १२ सन्देह होता है ॥ ४ ॥ १३ बडे कुमर को छोडकर छोटे को मारवाड़ का देश देवेगा ॥ ५ ॥ १४ भागकर १५ उदयपुर में राणा कर्णसिंह के शरण में ॥ ६ ॥ १६ दोलताबाद १७ स्त्री १८ जय कहकर १९ विजय बट से; अथवा विजय के मार्ग से ॥ ७ ॥ २० नवीन नवीन २१ फूलकर ॥ ८ ॥ २२ तकी शब्द है अन्त में और मुहम्मद है आदि में जिसके ऐसा अर्थात

मरहट्ठ९हु केंहु मिलाइ, प्रतिभट देस बट सबपाइ ॥
खुरुम३।९।२हिँ ठानि दुल्लह खेत, सबनिज जन्य[१] बल[२] समुपेत१०
मिलि तिन बिजन[३] किय इम मंत्र, तब ह्वै हारि निज विधि[४]तंत्र
जुरि बुरहानपुर१ अब जीति, परखहु पुब्ब[५] सबन प्रतीति ॥११॥
लहि आसेर२ पुनि अवलंब[६], करि बस सीम सत्रु कदंब[७] ॥
जिम जिम अग्ग प्रबिसहिँ जाइ, परभुव लाभ तिमतिम पाइ१२
इम अब दक्खि मालव अंत, क्रम करि होहु सब छितिकंत[८] ॥
यह मत मन्नि खुरुम३।९।२उपेत[९], इक्किय दक्खिनी जय हेत १३
इक१बल द्वै२अनी बनवाइ, भेजिय प्रकट पथ इक भाइ ॥
स खुरुम३।९।२मुख्य असेस[१०], जुरि दूजी२अनी जवनेस ॥ १४ ॥
उत्तर४।७ओर पिहित[११] सुर२ आइ, प्रबिसन[१२] सप्त७पुट गिरि१ भाइ ॥
लहि इहिँ बास खोनिन[१३] लीन, दलउत अह्व३भेरि सु दीन ॥ १५ ॥
सो पहिली१अनी बनि सेर, घुमड़त विरथरी घनघेर ॥
उत२सन नैर ढिग तिहिँ आइ, किय रन घोर पन प्रकटाइ ।१६।
इम बुरहानपुर रिपु आत, सुनि तिन्ह रत्न१९।२।१इत१हुलसात[१४] ॥
दलसह[१५] खुल्लि दक्खिन द्वार, कढि नृप कल्पभव[१६] अनुकार[१७] ॥१७॥
खग तुरग हंकि तोपन सीस, प्रहरिय बज्र असि[१८] पुहवीस[१९] ॥
हह्द९१न फैर दुव२दुव२होत, कनकन किन्न तोपन तोत[२०] ॥ १८ ॥
बढि रन औन[२१] रैन१६।२।१यरूथ[२२], जितजित दक्खि परदल जूथ[२३] ॥
झारिय खग्ग इम यह झोकि, रिपु बहु संहरे रन रोकि ॥ १९ ॥

हम्मद तकी ये सब के नाम हैं ॥ ९ ॥ १ जान (बरात) २ सेना सहित ॥ १० ॥ ३ एकान्त में सलाह को ४ विधि के वश से ५ प्रथम ॥ ११ ॥ ६ आधार ७ समूह ॥ १२ ॥ ८ भूपति ९ सहित ॥ १३ ॥ १० सब ॥ १४ ॥ ११ गुप्त १२ सतपुड़ा में प्रवेश किया १३ खोहों (खोद्रों अथवा खरलों) में ॥ १५ ॥ १६ ॥ १४ प्रसन्न होकर १५ सेना सहित १६ प्रलय के शिव के १७ सदृश ॥ १७ ॥ १८ वज्ररूपी खड्ग का प्रहार किया १९ भूपति ने २० तोपों के फरेब को बिखेर दिया; अथवा भालों से तोपों को बिखेर दी ॥ १८ ॥ २१ युद्ध के स्थान में २२ रत्नसिंह की सेना २३ शत्रु के समूह को ॥ १९ ॥

सिर१धर२हत्थ३पय४भुज५संघ, जिततित जानु६कटि७उर८जंघ९ ॥
अविरत[3] भरंत सुभटन अंग, रन हुव हैरघी[4] इकरंग ॥ २० ॥
सिखये सत्रु लखि अवसान[5], प्रतिमग वेग मंडि प्रयान ॥
लोभित हड्ड६१पिट्ठि लगाइ, परभट लेचले स्मृतिपाइ ॥ २१ ॥
अरि सब पिक्खि भूप इतेहि, जानत हैं जितेहि जितेहि ॥
दब्बत पिट्ठि पहुँचत दूर, सजि इतकी अनी२अव सूर ॥ २२ ॥
पर्बत सप्त७पुट थितिपाइ, उत्तर४।७ओर सन तिन आइ ॥
करि अधिरोहिनिन[7] मग कोट, चक्खिय नैक काहु न चोट ॥२३॥
पुर बिच यों अचानक पैठि, बैरिन रोकि रच्छक बैठि ॥
चढि अधिरोहिनीन चलाइ, अंतर्दुर्ग[8] हू लियआइ ॥ २४ ॥
रच्छक रक्खगो[9] रतनेस१९।२।२, आये काम तेहु असेस[10] ॥
पै इक१अट्ट[11] तोपहिँ पाइ, भट कछु उब्बरे रन भाइ ॥ २५ ॥
दलपति द्वारकादिकदास[12]१, कूरम पाइ तँहँ अवकास ॥
तिम वह भरि यहींसन[13] तोप, छिय रन तास बल अतिकोप ॥२६॥
इक्क न चढिसक्यो तिँहिँ अट्ट, बढियाढि समुत्त हुव ग्रहवट्ट[14] ॥
कछु हरपाल१८२।२ लाल१८४।२कुलीन, तिम भट निम्म१८५।३ बंसिय तीन३ ॥ २७ ॥
चालुक बल्लनोतहु च्यारि४, सेसहु केके[15] टेक सम्हारि ॥
वह करि इक्क१अट्ट अजेय[16], लखि इक१तोप बल जसलेय ॥ २८ ॥
दल इन द्वारकादिकदास, प्रेरित ए रहे भट पास ॥
अरिजन नाँ दगे ढिग आन, परिजन[17] अल्प कल्प[18] प्रमान ॥ २९ ॥

---

१ समूह २ घुटने ३ निरन्तर ४ एकसा ॥ २० ॥ ५ अन्त में ६ उलटे भागे से ॥ २१ ॥ २२ ॥ ७निसरनियों से कोट पर मार्ग करके ॥ २३ ॥ ८ भीतर का गढ (जीवरखा) लेलिया ॥ २४ ॥ ९ रत्नसिंह रक्षक रख गया था १० सब ११ बुरज पर ॥२५॥ १२ द्वारकादास १३ यहां से ही तोप भरकर ॥ २६ ॥ १४ विध्वंस (बरबाद) ॥ २७ ॥ १५ कितनेक हठ करके १६ नहीं जीतने में आवे ऐसी एक बुरज करके ॥ २८ ॥ १७ सेवक १८ प्रलय ॥ २९ ॥

कूरम यौं इन्हैं हल्लकारि, थंभिय बुरज[1] सुरंज बिथारि ॥
बचि वह खोमैं[2] इक जिम बाहु, खिल सब जित्ति जीवरखाहु ।३०।
इम बुरहानपुर तिन आइ, जब लिय सिंह थोह जमाइ ॥
प्रभु जँहँ अद्ध कोस प्रदेस, अरिदल करत बिद्दुत[3] एस ॥ ३१ ॥
तँहँ सुनि सुद्धि लिय पुर तास, हुव तिम सोक कछु कछु हास ॥
खगपति[4] ज्यों[5] मुरयो धरि खीज, तकि सब पुत्र भ्रात भतीज ।३२।
सब भट बंधु स्वस्थ[6] सम्हारि, बिकलन[7] ज्यों परेहि[8] बिसारि ॥
प्रतिमग आइ द्रुत[9] महिपाल, दक्खिन द्वार जारि दल जाल ।३३।
पैं[10] अधिरोहिनीहु न पास, किम अब कोट कति अवकास ॥
नाग[11] जवानभ्रात समान, धारत धूप[12] कर बलधाम ॥ ३४ ॥
हत्थिय सोहि गोपुर[13] हुल्लि, बहुबिधि डारकेदारन[14] बुल्लि ॥
दरबर[15] तास फेट दिवाइ, अररन[16] तोरि इम पथ पाइ ॥ ३५ ॥
आसव[17] मत्त सुहि हुवअग्ग, मदकल[18] खग्गकरि कियमग्ग ॥
भिदिगय लंब अररन[19] भल्ल, हुव तउ तास अतिबल हल्ल ॥ ३६ ॥
बारन-रचित अध्व[20] प्रबिष्ट, अधिपति माँहिलिय बल[21] इष्ट ॥
भिरि तँहँ इक गदाधर[22] भक्त, श्रीहरि भक्ति गान प्रसक्त ॥ ३७ ॥
गोपुर[23] ढिगाहि रहत जु गैल, चहि तब मिलन पाटलचैल[24] ॥
सत्वर[25] आइ भूप समीप, आक्खिय जाहु द्रुत अवनीप[26] ॥ ३८ ॥

---

१ उत्तम रजोगुण को फैलाकर २ बुरज ॥ ३० ॥ ३ भगाता था ॥ ३१ ॥ ४ खपर ५ गरुड़ के समान ॥ ३२ ॥ ६ घाव रहित (नलोहे) ७ घायलों को ८ छोड़कर ९ शीघ्र ॥ ३३ ॥ १० परन्तु नीसरनी पास नहीं थी ११ जवानभाई नाम के हाथी १२ सीधा खड्ग (खांडा) सूंड में लियेहुए था ॥ ३४ ॥ १३ नगर के द्वार पर बढाकर १४ छोटे घावों से क्रोध दिलानेवाले (सांटमार) को बुलाकर १५ दड़बड़ (दौड़ाकर) फेट दिलाई १६ किवाड़ों को ॥ ३५ ॥ १७ मदमत्त १८ उस मदोन्मत्त हाथी ने तरवार से मार्ग करदिया १९ किवाड़ों के लंबे भालों से ॥ ३६ ॥ हाथी के रचेहुए २० मार्ग से प्रवेश करके २१ सेना को २२ श्रीकृष्ण का भक्त मिला ॥ ३७ ॥ २३ नगर के द्वार के समीप ही रहता था २४ भगवां वस्त्र मिलना चाहकर २५ शीघ्र २६ हे राजा शीघ्र जाओ ॥ ३८ ॥

इम मुहिँ स्वप्न दिय हरि अज्ज, करि अरि कदन*सद्दहु कज्ज॥
सब भट१बंधुर२तो गिनौं बे हमैंहु, जिम सावसेस आन जमैंहु ।३९
सह जवं सोहु सुनि नरनाह, विच पुर पिल्लि पद्धर बाह ॥
जुज्झत जात व्रात बजार, कोलि किय कल्प खिन भ्रमकार ॥४०॥
कइकइ सज्ज बढि उतकेहु, आवत दलत तावत एहु॥
गोखन जाल नारिन ग्राम, पिक्खत कंपि दुग्त प्रकाम ॥४१॥
हुव बहु रंगरेजन हट्ट, महि मनु फुट्टि जावक मट्ट ॥
रहि मग तूंल१ पट२ सित राासि, भ्रम दिय इक्क लोहित भासि ॥४२॥
परिपरि अंत्र मालिन पत्त, तनियत सोचि समधिक तत्त ॥
पुहपन और रंग पिधाइ, उफनिय रंग रत्तहि आइ ॥४३॥
इम मग अन्न रासि अनेक, इतउत लहत पल पन एक ॥
करिकरि चित्र बहु मनिकार, विक्खत लाल सब मनि बार ॥४४॥
धुपि पुर इक्क१ सोनित धार, सुहि किय रक्तवस्त्र सिंगार ॥
कुद्दत लोहछकि हय केक, उलटत लंघि अट्ट अनेक ॥४५॥
जवन१हु चक्खि हड्ड२न जोर, घन रन मन्नि अंतक घोर ॥
इन१ इम तेर लयेहि अहोरि, जिम दिय घाये घायन जोरि ॥४६॥
जवन१न चले लै नृप जोध२, कलरवँ१ सेन२ हुव गतिक्रोध ॥

शत्रुओं का नाश करके कार्य * साधन करो १ अब ॥ ३९ ॥ २ वेग सहित ३ सीधे घोड़े बढाए ४ समूह ५ युद्ध ६ प्रलय का सन्देह करनेवाला ॥ ४० ॥ ७ इनको तपाते हैं अथवा तब तक ये उनको मारडालते हैं ८ समूह ॥ ४१ ॥ ९ मानों अलता (लालरङ्ग) के माटे फूटे हैं १० मार्ग में रुई और वस्त्र ११ स्वेत रङ्ग के समूहवाले थे १२ सो लाल रङ्ग के शोभा देने लगे ॥ ४२ ॥ मालनियों की छाबों में आंते पड़ पड़ कर १३ अधिक प्रकाश फैलाते हैं १४ पुष्पों का अन्य रंग ढककर १५ एक लाल रंग ही बढा ॥ ४३ ॥ १६ समूह (ढेर) अर्थात् अन्न की राशियों पर मांस गिर गिर कर वे राशियां मांस की बनती हैं १७ आश्चर्य. सब रंग की मणियों के समूह को लालरङ्ग मय (माणक) ही १८ देखते हैं ॥ ४४ ॥ १९ रक्त की धार ले ॥ ४५ ॥ २० काल के समान भयंकर २१ रोकलिये २२ घाव से घाव जोड़ दिये ॥ ४६ ॥ २३ कोलाहल

दुहुँ[1]दिस होत खंड दुबाह, लिय अब मध्यगढ ढिग लाह॥४७॥
माधव १९३।२ हरि १९३।३ नरिंद[2] कुमार,
केसव १९३।६ अनुज२सुत जयकार[3] ॥
चलि पहु[4] अग्ग खग्ग चलात, दलि बहु सुलभ बिजय दिखात।४८।
प्रबिसन दुर्ग[5] द्वार न पाइ; पर कोंति बाहुरेहु पलाई[6] ॥
अंट्टत[7] तिन्ह गयेहु मरे स, पट्टत कुणप[8] द्वार प्रदेस ॥४९॥
इम सुत लेत नृपमुख वाह, रुकतहि जटित[9] अरर न राह॥
लखि अधिरोहिनी[10] गढ लग्ग, अनुगन[11] अप्पि बाजिन बग्ग ॥५०॥
केसव१९३।३ उभै२हि कुमार, हुव सब अग्ग पहुँचनहार ॥
प्रेरत वाह देत नृपाल, कुमरन पिट्ठि हुव ततकाल ॥५१॥
वीरहु बहु सगोत्र१ बिगोत्र, प्रहरत तुपक१ तीर२ रु तोल[12]३ ॥
चढिचढि ठामठाम चलाइ, छितिदिय मिच्छ लुत्थिन[13] छाइ।५२।
मचि तहँ तुमुल[14] प्रहरन[15] मार, हुव अवमर्द[16] खेप[17] अनुहार ॥
कटि उर१जत्रु[18]२कंठ३कपाल४, कटि[19]५कर६अंस[20]७पय८तिहिकाल
भुव हुव पूर नरपल[21] भीर, धुव हुव दूर परबल धीर ॥
इकदिस१ खुरम१ हठ अनुबादि, उतहि तकी मुहम्मद आदि ५४
मिलि अबदुल्ल१ सहित गुमान२, इकदिस२ अंकुरे[22] पगि पान[23] ॥
इकदिस३ सेसे[24] अरि अवनीस[25], इकदिस४ कुम्मनृप[26] दलईस॥५५॥
इकदिस सत्थसह[27] चढि अप्प[28], दलि किय दक्खिनिन हत दप्प[29]॥

---

१ वीरों के टुकड़े ॥ ४७ ॥ २ राजा के कुमर ३ जय करनेवाले ४ राजा के आगे ॥ ४८ ॥ परंतु ५ किले की ६ भागकर ७ उन बुरजों के पास गये सो ही मरे ८ मुरदों से द्वार के प्रदेश को पाटते हैं ॥ ४९ ॥ ९ किवाड़ जुड़ने से १० नीसरणी ११ सेवकों को घोड़ों की बागें सौंपकर ॥५०॥५१॥ १२भाले १३ म्लेच्छों की लोथों से ॥ ५२ ॥ १४ भयंकर १५ शस्त्रों को १६ युद्ध १७ प्रलय के समान १८ कन्धा और कांख की सन्धि को जत्रु कहते हैं (कण्ठ के नीचे का भाग जिसको लोक में हांसली की हड्डी कहते हैं) १९ कमर २० कन्धा ॥ ५३ ॥ २१ मनुष्यों के मांस से ॥ ५४ ॥ २२ खड़ेहुए २३ पराक्रम में प्राप्त होकर २४ बाकी के २५राजा २६कछवाहों का राजा॥५५॥२७साथ सहित २८आप(रत्नसिंह) २९दर्प

तँहँ हरिसिंह१९३।३ दै त्रय३तीर, बेधिय खुरुम३९।२अतिबल वीर
पकारिय साहसुत पुनि पूगि, अरि१ तम२ मध्यहरि१ रवि२ ऊगि॥
बंधिय तसहि पग्घ बिछोरि, संगहि केसव१९३।६हु द्रुत दोरि ॥५७॥
अंबुधि१ बैरिसल्ल२ बिसिँ उब्बँ, पर जु तकीमुहुम्मद पुब्बँ२ ॥
लघु खरसस्त्र घाय लगाइ, जो गहि जेरकिय इहिँ जाइ॥५८॥
अधिपति थप्पि कुमर२न अंस, दुव२ अरि करि बिबंधन१ दंसँ
इम खुरुम१ रु मुहुम्मद आदि२,ब्यायुध करि उभै२हि बिबादि
इनकहँ रहन सनियँम अक्खि,रच्छक द्विसत२००सुभटन रक्खि
किँल्ल खिँल्ल गंजि१ दलि२ इतके रु,महिपति अग्ग रुपि जिम मेरु
असि अबदुल्ल१ सहित गुमान, पहुँ लिय छिन्न दोउ२न प्रान ॥
तिम मरहट्ठ दुव२ हनि तत्थ, संतुव१ रामधन२सँहसत्थ ॥६१॥
दिसदुव२ जित्ति किय दँहबट्ट, थप्पिय तत्थ निज भट थँट्ट॥
इम गहि द्वै२ रु चउ४ हनि एस, हंकत हुत्त सकुचिय सेस ।६२।
सहबल पत्त इत१ नृप सज्ज, कूरम बीर उत२ कृतकँज्ज ॥
दुव२दिससौँहि अब गरदाइँ, अरि गन मध्य खिल्ल लिय आइ
दोहा—कथितँ स्वभट इक१ अँट्टकरि, अजित हुते इक ओर ॥
इक१ नाँली करि ते अबहु, रहे रचत रन रोरँ ॥६४॥
जीवरखा खिल्लँ त्रि३दिस जिन्ह, जित्यो प्रबिसि सजोर ॥
पहुँ सेनानी कुम्मँ पट्ट, असह टिक्यो इक१ओर ॥६५॥

॥ ५६ ॥ शत्रुओं रूपी १ अन्धेरे में हरिसिंह रूपी सूर्य उदय होकर २ शीघ्र ॥ ५७ ॥ ३ समुद्र में ४ प्रवेश किया ५ बड़वाग्नि के समान ६ प्रथम मुहम्मद और पर (अन्त) में तकी अर्थात् मुहम्मदतकी ७ तीक्ष्ण शस्त्रों से छोटे घाव लगाकर ॥ ५८ ॥ ८ कन्धा थापकर ९ दोनों शत्रुओं के बंधन और १० कवच काटदिये ११ विना शस्त्र शस्त्र करके दोनों को वर्जित किये ॥ ५९ ॥ १२ नियम सहित रहना कहकर १३ निश्चय १४ बाकी के ॥ ६० ॥ १५ साथ सहित ॥ ६१ ॥ १६ विध्वंस १७ समूह ॥ ६२ ॥ १८ कृतकार्य १९ घेरकर ॥ ६३ ॥ २० कहेहुए २१ एक बुरज पर २२ एक तोप से २३ भयंकर ॥ ६४ ॥ २४ सब २५ बुंदी के राजा का सेनापति २६ चतुर कछवाहा ॥ ६५ ॥

तत्थ न होती तोप तो, देते रहन न दुष्ट ॥
पै हुव करि तस बल प्रधन[1], ए अल्पहि जस पुष्ट[2] ॥६६॥
पहुँच्यो इत जित्तत सुपहुँ, जुग२ दिस अमल[3] जमाइ ॥
देखि स्वबस तीजी३ दिस रु, अब चोथी४ लिय आइ॥६७॥
तीजी३दिस पँहुसेनपति[4], दुसह द्वारकादास ॥
बुरज रक्खि वह तोपबल, अधिपहि दिय उल्लास[5] ॥६८॥
इत१ सैनानी[6] कुम्म अरु, इत२सहबल[7] अधिराज[8] ॥
खिल[9] अराति लै बिच निखिल[10], बढिदब्बे अतिबाज[11] ॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

भागनगर भूमीस[12]१ सहित बीजापुर साँसक[13]२॥
जँहँ इत्यादिक जवन निरखि हड्ड६१न निज नाँसक[14] ॥
खिल[15] असु दरियाखान१ आकबत२ कुतबखान३ इम ॥
फैजबखस४ बिनुफैज[16] अमर चय५ बिगत तमाँ[17] इम ॥
ए मुख्य मिच्छ पंच५हि असुन[18] दक्खिनपति समुझत दुलभ॥
भुजभुज दुकूल[19] फेरतभये नेजन[20] बद्ध प्रसारि नभ ॥७०॥

मदनावतारः॥

पिक्खि यह भूप निज१ रोकि पर[21]२ पुच्छये ॥
देहु जियदान तिनएहि उत्तर दये ॥
कहिय नृप मान इक१ लै२ रु सब१ दै२ कढहु,
बहुरि जिन सज्जि इत काल कोप न बढहु ॥७१॥

---

१ युद्ध में ॥ ६६ ॥ २ श्रेष्ट राजा ३ अधिकार ॥ ६७ ॥ ४ राजा का सेनापति ५ प्रसन्नता ॥ ६८ ॥ ६ सेनापति कछवाहा ७ सेना सहित ८ स्वामि (रत्नसिंह) ९ यार्को के १० सब शत्रुओं को बीच में लेकर ११ शीघ्रता से दबाये॥६९॥ १२ भूपति १३ हाकिम १४ हाडों को अपने नाश करनेवाले देखकर १५ यार्को के प्राण सहित १६ विना जय १७ लोभ छोडकर १८ प्राणों को १९ प्रत्येक मनुष्यों ने अपने अपने हाथों में वस्त्र लेकर फेरा "युद्ध में वस्त्र ऊंचा करके दिखाना आश्रित होने का चिन्ह है" २० भालों से वस्त्र बान्धकर आकाश में फैलाये ॥ ७० ॥ अपने लोकों को रोककर २१ शत्रुओं से पूछा ॥ ७१ ॥

इज्जत१ रु मान२ जुग२ देहु तिन उच्चरिय,
कौल[1] पुनि सुनहु तुम१सों बे[2] हम२ जो करिय ॥
[3]प्रधन दिल्लीस दल काम जहँ जहँ परैं,
लखत टरिजाँहिं हम नाँहिं हद्द१न लरैं ॥७२॥
रावरे पीत[4]छबि केतु[5] जित जित रहैं,
सोहि दिस छोरि मुरिजात सखहु सहैं ॥
तुम१ रु हम२ बीच है रब[6]१ कुराँ[7]२ पंज[8]५ तन३,
पुस्तदरपुस्त[9] लिखिदेहु यह नेकपन ॥७३॥
द्वारपथ पिहितं[10] नृप कहिँ तब ते दये,
सस्त्र१ पट२ मान३ सह सर्ब गेहन गये ॥
जोहु सविसेस प्रभुराम[11]२०१४ सुनिलेहु जिम,
अप्पकवि[12] सभ्य[13] रविमल्ल[14]१७१४ छबि काव्य इम ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

अद्ध[15] अटक इम अरिनको, पुरबाहिर तिम पेलि ॥
दंग प्रबिसि दल[16] दलै दल्यो, खग्ग दुरोदर[17] खेलि ॥ ७५ ॥
प्रातहि जित्यो रनप्रथम१, कति भजाइ१ कति कट्टि२ ॥
पुनि पायो संध्या समय, दूजो२जय अरि दट्टि[18] ॥ ७६ ॥
जीवरखा प्रबिसंत[19] जबहि, भीमं[20] मचत रन भीर ॥
तकीमुहम्मद आदि१तिम, पकरयो खुरुम२ प्रबीर ॥ ७७ ॥
दुव१मिच्छ रु मरहट्ठ दुव२, खंडखंडै[21] करि खेत ॥
जवन पंच५कहोजियत, इज्जत१काल२उपेत ॥ ७८ ॥

१ नियम २ अस्र ३ युद्ध में ॥ ७२ ॥ ४ पीले रंग की ५ ध्वजा "बुन्दीवालों की ध्वजा पीले रंग की है ६ यह यावनी भाषा का ईश्वर वाची शब्द है" ७ कुरान ८ पञ्जा (हाथ से वचन देना) ९ पीढी दर पीढी के लिये ॥ ७३ ॥ १० छाने ११ हे स्वामि रामसिंह १२ आपके कवि १३ सभासद १४ सूर्यमल्ल का काव्य सुनो ॥ ७४ ॥ १५ आधी १६ सेना से १७ खड्गों का जूवा (हारजीत) ॥७५॥ १८ दबाकर ॥ ७६ ॥ १९ प्रवेश करते ही २० भयंकर ॥ ७७ ॥ २१ टुकड़े टुकड़े ॥ ७८ ॥

कुम्भ द्वारकादासकरि, सेनानी तिन्हसंग ॥
इम छन्नैं कहि अखिल, जिम सन्नैं भयजंग ॥ ७९ ॥
अरि चउसत४००खिल उव्वरे, तिन पंच५न जुत तत्थ ॥
निकसे पिहित निसीथमैं, सरन१नियति२बलसत्थ ॥ ८० ॥
जीवरखाकी रुद्ध जंव, खिरकी पिहित खुलाइ ॥
कहि कुम्भ सहाय करि, भासन निजन भुलाइ ॥ ८१ ॥
सतचउ४००पंचक५मुख्य सह, सेखाउत्त स्वसंग ॥
लैगो कछुविधि कोटलग, पुरजन टारि प्रसंग ॥ ८२ ॥

स्वसंग१प्रसंग२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दुवर१निश्रेनी दै दुर२दिस, चाढि तिन सवन चढाइ ॥
गहिरे तिमिर उतारि गृह, पठये दुरन पढाइ ॥ ८३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे षष्ठ६राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे शैर्षोदभीमसिंहप्रधनहननयवनेन्द्रयोधपुराधीशगजसिंहसेनाग्रगामिताधिकारप्रत्यर्पण १, उदयपुरराणाकर्णसिंहशरणाकियत्कालोपितखुर्रमदक्षिणजनपदगमन २, बुरहानपुरसमरविजयिरावरत्नसिंहखुर्रमबन्दीकरण ३, बुरहानपुरगुप्तनिष्कासितपञ्चयवनरत्नसिंहजीवदानवितरणं षड्विंशो मयूखः ॥ २६ ॥

॥ ७९ ॥ १ आधी रात्रि में २ शरण आने और ३ नियम कर लेने के बल से; अथवा भाग्य के बल से ॥ ८० ॥ बन्द खिड़की को ४ शीघ्र खुलाकर ५ छाने ॥ ८१ ॥ ६ नगर के लोगों का मिलना बचाकर ॥ ८२ ॥ बहुत ७ अन्धेरे घर में उतारकर ८ छिपना सिखाकर भेजा ॥ ८३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में युद्ध में शीशोदिया भीमसिंह को मारने के कारण बादशाह का जोधपुर के राजा गजसिंह को हरोल में चलने का अधिकार पीछा देना १ खुर्रम का उदयपुर के राणा कर्णसिंह के शरण में कुछ दिन रहकर दक्षिण में जाना २ बुरहानपुर के युद्ध में विजय करके राव रत्नसिंह का खुर्रम को कैद करना ३ राव रत्नसिंह का पांच यवनों को जीवदान देकर बुरहानपुर से छाने निकालकर जीवदान देने का छब्बीसवाँ २६ मयूख समाप्त हुआ और आ

आदितो नवोत्तरद्विशततमः ॥ २०९ ॥
प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कूरम इम बाहुरि कह्यो, जतन अमोघ[1] जनेस[2] ॥
दिय तिनलखि जु करार दल[3], अच्छैं रक्खहु एस ॥ १ ॥
जीवरखाके जित्ततहि[4], रतन१९२११ चिंति दुख रंच ॥
पहिले१खेत सम्हारि पर, पठये भट सतपंच ५०० ॥ २॥

॥ मदनावतारः ॥

अरर[5] खुलवाइ खिन[6]पाइ तिन जाइ उत,
दीपिका[7] संग सह रंग वह होरि[8] द्रुत ॥
छित्वर१रु मान२मुख तान४९ मित भान[9]छंत१[10] ॥
गंग१सुरतान२मुख द्वै रु सत२०२पानगतर२ ॥ ३ ॥
कुणप[11] रखवार तँहँ जामिकन[12] सज्जकरि,
ध्यान१[13] छंत२वान[14] सब उक्त नरजान[15] धरि ॥
सूर अरि[16] घायलहु रच्छकन सौंपिसब,
अप्पनैं लै रु इम पत्त[17] पुर तेहु अब ॥ ४ ॥
वैद्य मत उचित उपकार[18] सबको बन्यौं,
भूरि[19] पुर घायलन सोहि साधन भन्यौं ॥
तिमहि बिसवासि खुरुम१मुहम्मदतकी२,
होन तिन्ह स्वस्थपन[20] हानि नैंकहु नकी ॥ ५ ॥
द्वारकादास१कँहँ द्रंग[21] करउर२दयो,

दि से दो सौ २०९ नव मयूख हुए ॥
१ खाली नहीं जावे ऐसा २ हे राजा ३ पत्र ॥ १ ॥ ४ विजय करते ही ॥ २ ॥
५ किवाड़ ६ समय पाकर ७ चिरागों के साथ ८ युद्ध भूमि को ९ आदि १० चेत सहित ॥३॥ ११मुरदों के रखवाले१२पहरायतों को१३ चेतवाले१४घायलों को १५ पालखियों में धर कर १६ शत्रु के घायलों को भी १७ पुर में गया॥४॥
१८ इलाज,१९ बहुत २० नैरोग्य होने में ॥ ५ ॥ २१ नगर.

पुत्र हरिसिंह१हित कापरनि२ अप्पयो ॥
मन्त्रि सुत माधव१हिं ढंग कोटा२सु दिय,
केसव१हिं ताँहु खटद्ग्राम२ वख्सीस किय ॥ ६ ॥
भूखन१रु सस्त्र२गज३ग्राम४हय५ रीझ भरि,
कृत्य निजनिज उचित अप्पि सब तुष्टकरि ॥
होत इम विति जुग२जाम निस प्रातहुव,
भेजि जन डेर१हि सुधवाइ पुनि रंगभुव ॥ ७ ॥
भक्त गदिकाधर जु नेर प्रविसत भनी ॥
वेरिगन जीति सुहिरीति निह्चेवनी ॥
गायकं सु भक्त गिनि तुष्टि सनमानि वहु ॥
दास जगदीसको पास रक्ख्यो सु पहु ॥ ८ ॥
देस निज ढंग ताकों बरोदा१ दयो,
लक्ख१०००००मुद्रा निति रि रचीच तेतिमैं लयो ॥
सोहु सकुटुंब बुंदीहि तब संक्रम्यो,
जास इम वास तबतैं बरोदा१ जम्यो ॥ ९ ॥
सुनि सु सासन रंता१२४१२कुमर अभिमतैं कस्यो ॥
ढंग बुन्दीहु तिम तुष्टि वह थाप्यो ॥
पाइ जय रत्न११२१२ इत लै सु बुरहानपुर ॥
पकारि जवनेस सुत किति वाढी प्रचुर ॥ १० ॥
किन्न उल्लाघ वह थेंरर लंजकं कैंगी,
ऑग गत भल्ल अपदव्याधि तस उदरी ॥
निमति किय [illegible] [illegible]१ न [illegible] ॥

---

१ सन्मान करके ॥ ६ ॥ [illegible] अपने २ कार्य के उचित [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अनि को ॥ ७ ॥ [illegible] श्रीकृष्ण के [illegible] में [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] गानेवाले को ॥ ८ ॥ [illegible] अपने देश में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में लिया [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को

नाम कारा[1]हिधरि कोहु बाधा[2] नकी ॥ ११ ॥
रच्छकन मुख्य तँहँ कुमुर हरि१९३।३ रक्खयो,
दुक्ख न लहैं दुवरहि अधिप इम अक्खयो ॥
एहु हुव स्वस्थ तव भिन्न रक्खे उभय२,
बीर हरि१ इत रु उत थप्पि रच्छक विजय२ ॥ १२ ॥
पत्रदिय साह इँहिँ राह रत्न[3]सहप्रति,
वाह जयलाह सुनि चाह मिलिवेहि अति ॥
आहु आहूत[4] करि तंत्र निर्भय उतैं,
त्यों[5] व भेजहु मुम्मदतकी१सह सुतैं[6]२ ॥ १३ ॥
यह छँद[7]१रु संग तिन्ह लौन सय्यद उभय२ ॥
मुक्कलिय सुद्धि[8] सव बुद्धि हित बुद्धिमय,
आइ तिन अप्पि फरमान यह उच्चरिय ॥
कीलित[9]न देहु जे रुद्ध कारा[10] करिय ॥ १४ ॥
रैन१९२।१सुनि बैन सुख अैन[11] तिन्ह रक्खये,
तव मुहुम्मद१ तकीपैं निगड़[12] नक्खये ॥
खुरुम२ पेलव[13] लख्यो आइ नरनाह इत,
हेतु पुच्छत कह्यो विजन[14] कछु सुनन हित ॥ १५ ॥
सवन करि दूर तव खुरुम३९।२पुच्छ्यो सु पहु,
लोत[15]हग लोत परिपाय बुल्ल्यो मु लहु[16] ॥
हरि१९३।३कुमर दास जिम मोहि रक्खैं इहा,
कैदविच कैद वावा कहाँ मैं कहा ॥ १६ ॥
व्यजन[17]१ढुरवात२ भरवात१ हुक्का२ वनैं,

---

१ नाम मात्र को कैद में रखकर २ पीड़ा नहीं की ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ रत्नसिंह को ४ बुलाने से ५ अब ६ पुत्र सहित ॥ १३ ॥ ७ पत्र ८ खबर लेने को भेजे. उन ९ कैदियों को १० जेलखाने में कैद किये हैं ॥ १४ ॥ सुख के ११ घर में १२ बेड़ियां १३ दुर्बल १४ दुर्बल होने का कारण पूछने पर खुरम ने कहा कि एकान्त सुनो ॥ १५ ॥ १५ नेत्र मिलते ही १६ शीघ्र ॥ १६ ॥ १७ पङ्खा करवाता है.

हाँ[1] करौं जो न नासा[2] टिपोरे हनैं ॥
पूपली[3] सद्य[4] खैबो न अवसर परहु,
कोहु अटकैं[5] न तिहि सर्ब बदली करहु ॥ १७ ॥
मैं कहिय तीन३ तव तीर भुज बिद्ध मम,
सेस गद[6] लेस कछु यों न छम[7] पुब्ब[8] सम ॥
तोहु दृग निरिस करि मोहि तरजैं तथा,
सोहु नहि कोहु सुनि जोहु बरजैं जथा ॥१८॥
अरजइक१ एह दूजी२ वे[9] सुनिये अहो ॥
मोहि भेजोहु मति कूट[10] व्याधित कहो ॥
रावरे सरन मम प्रान बाबा रह्यो ॥
सोहि उत जात बाचिहै न परिहै सह्यो ॥१९॥
सदय[11] सुनि भूप दिय सीस[12] सय१ सहसरन[13]२ ॥
रजतमय[14] स्वल्प[15] भार रक्खि बेरी चरन ॥
बंधि उपनाह[16] भुज१ पाय२ बपु३ घाय बिधि ॥
ब्याज[17] ज्वर१ बोधि[18] नृप अप्पि तिहिं प्रान निधि ॥२०॥
रेचन[19]२हु दे रु असमर्थ तिम रक्खयो ॥
अप्प सुत माधव१९३।२हिं इहन तँहँ अक्खयो ॥
पास तस ओर भट वृन्द थप्पे प्रथित[20] ॥
सूचि सुत१सुभट२सब करहु याको कथित[21] ॥ २१ ॥
कुमर हरिसिंह१९३।३खिजि सत्थजुत दूर किय ॥
कानिसैंन[22] सय्यद२न बुल्लि हित पूर किय ॥

---

१ हां नहीं करूं तो २ नासिका पर ३ रोटी ४ गरम उसको कोई नहीं ५ रोकता है ॥ १७ ॥ ६ रोग ७ समर्थ ८ पहिले के समान ॥ १८ ॥ ९ अब १० झूठा रोगी बताओ ॥ १९ ॥ ११ दया सहित राजा ने मस्तक पर १२ हाथ दिया १३ शरण के साथ १४ चांदी की १५ थोड़े भारवाली बेड़ी १६ पट्टी (घाव का उपचार) ज्वर का १७ मिष १८ समझाकर राजा ने उसको प्राण रूपी धन दिया १९ जुलाब देकर २० प्रसिद्ध २१ कहना ॥ २१ ॥ २२ अदब से

जंपि अबही मुहम्मदतकी[1] जाइहै,
खुरम[2] गद[3] खिन्न उल्लाघ द्रुत आइहै ॥ २२ ॥
सुनि सु जवनन कहिय हमहु इकखैं सही ॥
मन्नि गद मूढ करि लैहिं तुमरी कही ॥
जोहु दिखवाइ रखवाइ तिन्ह भाइँ[4] जिम ॥
तीन[5] अहै मान महमान दुव२ रक्खि तिम ॥२३॥
तूर्ण[6] लै आहुं कहि साह नहिं हद तकी ॥
तवहि तिन संग पठयो मुहम्मदतकी ॥
कहि वेरी तदनु[7] खुरम३९।२ निबंधकिय ॥
कुमर माधव१९३।२ तिम सु बिगत दुख गंध किय ॥ २४ ॥
तात सासन[8] सनहु[9] अधिक आदर तनैं ॥
बैठिवे तास अब खासगही१ बनैं ॥
सयन पल्ल्यंक[9] हुं[10]रकर्म३भूखन४ बसन ॥
समय अनुसार है सैद्य[11] अभिमत असन[12] ॥२५॥
है[13] तिमिनु[14] ओर सब इष्ट संपन्न ठहै ॥
बिबिध खिलिवत्त[15] छमें[16] भूप भय छन्न ठहै ॥
मोहि[17] इम साहसुत चित्त माधव१९३।२ कुमर ॥
स्वामि पन सद्धि तस काम हुव अवसर ॥२६॥
बढन कोटा बिभव बीज तबको बयो[18] ॥
अंक्खिहैं[19] काल आगामि[20] सुहु उग्गयो ॥

---

१ कहा २ रोग से दुर्बल है सो ३ आराम होने पर शीघ्र आवेगा ॥ २२ ॥ ४ भाई के समान रखकर; अथवा जिस प्रकार उनको कहा तिस प्रकार रख कर ५ दिन ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ जिस पीछे ॥ २४ ॥ पिता की ८ आज्ञा से भी ९ पर्यङ्क (शय्या) १० हजामत बनवाना ११ तुरत का पका हुआ १२ इच्छानुसार भोजन ॥ २५ ॥ १३ वस्त्र बिना १४ प्रास १५ हसी खेल १६ समर्थ १७ मोहित करके ॥ २६ ॥ १८ कोटा के बढने का बीज उस समय बोया गया जिसका ऊगना २० आगे के समय में १९ कहेंगे

कैद पुरलोक जानैं खुरम३९१२ है करयो ॥
पै न सुख१ दुक्ख२ को बोध जान्यों परयो ॥२७॥
साह उत कुप्पि मंग्यो खुरम३९१२ सय्यदन ॥
कहियतिन है सु गदग्रस्त जैसैं कदनं२ ॥
पुनिहु फरमान बुरहानपुर दै रु पहु,
बुल्लयो खुरम३९१२जुत हुल उपालंभि३ बहु ॥ २८ ॥
बट्टमैं४ जो न मरिजाइ ऐसो बनैं,
तबहि लै आहु न बिलंब मिसकरि तनैं ॥
बंचि दल साहमत तासुतसौं बादिय,
देखि तुहिं अत्थ५ काराहुं६ रहिबे न दिय ॥ २९ ॥
साहसुत तबहु करजोरि मंग्यो सरन,
चाहि इक प्रान नहिजान बंदे७ चरन ॥
उचित सब बुल्लि तब रैन१९२१क्रिय मंत्र इम,
कहहु कुलधर्म सह साध्यबिधि है ब किम ॥ ३० ॥
बिहित जो लै खुरम३९१२संग जैबो बनैं,
है कुपित साह तो याहि निहचै हनैं१ ॥
सरनगत दै जु निज धर्मसौं अपसरैं२,
पुत्रहु न साहकै ओर जान्यों परैं३ ॥ ३१ ॥
एह जो काल१० लहि पट्ट लहिहै१ अहो,
क्यों न तों स्वीय११ आसान१२ बहिहै२ कहो ॥
भजि जैहैहु हैहै ततो भीरको३,
सत्रु सब टारि,मरहट्ठ इहिं सीरको ॥ ३२ ॥

॥ २७ ॥ १ रोगी २ मरने योग्य ३ उरहना देकर ॥ २८ ॥ ४ मार्ग में ५ यहां ६ कैद में भी ॥ २९ ॥ ७ प्राण की चाहना करके नहीं जाने के लिये चरणों में ८ नमस्कार किया ॥ ३० ॥ अपने धर्म से ९ चलायमान होवें तो भी ॥ ३१ ॥ १० समय पाकर ११ अपना उपकार क्यों नहीं १२ धारण करेगा ॥ ३२ ॥

तोहु ऐहैं तबहु बिक्खिलै हैं बली,
जानपावैं न सब सौंहि यह उज्जली ॥
भ्रात१ काका२ रु सुत३ गोत्र४ असगोत्र५ भट,
कहतहुव घोरगद[1] व्याज[2] यह अप्रकट ॥ ३३ ॥
अप्पनैं साहभट जेहु विस्वस्त[3] अति,
ते न कहिहैं रु लहिहैं न लखि सेस तँति[4] ॥
भाखि अतथोंहु[5] कुलधर्म१ धरिबो भन्यों,
बहुरि तस पिछिलगि अर्थ२ ऐबो बन्यों ॥ ३४ ॥
काम३ तसपिछि बिधि एह सम्मत करहु,
देरकरि जाहु तब बिघ्न डारैं डरहु ॥
आसु[6] कामांध[7] इम साह मरिबो इतहु,
करहु प्रस्थान पहु खुरुम३।९।२ न डिगैं कितहु ॥ ३५ ॥
रत्न१९२।१ सुहि मन्त्रि बर्ल अर्थ३ तँहँ रक्खयो,
बुल्लि बलि बीर विस्वस्त इम अक्खयो ॥
बुद्धिचंद१९३।२ रु पता१९१।१ एहु आये बली,
भूप प्रस्थान[8] खिंन[9] रीति सूचैं भली ॥ ३६ ॥
सुनहु माधव१९३।२।३रु हरि२९३।३।२ पुत्र केसव१९३।६।३सहित
द्वारकादास ४ सेनेस अर्दन[11] अहित ॥
सूर सहगोत १ असगोत्र २ इत्यादिसब,
सो गुनों मोहिसन[12] आनि अवधान[13] अब ॥ ३७ ॥
आन जिंनदेहु बुरहानपुर सीम अरि,
सर्व सूबाहि रक्खहु सुखी मारि मरि ॥

---

१ भयंकर रोग २ इस छल को प्रसिद्ध नहीं करके ॥ ३३ ॥ ३ विश्वासवाले चाकों की ४ पंक्ति ५ झूठ बोलकर भी कुल धर्म धारण करना कहा ॥ ३४ ॥ ६ शीघ ७ काम में अन्धे हैं इसकारण ॥ ३५ ॥ ८ सेना ९ कहा राजा के चलने के १० समय ॥ ३६ ॥ शत्रुओं को ११ दण्ड देनेवाले १२ मुझ से १३ सावधानी ॥ ३७ ॥ १४ मत आने दो

जान जिंनदेहु यह खुरुम३९१० कढि प्रानजिम ॥
एहि दुव२ चत्त सबबत्त सुभहोन इम ॥३८॥
सोहि समुझाइ नरनाह तब संक्रमिय ॥
कज्ज यह साढि जवनेसरन भेट किय ॥
क्यों न आन्यों खुरुम३९१२ साह पुच्छिय कहो ॥
अरजकिय रैन१९२१२ मरतो सु मगमैं अहो ॥३९॥
छिप्र[3] वह अप्प[4] सुनि होहि बपुछोरिहै[5] ॥
बैद्य बिधि[6]व्याधि उपचार[7] सब बोरि है ॥
खान आसफ कहिय आय जैहैं खुरुम ॥
व्है रहिय हाल वह सीतहत जातिसुम[8] ॥ ४० ॥
जित्ति दुव जुद्ध हुव रत्न आगम जहाँ ॥
त्यों उपालम्भ[9] को क्यौंहु संभव तहाँ ॥
तोहु अरि मुक्ख्य साहि गाढ जय तानिकैं ॥
आँन निज रक्खि अब छुवत पय आँनिकैं ॥ ४१ ॥
साह प्रभु चाह बिचि ताह नरनाहसों ॥
व्है कि सिर वाह जुत लाह खिन लाहसौं ॥
कुम्म रट्ठोर मुक्ख[10] भूप तंत्र[11] न किते ॥
अौन नृप रैन के दैन चरनहु किते ॥ ४२ ॥
साह हसि मंद[12] कहि वाह इह गाहँ[13] सुनि ॥
प्रीति वह किन्न बखसीस तह रीति पुनि ॥
द्विरद तहँ कोहमुख जंग नामक दयो ॥
अरुव दिलयार ईरान असि अप्पियो ॥ ४३ ॥
मंजु सिरपेच तिम पूंचि जुग बैज्रमग्र[14] ॥

---

१ मतजाने दो ॥ ३८ ॥ २ चला ॥ ३९ ॥ ३शीघ्र ४ आप ५ मरेगा ६ रोग ७इलाज. सरदी का मारा हुआ ८चमेली का पुष्प होवै जैसा ९ ओलम्भा देने का १० आदि ११ आधीन नहीं है १२ मुस्करा कर १३ इस जगह १४ हीरों की जड़ी हुई

आमलकनाम मुक्तान[1] कुंडल[2] उभय ॥
बेरूँ[3] लिय हार बलि ज्योति गुन फार[4] जुरि ॥
बे रु लिय इक्क१ मनि[5] मुट्ठि खंजर२८ बहुरि ॥ ४४ ॥
खास पोसाक९ फौलादमय चर्म[6]१० खर[7] ॥
तार नक्कार तिम रूपदरसन११ रैवर[8] ॥
परगनाँ सत्त७ दिय टुंक१टोडा२[9]प्रमुख ॥
रामपुर३ मालपुर४ च्यारि४ दिस बाम१[10]रुख ॥४५॥
चेचत५।१ रु जीरपुर६।२ खैरआबाद७।३ चहि ॥
दीन ए तीन३[11]बंसुपीन दक्खिन२ दिसहि ॥
अप्प कर थप्पि नृप अंस[12] इम उच्चरिय ॥
काहुनैं रैन १९२।१ तव[13] और[14] जय नौकरिय ॥ ४६ ॥
सुर्ज्जन१९०।१हु पुब्ब[15] गुड़वान१ जिप्यो समर ॥
गंजि सूरति१ लयो भोज१९१।२ अहमदनगर ॥
तोहु नन तेहु आरूढ हुव तो तुला[16] ॥
सत्रुगहि जित्ति लिय रारि जुगर संकुला[17] ॥४७॥
साह सालक[18] सचिव त्यौंहि जस सौहयो[19] ॥
बिरुद निज अज्ज बुंदीस निबहियो[20] ॥
भोज१९१।२ सुर्ज्जन१९०।१ सनहु[21] कित्ति[22] पाई भली ॥
बीर को साहके काम औसो बली ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

---

१ मोतियों के २ कर्णभूषण ३ शरीर पर पहिनां गुणों का ४ समूह. ये ऊपर कह हुए और एक ५ मणियों की जड़ी हुई मूठवाला खंजर ये दोनों लिये ॥ ४० ॥ ६ ढाल ७ उत्तम ८ चांदी का नगारा जो रूप के ९ देखने में १० अत्युत्तम ११ आदि १२ बुन्दी से बाईं ओर ॥ ४१ ॥ १३ धन से पुष्ट. अपने हाथ से राजा का १४ कन्धा थापकर कहा १५ तेरा घर ४२ ॥ १६ पहिले १७ तेरे बराबर वे भी नहीं हुए १८ सङ्कुलित (अवकाश रहित युद्ध करके) ॥ ४३ ॥ १९ साला अर्थात् नूरजहां का भाई सचिव था उसनें भी यश किया २० ग्रहण किया २१ निबाहा २२ से भी २३ कीर्ति ॥ ४४ ॥

सिक्खर नृपहिँ इमदिय सिबिर[1], साह बिरचि बखसीस ॥
सब सभाहु सूचिय सुजस, अहो[2] पराक्रम ईस ॥ ४९ ॥
सिवप्रसाद कुंभी[3] कियउ, भूप जवनपति[4] भेट ॥
सम्मुह नन रन रहिसकैँ[5], फौज अरिन जिहिं फेट ॥५०॥
संभर इम आयोऽसिबिर, संसद[6] पाइ सराह ॥
जय उँद्धरि[7] लायो सु जिम, बसुमति[8] आदिबराह[9] ॥ ५१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंधु सरित[10]पर[11] पुहवि हुतो इत खानमहावत ॥
रजपूतन रिझवार कलँह[12] जयकार कहावत ॥
तासौँ इकगढ तत्थ जेर न भयो बहु जुज्झत ॥
कैलावीस[13]१ कहुँ कथित सु पै अपर[14]२ हि कहुँ सुज्झत ॥
तँहँ गोपीनाथ१९३।१ केसव१९३।६ तनय दुव२हि स्याम१९४।८ १९४।१ बुल्ले विदित ॥
पच्छै न जाइ जे रत्न१९२।१ पहु सहतौ[15] सब्बहु बुल्लि इत ॥५२॥
सुनत महावत सोहि दयो अरजी[16]दल दिल्लिय ॥
इत अफगानन असह प्रचुर[17] जितातित बल[18] पिल्लिय[19] ॥
दुगम लैन यह दुर्ग प्रथित[20] बुंदीस पठावहु ॥
हम जुंगर[21] जोर हजूर ओर अवनिहु[22] अपनावहु ॥
आसफ वजीर अरजी सु अरँ[23] पहुँचि निवेदिय साहप्राते ॥
अरु कहिय रत्न१९२।१ भेजहु उहाँ गढ जय यहहि अमोघगति ५३

॥ गीतिः ॥

---

१ डेरों में २ आश्चर्य युक्त ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ बादशाह के ॥ ५० ॥ ५ चहुवाण ६ सभा में ७ निकालकर ८ पृथ्वी को ९ आदि वराह अवतार लाये थे इसप्रकार ॥ ५१ ॥ १० सिन्धुनदी की ११ पार की भूमि में १२ युद्ध में १३ कहीं-उसका नाम कलवीस कहते हैं १४ कहीं दूसरा ही नाम दीखता है १५ साथ ॥ ५२ ॥ १६ पत्र १७ बहुत १८ सेना १९ भेजी २० प्रसिद्ध २१ दोनों के बल से २२ भूमि २३ शीघ्र ॥ ५३ ॥

जंपिय साह नृपहिँ जिम, सिं[1]धुधुनी पार जाइ संभर वै ॥
तुम१महावत२मिलि तिम, इक१दुग्गम दुग्ग जित्ति आहु इहाँ ।५४।
भूप[2] कहिय वसु[3] व्ययभो१, अब्दन[4]मैं मैं प्रवास[5] रहि आयो२॥
जिम रावरो विजय भो३; द्रोही पकरे४ न सीम उतदब्बे५ ।५५।
तदपि[6] पठावहु जितजित जैहौं रु निदेस[7]वस परिहु जैहौं ॥
इक१ पै[8] सिंधु[9] उतरि इत, जैबो हमरे सु जियत मरि जैबो ५६
सत्त७ किय कोल सुर्ज्जन१९०।१, अकबर३७।१ तिनमैं येहु लिखि अप्पी ॥
जंपैं जु कोहु सुर्जन, सोहि न प्रभुके विधेयं[10] साहससौ ॥ ५७ ॥
यहहि वजीर१हिँ अक्खी, पटु[11] आसफखान मज्झिखिन्नी पै ॥
समुझाइ लेख सक्खी[12], कही दुहु२न तोहु साह जाहु कही ।५८।
तब निजधर्महि तक्किय[13], न जावन१ रु मंडि रन२ नृपतो ॥
प्रत्युत[14] यह फल पक्किय, सदाहि तन१मन२धन३सन सेवनको ५९
बुल्लि सचिव केसव बलि, जो मथुरादास बनिक तनुजन्मा[15] ॥
कहिय रचहिँ बुंदी कलि[16], सजि तू संभार[17] जाइ पुर सबही ।६०।
सुत[18]सुत बीर सता१९४।१कौं, स्वसुरालय[19] कहुँ पठाइ कछु मिससौं॥
तंक्कन[20] देहु न ताकौं, मेरो सकुटुंब[21] भावि[22] रन मरिबो ॥ ६१ ॥
सताकौं१नताकौं२अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥
बलि सुज्जपोलि[23] बाहिर, बस्यो नगर तास वैरन[24] जु बनायो ॥
जामैं कछु खिलं[25] जाहिर, पूरन वह करहु बेग सह परिखा[26] ।६२।

---

१ अटक नदी के पार २ हे चहुवाण ॥ ५४ ॥ ३ धन खरच हुआ ४ वर्षों में ५ परदेश ॥ ५५ ॥ ६ तो भी ७ आज्ञा के आधीन ८ परन्तु ९ अटक नदी उतर कर जाना ॥ ५६ ॥ १० कर्तव्य अथवा उचित ॥ ५७ ॥ ११ चतुर १२ साक्षी ॥ ५८ ॥ १३ देखा १४ उलटा ॥ ५९ ॥ १५ पुत्र १६ युद्ध १७ सामग्री ॥ ६० ॥ १८ पुत्र के पुत्र वीर शत्रुशाल को १९ सासरे २० देखने मत दो २१ कुटुम्ब सहित २२ आगे होनेवाले युद्ध में ॥ ६१ ॥ २३ सूरजपोळ २४ कोट २५ बाकी २६ खाई सहित ॥ ६२ ॥

कालि बत्त बिदित न करहु, बिलंबि कछुकाल आत मैं बुंदी ॥
तब केसव चतुरतरहु, कज्ज कथित देस आइ सब किन्नों ।६३।
इत भूप महाबतको, आह्वान बिचारि पत्र पठयो यों ॥
मित्र तुमहुं हम मतको, निश्चय जानत बुलात सु न नीको ।६४।
बर मरन१ आइबे२ सौं, सोहै तिहिं सुनि प्रसन्न होहु सखे ॥
बहुरि पछिताइबेसौं, पलपल मति छिज्जि छिज्जि दुख पैहो ।६५।
पहुं पुनि स्याम १९४।८।१९४।१ उभय २ प्रति, कुपुत्रकहि पत्र कोप लिपि पठयो ॥
मृत तुम जियतहु दुर्मति, लंघि अटक त्योंहि मोहि करन लगे ।६६।
अब बुंदीहु न ऐहो, कुटुंब१संबंधि२जाति३दूरकरे ॥
ब्रात्यहि आयु बितैहो, गैहिले कुलधर्म पुच्छि क्यों न गये ॥ ६७ ॥
तवदैरही पछिताये, नियमहु सुमिर्यो सु बंचि दल नृपको ॥
ग्रंथि किं बनिक ठगाये, कहतभये हैद नबाबप्रति कुलकी ।६८।
सुमिरि महाबत सोही, दिल्ली बिन्नत्तिपत्र दिय दूजो२ ॥
जबहो दुर्गम जोही, सोगह अब सुगम भूपहिं न भेजो ॥ ६९ ॥
तब साहस साह तज्यो, कछुदिन दे सिक्ख गेहकी नृपकों ॥
सुनि अरिगन बहुरि सज्यो, पठयो रैन१९२।१बुरहानपुर पच्छो ।७०।
आतछिन साह अक्खिय, पहुं जातहि हनहु अब खुरम३९।२पापी
पुनिहु जथा पैरपक्खिय, न करैं हल्ला रु भीतपन निबहैं ॥ ७१ ॥

---

१ युद्ध की वार्ता प्रसिद्ध मत करना २ कुछ विलम्ब करके ३ बहुत चतुर ४ कहेहुए कार्य ॥६३॥ ५ महाबतखां को ६ बुलाना ७ हमारे मत का अर्थात् एक सलाहवाले ॥ ६४ ॥ ८ हे मित्र ॥ ६५ ॥ ९ राजा १० अटक नदी को लांघकर मुझ को भी तुम्हारे समान करनेलगे ॥ ६६ ॥ ११ संस्कारहीन होकर १२ हे पागल ॥ ६७ ॥ १३ अटक नदी उतरने का सुर्जन का किया हुआ नियम१४ स्मरण किया१५पत्र१६मानों गांठ का ठगाया हुआ बनिया होवे तैसे लज्जित होगये१७ मर्यादा ॥६८॥ १८अर्जी ॥ ६९ ॥१९हठ ॥ ७० ॥ २० आते समय२१हे राजा २२ शत्रु २३ कायरपन ॥ ७१ ॥

बिजन बजीरहु बुल्ल्यो, इक१सुत यह कहिदेहु तुम पातैं ॥
भरि कोप साह भुल्ल्यो, भगिनी भाखैं सुही हुकम सहैं ॥ ७२ ॥
यह सुनि बुंदी आयो, समुचित सद्धि रु प्रसू पयन प्रनम्यो ॥
पुर वरन अखिल१पायो, तारागढ सर्व संचय२तथाही ॥ ७३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे बन्दिखुरमदत्तदुःखकुमारहरिसिंहनिवारकरत्नसिंहकुमारमाधवसिंहरक्षककरणं १, गदव्याजस्वशरणरक्षितपवनेन्द्रयाचितखुरमाप्रदातृरत्नसिंहतदसुरक्षणं २, कुमारमाधवसिंहकृतबन्दिखुरमसुखवितरणभाविकोटावृद्धिबीजवपनप्रख्यापन ३, यवनेन्द्रपुनःपुनर्याचितरुङ्मिषाप्रदत्तखुरमरक्षार्थबुरहानपुरस्थापितनेमसैन्यरत्नसिंहदिल्लीगमन ४, बुरहानपुरविजयिरत्नसिंहयवनेन्द्रपारितोषिकपट १ पट्ट २ समासादन ५, ज्ञातकरतोयापरप्रान्तविजयार्थाज्ञाऽस्वीकाराऽप्रसन्नत्वविमृष्टतदुल्लङ्घनधर्महानरत्नसिंहसमरांगणानिधननिश्चयन ६, सूचितकरतोयोल्लङ्घनधर्महानिरत्नसिंहस्वसुहृन्महा

---

१ एकान्त में २ बादशाह के यह एक ही पुत्र इस है कारण ३ मेरी बहिन (नूरजहां) ॥ ७२ ॥ ४ उचित ५ माता के चरणों में नमस्कार किया ६ शहरपनाह सम्पूर्ण पाया ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में कैद में खुरम को दुःख देने के कारण कुमर हरिसिंह को दूर करके रत्नसिंह का कुमर माधवसिंह को रक्षक नियत करना १ रोग के मिष से अपनी शरण में रक्खेहुए खुरम को बादशाह के मांगने पर भी नहीं देकर रत्नसिंह का खुरम के प्राण बचाना २ कुमर माधवसिंह का कैदी खुरम को सुख देने के कारण आगे आनेवाले समय में कोटा की वृद्धि का बीज बोने की सूचना करना ३ खुरम को बादशाह के बारम्बार मांगने पर भी रोग के मिष से नहीं देकर आधी सेना उसके यत्न के लिये बुरहानपुर में रखकर रत्नसिंह का दिल्ली जाना ४ बुरहानपुर की जीत के कारण रत्नसिंह का बादशाह से खिलत और परगने पाना ५ अटक नदी के पार के प्रान्त विजय करने को जाने की आज्ञा नहीं मानने के कारण बादशाह की अप्रसन्नता देखकर और अटक नदी के उलंघन करने में धर्म की हानि जानकर रत्नसिंह का युद्ध करके

वतखानान्तिकपत्रप्रेषणानन्तरदर्शितदुर्जयस्थलविजयमहावतखान यवनेन्द्रान्तिकरत्नसिंहाप्रेषणविजयप्रार्थनापत्रनिवेदन ७, महावतखानप्रार्थनापत्रपठनत्यक्तकरतोयापरप्रान्तरत्नसिंहप्रस्थापनहठयवनेन्द्र जहांगीरखुरम्मघातशिक्षाप्रदानपुरःसरबुरहानपुरप्रतिप्रस्थापन ८, बुरहानपुरगमनान्तरसमयरत्नसिंहबुन्द्यागमनं सप्तविंशो मयूखः॥२७॥

आदितो दशोत्तरद्विशततमः ॥२१०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

[1]आयत जो प्रभु राम[2]२०१४यह, पुरबुंदिय प्राकार[3] ॥
तिम सु बनायो रत्न१९२।१तव, दृढ अट्ट[4]क चउ४ द्वार ॥ १ ॥
खिल[5] दुव२दिस रहि खा[6]तिका, सो दुव२दिस हुव सिद्ध[7] ॥
अप्प[8] रचित प्रासाद इत, इक्ख[9] वैभव इद्ध ॥ २ ॥
दक्खिनदिस बुंदी बढी, अद्रि त्रि३दिस ढिग आत ॥
कहत ताहि जुन्नी[10] किम सु, जान्यों हेतु[11] न जात ॥ ३ ॥
[12]अंध्नपोलि१ भैरवबलज[13]र२, अंतर जुन्नी आहि[14] ॥
सोहु बढाई नृप सत्रु१८२।७, समय उक्त नेय[15]साहि ॥ ४ ॥
तासहु मध्यप्रदेस तिम, गिनियत मैनन[16] ग्राम ॥

मारे जाने का मत दृढ करना ६ रत्नसिंह का अपने मित्र महावतखां को अटक नदी उल्लंघन करने से धर्म हानि होने का पत्र भेजने पर महावतखां का दुर्जय स्थल को जय करलेना दिखाकर रत्नसिंह को नहीं भेजने के विषय में बादशाह की सेवा में निवेदन पत्र भेजना ७ महावतखां की अरजी पढने से रत्नसिंह को अटक पार भेजने का हठ छोडकर बादशाह जहांगीर का खुर्रम को मारडालने की शिक्षा देने के साथ पीछा बुरहानपुर भेजना ८ बुरहानपुर जाते समय रत्नसिंह का बुन्दी आने का सत्ताईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ २१० दश मयूख हुए ॥

१ बडा २ हे प्रभु रामसिंह ३ कोट ४ बुरजें ॥ १ ॥ ५ बाकी ६ खाई ७ तैयार ८ आपका रचाहुआ महल ९ बडा ॥ २ ॥ १० जूनी बुन्दी कहते हैं ११ इसका कारण नहीं जाना ॥ ३ ॥ १२ सूरजपोल १३ भैरूं दरवाजा के बीच में, जूनी बुन्दी १४ है १५ नीति ग्रहण करके ॥ ४ ॥ १६ मैनों का प्राचीन ग्राम

नृप सु पुरानी१ खिल नई२, रची स्वकुल अभिराम[3] ॥ ५ ॥
आयो पहिलैं१ याहितैं, मुख्यथान यह१ मानि ॥
पट्टनि१ करउर२ आदिपुर, किय अधीन इहिं कानि[4] ॥ ६ ॥
बुंदी वेष्टित[5] अब बरनं[6], अधिप रैन१९२।१ कृत एह ॥
बहुरि बढे बाहिर बसे, उपपुर भावि अनेहँ[7] ॥ ७ ॥
निजपुर बुंदी रैन१९२।१ नृप, इम दिल्ली सन[8] आइ ॥
सज्ज लखे उपहार[9] सब, जितजित बिहित[10] जमाइ ॥ ८ ॥
स्वकृत[11] द्रंग[12] प्राकार[13] सिर१, तारागढ सिर२ तोप ॥
सामग्री कोसन[14] सकल, इक्खी धारत ओप[15] ॥ ९ ॥
केसव सचिव सराहकारि, अरु तस थप्पलि अंस[16] ॥
सिक्ख प्रमित[17] निबस्यो सदन[18], इम हड्ड१न अवतंस[19] ॥ १० ॥
सता१९४।१प्रमुखैं[20] सुतकेसुतहुँ[21], न कढे सबहि निहारि ॥
उँपालंभि[22] कछु लाइ उर, रक्खे गिलि नन रारि ॥ ११ ॥
भो तति[23] बाहिर अनुज भजि, हृदयनरायन१९२।२ हड्ड ॥
सिटयोरहत दुन्नी सु तो, आंखित्रपा[24] लहि अड्ड ॥ १२ ॥
तंव बुल्ल्यो अति वीर तस, जेठो अंगज[25] जैत१९३।१ ॥
अनुज[26] थान वह आदर्यो, वली अतुल बानैत[27] ॥ १३ ॥
पुरबुंदिय रक्खे प्रथम, वीर करन१९३।१बलवंत१९३।१ ॥
अब सु जैत१९३।१ तीजो३इहाँ, रक्खन[28] मुलक रहंत ॥ १४ ॥
रैन१९२।१ सुपहु निजराज्यको, भुज तीन३न धरिभार ॥

---

१ हे राजा वह पुरानी बुन्दी है २ बाकी नई है ३ सुन्दर ॥ ५ ॥ ४ इसकी शंका से ॥ ६ ॥ ५ घेरे हुए ६ कोट ७ आगे आनेवाले समय में ॥ ७ ॥ ८ से ९ सामग्री १० उचित ॥ ८ ॥ ११ अपने बनाए हुए १२ नगर के १३ कोट पर १४ खजाना में १५ शोभा ॥ ९ ॥ १६ कन्धा १७ सीख के माफिक १८ घर में निवास किया १९ मुकुट ॥ १० ॥ शत्रुशाल २० आदि २१ पोते के नहीं निकालने से २२ ओलम्भा देकर ॥ ११ ॥ २३ पंक्ति बाहिर २४ लज्जा ॥ १२ ॥ २५ पुत्र २६ छोटे भाई के स्थान में २७ युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाला ॥ १३ ॥ २८ देश की रक्षा करने को ॥ १४ ॥

*सासक रक्ख्यो सबनसिर, कुमर सतो[1] ९४।१ जयकार[2] ।१५।
इंद्रसल्ल१९४।२ ताको अनुज, बुंदिय थप्पि बलेस[3] ॥
बैरिसल्ल१९४।३ ईंगढ्ढंग[4] वलि, पठ्यो दबन प्रदेस ॥१६॥

॥हरिगीतम्॥

पलटयोन जो रनछोर१ गोर सु टुंक२नैर पठाइकैं ॥
महराज१चालुक मालपुर२पठ्यो जथोचित पाइकैं ॥
टोडा१ पुरी अधिकार अप्पिय बनिक[5] टोडरमल्ल२ कों ॥
दिय रामपुर१ अधिकार तिम कछवाह दुर्जनसल्ल२कों ।१७।
रघु१भूत्य चेचत[6]२रक्खि सेसन१सेस२भार समप्पिकैं ॥
थिर देस रक्खन वीर हे तिन्ह त्यों समस्तन थप्पिकैं ॥
बुरहानपुर इत सुक्कल्यो स्व निदेस पत्रहु वेगहीं ॥
निज दंडनायक[7] द्वारकादिकदास[8] कूरमतैं कही ॥ १८ ॥
माधव१९३।२।१कुमार भतीज केसव१९३।६।२ अन्यतर[9]१मिलवाइकैं॥
प्रच्छन्न खुरम३९।१हिं काढिदेहु निसीथ[10] ओसर[11] पाइकैं ॥
जानैं न कोहु स्वकीय[12] जन१ अरु दुंगजन[13]२न सुनैं जथा ॥
रचि त्यों प्रबंध निकासि रक्खहु साह संतति[14] सर्वथा ॥ १९ ॥
लक्खैरि अप्पन रक्खि१ सुत हरिसिंह१९३।३पै हितलाइकैं२॥
आसान बुंदियके वच्यो३ इम लेख लेहु लिखाइकैं ॥
बुरहानपुर मह पत्र विक्खत[15] द्वारकादिकदास१ जो ॥
नृप पुत्र माधव१९३।२।२तैं मिल्यो नृप इष्ट अक्खि निकास जो२०
मिलि निस्सलाक[16] उभै२ कह्यो तिहिं साह सासन[17] मारिबो१ ॥

* आज्ञा देनेवाला (हुकूमत करनेवाला) १शत्रुशाल २जय करनेवाला ॥१५॥ ३ सेनापति ४ नैणवानगर ॥ १६ ॥ ५ बनिया ॥ १७ ॥ ६ नाम विशेष ७सेनापति ८ द्वारकादास ॥ १८ ॥ ९ दोनों में निर्धारित सलाह मिलाकर १० आधी रात्रीको ११ समय पाकर १२अपने सेवक भी नहीं जानसकें १३नगर के लोग १४ बादशाह की सन्तान को ॥१९॥ १५ देखते ही ॥ २० ॥१६एकान्त में मिलकर १७ बादशाह की आज्ञा इसको मारने की है

नृपकै अभीष्ट तऊ तुम्हैं कछुरीति गुप्त निकारिबो१॥
हमरो कह्यो सुभ मान्नि जो हरिसिंह१९३।३तैं रिस संहरो१॥
आसान हद्दु६१नैं उब्बरयो कर अप्पै लेख पहै करो२॥२१॥
लक्खैरि हद्दु६१नकी पुरी नहिं गौड़ मोसन सो लहैं३॥
रतनेस१९२।१ अब लिय देस इहिं लिपि तहु दत्त बनैं रहैं४॥
तब तुम निकास लहो१ तथा हमतैंहु तुष्ट नरेसहैं२॥
बलि पट्ट पाइ हमैं बढावहु तो कृपा सु बिसेसव्है॥२२॥
अवनीसप्रति तब लेखसुहि करि अंत बत्त लिखी यहै॥
कछु भार नाँहि मदीय चित्तहु मंगिबो इक तोकहैं॥
अति नम्र माधव१९३।२ मोहि मालिक सर्वथागिनि आदरयो॥
कारागृहुमैं मम चैन जिहिं मन१ वैन२ काय३ नतैं करयो॥२३॥
मैंहि भाग याहि बिसेस दे सब मुख्यके सनमानिहो॥
आसान एह द्वितीय२ बाबा ज्यान मोसिर आनिहो॥
इम खुरुम३९।२ निज लिपि पत्र अप्पिय द्वारकादिकदासकौं॥
बिचदैं कुराँ१ रैंबर२ सौंहैं कैं बिरच्यो बिसेसबिसासकौं॥२४॥
कछु व्याधिके मिस मुख्य माधव१९३।२ आदि दूर सबै करे॥
समुझाइ रच्छक ग्रन्थ सँसुचित धीमनाइ तहाँ धरे॥
जिनकौं बिसासि निसीथैं सैम्मत कुम्म१ माधव२ जाइकैं॥
सो खुरुम २९।२ कहि दयो बिमैग्ग लिखी सबै सुमिराइकैं२५
गिनि जन्म नव सुत साहको सु वहोरि बीजापुर गयो॥
इत तास रच्छक वर्गकौं खिजि व्याज बंधन अप्पयो॥

१ मिटाओ २ आप॥ २१॥ ३ मुझ से ४ लेख ५ दान ६ प्रसन्न॥ २२॥ ७ राजा के प्रति ८मेरे९कैद में भी१०शरीर से नम्र होकर॥२३॥११भूमि का भाग१२सब में मुख्य करके सन्मान करोगे१३कुरान१४ईश्वर के१५सौगन॥ २४॥ १६रोग के मिष से १७ पहरायतों को १८ उचित १९समझाकर२०आधी रात्रि २१ सलाह २२ कछवाहा द्वारकादास और कुमर माधवसिंह २३ बिना २४ स्मरण कराकर॥ २५॥ पहरायतों को क्रोध करके२६झूठी कैद में किये

मनमैं मनाइ*चमूप कूरम लोक†ख्यापन मोघही ॥
सब[1]सासना किय कैदकी तिन त्यों प्रसन्न सु पैसही ॥ २६ ॥
अरजी लिखी नृपकौं इतैं काढि छन्न गो सुत साहको ॥
लि[2]पि सोहि दिल्लिय भेजि जाहिर मोद सं[3]हरि [4]लाहको ॥
तब दै सता१६४१भुजभार रच्छक राज्यके सनमानि त्यौं ॥
जिन्हराक्खि बुंदिय अप्प हं[5]किय गम्य दक्खिन३।२जानि त्यौं ॥२७॥
तत[6]काल जातहि ख्यां[7]तिमैं दुव२कुम्भ१माधव२[8]तर्जये ॥
व[9]सु दंड दै१वसुधा[10] उतारि२ रु पास [11]आगम वर्जये३ ॥
बिसवासि अंतर१है२हि बाहिर२दिट्ठि[12]कैद दयो बली ॥
भुव पुव्व [13]जामिक कैद हे तिनकीहु ख्यात लई भली ॥ २८ ॥
नहि मं[14]तु केसव१९३।६पै निहारि सु दंडनायक निर्मयो[15] ॥
भजिगो स्वअंगज[16] सो इतैं सुनि साह [17]अमरखमैं भयो ॥
[18]बलि वेहि[19] सय्यद२मुक्कले [20]अतथा१तथा२सु विचारिबे ॥
पुनि भूप ते महमान राक्खिय मं[21]तु निश्चय पारिबे ॥ २९ ॥
व[22]सुहीन [23]जामिक१कुम्भ२माधव३कैद तोहु न वि[24]स्वसे ॥
बहु दै प्रजाहित छन्न लोभ रु हां उभै२चिर[25]लौं बसे ॥
बहुकालमैं तिनकौं मिल्यो कछु भेद यौं दुव२बातको ॥
[26]पैहु तो प्रसन्न प्रजाकह्यो लरतोरह्यो पहप्रातको ॥ ३० ॥
इहिं कुम्भ राति [27]अराति पंचक५मुख्य कह्रिदयो१ अहो ॥

---

* सेनापति † प्रसिद्ध १ आज्ञा ॥ २६ ॥ २ लिखावट ४ लाभ का मोद ३ मिटाकर ५ जाने योग्य ॥ २७ ॥ ६ तुरन्त ७ प्रसिद्धि में (लोगों को दिखाने के लिये) ८ धमकाए ९ धन का १० भूमि ११ पास आना बन्ध किया १२ नजर कैद १३ पहरायत ॥ २८ ॥ १४ अपराध १५ सेनापति बनाया १६ अपना पुत्र भाग गया सो सुनकर १७ क्रोध में १८ फिर १९ वे दोनों शय्यद जो खुरम को लेने के लिये पहिले भेजे गये थे २० झूठ और सत्य विचारने के लिये २१ अपराध निश्चय करने को ॥ २९ ॥ २२ धनहीन २३ पहरायत २४ विश्वास नहीं किया २५ बहुत समय पर्यंत रहे २६ राजा तो ॥ ३० ॥ द्वारकादास कछवाहे ने पांचों २७ शत्रुओं को

निकसाइ खुरुम२९१२दयो तथा[1] अब२पै इहाँ नृपतो न हो ॥
इक कुम्म१अक्खिय काहु काहु[2] मिल्यो कुमार२हु उच्चरयो ॥
पर[3] द्वै२हिबेर चमूप[4]को पर[5] कड्ढिबो निहचै परयो ॥ ३१ ॥
उनतैंहु अक्खिय साह आवत सुद्धि[6]लै सव ओरतैं ॥
जो होइ कड्ढनहार तो तिहिं बंधिआनहु जोरतैं ॥
सैपंच५००साँ[7]दि१रु अट्ठसै८००पादाति२दोउ२न संगहे ॥
गहि बास बाहिर१पुनि पदाति बिसें[8] जथा क्रम दंगहे[9] ॥ ३२ ॥
तिन्ह सज्जि सय्यद रत्ति[10] कूरम[11]पैं क्रमे सहसा[12] तथा ॥
जिहिं क्यौंहु[13] जानिलई सु सज्जहि स्वल्प सत्थ मिल्यो जथा ॥
तरवारि झारि भिरे अचानक लोक विस्मयमैं तच्यो[14] ॥
महि रुंड१ मुंड२न पट्टि त्यौं अवमर्द[15] इक्क१घरी मच्यो ॥ ३३ ॥
पहु सो इतैं सुनि द्वार रुंद्ध[16]कराइ निजभट पिल्लये[17] ॥
हरिसिंह१९३।३ केसव१९३।६ संग ठहे सबठाम कूरम ठिल्लये ॥
पुरद्वारप्रति सत पंच५०० पंच५०० सिपाह सज्ज पठाइकैं ॥
अरु द्वार अंतर दुर्गके सु खरो रह्यो द्रुत आइकैं ॥ ३४ ॥
अबै लग्यो स्व कुमार माधव१९३।२ सो न आनदयो इतैं ॥
भर[18] कुम्म१ सय्यद२ यों भिरे तँहँ लुत्थ बत्थ जितैंतितैं ॥
पहुँचैं न जोलगि हरि१९३।३रुकेसव१९३।६ मिच्छतोलगि प्रानमैं ॥
कछवाहकौं लगि लाह लौलिय संकरैं घमसान[20]मैं ॥
जँहँ स्वल्प सत्थहु द्वारका[21]दिकदास दुस्सह जुज्झयो[22] ॥
विनुमत्थ[23] झारत खग्ग लिखि गिरिजा[24]१ गिरीस२हिं बुज्झयो ॥

१इसी प्रकार२किसी किसी ने३परन्तु४सेनापति५शत्रुओं को निकालना ॥३१॥ ६ खबर ७ सवार ८ घुसे ९ नगर में ॥ ३२ ॥ १० रात्रि में ११ कछवाहा द्वारकादास पर चले १२ अचानक १३ किसी प्रकार १४ तपा १५ युद्ध ॥ ३३ ॥ १६ द्वार बन्द कराकर १७ भेजे ॥ ३४ ॥ १८ भट (वीर) १९ बल में २० युद्ध में ॥ ३५ ॥ २१ द्वारकादास २२ लड़ा २३ विना मस्तक लड़ता देखकर २४ पार्वती ने शिव से पूछा

कछवाह बंसहि *चारु भट दुव२भेद †सेख१ ‡नरू२ कुली ॥
तँहँ आदि१ §इस कह्यो यहै जिहिँ रुंड कर ¶असि यों तुली॥३६॥
जवनीन हत्थ घनीन कंकन हीन कीन चमूप[1] ज्यों ॥
रिपु गत्त[2] रत्त[3] स्रवैं द्रवैं हुरियार होरिय रूपज्यों ॥
जस रक्खि बिनुसिर द्वारकादिकदास१ कछुखिँन जुट्यो ॥
तरवारि भारि घनैंन पारि सु रारि तिलतिल तुट्यो ॥ ३७ ॥
ताको भतीजहु मान२ खंड बिहंड खेतपरयो तथा ॥
परि संग बीर छतीस३६ ओरहु उव्बरे जसकी प्रथा[6] ॥
पहुँचै न है२हि कुमार जोलग संगलै भट पानके ॥
कछवाह तोलग है२हि है सहसत्थ गोचर कानके ॥ ३८ ॥
सुनि एह भूपहु वृद्ध बै भट रक्खि है सत२०० संगमैं ॥
वलि अप्प जीवरखा बिस्यो जरि द्वार वा छलजंगमैं ॥
सब सेसँ[11] सूरहु मुक्कले हरि१ केसवा२दि सहायपैं ॥
[12]घमसान घोर मच्यो लख्यो तिन घाय लग्गत घायपैं ॥३९॥
दलि कुम्म१ अंतर[13]दुर्गदिस गहिलैन[14] माधव२ वे मुरे ॥
इतनैं बढे पहिले कढे भट पत्ति[15] पहुँचत अंकुरे[16] ॥
चढि अट्ट[17] अंतर[18]दुर्गके नरनाहँ[19] वाह कहैं चहैं ॥
[20]श्रुति आक्खि होत समीप सद्दन[21] चंद्रहास[22] बहैं सहैं ॥
कहि केहि नेजन[23] बद्ध ह्वाँ रनमाहताब उदैकरी ॥

कछवाहों में * सुन्दर दो भेद हैं एक † सेखाउत ‡ दूसरा नरू का जिनमें § शिव ने कहा कि यह सेखाउत है ¶ खड्ग ॥ ३६ ॥ १ सेनापति ने २ गात (शरीर) ३ रक्त ४ फाग ५ कुछ समय ॥ ३७ ॥ ६ प्रसिद्धि से ७ पराक्रम के ८ साथ सहित कर्ण गोचर हुआ अर्थात् उसका नाम कानों से जानने योग्य रहा और शरीर से मारागया ॥ ३८ ॥ ९ वृद्ध आवस्थावाले १० जीवरखा में घुसा ११ बाकी के १२ युद्ध ॥३९॥ १३ जीवरखा की ओर १४ माधवसिंह को पकड़ने के लिये १५ पैदल १६ खड़े हुए १७ बुरज १८ भीतर के गढ (जीवरखा) की १९ राजा २० कानों में २१ शब्द २२ खड्ग ॥ ४० ॥ २३ यांसों पर बांधकर

इम दुर्ग१पिक्खि प्रकास ढंग२हु ही सु जितालित उग्घरी ॥
गढतैं नरेस निदेस[1] निक्खसि वीर जे पहिलैं गये ॥
लघुं[2] पहुँचि तिन अरिकुम्भ१काढि कुमार२वौं[3] सुरते लये ॥४१॥
मिलि हल्ल[4]१मिच्छ२न जुद्धमैं पुनि जुद्ध यौं सहसौं मच्यो ॥
बुरहानपुर तिहिं रत्ति[5] पुरजन[6] धामधाम[7] बिस्यो बच्यो ॥
चहुँ४ओर वेग बढावती दुहुँ२ओर तेग भलीचली ॥
वरवीर धीर सदाजई जिम छीर[8]१नीर२मिले वली ॥ ४२ ॥
वहि खग्ग टोप१तंनुत्र[9]२बाहुल[10]३बाहि झल्लरिलौं बजैं ॥
भिदिजात लाघव[11] तांति सँव्वन[12] पंति पैठन भौं[13] भजैं ॥
पय१पिंडिका[14]२नलकील[15]३सक्थि[16]३कटीर५तुंद[17]६कटे परैं ॥
उर७कंठ८हत्थ९कफोनि[18]१०भुज११तिम अंस[19]१२मस्तक१३उत्तरैं ॥४३॥
पीछे सहाय चल्यो सु सत्थ मिल्यो इते बिच पानसौं ॥
इम ए१जुर सब इक्कठै मन वे२सुरे तब मानसौं ॥
सामंत१८७कुलभव[20] केसव१८९।२।१रु हरिसिंह१९३।३।२केसव
१९३।६।३ संगही ॥
बलभद्र४चालुक वल्लनोत[22] इतेनकी बढिकैं[21] बही ॥ ४४ ॥
कौंलि[23] संहरे सतपंच५०० अरि सततीन३०० भीतभये कढे ॥
चहि हूर[24] सूर उभैहि सध्यद खग्ग[25] धारनपैं चढे ॥
सतपंच५०० सादिन[26] संघ[27] बाहिर ह्वो सु रत्ति रह्यो सज्यो ॥
सो प्रात स्वामिनकों हनैं[28] सुनि भौंन[29] पद्धति[30] लै भज्यो ॥४५॥

---

१ राजा की आज्ञा से २ शीघ्र ३ कुमर माधवसिंह की ओर ॥४१॥ ४ अचानक ५ उस रात्रि में ६ पुर के लोक ७ घर घर में भाग करके बचे ८ क्षीर (दूध) ॥ ४२ ॥ ९ कवच १० दस्ताना ११ शीघ्र १२ साघन में १३ कान्ति धारण करती है १४ पींडी १५ नली की हड्डी १६ जंघा, कमर और १७ पेट १८ कुहनी १९ कन्धा ॥ ४३॥ २० पराक्रम से २१ कुलवाला २२ वालणोत ॥ ४४ ॥ २३ युद्ध में २४ फारसी भाषा का अफ्सरा यानी शब्द है २५ खड्ग २६ सवारों का २७ समूह २८ कान में स्वामियों का मारे हुए सुनकर २९ घर का ३० मार्ग लिया ॥ ४५ ॥

सततीन३०० रिपु निस इक्क१ जाम रहंत हइ६१न संहरे ॥
प्रतिकूल विग्रहमूल त्यौं सतदोइ२०० घायनसौं परे ॥
इतके इते२००हि मरे प्रवीर इते२००हि घायल उब्बरे ॥
खिल्ल२ खेत दुर्जय भूपके सुत१ बंधु२ बीर३ रहे खरे ॥ ४६ ॥
बहु दीपिका३ मह सोधि रंग४ उठाइ घायल बाहुरे ॥
जिन्ह भूप लौ गढमैं बहोरि कपाट तोरनके जुरे ॥
पुनि प्रात खिन्न उतकेहु घायल इक्कठाम पठाइकैं ॥
उपचार सासनतैं करयो सबकै हकीमन आइकैं ॥ ४७ ॥
बलि तत्थ साह सिपाहहे तिन्ह द्वार प्रातहि बुल्लये ॥
भाखी सुनौं सब मोघं सय्यद क्यौं मरे भ्रम भुल्लये ॥
आन्यौंन ज्यौंफरमान१ त्यौं हमसौं न आसय उच्चरयो२
किम मौंहिमौंहि बिरोध नाहक मारि कूरमकौं करयो ॥४८॥
भनते निजासय१२ मोहि तो तिन्ह संग ताकँहँ१३ भेजतो ॥
रनमैं मरे सठ रक्खि क्यौं तनमैंहि आवनको मतो ॥
पठये सुनें हम सुद्धि लैन१५ सुतो लही सब पुच्छये ॥
अधिकार लै खिजि मैंहु प्रातहि दिढ्ढिकैद उभैर दये ॥४९॥
निह्चैं बिनाँ न बिसेस है दमनैं जथातथ जानिकैं ॥
आकूत स्वीय जनावते स तु मोहि नैंकहु आनिकैं ॥
उन्हसंग तो कछवाह१ माधव२ द्वैंहि मैं करतो अहो ॥
कछु होइ जो तुमसौं कही तिम मोहि तो समहू कहो॥ ५० ॥
सबकौंहि मालिक सौंहहे१८ नहि कौंनि१९ रक्खहु न्यायमैं ॥
अपराध अप्पन छंडे सु सूचहु काजसिद्धि उपायमैं ॥

---

१ एक प्रहर रात बाकी रहते २ बाकी ॥ ४६ ॥ ३ चिरागों के प्रकाश से ४ युद्ध भूमि को ५ बाहर के द्वार के ६ प्रभात समय ७ इलाज ८ आज्ञा से ॥ ४७ ॥ ९ फिर १० निरर्थक ११ कछवाहे द्वारकादास को ॥ ४८ ॥ १२ अपना आशय १३ उस द्वारकादास को १४ विचार १५ खबर ॥ ४९ ॥ १६ दण्ड १७ चेष्टा (इसारा) अथवा अभिप्राय ॥ ५० ॥ १८ सौगन १९ भय अथवा अदब

सुनि यौं अचानक पैठि पत्तन कुम्मको उन संहर्यो ॥
इतकोहु सत्थ सहायदै तिहिं यौं मर्यौं१ कछु उब्बर्यो॥५१॥
पहिचानि सय्यद२ खेत खोजत सोकमैं सबही परे ॥
मन होत संसय[2] मोहि पै[3] न जनाइ यौं सठ क्यौंमरे ॥
अति अंधकार१ हु रत्ति[4] मैं बलि जुद्द२ यौं[5] न लखेउभैर२ ॥
समुझे न अप्पन साह सासन लाइ कुम्म हन्यौं सुभै[6]॥५२॥
रुचि मोरि याहि समैं सबै जन साहसौं बिमनारहैं[7] ॥
कहिहैं सु आग्रिम अंसु[8] पै इतको उदंत[9] इहाँ कहैं ॥
सुनि साहके सबही सिपाहन भूप आगस[10] नाँ भन्यौं ॥
तिम जित्ति जुग२ रन१ सत्रु पक्करन२ आदि तस जसही तन्यौं[11]॥५३॥
कहि अप्पसौं न दई१ तथा हमसौं कही न२ यहै कही ॥
लगि गूढ साधन दंभ मूढन जोकरी गति सोलही ॥
प्रतिकूल केक बके[12] प्रमा तिनको बिसासहु[13] त्यौं तज्यो ॥
सब सेस मुक्कलि स्वस्वथान[14] बिधान प्रेतनको[15] सज्यो ॥ ५४ ॥
कछवाह१ आदि जराइ२ सय्यद१ आदि मिच्छ गडाइकैं२ ॥
परिपंथि[16] घायल जे हुते घर ते दये पहुँचाइकैं ॥
सामंत१९७।१ नत्तियँ[17] केसव१८९।२।१ रु बलभद्द२ मातुल[18] बंस जो
पहु[19] रीझि दोउ रनको दये गज१ गाव२ ख्यात प्रसंस जो॥५५॥
दल[20]१ साहपुत्र निकासिबे लिखि पुब्ब[21] बुंदियतैं दयो ॥
स्व तनूज[22] माधव१९३।२ पास हो लखि देसकाल सु पै लयो॥
तिहिं भजि जावत साहको सुत दैगयो लिखि सो२ तथा ॥

---

१ पुर में ॥५१॥ २ सन्देह ३ परन्तु ४ रात्रि में ५ इसकारण ६ सन्देह में अथवा वह भय है ॥ ५२ ॥ ७ उदास ८ अगले मयूख में ९ वृत्तान्त १० अपराध ११ फैलाया ॥ ५३ ॥ १२ जिनको इस बात का यथार्थ ज्ञान था वे प्रतिकूल बोले उनका १३ विश्वास १४ अपने अपने घर १५ मृतक कार्य ॥ ५४ ॥ १६ शत्रुओं के १७ पोता १८ मामा का १९ राजा ने ॥ ५५ ॥ २० पत्र २१ पहिले २२ वह पत्र अपने पुत्र माधवसिंह के पास था सो

*अतिगूढ रक्खिय पास अप्पन जो न ख्याति परैं जथा ॥५६॥
दिल्लीहु यौं अरजी लिखी हमकौं स्वसासन नाँ दयो ॥
निशि[2] रत्ति कुम्भहिं मारि सय्यद द्वंद्व[3] नष्ट इहाँ भयो ॥
सुनि साह१ कुप्पिय[4] ताँहुसौं बढि सो न नूरजिहाँ२ सही ॥
दुव२ अप्पनैं पठये[5] दलो गिनि टेक[6] एक यहै गही ॥ ५७ ॥
अब खुरुम३।०।२ कढ्ढनहार[7] मारक मारि रैन१९२।१ न उव्वरैं ॥
कलि[9] चंड भेजहु दंड[10] हजरत जो निदेस यहैकरैं ॥
बुंदी उतारि१ रु मारि हड्डु६१न२ रैन१९२।१ लावहिं बंधिकैं३।
सुन होइ तो तिहिं[11] मारि आवहिं४ आन अप्पन संधिकैं५।५८।
बलि व्है प्रसन्न हजूरसौं सुनि सोहि[12] मो मिलिबो बनैं ॥
बाहिकाइ जिमजिम देत बेगम भाव तिमतिम सो भनैं ॥
सब पै मुरे मन यासमैं सचिवादि[13] हे निजसाहसौं ॥
जिनकौं न बेगम स्वीय[14] जानत वेहु ते न उछाहसौं ॥ ५९ ॥
इतसौं महावतखान१ आइ प्रबंधसौं तँहँ उत्तरयो ॥
यह साह फंद गिरयो न प्रत्युत[15] ताँहि[16] गेरनकौं अरयो ॥
सूबा अमानतखाँ१ रहैं अजमेरकेर सम्हारिकै ॥
तजि औरको बिसवास त्यौं धियँ[17] ताहि अप्पन धारिकैं ॥६०॥
कहि बेग बेगम साहसौं फरमान तापर मुक्कल्यो ॥
सहसा निसा[18] छलि स्वीय सय्यद द्वंद्व२ हड्डु६१न ज्यौं दल्यो ॥
तिम तू बली सकुटुंब रैन१९२।१हि मारिकै१ गहिकै२ तथा ॥
पुर१ देस२ छिन्नि असेस[19] रक्खहु सेस[20] सासनकी[21] प्रथा ॥

*प्रसिद्ध नहीं होवे इसप्रकार रक्खा ॥ ५६ ॥ १ आपने आज्ञा नहीं दी २ रात्रि के समय में ३ दोनों नाश हुए ४ उन सय्यदों पर ही क्रोध किया ५ मारे ६ नूरजहां ने हठ किया ॥ ५७ ॥ ७ मारनेवालों को मारकर ८ रत्नसिंह ९ युद्ध में १० सेना ११ उस रत्नसिंह को ॥ ५८ ॥ १२ आपका मुझ से मिलना तभी होवेगा १३ वजीर आदि के मन बादशाह से मुड़े हुए थे १४ अपना नहीं जानता था ॥ ५९ ॥ १५ उलटा १६ बादशाह की १७ बुद्धि में ॥६०॥ १८ रात्रि में १९ सब २० बाकी २१ आज्ञा की प्रसिद्धि ॥ ६१ ॥

द्रुत जित्ति हड्डवती स्वबाहुन आहु जाहु न देरसौं ॥
सुनि यौं अमानतखान सज्जि रु उप्परयो अजमेरसौं ॥
रजपूत पास बिसेस रक्खहिं जो महावतखान ज्यौं ॥
पहिलैं चढयो वह लैन बुंदिय बैन हैन प्रमान ज्यौं ॥ ६२ ॥
पुरपर्णावार³ समीप आइ सु दै मिलान निसा परचो ॥
करि प्रात अग्र अनीन प्रस्थित मध्य गोन स्वयं करयो ॥
हठमैं बढ्यो सु चढयो करी तबही अमानत हंकयो ॥
भटबर्ग को दुहुँ² ओर पंतिन बंधिकैं मुजरा भयो ॥ ६३ ॥
इहिं पास अक्खयराज१८ि९।२नत्तिय हो जु भूपति१९२।१सो इतैं॥
करि सिक्ख अग्ग बढयो कह्यो तब मिच्छ जावत तू कितैं ॥
सुनि यौं दयालु१९०।१तनै कह्यो अब स्वामि मारन सिक्खहैं॥
बुंदीसु हड्ड६१नकी प्रसू तस लज्ज जावत बिक्खिहैं ॥ ६४ ॥
तुम जो चढो सजि ओरठाँ हम है हरोल रूरैं तहाँ ॥
रजपूत यौं सब नाँरहैं जननीहि स्वीय मिलैं जहाँ ॥
सीसोद१कूरम २ रट्ठऊर३ प्रामार ४ जद्दव ५ संभरी६ ॥
प्रतिहार७चालुक८गौड९मुख सबकैंहि रीति यहै परी ॥ ६५ ॥
सब बंस संगहि रावरेंजुहि सत्यहै सु करो सही ॥
क्रमतैं अमानत पुच्छपे सबनैंहि सत्य यहै कही ॥
पच्छी वहीर¹¹ मुराइ तब अजमेर गो ततकालपै ॥
प्रति साह सोहि लिखी लगैं नन बुंदि सम्मुह हालपै ॥ ६६ ॥
इत ए महावत¹³ कैदतैं कढि साह१बेगम२उब्बरे ॥
पर तोहु तास प्रबंधमाँहि स्वतंत्रता तजिकैं परे ॥
सुनि यौं अमानत पत्रकछु कहि नाँ सक्यो सु सबै सही ॥

---

१ अपनी भुजा से २ चला ॥ ६१ ॥ ३पानड़वा नामक पुर ४ मुकाम ५ ग ६हाथी पर ॥ ६३ ॥ ७ पोता ८ दयालदास के पुत्र ने ९ माता१० देखेंगे ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ११ आगे जानेवाली भार बरदारी को पीछे फेर कर १२ ॥६६॥ १३ महावतखां की

अकुलाइ साह बिहस्त भो असि गंधनोल[2] जथा अहीर[3] ॥ ६७ ॥
इत पैत्त[4] बुंदिय बीर भूपति१९१।१ सत्रुसल्ल१९४।१सु आदर्यो ॥
पर राह रोधक[5] वाह दै कछु लाह अहँतिसैं[6] कर्यो ॥
प्रपितामही मत ग्राम पंचक५जाहि दैनलग्यो जहा ॥
करि नाँहि ते न लये कह्यो मम बंदगीहु इती कहा ॥ ६८ ॥
नवताड१ मालहरा२ रु तारज३ अल्प एहि दये नहैं ॥
रु रहैं जितैंतित तोहु संकट जानि हाजरि ह्याँ रहैं ॥
वदि एह भूपति१९१।१ तुष्ट[10] ह्वै नवताड जाइ रह्यो बली ॥
कछु अब्द ह्वाँ करिवास कीरति खास दिस दिस सुक्कली ।६९।
नवताड बाग१ रु बापिका२ जिहिँ द्वैरहि[11] नूतन[12] निर्मये ॥
भाँवी[13] दुकालहु रंक जास्सैन[14] प्रानैंवाल[15] बचे भये ॥
पहु रत्न१९२।१को चउ४ अब्दपैं[16] अवसानैं[17] हायन[18] आइहै ॥
करि अष्ठ सोलह१६८८ साकैं[19] सुहि दुरभिक्ख घोर कहाइहै ॥७०॥
पंद्रह१५ मनासन[19] मान बनिकन नीवि[20] धान्य गह्यों पर्यो ॥
सुहि स्वीय ग्राम बिचारि भूपति१९१।१ दानवीर सँमुद्धर्यो[21] ॥
द्विज१ आदि रंकन बुल्लिकैं वह धान्य बंटि सबैंदयो ॥
लिखवाइ दम्मन[22] ग्रामपंचक५ धान्यस्वामिनहू[23] लयो ॥ ७१ ॥
नवताड१ मुख[24] इत पंच निबँसथ[25] अग्ग सुर्जन१९०।१ अप्पये ॥

उस महाबतखां के प्रबन्ध में १ व्याकुल. जिसप्रकार २छुछुंदर को ३ सर्प पकड़ कर होवै तिसप्रकार "इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि सर्प छुछुंदरी (गन्धमुखी) को पकड़कर छोडने से अन्धा होजाता है और खाने से मरजाता है" ॥६७॥ ४ पहुंचकर ५ शत्रुओं के मार्ग को रोकने में ६ प्रशंसा करके ७ दान ८ पड़दादी की सलाह से ॥ ६८ ॥ ९ ग्राम का नाम है १० प्रसन्न होकर ॥६९॥ ११ बावड़ी १२ नवीन बनाए १३ आनेवाले दुर्भिक्ष में १४ जिससे १५ जीकर १६ अन्त का १७ वर्ष १८ सम्वत् ॥ ७० ॥ १९ तोल विशेष "बारह मन की एक मांणी और सौ मांणी का एक मणासा होता है" २० बिना ब्याज का बनिये का मूल धन २१ निकाला २२ रूपयों में २३ धान्य के स्वामियों ने ॥ ७१ ॥ २४ आदि २५ ग्राम

थिति*द्रम्म पूरनहोनलौं तँहँ धान्य†वानिज थप्पये ॥
बरज्योहु रत्न१९२।१ प्रसू कह्यो तुम कर्या१ विक्रम२नौं बनौं॥
भाखोहि भूपति१९।१।१ दानवीरन नाम अप्पहु यौं भनौं ॥७२॥
भावी³ उदंत यहै तथा अब वर्त्तमान सुनौं भयो ॥
गिरिकैं महावतखान फंद सु साह१ ज्यौं पकर्यो गयो ॥
छोर्योहु बेगम२ जुत्त ज्यौं निजजोर निर्भय ठहै छमौ ॥
सबवत्त सो सुनिहौ वे अग्रिम अंसु ओसर संक्रमौ ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

जबहि महावतखान जिम, आयो दिल्लिय एह ॥
बंधिसाहि जिस अप्प बचि, अर्जिय सुजस अछेह ॥ ७४ ॥
कारनसह अग्रिम किरन, रीति सु पै प्रभुराम२०।१४ ॥
स्वीय सुकवि सूचित सुनहु, ध्वस्तं जवन पति धाम॥७५॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे बुन्दीप्राकारखातिकादिनिर्मितिकथन १, दत्तबुरहानपुरगननपूर्वसेनानीस्वसूनुपत्ररत्नासिंहवन्दिखुरमप्रद्रावणा २, ज्ञातवन्दिस्वसुतप्रपलायनप्रकुपितयवनेन्द्रजहांगीरप्रस्थापितलब्धयदजकुटबुन्दीसेनापतिद्वारकादासवधोत्तरतन्मरणा ३, एतदपराध-

* रुपये † व्यापार १ रत्नसिंह की माता ने २ आप भी उनका नाम लेती हो ॥ ७२ ॥ ३ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है ४ समर्थ ५ अंश ६ अगले मयूख में ७ समय पर चली हुई वार्ता को ॥ ७३ ॥ ८ यश सम्पादन किया ॥ ७४ ॥ ९ अगले मयूख में १० विध्वंस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में बुन्दी के शहर पनाह और खाई आदि के बनने का कथन १, राजा का बुरहानपुर जाने से प्रथम सेनापति और अपने पुत्र के नाम पत्र लिखकर खुरम को कैद से भगाना २ अपने पुत्र के कैद से भागजाने की खबर से प्रकुपित बादशाह जहांगीर के भेजेहुए दो यादवों का बुन्दी के सेनापति द्वारकादास को मारकर मारा जाना ३ इस अपराध से निर्दोष होने की रत्नसिंह की अरजी पढ़ने से कोप को छोड़नेवाले बादशाह को फिर प्रकुपित कर

निर्दोषीभावविषयरत्नसिंहप्रार्थनापत्रपठनापनीतकोपयवनेन्द्रपुनरुद्भूतप्रकोपनिमित्तनूरजहांकृतससैन्याजमेराधिकृतबुन्दीप्रस्थापन ४, स्वजननीराजधानीनिर्लज्जताऽनिरीक्षकहड्डोदयसिंहात्मजप्रबुद्धाधिकृताश्मानतखानाजमेरप्रतिगमन ५, महावतखानकृतयवनेन्द्रजहांगीरनूरजहांजकुटबन्दीकरण ६, एतद्बन्दीकरणसकारणवर्णनप्रतिज्ञानमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदित एकादशोत्तरद्विशततमः ॥ २११ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ बैतालीयम् ॥

जब मृत्यु भयो अर्पाजको, तस तनया तब स्वामि तोरसौं ॥
लंगर हठ तोरि लाजको, बेगम हाकिम सर्वपैं बनी ॥ १ ॥
अपने बस सर्वदा वहै, गिनि जवनेस जिहानगीर३८।१कों ॥
राच्यो निज तंत्र जो रहै, अप्पैं ताकैंहँ काम ओरको ॥ २ ॥
सुभट१सचिव२केहि संहरे१, सांकिनि जिहिं भरि कान साहके ॥
कति दंडे२कैद कैं करे३, कछ्दिये सरबस्व लै किते४ ॥ ३ ॥
निज सासन सद्धि जे नँये, उनकौं इम अधिकार अप्पये ॥
द्रोही जिम संकौंर हये, सेरहु देस असेस संकये ॥ ४ ॥

॥ अधिरुचिरा ॥

नायो खुरम३९।२तबहि रिसकरि निजपतिहिं मनाइ यहहि हठ प्रीत
हुरम हुव२हि सय्यद भेजतहुव पुत्रहिं हनन बुलाइ प्रतीत ॥

के नूरहजां का अजमेर के हाकिम को सेना सहित बुन्दी पर भेजना ४ अपनी माता रूपी राजधानी की निर्लज्जता नहीं देखनेवाले हाडा दयालदास के पुत्र के समझाने से सूबादार अमानतखांन का पीछा अजमेर जाना ५ महावतखांन का बादशाह जहांगीर और नूरजहां को कैद करना ६ इस कैद करने के कारण सहित वर्णन करने की प्रतिज्ञा का अठाईसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ ग्यारह २११ मयूख हुए ॥

१ पुत्री ॥ १ ॥ २ अपने वश में रचाहुआ ॥ २ ॥ ३ प्राण लेनवाला ॥ ३ ॥ ४ नम्र हुए ५ दिये ६ कठिनाई में ॥ ४ ॥ ७ नहीं आया

सुनि अपनैं*पठये हत सय्यद रैन१९२।१सिरहु पह अव अति रुष्ट।
सासनमें न रहत सुहि सासत पालत निजन विरंचि बहु पुष्ट॥५॥
याहीनैं निज भ्रात जु आसफ करि दूर सु किय ओर वजीर॥
ओरहु किय पुत्रहु काति शक्खहि सचिवपन न किय आसफ सीर
आसफ विहित ततो जँहँ अक्खिय सचिव अपरं कृत गिनहु
सुसर्व॥
पै इम नूरजिहांन प्रसभपैर प्रकट किपउ निज सासन पैर्व ॥६॥
जिहिं हेतुहिं खुरहानपुरहु सब साह भटन हुव सय्यद संग॥
इच्छैहिं नन हुरमहिं जितति अब भनहिं करहु हरि डाकिनि
भंग॥
याहीनैं सु महावत गढ वह लौं न सक्यो तापर हठ लागि॥
ताकीं तरफ पिसुनपनैं तनि तनि आनिय साह हृदय रिस आगि।७।
हुरम पठाइ अपर तँहँ हाकिम हँकारयो सु महावत हाइ॥
हुकम विवर्सै दिल्ली हुव हाजरि एकहु साधुँ नबाहि इतैं आइ॥
राज्य असेसँ लख्यो विपरीतहि जैंथ न आसिफखान वजीर॥
साह हुकुम मानननलग साधक बिर्सैन सुन्यो बुंदी नृपवीर॥८॥
पठयो तैंदपि महावत खिंनपर देखन साह हृदय निजदास ॥
ताड़ितकरि जवनेस कुपित तिहिं बंधि तवाहि कारा दिय वास॥
सो सुनि असह महावत संकित हठि बुल्ल्योहु गयो न हजूर॥
प्रैत्युत वह जवनेसहिं पकरन देखन लागिय जतन छिग१ दूर।९।
सय्यद मरन प्रथम इहिं संकैमि करि नैंप लखि स्वामी प्रैतिकूल॥

*अपने भेजेहुए सय्यदों को मरेहुए सुनकर। कोधित।आज्ञा में। अपने लोकों का रखन से॥५॥ ३ सचिव ४ नहीं ५ अन्यवेदिठ पर ७ अपनी आज्ञा करने की रीतिसे ॥६॥ ८ ऐसी चाहना से ९ नहीं चाहते १० उस डाकिनी का नाश करो ११ चुगली करके ॥ ७ ॥ १२ महावतखां को नहीं से निकाल दिया १३ हुकम के आधीन १४ मिष १५ सीघ्र १६ सम्पूर्ण १७ जहां १८ उदास॥ ८ ॥ १९ तो भी २० सलाम प २१ कैदखाने में रक्खा २२ उलटा ॥ ९ ॥ २३ घबराकर २४ नीति २५ विरुद्ध

जवनेसहि१ पकरयो कहुँ जावत महिला२ वहहु सकल दुख मूल॥
कोऊ किमहु सके न कछू कहि ऐसो बिरचि प्रबंध उदार ॥
काढि पुरतैं जावत कहुँ छोड़न कोपन दुवरहि गहे अधंकार।१०।
बाँहुज पंचहजार५००० हुकमवस बिकिखि तदपि कुल हड्ड६१ बिसास ॥
उभयरहि स्याम१९४८ १९४१ बुलाइ रु उभयरहि पति१ पत्नी२ रक्खिय तिन्हपास ॥
दै अति त्रास तरजि इन दोउ२न तिन्हँ दोउ७न भूखन लिय तोरि ॥
हड्ड६१न सिबिर धरे साह१हुर्रम२जिम जन रंक अनादर जोरि ।११।
अप्प वचन करि जतिन महावत ताजिदिय साह१बहुरि पछिताइ ॥
बिन्नतिकरि साहहु हाहा वदि छमसैन हुरम२हु लिय सु छुराइ ॥
बलि कछु समय महावतके बस न लागत दाव रहिय जवनेस ॥
दिय तब खान अमानत वह दल. प्रतिभग करि अजमेर प्रवेस ।१२।
इम किय लेख तखत तुमरो अब हड्ड६१न लिय हजरत प्रभुहोइ ॥
बुंदी१लौन चहत तुम ए बलि दिल्ली२लौन कहत मिलि दोइ ॥
मित्र विदितैं जग रैन१महावत२जुरि जुग२ ठैहैं सहुरि अजेय ॥
सब बाँहुज बक्खो मग मोसैंन स्व कटक इत पठवहु चहि श्रेय ।१३।
दिय जब सुररि अमानत यह दल तब हुव साह महावत तंत्र ॥
जातैं कछु न सक्यो करि जतनहु मन निजगोइ हुरमकृत मंत्र ॥
करत परंतु जिले स्वामि१कथित केसव२कैन जितक सहाय ॥
दावलगत जवनेस बदलि हुत किय अतिकोप बचन१मन२काय३
भरन चकित भजि तबहि महावत बँसु अधिकार समृद्धि बिहाइ ॥

१ स्त्री (नूरजहां) २ खेलने को ३ पापी ॥१०॥ ४ क्षत्रिय ५ देखकर ६ इन दोनों शाहजादों ने ७ इन जहांगीर और नूरजहां के ८ डेरों में ॥११॥ ९. आपके वचन का १० उस समय से ११ पत्र ॥१२॥ १२ स्वामि होकर १३ प्रसिद्ध १४ रत्नसिंह १५ क्षत्रिय १६ मुझ से १७ अपनी सेना ॥१३॥ १८ पत्र १९ महावतखां के आधीन में २० छिपाई २१ हुरम की सलाह का २२ कहेहुए ॥ १४ ॥ २३ धन २४ ओहदा

स्वजनन सहित सु पै भय संकित इतउत जियन फिर्यो अकुलाइ
आसफखान[1] हुरमको अग्रज जत्थ[2] हुतो वह पुव्व वजीर ॥
तस अवलंब महावत२टिकि तँहँ धारनप्रान धर्यो कछु धीर ॥१५॥
दिपि इत साह स्वतंत्र स्वदंपति[3]२इज्जत लुट्टन वैर उघारि ॥
स्याम१९४।८ जु गोपीनाथ१९३।१ कुमर सुत मिस कछु लिप सु दगाबल मारि ॥
स्याम१९४।१ सु सुनि केसव१९३।६ सुत भजि सठ आयो दुरि लक्खेरि[4] अगार ॥
नृप परिखन[5] पठये जवनेसहु चवि[6] बुरहानपुरहि इम चार[7] ॥१६॥
हम दंपति[8]२भूखंन लुंटकहुवे[9] केसव२९३सुतै पह स्याम१९४।१ कुपुत्र ॥
यातैं रत्न१९२।१ हनउ उत आतहि अघ निज धोवहु अत्र१ अमुत्र[10]
तास जनक[11] केसव१९३।६ पुच्छ्यो तब निज बलनायक[12] रत्न१९२।१ नरेस ॥
अक्खिय स्याम१९४।१ करिय वह अनुचित आयउ हुकुम लखहु अब एस ॥ १७ ॥
केसव१९३।६ कहिय सुत सु इक१ दलि केलि[13] अप्पन सब प्रभु होहिं अमंतु[14] ॥
मत बिनु लंघि अटक पुव्वहि मृत[15] तिहिं को अधम गिनैं कुलतंतु ॥
जित तित दुग्ह तजैं न जियत जिहिं साह अतुल आगस[16] अनुसार
क्यों न हनहिं अप्पन तिहिं सु कहहु भूपति टरत स्वसिर[17] सबभार
नृप सुनि तंदपि लिखी सुत निकसि रु जाहु वजीर१महावत२जत्थ ॥

१ नूरजहां का बडा भाई २ जहां ॥ १५ ॥ ३ जोड़ा सहित ४ लाखेरी के स्थान में ५ परीचा करने को ६ कहकर ७ हलकारे को ॥ १६ ॥ ८ हम स्त्री पुरुषों को ९ लूटनेवाला इस लोक और १० परलोक के पाप ११ पिता १२ सेनापति ॥१७॥ १३ युद्ध में मारकर १४ अपराध रहित १५ अटक नदी लांघकर पहिले ही मरे हुए के समान है १६ अपराध के अनुसार १७ अपने मस्तक का॥१८॥ १८ तो भी

बलि द्विप*छदन।सता१९४।२ प्रति बुंदिय स्याम१९४।१हिं
हनहु द्रुतहि साजि सत्थ ॥
निज बस बनत कहहु दुरि निकसन जानि न हनहु अचानक जाइ॥
जैत१९३।१ करन१९३।२ बलवंत १९३।१ अनुज १९४।२ जुत
जबहि सता१९४।१ चढिगो सु जनाइ ॥१९॥
तदपि सु स्याम१९४।१ निडर न भज्यो तँहँ खग्गन खंड भयो
भिरि खेत ॥
इम नृपरत्न१९२।१ अमंतु[1] समुझि इत साह१मुदित[2] हुव हुरुम२समेत।
पै जवनेस अमित लोलुपपन कछु गद[3] प्रकटि मरयो तिंहिंकाल॥
संवत वेद उरग अष्टि१६८४समय समुझे सबहि टरयो हिय साल२०
बीजापुर पंचन तब विज्ञति दै रु खुरुम३९।२ बुल्ल्यो निजदेस ॥
भूपहु स्व लिपिछदन[4] तँहँ भेजिय आवंहु सैजव[5] समय हुव एस ॥
दरकुंचन खुरुम३९।२हु सुनि दिल्लिय आइ तखत बैठो तव एह ॥
साहजिहांन३९।२स्वनामलहि रुसबनृप१रुनवाब२बुल्लाइ सनेह ।२१।
उपदा[6]१ गहि करवाइ निछावरि२ विहित विसासि[7] चढे सब वीर॥
पटुँ करि खानमहावत१ बलपति[8] आसफखान१ कियो सु वजीर[9] ॥
बीजापुर सन पुनि सुत१बेगम२स्वीय कुटुंब सु बुल्लि समस्त ॥
अप्पन आन फिराइ तप्पो इम धीसख मंल सठन करि ध्वस्त[10] ।२२।
अस दारा४०।१रु सुजा४०।२ओरंग४०।३ मुरादबखस४०।१ सह
चउ४हि कुमार ॥
तीन३किसोर[11] चतुर्थ४पृथुक[12] तिम सबहि सुदित वैभव अनुसार ॥
समुझन सरनि[13] पितामह[14]की सुनि सज्जित सत्त७हि प्रकृति[15] सम्हारि
अकबरपुर[16] सु बहुरि चढि आयउ बटि खिन तत्थहु रहन विचारि२३

---

*पत्र । शत्रुशाल को लिखा ॥ १६ ॥ १ निरपराधी २ प्रसन्न हुआ ३ रोग ॥ २० ॥ ४ पत्र ५ शीघ्र ॥ २१ ॥ ६ नजराना ७ चतुर ८ सेनापति ९ मन्त्री १० नाश ॥ २२ ॥ ११ युवा अवस्थावाले १२ बालक १३ मार्ग १४ अपने दादा अकबर का १५ राज्य के प्रधान अंग १६ आगरा ॥ २३ ॥

आसफखानं सचिव प्रति अक्खिय आये नृप आहूत[1] असेस ॥
हड्डवैतीस तथा पति हड्ड[2]६१न राजा आत न क्यों रतनेस१९३।१ ॥
सचिव कहिय सीमा थित संभर बिरचि अभय आह्वान[3] बहोरि ॥
पातहि द्रुत ऐहैं सुहि किय पुनि जब नृप हुव प्रस्थित बल जोरि२४
[4]चवि माधव १९३।२ हरिसिंह १९३।३ रहन चुप द्वै २ हि तनय[5] पठये निजदेस ॥
सचिव बनिक केसव१सोमानी उत प्रतिनिधि[6] किय अवँनि असेस
अनुज तनय केसव१९३।८जुत अप्पन सब संभवं समुचित बलसंग
पहु रैन१९२।१हु पहुँच्यो अकबर इम अवहितें[9] निज अंग१ रु उपअंग२
मिहापुरहि रह्यो दिन दस१०मित हड्ड६१अधिप न गयो सु हजूर ॥
हुव संसैय लिखवाइ छंदन[11] इम कीलि[12] तज्यो सु नहैं किम क्रूर ॥
अक्खिय साह सु सुनि प्रति आसफ अबकिम छिगहु समाज[13] न आत
आसफ गंग वकीलहि अक्खिय बदबख्त[14] न किम नृपहिं बुलात२६
तापहँ कहत बनी तब सत्वर[15] गोबध बहु लक्खियत तिहिं गेल ॥
होते कोल सत्त७तउ नाँ हम बधहिं खर लक्खते गो१ बेल२ ॥
सुनि सुहि साह अरज आसफसन नृप गोचैर[16] दिय बधिकं[17] निवारि ॥
गंगहिं रीझ बखसि तब नृप गय साह समाजें[18] प्रैनति[19] अनुसारि ।२७।
कहिय तहाँ नृप प्रति अनुकूलहि पै[20] करि१ हरि[21]२ मंगिय प्रतिकूल
कूरम[22]संतति१पुच्छि जथाक्रम माधव१९३।२कुमर२ चाहिय सुख मूल
अबहि करी१ हाजरि नृप अक्खिय मनवसैं[23] कितहु हरी[24]२ उनमत्त ॥
सेखाउत१ सिसु माधव२ सुरिरहि रक्खिय सु लक्खन विभव लहित्त

१बुलाये हुए २हाडोती का पति ३निमन्त्रण (बुलावा) ॥ २४ ॥४ कहकर ५पुत्रों को ६ स्थानापन्न (कायम मुकाम) ७ सब जूनि पर ८ आगरे में ९ सावधान ॥ २५ ॥ १०सन्देह ११पत्र १२क़ैद करके छोड़ा था १३सभा में १४ हक्क मनगीव (भाग्यहीन) ॥ २६ ॥ १५ शीघ्र १६ राजा के देखते हुए १७ गौओं को मारनेवालों को रोक दिये १८ सभा में १९ विशेष नम्रता के साथ ॥२७॥ २० परन्तु २१हरिसिंह को विरुद्ध होकर मांगा २२कछवाहा द्वारकादास की सन्तान २३ स्वतंत्र होकर २४ हरिसिंह उन्मत्त होकर न मालूम कहां रहता है ॥ २८ ॥

अप्पहि दिय सासन[1] पहिलैं इम दाय[2] अधिक माधव १९३।२ कँहँ देहु ॥
कोटा मुख्य परगनाँ नवक९हिं इम लहि लखन रह्यो तिन्ह एहु॥
अधिपहु किय उपदा[3]१उत्तारन[4]२सह अरज३सु सुनि अक्खिय साह॥
इभ अबलाहु१ बुलाहु२ सुत उभय२ गत नन गिनियत रीझ १ गुनाह२ ॥ २९ ॥
वारन[5] लाहु बदिय अनुगन[6] बलि बार[7] न लाहु जवहि[8] बुंदीस ॥
पीलुं[9] तब सु आन्यौं इभपालिन[10] श्रुति तालन[11] चालन धुतसीस[12] ॥
साह कहिय उपदा[13] गज १ संटि[14] रु रक्खहु देहु हमहिं यह २ रैन१९३।१ ॥
सुहि नृप करत भनिय पुनि सिसुलम[15] वारन[16] सत्तरि७०लंघन[17] बैन३०
द्विरद[18] जक्यो सु रहत खिल दुव२दिन लंघन अठ्ठ रु सठि६८ लगाइ
सूचिय साह परयो अब सिंधुर[19] जान्यौं वेल भोजहु[20] अब जाइ॥
किय नृप अरज समय रन सम करि इभ यह लखहु खरो प्रभु अज्ज[21] ॥
तोपन फेर बनत सुहिविधि[22] तब सु इभ[23] लग्यो घुम्मन उठि सज्जि ॥ ३१ ॥
ऐसो गज लिय साह परखि इम बलि कहुँ संसँद[24] समय बिसेस ॥
कुमर मुराद४०।४ जनक[25] दाढीकच ऐंचत पकरि हुकम किय एस॥

आपने पहिले १ आज्ञा दी थी २ दायभाग (धन्द) ३ नजराना ४ न्यौछावर ९ हाथी को और उन दोनों पुत्रों को बुलाओ क्योंकि हम गयेहुए समय की प्रसन्नता और अपराधों को नहीं गिनते ॥ २९ ॥ ६ हाथी को लाओ ७ सेवकों को कहा ८ देरी मत करो ९ हाथी १० महावतों ने ११ ताड़ वृक्ष के पत्तों के समान कानों को हिलाता हुआ १२ मस्तक हिलाता (धुनता) हुआ १३ नजराना करना तो रहने दो और उसके १४ एवज में यह हाथी हम को देदो १५ बालक के समान कहा १६ हाथी के १७ निराहार रहने के वचन ॥ ३० ॥ १८ वह हाथी पड़ाहुआ है और लंघन में दो दिन बाकी हैं १९ हाथी को २० भोजन कराओ २१ आज २२ उसी प्रकार २३ वह हाथी घूमने लगगया ॥३१॥ २४ सभा के २५ पिता की डाढी के बाल

स्व[1]जनक मं[2]तु कबहु न करहु सिसु[3]रोधक लखहु डिगहि यह
रैन १९२।१ ॥
सिखयो मोहि१ सिखैहैं तोहि२ सु आनत दंडि कुपुत्तन ऐं[4]न ॥३१
सहजहि साह कहिय यह सु[5]तसन भय मन तदपि लहिय कछु
भूप ॥
मित्र स्व[6]कीय वजीर१ महावत२ रहिय इम सु निर्भय अ[7]नुरूप ॥
महिप बहोरि कहिय लिग मित्रन अति[8]वय अब जननी मम आ[9]हि ॥
द्वारावति करिहै हरि दरसन जात मग न अटकैं कहुँ जाहि ॥३३॥
सुल्कँ[10]हु दै न सु औ[11]नैं बिसम१ सम२पाइ सुरहिं रनछोर प्रसा[12]द ॥
यह सासन सूबा अधिकारिन देहु लिखाइ अहमदाबाद ॥
सुहि करि अरज जवनपति सचिवन महिपहिं लिखित दयो फरमान
अकबर[13]पुर बहुदिन रहि नृप इम सबबिधि तुष्ट[14] कियउ सुलतान ॥
सु पुनि वजीर१ चमूपति२ सम्मत पहु बुंदिय आयउ खि[15]नै पाइ ॥
वासवसै[16]ल्ल १९४।२।१ सं[17]ता१९४।१।२ बलवंत १९१।१।३ रु जैत्र
१९३।१।४ कनक १९३।१।५ प्रनमि[18] मग जाइ ॥
प्राविसि नरेस ससुख निज पत्तन परि सिर प्रनत प्र[19]सू [20]सुख पाय ॥
थप्पन निजकुल[21]भव बैभव थिर अप्पन अखि[22]ल निरखि [23]व्यय
आपर ॥ ३५ ॥
सिक्ख प्र[24]मित रहि तँहँ दस १० आम[25]नैं वय खिल त[26]नु लखि
बिरचि बिभाग ॥

---

१ अपने पिता का २ अपराध ३ रोकनेवाला "जहांगीर की आज्ञा से शाहजा[दे] को कैद किया था इसकारण रत्नसिंह को रोकनेवाला कहा है" ४ घर में ॥३१॥ ५ पुत्र से ६ अपने मित्र ७ अपने स्वरूप के अनुसार ८ अत्यन्त वृद्ध ९ मेरी माता है ॥ ३३ ॥ १० कर (राहदारी) ११ मार्ग में जाने और आने का १२ प्रस[न्]नता १३ आगरा में १४ प्रसन्न ॥३४॥ १५ समय पाकर १६ इन्द्रशाल १७ शाल १८ नमस्कार किया १९ माता २० आदि के चरणों में नमस्कार कि[या] २१ अपने कुलवालों के २२ सब २३ खरच ॥ ३५ ॥ २४ सीख के माफिक दस महीने २६ शरीर की बाकी अवस्था देखकर

नृप दिय तत्थ मही सुत१*नत्ति२न रक्खि अधिक माधव १९३।२ दिस†राग ॥
साह हुकम माधव१९३।२ हित समुझि सु बिभव दियउ तिहिं सबन बिसेस ॥
पुव्वंहि दिय कोटा१र[2]नजयपर पुनि बसु[3]मंय अब अष्ठ८प्रदेस ।३६।
खर्जूरी १ एरंडकखेटक[4] २ केथोनि ३ रु आवा ४ कनवास ५ ॥
मधुकरगढ६दिग्घोद७रहल८लिलि अष्टक८यह ग्रामक सह आस
चपल गेइंद१[5]हेइंद२[6] रु चामर३[7]ससन४बसन[8]५भूखन६धन७ सत्थ ॥
कोटासहित परगनाँ क्रमकरि इम नव९दिय सुत माधव१९३।२अत्थ ॥
जाँबवती १९२।३ माधव १९३।२ जननी जब पाइ स्व[9]सुत ढिग रहन प्रसंग ॥
नानत[10]१आदि बाँ[11]रतट नि[12]वसथ पंच५लिखित लिय पट्ट स्वसंग ॥
प्रसंग१स्वसंग२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रेन१९२।१मरन पीछे यह रानी पुरकोटाहि रही सुतपास ॥
पुत्रहि के सचिवन लँटे[13] पुनि याके ग्राम तबहि उत आसे[14] ॥ ३८ ॥
माधव १९३।२ सुत पीछे सु मैसू[15] मृत गिरि हुव इय सासि १७२७ सक सुतगेह[16] ॥
कोटा बैस[17] तबतैं लहि कारन अबलग नि[18]वसथ पंचक५एह ॥
सत्त७हि पुव्व कहे माधव सुत२६।२२तिनमैं पंचक५ हे कुल तौन ॥
हहुन भेद छवीस तीनहुव माधानी कुल[19] पंच प्रमान ॥ ३९ ॥
रीझ मिली हरि१९३।३ कौं कापरनि१ रु पिप्पलदा२ अब दि-

* पोतों को † प्रीति १ पहिले २ युद्ध विजय करने पर ३ धन हासिल ॥ ३६ ॥ ४ एरण्डखेड़ा ५ हाथी ६ घोड़ा ७ चन्द्राचिन्ह (ओरछल) ८ अर्थ ॥३७॥ ९ अपने पुत्र के साथ १० नानता नामक ग्राम आदि ११ चामल नदी के इस किनारे १२ ग्राम १३ छाटे (हासिल लिया) १४ कोटा के राज्य में हैं ॥ ३८ ॥ १५ माता १६ पुत्र के घर में १७ कोटा के आधीन ये पांचों १८ ग्राम १९ कुल को फैलानेवाले ॥ ३९ ॥

य महिपाल ॥
सारसला२रु मऊ१ हद सतक७१९ साह अधिक नगिनैं जिम साल ॥
निवसथ नव९हि हरि१९३।३हि ए दिय नृप ते बंलि भिन्नहि भिन्नबताइ ॥
इक१ कापरनि परगनाँ जुत वह प्रथम दई सु रही खिन पाइ॥४०॥
अष्ठ८ कहे पहिलैं हरि१९३।२ अंगज चउ४कुलधर तिनके कुल च्यारि४ ॥
हरिके२७।२३ बजि सु भिंदा हुव हड्ड६१न सत्तावीसम२७ क्रम अनुसारि ॥
दिय नृप कछु बालूहेरा१दिक जगनाथ१९३।४हिं मितबट जेंड़ जानि॥
त्रय३सुत केसव१९४।१आदि कहे तस तँहँ मध्यम२ सुरह्यो कुल तानि४१ ॥
जैत्र१९४।२ तथा फतमल्ल१९४।२ बिदित जुग२ जस अभिधा तस कुल जसजुत्त ॥
हड्ड६१न कुल अट्ठावीसम२८हुव प्रथित भिदा जगनाथपउत्त२८।२४,
इम पुत्र१न बसुधा बट अप्पिय बलि दिय नत्ति२न व्याहि बिभाग॥
अग्रिम किंरन सुपै कहिहैं अब रक्खहु खिलहिं सुनन अनुराग४२
बासवसल्ल१९४।२।१ सता१९४।१।२ बलवंत१९१।१।३ रु जैत्र १९३।१।४ करन१९३।१।५ केसव१९३।६ प्रति जत्थ ॥
स्याम१९४।१ हन्यो सु सुमिरि सकुचे सब मिलतहिं नाइ त्रपा करि मत्थ ॥
सब उरलाइ कहिय हसि केसव१९३।६मन्नहु मोहि न स्याम१९४।१ समान ॥

---

१ फिर ॥ ४० ॥ २ पुत्र ३ भेद ४ अल्प चन्द ५ मूर्ख जानकर ६ वंश को बढ़ाने वाला ॥ ४१ ॥ ७ नाम ८ प्रसिद्ध भेद ९ पौत्रों को १० अगले मयूख में ११ प्रीति ॥ ४२ ॥ १२ जहां १३ लज्जा करके मस्तक नमाया

उभय१मरे सु टरयो दुख अप्पन है खल*आतप विरचि पथ हीन ।४३।
नृप तिम बंटि मही सुत१ नत्ति२न रहि दस१०मास†स्वपत्तन रैन१९२।१ ॥
बुरहानपुर१ गमन सासन बलि अप्पिय साह लखहु जित अैन ॥
जननी पयन प्रनमि अप्पिय जब मग सह सुख जावन फरमान ॥
संगकियउभटसेर१६२।२पता१६१।१सुत‡द्वारावतिदेखनधरिध्यान ४४
रक्खि स्वपुर पंच ५ हि ते रच्छक लै सिसु भाव १९५।१ सता १९४।१सुत लार ॥
पहु बुरहानपुरहि तब पहुँचिय पथ पृतना२ परि प्रथित प्रसार ॥
इत नृप माइ गई द्वारावति मिति रस बसु सोलह१६८६सक माँहि
जे जनपद४ जन संग भये जिन्ह निजनिज बसु५खरचन दिय नाँहि ।४५।
द्वारावति पहिलैं प्रभुमंदिर प्रारंभिय सुर्जन १६०।१ छितिपाल ॥
वह पूरन करवाइ यहै अब क्रमि तहँ पँत्त प्रतिष्ठितकाल ॥
लक्ख इक १ रु तेतीस ३३ सहँस १३३००० लग लहि अवसर दम्मन व्यय लाइ ॥
आदि त्रिलोक तदनु सुंदर१यह रक्खिय नाम प्रभुहिं पधराइ ।४६।
इम रनछोर परसि मुरिआवत सो मग मरिग पता १९१।१ सुत सेर १९२।२ ॥
बुढिय चंद्र१९२।३पता१९१।१हु मरे बलि इत दक्खिन्न बनि जम आहेर
सारथल१रु हिंडोलिय२तिन्ह सुत जेठे हुव२हि धनीहुव जत्थ ॥
आई पुर नृप रैन१९२।१प्रैस इत आर्जित१पुराय२र्वितरि१वहु अत्थ२
जे रनथंभ लही प्रतिमा जुग२इक१खिल रहिय सु पै अभिराम ॥

---

* संस्कार हीन ॥ ४३ ॥ † अपने नगर में ‡ द्वारका ॥ ४४ ॥ १ शत्रुशाल के पुत्र भावसिंह को साथ लिया २ सेना ३ प्रसिद्ध ४ देश के मनुष्य ५ धन ॥ ४५ ॥ ६ चलकर ७ गई ८ प्रतिष्ठा होने के समय ९ जिसपीछे ॥४६॥ १० यमराज रूपी शिकारी बना ११ माता १२ सम्पादन १३ दान १४ यहां ॥ ४७ ॥ १५ मूर्तियां १६ बाकी

रचि मंदिर२वापी पधराई श्री कल्यान स राज३रनास ॥
प्रभु मूरति कोउक पधराई रचि मंदिर३ गोपालपुराहु ॥
खटपुर निकट अबहु वह पिक्खहु जब पहु सिंह हनन उतजाहु ॥
वापी इक१पुव्वहि बनवाई रैन१९२।१मैंसू बुंदियपुर रम्य ॥
विरचिय तिमहि मऊ ग्रामन बिच गोपाला दूजी२ जलगम्य ॥
केसव१९२।२पुरचोमाँ उपवन१किय नृपमाता इक१रुचिर नवीन ॥
मंदिर त्रय३वापी द्वय२मंजुल करि इक१वेलैं सु जस जग कीन ।४९।
तिय१सुत२साह बुलाये इत तब गो संगहि गोपाल सु गोर ॥
लक्खैरी न दई चिंति सु लिपि४अप्पिय थान अधिक तिहिँ ओर ॥
संभर सुत बुल्ल्यो हरिसिंह१९३।३सु पठयो नहि भयजानि नृपाल ॥
तातैं नव्य६ परगनाँ सत्त७हि करि रिस साह लये ततकाल ।५०।
रायहरि१हु बुल्लि सु रानाउत भीमतनय उँपकृत नन भुल्लि ॥
दंग दये समुचित टोडा१दिकं ताहि बडेनृप आदर तुल्लि ॥
सत्त७हि सचिव हुकम यह सुनतहि बुंदीपुर लिय नृपहु बुलाइ ॥
इक गोर सु रनछोर१कट्यो वह खट६दिन लरि करि अरि बहु खाइ
साहजिहान३९।२खिजत पुनि यह सुनि आसफ१सहित महावत२आनि
कहिय इतरैं हेलनैं नृपसिर किम मन हजरत अत्थुत लिय मानि॥
भेज्यो न हरि१३९।३जवनपति भाखत उन अक्खिय सूठ सु उनमत्त
जनकहुकोँ न कुपुल गिनैं जँहँ बदहु कितीक गिनैं खिल वत्त ।५२।
ज्यान१रु माल२वडप्पन३भू४जुत सो सब गिनत हजूर सहाय ॥
वहुरि विहितैं उपकार विचारहु निरखहु जुलम हुँरमकृत न्याय ॥
इम नृपतैं रिस टारि दईउत तदपि परगनाँ सत्त७उतारि ॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह ॥ ४८ ॥ २ रत्नसिंह की माता ने ३ बाग ॥ ४९ ॥ ४ लिखावट ५ नवीन ॥ ५० ॥ ६ रायसिंह को ७ सीसोदिया भीमसिंह के पुत्र का उपकार नहीं भूलकर ८ उचित ९जोधपुर जयपुर आदि बड़े राजाओं के समान आदर करके ॥ ५१ ॥ १० महावतखां ११ और १२ अपराध १३ बलटा १४ पिता को भी ॥ ५२ ॥ १५ उचित अथवा कियेहुए १६ नूरजहां का कियाहुआ

दिय टोडादि चउ४हि*सीसोदहिं टौंक|प्रमुख‡कतिमत कति टारि
§पुर३उज्झि रु इत रान उदयपुर लिय तिनङ्गिनन करन परलोक ॥
तब जगतेस तनय जेठो तस इन हुव लहि गाहिय निज ओक ॥
इतनृपरैन१९२।१बिम्मनतउ४अवाहितैहायनदुव२रक्खिन३।२राहिदड्ढ६१
तिम्मरैरनि९रु आसेर१अवनि तिम बीर अपर थप्पिय बयबड्ढ॥५४॥
दिल्ली सीम बढावत लय१दिस थाटि अति बल खट्टिय जसं अप्प ॥
दक्षिण कछु पूरब१तिम दक्खिन२दाति पच्छिम३ सह्यावधि दप्प ॥
लै अरिगाम१इत१सु वरदा१लग इत२इक१टारि दौलत आबाद ॥
सह इलपुर२रोजा२रु असाई२संक्रमि किय गोदा२जय सौद ॥५५॥
धुंजर तट धूलिक१नासिकपुर२त्र्यंबक३दुर्ग अवधि तनि त्रास ॥
पूरब१गलि गोदातट तट पुनि मुरि नंदेरि रह्यो दुव२मास ॥
वसुधा इम तापी१गोदा२बिच इक दौलत आबाद१हिं उज्झि ॥
कहुँ दक्खिय १ कहुँ जित्ति मैंनाति किय २ जिततित क्रमित आमित
बल जुज्झि ॥५६॥
सुलिखि करार कढेजवनन सनरैन१९२।१तबहु समुचिंतहितरक्खि
हतमद किय पच्छिम१मरहट्ठ२रु सैसे दुरदिस१सेल२हु जय सक्खि
किय नंदेरि सनहु चढि निकटहि कालीबाइ, बहोरि मुकाम ॥
तत्थ हु रहिय धुंनी गोदातट धरनीधव तानिते पट धाम ॥५७॥
बिक्खि दुकाल परयो तिहिं वच्छर आंतिके अधन जनन दिय अन्न

---

* सीसोदिया रायसिंह को | टोंक आदि ‡ कितनों ही के मत से तो टोंक आदि दिये और कितनों ही के मत से टोंक को छोडकर ॥ ५३ ॥ § शरीर छोडकर "यहां पुर शब्द शरीर वाचक है" १ कर्णसिंह २ राजा ३ अपने घर में ४ उदास ५ सावधान ६ वर्ष ७ दक्षिण में रहा ८ वृद्ध अवस्थावाले ने ॥ ५४ ॥ ९ फिरकर १० यश सम्पादन किया ११ पर्वत का नाम है १२ जय का घर; अथवा जय का शब्द किया ॥ ५५ ॥ १३ गोदावरी नदी के किनारे किनारे १४ तापी नदी और गोदावरी के बीच में १५ दौलताबाद को छोडकर १६ नम्र १७ फिरकर ॥५६॥ १८ उचित १९ बाकी का २० गोदावरी नदी २१ भूपति २२ डेरे तानकर ॥५७॥ २३ देखकर २४ वर्ष में २५ समीप के २६ निर्धन लोकों को

केसव सचिव बलहु बेसु चय करि सब रक्खिय सबरीति प्रसन्न।
तँहँ ज्वर हुव नृपकै एकंतर आयु अवधि बनि बिधि बलवान॥
अगहन९सित१दसमी१०वपु उज्झिय तीजे३वार तृतीयक तान५८

॥ वैतालीयम् ॥

सक सर हुव तर्क भू१६२५समा, ऋतु पाउस३ हुव जन्म रैन१९२१को
पुनि चउ खट अष्टि१६६४ की मसा, ग्रीखम२मैं नृपता तथा गही॥५९
गंज अहि रस भू१६८८ समा गये, अब हेमंत५ सरीर उज्झयो॥
बर्ष त्रि३जुत सट्ठि वै भये, इम गोदातट स्वर्ग जो यहै ॥ ६० ॥
क्रम व्याहनके जथा कही, रानी नव९ नरनाह रैन१९२१ कै ॥
रानी दुव२जीवतीरही, तब तिनमैं दूजी१९२१२दु तीसरी१९२१२ ।६१।
सीला१९२१दिक सेस७ सुंदरी, महिपतिसैं पहिलैं सबै मरी ॥
जँहँ दूजी२ संगही जरी, रानी राजकुमारि१९२१२ तोमरी ॥६२॥
ऊढा बुंदी हुती उभैर, जिनमैं दूजी२ तोमरी१९२१२ जरी ॥
चित्त मरन जास ना चुभै, जो तीजी३किम चालुकी१९२१३जरी।६३।
माधव१९३१२ जगनाथ१९३१४ माइ सो, कोटा जाइ रही तनूजकै॥
जगनाथ१९३१४ हु संग जाइ सो, अंग्रजके ढिगही रह्यो उहाँ ।६४।
सुतकोसुत सत्रुसल्ल१९४१२ सो, सबबुंदी मृतकर्म सद्धिकैं ॥
मानी रन रंगमल्ल सो, भूपतिभो दानी दधीचसो ॥ ६५ ॥

॥ गीतिः ॥

नव९ठान अधर किय नव, सिर तिनके रत्न दोलत२ समज्या ॥
रत्न निवास३ उपरिभव, ताके सिर रत्नमहल४ विरचिय त्यों ॥६६॥
नारीकुंजर४ नामक, अब सोही रत्नमहल४ विदित इहाँ ॥
अरु तससिर अभिरामक, जु रत्नमन्दिर५ दसगुँलक जानों ।६७।

---

१ धन के समूह से सेना को २ शरीर छोड़ा ३ मंगलवार ४ तीसरे प्रहर ॥५८॥ ५ प्रमाण ॥ ५९ ॥ ६ सम्वत् ७ शरीर छोड़ा ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ८ विवाहिता ॥ ६३ ॥ ९ पुत्र के १० बड़े भाई के साथ ॥ ६४ ॥ ११ पोता ॥ ६५ ॥ १२ नीचे १३ सभा ॥ ६६ ॥ १४ सुन्दर १५ खरबूजे के आकार

यंतह्पुरं जुर सवती, ताकेसिर रत्नमंडप ६ रच्यो त्यों ॥
चारु रतन१।२।१ जस चवती, खट६ महलन तिय हे इहां रुपाती ।६८।
सवती१ चवती२ अन्त्यानुप्रासः ॥
राजत विहिंत मनोरम, परिखा१ प्राकार२ हैं गेहि निजपुरके ॥
द्वार१ रतन२ मुख है ऊर्मं, उपवन जुग२ थान रत्न१।२।१ रचित इने ।६९।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्व१ पंचमे५ राशौ बुन्दीश-रत्नसिंहचरित्रे महावतखानानिष्कासनार्थनूरजहांप्रेषिताखिराधिकारिगमनानन्तरदिल्ल्यागतमहावतखाननूरजहांजहांगीरबन्दीकरण, रक्षितात्ममहावतखाननूरजहांजहांगीरकारागारनिःसारण, कारागारस्थालंकारादानहठोपर्यप्रसन्नयवनेन्द्रसेनाप्रस्थापनश्यामसिंहवधानन्तररत्नसिंहोपरिप्रसन्नताप्रकटन, जहांगीरमरणानन्तरबीजापुर-दिल्ल्यागतखुर्रमशाहजहांनाम्नेयप्रभुसमदिल्लीन्द्रीभवन, दत्तमहावतखांसेनानीत्वासफखांमन्त्रित्वाधिकारदिल्लीसमाहूतसकलप्रभुसंगानंतरराव रत्नसिंहसत्कारण, यवनेन्द्रयाचितहरिसिंहमाधवसिंहकुमार

द्रयदत्तसमयातिक्रमणोत्तरलेखितस्वप्रसूद्वारकायात्रानुकूलाज्ञापत्र-रत्नसिंहबुन्दयागमन, विभक्तस्वपुत्रपौत्रभूभागद्वारकाप्रस्थापितस्व-मातृकसमाक्रान्तदक्षिणाशायवनेन्द्रराज्यविस्तारण, स्मृतभीमसिं-हसेवयवनेन्द्रशाहजहांशैषोदिरायसिंहटोडाराज्यप्रदानपुरःसरमहाम-हाराजसमत्वापादन, उदयपुरमहाराणाकर्णसिंहमरणोत्तरराणाजग-त्सिंहपट्टप्रापण, दक्षिणदेशयवनेन्द्रराज्यविस्तारकबुन्दीशरावरत्न-सिंहकालीवापीनामस्थलतनुत्यजन, रत्नसिंहसमयनिर्मितस्थानग-णनमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितो द्वादशोत्तरशततमः ॥ २१२ ॥

बुन्दीशरत्नसिंहसमकालीनाधिकारपूर्वायणे षष्ठो राशिः ॥

इति श्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलि-न्दमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूड बुन्दीपूर्विलासिनीविलासि-चाहुवाण-चूडामणि-भारतीभागधेयहड्डोपटंकिमहाराजाधिराज-रावराजे-

---

देकर अपनी माता का द्वारका की यात्रा के अनुकूल फरमान लिखवाकर र-त्नसिंह का बुन्दी आना ६ रत्नसिंह का अपने पुत्र और पौत्रों को बन्ट देक-र माता को द्वारका भेजने के पीछे दक्षिण में जाकर बादशाह के राज्य का विस्तार करना ७ भीमसिंह की सेवा को स्मरण करके बादशाह शाहजहां का शीषोदिया रायसिंह को टोडा का राज्य देकर बड़े राजाओं के समान ब-नाना ८ उदयपुर के महाराणा कर्णसिंह के शरीर छोड़ने पर राणा जगत्सिं-ह का पाट बैठना ९ दक्षिण और पश्चिम दिशा में पादशाह के राज्य बढ़ाने-वाले बुन्दी के राव रत्नसिंह का कालीबाई नामक स्थानपर शरीर छोड़ना १० रत्नसिंह के समय में बननेवाले स्थानों की गणना का उनतीसवां मयूख स-माप्त हुआ और आदि से दो सौ बारह २१२ मयूख हुआ ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरंद (पुष्परस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुंदीपुरी रूपी स्त्री के विलासि, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवा-ले (पूर्ण विद्वान्) हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महारावराजेंद्र श्रीरा-

न्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशमुख्यभुजङ्गका-
ऽपाऽकूपारकर्णधारवीरमूर्ति-चक्रि-चरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-
त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्ल
विहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे रावरत्नसिंह१९२१चरित्र-
समयसमानाऽधिकरणकोदन्तवर्णनं षष्ठो राशिस्समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ समाप्तमिदं पूर्वायणम् ॥

इतिश्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय
ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारहठ-चारणकुलावतंस- शाहपुराप्र-
तोलीपात्र-सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन,विदुष्याशृङ्गारनाम्न
जनन्याःप्राप्तप्रसवं-पालन-बाल्यशिक्षोपदेशेन,सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारि
भिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽ
धिना कवि-कोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्तकाव्यशि-
क्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसपन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवैष्णव-रामानु
जसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽख्यगुरोराऽऽसादितसंस्कृ-

मार्कंडदेव की आज्ञा से, संस्कृत आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति का-
व्यरूपी समुद्र के कैवर्त (खेवटिये) वीरमूर्ति विष्णुभगवान् के चरणारविंद के
भ्रमर मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चंडीदान के पुत्र मि-
श्रण (मीसण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर महाचंपू के
पूर्वायणमें बुंदीके भूपति रत्नसिंहके समय के समान है अधिकार जिसका ऐसे
वृत्तांत के वर्णनका छठा राशि समाप्त होकर इस ग्रन्थ का पूर्वायण समाप्त हुआ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण -बुद्धिविशारद - सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण
धर्ममूर्ति धीर उदार सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा
के पोलपात सुयोग्य पिता ओनाड़सिंह के पुत्र ने, पंडिता सिणगारबाई नाम
माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा
पाये हुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई
है होनेवाले समय में होनेवाली मन की चिन्ता जिसकी, पंडित कवि अपने
मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, संतोष आदि
गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज सम्प्रदायि श्रीम-
द् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, पूर्वोक्त से

तविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिपराजाधिराजो-पटाङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहिलोत्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि-महाराणाफतैसिंहवर्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवरबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां षष्ठो राशिः, तत्र ग्रन्थस्येदं पूर्वायणं समाप्तिमगमत् ॥

पैदा हुए रघुवंशीय राणाउत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराज जसवंतसिंह वर्मा से पाया है दान बड़प्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि बारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमंथनी नाम टीका में छठा राशि समाप्त हुआ और इस ग्रंथ का पूर्वायण भी समाप्त हुआ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शत्रुशल्य१९४।१ चरित्रप्रारंभ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ औपच्छंदसिकम् ॥

*सूचित सक १६८८ रत्न१९२।१ संभरी सो,
कालीबाइ विहातभो तनूकों ॥
संगहि हो भावकेसरी१९५।१सो, करतभयो सिसु वैं परेतकज्जैं ॥१॥
चित करि गोदातटी चिताकौं, सुभट सनाभि१सगोत्र२आदि संगी॥
तब सब बिधि सद्धि दाहि ताकौं, अट्ठ८समा बयही लही बडाई॥२॥
सूनु सता१९४।१कौं तहाँ प्रसंसी,
लखि भाव१९५।१हिं नृप संग लैगयो हो ॥
बालबयहु अस्थिपाल बंसी, सबन धुरंधरभावमैं सराह्यो॥३॥
सोमानी तत्थ संभरीको, केसवदास अमात्य मंत्रकर्त्ता ॥
नृपको सब प्रेतकर्म नीको, भाऊ१९५।१कर करवाइ भद्र भास्यो४
सक बसु आहि अष्टि१६८८ अब्द सोहू,
भो अतिमित्त दुकाल खानि भैको ॥
तहँ केसव मंत्रि मुख्य तोहू, दल निजमाँहिं सुकालही दिखायो॥५॥

॥ दोहा ॥

बालक हायन अट्ठ८ बय, भाऊ१९५।१ कुमर अभंग ॥
सता१९४।१ तनय सद्ध्यो सुमति, सकलकृत्य बिधिसंग॥६॥

---

* कहे हुए संवत् में चहुवाण रत्नसिंह ने कालीबाव नामक स्थान पर शरीर छोडा १ भावसिंह साथ था जिसने बालक अवस्था में ही २ प्रेत कार्य किया॥१॥ बुद्धि पूर्वक गोदावरी नदी के किनारे पर चिता करके ३ सपिंड भाई ४ वर्ष ॥ २ ॥ ५ शत्रुशाल को पुत्र प्रशंसावाला वहां था ॥ ३ ॥ ६ मंगल ॥ ४ ॥ सौलह सौ अट्ठासी के प्रमाणवाले ७ सम्वत् में ८ अत्यंत दुर्भिक्ष हुआ ९ भय की खानि १० अपनी सेना में ॥ ५ ॥ ११ वर्ष ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सब सिसुहत्थ सधाइ सचिव केसव सोमानिय ॥
भाव१९५।१ कुमर*निजभोन जबहि पठयो जो मानिय ॥
सब बल भटन बिसासि लखन न दयो दुकाल लव[1] ॥
अधिक बंटि वसु[2]२ अन्न२ मुदित रक्खे सब मानव[3] ॥
इहिं नाम अपर२ लहि हेतु यह दलथंभन हुव जगविदित॥
नृपसाँहु अधिक सूबा निखिल जिहिं सम्हारि लिय पुव्वजित
पुनि दिल्लिय लिखि पत्र अरज पठई केसव यह ॥
अधिप रैन१९२।१गृह अधिप सता१९४।१ अब रहिय सु तासह[6]।
हमहिं सिक्ख जो होइ जाइ बुन्दी लिवाइ जिहिं ॥
हजरत आइ हजूर चरन चुंबैं अवसर इहिं ॥
सुनि साह गिनि सु पँटुतम सचिव अवहित समुझि प्रबंध उत
दिय देस सिक्ख बुंदिय दलहिं जब वह आयउ सबनजुत॥८॥
आतहि केसव एह सचिव बुन्दियपुर बलसह ॥
सरल सता१९४।१ अवनीस मिल्यो हिय लाइ अमित मँह ॥
सुमति कहिय तव सचिव हृदय१९२।२ बाबा हक्कारहु[11] ॥
त्रपा अधिक अव तदपि बिहित[13] सध्धन[14] मन्नहु बहु ॥
सुनि सोहि हृदयनारायन१९२।२हु जानि न निस्त्रप जात जन ॥
पठई कहाइ क्यों हठ परहु नक्कम[16] मन सुत नक्कसन[17] ॥९॥
नृपजननी इत निपत सुनत सुत मरन असह सहि ॥

---

* अपने घर (बुंदी) १ लेशमात्र २ धन ३ मनुष्य ४ कारण पाकर उस अमात्य का दूसरा नाम ५ सब ॥ ७ ॥ ६ सो उस सहित अर्थात् उस शत्रुशाल सहित हमको सीख होवे तो ७ अत्यन्त चतुर ८ सावधान ॥ ८ ॥ ९ सेना सहित १० उत्सव से ११ बाबा हृदयनारायन को बुलाओ १२ लज्जा १३ उचित १४ साधन करने के लिये १५ निर्लज्ज १६ नासिका, भीमसिंह शीपोदिया से युद्ध में भागजाने के कारण हृदयनारायन को नकटा की पदवी मिली थी १७ पुत्र को नासिका से अर्थात् पुत्र नासिका युक्त है और मैं नासिका हीन हूं ॥ ९ ॥

अ[1]सन रहित चउ४ अ[2]ब्द रं[3]च पय करि जीवत रहि ॥
मरिहैं [4]भावी समय सु तो हुव नव सोलह१६९२ सक ॥
पै तस खि[5]ल हुव२ पुत्र अवहि पाहुन किय अं[6]तक ॥
सूर्‍यो जु हृदयनारायन१९२।२सु बुन्दी ना[7]यउ लज्जवस ॥
वपु तजत भयो छि[8]प्रहु बहु[9]रि तिमहि मनोहर१९२।४अनुज तस ॥ १० ॥
मऊनगर तब महिप सचिवबानिज केसव सुत१ ॥
केसव१९२।३सुत तिम करन१९३।१दुव२हि हाकिम पठये द्रुं[10]त ॥
वीर अखिल बलि बुद्धि सता१९४।१ सूचिय यह सासन ॥
रैं[11]सा बिभजि प्रभु रैन१९२।१ सबन अप्पिय प्रभुतासन ॥
सबही सम्हारि निज निज सद[12]नै आवहु स्वत्व जमाइ सब ॥
दिल्लियप्रयान बनिहै द्रुतहि करिहो कज्ज विलंबि कब ॥ ११ ॥
बि[13]भैजि रैन१९२।१नृप जबहि दा[14]यभागिन वसुधा दिय ॥
निज नै[15]त्तो तब नव९हि बंट पहिले क्रम ब्याहिय ॥
सता१९४।१व्याह हुव सत्त७इंद्रसल्ला१९४।२दि अनुज इम ॥
महासिंह१९४।९लग सम[16]हैं तरुन ब्याहे संभव तिम ॥
विरचहिं बिवाह भावी बहुरि स्यास१९४।८रहित अड८हि सहज
सबकेहि भूत१ भावी२ सुनहु बदियत ब्याह१अपत्यव्र[18]ज ॥ १२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

भि[19]क्षुक वधिक जोधपुर भो उदय भूप,

---

१ भोजन किये बिना २ वर्ष ३ थोड़े से दूध से ४ आगे आनेवाले समय में ५ बाकी के दोनों पुत्रों को ६ यमराज ने पाहुने किये अर्थात् मरगये ७ नहीं आया ८ शीघ्र ही ९ उसी प्रकार उसका छोटा भाई मनोहरदास मरा ॥ १० ॥ १० शीघ्र ११ भूमि के बंट करके १२ घर में अपना अपना अधिकार जमा कर आओ ॥ ११ ॥ १३ विभाग करके १४ दायभाग पानेवाले भाइयों (रत्नसिंह के पुत्रों) को १५ पोते १६ उत्पन्न सहित १७ पहिले हुए और आगे होवेंगे सो कहते हैं सो सुनो १८ सन्तान का चलना अर्थात् बढ़ना ॥ १२ ॥ १९ भिक्षुक लोगों को मार नेवालों

जाको सुत तीजो३नृप दलपति नाम जास ॥
जाको बंस मालवमैं पावत प्रभुत्व[1] भई,
तनया कनिष्ठा स्यामकुमरि१९४।१सनामा तास ॥
भावसिंह१९५।१जेठो१जनि पीछैं जो सपुत्रा भई,
आनी सता१९४।१आनी कुमरानी यह जेठी१आस ॥
छत्री यह ताहीकी बनाई छबिछाजैं भूप,
जामैं रबि राजैं रूप बारह[3]१२बिभा[4] बिभास ॥ १३ ॥
दुर्गदुहिता[5] जो प्रेमकुमरि१९४।२सनाम दूजी२,
चंद्राउँति व्याही जाइ रामपुर सत्रुसाल१९४।१ ॥
भाऊ१९५।१सौं कनिष्ठ[6] सुत दूजो२भीम१९५।२ताकै भयो ॥
द्वै२ही पति पहिलैं मरी ए जरी द्वै२ही बाल ॥
तेजसुत सिंहकी सुता सो तीजी३ सीसोदनी ॥
व्याह्यो राजकुमरि१९४।३प्रतापगढ लग्नकाल ॥
कर्मवती१९५।१नाम एक१ कन्या भई ताकै पीछैं,
व्याह्यो जसवंत जाहि जोधपुरको नृपाल ॥ १४ ॥
चौथी४नित्यकुमरि१९४।४नरूकी चंद्रभानुसुता,
व्याही जो कँकोर[7] ताकै तीजो३तनै भगवंत१९५।३ ॥
सूरजकुमरि१९४।५सुभकुमरि१९४।५दु२नाम सो पै,
सोलंखिनी पंचमी५बिबाह्यो कुमरानी कंत[8] ॥
नाहरखाँ नैनपुरवा[9]रेकौ स्वकन्या यह,
दुर्गापुर आइकैं सता१९४।२कौं दई बिलसंत ॥
अद्वितीय याहीको पतिव्रत जगत जान्यौं,
याहीपैं सता१९४।१ की कृपा निबही अवधिअंत[10] ॥ १५ ॥
आनँदकुमरि१९४।६नाम छठी६कुमरानी ऐसैं,

१मालवा देश में राज्य करता है २हुई ३बारह सूर्ति हैं ४कान्ति का विशेष प्रकाश ॥ १३ ॥ ५ दुर्गदास की पुत्री ६ छोटा ॥ १४ ॥ ७ ककोड़ ८ प्रिय अथवा पति ९ नैणवा १० मृत्यु पर्यन्त ॥ १५ ॥

तुलसीबहादुरकी कन्या सो करोली जाइ ॥
व्याह्यो सत्रुसाल१९४।१ ताके प्रकटे अपत्य पंच५,
कमनकुमारि१९५।२जेठी१ कन्या तिनमैं गिनाइ ॥
रानजगतेसके कुमार जेठे राजसिंह,
पीछैं यह कन्याहू बिवाही बिधि लग्न पाइ ॥
तीन३ सुत द्वै२ सुता सता१९४।१नैं ए कुमारपन,
पाये तोक पंच५हि जें भूत२ अवभावी भाइ ॥१६॥
वाही जादवी६कै सुत कन्यासो अनुज च्यारि४,
भारत१९५।४ स भूपति१९५।५ रु भूपालक१९५।६नाम तीन३।
चोथो४ ईस्वरीहरि१९५।७ कनी पुनि समर जेठी१,
पंच५ही प्रजा ए छट्ठी६ पतनी प्रसव लीन ॥
रानी जा कंमाउत चालुक्य हरिकर्णसुता,
नाम हरकुमारि१९४।७ बिवाहि दुलही नवीन ॥
आनी सप्तमी७ यह सता१९४।१नैं कुमरानी जाकै,
कन्या तीन३ जांनी भई मध्या२ तिनमैं बचीन ॥ १७ ॥
तीन३नमैं जेठी१ रामकुमारि१९५।३ कनी सो पीछैं,
बंधूगढ बाघेले अनोपकौं दई बिवाहि ॥
कल्यानादिकुमारि१९५।४ मरी सिसु बय द्वितीय२,
तीजी३ गंगा१९५।५ पीछैं रानाँ जयसिंहकौं बिवाहि ॥
जाके पुत्र रानाँ अमरेस भो उदंत जाको,
भूप बुधसिंह१९४।१के चरित्रमैं उदित आहि ॥
सात७ कुमरानी ए कुमार सता१९४।१ आनी आनि,
है वे नव९ रानी सुनिलेहु पै प्रसंगसाहि ॥१८॥
दिल्लीहोइ आतहि बिवाही जगतेसरान,
अप्प अनुजा जो चंद्रकुमारि१९४।८ तदीयनाम ॥

१ सन्तान २ बालक ३ आगे होनेवालों की रीति बताते हैं ॥१६॥ ४ ईश्वरीसिंह ५ कन्या ॥१७॥ ६ वृत्तान्त ७ प्रकाश ८ है ९ अब १० प्रसंग ग्रहण करके ॥१८॥

ईडरअधीस पुंज कमध्वजपुत्री फूल,
कुमरि१९४।९ बिवाही रानी नवमी९सु गुनग्राम ॥
कल्ल्यानादिकुमरि१९४।१० कबंध रामकन्या दसमी१०,
बिवाही भयो गोठराही उपधाम ॥
कन्याएक तामैं लाडकुमरि१९५।८ भई सो मरी,
सिसुहि संता१९४।१के एहि तेरह१३ प्रजा ललाम ॥ १९ ॥
राजकुमरि१९४।११ सों फूलकुमरि१९४।११ दुरनामवारी,
एगारही११ रानी ब्याही मल्लनासी रठउरि ॥
लहोरी ईडरेची ब्याही बारही१२ बहोरि जाको,
लच्छी१९४।१२ नाम रानी नारायनकी सुता सो सूरि ॥
तेरही१३ प्रमारि रानी केसवसुता सो राम,
कुमरि१९४।१३ सनाम ब्याही कामना कविन पूरि ॥
बिट्ठलकेभ्रात सिवरामकीसुता त्यों गोरि,
ब्याही पन्नकुमरि१९४।१४ चउदहीं१४ दे भर्म भूरि ॥ २० ॥
पंदहीं१५ बिवाही स्यामकुमरि१९४।१५ सनाम मेघ,
चुंडाउतपुत्री पुर बेघम सुता१९४।१ पधारि ॥
सहजकुमारि१९४।१६ सदाकुमरि१९४।१६ दुरनाम भली,
नीवरी१के गंगराट२ सोलह१६ बिवाही नारि ॥
मानकीसुता सों एही सोलह१६ सता१९४।१नैं बरी,
भूत१ सप्त७ भावी२ नव९ लीजिये श्रवन धारि ॥
तेरह१३ अपत्य भये तिनमें प्रथम पंच५,
भूत१ अष्ट८ भावी पट्ट लेनसमे बीच पारि ॥ २१ ॥
भाऊ१९५।१ भीमसिंह१९५।२ भगवंतसिंह१९५।३ भारत१९५।४त्यों,
भूपति१९५।५ भूपाल१९५।६ ईस्वरीहरि१९५।७ तनय सात ॥

---

१ पुंजा नामक राठोड़ की पुत्री २ सुर्यों का समूह ३ पुर का नाम है ४ बिवाह ५ सन्तान ६ सुन्दर ॥१९॥ ७छोटी ८ बहुत स्वर्ग देकर ॥ २० ॥ ९ पुर का नाम है ॥ २१ ॥ २२ ॥

तीन३हि कनिष्ठ मरे बालहि रु जेठ च्यारि४,
सपज भये पै रह्यो भीम१९५।२हीको कुल ख्यात॥
कन्या च्यारि४ कथित बिबाही सिसु द्वै२ ही मरी,
चोथी४ अरु छट्ठी६ बहुतासौं इहाँ भावी बात ॥
भ्राता अष्ट८इंद्रसल्ल१९४।२ आदिक सता१९४।१के व्याहे,
भूत१ भावी२ ते अब प्रजासहित भाखेजात ॥२२॥
दूजे२ निजनाती इंद्रसाल१९४।२हिं रतन१९२।१दये,
मुख्य अनंघोरा१ टीपरी२ त्यौं कर्कशोद२ थान ॥
याके भूत१ भावी२ सब व्याह दस१० जानौं पुत्र,
बारह१२ कनी चउ४ भये पुनि समैप्रमान ॥
सीसोदनी जेठी१ कुमरानी नगराजसुता,
नाम रूपकुमरि१९४।१ बिबाही सो सहबिधान ॥
भानकुमरि१९५।१ त्यौं चंद्रकुमरि१९५।२ सुता द्वै२ ताकै,
सबनसौं जेठी सूचियत है सुजान ॥२३॥
दूजी२ तिम चालुक कमाउत कनक कनी,
नाम हरिकुमरि१९४।२ बिवाही इंद्रसाल१९४।२ बीर ॥
तीन३ सुत जेठो१ गजसिंह१९५।१ रु अमान१९५।६ छट्ठो६,
अष्टम८ गुमान१९५।८ ए भये तस गुनगहीर ॥
बेनीदासपुत्री उनियाराकी नरूकी दीप-
कुमरि१९४।३ सु तीजी३ जाकै नवमौ९ करन धीर ॥
नाथाउति चोथी४ कृष्णाकुमरि१९४।४ दयालुसुता,
दूजो२ कृष्ण१९५।२ तीजो३ रनछोर१९५।३ सुत जाके सीर ।२४।
रद्धउरि जुन्न्याकी कल्यानरायपुत्री,
पंचमी५ सो स्यामकुमरि१९४।५ बहोरि बरी इंद्रसाल१९४।२॥

---

१ ग्राम का नाम २ ग्राम का नाम ३ ग्राम का नाम ॥ २३ ॥ ४ गुणों का गम्भीर ॥ २४ ॥ ५ जुन्न्या नामक ग्राम का ॥ २५ ॥

द्वै२ही सुत ताकै पुरुषोत्तम१९५।४ चतुर्थ४,
अनंदसिंह१९५।५ पंचम ए प्रकटे प्रसूतिकाल ॥
सेखाउति छठी६ इंद्रकुमारि१९४।६ बिहारीसुता,
सप्तम७कुसलसिंह१९५।७इक्क१हि तदीय बाल ॥
राजाउति सप्तमी७किसोरकुमरी१९४।७ त्यौं पुत्र,
बारहम१२रामसिंह१९५।१२इक्क१हि लिखायो भाल ॥ २५ ॥
सुरतकुमारि१९४।८ नाम त्यौंही निधिपालसुता,
जादवी बिबाह्यो व्याह अष्टम८ करोलीढंग ॥
जादव बहादुर सुता जसकुमारि१९४।९ व्याह,
नव९ बिबाह्यो सर मथुरा अतिउमंग ॥
द्वै२सुत रु द्वै२ सुता अपत्य चउ४ ताकै भये,
नाहर१९५।१०दसम१०एगारहम११पहार१९५।११ संग ॥
आनंदकुमरि१९५।३तीजी३चोथी४जमुना१९५।४त्यौं भये,
ए चउ४अपत्य ताकै भाखे नाँहि क्रमभंग ॥ २६ ॥
नाम रुक्मकुमारि१९४।१०बिबाह्यो जो दसम१०व्याह,
राजाउति सोहू देवकरन सुता सुजान ॥
इंद्रसाल१९४।२ए दस१० बिबाही तियमाँहिं बधू,
अप्रजं उभै२रु भई अष्ट८ हि प्रसूतिमान ॥
सोलह१६अपत्यनमैं आदि१।२अंत१५।१६द्वै२द्वै२कनी,
केती१ऊढ२केति१न अनूढपन छोरयो प्रान ॥
दूजो२कृष्ण१९५।२चोथो४पुरुषोत्तम१९५।४नवम९करण१९५।९,
नाहर१९५।१०दसम१०च्यारि४ अप्रज सुतन थान ॥ २७ ॥
सेस गजसिंह१९५।१ रनछोर१९५।३ रु अनंदसिंह१९५।५॥
छठो६ अमानसिंह१९५।६सु सप्तम७ कुसल१९५।७नाम ॥
अष्टम८ गुमान१९५।८एगारहम११ पहारसिंह१९५।११,

सन्तान ॥२६॥ २बिना सन्तान ३जननेवाली ४बिवाही ५ बिना बिवाही ॥२७॥

सबसौं अनुज रह्यो बारहमें१२पुत्र राम१९५।१२ ॥
चाले इन अष्ट८न के अन्वय बहुरि भावी,
संकुचन१ बर्द्धन२बनें सो बिधि तंत्र काम ॥
बाजे इन्हबंसी इंद्रसालउत्त२९।२५ हड्ड६१नमैं,
एकऊनतीसम२९भिंदा सो लखिये ललाम ॥ २८ ॥
पीछैं इंद्रसाल१९४।२ रह्यो भीर हथी ग्राम ठाम,
इंद्रगढ द्रंग निजनामसौं नयो बसाइ ॥
याको लघु नाती अमरेस१९६।२भयो भावी जानें,
गोरै गंजि कीनो गढ खातोली अमल जाइ ॥
इंद्रगढ१ खातोली२ उभैर ही मुख्यथान यातैं,
इंद्रसाल१९४।२अन्वयमैं सबसौं जुदे जनाइ ॥
तीजे३निजनाती बैरीसाल१९४।३हिँ अधिप रैन१६२।१,
बलवैनि१अंबर्थनि२मुख्य दिय भू बटाइ ॥ २९ ॥
याके भूत१भावी२नव९६०याह तिनमाँहिँ बधू,
तीन३भई सप्रज छ६ अप्रज नियति जोर ॥
जेठी१तँहँ केसरकुमारि१९४।१बलभद्रसुता,
भोजाउति चालुकीबरी दुलह बंधि मोर ॥
दूजी२सारदूलसुता चालुकी दयालुकुमारि१९४।२,
भो गोबिंद१९५।१जेठो१ सुत जाके तनु आयु दोर ॥
चंद्राउति तीजी३ चित्रकुमारि१९४।३ अचलसुता,
रट्ठऊरि चोथी४हरकुमारि१९४।४ सुनौ ब ओर ॥ ३० ॥
पंचम५ बिबाह अचलेससुता सीसोदनी सो,
अनोपकुमारि१९४।५सनाम बरी बैरीसाल१९४।३ ॥
जाके चंद्रकुमरि१९५।१सुता सहित दूजो२सुत,

---

१ भेद ॥ २८ ॥ २ गौड़ वंश के क्षत्रियों को मारकर ३ पुर का नाम ४ पुर का नाम ॥ २९ ॥ ५ भाग्य के बल से ६ मोड़ ॥ ३० ॥

मानी कुलतानी भयो नामक्कोरि जो गोपाल१९५।२ ॥
छट्टी६ स्यामकुमरि१९४।६नरूकी जैतकन्या बरी,
सीसोदनी सत्यभामा१९४।७सप्तमी७ विहित काल ॥
उदैलजा[2] अष्टमी८ मघाकुमरि१९४।८ चंद्राउति,
नवमी९प्रमारी बीरकुमरि१९४।९ मराली[3] चाल ॥ ३१ ॥
राघवसुता सो जाके तनया अघाकुमरि१६५।२,
ब्याह नव९ तोहू तँहँ तीन३ कै प्रजा ए चयारि४ ॥
जेठो१ सुत द्वै२ सुता तऊ त्रय३ सिसुहि मरे,
सो गोपालसिंह१९५।२ रह्यो एक१ ही कुलप्रसारि[1] ॥
बैरीसालउत्त३०।२६ ताके कुलके कहाये भयो,
हड्ड१नमैं भेद यह तीसम३० प्रमान धारि ॥
स्वामीद्रोह पापकारि विपदाविगारी ऐसी,
राजसिंह१९४।४ संतति सुनौं अब लुपनहारि ॥ ३२ ॥
पाटवं[4] प्रगल्भ[5] जानि सोदर सता१९४।१को याहि,
रैन१९२।१ भूप बखस्यो हरींगढ बिदित धाम ॥
ब्याह्यो पंच५ब्याह यह तिनमैं सदाकुमरि१९४।२दूजी२,
कूरमीके भो सुत त्रय३ सुनौं व नाम ॥
जेठो१बिष्णुसिंह१९५।१मधुसिंह१९५।२दूजो२तीजो३पत्ता१९५।३,
अप्रजे[6] मर्‌यो सु३ द्वै२हि जेठे रहे कुलकाम ॥
पुत्र बिष्णुसिंह१९५।१के भो पापी बलभद्र१९६।१अनिरुद्ध१९६।१,
के समै जो होइ स्वामीसौं सुर्‌यो हराम ॥ ३३ ॥
पुत्र मधुसिंह१९५।२कै भो अनुपमसिंह१९६।१जोही,
खैबरके[7] खेत पर्‌यो[8] भूप बुधसिंह१९७।१भीर ॥
ताकै नाती तीन३हि बंखामैं प्रभुसंग रहे,

१ कुल का विस्तार करनेवाली २ उदयसिंह की पुत्री ३ हंस के समान गति वाली ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ चतुर ५ बुद्धिमान् ६ विना संतान मरा ॥ ३३ ॥ ७ अफगानिस्तान में प्रवेश करने के हिमालय पर्वत के घाटे के युद्ध में ८ आपत्ति में

दोल१९७।१सुत नाहर१९८।१उमेद१९८।२रु खुसाल१९८।३वीर ॥
मध्यम उमेद१९८।२यह भूपति उमेद१९८।५ संग,
बुन्दी पहिलो रन रह्यो त्यौं लही गोलापीर ॥
इनको रह्यो न बंस संख्यामैं लयो न यातैं,
कहिहु दिखायो कछु कलना समास सीर ॥३४॥
पंचम५ पँउत्त मुहुकम१९४।५कौं महिप रैन१९२।१,
दुर्गापुरी दीनी जो वे जाहिर दुधारी दंग ॥
सोहु गिनि अल्प लोभी सेइकैं सुजा४०।२कौं आयो,
ताहि तव दीनौं सता१९४।१ करउर ताकि तंग ॥
याके भूत१ भावी२ सप्त७ ब्याह पै जनी चउ४मैं,
बारह१२ अपत्य सुत अह८ चउ४ कन्या संग ॥
पुत्री दुव२ ब्याहीं त्यौं मरी दुव२ अनूढ ताहीं,
पुत्र८नमैं प्रसरे छह६के कुल ह जितजंग ॥३५॥
प्रथम बिवाह ब्याह्यो मुहुकम१९४।५सिंह सुता,
पूर्णमति१९४।१नाम उनियारेकी नरूकी जाहि ॥
जोरावर१९५।१ जेठो१ सुत पंचम५ कनकसिंह१९५।५,
छठो६ सगतेस१९५।६ इन तीन३न प्रसू सो आहि ॥
नाथांउत चालुक दयालुदासपुत्री नाम,
कल्यानादिकुमरि१९४।२ लई सो वर दूजी२ ब्याहि ॥
सप्तम७ तनूज जगमोहन१९५।७ रु कन्या दोइ,
प्रकटी अर्धा२ यह तदीय गर्भ अवगाहि ॥३६॥
इंद्रसाल१९४।२ सोली नाथकुमरि१९४।३ सनाम वरी,
तीजे३ ब्याह चालुक कमांउत कनकगेह ॥
चोथे४ ब्याह अंगजा कवंधज अनंदवारी,

१ एक प्रकार की पेट की पीड़ा ॥ ३४ ॥ २ पोता ३ अब ४ युद्ध जीतनेवाले यह रामसिंह का विशेषण है ॥ ३५ ॥ ५ इन तीनों की माता है ६ पुत्र ७ ब्याह लेकर ॥ ३६ ॥

कर्मवति१९४।४ नाम परन्यौं तिय नियतनेह[1] ॥
गोवर्द्धन कूरमकनी त्यौं ब्याह पंचम५ राजाउति,
ब्याह्यौ फूलकुमरि१९४।५ सुलग्न लेह ॥
तनय गरीब१६५।२ दूजो२ तीजो३ जसवंत१९५।३ कृष्ण११५।८,
अष्टम८ रु तीजी३ सुता च्यारि४नकी माता एह ॥३७॥
पट्टिमादिदेवी१९४।६ नाम रानाउति छट्ठी६ बरी,
तनय कल्यान१९५।४ चोथो४ चोथी४ सत्यभामा१९५।४तास॥
सप्तमी७ बिबाही लाडकुमरि१९४।७ कबंधकन्या,
एह७ अरु तीजी३ चोथी४ए त्रय३ अतोकै[2] आस ॥
कन्या लाडकुमरि१९५।१ निधाना१९५।२गतनामा१९५।३तीजी३,
पुत्रनमैं द्वै२ अतोक कृष्ण१९५।८ रु गरीबदास१६५।२ ॥
बंस खट६के जे बजे मुहुकमसिंहउत्त२१।२७,
भेद इकतीसम३१ सो हह६१नमैं धारैं भास[3] ॥३८॥
रैन१९२।१ नृप छट्ठो६ स्वीय नाती जो उदयसिंह१९४।६,
ताकौंहँ बिबाहिदयो गोहट्टक१ आदि थान ॥
संतति भई न तास सोही लै निदान ताके,
ब्याहहु कहे न जानि व्यर्थ बनतो बितान ॥
नाती सूर१९४।७ सप्तम७कौं लोहि हित नगर दीनौं,
दीनौं स्याम१९४।८ अष्टम८कौं थानथान जलदान ॥
सूर१९४।७के सुता इक१ सो बिंझोली बिबाही रहे,
असुत उभैरहीं यौं न भाखे इन्ह ब्याह मान ॥३९॥
नवम९ पउत्त[4] महासिंह१९४।९हिं पितामहनैं,
जज्जाउर दीनौं हरपालपोते५।१ पच्छे पारि ॥
ब्याह्यो भूत१ भावी२ ब्याह अष्टम८ यहेहू तहाँ,

१ निश्चय ही स्नेह करके ॥ ३७ ॥ २ बिना बालक हुई अर्थात् इसके सन्तान नहीं हुआ। ३ कान्ति ॥ ३८ ॥ ४ पोता ५ कारण ६ विस्तार ॥ ३९ ॥

सरसू१६३१९ कुल१ नाम२ नाथकुमारि१६४११ सु जेठो१नारि॥
चंद्राउति दूजी२ व्याह्यो बदनकुमारि१६४१२ जामैं,
तीजो३ सुत लालसिंह१९५१३ जनम्यो रनजितारि॥
भोजाउत उदय चुलुक्यसुता तीजी३ जिहिं,
बदनकुमारि१९४१३ तोक पंच५ जनैं गर्भ धारि॥४०॥
जेठो१ मान१९५११ चोथो४ जय१९५१४ ह्वै२ सुत त्रि३ कन्या तँहँ,
मान१ कृष्णा२ अजब३ कुमारि१९५११-१९५१२-१९५१३ क्रमतैं ए नाम॥
रठ्ठउरी१९४१४ चोथी४ गोरि पंचमी५ महाकुमरि१९४१५,
हठीसिंह१९५१५ पंचम५ तनै जिहिं जठर जाम॥
छठी६ नाथकुमारि१९४१६ नरूकी जाकै चोथी४ सुता,
अन्वयकुमारि१९५१४ ऐसैं सप्तम७हू उपयाम॥
कुंपाउति नाम रूपकुमारि१९४१७ बरी सो सुता,
स्यामवारी जानैं प्रजा जुग२हि लही ललाम॥४१॥
क्रमतैं द्वितीय२ सुत ताकै भो कनकसिंह१९५१२,
पंचमी५सुता सो व्रजकुमरि१९५१५ बखानीजात॥
अष्टमी८ अचलसुता कुंपाउतिही बरी सु,
अखयकुमारि१९४१८ जरिहै जो पति के निपात॥
एह८ अरु जेठी१ चोथी४ अप्रज बधू ए तीन३,
पंचकै प्रजा दस१० सुता५ सुत५ सम गिनात॥
मानकुमरी१९५११ मुख्य सुता त्रय३ वदत व्याही कहत,
कितेक व्याही पंच५हि विदित बात॥४२॥
कनक१९५१२ द्वितीय२ लालसिंह१९५१३ सु तृतीय३ सुत,
अप्रज उभै२ही ए सता१९४११के संग आये काम॥

---

१ युद्ध में शत्रुओं को जीतनेवाला २ सोलंखी उदयसिंह की पुत्री ३ बालक॥ ४० ॥ ४ उदर से ५ जन्मे ६ विवाह ७ सन्तान ॥ ४१ ॥ ८ आदि ॥ ४२ ॥

मान१९५।१ जयसिंह१९५।४ हठीसिंह१९५।५ इन तीन३नके,
बंस जे बढे ते महासिंहउत्त३।२८ धारैं नाम ॥
बत्तीसम३२ भेद प्रकटानौं एह हड्ड६१नमैं,
पैंतीस३५हि हड्ड६१नके हैलिं अधिप राम२०३।४ ॥
केसरी१९४।१० कनक१९४।११ नगराज१९४।१२ रामसिंह
१९४।१३चपारि४,
गोपीनाथ१९३।१तनय मरे सिसु बिधिहि बाम ॥ ४३ ॥
पट्टिमादिदेवी१९३।५राजकुमरि१९३।५दुरनामवारी,
पंचमी५जो व्याही प्रिया पट्टनि नगर जाइ ॥
ताही कुमरानी तोमरीमैं सुत स्याम१९४।८,
तनया सदाकुमरि १९४।१ नाम पाइ ॥
प्रकटभई सो बयपातहि पितामहनैं,
रान जगतेसकौं प्रथासौं दई परिनाइ ॥
ऐसैं गोपीनाथ१९३।१के तनूज१ तनूजा२ए दस१०,
व्याहे रैन१९२।१सत्तन७कौं बंटहु दये बटाइ ॥ ४४ ॥
रैन१९२।१ जब बुंदीसुत तीन३न बिभाग दये,
ऐसैं तबही दै सत्त७ नत्तिंन बिभाग एस ॥
पीछैं जाइ दक्खिन जहँ है जुग२ अब्दपीछैं,
कालीबाइ ग्रामपरयो गोदाके तटप्रदेस ॥
उचित काइ अट्ठ८हायनं बै भाऊ१९५।१हाथ,
केसव सचिव न दिखायो हाँ दुकाललेस ॥
साह सिक्ख पाइ दलथंभन कहाइ पीछैं,
बुंदी आइ कीनौं सज्ज संक्रम सता१९४।१नरेस ॥ ४५ ॥
बुंदी दल आउतही हाकिम अपरं जात,
दक्खिनके मिच्छ१ मरहट्ठ२ पुनि पैनैं होइ ॥

१ सूर्य ॥ ४३ ॥ २ रीति से अथवा प्रसिद्धि से ३ पुत्री ॥ ४४ ॥ ४ पोता का ५ दो वर्ष पीछे ६ गोदावरी७नदी के प्रदेश में ८वर्ष ॥ ४५ ॥ ६ अन्य१०तीक्ष्ण हुए

खुर्रमसे३०।२ खेटायत[1] अबहि बनैं ए ताके,
थान मेरुमाला[2]बिच लोदीखाँ जिहाँन[3]१ पोइ ॥
दिल्लीपति लोदी५बहलोल२७ पहिलैं भो ताको,
इब्राहीम२९ नाती हन्यौं बाबर३० ममादी जोइ ॥
बिक्रमके साक ससि अष्ट सर भू१५८१मैं लई,
मुगलन दिल्ली खरे खग्गन खलन खोइ ॥ ४६ ॥
राज्य करि पीढी तीन३ तबके निरंत[4] भये,
दिल्लीतैं पठान अफगानलोदी सत्वहीन[5] ॥
ओरओर छाये मुगलन६के प्रतापआगैं,
खिनखिन[6] खीन भूति दिनदिन भासे[7] दीन ॥
नीतिअंध खुर्रम३०।२पितासौं प्रतिकूल[8] भयो,
होत साह सोही राह सोही[9]गहि अंध्व तीन ॥
लोदीखाँ जिहाँन१ सुत च्यारि४न सहित सज्यो,
दक्खिन सहायसौं पताकिनी प्रकर[10] पीन[11] ॥ ४७ ॥
जवन कढे जे नृप रैन१९।२।१तैं करार करि,
तेहू ततकाल बल बुंदीकों गयो बिचारि ॥
लोभ लगि के भये सहायक पठान संग,
के रहे निकेतैं[12] मूलमंत्र दै रचन रारि ॥
ओरहु अनेक मरहट्ठ मुख[13] तैसी ताकि,
पुब्ब[14] उपकार अपनैंको मन जोर पारि ॥
ठाँठाँ[15] लूटि दाबन लगे यौं मुगलेस थानौं,
धोरीखाँ जिहाँन अफगानकौं निमित्त[16] धारि ॥ ४८ ॥
च्यारि४हि अनी करि पठानके सुतहु च्यारि४,

---

१ युद्ध करनेवाला २ मेरु माला यह पृथ्वी का विशेषण है ३ जिहांनखां लोदी ॥ ४६ ॥ ४ नियुक्त ५ पराक्रम हीन ६ क्षण क्षण में विभूति का नाश होकर ७ दीखे ८ विरुद्ध ९ मार्ग १० सेना और परगह ११ पुष्ट ॥ ४७ ॥ १२ कितने ही घर में रहे १३ आदि १४ पहला उपकार देखकर १५ ठाम ठाम (जगह जगह) १६ कारण ॥ ४८ ॥

जनकनिदेस१दक्खिनीन उपदेस२ जोर ॥
स्वामि होनलागे बुरहानपुर१सूबा सीम,
वारिधिमैं बाड़वलौं अटिअटि ओरओर ॥
भिन्नभिन्न भ्राता जे मचाइ भय मग्गमग्ग,
अग्गअग्ग अवधि अवंती२लौं रचाइ रोर ॥
डमर१डकेती२मैं पुरोगति परतभये,
कीलित करतभये दक्खिनदिसाकी कोर ॥ ४९ ॥
समय जिहानगीर३८।१केहुसौं बिसेस बढि,
दावा करि दिल्लीपैं यौं दक्खिननि डारयो दोह ॥
आसफ१ अमात्य दंडनायक महावत२से,
सुनिसुनि साहजहाँ३९।२सहित मिलाभैं मोह ॥
केही प्रतिमल्ल भट भेज सुर सज्जकरि,
लोहचाखिचाखि मुरे पै न फल दीनौं लोह ॥
बुंदीपति सो सुनि सता१९४।१हु इत सेना सजि,
ताखिन बिचारयो दिल्लीजावन जुराइ जोह ॥ ५० ॥
केसव१अमात्य भ्राता इंद्रसाल१९४।२बेरीसाल१९४।३,
काका जिम जैत१९३।१सवला१९३।१दिक लै संग एस ॥
राजसिंह१९४।४मुहकम१९४।५ उदय१९४।६रु सूर१९४।७आदि,
देस निज भ्राता राखे अनुज बली बिसेस ॥
माधव१९३।२बुलायो जो न आयो कछुव्यौज करि,
भिन्नपन भायो सो बिहायो तब संभरेस ॥
सबल सुहायो रजोगुन छक छायो ऐसैं,

१ समुद्र में २ बड़वाग्नि के सदृश ३ भय, उपद्रव और डकैती में अग्रणी होकर दक्षिण दिशा को रोकी ॥ ४९ ॥ ४ फैलाव वा द्रोह ५ सेनापति ६ मुकाबिला करनेवाले ७ शत्रुओं के शस्त्र चख चख कर पीछे मुड़े परन्तु इनके शस्त्रों ने फल नहीं दिया ८ उस समय ९ योद्धा इकट्ठे करके ॥ ५० ॥ १० रक्षा करनेवाले ११ मिस करके १२ छोड़ा अर्थात् बुन्दी के राजा ने उसका त्याग किया

आयो आप दिल्ली सता१९४१[1]बुंदीपुरी वसुधेस ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

इम पत्तो[2] दिल्लिय असह, सता१९४१[3]बहुपद[1]सूर२ ॥
सद्दि उचित मिलि साहसन, पायो आदर पूर ॥ ५२ ॥
द्विरद जहाँगीर३८।१हि दयो, पहिलैं रत्न१९२।१नृपाल ॥
सिवप्रसाद दिय साह सुहि, हत्थी हद्द६।१हिं हाल ॥ ५३ ॥
अर्बादिक इतरहु उचित, नृपहिँ अप्पि जवनेस ॥
सादर तँहँ रक्खिय सता१९४१।१, वसु[6] जल बादर[7] वेस ॥ ५४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे अवाप्तराज्यशत्रुशल्यस्य दक्षिणादेशाद्बुन्द्यागमन १, ससहोदरशत्रुशल्यपाणिपीडनपुरःसरसन्ततिकथन २, प्राप्तबुन्दीराज्यदिल्लीगतशत्रुशल्यस्य यवनेशपारितोषिकप्रापणं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितस्त्रयोदशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१३ ॥

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पुव्वहि अष्टम८ रैन१९२।१पहु, सता१९४१ कुमर संबंध ॥
कियउ उदैपुर प्रीति करि, समकुल ख्यापितसंध ॥ १ ॥
बुंदीसन दिल्ली बहुरि, चढत सता१९४१नृप चाहि ॥
तबहि कहाई रान तुम, बहिनी जाहु बिबाहि ॥ २ ॥

---

१ भूपति ॥ ५१ ॥ २ प्राप्त हुआ ३ दानी ॥ ५२ ॥ ४ हाथी ॥५३॥ ५ घोड़ा आदि ६ धन रूपी जल से ७ बादल (मेघ) से विशेष होकर ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का राजा होकर दक्षिण से बुन्दी आना१ शत्रुशाल और शत्रुशाल के भाइयों के विवाह और सन्तान आदि का कथन२ बुन्दी का राज्य पाकर दिल्ली गये हुए शत्रुशाल का बादशाह से खिलत पाने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१३ मयूख हुए ॥

८ प्रभु रत्नसिंह ने ९ प्रसिद्ध प्रतिज्ञावाले ॥ १ ॥ २ ॥

भेजि स्वजन बुंदी भनंत, त्वरा[1] रान जगतेस ॥
कहिय सत्ता१९४।१दिल्ली गमन[2], आगत पहिलैं एस ॥ ३ ॥
तातैं मिलि जवनेस तकैं[3], समय विधेय सधाइ ॥
ब्याहन ऐहौं तुम वहिनि, अर पच्छो मैं आइ ॥ ४ ॥
पत्तो इम कहि हड्ड६।१ पहु, दिल्लीनामक ढंग ॥
लंचा१ दे बखसीस२ लिय, सब संमुचित हित संग ॥ ५ ॥
दुर्दस दक्खिन देसकी, पत्ती तबहु पुकार ॥
लोदीखान जिहान लघु, हुकम चलावनहार ॥ ६ ॥
साह कहिय तब संभरहिं, जाहु सता१९४।१ बरजोर ॥
जंनपद[10] दक्खिन करहु जय, इहिं खिन मुख्य न ओर ॥ ७ ॥
सासन यह केसव१सचिव, जैत१९३।१ पितृव्यक जानि ॥
संसकैं[12] करि आसफ सचिव, आरजकराई आनि ॥ ८ ॥

॥ राजसवतिका ॥

जुरि दलथंभन१जैत२दुहुँ२न[13] जव आसफखान प्रबोधि वजीर ॥
इम अवसर विन्नति करवाई संगहि ठानि महावत सीर ॥
नत्तीको[15] संबंध रत्न१९२।१ नृप उदयनगर पुव्वहि कृत आस[16] ॥
काल होत चिर रान त्वरा[17] किय जानहु निकट लग्न अवजास
यातैं भूप ब्याहि द्रुत आवहिं सब निदेस सबहि धरि सीस ॥
दुवरहि अप्प इम सिक्ख दिवावहु मास कछुक गृह जान महीस॥
आसफ१सचिव चमूप महावत २ जंपिय इम दोउ२न तब जाइ ॥
हजरत सिक्ख सतो१९४।१कैं ब्याहन पहिलैं देहु लग्न ढिग पाइ१०

१ शीघ्रता २ शत्रुशाल ने कहा कि दिल्ली का जाना पहिले आगया है. इसकारण ॥ ३ ॥ ३ पर्यन्त; अथवा देखकर ४ उचित ५ शीघ्र ॥ ४ ॥ ६ नजराना ७ उचित ॥५॥ ८शीघ्र॥६॥९ चहुवाण को १०देश ११इस समय ॥७॥१२ आसफखां से मिल कर; अथवा वाकिफ करके ॥ ८ ॥ १३ केशवदास सोमाणी का अपद है १४ समय पर १५ महावतखां को शामिल करके अरज कराई कि रत्नसिंह ने पोते का १६ है १७ शीघ्रतर ॥९॥ १८ शीघ्र १९ कहा २० शत्रुशाल को ॥१०॥

है किन और लग्न इहिं*हायन साह कहिय आनहु तिन्ह सुद्धि ॥
विज्ञति किय†गणकन इहिं‡बच्छर व्याहन लग्न चतुष्टय ४ बुद्धि ॥
अक्खिय साह सु सुनि कुतआइ रु बिरचहु दूजे२ लग्न विबाह ॥
खानजिहांन जित्ति पहिलैं खल नृपहिं बिधेय निदेस निबाह ।११।
तोपन बिनु सब लूट लहहु तुम तनहु नव्य जस पुहवि प्रतान ॥
आतहिबेर सिक्ख हम अप्पहिं व्याह भूप सज्जहु सविधान ॥
केसव१जेत२हुक्म सो स्वीकारि नृपहिं निवेदि चित्त दिय नीति ॥
सुनि यह सुत्रुसल्ल१९४।१पहु सज्जिय बल निज बीरं१बारन२रु बीति
बुल्लि मऊ सन करन१९३।१ पितृव्यक भोज१९१।२ तनय केसव
१९२।३ सुत भीर ॥
बुल्लिय तिम हरिसिंह१९३।१पितृव्यके बुंदीसन इतरहु ए बीर ॥
बुद्धिचंद्र१९२।३ सुत कृष्ण१९३।१समरबुध तिम दयालु १९०।१ सुत
भूपति१९१।१ तत्थ ॥
पर दयालु१९२।१बलवंत१९१।१तनै पुनि सुर्जन१९०।१ अनुज राम
१८९।३ कुल सत्थ ॥ १३ ॥
सुर्जन १८८।१ अनुज भीम १८८।२ कुलउद्भव सूर सनाभि हठी
१९२।१ रन संत ॥
पूरन१८८।३हर हम्मीर१९१।१बंस पुनि जो सुत स्याम१९३।१पिता
जसवंत१९२।१ ॥
भजनेरी पति सारन १८६।१ कुलभव केसव १८९।२ सुत पित्थल
१९०।१ जयकाज ॥
एह सगोत्र१सपिंड२सेस इम रन इतिमुख बुल्ले रनराज ॥ १४ ॥
विदित गोरं रनछोर१ आदि बलि बुंदीसन असगोत्र बुलाइ ॥

---

* इस वर्ष में † ज्योतिषियों ने ‡ इस वर्ष में चार लग्न हैं ॥ ११ ॥ १ फैलाव २ नवीन ३ हाथी ४ घोड़े ॥ १२ ॥ ५ काका ६ अन्य भी ७ युद्ध में चतुर ८ दूसरा दयालसिंह ॥ १३ ॥ ९ इत्यादि ॥ १४ ॥ १० गोड़

रक्खे इतर देस सुख रक्खउ भट रच्छक समुचित[1] हित भाइ ॥
नृपउच्छाह बढावत बल निज साहहु स्वबल अयुत१००००दिप संग ॥
प्रथित सज्जि इन सबन चल्यो पहु उफनत दक्खिन बिजय उमंग १५
आसपास गढगढन त्रास अति पथ संगत भूपन हिय पारि ॥
सरिता लंघि नर्मदा सत्वर[6] रचिय सता१९४१लोदिन प्रति रारि ॥
खानजिहान सुनत सुत खग्गन सम्मुह जुरयो सबन सह सज्जि ॥
दारुन कलह मच्यो तँहँ दुव२ दिस बंब१ पटह२ काहल३ वल सज्जि ॥ १६ ॥

डोलि अवनि डुंगर डगमग्गिय भग्गिय भर्ग१ सभ्रो[11]हितभाव ॥
लचि आलुकं[12] तालुकं[13] भर लग्गिय चंडी२ चित्तहु जग्गिय चाँव[14] ॥
नच्चहिं कलहबिसारद नारद३ महती तंत्रिन कोनं[15] मिलाइ ॥
लखहिं प्रेत४डाकिनि५बेताल६रु जोगिनि७बीर[16]८जातु[17]९गन जाइ१७
बनि कुरूप१पररूप२बहूरद३थनमुखं४ ह्रस्व५ दिग्घ६ कृस७थूल[18]८॥
बहु गावहिं१कति वाद्य बजावहिं२कति लावहिं३ तंडव अनुकूल॥
अयुततीन३०००० दल पिक्खि सता १९४१ इत टक्करदैन गाहिय रन टक ॥

उत पुराग१बीजापुर२आदिक अंग्ज[19]१ रु जवन२रूपे बनि एक॥१८
जे उत संग लगे बनि जन्य[20] रु वर वह खानजिहान बनाइ,
तनय चतुष्क४ समेत सुपै तँहँ इच्छत हुव दुलही भुव आइ ॥

---

१ अन्य२उचित३बादशाह ने भी अपनी सेना को ४प्रसिद्ध ॥१५॥५मार्ग में आयेहु-ए राजाओं के ६ शीघ्र ७ नक्कारा ८ ढाल ९ वाद्य विशेष ॥ १६ ॥ १० शिव के ११ समाधिभाव १२ शेषनाग झुककर उसके १३ मस्तक पर १४ उत्साह १५ नखी (मजराफ) अर्थात् नारद ने महती नामक वीणा के तारों से नखी मिलाकर नाच किया १६ बावन वीर १७ राक्षस ॥ १७ ॥ १८ कुरूप से लेकर थूल पर्यंत वेताल आदि के नाम हैं १९ आर्य्य ॥ १८ ॥ उस खानजिहान को दुलहा बनाकर वधरवाले २० जानेवाले (बराती) होकर साथ लगे वह चार पुत्रों सहित भूमि को दुलहिन बनाकर चाहने लगा परंतु उस समय यह दुलहिन

पै दुलही सु चहत अप्पन पति जब दिल्लीपति साह जिहान२९।२,
भय धारि चित्त सता१९४।१से भूपन इक्खे नहि महि उपपति
आन ॥ १९ ॥

वर करि जार तदपि दुल्लह बनि इम जुट्यो लोदी अफगान,
संग लये बलवान सहायक दक्खिनके सब बिजयनिदान ॥
जुग२दिस तोपन जुज्झि पहर जुग२बलि बाजिन करी गहि बग्ग
पहुँच्यो अरिन अनीक सता१९४।१ पहु अप्प तथापि सबन स-
न अग्ग ॥ २० ॥

प्रहरन सर१ तोमर२ असि३ पट्टिस४ संख्य असंख्य चले दुव२सेन
इक१ मुहूर्त अंत्रमर्द मच्यो इम वे१ न बढे इत तिम उत ए२न ॥
जे बीजापुर आदि जवन जब कढत रतन१२९।१मन विरचि करार
पीवल लखि बुन्दीस पताकन वे हुव भिन्न बचन अनुसार ॥ २१ ॥
कहिपठई नृपतैं हयहंकहु जिन संकहु हमकों अरि जानि ॥
खलन गंजि खर खग्ग चलावहु हमदिस बढिआवहु नहि आनि ॥
अयुत१०००० साहबल निजबल द्विअयुत२०००० हंकि तबहि
भट तीसहजार३००००,
प्रबिस्योमूर सता१९४।१ पैर पृतना भीम पटकि लोदिन सिर
भार ॥ २२ ॥

चले नचत संगहि डाकिनि१ चय दलि के ताल देत बेताल२,
जोगिनि३ गात बजात बीर४ जहँ भनत वाह दुर्गा१ ससिभाल२
चंद्रहास हड्ड८१न कर चल्लिय वेरिन उरसल्लिय प्रतिवीर,

शाहजहां को ही पति चाहती थी क्योंकि शत्रुशाल जैसे राजाओं का भय करके अन्य उपपति को नहीं देखती थी ॥ १९ ॥ १ कारण ॥ २० ॥ २ कटारी ३ उस युद्ध में ४ दो घड़ी तक भयंकर युद्ध हुआ ५ पीले रंग की ध्वजाओं को देखकर रत्नसिंह से किये हुए पहिले नियम के अनुसार जुदे होगये ॥ २१ ॥ ६ शत्रुओं की ७ सेना में ॥ २२ ॥ ८ समूह ९ शिव के क्षेत्रपाल (अकस्मात् आकाश में दीखनेवाले भूत विशेष) १० शिव

बढे अपहि रनछोर१ गोरबलि नृपति२ रु हरि३ काका नासीर॥२३॥
कटक अद्व३ लखि सिथिल प्रसभ करि बल दल३ खिल उत-
केहु बढाइ,
खानजिहानकेहु सुत चउ४ खिजि अग्ग.भये जुज्झन अकुलाइ॥
जवन कोलबाहिर हें तिन जुत हनुमंत१ स्याम प्रमुख मरहट्ठ,
व्है सहाय लोदिनसह हंकिय अतिबल दिग्गिभ३ धुजावत अट्ठ८।२४।
जँहँ प्रभुराम२०३१४ उभय२ दिसतें जुरि मच्यो असह अनुपम
अवमर्द ॥
इततैं जिम दक्खिन अपनावहिं क्रमि उत२तैं जिम देन कपर्द४॥
मिल तन सूरन दुद्व१ सिंता२ मित प्रहरिय प्रहरन प्रचुर प्रहार,
समर जुरे जे क्वथित सिवादिक विलसे निजनिज उचित वहार॥२५॥
संकर१ सघन सूरसिर संचत साधक हुव चंडी२ हु सहाय,
महती सारिन भुल्लि पिसुन३मुनि केवल विहसि झुकावत काय
प्रेत१ दास डाकिनि५ दासी पुनि दासनपंति बेताल६ दुराइ॥
जोगिनि७ वीर८ जातु९ कं९न पलं जँहँ ओ जिहिं इष्ट देत सु-
हि जाइ ॥ २६ ॥
कोंड१०कुंत११कासूं१२करवालक१३कट्टार१४रु खंजर१५छुरिका१६दि॥
वाहन१४सादि१५निसादि१६न वाहत बहु जोधिन वादिन प्रतिवादि,
कहत दुरदिस भरहर कर कंडू१७ उतरन अह निठिन किय अज्ज॥

१ गोल २ अग्रणी (सब से आगे) ॥ २३ ॥ ३ दिशा के हाथियों को ॥ २४ ॥ ४ शिव को ५ युध में जाकर मिले तिस प्रकार मिलकर बहुत शस्त्रों का प्रहार किया ॥ २५ ॥ महादेव अपने हाथी से ६ महती नामक वीणा के दंड को भूलकर ७ नारदमुनि (नारद का स्वभाव इधर उधर चुगली करने का होने से कारण उसको यहां 'पिशुन मुनि' लिखा है) ८ मस्तक ९ मांस ॥ २६ ॥ १० बाण ११ भाला १२ बरछी १३ खड्ग १४ घोड़ों के सवार १५ हाथियों के सवार १६ उस दिन. कहते हैं कि दिन के उतरने पर भार को हरनेवाला (संध्या) काल और हाथ से शरीर की १७ खुजली मिटाने का कार्य आर्यों ने कठिनाई से किया ॥ २७ ॥

तिमहि मिलत मिलन मित तकितकि सकिसकि जयसद्दन गन सज्ज ॥ २७ ॥

कति वपु[1]हेति [2]बिसत हिय बिकसित चिन्हित जिम रामानुजचक्र[3]।
जड़जन दुसह दुकाल परैं जिम तकि उपधान्य[4] पूपिका[5]१तक्र[6]२ ॥
जहँजहँ घात पात निज जानत मिलि भौंहन चुंबत उठि मुच्छ ॥
अप्पहि धन्य मन्नि लखि अच्छरि[7] तक्कत जिन्ह जिय प्रिय तिन्ह तुच्छ ॥ २८ ॥

कहुँपर[8] हेतिछिन्नि निज सिर कर गहि लंचा[9]करहि जजंत[10] गिरीस
सिर निज कहुँ तिलतिल लखि सूचत सैन[11] करि न अक्खय मम सीस ॥

जितित रुंड[12]१फटत बहु जवनर२न मुंड१कटत मरहट्टर२न मानि ॥
सब भर धरि लोदीसुत निजसिर अग्गैं चउ१हि बढ धक्के[13] आनि॥
जंलमाँहिं मिलिजात इच्छु[14] जिम तिम अवमर्द घोर हुव तत्थ ॥
इम दिल्ली१दक्खिनर२जुरि असहन सद्दतहुव निज१पर२असु[15] सत्थ।
जहँ हरि१वीर मुख्य अरिसुत जुग२मारि अधिक भूपहिँ दिय मोद
दुव२असिघाय[16] काय सहि दोउ२न बिहसि सहज मन गिनिय बिनोद ॥ ३० ॥

तीजो३सुत नरनाह सतार जहँ असि हनि किय उपवीत[17] उतार ॥
कोंसू[18] तिम रनछोर३ बीरकिय पट्टु चोथे४लोदी सुत पार ॥

१ शरीर में शस्त्र २ घुसकर ३ जिसप्रकार रामानुज संप्रदाय वालों के तप्त मुद्रा में सुदर्शन चक्र का चिन्ह होता है तिसप्रकार चिन्ह युक्त होते हैं ४ जैसे मूर्ख लोग असह दुर्भिक्ष पड़ने पर सावां मलीचा आदि अड़क धान्य की ५ रोटी और ६ छाछ को देखते हैं तैसे वीर लोगों ने शत्रुओं को देखे ७ अप्सरा ॥ २८ ॥ कहीं पर ८ शस्त्र से कटेहुए अपने मस्तक को हाथ में लेकर ६ नजराना करके १० शिव की पूजा करते हैं ११ इसारा करके कहता है कि मेरा मस्तक अक्षय नहीं है १२ बिना मस्तक का धड़ १३ क्रोध करके ॥ २९ ॥ १४ इक्षु (गन्ना) १५ प्राण १६ खड्ग के घाव ॥ ३० ॥ १७ जनेऊ के आकार शरीर को काटकर १८ बर्छी

करन१हन्यो मरहट्ठ स्यामर्कहँ हठीसिंह१मार्‍यो हनुमंत२,
पूराउत२८।१४जसवंत१कियो पटु अमन२क्रमिम३जवन जुग२अंत॥
अरि बलवीर परत ए अट्ठ८हि जियन भज्यो सिदि खानजिहान॥
सोहि भजत डरि सत्रु भजे सब अतिबल पिट्ठि लगे चहुवान॥
सिबिरहु लै न सके अरि सत्वर छिपतभये जिततित हठ छोरि॥
लुट्टि सबन सिबिरन बैभव लिय हड्ड६१न पति लहि बिजय बहो-
रि॥ ३२॥

तीन३ प्रहार लगे नृप १९४।१।१के तनु तोमर इक्क१ इक१ असि
इक१ तीर॥
पंच घाय हरिसिंह १९३।३।२ लहिय पर पंसुलि गत असि दुवर
दिय पीर॥
करन १९३।२३ लहि चउ४घाय सुसह कछु पंच५ गोर रनछोर ४
प्रहार॥
हठीसिंह १९२।३५ दुवर छतं लहि हड्ड६२नवंसहिँ बिसद चटायउ
बाँर॥ ३३॥
बुद्धिचंद्र १६२।३ सुनकृष्णा १६३।१।६ लह्यो बपु इक१ असि घाय
असह अतिअंसे॥
तनय मनोहर १९२।४को जु सबल १९३।१।७ तस दुवर सर जंत्रु
लगे भिदि दंसे॥
भजनेरी पुरपति पित्थल १९०।१।८ भुज इक्क१ लग्यो असि बाहु-
ल्ल बढ़ि॥
जसवंत १९२।३।९ जु हिंडोलीपति जस कंठ वेधि इक१ सर गय
कढ़ि॥ ३४॥

॥ ३१ ॥ १ डेरा भी शीघ्र नहीं लेसके॥ ३२ ॥ २ भाला ३ घाव ४ नीर (उज्वलता)
॥ ३३ ॥ ५ कन्धे पर ६ शरीर और कन्धे की संधि (हसली की हड्डी) पर ७ क-
वच कटकर ८ दस्ताना कटकर ॥ ३४ ॥

पंच लहे छत जैत्र१९३।१।१०पितृव्यक तोमर असह लग्यो इक १
तत्थ ॥
अनुज इंद्र १९४।२।११ अरि १९४।३।१२ सल्लदुहुरन इम सहिय ए-
क१ दुव२ छत क्रमसत्थ ॥
सूर सचिव केसव१२ सोमानी अठ्ठ८ प्रहार लहे निज अंग ॥
इतिमुख हुव चउसत४०० घायल इम भट कहियत अब जे असु-
भंग ॥ ३५ ॥
परयो दयालु १९०।१ तनय वह भूपति १९१।१ अर्जुन १८८।१ अ-
क्खयराज १८९।२ पउत्त १६।१२ ॥
सेखाउत्त कुम्भ बहु संहरि जोध अमान२ परचो जसजुत्त ॥
भीर३ परयो जद्दवकुलभासक अरिसासक नृप मालक एह ॥
भीम४हिनाम कबंध घनैं भट गेरि अराति गये सुरगेह ॥ ३६ ॥
रामसिंह५ सीसोद महारन बसु हुव खंडनखंड बिखंड ॥
गोहिल स्यामद संखुला गिरिधर७ दहिया मान८ चंड परदंड ॥
बीर जवन सुबहान९ बहादुर१० परे नूर११ सहतीन३ पठान ॥
सब इतिमुख बुन्दीस सहायक द्विसत रु सठि२६० झरे जयदान३७
परत छतन उतके सत पंच५ रु मरत त्रिसत३०० अष्टक८मुख्यादि
खानजिहान भज्यो जिय लै खल सभय पराजयफल संपादि॥
गयो दुरि सु लोदी कोलागढ जिततित इतर सहायक जूह ॥
सवन सिबिर लुट्टे पहु संभर देखिदेखि द्रुत पहुँचि दुरूह ॥३८॥
रैन१९२।१ भूप बुरहानदंग रन मंडि कोल कहे जे मिच्छ ॥
उनहि टारि लुट्टे वसु इतरन बसुपर रहियन लोभ अनिच्छ ॥
सिबिरसेस सेवन लुट्टे सब लँहँ बुन्दीस चखावत तेग ॥
गहिय लूट सत्रह जुत सत ११७गज बाजी सर ढग दुव२२५ बरवेग ३९

---

१ इत्यादि २ मारेगये ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३ घायल ४ अर्जन (संग्रह) करके ५ छिप गया ६ अन्य ७ समूह ८ डेरा ॥ ३८ ॥

मंजुल तोप त्रिसट्ठि६३ अयोमय जोर जवर सत्तरि७० जंबूर ॥
सब सिबिरन डारिमुख सामग्री सबहि गहिय बुन्दीपति सूर ॥
गिनि लोदी प्रविस्यो कीलागढ द्रुत सुहु जाइ लयो गरदाइ ॥
त्रय३ दिन१ रत्ति२ संतत१ दै तोपन लोपनगढ लग्गिय हठजाइ॥४०॥
नट्ठो डारि कछु खिल तोजी३ निस जानि प्रलय खिन खानजिहान॥
नृपसह भट पहुँचत निश्रेनिन३ सक्यो न रहि जिम असु अवसान४॥
उपहारहु कछु लै न सक्यो यह हेति१ द्रविन२ मुख गढहि बिहाइ
संधि चोर जग्गत जिम स्वामी इम कढिगो जिमातिम अकुलाइ४१॥
विजय निसान झुकाइ सता१९४१ बुध कीलागढहु स्ववस इम किन्न ॥
कढि न सके कति सत्रु सहायक लसि हसि लेहु लाइ उर खिन्न
पर तिहिं दुर्ग न रक्खे ते पर बलं न गहैं जहँ तत्थ बसाइ ॥
निज सुभटन मिलि हठन निहोरत प्रत्यागमन कियउ खिन पाइ ॥ ४२ ॥
अयुत१०००० साहदल बिच जो उत्तम मरत१ बचत जान्यों महिपाल ॥
कीलागढ दुर्गाधिप तिहिं करि सेन अयुत१०००० तँहँ धारि अरिसाल ॥
इम अरिसाल१९४१ प्रथम१ जय उद्धरि हनि बहु अरि गय साहहजूर ॥
मिलत अंस थप्पलि मुगलेसहु सो सराहि लायो उर सूर ॥४३॥
जंपिय नृप लोदी सुत जेठ२ हरि११३।३ काका जो प्रथम हनै न॥
तो जवनेस गिनहु निहचै तुम विजय रावरो कबहु बनै न ॥

---

१ लोहे की २ निरन्तर ॥ ३९ ॥ ३ निसरनियों से ४ प्राण के अन्त में ५ शस्त्र और धन आदि ॥ ४१ ॥ ६ शोभायमान होकर ७ परन्तु उन शत्रुओं को उस गढ में नहीं रक्खे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

बडे दुव२हि लोदीसुत बहुत छोटे२ हने मैं१ रु रनछोर२,
खानजिहान भज्यो रन तजि खल इहिं जय१हेतु हरी१९३।३हि न ओर ॥ ४४ ॥
तखतनसीन हुकम बस बत्ती प्रभु इन्ह सहज इतर निरपेक्ष,
स्वामी दृढ परखहु दै सासन अब न होहु तब गहन अवेक्ष ॥
तिम नृपसंग साहभट हे तिन सुहि जयबीज कह्यो हरिसीह१९३ ॥
नृपतिन सह यह वहुरि निवेदिय यह जस लिय काकाहि अबीह ॥
इहिं जय रीझ्झ जोहि प्रभुके उर हरि१९३।३ कहँ बखसहु सोहि हजूर,
असहन जदपि साहदिय हो यह पहु संकोच तदपि परिपूर ॥
स्वस्थ भयोहरि१९३।३ जब धायनसन संसद बुल्लि तबहि तिहिं साह,
दम्म लक्ख१००००० मित आय पटा दिय लिखि गुग्गेर १ मुख्य पुर लाह ॥ ४६ ॥
दम्म त्रिलक्ख३००००० पटा कति मत दिय पै पत्तन गुग्गेर१प्रधान ॥
सह गज१ आपि हजारी१००० सुनसुब२मन्निय खास सभासद मान ॥
अरु बुरहानपुर सु किय आगस माफ कराइ सुपै महिपाल ॥
उपदां१भिन्न भिन्न उत्तारन२हरि१९३।३पँहँ तसहु सधाये हाल ॥४७॥
विजपरीक्ष सुहि समुझि साह वलि बिनुलूटन दिय नृपहिं बिसेस ॥
तदपि निवारि लूटमैं तोपन पीलु१तुरंग२मुख्य सब किय पेस ॥
सिंधुर सकल इक्कसतसत्रह११७प्रथित सप्ति सत द्वै रु पचीस२२५ ॥
आयत मुख्य पटा लय अट्ठ८क बर जंबूर पचास रु बीस७० ॥४८॥
भानियत तीन३रजतमय भेरी अरु त्रिलक्ख३००००० मुद्राकहुअग्ग

१ इस जय का कारण हरिसिंह ही है ॥ ४४ ॥ २ इच्छा रहित ३ वस्तु का देखना अर्थात् परीक्षा ४ निर्भय ५ सभा में बुलाया ६ रुपये ७ आमद अर्थात् लाख रुपये सालाना आमदनी का पट्टा दिया ८ लाभ ॥ ४६ ॥ ९ अपराध १० नजराना ११ न्योछावर ॥ ४७ ॥ १२ हाथी १३ प्रसिद्ध १४ घोड़े १५ बड़े फैलाववाले आठ डेरे ॥ ४८ ॥ १६ चांदी के १७ नक्कारे (नोबत)

असि१बंदूक२आदि बहु आयुध१अंके चमर२ध्वज२छत्र३उदग्गं ॥
इत्यादिक नृपकै सब आये अरिसिबिरन लुंटित उपहार ॥
नालीजंत्र त्रिसठ्ठि६३दये नन साह लये सासन अनुसार ॥ ४९ ॥
आसफ१सहित महावत२आखिय नृपहिं जदपि इम बहुत निहोरि॥
हरि१९३।३कँहँ रीझ दिवावहु क्यों हठि जोकिंनलेहुतुमहिंसबजोरि॥
तदपि नरेस न लुब्धं भयो तँहँ देसहु काका अर्थ दिवाइ ॥
बलिं करि सिक्ख समागतें बुंदिय पहिलैं इम दक्खिन जयपाइ॥५०॥
पुनि तँहँ सचिव रानके प्राघुन व्याहन चढन त्वरा करि वेहि ॥
पुर बुंदिय आये तिनतैं पहु जुत हित मिलि प्रमुदित किय जेहि॥
व्याहन चढन सचिव केसव बुध किय आरंभ अनेक प्रकार ॥
उचितन उचित निमंत्रन अप्पि रु बुल्ले सव सह महव्यवहार॥५१॥
हल्लवती सत्ता१९४।१दुल्लह हुव अर्चि गनेस१मातृगन२ आदि ॥
मंगल बस्तु१सकंकन२मिश्रित सयँ बंधिय जयजस संपादि ॥
उफनंतछक्कमनसिंज द्युति आकृति भूप जई गय१रुप२मैय३भीर ॥
सब असगोत्र१सगोत्र२सनाभि३न बीरनं सज्जि जथाक्रम बीर ॥५२॥
॥
॥
भूपति१९१।१आदिकटे रन जे भट सुत तिनकेसबविधि सनमानि ॥
बलि अप्पन जयकार प्रबीरन आदर अधिक जथाक्रम आनि॥५३॥
सबयँ जिते भूखन१प्रहरन२सम कुंकुम बसन३दुलह अनुकार ॥
जन्यँ बने नृपसंग चले जुरि अन्य घने बयवृद्ध उदार ॥
गज१वाँसंत२सकट३वेसँग४गन संभृतँ करि लक्खन धन संग ॥

१राज्य चिन्ह२उदग्र३तोपें ॥४९॥ ४लोभी नहीं हुआ५आया ॥ ५० ॥६पाहुने ७प्रसन्न किये ८ उत्सव सहित ॥ ५१ ॥ ९ कंकण डोरड़ा से मिलाहुई १०हाथ के बांधा११कामदेव की सी कान्ति१२ऊंट ॥५२॥५३॥१३अपने समान अवस्थावालों को भूषण, शस्त्र, केसरिया वस्त्र दुलह के १४ सदृश दिये १५ बराती १६ ऊंट १७ खच्चर १८भरकर

बुंदीपति किय कुंच बिबाहन चढि मारीचं लसत चतुरंग ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

अनुज१पितृव्य२बंधु३इम, गुन सगुत्त१ असगुत्त२ ॥
संग चले सामंत सब, अर्जन सुजस अछुत्त ॥ ५५ ॥
रक्खन जनपद कति रहे, स्वामिकथन अनुसार ॥
गढगढ भय डारत गये, बट्ट बरातिन बाँर ॥ ५६ ॥
सद्धि उचित बुंदीहि सब, रुचि कोटा अनुरत्त ॥
माधव१९३१२काका कछुक मिस, पच्छो गेहहि पत्त ॥ ५७ ॥
पहुँच्यो पहु इत उदयपुर, वरसत घन धन बिंदु ॥
अर्थिन करत प्रसन्न इम, उत्पलगन जिम इंदु ॥ ५८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरपाणिग्रहणात्पूर्वं यवनेशाज्ञया दक्षिणदेशमासाद्य समरे लोदीखानजहाननामानं विजित्य यवनेन्द्रजयसंपादनं१, राजादिबुन्दीवीराणां क्षतमरणासादनानन्तरं शत्रुसामग्रीलुण्टनभणनं २, एतद्विजयाच्छत्रुशल्यस्य स्वपितृव्यहरिसिंहार्थं यवनेन्द्राल्लक्षार्पितदेशदापनं३, दिल्लीदङ्गाद्बुन्द्यागतशत्रुशल्यस्य करग्रहणार्थमुदयपुरगमनवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥

---

१ मुख्य हाथी पर सवार होकर सेना सहित शोभायमान हुआ ॥५४॥ अछूता यश २ संपादन करने को चले ॥५५॥ ३ देश की रक्षा करने के लिये ४ समूह ॥ ५६ ॥ ५ गया ॥ ५७ ॥ ६ रात्रिविकासि कमलों को चन्द्रमा प्रसन्न करता है तिसप्रकार धन रूपी बिन्दु से याचकों को प्रसन्न करता हुआ उदयपुर पहुँचा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का उदयपुर विवाह करने के पूर्व बादशाह की आज्ञानुसार दक्षिण देश में जाकर लोदीखानजहाँन से युद्ध करके बादशाह का विजय करना १ राजा आदि बुन्दी के वीरों के घायल होने और मारेजाने के अनन्तर शत्रु की सामग्री लूटने का कथन २ इस विजय के कारण शत्रुशाल का अपने काका हरिसिंह को बादशाह से लाख रुपये का पट्टा दिलाना ३ दिल्ली से पीछे बुन्दी आकर शत्रुशाल का विवाह करने के अर्थ उद-

आदितश्चतुर्दशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१४

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उतरतजाइ बरात इम, सद्धिय समुचित[1] सद्य[2] ॥
पहुँचन तोरन लग्नपर, आरंभिय अनवद्य[3] ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदीअधिप बरात पत्त जिहिं लग्न उदैपुर ॥
वाहीदिन दुवर् ओर धरनिपति धरि दुल्लह धुर ॥
आये तिनप्रति एह सता १९४१७ पठई कहि सत्तम[4] ॥
गज १वा हय२चढि गमन करहिं तोरन कैसे क्रम[5] ॥
दंभीन तवहि तिन दुल्लहन चढि वाजिन चलिहँ चविय[6] ॥
अप्पहि गइंद छन्न न अवनि जोग्ग हयहि इहिं खिंन जविय ॥
सता १९४१९ यहहि गिनि सत्य क्रमन हय सज्ज कराये ॥
उतके दुल्लह उच्च इभन छल करि चढि आये ॥
जान्यौं छल नृप जदपि बाँह तजि न गज बइठो ॥
पहुँचत मुख्य प्रतोलि[11] दुलह हय थित इक१ दिठो ॥
हरिदासनाम कवि बारहठ[12] बचन बान दिय तहँ बिदित ॥

...पुर जाने के वर्णन का दूसरा मयुख समाप्त हुआ और आदि से २१४ मयूख हुए ॥

१ उचित कार्य २ तुरन्त ३ पाप रहित अर्थात् पुण्य कार्यों का आरंभ किया ॥ १ ॥ जिस लग्न पर बुन्दी का राजा विवाह करने को गया उसी लग्न पर अन्य दो राजा विवाहने को आये उनसे ४ अत्यन्त पूज्य राजा शत्रुशाल ने कहलाया कि तोरण पर हाथी वा घोड़ों पर सवार होकर ५ किस रीति से चलेंगे ६ घोड़ों पर चढ़कर चलना कहा ७ अपने हाथी पृथ्वी में छिपे हुए नहीं हैं इसकारण इस समय ८ वेगवान् घोड़ों पर चढ़कर चलना ही उचित है ॥ २ ॥ ९ ऊंचे हाथियों पर १० घोड़े को छोड़कर हाथी पर नहीं चढ़ा ११ द्वार (तोरण पोळ) १२ संढायच शाखा के हरिदास नामक चारण ने (सामान्य रीति से चारण मात्र को बारहठ कहते हैं इसी कारण हरिदास संढायच

गज उचित द्वार हय चढि गमन हढ्ढ६१न सम न प्रसाद हित ।३।
सोहु असह सहि सुपहु कृत्य संठ्ठिय तुरंग करि ॥
वर सब उत्तरि बहुरि वरे निजनिज ओसर वरि ॥
ठाम जथोचित ठानि स्वसुर प्रासाद रीति सब ॥
अप्प अप्प पट[1]अयन[2] त्रय३हि वर ऊढ गये तब ॥
नृप दिय निदेस बुंदियनगर अप्पन१ अरु बंधुन२ अखिल ॥
इभ सेस जिते भेजहु इहाँ क्रम इम द्रम्म.दुलक्ख२०००००किल ।४।
पुर इम हुकम पठाइ बिहित[3]कारि नित्य जथाबिधि ॥
दब्बनचहि खिल्ल दुलह निखिल[4] खुल्लिय अलका[5] निधि[6] ॥
जिते रान जगतेस सुकवि पटुपन सनमानिय ॥
भूसित इक१ इक१ भेजि दये तिन्ह घर गज१ दानिय ॥
पोसाक२खास भूखन३प्रगुन आरु संगहि मुद्रा अयुत१००००॥
हे बिदित जिते तिन्ह हित हुलासि जब पठये अति मानजुत ॥५॥
द्वार द्विरद[7] नृप देन गह्नत किल कृपन कदाग्रह[8] ॥
दियउ रत्ति हरिदास उपालंभ[9] जु सनर्म वह ॥
तसगृह खास तुरंग१ सता१९४।१पठयो भूखनसम ॥
ओरन सन दल[10]अग्घ सिचय२ भूखन३ दूखन सम ॥
मुद्रा हजारपंच५०००हि प्रमित भेजि तदनु[11] ओरन भवन ॥
समुचित पठाइ बुंदिय सुपहु किति लियसु बंटहि कवन ॥ ६ ॥
किय संभर सतकार इमसु लिय सवन सुआदर ॥
दुखित इक१ हरिदास बंडे[12] लूमं[13] सु करिहै वर ॥

को बारहठ लिखा है) ॥ ३ ॥ अपने अपने १ डेरों में २ विवाहे हुए ॥ ४ ॥ ३ उचित ४ सम्पूर्ण ५ कुबेर की पुरी की ६ समृद्धि ॥ ५ ॥ ७ द्वार का हाथी, अर्थात् तोरण का हाथी देने के कारण निश्चय ही कृपण राजा ८ किसी लाभ में आग्रह करते हैं इसी कारण हँसी पूर्वक ९ ओलम्भा दिया १० आधा आदर और वस्त्र ११ जिस पीछे ॥ ६ ॥ शक्तावत को दिये हुए घोड़े को १३ पूंछ १२ काट कर

बहुरि तास गल बंधि भिन्न मिट्टीमय भाजन ॥
दलअंतर तारिदिय सपट१ द्रम्मादि समाजन ॥
सुनि नृप लिवाय जे देय सब देखि उचित ओरन दये ॥
खिल त्याग लेय सुनि कवि निखिल मागधेय मोदित भये ॥७॥
बदिय भूप मम बाजि दयो तजि जिहिं करि दुर्दस ॥
सो आवहिं ममसीम ततो मुख असित ठानि तंस ॥
चक्रीवान चढाइ बुरीगति खलहिं बिडारौं ॥
अंकहिं तो अवकास मूढ रंकहिं जो मारौं ॥
हमरै न द्विरद कछु दैनहो हय दिन्नौं इम ताहि हम॥
कटुबैन कुटिल तिम रत्ति कहि किन्न अबहु यह नीचक्रम।८।
उपालंभ सुनि एह दयो रानहु हरिदासहिं ॥
संढायचहु सिटाइ पुनि न जिम स्वमद प्रकासहिं ॥
बुंदीपतिढिग बुल्लि स्वीय कविजन इत सादर ॥
अक्खिय बढि सबअग्ग बित्त बरसहु बनि बादर ॥
दम्मन जितेक पुव्वहु दये बहुरि न दिय जिमकोहुबढि ॥
इहिंरीति त्याग बंटहु असह्र पुनिपुनि मंगहु लेहु पढि ॥ ९ ॥
गजंआरूढन गर्ब बिगारि जिम न सुख बतावहिं ॥
बहुरि बिवाहक बरन सकल अप्पन सुमिरावहिं ॥
बिरचहु ऐसी बत्त हुव जु अत्र१ न अन्यत्र२ हु ॥
रोम सुनत उब्भरहिं सिटहिं आधुनिकन सत्रहु ॥
साँवल१६६।२नगेस१६७।१मिश्रन स्वकवि बंदी दौलतराम१बलि

उसके गले में मिट्टी का फूटा*पात्र (गर्ग) बांधकर सेना में चक्र और१रुपये आदि सामग्री सहित ताड़ दिया२सब३अपना अपना बंट लेकर॥७॥४कालामुख करके५ गधे पर चढाकर उस दुष्ट को निकालूंगा६अवकाश हुआ तो उसको चिन्हयुक्त(कलंकित)करके उस मूर्ख को७रात्रि में॥ ८ ॥८ओलंभा ॥९॥ ९ हाथी पर चढकर तोरण बांधनेवाले दुलहों का गर्व मिटाकर मुख नहीं बतासकें जैसे१०इस समय के ११ यज्ञ अथवा उत्तम दान ॥१०॥

सुनि प्रभुनिदेस इहिँ मुख सबन किय प्रारंभन दान कलि ।१०।
इम *ग्रंहति आरंभ भयो सबतैं बढि भासत ॥
मिलि कवि चारनमुख्य प्रकट जस ग्राधिक प्रकासत ॥
*कछु मेवारेकविहु गंठि अंतर छल साग्रहैं ॥
वलजैं[2] आइ इम सबन अरज भूपहिँ पठई यह ॥
कविमात्र सिरहि उपकार किय सगताउत गोकुल सुमति ॥
तसहत्थ त्याग बंटहु ततो अलपहु लै व्यय है न अति ॥ ११ ॥
सता[1]९४[1]अरज सुहि सुनत अंनखि पठयो यह उत्तर ॥
होहु बिगारनहार त्याग जेजे वँदान्यतर[3] ॥
तेते छत्र१ रु तुम२हु मुख्य गोकुल३सम्मत मिलि ॥
कोरि[4] विघ्न किन करहु गँरुव वितरन जैं हैं मिलि ॥
हमरे न गजहु हरिदाससहित हय मम दुर्दस[6] तबहि हुव ॥
कैं रान चहि रु इम जस करत धन जामिनघर रक्खि ध्रुव।१२।
सिक्ख कविन यह सूचि दई संभर दिन दुल्लह ॥
स्वसुरालय गय समय महामँह मचत महामहँ[10] ॥
सपनमहल सोपान[11] चढ्यो बावन५२ अनुक्रम चहि ॥
दिय तँहँ बावन५२द्विरद रसिक गजकेतु तुलाँ[12] रहि ॥
नारीन निकँर[13] वादन१ नटन२जहँ हे गान३जितेक जुरि ॥
ते बंटिदये इभ सब तिनहिँ बहुल निष्क[14]१दम्म२हु बहुरि ।१३।
न लखि होत निर्वाह थान जिनजिन गज थप्पिय ॥

---

*दान ? आग्रह सहित २द्वार पर आकर॥ ११॥ ३ अधिकदानी होवे सो हमारे त्याग को बिगाड़ो ४ क्रोड़ ५ बड़ा दान ६ बुरी दशा. धन का ७ प्रतिभू (जमानत देनेवाला). घर में ८ निश्चय ही रखकर ॥ १२ ॥ ९ बडा उत्सव होकर बह १० बडा तेजस्वी समय पर स्वसुर के घर पर गया ११ शयन करने के महल की सीढियों १२ कर्ण की बराबरी करके १३ स्त्रियों का समूह वाद्य बजाने और नाचनेवाला और गानेवाला जितना वहां था उसको १४ बहुत मोहर और बहुत रुपयों के साथ हाथी बांट दिये॥ १३ ॥

मंगियं जिनजिन मुल्ल अधिक तिन्हतिन्ह प्रभु अप्पिय ॥
दुरे महल खिल दुलह सिटत मातहि श्रद्धासम ॥
रान बसहि धरि रित्थं तित्थं बनि तित्थ कृपनतम ॥
बुंदीस सुजस दब्बे बिमन रंच दिनन पाये रहन ॥
इहिं बीच लिखे पहुँचे अखिल सेस छिरद सब देससन ॥१४॥
बीकापुर१इक्क१बर पर२सु भट्टी जैसलपुर२ ॥
कतिक ख्यात इम करत धरत कति इतर नाम धुर ॥
बर इक्क१हु कति वदत बरन त्रिक३ कतिक बतावत ॥
किमहु होहु ऋत कोहु जोहु मति मग्ग न जावत ॥
गृह निज परंतु जे सब गये दुर्मनपन धारत दुलह ॥
संभरअधीस रहि इक१ सत१९४१मंडिय अतुलित दानमह।१५।
बुंदीपति चिर बहुरि उदयपत्तन रहि इक्कल१ ॥
अखिल त्याग उपहार बंधि तँहँ निचयं बित्तबल ॥
इमभूरति नवअष्ट१६९ दये मैंगल दिन दुल्लह ॥
इक गुन सर५३१ मित इभन मुल्ल अप्पिय उद्वह मह ॥
अप्पिय मतंग सतसत्त७००इम सहँस इक्क१०००बाजी सु गत॥

बाकी के दोनों दुलहे अपनी श्रद्धा सहित लज्जित होकर १ छिपगये सो वे अत्यन्त कृपण दुलहे राणा के २रिक्थ(धन)को धारण करके अर्थात् महाराणा के दिये हुए धन को लेकर बसे और ३दीखने में स्त्री के रज के समान होगये; अथवा स्त्री की रजयुक्त योनि के समान अदर्शनीय(नहीं देखने योग्य)होगये "यहां एक तीर्थ शब्द स्त्री का रज वाचक और दूसरा तीर्थ शब्द दर्शन वाचक तथा योनिवाचक है. जिसमें शब्दार्थचिंतामणि का प्रमाण है यथा "तीर्थम्–नारीरजसि । दर्शने । योनौ" इसके उपरान्त सामान्य क्षेत्र का नाम भी तीर्थ है जिससे यह अर्थ भी होसक्ता है कि उस क्षेत्र में वे नारीरज के समान अदर्शनीय होगये एक दुलहा बीकानेर का और दूसरा दुलहा जेसलमेर का भाटी था ४ कितने ही अन्य नाम कहते हैं और कितने ही लोग एक वर और कितने ही तीन वर कहते हैं सो किसी प्रकार होओ और कोई बात सत्य हो परंतु ५ उदास ॥ १५ ॥ ६ धन के समूह के बल से ७ मूर्तिमान् हाथी ८ विवाह के

मुत्तीन द्विसत२०० कुंडल जमल२ स्वर्णकटक जुग२ पंचसत५००
पंचसहँस५००० सिरुपाव करभ आदिक औरहु कति ॥
इम वितरन उपहार रक्खि इतरन वितरन रति ॥
खिल रुप्पय त्रयलक्ख३००००० अखिल खटलक्ख६००००० जुरे इम ॥
किय निहाल जाचकन जलद चातक१ केकिन२ जिम ॥
बंटतहि छोरि सचिवन बहुरि आयउ बुंदिय अपन इत ॥
उत स्वापतेय विदुन उम्भलि मेघ सचिव बरखे अमित ।१७।
उदयनेर आश्रइन पीलु इक१ दियउ ग्राम१ प्रति ॥
हुव जँहँ पावनहार अधिक तँहँ अधिकअधिक अति ॥
सिंधुर मोतीसर१न मिले खट नृप जसजामिन ॥
लहे उभय२ राउलरन द्विरद इक१ मित दम्मामिन ॥
वारहठ१ बिप्र बंदी३ बहुल हेलासह गजबंध हुव ॥
इम कहत लोक पावत अबहु मर्म१ रंजत२ तिहिंदंग भुव।१८।
अज१ न भये तिन्ह अपन भये तिन्ह अपन गजरन भर॥
लघु मंगन डुंब लग बंधि अंगन लिय गैवर ॥
जाचक जाचकजनहु धनी हस्थिन हुव धामन ॥
भरे द्रविन जिनभौन कौन कहि कहि धनकामन ॥
जन रान अन्न जीवत जिते अक्खहिँ दुल्लह इक१ यह ॥

उत्सव में हाथियों की कीमत की १ मोतियों के जोड़े २ स्वर्ण के कड़ों के जोड़े ॥ १६ ॥ ३ ऊंट ४ इसप्रकार दान की सामग्री रखकर दूसरों की दान में प्रीति नहीं रक्खी अर्थात् इतना दान देने की श्रद्धा किसी में नहीं रही ५ मनुष्य, ६ मयूरों को ७ धन की ॥ १७ ॥ ८ उदयपुर के आश्रित चारणों को प्रति ग्राम एक एक हाथी दिया ९ मोतीसरों (चारणों के याचक विशेषों) को छः हाथी मिले १० ढोलियों को हाथी मिला चारण, ब्राह्मण, भाट ११ खेल से ही गजबंध होगये १२ स्वर्ण १३ चांदी उस नगर की भूमि में अब भी पाते हैं ॥ १८ ॥ जिनके घरों में कभी बकरा भी नहीं रहा तिनके घरों में हाथियों के समूह होगये १४ छोटे याचक ढोली पर्यन्त १५ हाथी १६ धन से

जान्यौं सता१९४।१हि दातार जिहिं महँबिच गृहगृह किन्न मह१॥

नृप सचिवन तँहँ नियत त्याग बंटिय छमासद्दतक ॥
इतबुंदियपहु अप्प भूति बिलसिय जसभासक ॥
इक्क१हि गहि गल आँट दम्म सहजहि छलक्ख६००००दिय॥
सो किम व्यय संकुचहिं प्रचुर कौतुक१ हंगाम२ प्रिय ॥
जगतेसरानबाहिनीहु जिम चंद्रकुमरि१९४।८रानी चतुर ॥
निज रमन इष्ट साद्धिय नियत पायउ सुजस कुटुंब१पुर२ ।२०।
पट्ट लहि रु यह प्रथम१ बरी अष्टम८ रानी बर ॥
व्याही नवमी९ बहुरि उक्त रानी गढ ईडर ॥
स्यामलनामक सहर इक्क जँहँ तँहँ सिवआलय ॥
परंपरा तँहँ पिक्खि हड्ड६१ सततीन३०० दये हय ॥
तिम नृप बिसेस त्यागहु बितरि बुन्दीपुर आयउ बिदित ॥
खिल सत्त७ इमहि बरिहै निखिल जिम अवसर तिम सत्रुजित२१
पातुरि इत जोधपुर अधिप गजसिंह पुब्ब वह ॥
नाम अनाराँ नारि साहसन लहिय रीझसह ॥
बस तस इम सुकबंधसदा रक्खहिं सिर सासन ॥
जननि स्वसुत जसवंत तत्थ पठयो लघुतासन ॥
अक्खिय पदत्र तस तिहिं उठत अग्ग धरहु कहि दास इत ॥
जो मंगि कहै तो जोधपुर तू लघुसुत मंगहु त्वरित ॥२२॥
नम्र जाइ तस निलय जननि प्रेरित जसवंतहु ॥
पातुरिअग्ग पदत्र लहत खिनँ जाइ धरे लहु ॥
मतिमति कहि तिहिं कुमर अधिक लालित लायो उर ॥

---

१ उस उत्सव में घर घर में उत्सव कर दिया ॥१९॥ २उत्सव प्रिय ॥ २० ॥२१॥ माताने अपने पुत्र यशवंतसिंह को वहां शीघ्र भेजा और कहा कि वह गणिका उठे तब ३ जूतियां हाथ में लेकर उसके आगे रख देना और कहना कि मैं आपका दास हूं उस समय वह कहै कि मांग, तो तू लघु पुत्र है सो शीघ्र ही जोधपुर मांगना ॥ २२ ॥ ४ घर ५ उस समय शीघ्र उसके आगे जूतियां जाकर धरीं ६ लाड करके

मंगि कहत लिय मंगि प्रसू सिखयो सु जोधपुर ॥
पातुरि सुवत्त गजसिंह प्रति सूचि कहिय मम एह सुत ॥
लिखवाइदेहु कहि साह लग जोधपुरहि इहिं पट्ट जुत ॥२३॥
अंगज जेठो१ अमर बीर बिनु मंतु बिचारत ॥
पातुरि सासन प्रबल भुवंहिं करिवो इत धारत ॥
रट्ठोरन अधिराज रंच प्रतिपत्ति मूढ रहि ॥
दब्यो कलि१ कँदर्प२ चित्त रत पट्ट अभीष्ट चहि ॥
बुल्ल्यो स्वपुत्त जसवंत बुध पट्टु कनिष्ठहु पाइहै ॥
हमरे अभाव एहहि हुलास चामर१ छत्र२ चलाइहै ॥२४॥
प्रमदाप्रन इम प्रमद दै रु पत्तो जब दिल्लिय ॥
हजरतकेहु हजूर करन जोरि सु बिज्ञप्ति किय ॥
अंगज जेठो१ अमर लहहु नागोर अप्प लिपि ॥
जोधपुरहिं जसवंत देस जुत पाइ रहहु दिपि ॥
औरहु बिसेस कति हेतु इह मिलत मन्नि सुलतान सुहि ॥
प्रतिलोम पिक्खि अंग्रज१ अनुज२ जुग ठाँ करिदिय लेख जुहि २५
कछुहु बीरमानि कुमर अमर जनकहिं नन अक्खिय ॥
साहलिपिहु धरि सीस रहत नागोरहि रक्खिय ॥
इम पट्टप जसवंत जनक सँम्मत हुव अनुजहु ॥
बडीसुता संबंध पच्छें वह वरिय सता१९८१ पहु ॥
क्रम जो तृतीय३रानी कहिय सिंह सुता सीसोदनिय ॥
कर्मवति१९५१ तास जेठी१कनी करग्राहन तँह नियत किय ।२६।
नृपपतनी नाम करि कथित तीजी३राजकुमारि१९८१३ ॥

---

१ माता के सीखने अनुसार ॥ २३ ॥ बडा पुत्र अमरसिंह विना अपराध था तो भी २ निश्चय ही ३राठौड़ोंका राजा उसकी प्रवृत्ति में; अथवा उस अमरसिंह के बडप्पन में मूर्ख रहकर ४ कामदेव के युद्ध में दबकर ५ छोटा ही पावेगा ॥ २४ ॥ ६ बादशाह की हजूर में हाथ जोड़कर अर्ज की ७ आपके लेख से ८ प्रकाशित होकर ९ उलटापन ॥ २५ ॥ १० पिता की सलाह से छोटा होगया ११ पीछे १२ विवाह १३ निश्चय ॥ २६ ॥

तनया पहिली१तास विंद. जसवंत लई वरि ॥
बदत किते किय व्याह महिपपन लहि कबंधमानि ॥
कुमरपनहिं कति कहत बरी दुलही सु दुलाह बनि ॥
सक बिदित तत्थ निश्चय सहित कहिय तत्थ लिपि प्रकट करि
खिल जे उदंत बिचबिच अखिल भासि निकट भव दिन्न भरि ॥२७॥
पुब्बा१पर२नहिं नियत बिदित जान्यौं जिन्ह बत्तन ॥
तिन्ह संभव होइ तिम मिलत समुझहु श्रोता मन ॥
बरसन अंतर बत्त जदपि हम जोरिदई जँहँ ॥
लेहु सुनत अनुलोम१तजहु प्रतिलोम२भाव तँहँ ॥
कहुँ कथन सिंह अवलोक१क्रम भेकफाल२क्रम कहुँ भनित
॥२८॥

उदयनैर सन आत सिक्ख दै नृप प्रबोधसह ॥
निज काका हरि१ह३।३नामअँरहि दिल्ली पठयो वह ॥
तिम सिखयो मद तजहु भजहु जवनेस नम्र भंति ॥
इम न रहहु उनमत्त गहहु प्रभुपास दासगति ॥
गुग्गेर रहैं जिम स्वीयगृह जिम न लहैं छिन पिसुनजन ॥
जल१दुद्ध२मिलत इक१होइ जिम मिलि तिम रहहुसर्व मन ॥२९॥
पहिलैं बुरहानपुर रोपि जिंहिं भुज बेधे रन ॥
बलि पकरयो भरि बत्थ बंधि तस पेग्ध निबंधन॥

१दुलह॥२७॥ इन वार्तामें पहिले कौन हुई और पीछे कौन हुई यह क्रम नहीं जाना सो जहां जिसका सम्भव होवे तहां तैसा श्रोतागन समझ लेवैं इन वार्ताओं में वर्षोंका अन्तर है तो भी हमने जोड़ दी है परंतु वहां २ पाहली पहिले और पिछली पीछे कही गई है जिसमें ३ उलटा क्रम नहीं है इन में कहीं कहीं तो सिंहावलोकन (सिंह अपने मारे हुए भक्ष्य को आगे चलते समय पीछा फिरकर देखता है) क्रम से और कहीं कहीं भेकफाल (मैंडक कोई छलांग छोटी और कोई मोटी भरता है) के क्रम से कही है ॥ २८ ॥ ४ शीघ्र ५ नम्रता की रीति से ६ समय ७ चुगल ॥ २९ ॥ ८ बाण से शाहजहां के भुज को बेधा था और इसी शाहजहां की ९ पगड़ी के १० बंधन से बांधा था

दिय कैद हु भय दुसह प्रेनत किंकर बिधि प्रेरिय ॥
सोहि खुरम३।९।२अब साह हुव रु औगुन१गुन२हेरिय ॥
होते न होतु लोदिन हनन पाते किम गुग्गैर पुर ॥
न बढै प्रबीरपनसोंहि नर प्रभु देखत सेवन प्रचुर ॥ ३० ॥
इम प्रबोधि हरि १९३।३एह भूप दिल्लियपुरभेजिय ॥
जिहिँ उद्धत तहँ जाइ कछु न सिच्छा सुमिरन किय ॥
इक्क समय आखेट हन्यौं असिकारि मइंद हरि१९३।२ ॥
सु असि दिखावन साह कहिय मन रीझ दैनकरि ॥
कढ्ढि सु कृपान गहि मुट्ठि कर दिय तदग्र करि साहदिस ॥
मुगलेस हरि१९३।३सु मदमत्तमन रक्ख्यो तबहु पचाइ रिस ।३१।
दिल्लिय गय बुंदीस जवन पति तबहु भेजि जन ॥
सो माधव१९३।२बल सहित प्रीतिकहि बुल्ल्यो कोसन ॥
सत्थ धारि सु फरमान अरज माधव१९३।२पठई यह ॥
प्रभुके अतुल प्रसाद लह्यो बैभव मैं दुर्लह ॥
पुहवी प्रधान नव९परगनाँ१नियम धाम कोटा२नगर ॥
गज३बाजि४चमर५गढ६कोस७गन बिबिध मिले सब बस्तुबर ।३२।
बुंदीसन कढि सहित अनुग बंधिय नव आलय ॥
यातैं करियत उचित चय उपहार सबै चय ॥
परिगह१सुभट२प्रधान३थान नूतन इम थप्पहिँ ॥
आदर१बसु२अधिकार३सबन अधिकार समप्पहिँ ॥
करि देस अभय धरि रच्छकन सीमा स्ववस जमाइ सब ॥
सदनहिँ सम्हारि चुंबन चरन ऐहौं पासहिँ दास अब ॥ ३३ ॥
॥ षट्पात् ॥

---

१ नम्र करके २ चाकर की रीति से प्रेरणा की ३ बहुत चाकरी देखते हैं॥३०॥ ४ शिक्षा ५ शिकार में हरिसिंह ने खड्ग से सिंह को मारा ॥ ३१ ॥ ६ आपकी अधिक प्रसन्नता से ॥ ३२ ॥ ७ सेवक ने नवीन घर बनाया है ८ संग्राह्य सामग्री का ९ संचय करके १० परगह सहित ॥ ३३ ॥

नृपकाका अधिनम्र अरज माधव१९३।२ पठाइ पह ॥
अवलग निवसि अगार स्वीय जन धरि सन्हारि सह ॥
उदयनैर विधि ऊढ अधिपबुंदी जब आयउ ॥
माधव१९३।२ दै फरमान बहुरि तब साह बुलायउ ॥
संगहि तस रैन१९२।१सुव सज्जि निज सर्व गर्वगति ॥
पहुँच्यो दिल्लिय मनत सिक्ख भंगी न रता१९४।१ प्रति ॥
सुनतहि तदीय आगम सभा हजरत बुल्ल्यो हितसहित ॥
सेवन स्वकीय पहिलो सुमिरि उर लायो कर ऐंचि इत३४

॥ षट्पात् ॥

उपालंभ कछु अप्पि पास चिर करि आगमपर ॥
दियउ खास दीवान सतत अप्पन ढिग औसर ॥
सक दुव नव नृप१६९२ समय आत नृप रैन१९२।१ प्रसू इत॥
दिय बुंदिय तजि देह हेरि जिहिं जियत सर्बहित ॥
नृप सत्रुसल्ल१९४।१विधि करि नियत प्रेतकरम्म सब्धिय प्रथित
दिय द्विजन पुरट१ गो२ छिति३ प्रमुख करि अमेय व्यय श्रुतिकथित ॥ ३५ ॥

बल्लनोति अन्नविनु रतन१९२।१ पीछैं चउ४ समरहि ॥
अलप दुग्ध आहार व्रत सु तापस दुष्कर वहि ॥
अब्द त्रि वसु ८३ लहि आयु सद्धि सब विधि सवकै सिव
इमसक उक्त अनेह देह परिहरि पत्ती दिव ॥
महिपाल भरत प्रपितामही धरि संजम१ अवधान२ धुव ॥
महिदेव१जाति२पुरजन३प्रमुख भोजि अखिल किय कित्तसुव।३६।

१ अत्यन्त नम्रता से २ घर पर रहकर ३ विधि पूर्वक विवाह करके ४ रतनसिंह का पुत्र ॥ ३४ ॥ ५ समय (अवकाश) ६ विदित ७ स्वर्ण ८ वेद के कथनानुसार अप्रमाण खर्च करके ॥ ३५ ॥ ९ वालणोति १० कठिन ११ वर्ष १२ कल्याण १३ कहे हुए समय में शरीर छोड़कर १५ स्वर्ग में १४ गई १६ इन्द्रियों को रोककर १७ सावधान हुआ १८ ब्राह्मणों और अपनी जातिवाले पुर के लोगों सहित सबको भोजन कराके

छल महल१ पुनि छितिप रचन बुंदिय आरंभिय ॥
केसवमंदिर१*कमन पुरी पट्टनि प्रारंभिय ॥
पृथुल१ तुंगर२ प्रासाद उभय३ अद्भुत अपुब्ब इम ॥
बनतभये अतिवेग लगेलक्खन जिनमैं जिम ॥
नृपरचित थान ईतग्हु निखिल पुनि सूचहिं अवसानपर ॥
सव वत्तमैंहि संसरसौं सता१९३१ वधिय धुरंधर किति बर ।३७।
माधव१९३२ दिल्लिय मुदित सहित जगनाथ१९३४सहोदर
अनुज तास दिन इक्क१ साह पुच्छ्यो लहि औसर ॥
जंपहु रे जगनाथ१९३४ दुहुँ२न माता इक्क१ कि दुव२॥
हो यह इक१ इंगहीन समुझि सुहि प्रश्नरैन१९२।१सुव ॥
अक्खिय हजूर मम आंखि इक१ गदैविसफोटैक फुट्टिगय॥
सुनि साह अक्खि फुट्टिय श्रुतिहु सुन पूछ्यो पुनि कहुँसमय ३८
इत लोदी अफगान समर क्कारिपरत चउ४हि सुत ॥
कोलागढ तजि चकित जियहि लोगो साध्वसंजुत ॥
जिहिं अवसर अब जानि जोर पकर्यो पुनि जुट्टन ॥
बल अर्दन बल बंधि लग्यो दिल्लिय धर लुट्टन ॥
गयपैठि बहुरि कोलागढहु जंपत इमहु कितेक जन ॥
चहि सुतन वैर बालन चल्यो पैंड़पैंड मंडत प्रधन ॥ ३९ ॥
दक्खिन जन इम दुखित पुनिहु दिल्लिय पुक्कारिय ॥
बललोदी अब बढ़त दंमिजु हद्द१न दुक्कारिय ॥
उनहिं पठावहु अबहु साह निजकज्ज सुधारन ॥
वेहि चहतरन अड़ैं मरन१ अलसन अरि मारन ॥

॥ ३६ ॥ * सुंदर १ बड़ा २ ऊंचा ३ महल ४ और भी ५ सब ६ शत्रुशाल के अन्त समय पर कहेंगे ॥ ३७ ॥ ७ सगा भाई ८ समय पाकर ९ कहा १० एक नेत्र से काना था ११ माता (चेचक) के ११ रोग से ॥ ३८ ॥ १३ भय सहित १४ बहुत सेना से बल बांधकर ॥ ३९ ॥ १५ दंड देकर १६ धिकार देकर निकाला १७ निर्भय

सुनि साह बुल्लि माधव१९३१२ सुमति*अंसन थप्पि सराहि†अर॥
दै ताहि रीझ१ सह स्वीयदल२‡पिल्ल्यो खानजिहानपर॥४०॥
स्वीय जनक दिय सत्त७ रीझि रैन१९२१२हिं जयकारन॥
तबहि परगनाँ तेहु बहुरि छिन्नत किय बार न॥
सुत हरि१९३१३ बुल्ल्यो साह सो न पठयो जिम संभर॥
आगसं सिर धारि एह धनी बनि छिन्निलई धर॥
तामाँहिं तीन३दक्खिनतरफ कहे परगनाँ नाम क्रम॥
जीरपुर१खैर आबाद२जँहँ तीजो३चेंत्रत३आढयंतम॥ ४१॥
ए लय३माधव१९३१२अर्थ प्रथित चोथो४खलजीपुर४॥
चउहि अप्पि हित चाहि आनि विरुदनं उछाह उर॥
बखसि खास गज१वाजि२कटक अयुत१००००हि सहायकरि॥
मनहु राम हनुमान इम सु पठयो दट्टन अरि॥
बुंदीस सता१९४१२ तैसैं बिजय लूटहु बिलुतोपन लहैं॥
जातहि इतोक माधव१९३१२ जहाँ कृपा दुरदिस अंतर कहैं।४२।
रैन १९२१२ सुतहु रनरासिक सजि अप्पन वरूथ सब॥
साह अयुत१००००दल सहित तानि मुच्छन हंकिय तब॥
बीजापुरढिग१बदत कति रु तासौं उत्तर१कति॥
कति रेवा परकूल२तुली सूचनं फोजन तति॥
कछुकाल तोप संग्राम करि निडर रंच देरहु न किय॥
तिहिं खिन उठाइ माधव१९३१२तुरग करषी बग्गन बीच किय।४३।

नकिय१चकिय२अन्त्यानुप्रासः॥ १॥

उडत तरत्तर१ अमित सीस जितातित असि संक्रम॥
सुमन गिनहु निज समय सुमन चटकत२गुलाबसम॥

---

* कंधा थापकर † शीघ्र ‡ भेजा॥ ४०॥ १ अपराध २ अत्यन्त धनवान्॥४१॥ ॥ ३ प्रसिद्ध ४ उत्साह वर्धिनी स्तुति से ५ सेना॥ ४२॥ ६ सेना सजकर ७ सन्मुख होकर जुड़ी ८ पंक्ति ९ घोड़े की वाग को करषी करना दौड़ाने का सूचक है॥ ४३॥ १० खड्ग चलने से ११ श्रेष्ठ मनवालों के मन

कर१पय२ पल्लव१किरन तरुन लोहित किसलय२तति ॥
गुटिका१अलिगँन गुंजि कुसुम१लोचन२बिकसे कति ॥
गज१छिन्नभिन्न१मानहु गिरि२न सुम किंसुम२चल वात सह ॥
केतन१रसाल२पिक१घंट२करि किय माधव१९३।२माधव कलह ॥
आयो उलटत उदधि इक्क१ वीरहु अरि अड्डन ॥
जो खल खानजिहान हन्यो निर्दय बढि हड्ड६१न ॥
परि दुहुओर भट प्रचुर लुत्थिपर लुत्थि बिलग्गिय ॥
पलराशिन लहि पंति भूख पिसिताशिन भग्गिय ॥
दुस्सह भजाइ दक्खिनदलन बलन विजै बहि चलन चहि ॥
पहुँच्यो हजूर माधव१९३।२प्रथित लोदीसिर१सह किंत्ति२लहि।४५।
सुनसुव दिय मुगलेस हड्ड६१कँहँ तीनहजारी ३००० ॥
इभ१हय२भूखन३अप्पि किन्न अधिक सु अधिकारी ॥
सेवन हरि१९३।३सक्यो न रंचि उनमत्त भाव रस ॥
गढ तस ले गुग्गोर बखसि किन्नौं माधव१९३।२वस ॥
रंचक रिसाइ आदररहित हड्डवती पुनि आइ हरि१९३।३ ॥
बुंदीस उपालंभित बस्यो कापरनि सु निजवास करि ॥ ४६ ॥
दिल्लीपुर बहुदिवस रह्यो माधव सेवन रंत ॥
प्रतिदिन अधिक प्रसन्न साह दक्खिय नतिसंगत ॥
सुता बिवाहन सिक्ख पाइ कोटा आयउ पुनि ॥
जयसिंहहिं जामात चहि रु बुल्ल्यो उपदा चुनि ॥

अपने उस समय में गुलाब के पुष्प फूलने के समान फूले २ कलियों की पंक्ति के समान १ रक्त में हाथ, पैर और अंगुलियें गिरती हैं २ बन्दूक की गोलियां रूपी ४ भ्रमरों का समूह ५ पुष्पों रूपी नेत्र फूले. कटे हुए हाथी हैं सो ही पवन से कंपायमान ६ केसूला (ढाक के फूल) हैं ७ ध्वजा रूपी आम और ८ घंटा रूपी कोयल करके माधवसिंह ने ९ उस युद्ध को वसंत ऋतु के समान करदिया ॥ ४४ ॥ १० माँस के समूह को लेकर ११ मांसभोजियों की भूख भागी ॥ ४५ ॥ १२ पागलपन में रंगा हुआ रहा ॥ ४६ ॥ १३ सेवा में प्रीति करके

बनि दुलह कुम्भ पत्तो तबहिं मंडि बिबिध अनुरूप मह ॥
दिन्नी बिबाहि तनया बिदित सद्धि समय बिधि१प्रीति२सह ।४७।
प्रभु कविकुल परपुरुष मान १६७।१ अभिधान सुहमति ॥
महमानी तह मंडि असन चउ४ बिध भाविन अति ॥
निखिल बरात१निमंत्रि सहित जाचक२ जन संघन ॥
सह भट३ माधव१९३।२ सहित सकल भाजे पटुतासन ॥
तिनसौंहि वृत्ति माधव१९३।२तदनु लागि प्रसंश रिस करि लई॥
अरु सोहि दई महियारियन भूप सुनहु यह जिम भई ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

बुंदी पहिलैं बारहठ, सूचिय कवि सामोर ॥
संतति तिन्ह हुव नष्ट सब, जब उदर्कविधिं जोर ॥ ४९ ॥
तबहि उदैपुरबास तजि, जात जोधपुर जानि ॥
नृपको लहि सम्मत निपुन, कुमरहु करि गुरु कानि ।५०॥
सावरतैं बुल्लें सुकवि, क्रमि सम्मुह हुव२ कोस ॥
ईस्वर१६५।१ बुन्दी आनिकैं, तिम रक्खे निज तोस ॥ ५१ ॥
कुमर भोज१९१।२सह बुल्लि कवि, पुनि कासी खिन पाइ ॥
अधिपवृत्ति दिय ईस्वर१६५।१हिं, सुर्जन१९०।१ उचित सुहाइ।५२।
परसुराम१६६।१ साँवल१६६।२ प्रमुख, तिनके पंच५ तनूज ॥
तँहँ चउत्थ४खंधिल१६६।४तिमसु, पुनि माधव१९३।२कृतपूज ।५३।
निठ्ठि निठ्ठि कोटानगर, जिमतिमको हुव जान ॥
तिन्ह दै निजकुलवृत्ति तँहँ, माधव१९३।२तिम किय मान ।५४।
जयसिंहहिं तिनके तनुज, महमानी दिय मान१६७।१ ॥
पुनि माधव१९३।२ जिम खर्बपन, नृप हुव गर्बनिदान ॥ ५५ ॥
बुन्दीसन नृप भिन्न बजि, मान१६७।१ रोध किय मुंद्ध ॥

॥ ४७ ॥ १ समृद्ध २ हठ करके ॥ ४८ ॥ ३ आनेवाले समय के कर्म फल से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ४ चलकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५ छोटे पन से ६ राजा का गर्व ही कारण हुआ ॥ ५५ ॥ ७ मूर्ख ॥ ५६ ॥

आत रुक्यो न लवान१ यह, सता१९४१२ ढिग२हु मन सुद्ध ।५६।
सता१९४१२ समन भूपहु सुन्यौं, इम खिजि वृत्ति उतारि ॥
अप्पी कवि महियारियन, मान१६७११ मान सठ मारि ।५७।
लघु निबसैथ इक१ मोलखी, इनके रक्खि अधीन ॥
छिन्नि इतर सब किय छमहु, भिन्नन तनु जल मीन ।५८।
हिंडोली जिम ताल हुव, बनिक प्रधान विधेय ॥
कहियत सब अग्रिम किरन, सह विस्तर यह श्रेय ॥५९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरविवाहाभिहासि हयमारूढ़ तोरणावन्दनाद्धरिदासचारणस्य शत्रुशल्योपालम्भप्रदान१, उक्तहेतोरितरचारणार्थकरिदायकशत्रुशल्यमत्ताश्वस्य दुर्दशां विधाय हरिदासस्य शत्रुशल्यसेनायां तदश्वमोचन२, शत्रुशल्यस्य चारणादियाचकार्थसप्तशतकरिसहितसहस्रमिताश्वंयुतत्रिंशदयुतदानकरण३, अनारांनामवारांगनाप्रसादाद्गजसिंहकनिष्ठात्मजयशवंतसिंहयोधपुरराज्यप्रासादन४,कथापूर्वापरापरिज्ञानहेतुकसमयानिश्चयसूचन५, बुन्दीपति शत्रुशल्यपितृव्यहरिसिंहोन्मत्तताभणन ६, समेरकरदाक्षिणदेशस्थ

१ पोळपात पना उतारकर ॥ ५७ ॥ २ आग ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल के उदयपुर विवाह करने के समय घोड़े पर आरूढ होकर तोरण बांधने के कारण हरिदास चारण का शत्रुशाल को उपालंभ देना १ उपरोक्त कारण से अन्य चारणों को हाथी देनेवाले शत्रुशाल के दिये हुए घोड़े की दुर्दशा करके हरिदास का उस घोड़े को पीछा शत्रुशाल की सेना में छोडना २ शत्रुशाल का चारण आदि याचकों को सात सौ हाथी और एक हजार घोड़ों सहित तीन लाख रुपयों का त्याग देना ३ जोधपुर में अनारां नामक पातुरी की प्रसन्नता के कारण राजा गजसिंह के छोटे पुत्र यशवंतसिंह को जोधपुर का राज्य मिलना ४ कथा के पूर्वापर नहीं जानने के कारण समय के निश्चय नहीं होने की सूचना करना ५ बुन्दी के पति शत्रुशाल के काका हरिसिंह की उन्मत्तता का कथन ६ रत्नसिंह के छोटे पुत्र माधवसिंह को दक्षिण में खानजहान को युद्ध में जीतने के कारण बादशाह ज-

खानजहानविजयाच्छाहजहांयवनेन्द्रस्य रत्नसिंहकनिष्ठात्मजमाधवसिंहार्थसहस्रत्रयमिताश्वाधिपत्यप्रदान७,कोटाप्रतोलीपात्रत्वस्य मिश्रणशाखीयचारणपरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितः पंचदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुख, नृप मानिक्य सनाम ॥
क्रम चोथो४ इहिनाम करि, धुव हुव संभरधाम ॥१॥
नगरकोट गो जब नृपति, व्याहन चरम बिवाह ॥
मैरनि सुकामन धाम सब, बितरे सुजस बिमाह ॥२॥
हम कुल तब परपुरुख हुव, चंडकोटि मति चंड ॥
बाद छन्द भाखा मिश्र बदि, दिय वादिन जिन दंड॥३॥
मिश्रन दूजो२ नाम महि, जिनको ते जँहँ जाइ॥
सुकवि रहे मानिक्य सँग, पट्टालय१ पुर पाइ ॥४॥
कवि तिनके कुलमैं करन१५३।१, पीछैं हुव मतिपूर ॥
निवसे जे मेरुसौं नियत, दिस नैर्ऋत४ कछु दूर ॥५॥
करन१५३।१पुत्र हुव दोल१५५।१ कवि, तिनकै डुंगर१५५ तत्थ ॥
बिजयसूर१५६।१ तिनके विदित, सूर१ सूरि२ गुन तत्थ ॥६॥
जिन लहि कबहु दुरकाल जब, अर्बुद जनपद आइ ॥
बँटी कह व्याही बहिनि, भाँम समुद्र सुमाइ ॥ ७ ॥
सुरामत्त जिहिँ भाम सठ, मतिबिनु संसक निमित्त ॥

हांगीर का तीन हजार मनसब देना ७ कोटा के पोळपात पन की वृत्ति मीशण शाखा के चारणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१५ मयूख हुए ॥

॥१॥ १ अन्तिम विवाह २ मार्ग के मुकामों के ॥२॥३॥४॥ ३ मारवाड़ से ॥५॥ ४ पंडित ॥६॥ ५ देश में ६ वाटी शाखा के चारण ७ बहिनोई ॥७॥ ८ एक खरगोस के कारण

विजयसूर१५६।१ हनि सत्रु वनि, वंधिय अपजस वित्त ॥८॥
जरत संग तिनकी जुवति, पूरन गर्भ प्रवीन ॥
दारि पिट्ठि सिसु कड्ढि हुत, देयै ननंदहिँ दीन ॥ ९ ॥
हुव तिनको इम पिंडहव१५७।१, धरा विदित अभिधान ॥
जिम सुकुंभनृप कोटि१००००००० जिन, मुररि तजी तृन मान ।१०।
तिनहिँ गोरँ दिय अवूज१०००००००००तव, वच्छराज वरवीर ॥
वाघनवारे१ सहित वलि, सासन सप्तक७ सीर ॥ ११ ॥
तिनके हुव ग्रह सूर१५८।१तिम, सुत तिनके महसूर१५९।१ ॥
अंगज तिन्ह आनंद१६०।१ इम, प्रथित भक्ति गुन पूर ॥ १२ ॥
कर्मानंद१६१।१सनाम कवि, सुत तिनकै सुभसक्त ॥
वप्प१तनय२ए हुव२विदित, भये मुख्य हरिभक्त ॥ १३ ॥
कर्मानंद१६१।१तनूज कवि, धरिय लुंब१६२।१ अभिधान ॥
तिन्ह बुल्लिय चित्तोर तव, रायमल्ल जव रान ॥ १४ ॥
सासन उंटोल्लाव१ सह, देय तिनहिँ सव दत्त ॥
करि हित रक्खे लुंब१६२।१कवि, रायमल्ल अनुरत्त ॥ १५ ॥
लुंब१६।१सुकवि चउ४ सुत लहे, प्रथम सुनाम१६३।१प्रगाथ ॥
तदनुज वामन१६३।२नाम तिम, रायमल्ल१६३।३अरु नाथ१६३।४ ॥
सुत हुव तीन३सुनाम१६३।१कै, माधव१६४।१भानु१६४।२सुमंत्र ॥
अरु तीजो३गोइंद१६४।३इम, लय१हि रान परतंत्र ॥ १७ ॥
तनुं अग्रज माधव१६४।१तजत, थप्पि भानु१६४।२तिन थान ॥
प्रथित रान संग्राम पहु, मन्नैं अति सनमान ॥ १८ ॥
जक्खमल्ल जव रनरहे, महिपरेन१ रविमल्ल२ ॥

॥ ८ ॥ १ पीठ फाड़कर २ ननँद को दिया ॥ ९ ॥ ३ पीछला (पृष्टभव) ४ नाम ५ महाराणा कुम्भा के क्रोड़ रुपयों के दान को ६ मुरड़कर तृण के समान छोड़ दिया ७ अजमेर के गौड़ राजा वच्छराज ने ८ सांसण (उदक) ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ समर्थ १० पिता ॥ १३ ॥ १४ ॥१५॥ १६ ॥ १७ ॥ ११ विना स्नान शरीर छोड़ने पर ॥ १८ ॥

उत हुव बिक्रम१ भूप इत, सुरतान२सु बुधसल्ल ॥ १९ ॥
बिक्रम अक्खिय कवि१ बुध२न, करहु मदग्रज कित्ति ॥
मरिय मारि रविमल्ल१९८। मृध, जिम सब हह्ह६१न जित्ति ।२०।
कविता तिमतिम सवन किय, भनिय कछु न कवि भानु१६४।२ ॥
तिनपर बिक्रम रुट्ठि तव, किय हर्ग कोप कृसानु ॥ २१ ॥
जिहिँ तिनतैं सब ग्राम जुत, उँटोलाव१ उतारि ॥
असनहिँ रक्खिय रिंठ इक१, निजढिग गमन निवारि ॥ २२॥
हठिदासी सुत रान हुव, बिक्रम हनि बनबीर ॥
नापे कवि तासहु निकट, सो रिठ्ठहि गिनि सीर ॥ २३ ॥
जबहि उदय हुव रान जिहिँ, हठन सुकवि हक्कारि ॥
सत्य कहहु अक्खिय सुपै, न कवि कहिय निरधारि ॥२४॥
लई छितिहु दैबेलग्यो, इमहि प्रताप उदार ॥
क्रम दोहु२न हठ लंघि कवि, सोहु न किय स्वीकार ॥ २५॥
सच्ची बर्णन दे सपथ, पुनि जव कहिय प्रताप ॥
कहि जिम हुव तिम तबहु कवि, इलाँ गत न लिय आप ।२६।
तिम निकसत मेवारतैं, तजि दिन्नौं तिन देह ॥
मन्नहु नृप यह अप्पमत, अब बहुसम्मत एह ॥ २७ ॥
भिक्खन अग्रज भानु१९४।२सूत, उदैपुरहि बिधि अंत ॥
तब ईस्वर१६५।१गोइंद१६४।३सुत, मुख्य भये हगमंत । २८ ।
जिनतैं साहस१सपथ२जुत, पता नृपहु लहि पट्ट ॥
किय निदेस सच्ची कहन, बदहु जथातथ्यवट्ट ॥ २९ ॥
ईस्वर१६५।१तब जिम हुव अखिल, इत१उत२सूत उदंत ॥

१कुड्डि के शाल॥१९॥ २अेरे बड़े भाई कीर्ति करो ३युद्ध में ॥२०॥ ४नेत्र ५अग्नि ॥२१॥ ६ रींठ नामक ग्राम ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ७ गई हुई भूमि नहीं ली॥२६॥ ६ राजा रायसिंह यह उपरोक्त वृत्तांत थोड़े लोगों की सम्मति वाला है और इससे आगे का वृत्तांत बहुत लोगों की सम्मति का है ॥ २७ ॥ २८ ॥ ८ सत्यता के मार्ग से ॥ २९ ॥

बरन्यों तहँ कविता बिरचि, अधिप रैन छल अंत ॥ ३० ॥
तदनु सुकवि वह बास तजि, किय मरु गम्य प्रकार ॥
सासन उंटोलाव१सह, देतहु न लिय उदार ॥ ३१ ॥
पँहु हुतो जब जोधपुर, नाम उदय नरनाह ॥
तब कवि ईस्वर१६५।१ चिंति तँहँ, रहनलगे मरुराह ॥३२॥
कुमर भोज१९।१ सह श्रवनकरि, कासी नृपहिँ कहाइ ॥
सासन लहि बुंदी सुकवि, गहे सपथ गहाइ ॥ ३३ ॥
सावरपुर पहुँचे सचिव, बुंदिय ओर बहोरि ॥
ग्रानैं ईस्वर१६५।१ अग्घ आति, जथा उचित हित जोरि ३४।
नगर१ बरोदाके निकट, दक्खिन दिस गिरिद्वार ॥
कुमर समुख तँहँ जाइ कवि, लायो सादर लार ॥ ३५ ॥
क्रम्यों बहुरि लिन्ह संगकरि, कासीनगर कुमार ॥
सुर्जन१९०।१ तँहँ आदरसहित, आनिय सुकवि अगार ।३६।
सूचित विधि सब करि सुपहु, तिम ईस्वर१६५।१ कवि तत्थ॥
हड्ड६१नके किय बारहठ, अप्पि वृत्ति सह ग्रत्थ ॥ ३७ ॥
नेग बजत वृत्ति जु नियत, गुरु तामैं दुव२ ग्राम ॥
अप्पिय बम्हनखेट१ अरु, भीमखेट२ अभिराम ॥ ३८ ॥
जब पट्टनि१ बस ग्राम जे, अब लक्खैरि२ अधीन ॥
ऐसे निससथ अप्पये, खट६ करि दारिद खीन ॥ ३९ ॥
तिनमैं मुख्य लालान१ तिम, देवीखेटर२ दुपट्ट३ ॥
पर्पट४ बक५ रु रामपुर६, बक्से खट६ गसबट्ट ॥ ४० ॥
केसवकवि सामोरकहँ, सत्रसिंह२८।७ नरनाह ॥
प्रथम बरोदाप्रांत जे, दिय खट६ गाम दुवाह ॥४१॥
तिन्हकुल कोहु रह्यो न तब, भिन्नहि रक्खिय भूप ॥
सुर्जन१९०।१जे खट६ ईस्वर१६५।१हिं, अप्पे तब अनुरूप ४२

॥३०॥१॥३२॥३३॥ १ आदर (आदर) ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ २ घर ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥
१ ग्राम ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

तहँ कच्छोला१ सुरूप तिम, रोसुंदा२ हरिना३ रु ॥
दोडुंदा४ गिंदोलि५ दिय, चंपकखेट६ हु चारु ॥४३॥
कवि ईस्वर१६५।१ सकुटुंब किय, वास अजस्र लवान ॥
इत हरिना कहुँ आगमन, बस तिन अटन विधान ॥४४॥
कवि ईस्वर१६५।१कै नियति करि, पंच५ विदित हुव पुत्त ॥
परसुराम१६६।१ साँवल१६६।२ प्रथित, स्याम१६६।३ सुगुन संजुत्त ॥ ४५ ॥
तिम खंधिल१६६।४ चोथो४ तनय, सबलघु पंचम५ सूर ॥
सहँसमल्ल१६६।५ अभिधान सो, पन रन अचलन पूर ॥४६॥
प्रकट बसायउ सहँसपुर, निवसथ जिनजिननाम ॥
जु अब रावरे भट्टजन, रहि भोगत प्रभुराम२०३।४ ॥४७॥
सहँसमल्ल१६६।१ पतनी सती, कहियत लालकुमारि१६६।१॥
जो अपज पतिसह जरी, अतुल दुपक्ख उधारि ॥४८॥
परसुराम१६६।१ हुव पुत्रजुत, पट नगराज१७६।२हिं पाइ ॥
साँवल१६६।२ सुत भूपाल१६७।१ सुहि, भगवंतदास१६७।१ सुभाइ ॥ ४९ ॥
सुत तीजे३ सुत स्याम१६७।३के, कर्मचंद्र १६७।१ पट्टकर्म ॥
चोथे४खंधिल१६६।४कै चतुर,मान१६७।१दलन अरिमर्म५०
ईस्वर१६५।१कै हुव सचिव इक, वनिक राम बसु बित्त ॥
दोडुंदा कवि तिहिं दयो, चहि सासन बस चित्त ॥५१॥
कन्या हुव इक१ रामकै, सो हम्मीर१९०।१ सुथान ॥
हिंडोली व्याहीहुती, भनि समीप सुखभान ॥५२॥
दोडुंदा पाउसदिनन, कबहु न जाइ कनी सु ॥
आई घर रथतैं उतरि, स्वचरन पंक सनी सु ॥५३॥

॥४२॥४३॥ १ निरन्तर लवान नामक ग्राम में रहे और इधर हरणा नामक ग्राम में भी कभी कभी आते रहे ॥४४॥ २ भाग्य से ॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥ ३ शत्रुओं का मर्म दलनेवाला ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ४ कीचड़ में भीगे हुए चरणों से

सरस्सु प्रति मंगिय सलिल, अंघ्रिन धोवन आक्खि ॥
बुल्लि वह तव बप्पके, संचित धन जग सक्खि ॥ ५४ ॥
कहि तासौं व्यय करि कछुक, बिरचि तालमय बीच ॥
नावचढो आवहु निलय, कबहु न लग्गैं कीच ॥ ५५ ॥
इहिँ आक्खिय तातहिँ यहे, तिहिँ जल संभव तुल्लि ॥
रचिय रामसागर सर सु, खरच खजानौं खुल्लि ॥ ५६ ॥
हम्म१९०१कहिय मम दंग हद, तुमरो है किम ताल ॥
कहिय बनिक तुमरो सु किम, हम चाहत जसहाल ॥ ५७ ॥
इत दोडुंदा सीम इम, मही रुकैं जलमाँहिँ ॥
सो हमरी जानहु सदा, निज हद हमरी नाँहिँ ॥ ५८ ॥
बनिकराम यह लिखि विदित, पुनि ईस्वर१६५मत पाइ ॥
रुचिर रामसागर रच्यो, नव कासौर खनाइ ॥ ५९ ॥
कवि ईस्वर१६५।१वपुहान किय, परसुराम१६६।१लिय पट्ट ॥
रक्खिय सोदर नृप रतन१९२।१, बहिय दुगम कुल वट्ट ॥ ६० ॥
दक्खिनतैं जब आइ द्रुत, बुंदी माधव१९३।२बीर ॥
लोभी पुनि जावनलग्यो, सो कोटा लहि सीर ॥ ६१ ॥
परसुराम१६६।१सन तब प्रनत, अक्खिय माधव१९३।२एह ॥
संग देहु इक१बंधु१ सुत२, गिनि स्वकीय मम गेह ॥ ६२ ॥
जंपिय कवि हम्म अल्पजन, तुम कुल प्रचुर प्रतान ॥
हाकिम कित है बारहठ, मित१ कवि२बहु१जजमान२ ॥६३ ॥
तदपि प्रसभ माधव१९३।२तन्यौं, कवि तब करि तस कानि ॥
अक्खिय खंधिल१६६।४जाहु उत, माधव१९३।२कवि हिय मानि ॥
माधव१९३।२तब सुत मान१६७।१ए२, मित्तहु चित्त मिलाइ ॥
बिरसहु इम कबहु न बनैं, जमहु अभय तँहँ जाइ ॥ ६५ ॥

आई १ पैर धोने को जल मांगा २ जगत् साक्षी है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ नवीन ३ तालाव खुदवाया ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ विशेष नम्रता से ॥ ६२ ॥ ५ बहुत विस्तार वाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६ मित्र ॥ ६५ ॥

आक्खिय खंधिल१६६१४ अग्रज१हिं, माहिपवंस सबमाँहिं ॥
मेटहु जो न विभाग मम, यह तो स्वीकृत आँहिं ॥ ६६ ॥
इम खंधिल१६६१४अरु मान१६७१२ए, उभय२पिता१सुत२आनि ॥ ॥६७॥
मित मासन अंतर अवधि, दिय खंधिल१६६१४ तजि देह ॥
किय तसथान सु मान१६७१२कवि, सुत माधव१६३१२अतिनेह॥६८॥
पै पहिलैं चउ४ परगनाँ, खत बक्खसीस लिखाइ ॥
त्रय हजार३०००सुनसब तखत, पुनि मुग्गेर१सु पाइ ॥ ६९ ॥
बारन१ हय२भूखन३बसन४, पंचम५प्रीतिपसाद५ ॥
आतहि कोटा पाइ इम, बढ्यो अहम्मति बाद ॥ ७० ॥
कन्या निज दिय कूरमहि, मिश्रनकवि तँहँ मान१६७१२ ॥
जाचक१स्वक२रु बरात३जन, भोजे सब रुचि भान ॥ ७१ ॥
तदनंतर अप्पहिं अतुल, माधव१९३१२ मन्नि महीस ॥
बुंदी१जैपुर२प्रतिम बनि, स्मयभर ओट्यो सीस ॥ ७२ ॥
कवि मान१६७१२हिं माधव१९३१२कहिय, ममकुल वृत्ति स्वमानि
इतरन लेहु न देहु अब, अधिपति कविपन आनि ॥ ७३ ॥
सफर भये तुम सिंधुके, जिन अब बुंदिय१ जाहु ॥
बरजि लवान२हु निज व्रजन, लेहु विभव सुख लाहु ॥ ७४ ॥
हम भूपति१तुम बारहठ२, उज्झहु ओगन आस ॥
आक्खिय कवि सुनतहि अनखि, गर्बहु जिन लघुप्रास॥ ७५ ॥
बुन्दीसम कबहु न बढहु, जिन गर्बहु मद जोर ॥
स्वीकृत तुम कुल वृत्ति सन, असु रक्खन तजि ओर ॥ ७६ ॥
पुरबुन्दी१ रु लवान२पैं, रुकिहै गमन न रंच ॥
अन्नदकौं कहि दै अधिप, बिनु नृप पदहु अपंच ॥ ७७ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १ हाथी ॥ ७० ॥ ७१ ॥ २ बुन्दी और जयपुर के सदृश बनकर गर्व का भार मस्तक पर ३ झेला ॥ ७२ ॥ ७३॥ ७४ ॥ ४ और की आश छोडो ॥ ७५ ॥ ५ प्राण ॥ ७६ ॥ ६ स्पष्ट (नहीं ठग कर) ॥ ७७ ॥

प्रति ओसर तुमकौंहु पुनि, बुन्दीगमन विधेय ॥
गम्य रोध१ अपजस२ गहत, गमन१ वहत जस२ गेय।७८।
यह सुनतहि माधव११३।२ अनखि, तहँ कविवृत्ति उतारि ॥
छिन्नि त्रि३सासन मुख्य छिति, मान१६७।१मानपन मारि७९
मित कर ग्राम जु मोलखी१, सो तस रक्खि सदाहि ॥
अक्खिय कवि सबठाँ अटहु, अब तुम रोध न आहि ।८०।
मिश्रन कुल कवि मान१६७।१तैं, निजकुलवृत्ति निवारि
दिय कवि लखमीदासकौं, चहि सासन बसु८चपारि ॥८१॥
माधानि२६।२२न सन तब मिटे, नियत मिश्रनन नेग ॥
अरु पाये महियारयन, विधि उदर्क[२] लहि वेग ॥ ८२ ॥
इम मिश्रन१ महियारयर२न, बढिगो तबहि बिरोध ॥
तामैं ब्याहि कनीन त्रिक३, बहुरि लयो सुखबोध ॥ ८३ ॥
पहिलैं रहि बुरहानपुर, सेयोखुरम३९।२ बिसेस ॥
अब कोटा हुव भिन्न इम, वाको फल मिलि एस ॥ ८४ ॥
निवसथ ए पंच५हि नियत, इतके चम्मलि[३] वार ॥
पाये तिम माधव१९३।२ प्रसू, स्वक्क जीवन अनुसार ॥ ८५ ॥
जबहि मरी माधव१९३।२ जननि, उडु सत्रह १७२७सक अंत ॥
आये तबहु न ग्राम इत, यह हुव ताम[४] उदंत[५] ॥ ८६ ॥
नृप भाऊ१९५।१ सन जिनदिनन, रुष्ट हुतो ओरंग४०।३॥
कोटापति तब राम१८८।३ कछु, सज्जिय हुकम प्रसंग ॥८७॥
इम रहि पंच५हि ग्राम इत, आगत१ पुनि गत२ आहि ॥
अवसर पर सब आक्खिहै, वर्णन नियम निवाहि ॥ ८८ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-

---

१ जाने योग्य को रोककर ॥७८॥७९॥८०॥८१॥ २ आनेवाले समय के शुभ फल से ॥८२॥८३॥८४॥ ३ चम्बल नदी के इधर ॥८५॥ ४ तहां ५ वृत्तांत ॥८६॥८७॥८८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में कोटा के पोळपात पन की वृत्ति मीशण शाखा के चा-

सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे कोटापतोर्लिपात्रत्वस्य मिश्रणशाखीयचारणपरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनेन ग्रन्थकर्तुः संक्षिप्तवंशवर्णन १ ग्रंथकर्तुर्दोंडूदानामग्रामान्तिकरामसागरतडागनिर्माणवर्णन २, कोटाराज्यस्य बुन्दीजयपुरराज्यसमत्वासादनकथन ३, ग्रन्थकर्तृकार्याणां भाविसमययातायातत्वकथनप्रतिज्ञानं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः षोडशोत्तरद्विशततमः ॥ २१६ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इन दिवसन प्रभु राम२०३१४ इत, समय१ अर्घ२ अनुसार ॥
अंगरेज लोकन इहाँ, बढ्यो बहुल व्यापार ॥ १ ॥
रंगराजनामक रहैं, बिजयनगर बसुधेस ॥
तोफा किम बहु भेट तस, व्यापारिन सबिसेस ॥ २ ॥
बल्लारी१पुरतैं बिदित, उत्तर१दिस जो आहि ॥
अन्नागुंडी२तैं हु इम, जंपहिं दक्खिन२ जाहि ॥ ३ ॥
धारवार१पुरतैं जु ध्रुव, थिर प्राची१ दिस थान ॥
जो मूटीगढ२तैं हु जिम, पच्छिम२ ओर प्रमान ॥ ४ ॥
वातैं पच्छिम१सैह्य२ अंग३, तसपर२सागर तत्थ ॥
गिनियत ढिग गोवा नगर, पोर्टुगेजजन पत्थ ॥ ५ ॥
नदी तुंगभद्रा निकट, दक्खिन२तट यह ढंग ॥

रणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के कारण ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के वंश का संक्षेप वर्णन १ ग्रन्थकर्ता के दौडूंदा नामक ग्राम के समीप रामसागर नामक तालाव के रचने का वर्णन २ बुन्दी और जैपुर के समान कोटा के राज्य के होने का कथन ३ ग्रन्थकर्ता के कामों का आने और जाने का भविष्यत् काल में कथन करने के वर्णन का चतुर्थ ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ २१६ सौलह मयूख हुए ॥

१ समय के मूल्य के अनुसार ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४॥ २ पर्वत का नाम है ३ पर्वत ४ मार्ग ॥ ५

अन्नाँगुंडी बाम२अब, यहहु गिनहु तस अंग ॥ ६ ॥
प्रथम नदी बिच रक्खि पुर, इन दोउ२न हो एक१ ॥
नाम जास बिद्यानगर, बिद्यावढन बिबेक ॥७॥
कोस दसक१०बिस्तर कथित, बसि जिहिँ ढंग बिरक्त ॥
आचारिज माधव उदित, भये बिदित हरिभक्त ॥ ८ ॥
संप्रदाय पहिलो१ सगुनें, इनकरि प्रकटयो अत्थ ॥
अधिपतिके मंत्री हुए, प्रथम हुते रहि पत्थ ॥ ९ ॥
अग्ग बसायउ ढंग यह, बीरवक्क नरनाह ॥
नाम जास बिद्यानगर; रक्खिय सफल सराह ॥ १० ॥
प्राकृतबानी नाम परि, बिज्जानयर बन्योँ सु ॥
बिजयनयर देशीयबिच, भावितबहुन भन्योँ सु ॥ ११ ॥
अग्ग जहाँके अधिपनैं, फौजसहित फीरोज८।१ ॥
जित्यो दक्खिन साह जुरि, आहव बिस्तारि ओज ॥१२॥
अब जिहिंपुर हो उक्त वह, रंगराज नरराज ॥
पालतहो निज राज्यपद, समुचित लहि सब साज ॥१३॥
बस्तु अंगरेजन बहुत, सहि भेट तस सज्ज ॥
लिखित हुकम नृपसों लयो, कोठी बिरचन कज्ज ॥१४॥
रंगराज नरराजसों, लहि इम सासनलेख ॥
कारोमंडल कूल बिच, रसा परखि रुचि रेख ॥ १५ ॥

पादाकुलकम्

जिहिँ पूरब१ मूटी१ गढजानहु, पच्छिम१ धारवार२ पहिचानहु
जिहिँ दक्खिन १ बल्लारी१पुर जिम, उत्तर २ दिस अन्नाँगुंडी२ इम ॥ १६ ॥
२तटिनि तुंगभद्रा दक्खिनतट, बिजय नगर जो बिजय बुधन भट ॥
जाको नृप हो रंगराज जँहँ, जिहिँ करि तुष्ट अंगरेजन तँहँ ॥१७॥

॥६॥७॥८॥ १ सगुण ॥९॥१०॥११॥१२॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥१५॥१६॥ २ नदी ॥ १७ ॥

कारोमंडलतट सतंत्र किय, कोठी गढ सम रचन मंत्र किय ॥
अक्खिय रंगराज अंग्रेजन, सो बिरचहु मम नाम चिन्हसन ॥१८॥
इन अक्खिय कोठी१ हम अंकित, सहर२ रचहिं तुमनाम असं-
किंत ॥
आये जे पूरबतट कहि इम, तँहँ गढप्रतिम रचिय कोठी तिम ॥१९॥
फोर्टसेंटजार्ज१ सु अभिधा फबि, छमन रचिय वह हट्ट दुर्ग छबि ॥
ध्रुव तँहँ रंगराज अभिधा धरि, रचनलगे पुर कलितं कोल
करि ॥ २० ॥
सक सर अंक अष्टि१६९५ सम्मित सम, कतिकन मत रस अंक
अष्टि१६९६ क्रम ॥
अंग्रेजन तँहँ रचि कोठी वह, बिरचिय नगर सिंधुतट सुखवह ॥२१॥
दक्खिन१ पुर चुंगलपट्ट२ बिदित, उत्तर१ पल्लीकाट२ झील इत॥
इन्ह पुर१ झील२ दुहुँ२न के अंतर, बिरच्यो नगर अपुव्व छटावर
बिजय नगर दक्खिन धर वाचहि, रोहित तुरग कोन२ तासौं रहि
ललित पुव्वसागर तट लहियत, कारोमंडलनाम सु कहियत ॥२३॥
पल्लीकाट१ रु चुंगलपट्टुव२, दिस जासौं उत्तर१ दक्खिन२ द्रुव२ ॥
तिन्ह बिचकारोमंडल अंतर, कोठी१ पुर२ बिरचे क्रय जस कर ॥२४॥
अक्खहिं गढहिं फोर्ट अंग्रेजन, सेंटजार्जगढ१ हट्ट२ नामसन ॥
किय व्यापारिन मंत्र असंकित, कोठी किय नृपनाम अनंकित२५
अब नृपनाम रचैं पुर यातैं, बिहित कोल्ल नहि बचन बिघातैं॥
इम तिहिं पुर अभिधा बिचारि उर, रक्खन लग्गे रंगराजपुर ॥२६॥
तँहँ नृप रंगराजके मंत्रिय, जानि नृपहिं प्रतिमा प्रमत्त जिय ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ १ समर्थों ने २ विदित ॥ २० ॥ ३ सुख प्राप्त करके॥ २१ ॥२२॥ ४ रुका हुआ ५ अग्नि कोण ॥ २३ ॥ ६ मोल लेकर ॥ २४ ॥ ७ अंगरेज लोग गढ को फोर्ट कहते हैं इसकारण मदरासके गढका नाम फोर्टसेंटजॉर्ज है और कलकत्ते के गढ का नाम फोर्टसेंटविलियम है ८ कोठी पर राजा का नाम नहीं रक्खा ॥ २५ ॥ ९ उचित १० वचन का नाश नहीं करते ११ नाम ॥ २६ ॥ १२ मूर्तिमान्

सामऱ्दानर दुवर उपाय अनुसरि, कहिय कहहु पुर जंनक नाम करि ॥२७॥
छितिपति राम२०३।४ अनेह पाइ छम, अंग्रेजन जान्यौं फल उद्यम॥
गढ सोपुर१ सचिवन करि ज्यौं गय, ज्यौं तिन्ह कपटभये नर-उर२ जय ॥ २८ ॥
तिम नयपटु झल्ला जालम तव, कही सबन नमि रीझ१खीज२सब
हुव अंग्रेज कुसल जव हाकिम, तस नत्ती लिय बट तीजो३ तिम
इम प्रमत्त चिरतैं हुव अधिपति, महि दै सचिवन चहत भोगमति॥
इम ठग रंगराजके सचिवहु, लंचा१ बटँ२ लिपिपल अप्पि लहु३०
प्रभुमैं कछु न प्रभुत्व प्रमानत, जिम करिहौं सु होहिं यह जानत॥
चीनापानिज जंनक नाम चहि, किय पुर फुटं चीनापट्टन कहि३१
अंगरेज मन चहत हुते यह, स्वामी१ सचिव२ बिरोध मचैं सह ॥
यातैं सचिव कथित अब धार्‍यो, नृपको हुकम समूल निवार्‍यो॥
मंदराज१चीनाँपट्टन२साहि, लहि सु दुर्नाम बस्यो तव खिन लहि ॥
भूप्राची सागरतट मंडल, महीबिदित वह कारोमंडल ॥ ३३ ॥
सो तँहँ रंगराज सासनसंन, उक्त रचिय कोठी अंग्रेजन ॥
कोठी हुव पुव्वहु तँहँ केही, आनि उचित न हुती पर एही ॥३४॥
सेंटजार्ज अभिधान रक्खि सो, अब बिरची रन उचित अक्खि सो।
पुर मंदराज१चीनाँपुरपट्टन२, धरि दुव२नाम बसायो अति धन ।३५।
व्यापारिन तासौं क्रय१ बिक्रय२, अधिक बढ्यो फल भाँगधेय अँय॥
वाहिसमय दिल्ली हु आइ औंर, साहजिहान३९।२ तुष्ट करि अवसर

१ रंगराज के पिता के नाम से नगर रचा ॥२७॥ हे भूपति रामसिंह २ समय पाकर उन समर्थ अंगरेजों ने. ३ जिस प्रकार सचिवों के कारण सोपुरगढ गया और उन्हीं के कपट से नरवर विजय हुआ (ये दोनों दृष्टान्त हैं) ॥ २८ ॥ ४ जालिमसिंह के पोते ने ॥ २९ ॥ ५ बहुत समय से ६ नजराना और ७ बंट (विभाग) की, लिखावट देकर ८ शीघ्र ॥ ३० ॥ ९ रंगराज के पिता का नाम १० प्रसिद्ध ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ११ भाग्य १२ आगामि काल के शुभ कर्मों से १३ शीघ्र ॥ ३६ ॥

लेख निदेस तदीय तथा लहि, चित्त क्रयोचित[1] बंगदेस चहि ॥
नदी१रु पुर२ जँहँहुगली नामक, आइ तहाँ लखि भुव अभिरामक ॥
तिहिँ प्रदेस नाना कोठिन तनि, व्यापारिन बहुलाभ गयो बनि ॥
अकबर३७१साह समय ए आये, छितिपर सनैंसनैं इम छाये ।३८।
सक कति कहत व्योम ससि सत्रह१७१०, इम किय मंदराज
कोठी वह ॥
हुव तिहिँ पुव्वहि बंग[2] बलेस्वर, इम ग्रंथन मत१लिपि२कछु अंतर ३९।
इत गोपालदास चंपाउत, जाचक पुव्व बचाये हितजुत ॥
तससुत सूर भये बहु तिनसैं, ख्यात प्रवीर बलू जाखिनमें ॥४०॥
अमरकुमरढिग रहतहुतो यह, तैंसकरगन[3] अज१ हुँडर[4] घेरे तह ॥
बलू चढयो न अमर तँहँ बुल्ल्यो, तुम चढि भीर क्यौंन आसि तुल्ल्यो॥
बलू कह्यो है दुख गो१विप्र२न, छिति३कैं जातचढैं भट छिप न ॥
स्वामी तब समुझहु हम हेलन[5], औरहि बहु अज१हुड२उव्वेलन[6] ।४२।
गदिय कुमर हम संकट साग्रह[7], साह पटा तजिकैं मरिहौं सह ॥
अज१हुड२मोरि न आनत यातैं, बिरस भयो औसी बढिबातैं ॥ ४३ ॥
भई जोधपुर१कति यह भाखैं, लहि नागोर२कित अभिलाखैं ॥
बिरस परंतु होत इम रस बढि, चंपाउत तजि पटा गयो चढि ॥ ४४ ॥
पत्तो बीर बलू सु उदैपुर, अग्घ किपउ जगतेस लाइ उर ॥
रान कहिय कहु रुपि रु रचैं रन, जिहिँ रवि देत सूरपन सौ जन।४५।
बीर बलू बुल्ल्यो इक१बारहु, रवि हमरो बीरत्व बिगारहु ॥
रविदिस यह तवतैं रढरावंन[8], अर्घकाल[9]लगि छार उडावन ॥ ४६ ॥
इम सु तदनु दिल्लीपुर आयो, पटाबिसेस साहसन पायो ॥
पहिलैं कवि मति फुरन न पाई, इहाँ कहीं यह यौं स्मृति आई ।४७।

१मोल लेने से उचित बंगाल को जानकर ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २बंगाला ॥ ३९ ॥४०॥ ३ चोरों के समूह ने बकरे और ४ भेड़ ॥ ४१ ॥ ५ अपराध ६ बचानेवाले ॥ ४२ ॥ ७ आग्रह सहित ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ रावण के समान हठ रखनेवाला ९ अर्घ देने के समय सूर्य के सन्मुख भस्मी उडाने लगा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

पुव्व१अपर२सबकोहि न पावत, उलटि१पलटि२वत्तैं इम आवत ॥
अधिप सता १९४।१ हु सुता दूजी इत, कमनकुमारि १९५।२रक्खि वय अंकित ॥ ४८ ॥

राजसिंह जगतेसरान हुव, धीदा बरन बर सु बुल्ल्यो ध्रुव ॥
कमनकुमारि १९५।२ दिय ताहि लग्नक्रम, रचि सब संचय उचित मनोरम ॥ ४९ ॥

जिहिं अनुजा कल्यान कुमरि१९५।३ जिम, आयु अल्प करि सिसुहि मरी इम ॥
कन्या तस अनुजा रामकुमरि १९५।४, क्रम बय लहत यहहु संभव करि ॥ ५० ॥

बंधू नृप चालुक्य बघेला, बुल्लि अनोपसिंह सुभवेला ॥
परिनाई चोथी४ हु सुता यहु, बितरि अखिल अखिलन समुचित बहु
अल्पहि हुव व्याह्नन इन्ह अंतर, हु२कनी दिय जस छाइदिगंतर ॥
अमरसिंह गजसिंह तनै इत, जिम नागोर लह्यो तब अरि जित॥५२॥
जुव्वन वय उद्धतपन जाकैं, तदपि जनकसासन सिर ताकैं ॥
तातैं लहि नागोरहु तुष्टहि, जिमतिम कियउ जवनपति जुष्टहि॥५३॥
तदपि जोधपुर दैबिन आढ्यतम, कित नागोर तास क्रम कमकम ॥
इम जसवंत साह अधिकारी, किय लंचा पूरन बधिकारी ॥ ५४ ॥
अमर कबहु दीवान न आयो, व्याधि कछुक बहु दिनन दबायो ॥
नाम सलामतखान तबहि नमि, किय छल्ल बिन्नति साह गाह क्रमि
अमर रोगमिसु हमहिं डुलावत, अप्प अंगद दीवान न आवत ॥
कहिय साह जो एह सत्यक्रम, दम्म लेहु तासों दैकैं दम ॥ ५६ ॥

॥ ४८ ॥ १ पुत्री को देकर वरने के लिये २ निश्चय ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ३ प्रसन्न ४ प्रीति-युक्त किया ॥ ५३ ॥ ५ धन से ६ अत्यन्त धनवान् ७ कम से कम ॥ ५४ ॥ ८ अपने स्थान (जगह) पर जाकर बादशाह से विनती की ॥ ५५ ॥ ९ नैरोग्य है तो भी सभा में नहीं आता ॥ ५६ ॥

सुनि यह *पत्ति पठाइ सलामत, तिम मंगे †दम दम्म दिनन तत ॥
रोज तलब दैदै अमरेसहु, लहि हठ न दिय दंडमैं लेसहु ॥ ५७ ॥
तदनु कबहु उल्लाघ१ होइ तँहँ, पत्तो अमर असंक साहपँहँ ॥
मिच्छ मीरबखसी जु सलामत, ताकँहँ मुख्य प्रकोष्ठ२ मिल्यो तत ॥
अक्खिय तिहिं दै दम्म जाहु इत, हठजिन करहु गँवार मरनहित ॥
सुनत गँवारबचन अमरेसहु, लै पट्टिस कंचुक३ गोपित४ लहु ॥ ५९ ॥
छमें करि पार सलामत छत्तिय, घोर सजोर कुलाहल घत्तिय ॥
माँहिं गयो इम मारि सलामत, बिक्ख्यो रुहिर कटारहिं वामत ६०
भैचक्कि सभा निरायुध भूपन, पट्टुत हुव गिनि काल निरूपन ॥
जनतातो इक्क१हु न लह्यो जिम, अंदर दुरन साह नट्ठो इम ॥ ६१ ॥
बलज रुकाइ संधिल्ला वट्ट सु, आतुर पहुँचि सिरोगृह अट्ट सु ॥
टिकि उप्पर जे भेर निज टारे, पकरन१मारन२ताहि प्रचारे ॥६२॥
हँसे सुभट कहि सिंह नख्ख न हम, नहिं तिम दड्ढ नाम१सूकर२सम
जानहु सेस जीह रन जानिवो, व्है किम अब गहिवो१कै हनिवो२ ॥
डरबिनु साह कुपित ओठन डसि, उप्परसन दुव२तव डारे आसि ॥
अर्जुन१गोर अमरसालक इक१, संग्रहि अपर२द्वितीय साहसिक ॥
समुख चलै द्वै२ही आसि सायुध, जत्रकुत्र जन इतर निरायुध ॥
अमर कहिय इक१पै दुव२आवहु, गंजि आसिन मम सीस गिरावहु
साहहु मूढ अंध अनुसारी, करैं खलन ऐसे अधिकारी ॥

सलामतखां ने*पैदल भेजकर †दंड के रुपये ॥५७॥ १नैरोग्य होकर २ मुख्य द्वार (डोढी)पर ॥५८॥ ३वागे (जामे) में ४छिपी हुई कटारी लेकर शीघ्र ॥५९॥ उस५ समर्थ ने उस कटार से रुधिर टपकाता हुआ देखा॥ ६० ॥ ६ भागे ॥ ६१ ॥ ७ सुरंग के (गुप्त) मार्ग का द्वार रुकाकर ८ ऊपर के महल की छत पर चलागया ९ भट ॥ ६२ ॥ उन सुभटों ने हँसकर कहा कि न तो सिंह के समान हमारे नख हैं और न सूअर के समान डाढा और तुंड हैं फिर वचन युद्ध से कैसे पकड़ा जावे और मारा जावे ॥ ६३ ॥ यह सुनकर वादशाह ने ऊपर से दो खड्ग डाले जिनमें से एक तो १०अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ था उसने लिया और दूसरा किसी साहसी ने लिया ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

व्हैवो दंड बुरो न कहै हम, तदपि अवाच्य अहो विस्मयतम ॥६६॥
अट्यो अमर संसदं इम अक्खत, रिष्टि उभैरहि दिष्टिविच रक्खत ॥
अमरातंके सभा अकुलाई, मनु होरी हुरियार मचाई ॥ ६७ ॥
अबलाँजनहु उच्च आवासन, प्रचुर सुन्यौं कलकल चहुँ पासन ॥
साहसुता१हु व्यग्रा कति सूचत, मन्निरही अमरहिं पतिपन मत ६८
कहत वजीरसुता२संगत कति, अपर कितेक कहत मिथ्या अति
पटुँ मनुजन निश्चय यह है पर, जिमतिम जड़न सूचियत अवसर ६९
अक्खिय साल गोर अर्जुन इम, करहु भाम मोमैं संसय किम ॥
अमर तदपि सब गंजि सभा वह, गोरहिं लखि सालकपन साग्रह ॥
अक्खिय तुम मम समुख न आवहु, लरि जिन मंतु भाम सिर लावहु
अर्जुन कहिय अहो संसय इत, है को खल संबद्ध हननहित ॥७१॥
चाहि तुमहिं गृहलग पहुँचैहों, लाभसमय अपजस किम लैहों ॥
तदपि अमर मन्नी न बत्त तस, सूचिय नन प्रत्यय अब साहस ॥७२॥
रहि इम पिट्ठि चरन मम रक्खहु, चरन संत्रु जानहु तिहिं चक्खहु ॥
सालक भौं करि सौंह ओट इम, तब अमरहु विस्वास मन्नि तिम ॥
साहसभा सब कहि नारिनसम, भुजकट्टार पारि जिततित भ्रम ॥
कढनलग्यो खिरकी विक्रम क्रम, सालक जानि सत्यपथ संगम॥
अधम गोर बिस्वास दयो इम, स्वीय स्वसा करिहों विधवा किम।
बिश्रंभ्यहु कछुकछु इम वैनन, लखि खिरकी बाहिर असु लैनन॥
मस्तक करि प्रविस्यो खिरकी मैं, धरत जदपि अवहितपनधी मैं ॥

---

१ सभा में अमरसिंह इसप्रकार कहता हुआ फिरा और दोनों के रिष्ट (खड्गों) को दृष्टि में रक्खा २ अमरसिंह के भय से ॥ ६७ ॥ ३ स्त्रियों ने भी ४ ऊंचे महलों से ५ बहुत कोलाहल सुना ६ आसक्त अथवा व्याकुल होकर अमरसिंह को पति मानती थी ॥ ६८ ॥ ७ चतुर ८ मनुष्य ॥ ६९ ॥ ९ हे बहिन के पति ॥७०॥ हे बहिनोई लड़कर मेरे मस्तक पर १० अपराध मतलाओ ॥७१॥ ११ अब भरोसा नहीं है ॥ ७२ ॥७३॥ १२ पद विन्यास से (पैंड देने के क्रम से) अपनी बहिन को विधवा क्योंकर करूंगा १३ विश्वास करके ॥७४॥ १४ बुद्धि में सावधान

पय इक्क१ अमर कढ्न न पायो, चोर गोर तहँ जोर चलायो॥७६॥
कट्टिय भाम चरन अघकारी, कट्टी श्रुति तस फैंकि कटारी ॥
बीर अमर बाहिर जकि बैठो, प्रगत श्रवन अर्जुन उत पैठो॥७७॥
कुहक[1] गोर अमरहिं अचरनकरि, कलुखी[2] बिरहित इक्क१करनकरि॥
पच्छोजाइ साह प्रति प्रनम्यौं, निरायुधहु अमरसु इत न नम्यों॥७८

चरनकरि१ करनकरि२ प्रनम्यों१ ननम्यों२ अन्त्यानुप्रासौ२॥

मिलि सो बहुन साथुधन मारयो, कनकट गोर बुधन दुदुकारयो ॥
निजन कुमार कुँ[3]वाप इत आनिय, किय प्रारंभ जरन कुमरानिय॥
यह सुनि बत्त बलू१ चंपाउत, जो निजबंधु नाम भाऊ२ जुत ॥
अमर भीर खिरकी लग आयो, प्रान बिहीन कुमर तहँ पायो८०
दुवरहि पट[4] निज फैंकि साह दिस, रारि मचाइ रचाइ काल रिस।
कुमर बैर मंगै सु देहु कहि, तोरन पर जुज्झे भँरजातहि ॥ ८१ ॥
कुमरानीप्रति जरन कहाई, बाचिक इक१ हमरो तुम बाई[5] ॥
यह लौजाइ कहहु पतिअग्गैं, अक्खिय हमहिं क्रोधमति अग्गैं ८२

पतिअग्गैं१ मतिअग्गैं२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

अब तुम जो न छुरावहु हुड१अजर२, गहि असि तो दलिहो कब गुँ[6]डगज ॥
साहपटा तजि तुम रचि सँगर,स्वामिसहाय लज्ज धरि लंगर[7]॥८३॥
ममसहाय धारन चढि मारिहो, कब तब सफल दर्प यह करिहो॥
आनिबनी सुहि बत्त अमर अब कबतैं दर्प[8] हुतो सु गयो कब ८४

पन धारण करता था तो भी ॥ ७६ ॥ उस पापी ने बहनोई का चरण काट डाला और अमरसिंह ने कटारी फैंककर अर्जुन गौड़ का कान काट डाला ॥ ७७ ॥ १ जालसाज २ वह पापी एक कान से हीन होकर ॥ ७८ ॥ ३ अपने लोगों ने मुर्दा कुमर को ॥ ७९ ॥ ८० ॥ वह ४ भट बाहर के द्वार पर जाकर लड़े॥ ८१ ॥ ५ हे बाई हमारा एक वचन पति के आगे जाकर कहना॥ ८२ ॥ ६ इस समय भेड़ और बकरे नहीं छुडाओगे तो पाखरों सहित हाथियों को कब मारोगे ७ युद्ध ॥ ८३ ॥ ८ घमंड ॥ ८४ ॥

तृनसम हम सब साहपटा तजि, भीर आइ तुम मरनथान भजि॥
कंकनहीन बहुल बीबिन करि, धव जस मनि कै डाक अतुल धरि ॥ ८५ ॥

पयचर्वक गोरहु जो पाते, इत तस सुनपन सफल दिखाते ॥
सहकरि हम इम मरत इहाँ अब, सति पति प्रति मति१ गति२सूचहु सब ॥ ८६ ॥

जे ऐसैं समुझाइ सतीजन, करत अंज्ज१ मिच्छ२न मन कन कन ॥
बहु हनि बीर बिरचि घायल बहु, लरि मरि कुमर सभापहुँचे लहु

॥ दोहा ॥

तिहिंकालहु प्रभुराम२०३१४ तुम, पिक्खहु इम रजपूत ॥
वचन गँवार न सहि बहुन, पारि परयो गजपूत ॥८८॥
आँट बचनकी धरि इमहि, बलू१ कबंधहु बीर ॥
परयो पारि बहु पुब्बके, स्वामि लोन करि सीर ॥
सु निज बंधु भाऊ१सहित, सह सज्जित निज सत्थ ॥
बढ़ि भिरत खिलाखिल बलू१, तिलातिल कट्टिय तत्थ ॥९०॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे सेण्टजार्जनामदुर्गं चीनापट्टननामनगरं च निर्माय विजयनगरसमीपे वङ्गदेशे चाङ्गलजननिवसनं १, योधपुराधीशात्मजामरसिंहरुष्टचाम्पाउत्तबल्वाख्यस्योदयपुरगमनपूर्वकादिल्लीग

* पति के यश रूपी मणि की अतुल १ शोभा धारण करके ॥ ८५ ॥ २ चरण के चलानेवाले घोड़े को पाते तो ३ उसका कुत्तापन ४ साथ करके ५ हे सती ॥ ८६ ॥ ६ आर्य और म्लेच्छों को ७ शीघ्र ॥ ८७ ॥ ८ गजसिंह का पुत्र ॥ ८८ ॥८९ ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में सेन्टजार्ज नामक गढ और चीनापट्टन नामक शहर बनाकर अंगरेजों का विजयनगर के समीप और बंगाले में रहना १ जोधपुर के कुँवर अमरसिंह से रुष्ट होकर बल्लू नामक चांपावत का उदयपुर होकर

मन १, सलामतखांनिधनपवनेन्द्रसभाभयापादकराष्ट्रकूटकुमारामरसिंहस्य स्वश्यालकार्जुनगौड़करचरणाकर्त्तनानन्तरतत्कर्णामुत्कृत्य वीरतया पञ्चत्वासादन ३, कुमारामरसिंहवैरवालनहेतुचाम्पाउत्तवल्लवाख्यस्य वीरतया मरणं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितः सप्तदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लोदीखानजिहान लै, दक्खिन भीर हुवंत ॥
दिल्ली भुव दव्वत दल्यो, सो माधव१९३१२रन संत ॥ १ ॥
जाके संगी सेस जे, दक्खिनअधिप हुवाह ॥
जिनपर साहजिहान३९१२इत, सज्जि चले अब साह ॥ २ ॥
नृप१नवाब२लग्गि सत्थि निज, अकबर३७१२नत्ती एह ॥
लोदी पक्खन लुंचिं बे, गो दक्खिन गिनि गेह ॥ ३ ॥
संगहि हे माधव१९३१२सता१९४१, जयसिंह१रु जसवंत२ ॥
बुंदेला बरसिंह ३ बलि, सूर ४ कबंध सुमंत ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

लिपि पठई मुगलेस पहुँचि दक्खिन सत्रुन प्रति ॥
लोदी संगति लग्गि देस लुट्टिय तुम दुर्मति ॥
चोरन चोरन चाह होत गृहपति जग्गनहद ॥
अब किन सम्मुह आहु मोहि अपनौं दिखाहु मद ॥
उनके न रह्यो अवलंब अब जिहि मिस सब सम्मुह जुरैं ॥

दिल्ली जाना २ सलामतखां को मारकर बादशाह की सभा में भय डालनेवाले कुंवर अमरसिंह राठोड़ का अपने साले अर्जुन गोड़ के हाथ चरण कटे पीछे अर्जुन का कान काटकर वीरता से भागजाना ३ कुमार अमरसिंह का वैर लेने के कारण चाहूवांपावत का वीरता के साथ मारेजाने का पांचवां१मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१७ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ वीर ॥ २ ॥ १ पंख उखाड़ने के लिये ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ १ आधार

लोदी सु मरत टरिवो हि लखि मन उपेचाहित घरघर सुरैं ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

थकिवैठ इम अरि थानथान, सुहि सानुकूल समुझत सुजान ॥
दिल्लीस विहरि दक्खिनप्रदेस, वढि जत्रकुत्र किय अरि बिसेस ।६।
भिरि असहवेढि गढ भिन्नभिन्न, भर दुसह केहि किय छिन्नभिन्न
पहिलैं गयो सु आसेर१पाइ, बिचके प्रदेस२बसके बनाइ ॥ ७ ॥
जय४ करि तिम अहमदनगर ३ जित्ति, प्रथम १ हि प्रधान किय
बिजय कित्ति ॥
इम खानदेस निज जंत्र आनि, पच्छिम सह्याचल४हद प्रमानि ।८।
अब दुलभ दोलताबाद५आइ, घेरयो गढ गोलन गंजर धाइ ॥
सुत१नारि२कुमरश्पन जत्थ साह, रक्खे चिर निर्भय सरन राह ।९।
बीजापुर सम जाको बिसास, इहिं खुरम३९।२लही जँहँ जिय न आस
दुर्ग सु हो दुर्गम पै सुदिट्ठ, पाके सहाय हुव फलन इट्ठ ॥ १० ॥
यह बिदित मर्म हो निबसिअग्ग, मिलिजात फलहिं अनुकूल मग्ग
गढथिच इम संकट किम हु गेरि, हद्देद१स सता १९४।१ दिक्क
पास हेरि ॥ ११ ॥
लिय ऐसै संकट सत्रुलोक, अप्पन बचैं न जिम तजिहु ओक ॥
बुरहानपुर जु हुव कोल वैन, हद्द ६१ न पति हाकिम रहत रैन
१९२।१ ॥ १२ ॥
पुहवीस सता१९४।१सुमिरन सुपाइ, बासी गढके कछु बचाइ ॥
तिन मन्नी उत१जिय दिय सता१९४।१ हि, जयबीज गिन्यौं इत २
साह जाहि ॥ १३ ॥
अतिजस मनाइ भूपति दुरओर, जिन्यो वह दुर्गहु खग्ग जोर ॥
इत तंत्र दोलताबाद५ आनि, जयहेतु सता१९४।१ कँहँ साह जानि

१ छिपकर ॥ ५ ॥ ६ ॥ २ भट (वीर) ३ आसेर गढ ॥ ७ ॥ ४ वेग ॥ ८ ॥ ५ नि-
रन्तर प्रहार से १ घाव करके अथवा मारकर ॥ ९ ॥ ७ श्रेष्ठ भाग्य से ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ ८ घर ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ९ जय का कारण

इम भेट दयो पहिले अनेह१,नृप रत्न१९२।१जहांगीर२८।१हि सनेह
सो सिव प्रसाद गज खास साह, बुंदीसहिं बक्खस्यो सह सराह ॥
या द्विरद१माँहिं हे गुन्न अनेक, क्रम तास संग दिय बस्तु केक॥
पोसाक२ खास भूखन३ उपेत, यह४ हेति५ दये जयहेतु हेत।१६।
दक्खिनप्रदेस इम काति दबाइ, अकबरपुर प्रबिस्यो साह आइ॥
करि सिक्ख नृपहु अप्पन निकाय, क्रमि आयो बुंदिय सु रुचि काय ॥१७॥

निकाय१ चिकाय२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

पूर्वा १ पर २ बत्तन क्रम न पात, इम बदलि कथानक बहुत आत॥
जँहँ हम सक निश्चय लिखहि जानि, मेधावी तँहँ क्रम लेहु मानि।१८
अंबर बसु सोलह १६८० सक अनेह, उपज्यो पटु भाऊ १९५।१ कुमर एह ॥
अब सक ख सून्य अत्यष्टि १७०० अंत, याकैं हु कुमर हुव मह अनंत ॥ १९ ॥
जेठीकुमरानी जनित जोहिं, संज्ञा करि पृथ्वीसिंह१९६।१ सोहि॥
नत्ती यह जनमत सुनि नरेस, बुन्दीस सता१९५।१ दिय बसु बिसेस ॥ २० ॥
दौहित्र जनम सुनि उदयद्रंग, जगतेस रान जँहँ अतिउमंग ॥
करि रीझ उतहु किय महप्रकास, मरिगो सु कुमर पुनि रहि दु मास ॥ २१ ॥
क्रम करि तबलौं भाऊ१९५।१ कुमार, ऊढा कुमरानी त्रय३उदार॥
धनकुमरि १९५।१ बडी१तँहँ गुननिधान, जगतेसरानतनया सुजान
हरिसिंहसुता दूजी२ बहोरि, जो पुर प्रतापगढ गांठि जोरि ॥

---

१ समय ॥ १५ ॥ २ सहित ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पहिली पिछली बात का क्रम नहीं पाकर इसप्रकार कथा ४ बुद्धिमान् वहां क्रम मान लेवें ॥ १८ ॥ ५ उत्सव ॥ १९ ॥ ६ नाम ॥ २० ॥ २१ ॥ ७ विवाहिता ॥ २२ ॥

निजपतनी आउलदेवि १।७।२ नाम, कुमरानी आनी बरि प्रकाम
बडगुज्जरि तीजी ३ लग्गनबेर, कन्या जु भूप फतमल्लकेर ॥
इरकुमरि १।९।३ नाम हद निपुन नारि, परनी सु राजपुरगढ प-
धारि ॥ २४ ॥
इत छिनन कुमर संबंध एक, बुंदेलन बिरचन किय बिबेक ॥
भूपति बुंदेलहु खुरुम ३।१।२ मीर, पहिलैं हुव टारन परन पीर॥
जिहिं ठहै व साह साहिजिहान२।१।२, मन्नैं स्व सहायक अधिक मान
सीसोद १ भीमसुत रायसीह, बुंदेल२ भूप लिय रन अबीह ॥२६॥
बेठतहि पट्ट दोउ२न बुलाइ, भूपाल बनाये उचित भाइ ॥
कछु लहि कुजोग बुंदेलवंस, पुब्बहि सु हीन हुव हत प्रसंस ॥२७॥
बुंदेलभूप बरसिंह बीर, यहि अब सु सुद्धकुल करन सीर ॥
अपनैं निहारि कन्या अनीकि, वसुधेस बरहिं तनि सह तितीक॥
बुंदीसकुमर कतिकन बताइ, जंपिय यह सगपन बनिहुजाइ ॥
तो आहि कनी तुमरे जितीक, वसुधेस बरहिं तनि सह तितीक२९
बरसिंह सुसंगत समुझि बात, भेजे पुर बुंदिय सचिव१ भ्रात २॥
संबंध उचित उपहार सत्थ, आये फल चाहत तेहु अत्थ ॥३०॥
आदर१ सह डेरा२ तिन्ह दिवाइ, पाहुन सनमानैं मोद पाइ ॥
बनि सुनि सता १।४।१ हु सगपन बिचार, करि बिजन मंत संग-
त कुमार ॥ ३१ ॥
नटि जान अखिल तिहिं सह निदान, पठई कहि न करत सुत
प्रमान ॥
याकै बिवाह त्रिक३ पुब्ब आस, तिनमैं हि तुष्ट अधिकन उदास
बुंदेलन जानिय लोभबेन, स्वीकारि हे सुनतहिं उचित बैन ॥
पठई कहि पातैं बुल्लि पास, पुनि करहु सभा आसय प्रकास ॥३२॥

१ विशेष कामना से ॥ २३ ॥ २४ ॥ २ विचार ॥ २५ ॥ ३ निर्भय ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ कन्याओं की सेना ॥ २८ ॥ ५ उत्सव करके उनने ही राजाओं को विवाहेंगे ॥२९॥ ६साथ७पाहुने८कुंवर के साथ एकान्त में सलाह करके ॥३०॥३१॥३२॥३३॥

रचि संसद बुल्ले तब नरेस, बैठारे सब मिलिहित बिसेस ॥
प्राघुनन कहिय सिंधुर१ पचास ५०, इककोटि १०००००० द्रम्म२ पुनि देय भ्रास ॥ ३४ ॥
सत १०० हीरक ३ बहुगुन १ अर्घ २ सुद्ध, वेज्राकर हम भुव जनित बुद्ध ॥
पुनि सीम विदित दुव २ परगनाँ ४ हु, बसुं आढ्य पाइ रीझहिं वेनहु ॥ ३५ ॥
अनुचर१न मिथुन २ सत १०० सत१०० सुसेव, दुरगुनाँ सब दायज लेहु देव ॥
नृप कहिय कुमर व्याहन निरास, स्वीकार नतो सगपन बिसास
पुनि कहिय मिलावन जन्मपत्र, तमक्यो हरि १९३।३ काका सु सुनि तत्र ॥
अपनों कुलसंकर तउ उदार, गिनियत जगसुद्धहि गहिरवार ।३७।
हम कुलहु करन तुम सम चहंत, भुरि अब घर जावहु हे महंत॥
संकर तथापि बुंदेलसूर, औसी सहैं न दूर१ रु अदूर२ ॥३८॥
असि ऐंचि ऐंचि तिन कहिय एह, गिनियत कुल सुद्धहिं हम्म १८३।१ गेह ॥
नृप आनि डोंड हरराज नारि, वंसहि यह तासौं ढिप बिचारि ॥३९॥
ते इम अवाच्य कहि पकरि तेग, बुंदेल मुरे प्रतिमग्ग वेग ॥
वरसिंह क्रुद्ध हुव सुनि सुवत्त, दिल्लीसहिं जिहिं इम अरज दत्त।४०।
जिम मान बढायो मम हजूर, पायो तथाहि अपमान पूर ॥
जिम लोहि वरनसंकर जनाइ, हड्ड१०न दुदुकारयो असह हाइ४१
अब ऐंचि रु सगपन करहु अप्प, देखहु कों हम कुल सुद्धि दर्प११ ॥

पाहुणों ने कहा कि १ हाथी ॥ ३४ ॥ २ कीमती ३ हीरे की खान ४ धन से ५ धनवान् होकर ६ इलाह भी प्रसन्न होवेगा ॥ ३५ ॥ ७ सेवकों का जोड़ा ॥३६॥ ८ चत्रियों का वंश विशेष ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ९ डोलिया ॥ ३९ ॥ ४० ॥ १० हड्ड का स्वरूप ॥ ४१ ॥ ११ दर्प ॥ ४२ ॥

सुनि साह कहिय इत१ उत२ समान, हमतैं न होइ दुव२पच्छ हान
बलि देन उपालंभहु बिसेस, आनत्त सता१९४।१ संकोच एसं ॥
गिनि सुहि निदेस बरसिंह गज्जि, सेना समस्त दुवअयुत२०००० सज्जि ॥ ४३ ॥

बुंदेलबीर तिम पकरि तेग, बुन्दीपर आयउ बज्रबेग ॥
सुनतहि न देर किय इत सता१९४।१ हु, बल सज्जि मुदित आजानुबाहु ॥ ४४ ॥

मारुत जव बाजिन बीच मेलि, भारिय असि सीसा छिगाहि झेलि॥
वज्जिय सब सस्त्रन निसित बाढ, गन भीरु भज्जियत जतन गाढ
बल कटत लुत्थिलुत्थिन बिलग्गि, जोगिन समाधि सिवसहित जग्गि
ताल१ प्रेत२ डाकिनि३बिलास, राचे रचि जोगिनि४बीर५गास ४६
पत कितेक बहु दुरदिन जुद्ध, बढ़मत दुर जान वहँ कलह क्रुद्ध ॥
छिबढि दुर ओर बहु भरत बीर, भयकारि भई अवसई भीर॥४७॥
यँ उदय भयउ बुन्दीस ओर, इतकेहि अस्त्र जिम लहिय जोर ॥
ाहू कर गुटिको लगि कपाल, बरसिंह परयो गजतैं बिहाल ४८
सतपंच५०० परे इत१ उत२ सिपाह, बुंदेल भजे खिल भोरियाह ॥
घायल दुरओर खटसत६०० घुमात, बुंदीस लह्यो जय जस बिभात ॥ ४९ ॥

जो सबल १९३।१।१ मनोहर १९१।४ तनय जत्थ, तोमर प्रताप २ हरि४भल्ल तत्थ ॥
ए सांटि तीन ३ सामंत अत्थ, संभर सता १९४।१ सु जय लिय समत्थ ॥ ५० ॥

जयसिंह इत सु कूरम जनेस, आमेर बिभव बित्थरत असेस ॥

शत्रुशाल कोआलंभा देते संकोच १ लाते हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ तीखे बाढ ॥४५॥ ४६ ॥ ३ पीड़ाकारी युद्ध में ॥ ४७ ॥ ४ भाग्य ५ गोली ॥ ४८ ॥ ६ बादन ॥ ४९ ॥ ७ बदले में देकर ॥ ५० ॥

रच्यो व्रजभाखा काव्य रंग, सुचि १ रस विसेस अतिसय प्रसंग॥
सासन तस इक द्विज धारि सीस, किय सत्तसई ७००१ दोहा क-
वीस ॥
अभिधान बिहारी सु कवि एह, सनमान्यौं माथुर अतिसनेह ॥५२॥
दोहा १ प्रति इक १ इक१ महुर दीन, कवि१ नृप२ जस निजनिज
बिदित कीन ॥
द्विजग्रंथ अबहु यह अर्थ१दीप, पै छंद१सब्द २ मेलन ३ प्रतीप२ ॥५३॥
जिहिं बिप्र बिहारी बंसजात, कवि बालकृष्ण प्रभु अन्न पात ॥
जिम बिस्वनाथ द्विज इत सुजान, धरि सत्रुसल्य चरित३ाभिधान ॥
बुंदीस काव्य संस्कृत बनाइ, पटु आदिकविनबिच नाम पाइ ॥
श्रवन सु कराइ पाये समत्थ, सासन चउ ४ रूप्पय लक्ख १०००००
सत्थ ॥ ५५ ॥
इत जनक मरत लहि पट्ट एस, जसवंत जोधपुर हुव जनेस४ ॥
काहू कवि किय जिहिं प्रीतिकाम, नव भाखाभूखन३ग्रंथ नाम ॥५६॥
बहु जत्थ अलंकारन बिबेक, अैसो रच्यो सु लघु ग्रंथ एक ॥
जसवंतनृपहु करि श्रवन जाहि, सासन१गज२बसु३दिय गुन सराहि।
लच्छन १ मुख न मिलत सब ललाम, नृप१ कवि२ जुग २ पायो
तदपि नाम ॥
महिपाल सता १९४।१ इत सबन मान्य, बरखैं बसु बिंदुन अति
बदान्य५ ॥ ५८ ॥
बुध१कवि२जन दुर्विध६भाव बोरि, निज रीझ दये लक्खन निहोरि
पुहवीस करैं सहजहु प्रयान, धरि संग लक्ख १००००० दम्मन
निधान ॥ ५९ ॥
सकटन जे संभृत बहुतबेर, दिय मंगनमात्रन न किय देर ॥

१शृंगार रस ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ छंद और शब्दों के मिलाप में २विरुद्ध है ॥ ५३ ॥ ३शत्रुशल्य चरित्र नामक ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ४ राजा ॥ ५६ ॥ ५७ । ५ दानी ॥ ५८॥ ६ दरिद्र भाव मिटाकर ॥ ५९ ॥

द्विज १ सूरिन सत्रह १७ ग्राम दत्त, पंद्रह १५ लहि चारन २ हुव सुपत्त ॥ ६० ॥
इकबीस२१दये भट्टन३उदार, लक्खन पट१भूखनररीझ लार ॥
कवि चारन देवहिं दम्म१ कोरि१००००००० बखसी सह सासन२ गज३बहोरि ॥ ६१ ॥
देवहु निजजाचक बुल्लि द्वार, सब रीझ दिय सु किय जस प्रसार ॥
अहिफेन[2] फलन जल काढ्ढि अर्क, देवहिं नृप पायो जस उदर्क[3] ।६२।
तदपि न बिरुदायो देव ताहि, सबरीति नृपति आदर सदाहि ॥
अनुगत्व[4] कबहु नृप करि अतुल्य, कवितैं सु लह्यो निज बिरुद कुल्य[5]
अैसो अलुब्ध कवि देव एह, नृपजन सब जाको चहत नेह ॥
दिय जाहि सता१९४।१ जो उक्त दान, सब दिय सु जाचकन जिंहिं सुजान ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

याहीतैं महियारियन, एह भयो अवतंस[6] ॥
करी१कोटि२सासन३बरिस, बिरुद लहत तसबंस ॥ ६५ ॥
अब लिय सब महियारियन, यहहि बिरुद अपनाइ ॥
तजैं वडाई कोन तँहँ, अनायाँस[7] जँहँ आइ ॥ ६६ ॥

॥६०॥*देवा१नाम महियारिया चारण को ॥६१॥२तिजारे के डोडा का अर्क निकाल कर ३ भविष्यत् काल में यश करने के लिये ॥ ६२ ॥ ४ सेवकपन ५ अपने वंश से उत्पन्न हुआ विरुद लिया ॥ ६३ ॥ ६ इसी कारण से महियारिया चारणों में मुकुट हुआ जिससे महियारिये हस्तिबरीस कोड़बरीस कहलाते हैं ॥६५॥७बिना परिश्रम किये ही जो वडाई मिलजावे उसको कौन छोडें।६६।

* बुन्दी के राव शत्रुशालने महन्यूं ग्राम के महियारिया शाखा के चारण देवा की जूतियें (उपानत्) अपने हाथ से उठाकर देवा के आगे रक्खी उस समय देवा ने निम्न लिखित यह दोहा कहा सो इस समय भी राजपूताना में बहुत प्रसिद्ध है ॥

॥ दोहा ॥

पाणां गह पैंजार, सुकवि अग्ग धरतां सता ॥
हिक हिक बार हजार, पह सूमां माथै पड़ी ॥ १ ॥

इस दोहे में पह शब्द (पहु) अर्थात् प्रभु शब्द का अपभ्रंश है ॥

आरंभिय जवनेस इत, लंघि अटक भुव लैन ॥
अज्जे१जवन२खुल्ले अखिल, इक्खन कावल ऐन ॥ ६७॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे दक्षिणप्रस्थितयवनेन्द्रशाहजहांकृतलोदीपलायन १, सुतासंबन्धकरणकटुवचनहेतुकबुन्देलहड्डबाहुजविरोधसमरहड्डविजयन २, भाषाभूषणविहारीसप्तशतीनिर्माणवर्णनतद्योग्यायोग्यत्वग्रन्थकर्तृसंमतिकथन ३, महियारियाशाखीयचारणदेवाकृताप्रतिमसेवानिमित्ततच्छाखीयचारणार्थशत्रुशल्यप्रतहस्तिवरीसकोडवरीसविरुदप्राप्तिवर्णनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितोऽष्टादशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अटकपार दिल्ली अमल, इक१सूबा सिर आहि ॥
काबल१अटक२दुर२नाम करि, जग जन जंपत३ जाहि ॥ १ ॥
काबलवासी निकट करि, उतके अरि अफगान ॥
अवसर अवसर उप्फनैं, दव्वन धरनि निदान ॥ २ ॥
कलाबास अभिधान करि, जाहिर इक गढ जत्थ ॥

---

१ आर्य २ घर ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां का दक्षिण में जाकर लोदियों को भगाना १ पुत्री का संबंध करने में कटु वचनों के कारण बुंदेला और हाडा चत्रियों में विरोध होकर युद्ध में हाडों का विजय होना २ विहारीसतसई और भाषाभूषण दोनों ग्रंथों के बनने का वर्णन और उक्त दोनों ग्रंथों के योग्य अयोग्य होने में ग्रन्थकर्ता की सम्मति ३ राव शत्रुशाल का महियारिया शाखा के चारण देवा की अतुल्य सेवा और महियारिया चारणों को हस्तवरीस कोडवरीस का विरुद मिलने के वर्णन का छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१८ मयूख हुए ॥

३ कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

सो कबहुक इन्ह१ अनुसैं, है कबहुक तिन्ह२हत्थ ॥ ३ ॥
किते कहत उतकोहि यह, जित्तहिं अब जवनेस ॥
किमहु होहु पै काबलिन, दब्ब्यो कछुक प्रदेस ॥ ४ ॥
तस पुकार सुनतहि तबकि, अब बल सजि अमान ॥
करन पराजित काबलिन, हंकिय साहजिहान३९१२ ॥ ५ ॥

॥ मदनावतारः ॥

भूपगन सर्व आहूत हाजरि भयो,
गद[1] बिकल सूर अभिधान नृप नौं गयो ॥
रोग परतंत्र बीकानयर[2] अप्प रहि,
सज्जि जिहिं पट्टधर कर्ण पठयो सुतहि ॥ ६ ॥
साह दरकुंच अनुसार हुव भूप सब,
अटकपर जात पच्छिलात[3] बिमना हु अब ॥
भूप बुंदीस जब गो तबहि दर्प भरि,
कुप्पि इम साह तरज्यो उपालंभ करि ॥ ७ ॥
मारि बरसिंह१ तव पास गत[4] मित्र मम,
सुब्बमति जुद्ध हुव तूहु किम सत्रुसम ॥
हठ्ठ[5]१ नृप कहिय वह आत मो घर हन्यौं,
तासघर जाइ नहि नैंक रन मैं तन्यौं ॥ ८ ॥
बंधु तस बैन कटु गेह मम बुल्लये,
गाढ अपराध तव मूढ[6] कहिंगये ॥
तोहु हरिसिंह१९१२३काका हि किय बाद तिम,
कटुक मम बैन सुनि तेहु मरते न किम ॥ ९ ॥
कूर हरि१९१३ टारि इम नम्र हुव जोरि कर,

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १ बुलाये हुए २ रोग से विकल होकर बीकानेर का राजा सूरसिंह नहिंगया ॥ ६ ॥ अटक नदी के उल्लंघन करने से आये हुए राजा अपना धर्म हानि समझते थे तिस कारण ३ उदास हुए ॥ ७ ॥ ४ तेरे पास गयेहुए मेरे मित्र बरसिंह बुंदेले को तुमने मारडाला ५ वह मेरे घर पर चढ कर आया तब मैंने मारा है ६ मूर्ख हरिसिंह के विना

तोहु बुंदेल कटु भाखि हुव सत्रुतर ॥
जे न कुल सुद्ध इमं रारि बढिजावती ॥
तोहु गिनतेंहि मम हानि प्रभु तावती[1] ॥ १० ॥
देस मम लुट्टि वह भ्रात मारन दल्यो,
चित्र तब ताहि कित जाइ हनिवा चल्यो ॥
भूपअरजी सु कछु साह मन्नी भली,
बैन कटु पात मरि जात समुझ्यो बली ॥११॥
पै व इम नित्य दरकुंच चलि प्रातही,
अधिप करि मंत सब सँझ[3] अकुलातही ॥
कहिय बुन्दीस तुम छन्न इत कोप है,
एह तब सीस मम भार आरोप है ॥१२॥
भीत होहु न तदपि इष्ट करिहैं भली,
छोनि[4] लहि धर्म बिगराइ जीवैं छली ॥
धर्म रहि भूमि सब जात प्रानहु धरैं,
मेटि जिहिं रक्खि भुवकोन जीवत मरैं ॥ १३ ॥
पै व पंजावलग आँटि कछु पारि हैं,
बिन्नति हु सर्ब कर जोरि बिसतारि हैं ॥
प्रेष्ठ[5] करि मोहि मग रोंहि[6] पछिताइहैं,
होहु प्रभुकोहु सचिवत्व हम पाइहैं ॥१४॥
जद्दव१ रु गोर२ बाघेल३ बडगुज्जर४न,
सोहि सम्मत कह्यो होहु कोऊ सरन ॥
भोज्य गुन जुत्त दृग छुत्तँ[7] हम नाँ भजैं,
लंघि नदि सिंधु लहि मिच्छपन क्यों लजैं ॥१५॥

१आप तक मेरी ही हानि मानी जाती ॥१०॥ २तब उसके मारने में क्या आश्चर्य हुआ॥११॥ ३ सन्ध्या समय ॥ १२ ॥ ४ भूमि लेकर ॥ १३ ॥ ५ मुझ को आगे करके ६ मार्ग रोक कर ॥ १४ ॥ ७ यवनों के देखेहुए भोजन को भी हम नहीं खाते हैं तब अटक नदी लांघकर यवन होकर कैसे लजेंगे ॥ १५ ॥

हैं न बलवान तुमतुल्य लघुथान हम,
कर्म निजधर्म रहिजाइ करिये सु क्रम ॥
कुम्म जयसिंह१ रट्ठोर जसवंत२ क्रमि,
छमन[1] किय अरज अपराध इक१ लेहु छमि॥१६॥
रंच हम धर्म नदि सिंधु लंघिन रहैं,
क्यों न तो नाम करि याहि अटक[2]हु सहैं ॥
धारि हित सिंधुतट वार रहि धर्ममैं,
मरन परजंत हम सज्ज प्रभुकर्ममैं ॥ १७ ॥
होइ संदेह तो स्वामि परखो हमैं,
देहु तब दंड जब एहु मिथ्या जमैं ॥
कोपकरि साह सुनि एह पच्छी कही,
मोरसह गौन[3] तजि कोन भजिहै मही ॥१८॥
होत इम बत्त गय लंघि पंजाब हद,
नाम तिन्ह सुनहु प्रभुराम२०३१४ जिम पंचनद ॥
जो सतद्रू१ सु सतलंज२ जिम जानिये,
जो बिपासा२ सु व्यासा२ हु तिम जानिये ॥ १९ ॥
जिमजानिये१ तिमजानिये२ अन्त्यानुप्रासः१॥
नाम ऐरावती३ सोहि रावी३ नदी,
चंद्रभागा४ सु चिन्हाब४ बहुस्यौं बदी ॥
जो बितस्ता५ सु झेलम५ हु ए पंच५ जँहँ,
ते सबै लंघि जवनेस गय अग्ग तँहँ ॥२०॥
बत्त तब मंत्रमय एह भूपन बदी,
नाव चढि साह जब सिंधु लंघै नदी ॥
पार लहिहैं न तब वार[5] रहिहैं परे,

१ समर्थों ने ॥ १६ ॥ यदि इस सिंधु नदी के उतरने की रोक नहीं है तो इस को २ अटक क्यों कहते हैं ॥ १७ ॥ ३ साथ जाना छोडकर भूमि को कौन भोगेगा ॥ १८ ॥ ४ नदियों के नाम हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ इस किनारे

अक्खिहैं दास इत खास रच्छक खरे ॥ २१ ॥
केक माधव१९३१२ प्रमुख मंत्रबाहिर कढे,
बंधि पिसुनत्व उत बत्त ख्यापन बढे ॥
द्रोह कछु जानि कछुमानि दिल्लीस हू,
रक्खि कछु प्रीति१ कछु रीति किय रीस२हू ॥२२॥
सिंधुतटवार कछुकाल रक्खे सिबिरे,
चलन तसपार दिय हुकम अब ह्वै न चिर ॥
बुल्लि सुहि प्रात सबठाँ नकीबावली,
धारि अवधान अविलंबहित धावली ॥२३॥
भूमिपति सूर गढपूर तबही भयो,
पट्टसुत पास दल्ल बेग पहुँचन दयो ॥
कुमर तब सिक्ख लै दैन भूपन कहिय,
लेनहो देस तिम तास सम्मत लहिय ॥२४॥
तिहिं कहिय इष्ट जैबो हि दृढ तानिकैं,
पुत्रपन हीन न दिखाइ जिम पानिकैं ॥
कुमर मत एह लखि सर्व नृप कानिकैं,
याहिकुल बिरुदबच साँनसित आनिकैं ॥ २५ ॥
कहिय तुमकोंहु जैबोहि सम्मत कुमर,
बहुरि तव बंस पहुकेहि हुव धर्मपर ॥
करौं हम तोहि अब अग्ग यातैं करैं,
एह अवलंब लहि धर्म करि उब्बरैं ॥ २६ ॥
सौंह करि भूप इक १ होइ खुल्ले सबहि,
वाहि कहि हैं अखिल कित्ति तुमरीहि कहि ॥
अप्प जै होइ करि जाहु यह नाम इत ,

॥२१॥२२॥१डेरे२छड़ीदारों की पंक्ति३सावधान होकर विलंब नहीं करने के कारण ४दौड़॥२३॥ ५पत्र॥२४॥ ६यश के वचन रूपी ७सान पर तीक्ष्ण करके॥२५॥२६॥

अप्प रहि भार हम बंटि करिहँ उचित ॥ २७ ॥
सोहि सुनि हड्ड १ कछवाह २ रट्ठोर ३ सन,
करन हरिसौंहँ करि सौंहँ अप्पे करन[1] ॥
हड्डवति १ देस मरुदेस २ ढुंढाहर ३ हु,
कहिय हम पिट्ठि तुम जाइ समुचित करहु ॥ २८ ॥
कर्ण तरुनत्वमद[2] सोहि मत स्वीकर्‌यो,
कानि १ विसवास २ घर गोन घरही कर्‌यो ॥
[3]सोर हुव धर्मधरि कर्णनृप सूरसुत,
अज्ज इत रक्खि सुनि बप्प दुख पत्त उत ॥ २९ ॥
भूप रहि सेस यह व्याज करते भये,
भारकछु पटकि सलँ[3] अग्ग कछु भेजये ॥
साह लंघिय अटक माधवा १९३।२ दिक सहित,
और नृप अग्ग न गये गिनैं ते अहित ॥ ३० ॥
स्याम १९४।३ हिंडोलि ईस और जसवंत सुत १९२।१,
अभय १९१।३ हरिसिंह१९३।३को पुत्र तीजो ३ हु उत ॥
छन्न कोटेस सन एहि मिलि हेरहि छर्द,
माधव १९३।२ हिं गुप्त लिखिदेत हुव पाप मद ॥ ३१ ॥
गैलविच तत्र तिन्हपत्र पकरेगये,
भीत दुवर जानि भजि देस आवतभये ॥
कुमरपति भूप दिय पत्र तब एह कहि,
द्रोह करि दुष्ट आये हनो ए दुरवहि ॥ ३२ ॥
देखि नृप पत्र भाऊ १९५।१ कुमरकोप दवँ,
स्याम १९३।१ वह टुकड़ा जाइ होम्यों सजव ॥
सो अभैसिंह १९४।३ तबनो बच्यो काकसम,

॥२७॥ १ करणसिंह ने विष्णु की सोगन करके सबको वचन दिया और सबने करणसिंह को वचन दिये ॥ २८ ॥ २ युवा अवस्था के मद में ॥ २९ ॥ ३ ऊंट ॥ ३० ॥ ४ पत्र ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ५ अग्नि ॥

कुमर भगवंत १९५।३ मारयो सु पुनि कालक्रम ॥ ३३ ॥
लाइ उर स्याम १९३।१ सुत रुक्म अंगद १९४।१ लयो,
द्रंग हिंडोलि तस तंत्र रहिवेदयो ॥
जो कलावीस गढ साह इत जित्तिलिय,
कलहं जय सद्धि तँहँ माधव१९३।२हु कित्ति लिय ॥ ३४ ॥
रीझि जवनेस कोटेस बल पिक्खि रन,
कुप्पि बुंदीसप्रति लुप्पि बचनादिकन ॥
परगनाँ मुख्य बाराँ १ मऊ२ छिन्निलिय,
द्रंगहि लखि माधव १९३।२ हिं तत्थ सुलतान दिय ॥ ३५ ॥
साक गुन व्योम हय इंदु १७०३ बिक्रम समय,
ग्राम इम ताम चउ इंदु सत १४०० छुट्टिगय ॥
भूप सुनि एह घर पत्र भेजतभयो,
देस जुग२माधव१९३।२हिँ साह अपनौं दयो ॥ ३६ ॥
सचिव सब लेहु बुलवाइ निज नैर सुत,
देहु तजि द्रंगहि कोटेस बस जानि द्रुत ॥
क्रियसु आदेस अनुसार भाऊ १९५।१ कुमर,
नैर दुव२ठाम हुवसज्ज कोटेसनर ॥ ३७ ॥
अटक सूबाहि रहि साह चउ४ अब्द इत,
जो अभय देस करि सेस अरि दब्बि जित ॥
सप्त नभ अद्रि इक १७०७ अब्द मित होत सक,
आइ पच्छो सु जवनेस लंघ्यो अटक ॥ ३८ ॥
तामें नृप अज्ज हाजरि रहे वारतट,
पंथ नियराइ सब जाइ प्रनमैं प्रकट ॥
राजगन पिट्ठि सजि सेन निज निज रही,
कछुन नयराह तँहँ साह इनसौं कही ॥ ३९ ॥

॥३३॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥३७॥ ३८ ॥ १ तहां २ आर्य ३ समीप जाकर ॥ ३९

गेह इम स्वीय सुलतान दिल्ली गयो,
भूपगन तत्थ सह सत्थ हाजरि भयो ॥
कुप्पि तब साह दम दंम्म[1] सबकै करे,
इष्टविधि कोहु मिलि थान जिन्ह उव्वरे ॥ ४० ॥
अत्थ मतभेद प्रभु राम२०३४ बहु इक्खये,
गदत कति परगनाँ सबन कछु कछु गये ॥
कतिक तिन्ह अधिक१समर२न्यून३गत भूरकहैं,
रुप्पय हि खिलन कति कहत पहुँचे रहैं ॥ ४१ ॥
होहु कछु खिलन गत भुम्मि जानैं न हम,
कहत सब बुद्धि अनुकूल इकमूल क्रम ॥
दै सबन सिक्ख जयसिंह१ढिग बुल्लि हुत,
पूर रिस करि कहिय मानकुल तू प्रनुत[2] ॥ ४२ ॥
ज्ञान करि मान नदि सिंधु तरि क्यों गयो,
मोन रहि अभ्युदय[3] क्योंन तबही भयो ॥
बुल्लि जसवंत तिमही-उपालंभ बदि,
निपट खिजि कहिय लंघी न तैं सिंधु नदि ॥ ४३ ॥
कोहु लखि हेतु हम माफ औगुन करयो,
अधिक अपराध पर अल्प दम उद्धरयो ॥
जो अबहु हानि कछु काम पर जानिहों,
तानिहो त्रास करि हो नतो कानिहों ॥ ४४ ॥
भूप बुंदीस सिर रीस गुद्धिगुनीभई,
देस प्रति सिक्ख इम दंडि सबकों दई ॥
जोहि बढि गंग बीकानयर भूप जब,
तनुज पहुँच्यो तदनु सूर[4] हुव सांत तब ॥ ४५ ॥

---

१ दंडके रुपये ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ विशेष स्तुति योग्य ॥ ४२ ॥ ३ धन जन की वृद्धि ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४ सूरसिंह मरगया

भूमि तस खेत संभवेत सब भूमिपति,
प्रनत हुव साह सचिवेस[१] सेनेस[२]पति ॥
सिक्ख है दूर इम तेहु मंगि न सके,
बप्प गदे[२] घोर सुनि अप्प पुनि अकबके[३] ॥ ४६ ॥
गेहु अब तेहु हमरेहि पठये गये,
भाग्यबस सांत तह तात तिनके भये ॥
देत तिन्ह दंड हमकों सु बटि दीजिये ॥
करि अरज एह आसानं उत कीजिये ॥ ४७ ॥
साह तब निठ्ठि तिनके कहे स्वीकरी,
अवनि सबकोहु तिनतैंहि नहि उत्तरी ॥
कर्णसिर जोहु हित जत्न सबनैं करे,
पंच[५] गुन तोहु दमं दम्म दैनैंपरे ॥ ४८ ॥
पै सु घरही रह्यो सिच्छभय पाइकैं,
आवत न बैठि गह्योहु अकुलाइकैं ॥
सिक्खकरि भूप आये सदन[६] सबही,
लेखबस व्याध दिल्लीहि माधव१९३।२लही ॥ ४९ ॥
अद्रि नभ सत्त ससि१७०७ साक घर आइकैं,
पिंड माधव१९३।२तज्यो अंत खिन पाइकैं ॥
तास जेठे मुकुंद१९४।१भिर्धानी तनैं,
बीर कोटेस बनि इक्क१ किन्नों अनैं ॥ ५० ॥
कामबस नारि अबली सु मैनी[१०] करी,
दूर करि लज्ज रति कज्ज मति आदरी ॥
सोहु विस्मैं न प्रभु राम२०३।४ कलिके समय,

१ बीकानेर खालसे करने पर सब राजा सामिल होकर अरजाऊ हुए २ पिता का घोर रोग सुनकर ३ घबराये ॥४६॥ ४ नाश ॥४७॥ ५ दंड के रुपये ॥ ४८॥ ६ घर ॥ ४९ ॥ ७ कोटा के राव माधोसिंह ने शरीर छोडा ८ मुकुंद नामक ९ अनय (अनीति) ॥ ५० ॥ १० मैंने (चांडाल विशेप) की स्त्री को

मिच्छपन नारिसन होत रत प्रेममय ॥ ५१ ॥
मिच्छकहँ अप्पि तनयाहु है मिच्छही,
कोनकुल नीच तनया जु अपनैं कही ॥
ज्याहि तनयाहि संबंधि मिच्छन बनैं,
तत्थ किम धर्म मैनिन्नि करि भैं[२] तनैं ॥ ५२ ॥
साह घर आत इत देस प्राग[३]सन,
सोह करि क्कुमर दारा ४०।१ हु आयो मिलन ॥
भीम १९५।२बुंदीस सुत तत्थ गतप्रान भो,
हो जु दारा४०।१ सु भट अत्तास वपु हान भो ॥ ५३ ॥
अब्द मुनि व्योम हय इंदु१७०७ सक वत्त यह,
राम हुव पोसवदि तीज३सबको अरह ॥
सोहि बुन्दीहु दिन सत्त७ पीछैं सुनी,
वत्त सुनि अग्ग विसतारि चैविहैं चुनी ॥५४॥
या१७०७हिसक साह लघुनीन३सुत काल अहि,
तीन३ दिस लाह करि नाह पठयो तबहि ॥
सोहु माफुगाम२०३।४ क्रम१ नाम२ जुत लेहु सुनि,
पान फल वचन जिन्ह दप्प रुकि अप्प पुनि॥५५॥
सुजुदओर२ सुजा ४०२ पुत्र१दिस प्रेसयो,
देस अधिकार सव प्राच्य१ तासौं दयो ॥
पुत्र ओरंग४०।३ तीजो३ सु दक्खिन२पती,
सुकल्यो अप्पि अधिकार दारुनमती ॥५६॥
देस प्रातीच्य३ चोथे४ मुराद४०।४हिं दयो,
राजपपति पुत्र१ दारा४०।१ सु ढिग रक्खयो ॥
अधिक बढि बुद्धि१ छल२ पाप ओरंग४०।३ के,
जाइ आवाच्य२ दिय दक्खिनिन जंगके ॥५७॥

॥५१॥ १ म्लेच्छ ॥ १ पुत्री कुमार २ मन ॥५२॥ ३ प्रयाग में ॥५३॥ ४ कर्णाटक ॥ ॥५५॥ १ पूर्व दिशा का ॥५६॥ २ पश्चिम दिशा का ७ दक्षिण दिशा के ॥ ५७ ॥

द्रंग औरंगआबाद१ बहु दाम करि,
निर्मयो तत्थ औरंग४०१३ निजनाम करि ॥
देस तापी१रु गोदावरी२ पूत दुवर,
हे दुहूँ२ ओर तिन्ह बीच यह नैर हुव ॥५८॥
॥ सौराष्ट्री दोहा ॥
उत्तर१ तापी२ आँहि, दिसदक्खिन२ गोदावरी२ ॥
मंडल जो इनमाँहिं, खानदेस सो भाखियत ॥५९॥
अग्गि² कोन पुर२ एह, दुर्ग दौलताबादतैं ॥
अति ढिग आढ्यं³ अछेह, बहुरि सुनहु जैसैं बन्यौं ॥६०॥
द्रुत लहि जनक निदेस, साहकुमर औरंग४०१३सो ॥
बिरच्यो नगर सुवेस, उत औरंगाबाद इम ॥६१॥
नृपको इत वह नाग⁴, सिवप्रसाद मिलि विधि मर्‍यो ॥
या गजमैं अनुराग, सबको हो साहन सहित ॥६२॥
प्रतिमा तस महिपाल, पुर बुन्दी थप्पिय प्रथित⁵ ॥
सो बाजार बिसाल, नियत सिंह चत्वर⁶ निचित ॥६३॥
इत कहुँ समर उदंत, हुकम सता१९४१२को सह्वि हद ॥
भूप कुमर भगवंत१९५१३, अभय१९४१३ हन्यौं हरि१९३१३पुत्र वह॥
पीछैं सासन पाइ, अधिप कुमर भगवंत१९५१३ यह ॥
जय कर दक्खिन जाइ, रह्यो सुभट औरंग४०१३कैं ॥६५॥
जबहि सता१९४१२ नृप जाइ, किय सहाय औरंग४०१३को ॥
जन कति इमहु जनाइ, तत्थ रह्यो भगवंत१९५१३ तब ॥६६॥
असि करि हनत मइंद, भुज पेठे तस नख उभय७ ॥
इम बहु गाम१ गइंद८, सता१९४१२ सुतहिं दिय साहसुत ॥६७॥
दारा४०१२ हुकम दिवाइ, पहु सुत दूजा२ भीम१९५१२ पुनि ॥

१ पवित्र ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २ अग्निकोण ३ धनवान् ॥६०॥ ६१ ॥ ४ हाथी ॥६२॥ ५ प्रसिद्ध ६ सिंहचौक में बनी हुई है ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ७ खड्ग से सिंह को मारते समय ८ हाथी ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

छम बुलाइ हित छाइ, निज आश्रित रक्ख्यो निपुन ॥६८॥
यह अति पुव्व उदंत, जब दारा४०।१ निज जनकसौं ॥
लियउ प्रयाग लसंत, भीम१९५।२ रह्यो तब तास भट ॥६९॥
लिहित रामगढ१ नाम पुनि सिंगावद२ परगनाँ ॥
ए उभय२हि अभिराम, दारा४०।१ तँहँ भीम१९५।२हिं दयो७०
अटकपार सन एह, पुर जब आयो जवनपति ॥
दिल्लीतव तजिदेह, भीम१९५।१ कुमर सुरपुर भज्यो ॥७१॥
बच्यो याहिको बंस, औरनके बिनसे अखिल ॥
यह हड्ड६१न अवतंस, सह विस्तर इत सूचियत॥७२॥
बंस रहे वय बाल,जिहिं सुत कृष्ण१९६।१प्रयाग१९६।२जुग२
कर्‌यो अनुज२ सिसु काल, रन सपर्ज अग्रज१रह्यो ॥ ७३ ॥
भीम१९५।१मरन सुनि भौन, जिमकुमरानी चउ४ जरिय ॥
हाहा बुंदिप हौन, कहियत सब अग्रिम किरन ॥ ७४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे अफगानिस्तानविजयशाहजहांप्रयाणसमय करतोयोल्लङ्घनार्यराजास्वीकरणं १, करतोयापरतटसहगामिमाधवसिंहार्थशाहजहांबुन्दीराज्याच्छिन्नबारांमऊप्रान्तप्रदानं २, काबुलप्रत्यागतयवनेन्द्रस्य करतोयानुल्लङ्घकार्यराजदमनं ३, विक्रमनगराधिपसरजासिंहमरणं पट्टाधिकृतकर्णसिंहयवनेन्द्रदण्डसंप्रापणं ४, दि-

१ शोभायमान ॥ ६९ ॥ २ सुन्दर ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ मुकुट ॥ ७२ ॥ ४ संतान सहित ॥ ७३ ॥ ५ अगले मयूख में कहते हैं ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में अफगानिस्तान विजय करने को शाहजहां के जाते समय अटक नदी उल्लंघन करने को आर्य राजाओं का अस्वीकार करना १ कोटा के अधीश माधवसिंह को अटक पार बादशाह के साथ जाने के कारण शाहजहां का बुन्दी के राज्य से बारां और मऊ के परगने खालसे करके कोटा के आधीन करना २ बादशाह का काबुल से पीछा आकर अटक नदी नहीं लांघनेवाले आर्य राजाओं को दंड देना ३ बीकानेर के राजा सरजासिंह

छोदङ्कोटाप्रत्यागतमाधवसिंहतनुत्यजन५, शाहजहांस्वात्मजपृथ-
क्पृथक्प्रान्तवितरण६, राजपुत्रभीमसिंहमरणं सप्तमो मयूखः॥७॥
आदित एकोनविंशत्युत्तरद्विशततमः॥ २१९ ॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥
किय बिबाह भाऊ१९५।१ कुमर, सब बारह१२ विधिसत्य॥
तासचरित कहिहैं तिते, कृष्ण१९६।२ कुलाहु तिम तत्थ॥१॥
अब प्रसंग संगत इहाँ, बरनत भीम१९५।२ बिवाह॥
कुमरानी खट६ जिहिं कुमर, रुचिर वर्ग विधिराह ॥२॥
भोजाउत बलभद्रकी, कनी अनोपकुमारि१९५।१ ॥
प्रथम१ नरापनपुर परनि, निपुन चालुकी नारि ॥३॥
सेखाउत दूजी२ सुमत, अमरकुमारि१९५।२ अभिधान॥
कन्हसुता व्याही कुमर, सुतदुव२ जास सुजान ॥४॥
खीनाँपुर जुज्झारखाँ, बैछन चालुक बास ॥
कनी बडी१ देउलकुमारि१९५।३, तीजी३ व्याहियतास॥५॥
जिम सर मथुरा जादवी, चौथी४ वरिय विचारि ॥
सुता बहादुरकी सु पै, कथित अनोपकुमारि१९५।४ ॥६॥
दुबलानाँ चालुक दई, जिम राउत जगतेस ॥
कनी सोहु देउलकुमारि१९५।७, उपयँम पंचम५ एस ॥७॥
रामसुता रंभावती१९५।८, व्याहिय छट्ठ६ व्याह ॥
कै१ भगताउति१ही सु कै१, राजाउति२ भ्रम राह ॥८॥

का देहान्त होनेपर कर्णसिंह का गद्दी बैठकर बादशाह से दंडित होना ४ चहुवाण माधवसिंह का दिल्ली से कोटे आकर शरीर छोडना ५ बादशाह शाहजहां का अपने पुत्रों को भिन्न भिन्न सूबे देना ६ राजा के पुत्र भीमसिंह के मरने का सातवां मयूख समास हुआ और आदि से २१९ मयूख हुए ॥
॥ १ ॥ १ प्रसंग के साथ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ चालुक्योत सोलंखी ॥ ५ ॥ ३ कहीं हुई ॥ ६ ॥ ४ विवाह ॥ ७ ॥ ८ ॥

ऊर्हा ए खटद भीम१९५।२ इम, हित वय दुल्लह होइ ॥
भई पंच५ अग्रज अये, दूजीके सुत दोइ२ ॥ ९ ॥
दारा४०।१ नैं यह तिन दिनन, साह कथन अनुसार ॥
नृपसौं कहि रक्खो निकट, कोविद भीम१९५।२कुमार ॥१०॥

॥ मनोहरम् ॥

सासनसौं दारा४०।१ जब पाइकैं प्रयाग सूबा,
जायकछु हायन रह्यो सो तँहँ जानियें ॥
सूबा निजमाँहिंसौं ठहाँ रामगढ१ सिंगावाद२,
परगनाँ हेरही दये भीम१९५।२हि प्रमानिये ॥
गंगातट दक्खिन ठहाँ प्रसंगम पैं दारागंज,
दारा४०।१ जो बसायो देख्यो विदित बखानिये ॥
अटकतैं दिल्ली सुनि तात निज आयो दारा४०।१,
दिल्लीहू उहाँ भो भीम मृत्यु उर आनियें ॥ ११ ॥

॥ रुचिरा ॥

संवत समय नयन वसु सोलह१६८२ भीम१९५।२ कुमर जनु
जात भयो ॥
अद्रि गगन सत्रह१७०७संवत इम दिल्ली तब तजि देह गयो ॥
पोस १० असित २ तिथि तीज ३ समें पर भीम १९५।२ परत
अति हानि भई ॥
दिन सप्तम७तासौं दसमी१०पर गढ बुंदिय यह वत्त गई ॥ १२॥
कुमरानी छट्ठी६पहिलैं कछु मंदनिर्यति लहि रोग मरी ॥
पंच५हि खिल्त तिनमें चउ४पतनी जरन तेंदुपवन जाइ जरी ॥
अमर कुमार १९५।२ दूजो २ सेखाउति पोतक कृष्ण १९६।२
प्रयाग १९६।२ प्रसू ॥
अतिसाहस निश्चय लागि पहहु उद्दिम सह हुत करन असू ॥१३॥

विवाहिता ॥ ९ ॥ २ चतुर ॥ १० ॥ ३ संगम पर ॥ ११ ॥ १२ ॥ ४ मंदभाग्य
चार बाग में ६ बालक ७ प्राण होम करने को ॥ १३ ॥

सो सत्वर निज स्वसुर सता१९४।१के रोकत अति हठ निट्ठि रही।
पुर कापरनि रची जिहिं बापिय मंजुल अबलग बिदित मही ॥
कृष्ण १९६।१ बच्यो तनिबे प्रभुको कुल मिलि गेद सिसुहि प्रयाग १९६।२ मर्यो ॥
प्रभुमत बिनु अनुजात जु पंचम ५ भ्रात सु मुहुकम१९४।५ लोभ भरयो ॥ १४ ॥
पासहि रक्खि जनक्क दारा४०।१पुनि दिस त्रय३खिल सुतत्रय३हिं दई
तकि मुहुकम१९४।५पहिलैं दिल्ली तब लैन पटा दृढ आस लई॥
अग्रजके अनुमतबिनु आवत सुनि पावत दिल्लीस सुही ॥
पिसुन१कुपुत्र२जनाइ रु प्रत्युत गिनि अनुचित अपकित्ति गुँही॥१५॥
साह ढिग सु बुल्ल्यो हु न सादर कछुक पटाहु न दैन कह्यो ॥
तब मुहुकम १९५।५ प्राची १ पतिकों तकि रुट्ठि सुजा ४०।२ढिग जाइरह्यो ॥
पहु यह सुनत सता१९४।१खिजि तापर लिखत दुधारिय छिन्नलई॥
लोभित इंद्रगढसहु दिल्लिय दूजे२अनुजहु दिट्ठि दई ॥ १६ ॥
अलप पटा दिय ताहि जवन इम भोगि अचिर तिहिं बिरत भयो॥
सुत गजसिंह१९५।१हिं रक्खि तहाँसन लजि अप्पन गृह आइ लयो
उपआलंभ दयो नृप१अनुज२हिं किम बिनु सासन भ्रमन करयो
अवनि१तथापि कितीक लही अरु धन२जस३पद हु कितोक धरयो॥१७
मूढ अनुज तब जिम हुव मुहुकम१९४।५तूहु लुभाइ न होहु तथा॥
सह जस१लाभ२चढहु आदरसन पिक्खहु निज कुल धर्म प्रथा ॥
मान बढाइ मिलैं बिनुमंगिय१मंगिय२सो न घटाइ मिलैं ॥
जे जग जनम न उच्च बढैं जिन्ह खट्टन जस हिय सुमनं खिलैं १८

१ शीघ्र २ रोग ३ छोटा भाई ॥ १४ ॥ ४ बड़े भाई की सलाह बिना ५ चुगलखोर ६ उलटा ७ अपकीर्ति गुथी ॥ १५ ॥ १६ ॥ ८ विरक्त ९ ओलंभा ॥ १७ ॥ १० खाटवां (सम्पादन) ११ हृदय रूपी पुष्प ॥ १८ ॥

*वासवसंल्ल१९४।२हिं समुझाइ रु पुव्व जथा पय लाइ लयो ॥
सुजा४०।२मिलि इत सुहुक्कम१९४।५कँहँ देय पटा कछु काढ्ढि दयो,
रहिलैं ताजमहल इतैं अतिप्रिय मंजु जवनपति हुरम मरी ॥
।हजिहान३९।२अतुल दुख सोचि रु धी जग जस तस रहन धरी १९
अकबरपुर जमुनातट वाकँहँ देस उचित दफनाइ दई ॥
कोटिन दम्म खरच तापर करि ललित मुकबिरा कित्ति लई ॥
†उपल विविध अति‡अर्घ चिराइ रु जिहिं आलय सब जेहि जरे ॥
पसु१फल२फूल३लता४द्रुम५पच्छिय६इम सब उपलन कोरि करे २०
पट्टुनम चित्र करहु गजरदपर रुचिर कमलकरि चित्र रचैं,
तदपि न नैंक धरे छवि तिनकी मन जिन्ह ऋतपन चित्र मचैं ॥
इक१इक१अल्प कुसुमविच अद्भुत सत्तरि७० सकल जराव सज्यो
नखहु घिस्यो जिनपैं अटकैं नहिं तिम इक१बनि तिन भेद तज्यो ।२१।
मंडप तस खट रस ससि१६६कर मित उच्छ्रित मनहु अकास अरैं
पासहु तास छ वेद४६ करन बनि प्रतिदिस जास प्रकास परैं ॥
॥
वेगमकबर रुचिर ताके विच बहुधन उपलन जटित बनी ॥२२॥
चउ४ कोनन मीनार बनैं चउ४ उच्छ्रित अंतर मग्ग अहो ॥
जत्तां खिन प्रभु मैंहु चढ्यो जँहँ क्यों न टिक्यो हटतैंहु कहो॥
आयत चउ४ द्वारनपर आयत वर्ण जवनालिपि जटित बनैं ॥
बहु जलजंत्र१कुसुमवाटी२वर खचित वितर्दि१मेनाल२ खनैं ।२३।
अमित जनन सबऋतु जँहँ प्रविसत माधव१ऋतु सरबस्व मिलैं,
अलि१खग२गान गुंजन१कूजन२इत खिनखिन जित तित कुसुम२खिलैं

*इन्द्रप्रस्थ ॥ १९ ॥ †पाषाण ‡बहु मूल्य १ पत्थरों को २ खोदकर ॥ २० ॥ ३ हाथी दांत पर ४ सत्यपन में आश्चर्य होता है ५ जड़ाव ॥ २१ ॥ ६ ऊंचा ७ विस्तार ॥ २१ ॥ ग्रन्थकर्ता कहता है कि ८ तीर्थ यात्रा के समय में भी उस पर चढ़ा था ९ औंदे १० फारसी के बड़े अक्षरों में ११ चबूतरे बने हुए हैं १२ नालियें खुदी हुई हैं ॥ २३ ॥ १३ वसंत ऋतु

महकि सुगंध१ मंदर२ हिम मारुत हिय१ संगहि श्रम२ सवन हरैं॥
जासन रुचिर अगार अखिल जग प्रथित न ओरहु जानिपरैं ।२४।
सत्रह१.७लक्ख त्रि३कोटि३१७०००० लगे सब रुप्पय जिहिं
सिर लिखितरहैं ॥
जिहिं सिल्पी सु रच्यो तस फल जहँ कट्टिय कर तस साह कहैं॥
तैसो अदय हुतो हाहा तब गीदर सुत ओरंग४०।३ गह्यो ॥
जो बितथहि तो सोहु अदय जिहिं बितथ कथन श्रम विफल
बह्यो ॥ २५ ॥
ऐसो हुरमसुकबिरां अद्वय२ ललित बिरचि जस साह लयो॥
जाकहँ ताज हुरम रोजा जग भनत इमसु तिहिं काल भयो॥
इत बुन्दी१ पट्टनि२ दुव२पुर इम रुचिर सता१९४।१पासाद रचे
अद्वय एहु उभय२सम अधिपन आयत१ उच्छ्रित२ जटित२ जचे
प्रभुपद छत्रमहल१ बुन्दीपुर जटित सितोपल तुंग जथा ॥
गंजत जो पारद सित रुचिगुन परिचित सारद जलद प्रथा॥
सब गुन१ उच्च२पृथुल३दृढ४ जासम सौध द्वितीय२न जात सुन्यों
सूल१ दिसा२ साधित जो सिल्पिन चतुरन चित्र बिचित्र चुन्यौं ॥२७॥
याकै सिर हाटकमय उत्तम दिव्य जटित मनि छत्र१ दयो॥
पाद सु बुद्ध१९७।१समय कोटापति गंजि सवन लौ भीम१९५।२गयो
यह रचि छत्रमहल१ बुंदी इम पट्टनिपुर प्रासाद२ प्रथा ॥
सवसन तुंग चढाइ रच्यो सुभ जग इक१हिम गिरि सिखर जथा २८
चम्मलि वामतट सु जाके चय पंच५ निवर्त्तन पीठ परयो ॥

१ मकान ॥ २४ ॥ जिस कारीगर ने उसको बनाया था उसके हाथ कटवाडाले तभी उसके पुत्र औरंगजेब ने उस गीदड़ को कैद किया २ जो यह बात झूठ है तो वह निर्दय है कि जिसने यह झूठ कहने का वृथा श्रम किया है ॥२५॥ ३ चौड़े और ऊंचे ॥ २६ ॥ ४ श्वेत पत्थर का जड़ा हुआ जो ५ पारे की श्वेत कांति के गुणको दबाता है और शरद ऋतु के बादल का परिचय कराता है ६ महल॥ २७ ॥ ७ स्वर्ण का ॥ २८ ॥ ८ समूह ९ बीस बांस का एक

जिंहिं*उच्छ्रय बाहिर वह जा सन धरनि समाहित द्विगुन धर्‍यो ॥
इकसत१०० कर चम्मेलि हद अंतर गाढ†निचित छिति मग्नगयो
‡पीठकमध्य बिभाग महा पृथु ठाम बिहित प्रासाद ठयो ॥२९॥
सब भुवके दुव२बिध प्रासादन उच्छ्रित हुव प्रासाद वहै ॥
जोजन चउ४ दूरहु जो मनुजन रम्य सविध सम दिट्ठि रहै ॥
सुबरनछत्र१कलस२दुव२सोभित बहु धन उपल[2] बिचित्र बन्यौं ।
प्रभु केसव जामैं पधराये तँहँ ठ्यपसह मह अतुल तन्यौं ॥३०॥
पट्टनि तलैं[3] जितोक परनाँ सो सब तत्थ लगाइ सदा ॥
राज्य प्रताप अधिक तँहँ रक्खिय उदित बिभव सब राज्य सदा ॥
तँहँ भेरीबादनँ४प्रतिजामरु रंजन गायन२मिथुन२रहैं ॥
घटिका जंत्र ३ घटी १ प्रतिघोसक ४ जकुटं[6] लकुट प्रतिहार ५ लहैं ॥ ३१ ॥
समयसमय सेवन बहु सेवक६ तखत७ रु चामर७छत्र८तती ॥
प्रभु अवसर बाहिर पधरावैं सह गज१०सादिय पंचसती५००॥११॥
भूखन १२ असन[9] १३ बसन १४ नवनव भाँति[10] समयसमय मह १५ बहुल बढै ॥
केसव कोसैं[11] बचैं सु रहैं बसु१६चित बसु बलि जुहि भेट चढैं ॥३२॥
मंदिर बिघ्नबिनासक जन१८सुख आसिकसैं दिय तिन्हहु मही
राजबिभव प्रभुकै इम रक्खि रु आपउ पुर अरिअनिलैं[12] अही
बुंदीतैंहु रहत खिल बासर च्यारि४घरी हय डाक चढ्यो ॥

निवर्तन होता है ऐसे पांच निवर्तन अर्थात् सौ १०० बाँस का जिसका पीढा (चबूनरा) है. बाहिर * ऊंचा है उससे दुगुनी भूमि है †नींव (बुनियाद) ‡ उस पीठे (चबूनरे) के मध्यभाग में बडा मोटा ॥ २९ ॥ १ ऊंचा २ पत्थर ॥ ३० ॥ ३ आधीन ४ नोबत का बजना ५ प्रहर प्रहर प्रति ६ जोड़ा अर्थात् दो द्वारपाल ७ छड़ी लिये रहते हैं ॥ ३१ ॥ ८ पंक्ति ९ नैवेद्य वा पक्वान्न १० नवीन नवीन भांति के ११ खजाने में ॥ ३२ ॥ १२ शत्रुओं रूपी पवन के

संध्या पट्टनि सद्धि सिधारत विघ्नन पारतभक्ति बढ्यो ॥ ३३ ॥
इम प्रासाद उभय२रचि अद्भुत लोभी नृप जसलुट्टिलयो ॥
इकदिन सब *संसद लहि अवसर भाऊ१९५।१प्रति इम भनतभयो ॥
†पलित धरत अब हम रन‡प्राघुन मह१ अह२ चाहत नियति३ अजों ॥
तूहु तरुन सुत४ सिसु मरिगो तब प्रभु इम देहैं बहुरि प्रजों ॥३४॥
त्योंहु नियति प्रतिकूल मिलैं तँहँ भीम१९५।२तनय लहि अंक६ भलें
ठ्याहन सिसु गंगा१९५।५तव बहिनी फल यह जो नहिं हमहिं फलैं ॥
बिक्खहु तो जवँ जामि उचित वय करि महतो यह देहु कुलैं ॥
अनुजा लाडकुमरि१९५।६न बची इम तस भर तव सिर नाहिं तुलैं॥
भाऊ१९५।१कुमर प्रनत सुनि भाखिय प्रभु मतमैं नहि भेदपरैं ॥
आधिप सता १९४।१ सकुटुंब कलि४ हु इम कृत ९ जुग बुंदिप बिलसि करैं ॥
ग्राम अयुत१००००लगते बुंदीगढ जँहँ सत चउदह१४००जवन लये॥
कौतुक१रीझ२हगाम३तदपि क्रम दिनदिन नृप धन अधिक दये ३६
इत ओरंग४०।२बसाइ नगर वह कछु बढि दक्खिन अमल कर्यो ॥
भागनगर१बीजापुर२भटगन रोकि बढन रन अड्ड अर्यो ॥
साहजिहान३९।२जिती भुव सद्धिय यह जब तासहु अग्ग चल्यो ॥
बेगहि तब दक्खिन२।३दल बीरन दिल्लिय दल द्रुत आइ दल्यो ।३७।
इत अतिबीर सितारा३के अरि पच्छिम३।५सन मरहट्ट परे ॥
जितहि बढे तित आइजुरे जिन कन कन१०प्रतिभट मुगल करे ॥
सीम जितीक लई निज दाब्बि सु लहि अब अधिकहु लैनलगे ॥
तोपप्रमुखं उपहार सबै तनि गढ गढ निज साजि गैन११ लगे ॥ ३८॥

पीनेवाला सर्प ॥ ३३ ॥ * सभा में † श्वेत बालों को धारण करनेवाले ‡ युद्ध के पाहुने १ प्रतिदिन २ भाग्य की ३ अनुत्पत्ति (मोक्ष) चाहते हैं अर्थात् प्रतिदिन यही चाहते हैं कि हमारी मोक्ष होवे ४ संतान ॥ ३४ ॥ ५ और जो भाग्य विपरीत मिले तो ६ भीमसिंह के पुत्र को गोद ७ शीघ्र ८ बहिनोई ॥ ३५ ॥ कलियुग में इसप्रकार ९ सत्य युग करता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १० तोप आदि ११ आकाश में लग यह अत्यंत उद्धत के लिये कहावत है ॥ ३८ ॥

भाननगर१ पूरव१ भयकारक बीजापुर२ जम्म ओर२ बली ॥
पच्छिम३ असह सितारा३ पत्तन चउ४दिस तीन३न तेग चली ॥
बढत बढ्यो ओरंग४०।३ सु पै अब घटत अतंत्र सिखाइ घनौं ॥
गंठिहुके जु गुमाइहुक्यो गढ पाइ न हाइ प्रबीरपनौं ॥३९॥
तबहि सिटाइ दयो दलौं तातहि भूमिबढात विपत्ति भिरी ॥
बुंदीभूप पठावहु तो बलि फैलतपावहु आन फिरी ॥
वह दुर्मन भुव तस लै अप्पहु कोटापतिबस जबहि करी ॥
अप्पनअर्थ सदा यह साधत धी तस अप्पन कानि धरी ॥४०॥
सो करि तुष्ट सता१९४।१ नृप संभर प्रभु इत भेजहु भीर परी ॥
पत्र सु बंचि बुलाइ सता१९४।१ पुनि कछु ज़वनेसहु प्रीति करी ॥
नाम गजादि गनेसकरी१ जिन तुरग२ विदित रहबाद तथा ॥
वस्त्र३ रु भूखन४ सस्त्र५ सबै बर जे दिय दुर्लभ उचित जथा ॥
तदपि मही न दई रंचहु तिम कथन१ मुगल सह कित्ति२कह्यो ॥
अबकी बेर सता१९४।१ जय आनहु लघु तब जानहु देस लह्यो ॥
इम कहि सिक्ख दई तब अधिपहु लै बलं बुंदिय सिक्ख लई ॥
जनपदँ आइ संजे रन जोध्धन भिरन प्रबोधन रीझ भई ॥४२॥
बंटि अयुत१००००रुप्पयतँहँविप्र१न लहि खिन कवि२जन बुल्लिलये
तिनहित इकसत तीस१३०तुरंग१रु दम्म२सहँस चउबीस२४०००दये
सतत्रय३ ००बाजि१ रु दम्म२ सहँस सुर३३००० जो धन जोध३न
अप्पि जथा ॥
दु अयुत २००००दम्म सचिव मुखं दास४न पननारि५न वसु स-
हँस ८००० मैथा ॥४३॥
छसहँस६००० दम्म गायक८न दिय छैम इतर७न पंचक५ सहँ-

---

१ दच्छिण दिशा २स्वतंत्रता घटने पर बहुत सिटाया ॥ ३९ ॥ ३ पिता को पत्र लिखा ॥ ४० ॥ ४गणेशगज ॥ ४१ ॥ ५ शीघ्र ६ सेना ७ देश में ॥४२॥ ८ समय पाकर. सचिव ९ आदि सेवकों को १० वेश्याओं को ११ प्रसिद्ध ॥ ४३ ॥ १२ उस समय ने

हँस५००० अहो ॥
बरख्यो धन सावनघनके विधि निर्धन रंकहु लखन नह्यो॥
इम करि रीझ प्रबिसि प्रभु आलय पीतंबर[1] पय प्रनत पर्यो ॥
पूजन ठानि प्रसाद लह्यो पुनि धी कुलदेविय२ दरस धर्यो ॥४४॥
आसापूरनि२ पूजि उमा वह जासहु पाइ प्रसाद जहाँ ॥
लाये कृष्ण१९६।१ कुमार ललाटहिं स्व अलिक अच्छतश्तिलकर२ तहाँ ॥
सोहि सबन तब पट्टकुमर सुवें[2] पट्टकुमर यह समुझिपरी ॥
भाऊ१९५।१कुमर सुहां मन भाइ रु ध्रुव तस सिर निज पग्घ धरी ॥४५॥
यह लखि होइ प्रसन्न सता१९४।१ इम अधर[3] महल नमि इष्ट उभै
दक्खिन२।३ चढन विचारिय दुद्दर दूर करन ओरंग४०।२ दुरभै[4] ॥
सक नव नभ सत्रह१७०९बिक्रम सम इन[5]१सित१माधव२तीज३अखै[6]
परसुधरन जिहिंदिन अवतरि प्रभु खिजि किय छत्रन बंस खखै ॥
जाहिदिवस चंडासि जनमि जब बानतनय जुग२ काल बन्यौं ॥
जाहिदिवस समरेस१८१।७कुमर जब तिम लहि बुंदिय सुजस तन्यौं
जाहिदिवस ताके सुत जैत्र१८२।३हु कोटा निबसन सिद्धि करी ॥
जाहिदिवस यह ग्रंथ रचन जिम धी कवि इहिं आरंभ धरी ॥४७॥
जाहिदिवस नरनाह सता१९४।१जवें कुंच सु दक्खिन२।३ओर कर्यो
पट्टकुमर भाऊ१९५।१ढिग नयपटु धीर चतुष्क४कहँ सु धर्यो ॥
वासवसल्ल १९४।२।१ अनुज धरि बुंदियं तिम रुकमंगद १९५।१।२स्याम१९४।१तनै ॥

॥ ४४ ॥ १ ललाट में २ पाटवी कुंवर का पुत्र ॥ ४५ ॥ ३ नीचे के महल में ४ दोनों भय अर्थात् भूमि जाने का और हारने की लज्जा का ५ राजा ६ वैशाख सुदी तीज अर्थात् अक्षय तृतीया के दिन, जिस दिन परशुराम ने अवतार लेकर ७ क्षत्रियों के वंश को क्षय सहित किया था ॥ ४६ ॥ ८ कछुवाहा ९ कुमर समरसिंह ने १० जिस दिन कवि सूर्यमल्ल ने इस ग्रंथ (वंशभास्कर) की रचने की बुद्धि की ॥ ४७ ॥ ११ शीघ्रता से

मुकुल१८४।१४बंस अनुज माधव१९३।१को आसकरन१९३।२।३
तिम प्रहत[1] अनै ॥ ४८ ॥
केसव १९२।२ कुल सुखसिंह १९४।१४ उचित कहि धुर भट
ए चउ४ गेह धरे ॥
सूचित दिन संतत नृप संक्रमि क्रम सम दक्खिन१३कुंच करे ॥
व्यूहं[3]विधान सरँनि[4] ध्वजिनी[5] वहि रत्ति सु सिबिर[6]विधान रही
पहुँच्यो इम औरंग नगर पहु गढगढ सत्रुन भीति गही ॥४९॥
आइ सुमुख लैजाइ मुदित अति साह कुमर जयल्लाह सज्यो॥
जिम नृप कहिय तिमहि हित जानि रु तकि नयपुब्ब प्रमाद तज्यो ॥
भागनगर१बीजापुर भूपन दुव२दिस नृप इम पत्र दये ॥
तुम १ हम २ वचन हुतो सु अबिदित[7] न लिखि जुहि इज्जत १
ज्यान२ लये ॥ ५० ॥
बपमद करि औरंग४०।३उतैं वहि लुब्ध कुमग्ग अनर्थ लह्यो ॥
गढ गंजे चिरकेहु गुमावत बालिसपन[8] हठ विफल वह्यो ॥
तुम अब पुव्वहि सीम रहो तिम हद पर जानहु हमहु हटे ॥
क्यों इत१ उत २ सुभटन विफलहि कलि[9] करि अनुचित सब
लखहिं कटे ॥ ५१ ॥
दुव२जवनेस लखि सु इतको दल भूपति प्रति इम लखतभये ॥
न हमहिं दोस सता१९४।१नृप नैंकहु दिस त्रय३वढि पय सुगल दये
पूरब१तिम दक्खिन२अरु पच्छिम३यामहि इक दुव नाँहिं ग्रहे ॥
गढ पहिले दव्वे अपनैं गिनि चित्त अधिक हमरेहु चहे ॥ ५२॥
इत इक१अजा१जवन२दुव२हम इत दिल्लीप्रति त्रय३इक्क१दिपैं[10]
वचन मिलि सु हम त्रिक[11]२हि निबाहत लेस न जिम कहुँ भेद छिपैं

---

२ अनीति को १मिटानेवाला ॥ ४८ ॥ ३ व्यूह की रचना से ४ मार्ग में ५ सेना चलकर ६ रात्रि में डेरा रचकर रहा ॥ ४९ ॥ ७ अप्रसिद्ध ॥ ५० ॥ ८ मूर्खपन ९ युद्ध करके ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० शोभायमान ११ तीनों

रैन१९२।१न्नृपति आसाल जु सुमिरत तुमसन नन मन हितहिं तजैं
हम२सह सपथ[1] मिले मरहट्ठ१न भुवहित त्रिक३एक१त्व भजैं ॥५३॥
हम१तुम२मेल सुनैं मरहट्ठ३हु तो छल रिपु इम हमहिं तकैं ॥
दिष्ट[2] सफल समुदित तिनके दिन समुझि सु भिन्नहु न रहिसकैं॥
तांकि दिल्ली अरिपन हम तीन३न प्रथितन भेदहु जानिपर्यो ॥
किम तुम१ हम२हिं तुम१हिं हम२ हित करि कालि तनि वच-
न निबाह कर्यो ॥ ५४ ॥
मरहट्ठहु अपनैं सुनि मेलहि ततखिन हमसन मेल तजैं ॥
यातैं करि गढगढ रन इक१इक१लोहु इम न हम उतहु लजैं ॥
साहहु ठानि कुमरपन सपथ रु कलिं[3] हम अखिल सहाय करे॥
सिसु१बेगम२अपनैं हम आश्रय धुव दोलत आबाद धरे ॥५५॥
दैन हमहिं कहतो बटि देसहि जे१हम२एस१हि साहजहाँ३१।३२
कित दैबो सुने गिनि उपकार२हु तक्कत ए१आरि हम२हिं तहाँ॥
साह१ कपट सपथन बिसवासन इम ओरंग४०।३।हु तसहि तनै ॥
रक्खि सरन हम जिहिं असुं[4] रक्खय आरि गिनि चहत सु हनन अनै
अग्ग पितर हमरे रन ओलुल कहत रैन१९२।१[5]जु काल कर्यो
तुम सह रन टरिबो हढता बिच धुवकव इतर२न टरन धर्यो ॥
यातैं तुम निज दल करि गढ इक१ कै दुव२लहि जय भिन्न करो
गंजे हम सिर सटि[6] जिते गढ धक्क जितने सब लौन धरो ॥५७॥
इत१ मरहट्ठ२ गिनैं तुमकौं आरि रीति सु तुम१ उत२ गिनतरहो॥
तुम बिसवास प्रमत्त रहैं तँहँ चित्तहु हमहिं न हनन चहो ॥
साहकुमर न तजैं जो साहस तुम१ हम२ बचि खिल लरहिं ततो।
देहु न द्रोस दलत खिल पर दल निज निज पन मन मिटहिं नतो ।४८।
महिपति अप्प तृतीय३ कुमारहु हमहिं लखत भगवंत१९५।३हनैं।

1 सौगंद ॥ ५३ ॥ २ भाग्य के फल से उनके दिनका उदय है ॥ ५४ ॥ ३ युद्ध में ॥ ५५ ॥ ४ प्राण ५ युद्ध को मथनेवाले ॥ ५६ ॥ ६ मस्तक के बदले में ॥५७॥५८॥

कै१ जानैं न जुदो तुमसन कै१ बैरिय बैरिय गिनि सु बनैं ॥
प्रह दल बंचि दयो नृप उत्तर भावित सब तुम उचित भनी ॥
हाँ सुत समुझाइ सुतो हठ अब टरि टारहिं अप्प अनी ॥ ५९ ॥
पै मम चक्क जुदो करि पानिप लारि कछु जो कछु दुर्ग लहैं ॥
५ दिखाइ मरन१ मारन२ बिनु रन मरि१ मारि२न बचन रहैं॥
उचित हमहिं लरिबो संगहि इम इक्खत निजनिज टरहिं अनी ॥
जुरि हम१तुम२इतरनसन जुज्झहिं धर जित लरि मरि देहु धनी ६०
तिम दौलत आबाद लयो तब गढ जन सबकछु कछि गली ॥
अप्प बचाइ निकासे ते अब आधिकहिं इच्छत भूप भली ॥
मूढ दुरदिस यह मति हुव गढगढ बिचबिच मारन१मरन२बुरी ॥
भूपहु सुत उद्धत भगवंत१९५।३हिं हठ करि बाधिय बत्तदुरी ।६१।
इम चउ पंच दिवस रहि अधिपहु कुमर बिजन लहि मंत्र करयो ॥
ओरंग४०।३हु लखि नृप आलंबन क्रमकरि सब तस तंत्र कर्यो॥
मंत्रकरयो१ तंत्रकरयो२ अन्त्यानुप्रासः१॥
दक्खिन२।३ देस मुदित१ अरु दुर्मन२ भूपहिं इम सुनि भीर भयो ॥
आहव साज निचय साजि अवसर लहि जिमतिम अवधान लयो ६२

॥ दोहा ॥

सता१९४।१ सिबिर रजनीसमय, आयो तहँ अवरंग ४०।३ ॥
अक्खिय अब दादा उचित, जानि जितावहु जंग ॥ ६३ ॥
कहिय भूप जड़ताहि किय, हद लंघत तुम हाइ ॥
रेखाँ कुट्टत कोन रस, जँहँ पन्नग भजिजाइ ॥ ६४ ॥
तदपि अज्ज सुलतानको, पुहवी अतुल प्रताप ॥
जथा सक्कति हमरे जतन, अरि गन गंजहु आप ॥ ६५ ॥

---

१ पत्र बांचकर २ यह प्राप्त वार्ता तुमने उचित ही कही है ॥५९॥ ३ मेरी सेना ४ पराक्रम करके ॥ ६० ॥ ५ छिपीहुई वार्ता को जनाई ॥ ६१ ॥ ६ एकान्त में लेकर ७ युद्ध के साज ८ समुच्चय ९ सावधान ॥ ६२ ॥६३॥ १० सर्प निकल गये पीछे लकीर कूटने से क्या लाभ है ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

सिबिरसमागम हेतु मन, उपदा गज१ हय२ आदि ॥
माहिंमाँहिं लिय दिय मिलत, सह हित मह संबादि ॥ ६६ ॥
इम दक्खिन२।३ जातहि अधिप, जुग२ दिस आसय जानि ॥
सज्जे रन उपहार सब, पर दल प्रसभ प्रमानि ॥ ६७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे अकबरपुस्ताजगञ्जनिर्माणतद्रचनावर्णन १, बुंदीपुरच्छत्रप्रासादपट्टनमहलमन्दिरनिर्माणभणन २, औरंगजेबदलागमनेन साहजहांनिदेशात्ससैन्यशत्रुशल्यस्य दक्षिणस्यामौरंगजेबान्तिकगमनवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

आदितो विंशाधिकद्विशततमो मयूखः ॥ २२० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सज्जे दल संभर सता१९४१, बज्जे सूचक बंब[4] ॥
भर[5]१ छज्जे भज्जे अभर[6]३, लज्जे अलस३ बिलंब ॥ १ ॥
सिलह१ सस्त्र२ भूखन३ बसन४, गज५ हय६ रुप्पय७ ग्राम ॥
बल इत१उत२ हुँत बंटियत, आदर गुन अभिराम ॥ २ ॥
झहनावत सानन झगत, हेति मनहुँ तपहेलि ॥
मन गहिल्लीघंट भट मुदित, किधौं सबय सिसु केलि ॥ ३ ॥

१ नजराना २ उत्साह के वचन कहकर ॥ ६६ ॥ ३ हठ.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में आगरे में ताजगंज के बनने की कथा और उसकी रचना का वर्णन १ बुन्दी में छत्र महल और पाटण के महल मंदिर बनने का वर्णन २ औरंगजेब के पत्र भेजने पर बादशाह शाहजहां की आज्ञानुसार बुन्दी के राव शत्रुशाल का सेना सहित दक्षिण में औरंगजेब के पास जाने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बीस २२० मयूख हुए ॥

४ युद्ध की सूचना के नगारे बजे ५ भड़ (वीर) शोभायमान हुए ६ कायर भागे और देरी करनेवाले आलसी लजे ॥ १ ॥ ७ शीघ्र ८ सुन्दर ॥ २ ॥ ९ मानों ग्रीष्म के सूर्य के समान शस्त्र चमकते हैं १० पागल स्त्री के कलश के समान

जब डारी अवरंग४०१३ जुरि, अदिन मत्थैं अग्गि ॥
सो व सिलग्गी सोरसम, जोर विलग्गी जग्गि ॥ ४ ॥
धुव जितित टामंक[1] ध्वनि, हुव इत१ हित अनुहार[2] ॥
हैवर१नर२ छाये हुलसि, पक्खर१ कवच२ पसार ॥ ५ ॥
जोरी बैलन बहु जर्कुटर, चोरी गैलन चाल ॥
नाली कति हंकिय निठुर, काली तति जिम काल ॥ ६ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनीरोला ॥

भूप सता १६४१ अवरंग ४०१३ भीर सज्जे दल संगरँ,
वज्जे भेरिन असह[8] ग्रीत धमकात धरा १ धर२ ॥
पिट्ठि गजन केतनं[9] प्रलंब[10] उडि छायो अंबर[11] ॥
बुल्लि नकीबन क्रम विसेस संक्रम किय सत्वरं[12] ॥ ७ ॥
सिव१आदिक कुतुकी समाज[13] सब न्योंति समोसर,
सावन छल्ली सरित सेन दिपि हल्ली दुद्धर ॥
उद्धत बल ऐंचत[14] अमान लंबे अय लंगर,
पय ऐंडे डारत पयान बैंडे गज वित्थर ॥ ८ ॥
मैंदढरनाँ[15] सरनाँ मनौंकि भरनाँ गिरि भंगर,
भद्रकें[16]१मंद्रक[17]२मृग३आभिन्न४कुल१खेत२ प्रथाकर[18] ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ १ नक्कारों के शब्द २ सदृश ३ घोड़े ॥५॥ ४ जोड़ा ५ तोपें ६ देवी की पंक्ति ॥ ६ ॥ शत्रुशाल ने औरंगजेब की सहाय के लिये ७ युद्ध पर सेना सझी वहां नहीं सहने योग्य पर्वतों को धुजानेवाले नौबतों के ८ समूह बजे और हाथियों की पीठ पर १० लंबी ९ ध्वजाओं ने उड़कर ११ आकाश को ढकदिया १२ शीघ्र चले ॥ ७ ॥ उस समय शिव आदि तमाशा देखनेवालों के १३ समाज (समूह) को निउता दिया और सावण मास की छलती हुई नदी के समान कठिनाई से धर्षणा की जावे ऐसी सेना शोभायमान होकर चली. उद्धत बलवाले (नहीं माननेवाले) १४ हाथी लोह के अतोल लंबे लंगर खींचने लगे और वे मस्त हाथी घमंड के पैंड देकर विस्तार से चले ॥८॥ १५ उन हाथियों के मद का गिरना है सो मानों झाड़ीवाले पर्वतों का झरना है १६ भद्रजाति के १७ मंद्र जाति के, मृग जाति के और संकर जाति के हाथी अपने कुल और खेत को १८ प्रसिद्ध करके

उलटावत ऊरध उठात पन्नगगति पुंक्खर[1] ॥
ईसा[2] दंतन लसत अच्छ बर हाटक बंगर॥९॥
हिमकर१ दिनकर२ मिलित व्है कि प्रतिमास अमा३०पर।
तनित चलावत करन तालसम पच्छ खगेस्वर ॥
स्याम घटा पाउससमैं कि बक१ बिज्जु २ बरब्बर।
इभ[3]१न घटा भल्ली अनेक इम हल्ली उक्कर[4]॥१०॥
प्रोथी[5]२ बाल्हिक१ पारसीक२ कांबोज३ प्रथाकर,
खुरासान४ ताजिक५ तुखार६ भाड़ेज७ छटाभर ॥
जवन बनायुज ८ खेत जात चमकात चरा१चर२ ॥
भमि जलउप्पर किलकिला[6] कि प्रसरैं दल उप्पर ॥ ११ ॥
चक्र ह्यपच्छट झुकि बहंत कोदंड हसीकर[7][8],
पच्छे छुवत उठातपाय दगि भू बैसंदर[9] ॥
ससि१ खुर१ तमर[10] खुरतार२ संग बिहरैं जनु बिज्वर[10] ॥
क्रम नलकील[11]१न नेलकिनी[12]२न घनपन मृग घल्वरै[13] ॥ १२ ॥
पुट्ठे जुग२ पिंडक प्रगोल[14] मृदु चक्र मनोहर,
उर[15] आयतविट्ठर[16] बिडंबि धारन दव्वैं धर ॥
करन जुग२ज लघुपन कलीन केतक निंदाकर,

१सूंड के अग्रभाग को ऊपर करके सर्प के फण के समान उलटाते हैं २लंबे दांतों में श्रेष्ठ सुवर्ण के बंगड़ शोभा पाते हैं ॥९॥ सो मानों प्रति महीने अमावास्या पर सूर्य और चन्द्रमा सामिल होते हैं और गरुड़ की पांखों के समान तने हुए कानों को हिलाते हैं किंवा वर्षा ऋतु में कालीघटा में बक(बुगला) और बिजली बराबर दीखती हैं ३इसप्रकार की हाथियों की उत्तम घटा(सेना)४उत्कर(हाथ पग हिला कर)अर्थात् पगों और सूँडों को हिलाकर चली ॥१०॥ बाल्हिक आदि देशों में उत्पन्न होनेवाले ५घोड़े ६पानी पर किलकिला पक्षी चले जैसे सेना पर फैलते हैं ॥ ११ ॥ सेना में गर्दन झुकाकर ७ धनुष की ८ हसी करते हुए चलते हैं भूमि को स्पर्श करते ही पग पीछा ऐसा उठाते हैं जैसा ९ अग्नि से जलकर उठावे, चंद्रमा रूपी खुरों के साथ खुरताल रूपी राहु १० विगतज्वर (विना पीड़ा)होकर विहार करता है चलनेमें ११नलियें और १२जंघाओं की अधिकता से मृगों में १३ घुसते हैं ॥१२॥ जिन घोड़ों के दोनों १४विशेष गोल पुट्ठे कोमल सुंदर चाक के समान हैं, जिन घोड़ों की१५छाती१६बाजोट की नक-

सहनाइन चहुंन समान मुरि मोथें मनोहर ॥ १३ ॥
बत्थ न माइ नमाइ बंक कसते धनु कंधर,
यालन जूं१ बिसिख२ ओपें प्रतिबंध१ ज्यकार२ पर ॥
जवनी१ शालिग्राम२ जानि अंखी१ छंद२ अंतर,
गो१धि२ सु नत जिम सुनत१ गोधि२ पन्नगदल पद्धर॥१४॥
थान१ उठे बपुर२ चरन१ थंभ२ चल बालधि१ चामर२,
लेत कुसें छेकत मलंगि द्वैद्वै बरछी धर ॥
पलट१ उलट२ सर्फरीप्रमान मृगडान मनोहर,
बिस्मय जव नटके बटो१न कुलटादृग केकैर२ ॥ १५ ॥
गहि बत्थन पीछैं गिरात अवनी जवनी अर,
मुकुर बिंब दिन चलन मान परिछो१ उडिबो१ पर ॥
जिन्ह पिक्खत प्राकार जात न गिनैं त्राता नर,

ल करनेवाली है और वे दौड़ने में भूमि को दबाते हैं, जिनके दोनों कान छोटेपन में केतकी की कली की निन्दा करते हैं जिनके सुंदर २ फुरख (नासिका) सहनाई के १ मुख के समान मुड़े हुए हैं ॥ १३ । जिनके धनुष के समान नमे हुए कंधे बाथ में नहीं माते हैं और उन कंधों रूपी धनुष में ३ केसवाली का ४ जूड़ा (केसों का समूह) है सो ही ५ तीर की ६ उपमा के समान है. और ७ जेरबंध है सो ही ८ प्रत्यंचा है ९ उजाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) के भीतर नेत्र हैं सो मानों पड़दे के भीतर शालिग्राम है, उन घोड़ों के श्रेष्ठ नमेहुए ११ ललाट १० गोह (गोहिली) सर्प के नमेहुए ललाटके समान है और सेना में सीधे चलनेवाले हैं (गोह भी सीधा चलनेवाला सर्प है) ॥ १४ ॥ जिनके संधि की गांठों(घुटनों आदि) के अंग उठे हुए, थंभ के समान चरण; और चमरके समान हिलता हुआ१२वालछा(पूंछ)है.१३जिनकी बाग उठाते ही दो दो बरछी भूमिको जो फांद जाते हैं१४अच्छी के समान उल पलट करनेवाले और लंबे दौड़ने में सुंदर मृग, जिनके विस्मय (आश्चर्य) करानेवाले वेगके समान न तो१५नट का छोकरा और न कुलटा के नेत्रों के १६ अपांग(कटाक्ष) हैं ॥ १५ ॥ भूमि रूपी कनात को बाथों में भरकर शीघ्र पीछे गिराते हैं, उन का शत्रुओं पर उडकर गिरना १७काच बिंब के समान और सूर्य किरणों के समान है, जिन घोड़ों को देखते मनुष्य कोट को अपना रक्षक नहीं समझते

जे घ्रापेक द्रुम सुमन जाल वहिंफाल वरव्वर ॥ १६ ॥
वैरीबाधक त्रिविध वंस साधक भट संगर,
सज्ज सयन चउ४ भेद सस्त्रपर भेद प्रथापर ॥
इक१पतनीव्रत जे अभंग रन व्याह वंनैं वर,
कति अच्छरि न चहैं कलत्र गिनि निज सहगत्वर ॥ १७ ॥
के हरिपद१ हरपद२ कितेक इच्छे कुल उद्धर,
भाखैं सत्य१ असत्य२ भंजि मनके मकराकर ॥
सज्ज्यो कबहु न स्वामिलोंन जिनके परि जाठर,
सुमनकली१ नासीर२ सीर भर भोग अलीभर ॥ १८ ॥
चालुक१ तोमर२ चाहुवान३ प्रतिहार४ प्रथाधर,
के कूरम५ जद्दव६ कवंध ७ सीसोद ८ पुरस्सर ॥
सेंगर ९ दाधिम १० सकवाल ११ परमार १२ परंपर,
चावोर १३ दहिये १४ चलाक गोहिल १५ वडगुज्जर १६॥ १९ ॥
मोहिल१७ विंदु१८ रु मंकुवान १९ कुल गोर प्रभाकर,
लुल्लक २१ जाव २२ प्रभावलोंन उफनाव अतित्वर ॥
इत्यादिक बाहुजेर उदार बलबाहुज विस्तर,
मरद किते बहुभेद मिच्छर पहु भेद उभेर पर ॥ २० ॥

रूपांतर चलने में वृक्षों की बराबर हो कर उनके पुष्पों की सुगंधि लेते हैं॥१६॥ श-त्रुओं के नाना वंशों को बाधनेवाले और कुल को साधनेवाले और जो [illegible] ने ३ हाथों में ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और मंत्रमुक्त इन चार प्रकार के शस्त्र चलाने के भेदों में प्रसिद्ध हैं. कितने ही और अपनी स्त्री को अपने सा-थ जानेवाली (सती होनेवाली) जानकर ५ अप्सराओं को कभी स्त्री नहीं चाहते हैं॥१७॥ इन वीरों में कितने ही विष्णु के और कितने ही शिव के पदवाले और उत्तम कुल का उद्धार करनेवाले हैं जो झूठ को छिपाकर सत्य बोलनेवाले और मन के ७ समुद्र हैं ८ जिनके पेट में पड़कर कभी स्वामि-द्रोह पातक (कुकर्म) नहीं हुआ, जो श्रेष्ठ मनवाले [illegible] और हल में धोरी और सब [illegible] भोगी रहनेवाले॥१८॥ [illegible] अपनी भुजा के [illegible] पक्ष को हिलानेवाले॥२०॥

लगि आली नाली प्रलंब काली कदनाँकर,
लालीमुख लोहित लुभाइ चाली रन चर्व्वर ॥
गढलोपन गोपन गिरिंद ओपी अग्रेसर,
जनु हल्ली डाकिनी जमाति असह्न आडंबर ॥ २१ ॥
हरि१ गज२ अहि३ मकराध४दि हिंस्र आनन भय आकर,
जुत्ते तृखगन विविध जोट पथ खैंचत पद्धर ॥
पीलुन टल्ले पिट्ठि पाइ सरके बलि ओसर,
चरखन अवनि ग्रसात चक्र निकसात घने नर ॥ २२ ॥
इम चल्ली तोपन अनेक मिलि पंति मनोहर,
मरहट्ठनसिर प्रथम मंडि सीमाहित संगर ॥
नासिक१पुर तिनको निराइ वेढ्यो बल बिस्तर,
सूचत जहँ रावनस्वसा सु बनि बिंझ लयो बर ॥ २३ ॥
तहँ लरि तोपन दिवस तीन३ जित्यो नृप सत्वर ॥
मरहठ्ठे रनबहुत मारि पुर पाइ वहे घर ॥
विंट्यो गढ त्र्यंबक१ बहोरि साजि तोपन संगर ॥
लग्गी गोलन असह्य लाय जग्गी धमगिज्जर ॥ २४ ॥
तहँ बाहिर रन प्रलय तार विस्तारि कछु वीसर ॥
निश्रेनिन देदै नरिंद पिल्ले भट उप्पर ॥
प्रचुर वन्यौ गढके प्रवेस कौसिल एस भयंकर ॥
कॅपिसीसन पहुँचत कलाप अरि बाहिर१ अंदर२ ॥ २५ ॥
खग्गन खंडविखंड खेरि किय खेत सवाकर ॥

---

१ लम्बी तोपों की पंक्ति लगी जो २ कालिका के समान३ नाश करने की खान थी. लाल मुखवाली रुधिर का लोभ करके युद्ध के ४ चौक में चली ॥ २१ ॥ सिंह आदि हिंसा करनेवालों के मुखवाली भय की खान ५ हाथियों के टल्ले पाकर ॥ २२ ॥ ६ समीप होकर जहां रावण की बहिन (शूर्पणखा) ने ७ नकटी होकर घर लिया था वहां ॥ २३ ॥ ८ शीघ्र ९ शीघ्र १० निरंतर पतन ॥ २४ ॥ ११ कुछ दिन १२ सीडी १३ युद्ध १४ कांगरों के करीब ॥२५॥ १५ मुर्दों की खान

गिरैं सुभटताजि कंगुरेन काटि सिर१ कटि२ पै ३ कर४ ॥
नट जैसैं तिहरी[1] निघात धरि गैन[2] छुवैं धर,
लंका जातुधान[3] विविध लूनें[4] बंका जिम बंदर२ ॥ २६ ॥
काटि कंगुर कंगुर किरंत[5] इम भट अग्रेसर,
उत१के काटि इत२ अधर आत इत१के उत२ अंदर ॥
विदित सता १९४।१ के नव९ प्रबीर तँहँ जुज्झे सत्वर,
दुव२हड्डे६१ कछवाह दोइ२ सोलंखि स्वभू सर५ ॥ २७ ॥
हड्डे ६१ तँहँ हरजस १९३।३।१ पहार१९५।४।२ बड्डे जस बित्थ
बनि तिलतिल सामंत १८७।१ बंस जस किय उज्जागर ॥
सूर अजब१ आनंदसिंह२ कूरम कित्तीकर[9] ॥
ए दुव२ कट्टे जस उबारि आमेर अनस्वर[10] ॥ २८ ॥
नवल१ तथा हरि२ चंद्रभानु३ नाथाउत निड्डर ॥
खेमाउत सद्दूल४ खंड वपु किन्न बरब्बर ॥
बदन५ कमाउत निसित बाढ लग्गो लज लंगर ॥
ए पंच५हि चालुक असंक आलुक[11] भर उव्वर ॥ २९ ॥
अस्त्रन भिदिभिदि अंग अंग बनि नाकबंधूवर[12] ॥
बुन्दी भूपति मुख्य वीर धारन तुट्टे धर ॥
इमहू घायल भट अनेक अर्जुन१ अग्रेसर ॥
निडर मरत मारत नरेस दब्यो गढ दुस्तर ॥ ३० ॥
रनविजई ओरंग४०।२ रक्खि धुव दक्खिगई धर ॥
नासिक१ सम गड्डे निसान त्र्यंबक२गढ सत्वर ॥
इम पच्छिम३दिस जित्ति आप धर सह्य[13] तरैं धर ॥
पूरब४दिस तिम किय प्रयान सह चक्र नरेस्वर ॥ ३१ ॥

१ तिहरी कुलांट २ आकाश ३ राक्षसों को ४ काटकर ॥ २६ ॥ ५ गिरते नीचे आते हैं ॥ २७ ॥ ७फैलाकर ८ प्रसिद्ध ९ कीर्ति करके १० आमेर को बचाकर अमर किया ॥ २८ ॥ ११ शेषनाग का भार उतारकर ॥ २९॥ अप्सराओं के पति ॥ ३० ॥ १३ सह्याचल एक पर्वत का नाम है ॥ ३१ ॥

दच्छन अब इत बिदर३ दुर्ग बेढ्यो जुहि बिद्दर ॥
बज्जैं जुहि ग्रंथन बिदर्भ३ इम देसी अक्खर ॥
जहँ सिल्पीजन रूप जस्त मृदु मंजि प्रथा[1] पर ॥
करि हुक्का१ कच्चोल२कादि दै क्रीत दिसावर ॥ ३२ ॥
जेहु कहावैं बिदरजात तपकाल[2] सिसिरतर ॥
सो गढ बेढ्यो सत्रुसल्ल१९४१ बुन्दी बसुधाबर[3] ॥
मृध[4] तोपन धमचक्क मंडि सम चक्क[5] पुरस्सर[6] ॥
गढके जवनन गंजि गंजि किन्नैं भयकातर ॥३३॥
पृथुल[7] कुंतू[8] बारूद पूरि बसुधा१ बैरनं२तर[9] ॥
अग्गि लगाई इक्क ओर अति घोर उपह्वर[10] ॥
उडि उतको हुत कोट अंस पथ भो कछु पद्धर ॥
लै तिहिं मग ओरंग४०१३ लार नृप पैठो निद्धुर ॥३४॥
खग्गन सेस बिसेस खंडि करि दुर्ग वहै कर ॥
झंडे हजरतके झुकाइ जय तीजे३ जित्वर[11] ॥
धरि थानाँ तिहिंदुर्ग धाम धीरन बार्नांधर[12] ॥
कल्लयानी४ उप्पर कुपाइ अब लाइ चमू अरं[13] ॥ ३५ ॥
सुपहु सता१६४१२ अवरंग४०१३संग सज्ज्यो हद संगर ॥
दिवस किते तोपन दरार पटकी किल्लापर ॥
सनैंसनैं बढि बल समीप पढि फल जय पीवर[14] ॥
अनी उभय२उभय२हि अनीक लटि भार बरब्बर ॥ ३६ ॥
आरुहि चल्ले ओर ओर निश्रेनिन दै नर ॥

गढ का नाम है. संस्कृत में जिसका नाम विदर्भ है उसका देश भाषा में बिदर हुआ १प्रसिद्ध२रूपे और जस्त के हुक्के और कटोरे आदि ॥ ३२ ॥ ग्रीष्मकाल में अत्यंत ठंडे होते हैं ५ भूपति ६ युद्ध ७ सेना के ८ आगे ॥ ३३ ॥ ९ बडे १० ्पों (पीपों) में बारूद भरकर ११ भूमि और कोट की संधि में १२ एकान्त भयंकर अग्नि लगाई ॥ ३४ ॥ १३ जीतनेवाले १४ युद्ध से नहीं भागने के चि-ह रखनेवाले ॥ ३५ ॥ १५ शीघ्र १६ मोटा ॥ ३६ ॥

कपिसीसन पहुँचत कराल मचि कत्तल महाभर ॥
तेगन मच्छी तुट्टितुट्टि इत१उत१के ओसर ॥
उलटि उलटि गढतैं अचेत धर१सीस२गिरे धर ॥ ३७॥
तत्थहु हड्ड६१ नरेस तेग बल वेग चली वर ॥
विविध पठाये वट्टि वट्टि अरिलोक अनस्वर,
कतिकन वह सुमिराइ कोल टारी जम टक्कर ॥
पायो जय चोथे४ प्रघात कल्ल्यानी४ ले कर ॥ ३८ ॥
धीर रच्यो गढ धामिनी५ सु पंचस५ रन पक्खर ॥
अधिरोहिनि पहिलैं अरोहि बुंदी वसुधावर ॥
हद भारी तरवारि हड्ड६१ घनसारी धँसमर ॥
जिते जवन आततंध जोध तिन्ह रक्खि दिगंतर ॥३९॥
खिल मिच्छहु खग्गन खपाइ दुग्ग सु लिय दुद्धर ॥
इम इक१हायन अंतराय हड्डा६१ सुर्जन१०।१ हर,
पंच५ समर पुर१दुर्ग२पंच५निजबल जित्यो नर ॥
कहत गोलकुंडा६हु केक सजि छट्ठ६ संगर ॥ ४० ॥
जित्यो गढ धरनीभुजंग परअंग कटापर ॥
कतिक कहैं सुलतान संग सजि आयो संगर ॥
गढ दौलत आबाद गंजि धन खिन्न धनीधर ॥
जयहि गोलकुंडाहु जित्ति जोधन पूरयो जर ॥ ४१ ॥
अब इम पच्छे मुररि धाइ अवरंग४०पुरी अर ॥
दखल सुन्यों वलि विजित देस पच्छिम२छादि पक्खर ॥
राजा तँहँ अवरंग४०।२रक्खि निज पत्तन निड्डर ॥
आहव जित्यो अत्थ अप्प तँहँ पत्त आतित्वर ॥ ४२ ॥
सह्य१ सिलोच्चय१ निकट सीम मंजुल नदि१मंजर२,

१ कोट के कांगरों के समीप ॥ ३७ ॥ २ नाश नहीं होनेवाले लोक (स्वर्ग) में भेजे ॥ ३८ ॥ ३ सीसरनी पर ४ चढ़न जानेवाला ॥ ३९ ॥ ५ रक्षा करने के योग्य ६ धनको वर्षाने के अन्तर से ॥ ४० ॥ ७ राजा ॥ ४१ ॥ ८ धन ॥ ४२ ॥ ९ सह्य नामक पर्वत के समीप

जुरत जहाँ अवमर्द उग्र सझ्यो यह संभर ॥
सोदर तहँ निज राजसिंह१९४१४सुत्तो करि संगर ॥
पंच५सुभट इतर हु परैत धरथंभ१ परे धर ॥ ४३ ॥
जिम यह छट्ठो६समर जित्ति किय कित्ति कलाकर ॥
आसेर७हु अक्खैं अनेक पुनि गो१ सु लयो२पर ॥
दक्खिन२ धर इम बहुत दब्बि निज तंत्र नरेस्वर ॥
थिर सासक अवरंग४०।३ थप्पि पुरि अप्प महीवर ॥ ४४ ॥
तुला१ पुरट२ उज्जैनि तुल्लि करि दान प्रभाकर ॥
आयो दिल्लिय घसत अभ्र बल१ तेज२ बिकस्वर ॥
हिय लायो साहेजिहान ३९।२ बदि मैं अब बिज्वर ॥
इतरदेस१ गज२वाजि३अप्पि प्रतिरीक्क करी पर ॥ ४५ ॥
न दये तिन हेर्‌ही निकेत बारॉं१ रु मऊ२ बर ॥
माधव१९३।२ सुत मोगैं मुकुंद१९४।१ धुव जो इतको धर ॥
इतर दये सुनिये असेस प्रभु राम२०३।४ दयापर॥
इभ नव घन१ दिलदार२ अस्व पोसाक३ प्रभाकर ॥ ४६ ॥
पंचकोटि५०००००००द्रम्मन प्रमान जिम अप्प्यो जेवर४ ॥
इम त्रिक३ पंचक५ क्रम दुरअोर वसु८ सेस दये बर ॥
दिस उत्तर४ त्रिक३ टुंक१ द्रंग धन मालपुरा२धर ॥
कहियत तीजो३ केकरी३ सु अप्प्यो नृपकों अर ॥४७॥
प्रथित परगनाँ सुनहु पंच५ ए दक्खिन२ अंतर ॥
हथनीगढ गढ हिंगुलाज२ केथोलि३ धनाकर ॥
पानगढ४ रु भैंसोद५ पंच५ घल्ले बुन्दीधर ॥
ही गतभुवँ उम्मेद हाइ न दई सु छलानिर ॥४८॥

और मंजरा नदी की सीमा में १ युद्ध ॥४३॥४४॥ २सुवर्ण की तुला ३विकाश अनेघ । ला४ खेद रहित ॥ ४५ ॥ ५ परम दयावान् ६ कांतिवाली ॥ ४६ ॥ ७ रूपयों के प्रमाणवाला ८ शीघ्र ॥ ४७ ॥ ९ प्रसिद्ध १० धन की खानि ११गईहुई भूमि 'मऊ और बारां' मिलने की उम्मेद थी ॥ ४८ ॥

एहि परगनाँ बखसि अठ८ सनमान्यौ संभर ॥
आमिल थप्पे टुंक१ आदि सबमैं अग्रेसर ॥
हाकिम जोलौं हिंगुलाज२ पहुँचे न समैंपर ॥
अखयसेन१ खिच्चिय१२ अराति तोलौं कपटीतर ॥४९॥
साह अमल उट्ठत सवेग घुसि बैठो ज्यौं घर ॥
सारथल२हु इत भीमसिंह३ पैठो कुहनापर ॥
गोर जु दुल्लह३ मंगरोल ३ इत बैठो अंदर ॥
चोरत धन लखि इक्क१ चोर ओरहु चोरैं अर ॥५०॥
तिम तीन३न ए थान तीन३ दब्बे बलि दुंद्धर ॥
पहु संभर इत रीझ पाइ कुलहद्द६१ दिवाकर ॥
सक दस सत्रह१७१० पाइ सिक्ख घुमडत आयो घर ॥
राजकुमर भाऊ१९५१ पुरोग बर जे बसुधावर ॥५१॥
अब रहि आपहि दुरदिन ढंग तब सज्ज्यो निद्धर ॥
मृत१ घायल२ कुल अधिप मानि बखस्यो बसु विस्तर ॥
॥
नहिं मावत सह बल नरिंद उफन्यौं धर१ अंबर ॥५२॥

॥ षट्पात् ॥

तारागढसन तोप उभय२ नरनाह उतारिय ॥
नाम धूरिधानी१ रु करक बिज्जुलि२ हलकारिय ॥
लघुँहि जाइ गढहिंगुलाज बेढ्यो दल बिस्तर ॥
दिन चउ४ तोप दगाइ पंथ पंचम५करि पद्धर ॥
ओढिनें लगाइ चढिगो सु पहु आरि वह हानि खिच्चिय१३अखय१॥
बल तस बिलोरि छसहँस बलिय६००० जो गढ१ लिय स-
ह कित्ति२ जय३ ॥५३॥

१ चहुवाण शत्रुशाल का सन्मान किया २ शत्रु ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३ कठिनाई से घर्षणा किये जावें ऐसे. राजकुमार भाऊ को ४ आगे जाने से राजा ने मना किया ॥५१॥ ५ धन का विस्तार ६ बढा ॥५२॥ ७शीघ्र८निसेनी ९मथकर ॥५३॥

माधव१९३।१ निजभट जक्खमूल पति जो रन पारथ ॥
तस बंधुव नामन प्रतीत तँहँ होइ कृतारथ ॥
सह बारह१२ भट सूर भये तिलातिल गढमैं भट ॥
सुहि माधव१९३।१ तँहँ सुपहु किन्न गढपति रन उत्कट ॥
गिनि अखय सेन१घर भीमगढ२पुनि सु जाइ जिस्यो प्रधँन ॥
हनि तास अनुज सुहुकम२कुहँक जित्ति गढ सु थप्पिय स्वजन५४
पूराउत्त१७३।१ प्रताप१९१।१ खिल्यो सासक हिंडोलिय ॥
नाम गंग१९१।५ तस अनुज परयो पंचम५ जुज्झन प्रिय ॥
एह रायथल अधिप सहित एकादस११ सादिँन ॥
गिरयो भीमगढ गहत बढ्ढि बहु बल प्रतिबादिन ॥
तिम रायसिंह१ रट्ठोर तँहँ जुज्झि अनुज रविमल्ल जुत ॥
मह१जल२चढाइ पुर मेरता परे सहित तिथि१५भट प्रनुत ।५५।
इम हथँनीगढ१आदि प्रांत खिलँ चउ४सम्हारि पहु ॥
धरि तँहँ रच्छक धीर बदलि बिस्वस्त बीर बहु ॥
तदनु सारथल२तिमहि गंजि भूपतिहनि गोलन ॥
खिचो१३भीम३हिँ खंडि रुचिर जिस्यो तीजो३ रन ॥
तिम बंधु रायमल्लोत२३।१९तँहँ जथा प्रथम थप्पे सजय ॥
तिलातिल स्वबंधु तुट्टयो सु तग भट हरदाउत३४।२०बीतभय ।५६।

॥ दोहा ॥

रस गुन३६ भट जुत रन रच्यो, खेत सारथल३ ख्यात ॥
पुर हुन्नीसँ प्रयाग१९४।१को, यह चोथो४अनुजात ॥ ५७ ॥
सुपहु जित्ति इम सारथल३, रायमल्ल१९१।३ कुल रक्खि ॥
मंगरोल४गोरन मिलन, आयो जुज्झहु अक्खि ॥ ५८ ॥
भक्खरोतँ सीसोद भट, साहबसिंह सनाम ॥

---

१ युद्ध में अर्जुन २ तीव्र ३ युद्ध ४ छली ॥ ५४ ॥ ५ सवारों से ॥ ५५ ॥ ६ विशेष स्तुति योग्य ॥ ५६ ॥ ७ बाकी के ८ भरोसा के ॥ ५६ ॥ ९ दूंणी नामक आगर का पति १० छोटा भाई ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ११ भाकरोत वंश का क्षत्रिय

तास कुमर दुव२वीर तँहँ, कॉलि करि आये काम ॥ ५९ ॥
सुनहु राम२०३।४प्रभु नाम सन, जेठो१कुमर जवान१ ॥
अनुज२कृष्ण२द्वै२ही अडर, थिर सोये रनथान ॥ ६० ॥
सादी तेरह१३ सत्थके, सोये कुमरन संग ॥
दुल्लहसाहि४ सु गोर दलि, जिय्यो भूप सु जंग ॥ ६१ ॥
जई परगनाँ तासजुत, जित्ति चउम४रन जोहु ॥
मंगरोल४अप्प्यो महिप, साहबसिंहहि सोहु ॥ ६२ ॥
सिवसत्रह१७११ सम्म लगत सक, पहु इम इक्क१प्रयाल ॥
ग्रामक जुत चउ४जित्ति गढ, आयो पुर चहुवान ॥ ६३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीन्द्रसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे दक्षिणादिक्स्थपञ्चदुर्गविजयिदिल्ल्यागतशत्रुशल्यस्य शाहजहांयवनेन्द्रान्नूतनप्रान्तसहितसत्कृतिप्रापणं १, नवलब्धप्रान्तविजयानन्तरशत्रुशल्यबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥ आदित एकविंशाधिकद्विशततमः ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अवलग दिल्लिय आदर्यो, जो पति साहजिहान३९१२ ॥
पै अब सुनिये राम२०३।४प्रभु, अन्तो समय अवसान ॥ १ ॥
तीजे३सुत अवरंग४०।३तँहँ, अति मदमति बद आइ ॥
जनकैं कीलि लिय पट्ट जिम, जोर प्रभुत्व जमाइ ॥ २ ॥

---

१ युद्ध करके ॥ ५९॥ ६० ॥ २ सवार॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में दक्षिण में पांच गढ विजय करके शत्रुशाल का दिल्ली जाकर बादशाह शाहजहां से नवीन परगने और सत्कार पाना १ नये पाये हुए परगनों को विजय करके शत्रुशाल का पीछा बुंदी आने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२१ मयूख हुए ॥

३ अन्त समय ॥ १ ॥ ४ पिता को कैद करके ॥ २ ॥ ३ ॥

जिम जेठे१ दारा४०।१हिँ दलि, अरु सुजा४०।२हिँ मरवाइ ॥
गद्दी अनुज मुराद४०।४ गहि, पाई अवसर पाइ ॥ ३ ॥
सो कहियत धारहु श्रवन, सभ्पन[1] सह नरनाह ॥
जिहिँ रन प्रभुकुल मूल जिम, लहिय सता१९४।१दिवलाह ।४।

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय दिल्लीस साहजिहान३९।२रै[2] मूत्रकृच्छ्रनामक महातंक[3] रो प्रकोप थियो ॥

जिकणरी पीड़ारै परतंत्र होइ आपरा अधिकाररै ऊपर बडापुत्र दारा४०।१नूँ रहणादियो ॥

जिकी बात प्राचीरि[4]रा अधीस दूजा२ कुमार सुजासाह४०।१ रा उरमैँ न माई ॥

अर अनामय पूछणरो व्याजकरि[5] पिता१नूँ बडा१ भाई२ समेत मारि साहहोणरो संकल्प करि दिल्लीमाथै आपरी चतुरंग चमूचलाई।

तिको मंत्र उपह्वर[6] भी चारलोकाँरा[7] चतुरपणाँथी चौड़ै आयो थको पहलीही इसो घाट घड़ता तीजा३साहजादा ओरंगजेब४०।३ रै सहायक बणियो ॥

जिकण महापातक माथै लेर आधी[1] पातसाहीरो लोभ दे प्रतीची[8]रा पति आपरा अनुज मुरादसाह४०।४नूँ मिलाइ पाउसरी कादंविनीरै[9] अनुकार[10] आपरो अनीक[11] तणियो ॥

अठी दूजैरसाहजादै सुजासाह४०।२भी पहलीरी सूचनारै समान दिल्लीरै अभिमुख[12] प्रयाण[13] कीधो ॥

जैरै बुंदीहूँ हाडोतीरै अधीस सत्रुसाल१९४।१भी वचावणरी वि-

---

१ सभासदों सहित २ स्वर्ग का लाभ ३ महाभयंकर रोग का ४ पूर्व दिशा का पति ५ आराम पूछने का मिस करके ॥ ५ ॥ ६ एकांत की सलाह ७ हलकारों के ८ पश्चिम दिशा का हाकिम ९ वर्षा की मेघमाला के १० सदृश ११ सेना फैलाई १२ सन्मुख १३ गमन किया ॥ ६ ॥

चारि आपरा पंचम अनुज मुहुकमसिंह१९४नूँ हित पत्रलिखाइ, याँरीति दीधो ॥ ६ ॥

अब सुजासाह४०।२रै समीप रहियाँ भाई तू बुन्दीरी वसुधारो बिभाग परलोकमैं पावसी ॥

अर अबही प्राची१रा अधीसकपटी दूजा२ साहजादानूँ छोडि आयाँ म्हारा आसयरै अनुहार पिताराघरमैं खटावसी ॥

जिको पत्र पढताँही हड्डा१धिराजरै पंचम अनुज मुहुकमसिंह १९४।५आपरा अधीस अग्रजरा आदेसरै अनुसार अब भावीरा भरोसामैं भ्रम देखि प्राचीरापति सुजासाह४०।२नूँ तजि आपरै देस आइ अनुगतभाव दिखाइ संभरसिरोमणि सत्रुसाल१९४।१ रा पगाँमैं प्रणाम कीधो ॥

जरैं राजा रत्न१६२।१रा बडा कुमार गोपीनाथ१९३।१रै पट्टपुत्र नरेस सत्रुसाल१९४।१भी आपरा अनुजनूँ ग्रामता समेत पहलीरा दुर्ग्गपुररो प्रतिनिधि इणारा अग्रज इंद्रसाल५६४।२रै अंतिक आलोचि करउर दंगदीधो ॥७॥

अठी दूजा२साहजादानूँ आपरैऊपर चलायो जाणि तिकणनूँ पाछो फेरणरैकाज कुमार दारासाह४०।१रो कुमार सलेमसाह४१।१ बिदा कियो ॥

तिकणरैसाथ कछवाह जयसिंह१ गौड़ अनिरुद्धसिंह२ नबाब दलेलखान३तीनही मुख्य सामंत देर आपरो उद्धत अनीक दियो ॥

तीन३ही सामंताँ सलेम४१।१रैसाथ साम्हैं जाइ बाणारसी रै समीप कुमाररा काकानूँ कोरडो लोह चखायो ॥

जिणथी पहला१ही प्रघातमैं परम्मुख होइ दूजो२कुमार दूजारो प्रहार भी न खायो ॥ ८ ॥

१ आज्ञा २ सेवक भाव ३ समीप ॥ ७ ॥ ४ अनम्र अथवा चंचल ५ सेना ६ निकेवल शस्त्र ७ युद्ध में ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

साह सुजा४०१२ गंजे समर, सामंतां३ र सलेम४११ ॥
मदविण पाछो मोल्हियो, जिम्हग २ दविण जेम ॥ ९ ॥
पिता१पितामह२ थी प्रयात, लिखि सलेम४११ जपलाह ॥
कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह ॥ १० ॥
पंचलाख५००००० मुद्रा पटा, लै जयसिंघ१दलेल२ ॥
लीधो गौड़ दुलाख२००००० लागै, खग्गाँरखा जय खेल ॥ ११ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीति आपरा और भी विसेसबीराँनूँ बधाइ काकारा द्वाररो थाड़ होइ सेनासमेत सलेम४११ उठैही आडो रहियो ॥
अर काकेभी पुळियार होइ प्राची१रो परिकर इकट्ठोकरि फेर ।दिल्लीपर चलावणा दृढभाव गहियो ॥
इणबातरै हाके पहलीही सिताराः१ बीजापुर२ भागनगर३प्रमुख केखणरा २ अधीसाँनूँ विजयरा फळमैं विभागी बणाइ दक्खिण पच्छिम ३ रा अधीस दो २ ही साहजादा मिळिया तिके दूजा २ अजैरै अनुकार साँचै संकल्प दिल्लीरा दायाद होइ साम्हाँ चलाया॥
अर दिल्लीसभी घणाँसाहसथी आपरा जावणमैं आडो होइ चलायो सड़ा वडा १ कुमार दारा ४०१२ नूँ सारूँहँ पूगणरो निदेस देर वि- कीधो जतरै तापी१ नूँ लाँघिनर्मदा २ नदीरै नजीक आया ॥१२॥
साह कहियो म्हाँराअनाँमयरो उद्देस करि आवै तिकाँनूँ साम्हैं ाइ हूँही समुझाइ पाछा मोड़िआऊँ ॥
तिकोभी तातरो निदेस सनमानि दारा ४०१२ कहियो पिताराधारणमैं हूँभी पाटरोपुत्र १ प्रतिष्ठा नूँ पाऊँ ॥
जैरै पातसाह दारा ४०१२ रै साथ जोधपुररो अधीस राठोड़ जस- न१च्यारि४ही अनुजाँसहित कोटारोअधीस हाडा६१मुकुंद१९४।१२

सर्प २ बिना दांतवाला ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ३ भागकर ४ पूर्व दिशा की पर ५ सरदार ६चंदायत ॥ १२ ॥७आराम पूछने का८पिता की आज्ञा का९जब

मालवदेसरा पच्छिम ३ प्रांतरो पुहवीसं रतळामनगररो बसा-वणहार राठोड़ रत्नसिंह३ बिस्वासघातकरि आपरो भामें अमरेस रा चरणाँरो छेदणहार गौड़ नरेस अर्जुनसिंह४॥राणाउतराजा राय-सिंह५ नवाब कांसिमखान१ करीमखान २ प्रमुख आपरा मुख्य सामंत सहायक करि बडा बरूथरै साथ जूझणरा साहसी कुमार दारा४०।१ साहनूँ ओरंग४०।३ मुराद ४०।४ रै साम्हैं बिदा कीधो॥ अर इणरा कुमार सलेम४१।१ नूँ पहलीसूचिया सहायकाँसमेत प्राची१ रै पंथ सुजासाह४०।२ आडोरहण दीधो ॥ १३॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन१ रयण२ मुकुंद३ए, सोवण संगर सीम ॥
क्रमियां ए रावण कँवर, कासिमखान१ करीम२ ॥ १४ ॥
रायसीह१ जसवंत२ रण, जाँणँ तजिकढिंजाण ॥
ले दारा४०।१ क्रमिया लगस, फोजाँ संगस उफाण ॥ १५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी पातसाहीपर जादा भार पड़तोजाणि साहनैं कोटेसरे बारां १ राखि मऊ२ उतारि तिकणरैएवज माधाणी२६।२२ मुकुंद १९४।१ नूँ और परगणां देर दारा४१।१रै साथ जावणरो हुकम दियो॥ अब बुन्दीसरो बुलावो बिचारि मऊ२रो फरमाण लिखाइ पह-लीही बुन्दी भेजि हाडाँ६१रा हंस सता१९४।१नूँ बखसीस कियो॥ नरेसभी फरमाण आताँही जाइ मऊ२ गरदाइ झगडो जमाइ कोटेसरा राखिया मऊ२रा फोजदार खीची१३ नगराजनूँ उचित आ-तंकै देर बारैं काढियो ॥

अर एकादस११ अब्दरा गया मऊ२पुरमैं परगणाँसहित पाछो अमल जमाइ प्रतीपं दीठो तिको ही गाहियो१ र बाढियो२ ॥१६॥

१भूपति २ बहिनोई अमरसिंह का पैर काटनेवाला ३ आदि ४ सेना के साथ ५और ॥ १३ ॥ ६ चले ॥ १४ ॥ ७ निकल जाना ८ लम्बे चले ९ क्रोध १० सूर्य ११ भय १२ विरुद्ध ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सक चउदह सत्रह १७१४समा, लागाँ इम जय लेर ॥
मारि खळाँ लीधी मऊ२, दळाँ पेराभव देर ॥१७॥
कीधी थान बिनायकैं, राड़ि बळाँ नरराज ॥
सो खीची१३ हणियो सतै१९१४१, बणियो तीतरबाज॥१८॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

पहली अकबर३७।१ अवसाणसमयरै समीप रीछवारा राठोड़ पूप भोज१९।१।२रै पगाँ पड़िया तिकै अब मऊ१ वाराँ२ छूटाँकेड़ै पाछा प्रतीप थिया ॥
जिकाँमाथै हाडैनरेस मऊ२थी राजकुमार भाऊ१९५।१ भेजियो जिकण जाताँही राठोड़ दहवट्टाँकरि काढिदिया ॥
इणरीति रीछवा१ बकाणी२सूधीजनकरी आण जमाइ कुमार भावसिंघ१९५।१ पाछो मऊ आयो ॥
जठै आपरो अकंटक अमल जमाइ नरेसभी बुन्दी आइ बिजयरो सुजस १ सत्रवाँ २ समेत दिसादिसा डुलायो ॥ १९ ॥
अठी साहरै समाधी हुवाँकेड़ै दारा४०।१साहनैं अधिकाररो कामभी छोडिदीधो तोभी तीन३ही भायाँरो तखतमाथै चलावणाँ जाणि प्राची१मैं पुत्रनूँ भेजि अवाची२कूँ आवता दो२ही पुत्रानूँ समुझावण साम्हैं जावता पातसाहनूँ पेलि तिणरो बडो१पुत्र साहसरै सहाय पहली कहिया कटकरै साथ दरकूँचाँ दक्खिण२रै अभिमुख चलायो ॥
तिकण अवंती पुरीरै परै पंच५कोसरै प्रमाण पूगिबीराँरी बासठिहजार६२००० सेनारै साथ मेळ पायो ॥
जठै दो२हीफौजाँरै दूजहीदिवसकाळिकोपतोपाँरोघोरघमसाण[12]राचियो

१ पराजय ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ अन्त समय ३ बिरुद्ध ४ बरबाद ५ अमाया ॥१९॥
६ आराम ७ पूर्व दिशा में ८ दक्षिण ९ मना करके १० सन्मुख ११ उज्जैन १२ युद्ध हुआ

अर बीचबीच बैंडीरा वैंहँडा वज्रवेग बानैत बीराँरै सस्त्राँरो संपात माचियो ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

असीसहँस८०००० सेना अठी१, सहँस उठी२ बासठ्ठि६२००० ॥
भड़ाँ१ ओपियाँ भीरँवाँ२, नीर गया मुख नठ्ठि ॥२१॥
जिण दक्खिण२धररो जरै, अरि हूँतो अवरंग४०।३ ॥
सोभी लै अब सीरमैं, जुड़ण चलायो जंग ॥२२॥
त्रय३ भीडू दक्खिण२ तणा, बदिया पहलै बाद ॥
धुर चोथो४ पच्छिमधणी, मेळे अनुज मुराद४०।४ ॥२३॥
प्रथम गजर तोपाँ पड़े, गोळा वजर गुड़ाण ॥
मचियो जिणदिन माझियां, घोर प्रळै घमसाण ॥ २४ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय दो२ही फोजांरा हिलोळा समुद्रैरै समाण प्रमाणमैं आय॥
अर तोपांरी गाजहूं सेसरासीसां१ समेत मकरांकर मेखळा मही२रै मचोळा लगाया ॥
दिकपाळाँ१ रा गाढसमेत दिग्गजां२रा मद छूटि आठूंही अनेकपँ चकितपणाँका चीकार करणलागा ॥
अर रज १ धूम २ रा बितानमैं मार्तंडरा मयूखं अंतर्धानबिद्यारो अभ्यास धरणलागा ॥ २५ ॥
दो२ ही तरफ गोळांरो गजरहूं ओट आवै जिताही घोडां१सिपाहाँ२ समेत हाथियाँ३ रा गोळै उड़णलागा ॥
अर इळां१ आकासरै२ हारावळीरूप बिघ्नकारी डूँगराँरा डोहँणाहार बिघ्नविहीण परिरंभ जुड़णलागा ॥

---

१ पागल स्त्री के २ कलश के समान ३ वानाबंध (युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले ४ प्रहार ॥ २० ॥ ५ कायरों का ॥ २१ ॥२२॥२३॥२४॥ ६ समुद्र की मेखलावाली ७ दिग्गज ८ सूर्य के ९ किरण छिपने लगे ॥ २५ ॥१० समूह ११ भूमि १२ हार की पंक्ति के सदृश १३ मथनेवाले १४ शरीर से शरीर मिलाकर

जिणसमैं महामारीरे मंडाण नरांरो नास देखि कोईक कच्चा-मंत्रादेणहार आइवेरा अमेध सामंतर सूचिया घोड़ै चढणरी हूंस धारि दारासाह४०।१ हाथीरूप तखतहूं हेठो उतरियो ॥

जरैं पैलांरा प्रबळ प्रहारहूं पड़ियो१ कै पुळिपार हुवो २ जाणे साहरी सेनारा सिपाहां मतैमतै मार्गलागणरो आरंभ करियो ।२६।

दिल्लीरा दळमैं दरोळ देखतांही साहजादा२री सेना बडेजोर बधीथकी आगैं आइ उछाहरै उफाण महाप्रळै मचायो ॥

जठैघणांरा कचरघाणमैं आपरा अनीकरा पद्रवरा प्रवाहमैं पड़ियो नवाब कासिमखान १ समेत कुमार दारासाह ४०।१।२ भी ठहरण नपायो ॥

जठैतो वडावडा अमीरांरा आपाण प्रहारपहलीही पड़तादेखि राठोड़राजा जसवंतसिंह१ राणावतराजा रायसिंह२ प्रमुख क्रिताही आर्य१ जवनां२रा ओघ दारा४०।१ रो साथ छोडि दांर२ रो साथ करण आपआपरै अगार चालिया ॥

अर च्यारि४ही भायांसमेत माधाणी२६।२२ हाडो६१ मुकुंदसिंह १९४।१।१ गोड़अर्जुनसिंघ२ राठोड़रत्नसिंह३जिसड़ा जोधार कालीरा कलस खाणगळिपार होइ हाथियांरै माथे हाथकरता साथियांरै सूरतांरो साणलगावता साहजादा२रे समीप हालिया ॥ २७ ॥

घणां घोड़ां१ भड़ां२रो घाणकाढि बूंदी१ कोटा२ दो२ही ऊजकादिखाइ हाडा६१रा वंसनूं वीजांमैं वधतो वताइ लाजरूप लंगररा खैंचिया पैलांरा प्रतिमल्ल मदांलागा अइंदे माधाणी२६।२२ मुकुंदसिंघ१९४।१ मोहणसिंह१९४।२ कन्हीराम१९४।३ जूंझारसिंघ १९४।४ च्यारि४ही भाई पैलांनूं जयसंसय जणाइ खागांरा खेलहमैं खंडविहंड होइ विमाणांबैठा नारियांरै साथ गलवांहँ कीधां सुरलो-

१ युद्ध के २ अपवित्र ३भागा ॥ २६ ॥ ४ उपद्रव (अखेड़ा) ५भागने के ६आदि७ स्त्री का साथ करने को ८ खुरशाण ॥ २७ ॥ ९ सिंह

क पूगा जिकाँनूं इंद्रादिक *अमरां बधाइ आघालीधा ॥ तिकाँ सुधारूप १सीधुरा छाकियाँ नंदनबनरै निवास सुधर्मा स-भामैं बैठि सुरारैसाथ बिलास कीधा ॥

अठी पाँचमों५भाई किसोरसिंघ१९४।५ केही हाथियाँनूं हठाइ बरबीर बैरियाँनूं अग्रजाँ१रा तथा आप२रा साथी बणाइ धरारो कँवाड़ होणा करवाळ१रूप क्रकचाँ२मैं अंगरा फाचरा उडाइ सेलां१रा सालाँ२करि पाछो जुड़ाइ खेतपड़ियो ॥

अर आपरी आऊरेबळ ऊबरिया अंगनूं कँवाड़पणाँमैं गाढोक-रणा कलंब१रूप काँटाँ२मैं जड़ियो ॥ २८ ॥

गौड़राजा अर्जुनसिंघ२ बैरियाँरा थाट बिरोळि बैंडा गजाँरै चा-चर चंद्रहास चलाइ सैंकड़ाँ सूराँनूं साथी करि महारुद्ररी माळामैं आपरा मुंडरो मेरु चढाइ रुंडथको भी धारामैं तिलतिल पळचराँ-री पाँती पुंजळन राखि इष्टलोक पूगियो ॥

इणारीति रतळामरैराजा राठोड़ रत्नसिंह३ सारथी१ समेत तर-णि२नूँ तमासै लगाइ केही गजदंतां१सहित सुंडादंड२ सूनाँ करि दीठा दायँणाँरै सोणित भद्रकाळिरो खप्पर भराइ बीर बेताळाँनूं गूदरा गाळा जिमाइ बिनाँमाथै भी साहजादाँ२नूं संकाइ लोहछ-क घूमता गजाँरी घड़ामैं सूरसज्जासूतै इच्छारै अनुसार परलोक लियो ॥

उठी हाडाँ६१रा अधिराज नरेस सत्रुसाल१९४।१रो तीजो३ कु-मार भगवंतसिंघ१९४।३ ओरंग४०।३ आगैं केही पैलापटैताँनूं पों-ढाइ प्रेत१ गीधा२दिकपलचराँनूं धपाइ चंडीरा चसकमैं आपरो अ-स्रै आसव पूरि चयारि४ तरवारि लागाँ जीवताही खेत रहियो ॥

---

* देवता । मद्य १ देव सभा २ खड्ग रूपी ३ करोतों में ४ बाण ॥ २८ ॥ ५ उ-डाकर ६ खड्ग ७ मांस भक्षण करनेवालों की ८ शरीर ९ सूर्य को १० शत्रुओं के ११ मज्जा १२ रक्त रूपी मद्य

अर दो२ही तरफ हजारांही सिपाह मरिया१तथा घायल२ करिया तिकांमैं दिल्लीरा दळरै भागवे अठीरो घांयल बंधुपणारा दावमैं पड़ियो थको दूजेरदिन एक१भी जीवतो न लहियो ॥२९॥

॥ दोहा ॥

ऊतरियो गजसूँ अठै, दारा४०१ चूके दाव ॥
तदि ऊतरियो तखतसूँ, ओळो स्वमति अभाव ॥३०॥
गज तजतां पुळिया गिण, स्वामी१ कासिम२ संग ॥
दळ भग्गो दिल्लीसरो, जाणो परबळ जंग ॥३१॥
भागतां दलभाजिया, दारा१ कासिम२ दो२हि ॥
पुळिया टोडा१ जोधपुर२, आदि घणां भड़ ओहि ॥३२॥

सचरणगद्यम् ॥

जठै इणरीति हाडांद्१११ गोड़ां२ राठोड़ां३ आप आपरां लूण उजाळिया ॥

अर हजारां वैरियांनूँ वसुधामाथै बिछाइ ढालां३ समेत केही गज राज ढाळिया ॥

सातूँ७ही सामंत खास बाड़ानूँ तोड़ि गजांरा गोळमैं जावता जकिंया ॥

अर चोरभी सीसोदिया राउत जगरूप८ जिसा केही अछूती अणीरा वीर उठैही पूगतां पड़िया लोह छकिया ॥३३॥

बीजांरा बरूथमैं जिकांरा संबंधी जाणिया तिकेतो दिल्लीरा दळरा घांयल जावता रहिया ॥

ओर हजारांही खेत सोधणरै समय सचेत१ अचेत२ प्राणधारी पाया तिके सर्वही ओरंग४०३रा आदेसरूप अनळमैं दहिया ॥

॥२९॥३०॥१ भागा हुआ जानकर॥३१॥२आश्चर्य॥३२॥३निशानों सहित४गिरे॥३३॥

*इस युद्ध में शाहपुरा का राजा सीसोदिया सुजाणसिंह पांच पुत्रों सहित दाराशिकोह के पक्ष में बड़ी वीरता के साथ काम आया था परन्तु विदित होता है कि ग्रन्थकर्ता को यह इतिहास नहीं मिला.

आपरा घायलांरा जीवणरा जतन कराइ दक्खिणरा सहायस- हित दोरही साहज़ादां अवंतीरै उपकंठ केही मुकाम किया ॥ अर आपरा१ भडांनूँ लाखांरी रीझ देर केही परायांरनूँ पल- टावणरा कुकाम किया ॥ ३४ ॥

इणरीति ओरंग४०१३ रा भागरै जोर सोरंगसाहरा भडाँ ताजियो ॥ अर तिकोभी यो बिसाळापुरीरो कजियो जीति आगरामाथै आ- वणरा आरंभमैं रहियो ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

उज्जैणी रण जीति इम, बीराँ मन विकसाइ ॥
उमैर आंत रहिया उठै, छकऊपर धक छाइ ॥३६॥
सक चउदह सत्रह १७१४ समै, उज्जैणी रण एह ॥
हुवो हजाराँ मरण हद, मचि असिधाराँ मेह ॥३७॥

सप्तरणागवम्॥

अठै नबाब कासिमखान१ दारासाह४०१२।२रै साथ दरकूँचाँ लाखैरीरै देरै कढि आगरे आयो ॥
अर साहरी हज़ूर आपभी बणियो उदंत सारोही सुणायो ॥
जिके वज्रपातजिसड़ा बचन सुणताँही पातसाहरा मनमैं भी पा तसाही करणरी आधी आस रही ॥
जठै दारा४०१२नूँ उपालंभदेर पछतावारै प्रमाण सोकरा समुद्रमैं मग्न सुगलेस इणरीति कही ॥३८॥

॥ दोहा ॥

पूत घणाँ मैं पालियो, जूझण तूँ मति जाइ ॥
हूँ मोड़े[12] आऊँ हमैं, सुत दौरही समुझाइ ॥३६॥

१ उज्जैन के समीप ॥ ३४ ॥ उज्जैन का २ युद्ध ३ झगड़ा ॥ ३५ ॥ ४ उत्साह ५ क्रोध ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ सार्ग ७ वृत्तान्त ८ वज्र पड़े ९ जैसा १० ओलम्भा ॥३८॥ ११ मना किया १२ पीछा फेरकर ॥ ३९ ॥

मूरख कथन न मानियो, लसियो मूँछ लजाइ ॥
तानूं रब न दियो तखत, दोरनूँ रखत दिखाइ ॥ ४० ॥
दारा४०१ चुप रहियो दुमंन, सिर नमाइ अतिसोच ॥
सतो१९४१२ बुलावण साहरै, उरथायो आलोच ॥ ४१ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

साहजादा२नो पाउसकाळ माळवमैंही कीधो ॥
तिकाँ समासरै अंतर थोहड़ा थोहड़ा कूच करि आपआपराअ-
नीकाँनूँ आगे आवणरो आदेस दीधो ॥
दिल्लीसभी राजा१ नवाब२ रहिया तिकाँनूँ बुलावणारा फरमा-
णा दिया ॥
अर बडा सतकाररै साथ बुलाइ साराही आगरे एकत्र किया

॥ दोहा ॥

बुन्दीरा फरमाणविच, इम लखियो आदाब ॥
भूप सता१९४१२ थारै भुजाँ, अब म्हारै घर आब ॥ ४३ ॥
मुणौं किता दीधी मऊ१, इण फरमाण अधीन ॥
पंच५ मास अंतर पड़े, वेळा अधिक वधी न ॥ ४४ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

नरेस कहियो पहली मऊ१रो फरमाण आयो जरैही म्हेतो जा-
णिलीधी अब साहरै म्हारामाथासूं काम पड़ियो ॥
अर इणसंकटसूं भी विसेस अब किसो काम रहियो जिणरी
रीझमाथै वळे वाराँरो देवो तेवड़ियो ॥
दक्खिणमैं साह१रै तथा इणारा तीजा३ कुपुत्र२रै साथ केही जु-
द्ध जीति केही पुर१ दुर्ग२ दावि पचहत्तरिलाख७५०००००रो मुल-

१ शोभायमान हुआ २ खुदा ने ॥ ४० ॥ ३ हुआ ४ विचार ॥ ४१ ॥ ५ वर्षा ऋतु के संक्षेप होने से पीछे अर्थात् वर्षा मिटे पीछे ६ सेनाओं को ७ आज्ञा ८ इकट्ठे किये ॥ ४२ ॥ ९ बड़प्पन १० शोभा ॥ ४३ ॥ ११ कितने ही कहते हैं १२ फर्मान के साथ १३ समय ॥ ४४ ॥ १४ विचारा

क लिखी देंऽ पत्रिका ॥

तोभी छोटा पत्रणां योग्योरही दीधा पत्रबिना[1] पत्रा ॥ ४३ ॥
बारेर लीधा लिकौंन पाछादेणरो संकोचभी न धराकिया ॥ ४४ ॥
अब आपैकदरबारसंकट मानि एक[2] दीधो तो परमेश्वर हुवा
रगीं देसीहि परंतु आपरामें विश्वासभी इसी व्याकुल लियो ॥
जिकणबिनाही यरज पुणियांपहली गढ[3] रो पत्रणां लिखार
लियो ॥
इणमाहिसूं अनंतर ओर किल्लादार भेजि तिकणरे भुजां लि
गुलाजगढरी भार लुहायो ॥
यह मोकळ[4] बेगा अवेंतस भाई माधोराव[5] ने
डेरेग खासरुक्को देर हजूर बुलायो ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

तिम निजकर कीधो तिलक, भाऊ[6] अंगज भाल ॥
पहु दीधो भूपाळपद, साह सबळ अरिसाल[7] ॥ ४६ ॥
कर जोड़े भाऊ[8] कँवर, नटियो राज निवाह ॥
साहि हठ तोभी सतेर[9], पायो धरियो पाह ॥ ४७ ॥
सकळ राजधानी सहस, भार उतार भळाइ ॥
कहियो कुळ रेसणी कँवर, चलओ तेम न चलाइ ॥ ४८ ॥
सुमंत्र[10] पटिकर सेन सह, देखो नयण दुवाल ॥
गोताजत[11] मणजस[12] लहे, चूके न कुळचाल ॥ ४९ ॥
लिपु गंगा[13] थारी लघुता, फकर[14] तजे आमेर ॥
नाम दूंद म्हारो कँवर, बार[15] बयण[16] कुळड़ बसर बेड़ ॥ ५० ॥
राजा दे इम राजरी, भाऊ[17] रै सिर भार ॥
मन निश्चै धारियो मरण, करयो साथां उपकार ॥ ५१ ॥

1 सुद्रद ॥ ४४ ॥ २ पूजा ३ बलवान ४ प्रदेश ५ घरमेश्वर ६ बसंत करके ७ सरकार करवाऊंगा ॥ ३३ ॥ ९ पुत्र के स्वामी ने १० मंत्रीयों ने समझाकर कहीं बात ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५ बादल ॥ ५० ॥ ५१ ॥

बय बीरां सह बोळियां, केसर कुंड दुकूळ[2] ॥
वळे[3] तरुणा भड बरजिया, मंडे साहस[4] मूळ ॥५२॥
कहियो बय थांरो कहै, सम म्हांरो तांहि[5] सूर ॥
कुळ[6] चील्हा ऊजळ करो, जाओ मरण जरूर ॥५३॥
क्रम चोथो४ भारत१९५।४ कँवर, नटतां रुकियो नांहि ॥
भुंणियो[7] भारत नाम मम, दीधो किण गुण दांहि ॥५४॥
माइ१ जनक२ भ्राता३ मिळण, अतरा[8] अंतर अंत ॥
अतिजव तीजो३ आवियो, भूप कँवर भगवंत१९५।३ ॥५५॥
सीखकरे अवरंगसूं, इणाखिण[9] बुन्दी आइ ॥
पयलग्गो प्रणमे पितर[10]२, मिळियो इतर मनाइ ॥५६॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांसूनुचतुष्कस्य मिथोविरोधवृद्धिहेतुतातबन्दीकरणपूर्वकदिल्लीपट्टाधिगमाभिषेणनकुशलप्रश्नव्याजदिल्लीगमन१, वाराणस्यन्तिकसलीमशाहाहवयवनेन्द्रापत्यसुजापद्रवण२, दक्षिणदेशाद्दिल्ल्यागच्छदौरङ्गजेबमुरादबक्सायोजयिनीसमीपयुद्धदाराशिकोहप्रपलायन३, यवनेन्द्रपुनर्दत्तमऊप्रान्ताधिकारसमासादनानन्तरपञ्चत्वाभिलाषुकदिल्लीयियासुबुन्दीन्द्रावशत्रुशल्यस्य स्वसूनुभावसिंहनृपीकरणं दशमो मयूखः ॥१०॥

---

१ डुबोये २ वस्त्र ३ फिर ४ हठ । ५२ ॥ ५ तब ६ मार्ग ॥ ५३ ॥ ७ कहा ॥ ५४ ॥ ८ वहुत वेग से ॥ ५५ ॥ ९ इस समय १० पिता ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां के चारों पुत्रों में विरोध बढकर पिता को कैद करके दिल्ली का पाट लेने के अभिप्राय से आराम पूंछने के मिस दिल्ली जाना १ काशी के समीप सलीमशाह के युद्ध में शाहजादा सूजा का भागना २ दक्षिण से दिल्ली आते हुए औरंगजेब और मुरादाबक्स से उज्जैन के समीप युद्ध करके दाराशिकोह का भागना ३ बादशाह के पीछे दिये हुए मऊ के परगने में अमल करके मरने के अभिप्राय से दिल्ली जाने के विचार से बुंदी के राव शत्रुशाल का अपने पुत्र भाऊ को राजा बनाने का दशवां

आदितो द्वाविंशत्युत्तरद्विशततमः ॥२२२॥
प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समवयरा सुहड़ाँ सहित, बोळे कुंकुमवास१ ॥
पग रणलंगर पहरिया२, भूखणा३ उडुगणा भास ॥१॥
केसकळप तजियो सकळ, भजियो कजियो भूप ॥
बजियो इण१ गुण बुद्धय, सजियो तरुण सरूप ॥ ॥ २ ॥
कहियो पहु कोटेसरा, सुत चउ४ लग्गा सार ॥
ऊबरियो पंचम५ अनड़, भरियो जय१ जस२ भार ॥ ३ ॥
अब दूरणां रण आपणां, पड़ियाँ सुजस प्रकास ॥
प्रकटै बूंदी पट्ट पण, न कटै नास बिनास ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सणांणांकै खुरसाण १ खेंगधाराँ २ खणांणांकै ॥
रणांणांकि रणराग३ भ्रूलम४ पाखर ५ भ्रणांणांकै ॥

---

१० मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२२ मयूख हुए ॥
अपनी बराबर ऊमरवाले १ सुभटों सहित ३ केसर में वस्त्र २ डुबोये और पैरों में युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने और ४ तारों की भांति चमकते हुए (जड़ाऊ) भूषण पहिने ॥ १ ॥ ५ केशों में रंग करना बिलकुल छोड़दिया 'क्योंकि मरते समय शरीर से नील के रंग का स्पर्श होना आर्य धर्म के विरुद्ध है' और उस राजा शत्रुशाल ने ६ युद्ध का सेवन किया और इस (वीरता के) गुण से विदित होकर तरुण पुरुष के समान सजा ॥ २ ॥ राजा शत्रुशाल ने कहा कि कोटा के पति के चार पुत्र ७ तलवारों लगे अर्थात् अभी काम आये हैं और पांचवां पुत्र ९ अनम्र होकर जय और यश के भार से भराहुआ ८ बचा है ॥ ३ ॥ इसकारण अब कोटवालों से अपने वीर युद्ध में१ दुगुने मारेजावें तब यश का प्रकाश होकर बूंदी का पाटवी पन प्रकट होगा और इसप्रकार विनाश होने से ही नासिका नहीं कटेगी नहीं तो नकटा पन है ॥ ४ ॥ १० यह शब्द सान के शब्द का अनुकरण है इसीप्रकार खणांक रणांक आदि प्रत्येक पदार्थ के भिन्न भिन्न अनुकरण हैं ११तलवारों की धारा१२टोप

चखाखांकै भड़ चिहुर६ छोजि कातर छखाखांकै ॥
टखाखांकै टामंक७ अमर८ फौलाँ भखाखांकै ॥
ठखाखांक. घंट९ गंदळाँ ठहे गखाखांकै पंळचर१० गयराँ ॥
हखाखांक हीस हैगार्म हय११जय कखाखांकै बंदिजणा१२ ॥५॥
गयराजाँ१ गुडं ग्रहणा रहणा पाखर हयराजाँ२ ॥
पाँजाँ छलि दळ३ प्रघणा संघणा वरसाल समाजाँ ॥
ताव अलाजाँ४ तरस सरस रणा चाव सलाजाँ५ ॥
वर्यों न रोजाँ बहिरि गहिरि तोपाँ घणा गाजाँ६ ॥
दूजाँ दुरूह काजाँ करणा बाजाँ७ जयबोधक वयणा ॥
साँजाँ सुरेस चढियो सतो१९४।१राजामणि बीजो रैयण१९२।१॥६॥
गज१ ठणियाँ घण ग्राह२ बाँह१ जणियाँ बांदाळक२ ॥
तणियाँ करभ१ तिमीस२ चरम१ भणियाँ चउ४ चाळक२ ॥

(सिलह) वीरों के १ चिकुर (केश) खड़े हुए 'यहां चिहुर शब्द सामान्य केशों का वाचक है परंतु भड़ शब्द के योग से मूछों के बालों का ग्रहण है जिसका अर्थ है कि वीरों की मूछों के बाल खड़ेहुए' तथा वीरों को रोमांच हुए "रोमांच भय से भी होता है और उत्साह से भी होता है" सो यहां उत्साह से रोमांच जानो २ कायर जलते हैं ३ नगारा ४ हाथियों पर ५ हाथियों के समूह में लगाये हुए वीरघंट ६ मांसभोजी ७ आकाश में ८ घोड़ों के समूह में घोड़ों का हिनहिनाना और भाट लोगों का 'जयहो' ऐसा शब्द हुआ ॥ ५ ॥ १ गजराजों पर हाथियों की सिलह को और घोड़ों पर पाखरों को रखकर सेना १० पाज (मर्यादा) पर ११ छलकर अर्थात् मर्यादा छोड़कर १३ वर्षा ऋतु के मेघ के समाज से (समान) १२ दरवाजे से बाहिर हुई १४ उस सेना के ताप से १५ निर्लज्जों को १६ कंप और १९ लज्जावालों को युद्ध का १७ बहुत १८ उत्साह हुआ २० तलवारें म्यानों के २१ बाहिर हुईं २२ तोपों की बहुत गंभीर गर्जना हुई दूसरों के२३कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे कार्यों का वाद्यों से और वचनों से जय का बोध हुआ इंद्र के समान २४ सामग्री से अन्य राजाओं का मौलिमणि दूसरा२५रत्नसिंह रूपी वह शत्रुशाल चढा ॥ ६ ॥ अब यहां हाडा क्षत्रियों की सेना का समुद्र के रूपकालंकार से वर्णन करते हैं कि इस सेना में हाथी हैं सो तो बड़े बड़े २७ मगर २६ हुए और २८ घोड़े हैं सो ही समुद्र पर चलनेवाले२९बद्दल हुए फैलेहुए ३०ऊंट ही ३१ तिमिंगिल हुए, और वहां३२ढालें ही चारों पैरों से३३जल को छाननेवाले कच्छ-

माणियाँ१ रयणाँ२ अमोल रोपे अणियाँ१ मोती२ रुखँ॥
सोहता धणियाँ१ सीप२ मिळे असिवर१ फणियाँ२ मुख ॥
हद धरम१ सीम२ गणियाँ लहणा बणियाँ मेळ१सुबेळ२बधि॥
खणियाँ१ न होइ नाडाँ२खटै ऊफणियाँ हाडाँ१ उदधि२ ॥७॥

॥ उल्लाल: ॥

महँ महँ सुगंध१ चिक्कस२ मळणा, जीतणा तप अहसहँ जुड़ ॥
जँह मँह विवाह लाडाँ जुड़णा, हाडाँ६१ धर गैहमह हुई ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

हाडाँ ६१ धर गहमह हुई, जाँडाँ बिरुद लुभाणा ॥
गाडाँ भरि जाडाँ गळाँ, खाडाँ तुरक खपाणा ॥ ९ ॥
पंचम५ राणी अति प्रिया, सूरजकँवरि१९४१५ सनाम ॥
निज वाँसक कहियो निसा, इम साँसक अभिराम ॥ १० ॥
करणाँ सो अबही कियो, मरणाँ बेसँ महीप ॥
दिल्ली मग मोलूं दहे, दीजै पग कुळदीप ॥ ११ ॥
जीतै रणा पैला जरैं, सुरपुर बसणा समीहँ ॥

---

५ कहीगई. वीरों के आभूषणों में जो मणियां हैं वेही अमूल्य १ रत्न २ बाणों की अनियां (नोकें) ही जहां मोतियों की ३ भांति हुई, उस सेना के धणी (सेनापति) उन मोतियों को उत्पन्न करनेवाली सीपरूप हुए और श्रेष्ठ तलवारें समुद्र में रहनेवाले मुख्य ४ सर्प हुईं. वीरों के धर्म की सीमा ही समुद्र की सीमा अर्थात् मर्यादा और वीरों का उस सेना में मिलना ही श्रेष्ठ तरंगों का बढना हुआ, ऐसे हाडों रूपी समुद्र के बढने में अन्य ५ खोदेहुए नाडे समता में नहीं ६ खटा (ठहर) सकते ॥ ७ ॥ ७ मीठी मीठी सुगंधिवाला ८ चून का मालिस (उबटन) कराके यवनों का तप जीतने के लिये ९ मैं आगे मैं आगे कहती हुई वह सेना१० जुड़ी ११ जहांपर विवाह के १२ उत्सव में दुलह जुड़े इसप्रकार हाडों की धरा (भूमि) में १३ अत्यन्त भीड़ हुई ॥ ८ ॥ १४ दुलहों के १५ यश पर लुभाये हुए बडी गर्दनवाले तुर्कों को छकड़े भरकर खड्डों में नष्ट करने के लिये हाडों की धरा में अत्यंत भीड़ हुई ॥ ९ ॥ १६ रात्रि के समय अपने बारे में कहा १७ पति से १८ सुंदर ॥ १० ॥ मरने का १९ बनाव (लिबास) अब ही करलिया ॥ ११ ॥ २० अट इच्छा से स्वर्ग में वास करो

जिन सेवा चकासी करै, वासीविरा गढ४ वीह ॥ १२ ॥
सुरतानोरैचन जीवणार मरणा७, रै सातो हरि हाथ॥
है चनजन उजळीहूवां, सोपणा छुटै साथ ॥ १३ ॥
इण पत्ती हालू१४७१ चखूत. गिया वहै गोपाळ१८१ ॥
निमाळभण मरियां नहे, मोनै कुजमरजिवाळ ॥ १४ ॥
नाहि सझारांधी नथी, जगमैं घणा लणा नाम ॥
तोपी तुरी पठनाणियां, गोनगिरा७ जसराज ॥१५॥
पिड्ढ़ता जिवाणी पिया, थानी पनम भेला न ॥
ई सङ्गजित भाको हुवां, गदी पिळळ कै मो न ॥१६॥
कछवै रतन रहोणी रूपण, जो इन नुग समुभाइ ॥
कलिजुगरम कालियो कंवर, पुर पुगानवा माद ॥ १७ ॥
राक नइद्द मनह१४४ रात, लिलिंग, चकगाहवकगाया ॥
पाविगद नणां१४ कोईय चाउ१३. नहिनो इन पहुमाया ॥ १८ ॥
गढिगढ १ पुर्म प्रथन, मैं समुझाम वाद ॥
फुळकै सिवाणिले करै, पाया उजगढ मयाद ॥ १९ ॥
वैहू मिन सुन ज्याह कहै, लजै गर्भ लिपाइ ॥
धान लियो इण पाणड़े. मोम लियो रता नाह ॥ २० ॥

घमंके जड़ी पाखराँ थाट घोड़ाँ, झमंके झड़ी पाखरा आगि झोड़ाँ
ठहक्के कड़ी कंकटाँ ठोर ठांई, डहक्के भड़ाँ बंकड़ाँ घोर डाँई ॥ २२ ॥
तुली ढाल रूड़ी घली काळओपाँ, अली जोटं जूड़ी हली ज्वाळ तोपाँ
कहे एन दौठाँ भ्रळे नेस कोपाँ, लगी टेक गोळाँ दगी अद्रि लोपाँ २३
इसो रूप कीधाँ जिके त्रास आयाँ, जिके आगि लीधाँ गढाँ ग्रास जाँयँ
गजाँडे घणाँ घोर यूँ घोर गाजै, विलागा किनाँ डूँगराँ वज्र बाजै ।२४।
जथा के कॅड़क्कै छटा१मेघ२जोड़ाँ, मचै सिंधुके मंथ पव्वै घमोड़ाँ ॥
वमैं झाळ जे फांडियाँ काळ बाँका, पळेजीतरो चिन्ह धारै पताकाँ २५
करी१सिंह२बाराह३रै तुंड केती, लसै ग्राह४चक्री५सुखी वाह लेती ॥
लगाँ नागणी जागणी नींद लोपै, अँगाँ दागणी लागणी भाग ओपै ॥ २६ ॥
हुवै गैलं चोड़ा जठै सैलहूँता, हलै बैलजोटाँ घणाँ बैलहूँता ॥
ठही चोट दे झंझरी कोट ठाँयाँ, छकी पान जं अट्टरै वट्ट छायाँ ।२७।
टळै ढील लागाँ घणाँ फोल टल्लाँ, हठै नीठि पाँइक्क१हल्लाँ हमल्लाँ ॥

पाखरें वर्जी जिनके १ झोड़ से (टक्कर से) अग्नि चमक कर गिरने लगी ३ कवचों की कड़ियां २ ठहक (बज) कर ४ निरंतर वाद्य ५ हुआ ७ घावड़ी अर्थात् भयंकर घात जाननेवाले बांके वीर ६यों के (सचेत हुए) ॥ २२ ॥ ९ काल की उपमा घला हुआ (दिया जाने योग्य) सुंदर ८ सेना का बड़ा झंडा खड़ा हुआ और १० बैलों की जोड़ियां जुपी हुई ज्वाला के समान तोपों की पंक्ति चली ॥ २३ ॥ ११ मेघ की गर्जना के समान मानों पर्वतों से १२लगकर वज्र बोलता है अथवा मेघ में बिजली १३कड़कती है ॥ २४ ॥ १४समुद्र के १५मथने में१६पर्वत के घोर शब्द होते हैं१७उगलती हैं १८ भुख १९ ध्वजा ॥ २५ ॥ २०हाथी के २१ सूअर के २२ मुखवाली २३ शोभायमान २४सर्पों के मुख की प्रशंसा लेती हुई २५ जामकी (अग्नि लगाने का तोड़ा) २६ जाग्रित होनेवाली २७ पर्वतों को जलानेवाली २८ शोभित ॥ २६ ॥ २९ मार्ग ३० पर्वत ३१ष्टुषभों की जोड़ियों से चलनेवाली तोपें बहुत बैलों से चलीं ३२ चोट देकर कोट को जर्जरीभूत (ढीला) करती हैं ३३ छाकीहुई ३४ बुर्जों के ३५ मार्ग ॥ २७ ॥ ३६ हाथियों के जोड़ों से ३७ पैदलों के

तिकाँ अग्ग हेरंब१कै छैलं२तूटै, छकायाँ सुरा३रोधरै खेद छूटै ।२८।
चढी नाळियाँ वाह यूँ राह चल्लीं, हलाड़े धजाँ के गजाँ पंति हल्ली ॥
लसै आल१जंगाल२सिंदूर३सुंडा, इळांमैं धसैं धाँवरा पाव उंडा ।२९।
उठावै कराँ पोगराँ दे उछाळा, किनाँ लागणाँ शृंग पैंनाग काळा ॥
चले कर्णताळाँ१उछाळाँ चलावै, धरे काळ भाँ अद्रि पंखाळ धावै ३०
ठणो भेद्र१मंदाँ२मृगाँ३वंस ठावा, छटा फैलि हालै किनाँ सैल छावा
खेंहो साथ जेता करै दुर्ग खोळा, महो१रै अही२साथ देता मचोळा ॥
धराँरूप लंबो कराँ धूप धारै, नराँ एक१एको१हजाराँ निवारै ॥
झरंता पटाँ डाण पब्बे झरींज्यूँ, करंता थटाँ प्राणभैकेहरींज्यूँ । ३२ ।
रचै लाँर गुंजार रोलंब राजी, भगाणाँ भड़ाँ रोध ओ लंब भाजी ॥
अरानाँ हसै डूँगराँ रैणा आँटै, छदी जे कराँ सीकराँ गैण छाँटै ।३३।
डगाँ घोसता साँकळाँ सूतडोरा, धरा यूँ खणैं ज्यूँ बणैं खेत धोरा ॥
भला जूहवे बेरियाँ व्यूह भेदी, बिजै मित्र जे चित्र संग्राम बेदी ।३४।

उनके आगे १ गणेश का नाम कहकर (निर्विघ्नता से चलने के लिये गणेश का नाम लिया जाता है) २ बकरे लूटते हैं बलिदान होता है और मद्य से परिपूर्ण करने पर रुकने का दुःख छूटता है अर्थात् चलती हैं ॥२८॥ ३ तोपें ४ रंग विशेष ५ रंग विशेष ६ पृथ्वी में ७ दौड़ने के पैर गहरे घुसते हैं ॥२९॥ ८ सुंड का अग्रभाग ९ मानों गिरनारी शृंग पर काला सर्प १० ताड़ वृक्ष के पत्रों के समान कानों को ११ उछाल कर १२ कांति १३ पांखोंवाले पर्वत दौड़ते हैं ॥ ३० ॥ १४ सज्जित हुए १५ यहां भद्र, मंद, मृग, ये हाथियों की जाति विशेष हैं १६ शोभा फैलाकर १७ मानों पर्वतों के बच्चे चलते हैं जिन जिन गढों से १८ भिड़ते हैं उन उन गढों को १९ ढीला करते हैं २० शेषनाग सहित ॥ ३१ ॥ २१ पर्वतों रूपी लंबा सीधा खड्ग सुंड में धारण करके २२ मिटाते हैं २३ हाथी के कानों के आगे मदधारा बहने का पटा कहते हैं २४ मद २५ पर्वत के २६ झरना के समान २७ समूह को २८ प्राणों का भय २९ सिंह के समान करते हैं ॥३२॥ ३० साथ ३१ शब्द ३२ भ्रमरों की ३३ पंक्ति. वीरों की ३५ रोक को ३४ भगानेवाले और ३६ लंबे दौड़नेवाले ३७ क्रोधित होकर ३८ पर्वतों को धूल करने के लिये ३९ सुंड के जल कणों से आकाश को छांटते हैं ॥ ३३ ॥ ४० पैरों से ४१ खेत सींचने का जल बहने के मार्ग की भांति भूमि को खोदते हैं ४२ समूह ४३ सेना की रचना को भेदन करने वाली, विजय के मित्र और ४४ युद्ध के चबूतरे ॥३४॥

इसा रंग[1]भू द्रंग[2]रा अट्ट[3] ऊँचा, सिटावै जिकाँ[4]हेठ[5] पंखी समूँचा[6] ॥
उदै हाटकी[7] बंगड़ाँ[8]दंत[9] ईसा, सुहावै लियाँ आर[10] राका ससी[11]सा॥
कसे रेसमी लाल कंठाँ[12]कलावाँ, किनाँ बाढि[13]याँ राहु[14]दे भाण[15]कावाँ
सिरीसीस[16] कुंभा भणी हेम साँऊ, जथा नारि[17] वक्षोज[18]चोळीजड़ाऊ
उभै घंट भासाँ दुपासाँ अरोहै, ससी सूर रै बीच ज्यूँ मेरु सोहै
रणांके तिकाँ घोर रूड़ी रचाई, ठणांके किनाँ झल्लरी ठोर ठाई ३७
नखी[20] जाँणि झूलाँ जरीतास नाँहीं, मिली तामसी राजसी वृत्ति माँहीं
प्रकासै किता लंब दंडाँ पताका, भलै डूँगराँ सीस ज्यूँ ताल भा[21]का
मिले पीठि छत्री मनाँ कंक मोहै, सिरै[22] जाणि प्रासाद[23]रै गोख[24] सोहै
किताँ पीठि होदा लसे चित्रकारी, उघाड़े जिके तुंग[25] सोभा अटारि[26]
बडे नाँद[27] भेरी किताँ पीठि बाजै, लखंताँ घटा स्यामरी गाज लाजै॥
डिगाया डगाँ जे मगाँ डाक[28]दाराँ, लगा चंड बेतंड यूँ दंड लाराँ ।४०।
बणे लूमझूमाँ हुवा सज्ज बाजी, तुखारी१ खुरासाणा२ भाड़ेज३ ताजी

किता खेत कंबोज५ बाल्हीक६ कच्छी७,
उडै फाँळ[29] लै लै फिरै ढाँळ[30] अच्छी ॥४१॥
घटी८ जंगली९ बंगली१० वेग धाराँ,
अरब्बी११ इराकी१२ र रूमी१३ अपाराँ ॥

लगा पाखराँ साज लूमाँ लड़ीसूँ, प्रै[31]डीनाँ चलै ज्यूँ नटी पट्टड़ीसूँ॥

१ युद्ध भूमि रूपी २ नगर का ३ ऊंची बुर्ज ४ लज्जित होवें ५ नीचे ६ सर्वत्र ७ सुवर्ण के ८ बंगड़ों से ६ लंबे दांतों में लगे हुए हैं सो १० मंगल ग्रह और ११ पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान शोभायमान होते हैं ॥ ३५ ॥ १२ हाथी के कंठ में महावत के पैर रहने का रस्सा है सो मानों राहु ने १४ सूर्य को १५ गोलकुंडा लगाकर १३ घेरा है १६ हाथी के मस्तक का भूषण १७ सुन्दर १८ स्त्री के कुचों पर ॥ ३६ ॥ १९ चढाये (लगाये) ॥३७॥ २० डालीं. उत्तम पर्वतों पर ताड़ वृक्ष की शोभा के समान २१ प्रकाशित होता है ॥ ३८ ॥ २३ महल के २२ मस्तक पर २४ झरोखा २५ ऊंचेपन में २६ छत की शोभा ॥३९॥ २७ नोबत के शब्द २८ छोटे घाव लगाकर क्रोध दिलानेवालों (सांटमारों) ने मार्गों में डिगाये इस प्रकार भयंकर हाथी सेना के साथ लगे ॥४०॥ २९ झंप ३० रीति ॥ ४१ ॥ ३१ उडने में ॥ ४२ ॥

मिले मोहराँ चोश्हराँ पँति मोती, कळा कत्तरी[1] जीतपावै कनोती[2] ॥
दिपै भाल[3] बैठा तवाँ[4] जेबं[5] देता, लसै गल्लकी ग्राव१ भा नैण२ लेता
चुभै चित्त नासाँ[7] मुड़े बँक्र चोडा[8], गयाँ संकड़ेपंथ छेके छक्[9] गाडा ॥
कबी[10] लेह जे राचिया रेह[11] कूदै, सजे डाँण[12] लंबा मृगाँ माण[13] सूदै ॥
कसंता बिजैमंडै[14] कोदंड[15] कंधाँ, बणावै वृथा बेर[16]रै जेरबंधाँ[17] ॥
सँटा[18] याल[19]जाळी लटाळी[20] सुहावै, प्रिया नागवाळी लखै दाग पावै ।४५।
करै हौलुरा[22] कैलरा[23] नाद कंठाँ,
ग्रँथीला[24] मणी[25] झालरा१लूमैर[26]२ गंठाँ३ ॥
सचोड़ा उराँ माँकड़ा[27] आसणोटाँ, मँडै[28] पीठ मंचाँ[29] जिसा गात मोटाँ
जिकाँ गोळ पीडा उभै२चाक जोड़े, तिकाँ चाम[31]री लूम१भा लूम[32]२तोड़े
तळोटाँ[33]१खुराँ२थंभ१पावाँ२तै[34]राजै, सको पिंड१प्रासाद२आधार साँजै[35]
जड़ बज्र नाळाँ झड़े फूल ज्वाळा, मनों मेघ सँद्योत[36] खद्योत[37] माळा[38]
धुजावै धरा दाबि दे काळ धक्का, पुड़े काच ज्यूं आवजावां पळक्का४८
फटै कोट चोड़ा जिकाँ चोट फेटाँ, चँळे[39] सीमँहू[40] कुड[41]यँपट्टी चँपेटाँ[42] ॥
नचे बेगमैं आँखि[43] ताराँ[44] न मावै, गजाँ डाँण[45] लागाँ बयाँनैं[46] गमावै ४६

---

१ कतरणी अथवा केतकी से २ कान ३ ललाट ४ ललाट की दबीहुई हड्डी से ५ शोभा देते हैं उन घोड़ों के नेत्र ६ गंडकी नदीके पत्थर (शालिग्राम) की शोभा लेते हैं ॥ ४३ ॥ ७ बाँके झुके हुए ८नासिका के मुख (फुरने) चित्त पर चुभते हैं ९लगाम के १० चाटने में रंगेहुए ११ फाड़ (परिखा; खाई) को कूदते हैं १२ दौड़ने में लंबाई सजकर मृगों के मान को १३ काटते हैं ॥ ४४ ॥ १४ विजय की शोभा १५ धनुष १६ शरीर के १७ जेरबंध वृथा बनाते हैं; अर्थात् बिना जेरबंध ही जिनके कंधे झुके रहते हैं १८ गर्दन के बालों की १९ केशवाली २० लटावाली सुहाती है २१ जिसको देखकर सर्पिणी जलती है ॥ ४५ ॥ २२ कंठ भूषण २३ अवाच्य शब्द करते हैं२४ गुथे हुए २५ झालरीवाले२६बालछा (पूंछ) २७ पीठतंग २८ रचे २९ मांचा (पिलंग) ३० शरीर में ॥ ४६ ॥ ३१ चमर के गुच्छे की शोभा को ३२ पूंछ (बालछा) ३३ पैर के नीचे का भाग अर्थात् फर से नीचे और घुटना से ऊपर का भाग ३४ सदृश है सो शरीर रूपी महल की नींव को ३५ सजते हैं ॥ ४७ ॥ ३६ चमक-सहित ३७ जुगुनू की ३८ पंक्ति ॥४८॥ ३९ चलायमान होती है ४० सीमा(नींव) सहित ४१ (दीवार) पट्टी की दौड़ में ४२ चपट लगने से ४३ नेत्रों में ४४ नेत्रों की पुतली४५मस्त हुए हाथियों को४६ साई में गुमाते हैं ॥ ४९ ॥

मुड़े तार कच्छे किनाँ वार मच्छी, [1]अटैफार[2] जे पंच[3]ही धार अच्छी ॥
गिणाजै पटोमैं किनाँ तोपगोळा, टळावै टळै बागरे नागटोळा[5] ५०
धरै कक्क सोभा अटे चक्क धावाँ, फिरै पौन१पाणी२अजे[6] ज्यौं फिरावाँ
पड़े बंक बीची किताँ नागपेचाँ[10], मिलै ओथलूँ[11] भी समैसाथ[12] सेचाँ[13] ५१
लसे[14] रीति नाना खुराँ अंक[15] लागाँ, बणावै धरा चित्र[16] नाना बिभागाँ
हसावै भड़ाँ ताँखड़ाँ[17] लांघि हाथी, उडै पाव ज्यूं ताव दाझै ईळाथी५२
छुवंता[20] झळै ओझळे[21] आप छाया, जिके अंबु १ अग्गि[22] १ के वायु
3 जाया[23] ॥
उडंता मृगाँ४कंध कोदंड[24] आखीं, त्रि३वर्णी[25] उरै[26] होइकै वैर ताखीं ॥
नचै थुंग थेई रचै भेद न्यारा, भिड़ावै खलाँ[27] हैदलाँ[28] वेग भारा[29] ॥
सजोलाँ भड़ाँ प्राण[31] जोडे सुहावे, बहै झंपै[32] होदाँ[33] कटाराँ बुहावे ।५४।
खगाँ[34] जीतणाँ[35] धावमैं दाव[36] खेलहै, मलंगे[37] तेड़ाँ[38] माकड़ाँ पीठ मेलहै ॥
घणाँ[39] जोमै[40] माता[41] इसै[42] रूप घोड़ा, चलै थट्ट[43] औडाँ[44] घलै लट्ट[45] चोड़ा।५५।

१जल में मच्छी फिरे उस प्रकार २फिरते हैं ३ समूह. घोड़े की धौरित रेचित आदि पांचों गतियों से ४ अत्यन्त दौड़ने में ५ हाथियों के समूह को ॥५०॥ गोलकुंडा की दौड़ में दौड़कर कितने ही घोड़े शोभा धारण करते हैं सो उनकी बराबरी करने के कारण पवन और पांणी६अब भी७उन मार्ग में फिरा ते हैं ८टेढी ९लहर से १०सर्प की गति के समान ११धन से भी १२ समय के साथ १३मौका मिलता है ॥५१॥ १४ शोभायमान १५चिन्ह १६आश्चर्य कारक अनेक प्रकार के विभाग१७चंचल वीरों का१८अग्नि की ताप से जलें इसप्रकार १९ पृथ्वी से पैर उठाते हैं ॥ ५२ ॥ २० रान का स्पर्श होने से जलते हैं और अपनी ही छाया से २१चमकते हैं वे घोड़े जल२२अग्नि और पवन से२३उत्पन्न हुए हैं२४धनुष२५वरण (कोट) संबंधी गढ को; वा तीन कोटवाली खाई को फांदकर२६इस पार होकर वैर लेते हैं २७भेदन करावे२८घोड़ों की सेना२९वेग के समूह३०सजे हुए वीरों को३१प्राणों के बराबर सुहाते हैं ३२झंप लेकर ३३ हाथियों के होदों में कटारों के वार करवाते हैं ॥५४॥ वे घोड़े३४ पक्षियों को जीतनेवाले३५दौड़ने में३६पेच खेलते हैं ३७बांसों तक फांदकर३८लंगूरों (काले मुख के बन्दरों) को पीछे रखते हैं ३९ अत्यन्त ४० बल वा घमंड से ४१ पुष्ट ४२ इसप्रकार के ४३ समूह ४४ घमंडी ४५ मार्ग ॥ ५५ ॥

खुराँ नेउराँ[1]१पाखराँ[2]२नाँद खुल्लै, तिकाँ बाहरी[3] इंद्रै चाह तुल्लै ॥
जिसा अर्ब[4]१वै सोहणा पर्व[5]जाणै, तिसा जोह[6]२आरोहणाँ[7] मूँछ ताणै
लसै ओजं पूरै १ तिके फौज लाडाँ[10] २, गऊ ३ विप्र ४ भीडू दया ५ लाज ६गाडा ॥
वळी७दीनबंधू८धरै वंसबानाँ[11]९, अकूपार[12] गंभीर१० रोळै[13] धैरानाँ[14]११॥
दिपै[15] मेघ[16] राधेय[17] सर्वस्व दानी१२, महाकष्टभीमाँगवै भूप मानी१३॥
हुवाँ प्राणसंसै[18] नथी कूड़ हेरै१४; फैणीदीठ[19] पैलाँ[20] अणी[21] पीठ फेरै ॥
सदा एक १ राखी[22]व्रती[23] १५ धर्म[24]सेवी१६, खरा[25] जुद्ध सिंधू[26] जिजैनाव खेवी[27]१७ ॥
हठी जेन आगे१८न भागाँ प्रहारै१९, धराँ लंगराँ संगराँ[28] पाव धारै२०
अजोराँ[29] नराँ लेण आँटा[30] उधारा२१, सजोराँ हणै देण बाँटा सुधारा[31]२२
महा स्वामिधर्मी[32]२३ लियाँ हाथ माथा२४, गवै देसदेसाँ जिकाँ पाथ[33] गाथा[34]२५ ॥ ६० ॥
उराँ धारि बंदूक२६मोती उतारै, सराँ२७मारि जाता खगाँ गैणा[35] सारै

---

१ घोड़ों के चरण भूषण २ शब्द ३ उन घोड़ों पर सवारी करने की इंद्र को भी इच्छा होती है ४ घोड़े ५ समय अथवा युद्ध ६ जोध (वीर) ७ चढनेवाले ॥५६॥ ८ शोभायमान ९ पराक्रम के पूरे १० सेना के दूलह ११ वंश के चिन्ह को धारण करनेवाले १२ गम्भीरता के समुद्र १३ युद्ध में १४ निरंकुश ॥५७॥ १५ शोभा देते हैं १६ दातारी में १७ कर्ण के बड़े कष्ट में भीमसेन के समान अंगवाले १८ प्राणों का संदेह होने पर भी झूठ नहीं बोलते १९ सर्प के समान दृष्टिवाले २० शत्रुओं की २१ सेना की ॥ ५८ ॥ २२ एक स्त्री का २३ नियम रखनेवाले २४ धर्म की सेवा करनेवाले २५ सच्चा २६ युद्ध रूपी समुद्र में २७ चलानेवाले २८ युद्धों में पर्वतों रूपी लंगरों को धारण करनेवाले २९ निर्बल मनुष्यों का उधारा ३० वैर लेनेवाले और बलवानों को मारकर ३१ श्रेष्ठ (सुधार पूर्वक) पट दिलानेवाले ३२ स्वामी के कार्य का सुधार करनेवाले और मरने के लिये अपना आधा हाथ में रखनेवाले ३३ अर्जुन के समान ३४ कथा ॥ ६० ॥ ३५ आकाश में जातेहुए पक्षियों को वेधन करते हैं.

बळी तोमराँ२८ दावके चाव बाँधै, समग्राँ गुणाँ खग्गरा मग्ग-
साधै ॥ ६१ ॥
लगे लाह कासू ३० क्रिया बाह लीधाँ, कटारी ३१ छुरी २ साँकड़ै
सिंह कीधाँ ॥
महावीर पाड़ै पछाड़ै मइंदाँ ३३, गहै दंत रोकै मैंदाळाँ गइंदाँ ॥ ६२ ॥
सजे ओपैरा टोपँ१ सोभा सिवाळो, जिके भीड़ियाँ दंसैर२ नाँगोद ३
जाळी ४ ॥
सबाहुत्र५ऊरुत्र६जंघात्र७संगी, चहै बंसवील्हा रहै एक१रंगी ।६३।
लसै सक्रजोड़ै इसो चक्र लीधो, कहै थानसूँ भूप प्रस्थान कीधो ॥
जठै रोकियो पुत्र चोथो४जिकोभी, तजे प्राणआसाहुवो संग तोभी
अड़ाँ ले अठी हाँलियो साथ भाऊ१९५१,
पितारो बडो भक्त सीमा पुगाऊ ॥
क्रमे चंपबाड़ी कनै आदि१केरा,
दिया जैवती१८८१ ताळ१ भूपाळ डेरा ॥६५॥
उठै फोजरीहाजरी दीठि आताँ, बणाई किता सूचकाँ छधवाताँ ॥
जणाई जिकाँ बीठलो१२४११ सेर१६३१२ जायो,
अजे नाहथाँणाँ तणो नाँहिं आयो ॥६६॥
कथासोसुणी१नाँसुणीभूपकीधी, दुजिंदाँ१कविंदाँ२भड़ाँ३रीझदीधी

---

१ भालों के २ उत्साह ३ बधाते हैं अथवा बांधते हैं ४ सब गुणों से ५ खड्ग के मार्ग (पैंतरे) साधते हैं ॥ ६१ ॥ ६ लाभ ७ बर्छी के ८ चलाने की क्रिया को लियेहुए ९ सिंहों को १० मदवाले ११ हाथियों को ॥ ६२ ॥ १२ शोभावाले १३ शिरत्राण सजते हैं १४ अधिक १५ कवच १६ पेटी १७ पड़तला १८ दस्तानां १९ घुटनों का कवच २० जंघा का कवच २१ वंश का मार्ग चाहते हैं २२शोभायमान २३इन्द्र की बराबरी में २४ सेना २५ प्राण की आशा छोड़कर॥६३॥ २६चला २७चलकर २८स्थान का नाम है २९समीप ३०प्रथम के ॥६४॥ ३१वहां पर सेना की हाजरी ३२दृष्टि में आते ही ३३जानकारी करनेवालों ने ३४ छल की बातें ३५ थाणा ग्राम का पति ॥ ६५ ॥ ३६ श्रेष्ट ब्राह्मणों को ३७ श्रेष्ट कवियों को ३८ वीरों को ३९ दान दिया

किपो सिंह१८९।१कासार२ विश्राम बीजो३,
जठै ही हरीदास पूगो कवी जो ॥६७॥
मवीजो१ कवीजो२ अन्त्यानुप्रासः ॥

कनैं[2] भूपरै वैण[3] ऐहो[4] कहायो, अबै हूँ[5] खराबूठही होण आयो ॥
दियो खासहाथी१मिलै तास दानी, गजी[6]२साथ हालै सदा सो गुमानी
सुणी कीरती छाँकवाळै सवादी, बिनाँ नारि हालै नथी कील बादी
करी१ गैलं[10] तो एक दीधी करेणू[11]२, वळै डाँकदाराँ[12] सजे लंब बेणू[13]६९
गजा१ साथ गै[14]२ पाँत[15] डेरे पुगायो, इळानाम राकेस[16] जोड़ै उगायो
सतै१९४।१ कीध विश्राम तीजा२ सिहाणै३,
जठै रीझ बूठो[17] वळै इंद्र जाणै ॥ ७० ॥
अंजे[18] वास चोथो४ नदी मेझ४ भेड़ै[19], नराँनाह[20] यूँ नाँनणाँ द्रंग नेड़ै[21] ॥
क्रमे पंचमों५ वास नीबोद५कीधो, हळाँ[22] पाँत वंसी६छवो६जाइ दीधो
उठै थंभि[23] वीर२ दीहै[24] लाखां उँडाऊ[25],
हठाँ लौ भटां भेजियो द्रंग[26] भाऊ१९५।१ ॥
जिकी वात भाऊ१९५।१ वणी नीच जाणी,
पितारै[27] मतै नीठि[28] सोही प्रमाणी[29] ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

---

१ सिंह तलाव पर दूसरा मुकाम किया वहां पर संढायच शाखा का हरिदास नामक चारण पहुंचा जिसने शत्रुशाल की मान हानि करके शत्रुशाल के दिये हुए घोड़े की उदयपुर में दुर्दशा की थी ॥ ६७ ॥ २पास ३वचन ४ऐसा ५ गधे पर चढ़ने के लिये ही आया हूं ६ आगे हथनी होने पर चलनेवाला ॥ ६८ ॥ उस कीर्ति की ७ तृप्ति के ८ स्वाद लेनेवाले ने यह सुना कि ९ हठ से बंधा हुआ हाथी हथनी के साथ बिना नहीं चलता १० हाथी के साथ ११ हथनी १२ सांडमारों ने १३ लम्बे भाले सजकर ॥ ६९ ॥ १४ हाथी १५ पात्र (चारण) के डेरे पुगाया १६ पृथ्वी पर चन्द्रमा के बराबर उज्वल नाम किया १७ वर्षा की ॥ ७० ॥ १८ चौथा मुकाम किया १९ मेझ नदी के समीप २० नृपति २१ नाणा नगर के समीप २२ पड़ाव ॥ ७१ ॥ २३ ठहरा २४ दिन तक २५ उड़ानेवाला भाऊ को बुन्दी २६नगर में भेजा २७पिता की सलाह से २८कठिनाई से २९, प्रमाण करी ॥ ७२ ॥

वारण[1]१ हय२ भूखण३ वेसण[2]४, सतै११४।१ करे बखसीस ॥
भाऊ१९५।१ पाछो भेजियो, नीठिहठां अवनीस ॥ ७३ ॥
भाऊ१९५।१ साथे भेजिया, भड़ाँ अरथ भूपाळ ॥
साठि६० तुरग सिरूपाव सत१०० दीधा दस१० दंताळ[3] ।७४
भेजे इम अणियां भँवर, जेठी१ कँवर जनेस ॥
वँसी[4]द्दहूँ[5] चढियो बळे, धन चर्प[6] देण धनेस[7] ॥७५॥
भ्रमियो नहँ भारत१९५।४ कँवर, पाछो प्रसभ[8] प्रकास ॥
कहियो छोडे साथ किम, दुलभ पितारो दास ॥ ७६ ॥
बीठळ१९३।१ सो नायो बळे, थाणाँ पुर जिणथान ॥
सूची सो खळ[9] सूचकाँ, कीधी भूप न कान ॥ ७७ ॥
आप करे दरकूँच इम, मथुरा जाइ महीप ॥
पर्व माघ११ सित१ पूरणा१५, दान किया कुळदीप ॥ ७८ ॥
मुंडण१ न्हावण२ श्राद्ध३ मुख, साधे पूरव सूर ॥
बखसे धन कीधा बळे, दुजराँ[10] दुख दूर ॥ ७९ ॥
तारतुळा[11]१ हाटकतुळा[12]२, एक१ एक१ दै आप ॥
सुरभी[13] आठ समेत सत१०८, दीधी दीन दुराप[14] ॥ ८० ॥
कनक१ कोस सींगाँ१ सज, रजत[15]१ खुराँ२ अभिराम[16] ॥
इम गोगण[17] दीधो अधिप निर्यत[18] उचारण[19] नाम ॥ ८१ ॥
हुई कटकै[20] अग्र हाजरी, मथुरा नयरै[21] मुकाम ॥
सब कुसुंभ[22]१ केसर२ वसण, तुले बराती तांम[23] ॥ ८२ ॥

---

१ हाथी २ वस्त्र ॥ ७३ ॥ ३ हाथी ॥ ७४ ॥ ४ सेना के अग्रभाग का रक्षक ५ ग्राम का नाम है ६ धन का समूह देने में ७ कुबेर ॥ ७५ ॥ ८ हठ करके ॥७६॥ ९ दुष्ट ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ १० उत्तम ब्राह्मणों के ॥ ७९ ॥ ११ चांदी की तुला १२ स्वर्ण की तुला १३ गौए १४ दुर्लभ ॥ ८० ॥ सोने के सींग और १५ चांदी के खुर १६ सुन्दर १७ गौओं का समूह १८ निश्चय ही १९ अपना नाम बाकी रखने के लिये ॥ ८१ ॥ २० सेना की २१ नगर २२ कुसुंभा के रंग में २३ तहां ॥ ८२ ॥

कहियो नृप आपण सकळ, वीर बरातीवेस ॥
एक दुलह[1] बणियो अठै, सोहै पूरण सेस ॥ ८३ ॥
कथन हास साँचो करण, वीराँ दै जस बोल ॥
भूप भाट समुचित[2] भणो[3], दुलह बणायो दोल[4] ॥ ८४ ॥
बरसो दुलही[1] दिवबधू[2] मन जिण आणि मरोड़ ॥
वर[6] कंकण[7][1] वर बंधियो, माथै धरियो मोड़[8][2] ॥ ८५ ॥
हुकम दीध तिणनूँ हसे, हालण[9] आप हरोल[10] ॥
विणमाथै जूझण वळे, वंदी वदियो बोल ॥ ८६ ॥
मेचक[11] २ फागुण १२ पंचमी५, चढे अडर चहुवाण ॥
आयो पट्टण[12] आगरै, परदळ दट्टण[13] पाण[14] ॥ ८७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांनिदेशाद्दाराशिकोहपक्षवर्तितयौरंगजेबसमरार्थबुन्दीशशत्रुशल्यस्यबुन्दीनगरादकबरपुरगमनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितस्त्रयोविंशत्यधिकद्विशततमः ॥ २२३ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुपहु सना१९४११ आगम सुनत, हरखिय साहजिहान३९१२ ॥

---

१ पींद ॥ ८३ ॥ २ उचित ३ कहकर ४ दोला नामक भाट को ॥ ८४ ॥ ५ अप्सरा को दुलही करने का घमंड ६ उस दुलह ने ७ श्रेष्ठ कंकण डोरड़ा हाथ के बांधा ८ विवाह करने का मुकुट ॥ ८५ ॥ ९ चलने का १० अपने आगे ॥ ८६ ॥ ११ कृष्णपक्ष १२ पत्तन (नगर) १३ दवाने को १४ बल से ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां की आज्ञानुसार दाराशिकोह के पक्ष में होकर औरंगजेब से युद्ध करने के लिये बुंदी के राव शत्रुशाल का बुंदी से प्रयाण करके आगरे जाने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२३ मयूख हुए ॥

बूंदीपति बुल्ल्यो बिरंचि, दूजे २ दिन दीवान¹ ॥ १ ॥
मुगल६सता१९४।१जातहि मिल्यो, लेत नयन उर लाइ ॥
सुत१की वय२की सदन३की, दई सरम बिरुदाइ³ ॥ २ ॥
सप्तहजारी७००० मनसब१ रु, सह सिंधुर२ हय३ सत्र४ ॥
प्रीत दये दस१० परगनाँ५, बिबिध आभरन६ बस्त्र७ ॥ ३ ॥
गजपहाड़१ गज१ अरु अरब२, फतेजंग२ जवफीत ॥
पहु सुनिये दस१० परगनन, अभिधा समर अभीत ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तहँ आगर१सागर२छवड़ाँ३ तिम, इत सिरोंज४सारंगपुर५हु इम ॥
भेलसा६रु बालाभेटा७दिक, सत्त७दये निजसीम प्रसोंदिक ॥ ५ ॥
इत बाराँ१।८रु बरोद२।९आढ्यंतम, संगहि खैराबाद३।१०रीझ सम
जगतसिंह१९५।१कोटा बिलसैं जिन्ह, यह त्रय३दिय तासौं उतारि इन्ह
अनुजंनु त्रय ३ रु मुकुंद १९४।१ अवंतियँ, दपितँप्रान रन साहअ-
रथ दिय ॥
जगतसिंह१९५।१ ताके तनुज जँहँ, कोटापति भोगत तीन३ नकँहँ
ता सन लै रु सता१९४।१हिं दये त्रय३, भो इम साह ग्रस्यो संकटभय
पै मुकुंद१९४।१माधव१९३।२सेवोपर, सुमिरन आँनि तथाभित सत्वर
और त्रय३हि तैसे इहिं अप्पिय, थिर कोटाहु कृपाबिच थप्पिय ॥
त्रय३हि छिन्नि बाराँ१मुख तासौं, संभर पट्टलिखे सुखमासौं ॥ ९ ॥
पहु दस१०पाइ परगनाँ जंपित, अमलकरन पठयो निदेसइत ॥
भुजबल तँत्थ अमलकिय भाऊ१९५।१, यह उदंत कछु गिनहु अगाऊ
महिपहिं दै इम रीझ मुदित मन, जानि बहुरि सुत१भ्रात२भतीजन

१ सभा में बुलाया ॥ १ ॥ २ घर की ३ स्तुति करके ॥ २ ॥ ४ हाथी सहित ॥३॥ ५पहाड़गज नामक हाथी ६ घोड़ा ७ वेग का समूह ८ हे प्रभु ६ नाम ॥४॥ १० प्रसन्नता से ॥ ५ ॥ ११ अत्यन्त धनवान् ॥ ६ ॥ १२ छोटे भाई को १३ उज्जैन १४ प्यारे प्राण ॥ ७ ॥ १५ चाकरी पर १६ शीघ्र ॥ ८ ॥ १७आदि १८चहुवाण (शत्रुशाल) के पट्टे में १९ परम शोभा से ॥ ९ ॥ २० तहां २१ वृत्तान्त ॥ १० ॥

पूछि नाम१वप२इक्क१इक्क१प्रति, अप्पन लग्गो खिलत अर्घअंति११
अप्पिय प्रथम१ कुमर भगवंत१९५।३हिँ, इहिँ सु लयो न मन्नि नै-
यमंतहिँ ॥
पूछत कारन भूप पयंपिय, इहिँ ओरंग४०।३कुमर स्वामीकिय१२
तातैं दत्त रावरो लेत न, बैरी यह इतके संमवेतन ॥
मुगल६कहिय ओरंग४०।३हमारो, नृपसुत कहि तूही किम न्यारो
भूपहु साह सैनकरि भाखिय, लेहु खिलत प्रभुमत अभिलाखिय
तदपि खिलत न लयो भगवंत१९५।३।१सु, अक्खिय हम लैहैं इ-
तके अंसु ॥ १४ ॥
साहहु तब हसि कुमर सराह्यो, चिक्कन निप न लिपन जल चाह्यो
दूजो२ खिलत२ दयो सुख मोदित, हुलसि कुमर चोथे४भारत
१९५।४।२ हित ॥ १५ ॥
खल स्वामी किय साहसुजा खल, साह कुपित इमैं आनि भृकुटि
सल ॥
कहि दुस्सह हेलॅन मुहुकम१९४।५।३ कहँ, तीजो३ खिलत३रिसांइ
दयो तँहँ ॥ १६ ॥
याकोसुत जेठो१ जोरावर१९५।१।४, दयो खिलत४ चोथो ४ तिहिँ
सादर ॥
याको अनुज कथित छट्ठो६क्रम, सगतसिंह१९५।६।५ जगमोहन
१९५।७।६ सप्तम७ ॥ १७ ॥
पंचम५छट्ठ६खिलत तिन्ह पावत, इतदग बैरिसल्ल१९४।३सुत आवत
जेठो१ वह गोपाल१९५।१।७ बुल्लि जँहँ, ताहि खिलत७ सप्तम अ-
प्प्यो तँहँ ॥ १८ ॥

१ बहुत मूल्य के ॥ ११ ॥ २ नीतिमान् ३ राजा ने कहा ॥ १२ ॥ ४ दान ५ इधर के साथ [इनके] शत्रु हैं ६ हे राजपुत्र ॥ १३ ॥ ७ प्राण ॥ १४ ॥ ८ चिकने घड़े पर ॥१५॥ ९ शाहजहां के द्वितीय पुत्र का नाम है १० इसकारण ११ अपराध ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

इंद्रसल्ल१९४।२ सुत दुव२हग आये, वहिं१ रनछोर१९५।३।८ गुमान
१९५।८।९ बुलाये ॥
तीजो३अरु अष्टम८क्रममैं तिन, अष्टम नवम९खिलत८।९पाये इन१९
सुत दूजो२मधु१९५।२।१०राजसिंह१९४।४सन, × × × ॥
सता१९४।१अनुज छट्ठो६ अरु सप्तम७, उदय१९४।६।११ सूर१९४।
७।१२ आँह्वय२ वर बिक्रम ॥ २० ॥
एगारहम११ बारहम१२इनकौं, खिलत११।१२दये सँमुचित३ लखि
खिंनकौं४ ॥
महासिंह१९४।९।१३ नामि नवम९ नृपानुँज५, भट लिय खिलत१३
तेरहम१३ अतिभुँज६ ॥ २१ ॥
ताहीके तनयहु जेठे१।२।३त्रय, मान१९५।१।१४रु कनक १९५।२।१५
लाल१९५।३।१६ बिक्रँममय७ ॥
चहुद्दहम१४ पंद्रहम१५ खिलत१४।१५ चहि, सह सोलहम१६मिले
इन्ह३ संगहि ॥ २२ ॥
इक१भगवंत१९५।३।१न लिय तिनमैं अरु, सूचिय हम इतके सैल८१
नखरु२ ॥
तदँनु९ समीप बुलाइ सता१९४।१ तँहँ, कटि तस धरि निज खास
खग्गं१० कँहँ ॥ २३ ॥
नृपहिँ पास बैठानि ठानि नुँतें११, सो नृप१२अंक धरयो दारा४०।१ सुत
पँलित१पट्ट२सुत३सूचि अवधिपर,कहिय ओँन१४ तीन२न अब तो कर
पानी१ हग२ गद्गद१ स्वर२पावत, दिय भँर१५ साह नृपहिँ बिरुदावत

१ फिर ॥ १९ ॥ २ नाम ॥ २० ॥ ३ उचित ४ समय देखकर ५ राजा का छोटा भाई ६ महाबाहु ॥ २१ ॥ ७ पराक्रम सहित ॥२२॥ ८ इधर को रोकने के लिये पर्वत और मारने को निलह हैं, तथा नकार को निषेधार्थ में रक्खाजावे तो यह अर्थ भी हो सकता है कि हम इधर की भूमि को स्थिर रखनेवाले पर्वत नहीं हैं किन्तु नख (क्रूर) हैं ९ जिस पीछे १० खड्ग ॥२३॥ ११ स्तुति १२ राजा की गोद में अपने पुत्र दाराशाह को रक्खा १३ अपने श्वेत केश १४ रखा ॥२४॥ १५ भार

उर लगाइ दारा४०।१नृप अक्खिय, रघुबर जो धर१पर सिर२रक्खिय
तो गहिय अप्प१हि रहिहो तिम, प्रभु१पीछैं एसहि दारा४०।१।२इम
हडु६१नपति यहकहि ठड्ढोहुव, दु पयनं धरत कनक शृंखल दुव२
पिक्खि सु कुम्भकुमर नर्म पचिय, रायसिंह१ कीरतिसिंह२ रचिय
कहिय सता१९४नृप जरठ कहावहु, पय लंगरधरि किम छविपावहु
अक्खिय अप्प रुँप्यो रन रहनों, गिनहु लज्जलंगर१ नहि गहनों॥
अति भर कष्ट तदपि जो आवहिं, आडअवलि इनमैं उरझावहिं २८
इनहिं घसोटि भजै तब अॅप्पहु, थिररहि हास्य जथामति थप्पहु ॥
कूरमनृप जयसिंहके कुमर, तहँ यहसुनि चुप भये न्हीनितर ।२९।
सिक्ख भई बलिसब भट सप्पर्न, अनिय साह सुभविधि बिनु लप्पन
तब सहाय बुंदीपति तोंवहु, अप्प सिबिरं दारा४०।१लैजावहु॥३०॥
सता१९४।१कहिय दारा४०।१प्रभुपासहिं, वहु बिलसहु सुख भोग-
विलासहिं ॥

हम अवरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।२ हटावहिं, उप्पदा१विजय२ नि-
वेदन आवहिं ॥ ३१ ॥

साह कहिय पुव्वहि बरज्यो सुत, यह गो तउ भज्जन चंत्रंति उत
इहिं बरजत हम अबहु रहन इत, मानत सो न मूढ बय मदमित ॥
यातैं नृप तवसंग पठावत, याहि सरन याहि न भय आवत ॥
तू नृप१अरु कासिम२जाफर३निम, अरु साइस्तेखान४चउम४ इम
च्यारि४न सरन करत सुत मैं चहि, बिधि कछु याहि बचावहु हित वहि

॥ २५ ॥ १ खड़ा हुआ २ दोनों पैरों में ३ स्वर्ण के ४ लंगर पहने था ॥ २६ ॥ ५ जैपुर के कछवाहे के कुंवर ने हंसी की ६ युद्ध ॥२७॥ ७ शत्रुशाल ने कहा कि युद्ध में खड़ा रहना है इसकारण ये ८ लज्जा के लंगर हैं भूषण नहीं हैं ९ बुन्दी का आडावला नामक पर्वत इन में उलझैगा १० खैंचकर ११ आप भी १२ खड़े रहकर १३ बहुत लज्जित होकर ॥ २८ ॥ १४ नामर्दों को १५ तहां १६ डेरे में ॥ ३० ॥ १७ रूठ ॥ ३१ ॥ १८ पहिले ही १९ उज्जैन ॥ ३२ । ३३ ॥ २० हित करके

भूपकहिय तउ सिविर न भेजहु, प्रस्थित होहिँ हमहिँ लै यह पहु ॥
पै इक अरज सुनहु दिल्लीपति, अज्जलोक[1] हम जिते नम्र अति ३४
साधत हुकम रावरो सबबिधि, निजधर्महिँ रक्खन रंक कि निधि[2] ॥
हम निजधर्म भंगकरि हजरत, होत मृतक जियतहि स्वदिष्ट[3] हत
प्रभु हम धर्म भंग जनि पारहु, पुनि सब जितातित मरन प्रचारहु॥
हम सिर १ घर २ निज देत धर्महित, याहि रक्खि धन गिनत
अपरिमित ॥ ३६ ॥
पै सुतको प्रभुके[6] प्रपितामह३।१।२, गढ आमैर व्याह कियश्साग्रह[7]
बलि प्रभु पिता३।८।१ जोधपुर व्याहे२, ए दुबरविघ्न मुख्य अवगाहे ॥
इन२करि धर्म चतुर्थ४हु अंस न, विद्यमान अब बाहुज२बंस[8] न ॥
सुनहु पुव्व स्वामी अकबर ३।७।१ सन, सत्त ७ करार लहे नृपसु-
जंन १९०।१ ॥ ३८ ॥
दुर्ग तबहि रनथंभनाम दिय, कौलहु[9] निथत लेख[10] दल ए किय ॥
न[11] कैनी दैन१जान नोरोजन२, संसहि[12] गमन इक्क१आयुध मन३ ।३९।
कवहु करैं न अटक[13] उलंघन४, साहि दाग न धरैं हय संघन[14]५ ॥
वंब मुख्यतोरन लग बज्जैं[15]६, अंज्ज अनुगह्वै संग न सज्जैं७ ॥४०॥
लंघन१ संघन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अटक पार न गमन४यह इनमैं, खल पन मिलतजात उत खिनमैं
पुव्वहु सुर्जन ३।८।१लगे पठावन, रतन१९।२।१ भूप न गये रहँरावन[16]
कारि बैल सज मरन स्वीकृतकिय, अटक गमन४तन१ मनं२ कारि,
उज्झिय[18] ॥

---

१ आर्यलोक ॥ ३४ ॥ २ धन ३ अपने भाग्य से हीन ॥ ३५ ॥ ४ भजा ५ प्रमाण रहित ॥ ३६ ॥ ६ आप के प्रपितामह ने ७ आग्रह सहित ॥ ३७ ॥ ८ क्षत्रियों के वंश में ॥ ३८ ॥ ९ निश्चय १० लिखावट के पत्र में ११ कन्या १२ सभा में ॥ ३९ ॥ १३ अटक नदी १४ घोड़ों के समूह में पादशाही दाग नहीं लगावेंगे १५ मुख्य द्वार तक नगारा बजेगा १५ आर्य राजा के सेवक होकर साथ नहीं जावेंगे ॥ ४० ॥ १६ रावण के समान हठ करनेवाला ॥ ४१ ॥ १७ सेना १८ छोडा ॥ ४२ ॥

प्रभु अप्पहु जब तत्थ पधारे, नृप हम सबहि रहे रुकि न्यारे॥४२॥
मम काका संगहि गय माधव१।३।२, धी हित गिनि तुम कियउ धराधव ॥
हुते कहा न और दैबेहित, बूंदिय देस दयो बसुवर्धित ॥४३॥
बूंदीमाँहिं मऊ१ तिम बाराँ२।१, लखहु प्रान२ बूंदी१ बपुर२ लाराँ॥
सोहि प्रान तुम कहि समप्पिय, स्वास रहित बूंदी प्रभुअप्पिय ४४
हमरी१ भुव विधिवस तुमरी२ हुव,धरयो हमहु आश्रय प्रभुको ध्रुव
धर्म रह्यो गिनि भूदुखरन धरयो, सब अज्जन प्रभुहुकम अनुसरयो
अटकहिं लंघत रुक अज्ज इम,तह माधव९१३।२पायउ प्रसाद तिम
यह न गिनी धर्महि जिहिं उज्झयो, साधन जाहि लोभ इक सुज्झयो
अरि मम कोहु सबल जब ऐहैं, लव तब पलटत यह न लगैहैं ॥
इम न इकिख काका आर्व्यकरयो, बुंदियं प्रान जु देस सु बितरयो
देते अप्प और बहु देसहि, बनाले सु हमतैं सु बिसेसहि ॥
तो हि उचित न,परंतु अप्प तब, सो मम जीवन देस दयो सब ४८
को तँहँ मंतु अटकबिनु कहिय, बलि अब दैन हेतु का बँहिय ॥
आयउ करन जनक सुनि आतुर, तिम ओरहु हुव चलान त्वरातुर
आतुर१ रातुर२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रोकि सबन मैं तब तत्थ रह्यो, चित्त उदय हजरतकोहि चह्यो ॥
आये आप संग तब आये, समुचित दण्डहु सबन पुनि पाये ॥५०॥
तबहु मऊ१ बाराँ२ न दईतुम, सेवक भयो बिदल जातीसुम ॥
दिय अब प्रभु किहिंकारन ह्वैरही, बितरन बिनहु हुकम सिरठैही

१ बुद्धि में २ भूपति ॥ ४३ ॥ ३ बुंदी रूपी शरीर के साथ ॥ ४४ ॥ ४ निश्चय ५ आर्य लोगों ने ॥ ४५ ॥ ६ प्रसन्नता ७ छोड़ा ॥ ४६ ॥ ८ क्षण ९ धनवान् किया १० बुन्दी के प्राण रूपी ११ दिया ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १२ अपराध १३ कौन कारण कहा १४ बीकानेर के कुमार कर्णसिंह १५ पिता को १६ व्याकुल सुनकर १७ शीघ्रता में आतुर ॥ ४९ ॥ १८ दंड ॥ ५० ॥ १९ बिना पत्तों का चमेली का पुष्प २० बिना दिये ही हुकम होवे सो मस्तक पर है ॥ ५१ ॥

निबह्यो पन तब अटक न लंघन, प्रानहु दैन करत अब हम पन ॥
*अज्जन धर्म रक्खि प्रभु ऐसैं, पठवहु मरन काल रन पैसैं ॥५२॥
ठहै हम धर्महानि जिहिं हेतू[1], सुहि निवारि बंधहु बिच सेतू[2] ॥
कोटिन अरज अरज यह इक्क१ हि, मित रक्खहु धन१ धाम२ चमू३ सहि४ ॥ ५३ ॥

धर्महि इक्क१ निबाहि अखेधन, सब जयकाम लेहु प्रभु हमसन ॥
करैं बिजय प्रभुको दुस्सह कलि, बढन आस प्रभुसौंहि चहैं बलि
मृधं[6] लोदिन पहिलो१ जय१ मंडिय, खानजिहान पुत्र चउ४ खंडिय ॥
भय बिह्वस्त[7] लोदी सु भजायो२, जिम कोलागढ अमल जमायो ॥
हुव तहँ रीझ लूट के गज१ हय२, मन्नि तदपि मम अरज न्यायमय
काका हरि १९३।३ गुग्गेर अधिप किय, हम सोही सब रीझ गिनी हिय ॥ ५६ ॥

दुर्ग दोलताबाद१ प्रमुख दलि, करि अधीन जीत्यो दूजी२ कलि ॥
सो जय मिल्यो रावरे संगहि, उहाँ रही भुव मिलन उमंगहि ॥५७॥
सिवप्रसाद१ मुंख कथित समप्पिय, अवनी लेसहु तबहु न अप्पिय
दक्खिन२।३ कुमर साह[11] पदवायो, प्रभुसासन तीजो३ जय पायो ॥५८॥
महि लै लक्खपंचहत्तरि ७५००००० मित, किय ओरंग४०।३ तंत्रै[12] जस अंकित ॥

ओरहि तबहु परगनाँ अष्टक८, पायो तउन मिल्यो निज नैष्टक[13] ॥
पै हम धर्म हानि जब न परी, क्रम बलिबाढि सेवाहि तब करी ॥
लखिधर्महि इक१ अटक न लंघिय, सब तँहँ परे ह्वे प्रभु संघियै[14] ॥
बिक्खिँ[15] धर्म दृढ तब न बिसासे, तुम प्रत्युत[16] दंडि रु सब त्रासे ॥

---

* आर्यों का ॥ ५२ ॥ १ कारण २ मर्यादा ३ न्यून ॥ ५३ ॥ ४ युद्ध में ५ फिर. ॥ ५४ ॥ ६ लोदा यवनों से प्रथम युद्ध में ७ भय से व्याकुल ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ८ आदि ९ युद्ध ॥ ५७ ॥ १० आदि ११ बादशाह के ॥ ५८ ॥ १२ आधीन १३ अपना नाश हुआ परगना नहीं मिला १४ साथ में ॥ ६० ॥ १५ देखकर १६ उलटे

देसहि मम काकाहिँ दिवायो, प्रभु प्रसाद[1] सो मैं ममपायो ॥ ६१ ॥
ढिग गो बधन१सुरालय[2] ढाहन२, बूंदिय दिल्लिय अवधि निबाहन३॥
बिनुसिक्खहि पाउस गेह बसन ४, पाये कुमर भोज १९।१।२ इ-
ति मुख पन ॥ ६२ ॥
प्रभु जो लिखित निदेसहु पलटैं१, हद जो न गिनि समुद्रहु नहटैं२॥
नभ[3]बिच अधर मही जो न रहैं३, बट्ट[4]संतत रवि१ससि२जो न बहैं ४॥
बिधि[5]प्रपंच तो अखिल बिनासैं, पन निजनिज सब जो न प्रकासैं
अबतैं धर्म निबाहहु अँज्जन[6], सज्जन[7] समर खरे हम सज्जन[8]।६४।
मृधं[9] गंजैं ओरंग४०।३।१मुराद४०।४।१हिं, बँहैं[10] संजव सत्रु छलबादहिं।
इहिं संकल्प देव अनुसरिहैं, कै जय१कै उपदा सिर[11]२ करिहैं।६५।
जोलों हम धर१ सिर[12] सिर[13]२ जानहु, तोलों सतनय[14] प्रमद[15] प्रमानहु॥
यह करि अरज सिबिर नृप आयो, संगर उचित वरूथ[16] सजायो।६६।

॥ दोहा ॥

साहपास प्रासादही[17], रक्खि कुमर दारा४०।१ सु ॥
भूप चढत मिलिहैं भनि रु, आयो स्व सिबिर आसु[18] ॥ ६७ ॥

रासु१ आसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

सेर१९।१।२ तनय बिठ्ठल१९।३।१ सुभट, आयो तामैं[19] न एह ॥
किय निंदा तस सूचकन, नृप न सुनिय करि नेह ॥६८॥
तंदनु[20] प्रात करि सिक्ख तँहँ, भूप कुमर भगवंत१९।५।३ ॥
स्वामी निज ओरंग४०।३सन, मिल्यो जाइ मृधमंत[21] ॥६९॥
अरु चोथो४ सुत भूप इत, समुझायो सबिसेस ॥
तब बय अवहि न रन तल्प[22], सयन उचित अतिसेस ॥७०॥

---

१ प्रसन्नता ॥ ६१ ॥ २ मंदिरों को गिराना ॥ ६२ ॥ ३ आकाश में ४ मार्ग में निरन्तर ॥ ६३ ॥ ५ ब्रह्मा की रचना (सब लोक) ६ आर्यों को ७ युद्ध के प्यारे ८ हम मित्र होकर खड़े हैं ॥ ६४ ॥ ९ युद्ध में १० शीघ्र ११ मस्तक भेट करेंगे ॥६५॥ १२ शरीर के ऊपर १३ मस्तक १४ पुत्र सहित १५ हर्ष १६ सेना ॥ ६६ ॥ १७ महलों में ही १८ शीघ्र ॥ ६७ ॥ १९ तहां ॥ ६८ ॥ २० जिस पीछे २१ युद्ध के विचार से ॥ ६९ ॥ २२ युद्ध शय्या सोने की ॥ ७० ॥

विसेस१ तिसेस२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

करनजोरि भारत१९५१४ कुमर, बिन्नति किय प्रति*बप्प ॥
भारतसिंह१९५१४ भिमाऽभिधा, अप्पी क्यौं प्रभु अप्प ॥७१॥
मम यहनाम लजाइ मैं, भज्जि दुरौं किम भोन ॥
जुद्ध जनक[1] अग्गैं जुरौं, पय१ पब्बय२ कर पोन२[2] ॥७२॥
आलय भेजन[3] प्रसभ अति, जदपि सता१९४११ किय जाहि ॥
करि साहस चोथे४कुमर, तदपि नमन्निय ताहि ॥ ७३ ॥
क्रय१ विक्रय२[4] स्वीकारकरि, प्रानन के व्यापार ॥
वनिक तुला आरुहि सवय[5], किय बहु सज्ज कुमार ॥७४॥
धार१[6] अनीर२[7] लग्गी धुपन, लोहन सानन[8] लेहि ॥
पटु[9] बारन रन पाहुनैं, दीसन लग्गे देह ॥ ७५ ॥
मुच्छैं१ भौंह२नसौं मिलन, जिमजिम सूरन जाइ ॥
इत अति संम्मद[10] अंच्छरिन, उत तिमतिम अधिकाइ ॥ ७६ ॥
अंज्ज[11]१ जवन२ दल हुव अतुल, आकारितें[12] एक१त्र ॥
उब्बट२ वह पाउस उदक[13], तुला[14] न पावत तत्र ॥ ७७ ॥
नर१ वाहन२ आयुध निकर[15], जिततित पिक्खजात ॥
जिन्ह संचय अति दर्प[16] जगि, मनमन जपहि जनात ॥७८॥
भवतैं[17] मुरि अंज[18]१ विष्णु१ भव३, स्वर्ग४ बिभव लिय[19] साहि ॥
दैन परा[20]भव१ दुर्जनन, संभव२ लेत समाहि ॥ ७९ ॥
दान१पठन२जप३मह[21]४दिपत, हवन[22]५सउचद्धतियन्न[23]ान७ ॥

*पिता प्रति मेरा नाम ॥७१॥ १ पिता के आगे २ पैरों को पर्वत और हाथों को पवन रूपी करके ॥७२॥ ३ घर भेजने का हठ ॥७३॥ ४ लेना देना ५ अपनी समान अवस्थावालों को ॥ ७४ ॥ ६ तलवारों की धारा ७ भाले आदि की अणियें उज्वल होनेलगीं ८ सांण चाटने लगा ९ चतुर वीरों को ॥ ७५ ॥ १० हर्ष ॥ ७६ ॥ ११ आर्य १२ बुलाये हुए १३ वर्षा ऋतु का जल १४ बराबरी नहीं पाता ॥ ७७ ॥ १५ समूह १६ घमंड ॥ ७८ ॥ १७ संसार से मुड़कर १८ ब्रह्मलोक १९ कैलास २० पराजय ॥ ७९ ॥ २१ उत्सव २२ होम २३ स्त्रियों का त्याग (ब्रह्मचारी)

पृतना[1] अज्जनँ[2] सुभट प्रति, बरतत सरिस विधान ॥ ८० ॥
संध्या अय[3] गंगा सलिल, आप्लव पूत[4] अधीस ॥
इष्ट६१उपासैं इष्ट हरि, स्वकुल धर्म धरिसीस ॥ ८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्राच्छत्रुशल्यदशग्रान्तप्राप्तपुत्रबान्धवादिपारितोषिकासादनं १, बारांमऊग्रान्तानधिगमहेतुधर्मोद्देशमुख्यताप्रतिपादनपुरःसरानेकोदाहरणपूर्वकशत्रुशल्ययवनेन्द्रनिवेदनं २, यवनेन्द्रान्तिकदाराशिकोहरक्षकशत्रुशल्यरणसज्जीभवनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥

आदितश्चतुर्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुभट१संख्य२वाहन३सिलह४, बाँनाँ नरन बटाइ ॥
रोकि इतर गोचर[5]रहे, असह आगरा आइ ॥ १ ॥
जवन१न चलन कुरान२जिम, अज्ज१न श्रुति२ अनुसार ॥
क्रम चिंतन१अर्चन२कलित[9], होत उचित व्यवहार ॥ २ ॥

---

१ सेना २ आर्यों की ॥ ८० ॥ ३ स्नान ४ पवित्र ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बुंदी के राव शत्रुशाल का बादशाह की ओर से दश परगने और पुत्र बान्धवादिकों को खिलत मिलना १ बारां और मऊ का परगना पीछा नहीं मिलने के कारण धर्म को मुख्य बनाकर बादशाह से शत्रुशाल का अनेक उदाहरणों सहित निवेदन करना २ दाराशिकोह को बादशाह के समीप रखकर शत्रुशाल का युद्ध के अर्थ सन्नद्ध होने का बारहवां मयूख समाप्त हुआ आदि से २२४ मयूख हुए ॥

५ युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह ६ ... लने कुरान के अनुसार और आर्यों का चलन ... म पूर्वक चिंतवन और ८ पूजन ९ विदित होते ... रूपक से सेना का वर्णन करते हैं ॥

*पाउस घन घनपन१ प्रतिसं, पुहवी †दलन प्रपात२ ॥
कढि लहरु१ कि प्रसार कौं, जनता२ जिनतैं जात ॥ ३ ॥
इंद्रायुध१ केतन२ उदित, चपला१ असिवैर२ चंड ॥
गति खद्योत१ फुलिंगरगन, बक१ बारन द्विज दंड२ ॥ ४ ॥
गज्जन१ बज्जन२ भेरिगन, फुज्जहु१ तोपनफैर२ ॥
चातक१ घंटार चीरिका१, सिंजित२ दिखवत सैर ॥ ५ ॥
अज्ज१ जवन२ इम आगरा, आये सब आहूत ॥
भूप बिसालातैं भजे, दुरि घर न लखैं दूत ॥ ६ ॥
जथा जोधपुर१ आदिजे, आये ह्रीतैं न अत्थ ॥
रायसिंह२ संसय रहत, सुनहु स्व निश्चय सत्थ ॥ ७ ॥

पादाकुलकम् ॥

इक्खे साह सुभट सब आये, पैं क्वति तदपि न हाजरि पाये ॥
गेह अवंति जुद्ध तजि जे गय, रिसकरि बुल्ले तेहु बडे रय ॥ ८ ॥
त्रपा१ बिदुर२ सब तजि भय आतुर, पत्तो भजि जसवंत१ जोधपुर
तनया कर्मवती १९५।१ जु सता १९४।१ की, एह हुती रानी तँहँ याकी ॥ ९ ॥
बासंक हो ताको तिहिं बासर, बिस्यो तसहि प्रासाद धरावर ॥
इहिं रानी प्रति सुनि भजि आयो, रटत महानस लोह रुकायो ॥१०॥

* वर्षा काल के अत्यन्त मेघ के † समान पृथ्वी पर ‡ सेना का पड़ाव हुआ १ मनुष्यों के समूह का उत्पन्न होना ही जहां मेघ की लहरों का फैलाव हुआ ॥ ३ ॥ २ ध्वजाओं का उदित होना ही इन्द्र धनुष ३ भयंकर खड्ग ही बिद्युत ५ अग्निकण ४ जुगनू, और हाथियों के ६ दांत जहां बगुले हुए ॥४॥ ७नोबतों के समूह का बजना ही मेघ की गर्जना, और तोपों के फैर ही ८ बिजुली की कड़क, हाथियों के वीर घंट ही चातक और १० भूषणों के शब्द ही जहां ९ झिल्लियों की ११ शोभा दिखाते हैं ॥५॥ इसप्रकार आर्य और यवन १२बुलाये हुए आगरा में आये १३ उज्जैन से भगेहुए राजा घरोंमें छिपगये जिनको दूतों ने नहीं देखा ॥ ६ ॥ १४ लज्जित ॥ ७ ॥ १५ तौ भी १६ उज्जैन का १७ वेग से ॥ ८ ॥ १८ लज्जा १९ भय से व्याकुल ॥ ९ ॥ २० बारा २१ उस दिन २२ प्रवेश किया २३ भूपति ने २४ रसोई में लोहे का भजना बंद करवा दिया ॥ १० ॥

आलय सखि दुराइ दूरर अरे[१], इभरद[२] बलय[३] ढंकि पटअंतर ॥
छोनी[४] वह पगमंडन छाई, अप्प व्यंजन[५] गहि सम्मुह आई ॥११॥
दासिन बंदिय बधाई बंटन, खिनं तिहिं टारि बाजनैं भूखन[६] ॥
बलि लैजाइ तल्प बैठारयो[६], पयदब्बन लागि[७] हरख प्रसारयो[८]
अधिप न समुझि व्यंग्यजुत[७] इनकौं, चविय[८] ढकहु क्यों कर चूरिनकौं ॥
वदिय[९] प्रकट गजरद[१०] बलयावलि, विघनकरैं प्रभु रहन इहाँ[११]बलि॥
वरज्यो हमहिं महानस[१२] बज्जत[१], सिंजित[१३] के न भूखनहु सज्जत[२] ॥
स्वामि लखन चिरंकारि[१४] हुव संभव, लहु[१५] तामैं जिन होइ विघन लव।
यह समुझि रु मैं रातिकरी यह, सुनि सु कवंध[१] सिटायो छवि[२] सह ॥
वहुरि साह जसवंत बुलायो, इहिं आगस[१६] सो व्हीत[१७] न आयो ॥१५॥
रायसिंह[१] भजि तिम टोडा रहि, दुर्धर भीम जनक[१८] जस सुत दहि॥
अंदर पेठि न बाहिर आयउ, तस त्रास नारि उदार तनायउ ॥१६॥
सुपै न तव दिल्ली जाइ सक्यो, तजि बाहिर[१] अंतर[२] रहन तक्यो ॥
गदत[१९] किते भजि गो भय सायंह, अमरसिंहसुत[२०] रायसिंह[२]यह।१७।
नृप जसवंत भतीज सिहागहु, धी[२१] नागोर[२२]पुराधिप धारहु ॥
सूचत किते अवंती रनसेन[२३], भज्यो सु बीकानेर भूमिधन[२४] ॥१८॥

---

१ शीघ्र २ हाथी दांत का ३ चूड़ा कपड़े से ढका ४ भूमि को ५ पंखा लेकर ॥ ११ ॥ ६ शय्या पर बिठाया ॥ १२ ॥ ७ इस व्यंग्य में राजा यशवंतसिंह नहीं समझा ८ कहा कि चूड़ियों को क्यों ढकती है ९ राणी ने प्रसिद्ध कहा १० हाथी दांत का चूड़ा ११ बलवान् है सो फिर आपके यहां रहने में विघ्न करेगा ॥ १३ ॥ १२ रसोवड़े में १३ बजनेवाले भूषण भी नहीं पहने १४ बहुत समय से आपका देखना हुआ है १५ शीघ्र ॥ १४ ॥ १६ इस अपराध से १७ लज्जित होकर नहीं आया ॥ १५ ॥ १८ पिता भीमसिंह के यश को जलाकर ॥ १६ ॥ १९ कितने ही कहते हैं २० यह रायसिंह अमरसिंह का पुत्र था ॥ १७ ॥ २१ बुद्धि में २२ नागोरपुर का अधिप २३ उज्जैन के युद्ध से २४ राजा ॥ १८ ॥

पै वह रायसिंह ३ अति*पुव्वहि, अकबर३७।१ समय हो पवन१।न्हीं२ अहि ॥
जहाँगीर३८।१ लग संभव जाको, तबको सुनहु उदंतहु ताको१९
यह प्रेवया परन्यो भटियानी, जो बय१ रूप२ अतुल जगजानी ॥
यह नोरोज स्व तोरन आई, मुगलहृनयन१ उर२ लखत न माई २०
दृगदृगमिलत मिले मन दोहुरन, कतिदिन कढ्यो बिरह खिन कोहु न ॥
रायसिंह ३ सुहु जानि सहिरह्यो, यह१ गाहि२ बैभव३ देस४ लहिरह्यो ॥ २१ ॥
हुव दिल्ली चिरं३ बास हवेलिय, जत्थहु जाइ साह किय केलिय ॥
कैद मुहुम्मद तकी१ खुरम३६।२।२ किय, जिहिं कहुँ साह बिजनं लहि जंपियं ॥२२॥
अहो रैन१९२।१ नृप मम आलोचित, रायसिंह३ भीरुकर्पन रोचत॥
ह्वै हमसंगम कबहु हवेलिय, करन तास रानी संन केलिय ।२३।
इम असगोत्र१ सजातीय२हि तब, सजहु नर्म कहि असह मर्म सब ॥
आसि १ फर२ ताहि रैन१९२।१ तुम अप्पहु, थाहनं मोहि हनन मति थप्पहु ॥ २४ ॥
तुमरे नर्म लजि रिस तानैं, असि१ फर२ गहि सुछहु कर आनैं॥
पुरुखारथ १ तो ताग प्रमानैं, जो नहि तो बं असत्वं२हि जानैं ।२५।

---

* बहुत पहिले । पवन रूपी लज्जा को खानेवाला सर्प "सर्प का नाम पवनाशन है" इसकारण पवन रूपी लज्जा को खानेवाला कहा सो इस निर्लज्जता का कारण आगे बताते हैं ॥ १९ ॥ १वृद्ध अवस्था में २आपने (बादशाह के) हार पर ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ बहुत समय तक ४ क्रीडा ५ एकान्त में ६कहा॥२२॥ ७ मेरे विचार से ८ कायरपन ॥ २३ ॥ ९ एक ज्ञातिवाले १० हँसी. हे रत्नसिंह ११ ढाल तलवार देकर उसके मन का१२थाह लेने के लिये मेरे मारने की मति स्थापन करो ॥ २४ ॥१३ अब १४ बलहीन ॥ २५ ॥

जुवती भोगसक्ति१ है जामैं, सो नर जार२ सहै न सभामैं ॥
सद्धि रहस्य साह१ नरनाँह२मु, रचि नोरोज मुगल६ किय राहमु
मस्जिद लग गो जात१ तियनमैं, मञ्जिय आत२ कही सु कियनमैं
यह तब भेजि हुरमजन अग्गहि, मुग्यो भटन संगत तस मग्गहि॥
प्रबिसि हवेली तजि ठाँ प्रबहन, नालि चढि सु सहसा न्हीं नबहन
रायसिंह३ दंपति२ जँहँ राजत, ताहि महल गो साह मदन तत२८
लखि तजि तल्प सलाम करि लज्यो, भेट तिय सु करि नृप नि-
कसि भज्यो ॥
हुतो प्रकोष्ठ प्राहरिक रैन१९२।१हि, बुल्ल्यो सो असहन कटु वैनहि
मम असि लै रु मुरारि बीर बनहु, हम१ तुम२माँहिं जाहु साह हनहु।
नृप असि रायसिंह३ जब न लयो, भरि स्वर तार साह कहतभयो
प्रसभ राव गजा किम पावत, यह काहूकी दई न आवत ॥
अखिलन मन्नि रत्न१९२।१ अपराधी, बचैं अब न जान्यों प्रभुबाधी
सु किय परंतु साहके सम्मंत, गंदी कछु न इम साह मर्म गत ॥
रायसिंह२ नृप१की यह रानिय१, याकी बहिनि२ देवरहु आनिय ॥
पृथ्वीराज२अनुज निज पति२को, सो व्यांह्यो इहिं धर्म सुमतिको
ही स्वसाँ२।१सु देरानी२इम हुव, दिष्ट तंत्र इक१घर आई दुव२ ।३३।
कबहु कहिय जेठी १ अनुजाँ २ कँहँ, जुग२हि करैं इक१ थाल
असँन जँहँ ॥
अनुजा२कहिय छुयो तव अंभहि, छत्र२कुलीन पिवै सु अछँभहि३४

१ स्त्री के भोगने की शक्ति २ सलाहै ३ बुन्दी का राव रत्नसिंह ॥ २६ ॥ ४ जाते समय ५ साथ ॥ २७ ॥ ६ नरयान (तामजाम) ७ लज्जा ८ स्त्री पुरुष ६ कामदेव के कारण ॥ २८ ॥ १० शय्या ११ द्वार पर १२ रत्नसिंह पहरायत था ॥ २९ ॥ १३ उच्च स्वर से ॥३०॥ १४ हठ १५ सब ने १६ स्वामी को मारनेवाला ॥ ३१ ॥ १७बादशाह की सलाह से १८ इस कारण बादशाह ने कुछ नहीं कहा ॥३२॥ १९ छोटा भाई २० बहिन २१ भाग्य के वश होकर ॥३३॥ २२ बड़ी बहिन ने २३छोटी बहिन से कहा २४भोजन २५तेरा स्पर्श किया हुआ जल भी ॥३४॥

अनख[1] सु सुनि जेठी१ उर आई, साहहिं इम वनि पिसुन[2] सुनाई ॥
मोमैं रूप कहा प्रभु मानहु, जानि[3] अनुज२ देवर घर जानहु ।३५।
तिलहु रूप मोमैं नहिं ताको, वह किन इक्खहु पुंज प्रभाको[4] ॥
अर्‌यो[5] मुगल ६ जब ताहि बुलावन, पिथल २।१ हो हरिभक्त सु
पावन ॥ ३६ ॥

इहिं संकट जिहिं[6] उमा उपासिय, कच्छ[7] वासिनी पच्छ[8] प्रकासिय
स्वप्न कहिय मैं १ ह्वै तव तिय २ सम, दलिहौं दर्प मिच्छको
दै दम[9] ॥ ३७ ॥

पै मम जान[10] न पिहितैं[11] पठावहु, तव तिय अतुल लखैं जग तावहु[12] ।
तिम नृजान भेज्यो पिथल तह, सब पुर भनिय अतुल छवि साग्रह
मर्दित जाय करयो मुगलेश सहिं, लज्ज्यो तव तजि नरपन[13] लेसहिं।
अरु किय नियम कुसुम[14] १ तिय २ तू १ अलि २, बीकानेरतैं न
मंगहु वलि[16] ॥ ३९ ॥

बिमति रह्यो किन ब्यूढ[17] १ बुलैबो, पै अवतैं डोला२ हु नपैबो ॥
साह दियउ लिपि[18] दल सुहि स्वीकरि[19], टारयो बीकानेर गयो टरि ।४०।
कतिक कहत जेठी१ यह कन्या, रायसिंह३।१ न बरी धव[20] धन्या
सो १ गिनि हुरम बरी जवनेस१ हि, अनुजा २ तस पिथल २ बरि
एसहि ॥ ४१ ॥

आनी बहुरि गई पिउहर ए२, असन[21] निमित्त मुगि हठपर ए२ ॥
जेठी१ जाइ साहप्रति सूचिय, तव बलकरि छुल्ली अनुजा[22] तिय ४२

१ क्रोध २ चुगल खोर होकर ३ छोटी बहिन ॥ ३५ ॥ ४ कांति का समूह ५ हठ किया ॥३६॥ ६ देवी की उपासना की ७ कच्छ देश में निवास करनेवाली राजबाई नामक चारण कुल की देवी ने ८ पक्ष ९ दंड ॥ ३७ ॥ १० यान ११ छिपाकर मत भेजना १२ तहां ॥ ३८ ॥ १३ मनुष्यपन १४ स्त्री रूपी पुष्प का १५ भ्रमर १६ फिर ॥३९॥ १७ विवाही हुई को बुलाना तो कहां रहा १८ लिखावट १९ स्वीकार करके ॥४०॥ कितने ही कहते हैं कि उस बड़ी कन्या जिसका नाम राजपूताने में "नाथी भटियाणी" प्रसिद्ध है तिसको २० पति होकर रायसिंह ने नहीं विवाही थी ॥४१॥ २१ भोजन के कारण २२ छोटी बहिन को ॥ ४२ ॥

भक्तन माँति पित्थल२तवही भजि, सो उमाहु भक्तहिँ अवसर सजि
जो पठई अपिहितँ तिय जैसैँ, तँहँ ह्वै सिंह त्रास दिय तैसैँ ॥ ४३ ॥
जंगल तिय न चहैँ सु जवन जिम, अंबा लिखित कराइ लयो इम।
इमहु होहु हमहिँ न कछु आग्रह, साह १ हुरम १ अनुजा २ पित्थल २ संह ॥ ४४ ॥
नत्थी १ तिहिँ भटियानी १ नामहु, कहत कति रु तासहि यह कामहु ॥
तो यह वत्त होहु ऐसैँ तँहँ, करन चही निजसम अनुजा२कहँ ।४५।
अंबा किय अनुजा २ सहाय इम, जस जितातित पित्थल२को हुव जिम ॥
रायसिंहकी कोउक रानी, मुगल६राज लो ओरहि मानी ॥४६॥
पै लापर निंदाकरि पित्थल२, किय अग्रज१ अपजस कोलाहल॥
कहिय भ्रात१ वपु मह्यो कनकमैँ, नक्क रु१ पग्घ२रहे न तनकमैँ ।
जामि वडी पित्थल२तिय२की जो, रायसिंह१अग्रज१न वरी जो ॥

१देवी ने भी २प्रसिद्ध ३ सिंह* ॥४३॥ ४जंगल धरा (बीकानेर के राज्य) की ५ देवी ने ६हमको हठ नहीं है ॥४४॥ ७ नाथी ८ उसी से यह कार्य हुआ ९ अपने समान छोटी वहिन को करनी चाही ॥ ४५ ॥ १० देवी ने ११ छोटी वहिनकी सहाय की ॥ ४६ ॥ १२ स्वर्ण में १३ कुछ भी नहीं रहे ॥४७॥ १४बड़ी † वहिन

---

*इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि पृथ्वीराज द्वारका गया तब चंडारवा नामी ग्राम में उसको राजबाई नामकी चारण जाति की स्त्री मिली जो उस समय शक्ति का अवतार मानी जाती थी उसने प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहा कि तुममें काम पड़े तब मुझे याद करना इसकारण पृथ्वीराज ने इस कष्ट में याद करी सो उस देवी ने पृथ्वीराज की स्त्री का रूप किया और महायान पर बैठकर वह देवी बादशाह के समीप गई ताब उसको महायान से उतारने के लिये बादशाह समीप गया तब देवी ने सिंह का रूप करके उसको त्रास दिया और राजाओं की स्त्रियों को फिर नोरोज में नहीं बुलाने का प्रण करालिया ॥

† बीकानेर और जैसलमेर के इतिहासों से सिद्ध है कि, जैसलमेर के रावळ हरराज के तीन पुत्रियें थीं जिनमें एक तो नाथी नाम की बादशाह अकबर को परणाई और दूसरी गंगा बीकानेर के राजा रायसिंह को और तीजी चंपा (चांपा) रायसिंह के भाई पृथ्वीराज को परणाई थी सो यहां नाथी को राजा रायसिंह की राणी लिखकर उसका अकबर के साथ व्यभिचार लिखा सो मिथ्या है ॥

तो वह१ होहु साह१ ब्याही तिम, अरु पित्थल २ तिय२ सील बच्यो इम ॥ ४८ ॥

रायसिंह१ नृपकी तउ राँनी१, औरहि कोहु साह उरम्फाँनी ॥
मुनसब१ सप्तहजारी७००० संम्मद२, पायउ रायसिंह३।१ राजापद२
बहु परगनाँ३ बसन४ भूखन५वलि, करी६तुरग७पाए तिय मुक्कलि
सजातीय१ अरु विजातीय२ सब, ताको अपजस करनलगे तब५०
रायसिंह१ कविलोकन रक्खिय, दान पटा१ मनि२ धन३ लक्खन दिय ॥

सो कवि जबहि बारहठ संकर, उज्झि जोधपुर बास१ ग्रास२ अर
चंपाउत गोपाल जंगचहि, लगे न जे तिन्ह सबल यहै लहि ॥
संकर१ सह खट६ दरसन खेला, बीकानेर गयो तिहिं बेला ॥५२॥
रायसिंह ३।१ कवि कँहँ तिय२ रोधिय, पट्ट लिखित करि दई पलोधिय१ ॥

तास ग्राम दसअग्ग दुसत २१० तब, संकर खट६ दरसनहिं दये सब ॥ ५३ ॥

कविसंकरहित बहुरि रीझकिय, पुर नागोर२त्रिलक्ख३०००० पटा दिय ॥
बीकानेर बछ्यो तबतैं तँहँ, किय इम रीझ घनैं सुकवि५न कँहँ॥५४॥
जान्यौं कवि टारहिं तिय अपजस, बरख्यो इम बसुबिंदु त्रपावस॥

१ बादशाह की विवाही हुई ॥ ४८ ॥ २ हर्ष सहित ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ स्त्री को भेजकर ५ अपनी जातिवाले और दूसरी जातिवाले ॥ ५० ॥ ६ छोड़कर ७जीविका ८ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ९ मारवाड़ में ब्राह्मण चारण आदि को * खट दरसन कहते हैं१०क्रीड़ा सहित ॥५२॥५३॥५४॥ ११धन रूपी बुन्दों से१२लज्जा

* मारवाड़ में ब्राह्मण १ चारण २ संन्यासी २ (हिन्दू साधुमात्र) जती ३ (जैनी साधु) फकीर ५ (यवन साधु) और देवताओं के पुजारी क्षत्रिय ६ (जैसे रामदेवजी के पुजारे तँवर क्षत्रिय हैं) इनको खट दरसन कहते हैं अर्थात् ये छहों दर्शन करने योग्य हैं ॥

पै न टरैं ऐसे कलंक पवि, क्यों न उपाय करहु काटिन कवि ।५५।
जु यह रायसिंह३।१की कथा जिम, अकबर३७।१ छत हुव कहत
किते इम ॥
बूंदीपति तहँ भोज१९।१।२ विचारहु, नेर्म सु तब तस रचित निहारहु
पै इहिं रायसिंह३।१ संभव पर१, अचिर जहाँगीर३८।१रु चिर२अ-
कबर३७।१ ॥
जो अब भज्यो जुद्धतैं अतिजव, सो यह न तहँ द्वैरहिको संभव५७
रायसिंह टोडा१ रानाउत, सह नागोर२ कबंध अमरसुत ॥
इनमैं इक१कै द्वैरहि भजे अर, साहजिहाँन३९।२ साहके अवसर
ए२ हु साह आहूत न आये, जिम जसवंत१।३ सु तिमहि लजाये
बीकानेर करनन्नृप तब हो, जुग२ठाँ रायसिंह जुग२ जबहो ॥५९॥
पुब्ब कथित करि मंतु कर्यो पहु, आयो नहि तब१को भीतें अबरहु ॥
भजि रन तब द्वैरही ए भूपति, हीत रुके आवनमैं लखि हति ॥६०॥
लमंकि साह अहदी पठये तह, दुसहँस २००० दम्म अकिख दंम
प्रतिग्रह ॥
अप्पि दमहु ए बहुरि न आये, बलिबलि तिमासिर दम्म बढाये ।६१।
अनत किते इम बढतबढत भय, प्रतिदिन दिय अयुत १००००हुदम
रूप्पय ॥
आये तउ न पाइ साध्वर्स१ अति, प्रतिदिन कुपित सह्यो सु जव-
नपति ॥ ६२ ॥

के वश होकर १ वज्र रूपी ॥ ५५ ॥ २ हँसी ॥ ५६ ॥ जहांगीर के समय में ३ अनिश्चय और अकबर के समय में ४ निश्चय है ५ अत्यन्त शीघ्र ॥ ५७ ॥ ६ शीघ्र * ॥ ५८ ॥ ७ बुलाये हुए ८ दोनों जगह दोनों रायसिंह थे ॥ ५९ ॥ ९ पहले कहा हुआ १० अपराध ११ डरकर १२ लज्जित १३ हानि ॥ ६० ॥ १४ क्रोध करके १५ रुपये १६ दंड के १७ प्रतिदिन ॥ ६१ ॥ १८ भय ॥ ६२ ॥

---

* उज्जैण के युद्ध से अनेक इतिहासों से टोडावाले शीशोदिया रायसिंह का ही भागना सिद्ध है ॥

इत औरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।२ अवंतिय, पट्टु करि निखिल घायल्लन पंतिय ॥
उचित रीझ्झ सब वीरन अप्पिय, मग लखि चमन कुंच सुध मप्पिय
हुवरहि मीरलै इम सब दक्खिन३।२, पट्ट१ लहन गंजन परपक्खिन
जुगर् हि साहजादे तदनंतर१, हंग्गहरैं हंके अकबर३।७।१ हर ।६४।
दम्म इक्क१ पर बाजीगर हुवर२, इमदिल्ली१पर एर२ हंकतहुव ॥
दसँ १० मैं जोहि सता १९।४१ वृद्धिदसा, लिय छबो ६ परगनाँ भेलसाह ॥ ६५ ॥
तस सीमाढिग है वेत्त तिनको, उत्तर७।४वछ्यो पीखम किं इनको॥
इम कढि देस लिपथमग अंतर, कालीसिंधुकेर पर तट पर॥६६॥
निपधा१पुर जु वजत अब नरउर१।२, धारी जँहँ नल भूप राज्य धुर
व्है तँहँ साहसुतन दल हंक्किय, अग्गैं मग जोजन जुगर अंक्किय ।६७।
कछु मुकाम ग्वालेर निकटकरि, सेनापति न बुल्लि क्रम अनुसरि ॥
सैनन संधि हुहुरन दिल्ली[१२] दिय, लैनन बंधि हाजरी तँहँ लिय ॥६८॥
इत आगरा सोहि क्रम अनुसरि, कासिमखान १ सता १९।४।१।२ सम्मत करि ॥
जितो स्वचेक्क कुमर दारा ४०।१ जब, सह हाजरी सम्हारिलग्गो तब
उत१तैं वे भ्राता हुवरआये, धीर वीर इत रतै ए धाये ॥
दलन हक्क फुट्टिय देसंतर, इत१उत२वढे मिटावन अंतर ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

चतुरंगिनि हुव चंक्रमन, रन अंगन भुव रीझ्झि ॥
लिय जसंपात१न हुल्लने, स सैनिनन गय सीझ्झि ॥ ७१ ॥

---

१ सब घायलों को निरोग करके॥२॥ १ शत्रुओं का [illegible] पीछे [illegible] ॥३॥ [illegible] अकबर के पोते॥६५॥ ३ एक कोस पर [illegible] हुए इन परगनों में ॥ ४ [illegible] ॥६५॥ सेना॥ १० [illegible] ॥ ११ नौकर का मुजरा ॥६८॥६७॥ १२ [illegible] ॥६९॥ १३ चार्जी सेना॥६९॥७०॥ १४ चतुरंगिणी सेना का गमन हुआ। १५ [illegible] में [illegible] वालों के हृदय प्रफुल्लित हुए और १६ [illegible] [illegible] ॥७१॥

दुव२दिय क्रमत अनीक दुव२,*मह सह हुवोंटाग्रंक ॥
धारा अंकन विप्फुरे, वंकनकह्वन वंक ॥ ७२ ॥
अज्ज१ जवन२दल उज्झले, रिपुन लवन आरंभ ॥
पलटे थिति१ दिन जिम प्रलय२, उलटे सिंधुन अंभ ॥ ७३ ॥
केतु१न पेखर२न कंकटै३न, बीर४न वाह५न भ्रात ॥
छोनी मग दुहुँ२घाँ छई, अहि१धोनी२अकुलात ॥ ७४ ॥
गद्दी रक्खन इत१गरज, उत२लरि लैंन उपाय ॥
जोध रचन रन जय जतन, करैं वचन१मन२काय३ ॥ ७५ ॥
प्रतिरन आवत धौलपुर, ठाम जनावत ठीक ॥
निधिपैंर धावत रंक निभ, आवत उभय२अनीक ॥ ७६ ॥
इत१दारा४०।१।१ओरंग४०।३।२उत, धरिवाजीगग२ धम्म ॥
चंहत दब्यो दलै१चम्म२तैं, दिल्ली१कह्वन दम्मर ॥ ७७ ॥
दारा४०।१।१इत१अप्पन सदन, जानत रक्खन जंग ॥
सिंहनके कैसे सदन, उत१मानत ओरंग४०।३२ ॥ ७८ ॥
जंत्र१तंत्र२मंत्र३न जतन, इत दारा४०।१।१चउ४अंग ॥
इक्का१न अंकुस आदरे, उत पन्नग ओरंग४०।३।२ ॥ ७९ ॥
सिर अतिविस ओरंग४०।३को, दिसदिस त्रासत देस ॥
फौज१न रूप उठाइ फन२, आपो फुंकारि एस ॥ ८० ॥
मनमैं गिनत मुराद४०।४कों, विजय अनंतरैं बंधि ॥
इत१छत्र रहिहौं अभय, सब दहिहौं भयसंधि ॥ ८१ ॥
इत१हंके तजि आगंग१, सफल मनोरथ सुज्झि ॥

* उत्तांग महिमा से बनाये हुए १ समय को अपने नाम से चिन्हित करनेवाले शोभित हुए ॥ ७२ ॥ २ शत्रुओं के नाश करने के आरम्भ से ३ जल ॥ ७३ ॥ ४ पाखर (घोड़े का कवच) ५ कवच ६ समूह ७ श्रेणी और ८ शेषनाग की श्रेणी ॥ ७४ ॥ ८ अपनी जीतने का उपाय ॥ ७५ ॥ १० धन पर ११ लड़का ॥ ७६ ॥ १२ धर्म १३ सेना रूपी चर्म (ढाल) से दिल्ली रूपी १४ कानों को दबाना चाहा ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ १५ विजय हुए पीछे ॥ ८१ ॥

करि चल्ले जय संकल्प, उतर ग्वालेर रहिँ उज्झि ॥ ८२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे मन्हाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे विशालारणप्रतिनिवृत्तयोधपुराधीशयशवन्तसिंहस्वपत्नीतिरस्करण १, विशालाप्रपलायितरायसिंहसंदेहहेतुकविक्रमनगराधिपरायसिंहनिर्लज्जताकथन २, धवलपुरसमीप दाराशिकोहौरङ्गजेबसैन्यसंगमवर्णनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥

आदितः पञ्चविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सता १९४।१ चलिय बिरचन जब सो रन, मिलि ओरंग४०।३मुराद ४०।४हि मोरन ॥

भ्राता१भ्रातृजैरआदि तबहु भट, बैठ्ठ मिले बहु स्वबल बिसंकट ॥

जेठो१इंदसाल१९४।२को जायो, संज्ञाकरि गजसिंह१९५।१सुहायो

अनुज तास पंचम५आनंदक१९५।५,ते दुव रमिले कोस पंचक५तक

सोदर राजसिंह १९४।४ को जो सुत, जेठो १ बिष्णुसिंह १९५।१ अभिधाजुत ॥

जेठो१सुत काका हरि१९३।३को जिम, अग्गैं कछुक सुजान१९४।१ मिल्यो इम ॥

सुतहु तास जेठो१ गजसिंह१९५।१रु, अनुज चउत्थ४अजब १९४।४ शत्रु नँखरु ॥

---

१ विजय का संकल्प करके २ ग्वालियर को छोड़कर ॥ ८२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में उज्जैण के युद्ध से भागेहुए जोधपुर के महाराजा यशवंतसिंह का उनकी राणी से अनादर पाना १, उज्जैण के युद्ध से भागनेवाले रायसिंह के संदेह में बीकानेर के राजा रायसिंह की निर्लज्जता का कथन २, धोलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब की सेना के मिलने के वर्णन का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२५ मयूख हुए ॥

३ भतीजे ४ मार्ग में ५ विशाल अथवा विशेष संकट में ॥ १ ॥ १ नाम ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ७ शत्रुओं पर सिंह रूप

तिम नृप३हृदयनरायन१९२।२नत्तिय, पहुसनै मिले वीर भ्राता प्रिय
हरू१ स्वरू२ अन्त्यानुप्रास। ॥ १ ॥
मुख्य प्रयाग१९४।१जैत१९३।१सुत मानी, डुङ्गीपुर सासक अति दानी
सूनु बडेरनछोर१६५।१सहित सो, आइमिल्यो मग दलन अहितसो
तस काका बल१राम १९३।२ तनै तइ, सबलसिंह १९४।१ पँहुच्यो
प्रसादित सह ॥
कह्यो विजयराम १९४।१ जु तस काका, तँहँ घासीराम १९३।१ हु
सुत ताका ॥ ६ ॥
रत्न१९२।१ अनुज केसव १९२।३ कुल रोचन, सतल १९५।२ नाम
सत्रु संकोचन ॥
अप्पन भट गुरु१लघु२इत्यादिक, बट्टहि बिच पहुँचे जयवादिक ।७।
इहिँ क्रम ढिगहि धोलपुर आयो, पै बिठ्ठल१९३।१थानेस न पायो ॥
तँहँ पिसुनन निठुर जंपिय तब, मग्गमिले हु स्वामिधर्मी सब ॥ ८ ॥
अरु रनभूमि दिट्ठि पह आई, परपुतनाहु ढिगहिं सुनिपाई ॥
अब को सेस आगमन अवसर, बिठ्ठल १९३।१ जिम गिनतें प्रभु
भट पर ॥ ९ ॥
तबतोतिमहि अपिसुनन अक्खिय, रंचहु बिठ्ठल१९३।१कानि न रक्खिय
गादि इन पुनि पूछयो रुकमंगद१९४।१, है कवलग काका आवन हद
भाखी यह सुनि दुमन भतीजैं, प्रब्बल दिट्ठ कछु विघन पतीजैं ॥
अधिप कह्यो रन जब आरंभहिं, खरो तऊ न लखैं जयखंभहिं । ११ ।
बिधिवस तस कछु बिघन बखानैं, तुमहैं अवहि कोन रन तानैं ॥
संगर पुब्ब बिफल सबहीहो, तुमहिं तास सूचन तबहीहो ॥ १२ ॥
अैसी बत्त होत मग आई, दारा४०।१ सिबिरन डारी दिखाई ॥

१ पोते २ राजा से ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३ बिठ्ठलदास का पुत्र ॥ ६ ॥ ४ कुल का शोभा देनेवाला; अथवा कुल का चंदन ॥ ७ ॥ ५थाणा नामक ग्राम का पति ॥ ८ ॥ ६ शत्रु की सेना ७ आने का समयकौनसा बाकी है ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ८ बड़ा झंडा

पट आलय दारा४०।१ पैठायो, अप्पहु अधिप सिविर निजआयो ॥

॥ दोहा ॥

इम किय प्रथम१ मुकाम इत, रन लोभिन रहि रत्ति ॥
चले प्रात दरकुंच चहि, घन आडंबर घत्ति ॥ १४ ॥
उततैं वे दुव२ साहसुव, मिलि औरंग४०।३ मुराद४०।४॥
दरकुंचन आये दुसह, बिस्तारत जय बाद ॥१५॥
घोर प्रलय घनकी, घटा, जिम दुव२ अभिमुख जात ॥
इम हल्ली पृतना उभयर मही बैलय मचकात ॥१६॥
उभयर अनीकनतैं अनी१, जिम लहरूर कढिजाइ ॥
मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥१७॥
घटत निवानन पान घन, नासीर१न करि नीर२ ॥
क्रमि तँहँ तँहँ चंदोल१के, पंक२हिं लखत प्रबीर ॥ १८ ॥
बन दुर्ग१न पद्धर२ बनत, दिसदिस मग्ग दिखात ॥
भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥
दुसह कंप लागि दिग्गजन, आकिवकि खंड असेस ॥
उदंक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजंल प्रदेस ॥ २० ॥
मृड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लगि संग ॥
ओघ बिमानन अच्छरि४न, आये वरन उमंग ॥ २१ ॥
गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम हगादि ॥
चउसट्ठि६४ रु बावन५२ चले, छक लावन मह छादि॥२२॥
किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११चुरेल१२
बिहसि जच्छ१३ बेताल१४बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ।२३।
गिद्ध१६।१कंक॥७।२चिल्ल१८।३न गगन१, उडत छये बहु ओघ ॥

दूरे में ॥ १३ ॥ २ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मंडल को ॥ ११ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८ सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १० निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

महीर२कोंक१०।१जंबुक२०।मु ... इत पाके ॥ ३५ ॥
सिव१ आदिक ए उक्त२० ... तात२सखा१।२के,
इत वीरन उच्छाह अ ... ति भ्रातृजे१काके२ ॥
जुव्वनवय जिम ... तेज मंताके,
इम सूरन रन ... बर भ्राता१।१.के ॥ ३६ ॥
...लश्रेय बिधाके ॥
...र रखवार रसाके,
...छकमैं जस छाके,
...पानि तीरन गन ताके ॥ ३७ ॥
...ह दिलचाव दगाके,
...त जंग थट्टन नन थाके ॥
...न प्रहार गेरत गुर्जा.के,
...क सज्ज भर लंब भुजाके ॥ ३८ ॥
...ह मंडलगा सुख मग्ग मजाके,
...तेकउग्र सँय सिंहसटाके ॥
...ति बल अखंड पटु दंड१ पटा२के,
...क रसिक रारि रासक रेताँके ॥ ३९ ॥
जिम पचन सुद्धि मन तिम मंतो के,
सुरन सद्द हत्थिन दंतों के ॥
हेरंब३ अर्क४ नरहरि५ नंताके,

तीजे ४मामा ५विचारके ॥३६॥६दादा(पिता-
...क्षत्रिय १०भूमि के रक्षक ११ क्रोध में ॥३७॥
... १३ चिरमी १४ भाले ॥३८॥ १५ खड्ग १६
... सिंह की गर्दन के बाल २०कितने ही वी-
... स्वामी के लोन की पाचन की ख-
...ओं के साथ में २२ जानेवाले २४

पट आलय दारा४०११ पैठायो, अप्पहु अधिप सिबिर निजआयो,

॥ दोहा ॥

इम किय प्रथम१ मुकाम इत, रन लोभिन रहि रत्ति ॥
चले प्रात दरकुंच चहि, घन आडंबर घत्ति ॥ १४ ॥
उततैं वे दुव२ साहसुव, मिलि ओरंग४०१३ मुराद४०१४॥
दरकुंचन आये दुसह, बिस्तारत जय बाद ॥१५॥
घोर प्रलय घनकी घटा, जिम दुव२ अभिमुख जात ॥
इम हल्ली पृतना उभय२ मही बलय मचकात ॥१६॥
उभय२ अनीकनतैं अनी१, जिम लहरू२ कढिजाइ ॥
मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥१७॥
घटत निवानन पान घन, नासीर१न करि नीर२ ॥
क्रमि तहँ तहँ चंदोल१के, पंकरहिँ लखत प्रबीर ॥ १८ ॥
बन दुर्ग१न पद्धर२ बनत, दिसदिस मग्ग दिखात ॥
भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥
दुसह कंप लागि दिग्गजन, अकिबकि खंड असेस ॥
उदेक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजल प्रदेस ॥ २० ॥
मृड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लगि संग ॥
ओघ बिमानन अच्छरि४न, आये बरन उमंग ॥ २१ ॥
गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम ह्गादि ॥
चउसट्ठि६४ रु बावन५२ चले, छक लावन मह छादि॥२२॥
किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११चुरेल१२
बिहसि जच्छ१३ बेताल१४बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ।२३।
गिद्ध१६।१कंक॥७।२चिल्ल१८।३उन गगन१, उडत छये बहु ओघ॥

छे में ॥ १३ ॥ ३ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मंडल को ॥ ११ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८ सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १० निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

महीर२कोक१०।१जंबुक२०।२सुखन,मन्न्यों सुख न सु मोघ२४
सिव१ आदिक ए उक्त२० सब, हुव संगहि हरखाइ ॥
इत बीरन उच्छाँह४ अति, चार५ दगन बरखाइ ॥ २५ ॥
जुब्बनवय जिम रसिकजन, मन्नैं व्याहत मोद ॥
इम सूरन रन मह अतुल, किय सूचन चहुँ४कोद ॥२६॥

॥ मनोहरम् ॥

उभय२ अनीकनमैं कालीसम नाली६ केक,
चाली मतवाली पारैं वज्रमैंहु बुरमाँ ॥
सूरि८ निज दासनकों आसनकों पूरि दुख,
नासनकों भूरि९ देत थैली१० थान२ थुरमाँ११ ॥
नीठि नीठि जाइ पै बडेगढ निराइ१२ खंड,
खंडन खिराइ खाइ जाइ जैसै खुरमाँ ॥
फैलन के फील१३न जुती जे जूह१४ बैल२नके,
गैलनके बीच करैं सैल१५नके सुरमाँ ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

एक१हि दिल्ली१आगरा२, साह सदन सामान्य ॥
सुकवि कथन सामान्यमैं, मन्नहु जुग२धा मान्य ॥ २८ ॥
पुब्ब१हु लिखि आये प्रथित१६, अबैर जनावत एह ॥
इन दोउ२नमैं अन्यतर, गिनहु कोहु तस गेह ॥ २९ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनीरोला ॥

दिल्लीपति चहुवान भान छै पान विदाके,
करि सब पति दारा४०।१कुमार भट सज्जि प्रभाके१७ ॥
पहुँ१८ भेज्यो अज्जनपुरोग१९ हुव तेंज्जस२० हाके,

---

१ व्याघ्र २ गीदड़ ३ आदि ॥२४॥२५॥ ४ उत्साह ५ चारों दिशाओं में ॥ २६ ॥ ६ तोप ७ छेद ८ पंडित ९ बहुत १० रुपयों की थैली ११ दुशाला १२ समीप लेकर १३हाथियों से १४समूह १५पर्वतों का कज्जल ॥२८॥ १६प्रसिद्ध ॥२९॥ १७ कांतिवाले १८राजा शत्रुशाल का १९आर्य लोकों का अग्रणी २०उसके यश के

कथित राम १।२ कीरति१।३ कुमार कूरम नेता[2]के ॥ ३० ॥
इत्यादिक गुरु१लघु२अनेक नृप१ कुमर२न नाके[3],
मिच्छन कासिमखान१मुख्य सममान[5] सता१९।४।१ के ॥
जिम साइस्तेखान२ जोध जाफर३ ढिगजाके,
कहत कलीज४हु कौं कितेक क्रम बिचिकिच्छाके[6] ॥३१॥
नहिं जो याके भागनेर ताता इत१याके,
भागनगर जो तासभाग तो उतर२ पहु ताके ॥
अधिक सता१९।४।१।१कासिम२उमेर२हि सासक सेनाके,
और चल्ल[7]दाग[8]४०।१।३पत छकछाइ छटाके ॥ ३२ ॥
इम दक्खिन३।५।१उत्तर७।४।१२अनीक तिम सम्मुह ताके,
दरकुंचन हल्ले दुरूह[9] जम जूह जिलाके ॥
अग्गां१अंभ२सु पिछ्छि१पंक२तहँ सर१सरिता२के[11],
पारि जलजंतुन असह पीर रहि सीर सिराके[12] ॥ ३३ ॥
डगमग्गिय डुंगर डरात पविपात प्रथाके[13],
अंग मचक्के दलन धाव उफनाव इलाके[14] ॥
कगरक्किय आलुके[15] कपाल फटि जाल फँटाके[16],
प्रतिमैं[17] तस रद कमठपिठ्ठ किंमु[18] टंकक्रियाके ॥ ३४ ॥
सिन्धू[19] लग्गत भटनसीस कारन झोकाके,
सिंहछटा के असह सूर करतार कँटाके[20] ॥
वे[illegible]न रद जिम इक्क१बेर बुल्लन बाचाके,

१ कीर्ति सह. कछवाहों के २ पति का ॥ ३० ॥ ३ नांही नहीं करनेवाले ४ सेनापति ५ शत्रुशाल के समान आदरवाला ६ विचिकित्सा (संदेह) के क्रम में है अर्थात् इसमें संदेह है ॥ ३१ ॥ ७ शीघ्र ८ शोभा ॥ ३२ ॥ ९ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १० आगे पानी और पीछे कीचड़. तालाव और ११ नदी के १२ ऊपर से सीर का आना बंध होगया ॥ ३३ ॥ १३ वज्र पड़ने की प्रसिद्धि से १४ पृथ्वी के १५ शेषनाग के १६ फण के १७ मानों १८ पत्थर पर टांकी घुसे इसप्रकार ॥ ३४ ॥ १९ सिन्धवी रागनी के २० युद्ध वा कतल करनेवाले २१ हाथी के दांतों के समान (हाथी के दांत एक ही बार) बाहिर निकलते हैं जो पीछे नहीं घुसते ॥

भासत इत१उत२बंधुभाव प्रचुरन हित पाके ॥ ३५ ॥
कति जामाता१स्वसुर२केक सुत१तात२सखा१।२के,
कति सालक१जा[2]मिप२प्रकार कति भ्रातृजे[3]१काके२ ॥
क्रम मातुल[4]१भानेज२केक मन तेज मंता[5]के,
दौहित्रक१नाना२उदार भट वर भ्राता१।१.के ॥ ३६ ॥
जनकपिता[6]१नत्ता[7]२अजेय बलश्रेय विधा[8]के ॥
बाहुजरा[9]१के के जवन२वार रखवार रसा[10]के,
धक[11]मैं मन मावै न धीर छकमैं जस छाके,
पटकत पच्छिन कतिन पानि तीरन गन ताके ॥ ३७ ॥
दाव नमन्नैं कति दुरूह[12] दिलचाव दगाके,
जे अभिमानिन हनत जंग थट्टन नन थाके ॥
पटु बिरतरि तुपकन प्रहार गेरत गुंजा[13].के,
सद्द कुंतन[14] कतिक सज्ज भर लंब भुजाके ॥ ३८ ॥
लेत किते गहि मंडलगा[15] मुख[16] मग्ग[17] मजाके,
ऐंचनहार[18] कितेकउग्र सैंप सिंहसटा[19]के ॥
अभ्यासक कति बल अखंड पटु दंड१ पटा२के,
रिपुगन बासक रसिक रारि रासक रेता[20]के ॥ ३९ ॥
स्वामि लवन जिम पचन सुद्धि मन तिम मंता[21]के,
सत्थिन गंता[22] सुरन[23] सद्द हत्थिन हंता[24] के ॥
ईस१ उमा२ हेरंब[25]३ अर्क४ नरहरि५ नंता[26]के,

---

१ बहुतों से ॥३५॥ २बहिनोई ३भतीजे ४मामा ५विचारके ॥३६॥६दादा(पिता-मह ७पोता ८श्रेष्ठ विधानवाले ९क्षत्रिय १०भूमि के रक्षक ११ क्रोध में ॥३७॥ १२ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे १३ चिरमी १४ भाले ॥३८॥ १५ खड्ग १६ आदि १७मार्ग(पैंतरे) १८हाथी से १९सिंह की गर्दन के बाल २०कितने ही वीर्य से नृत्य करनेवाले ॥३९॥ २१मंत्री अथवा स्वामी के लोन की पाचन की खबर पर मानों उपदेश करनेवाले २३ देवताओं के साथ में २२ जानेवाले २४ मारनेवाले २५ गणेश २६नमन करनेवाले

तुच्छ चउद्दह१४ लोक ताकि किल[1] अतिक्रंता[2]के ॥४०॥
कर बल मेटनहार केक बहु बेर व्यथा[3]के,
हद संसृति[4]की रहनहार बिच क्रित्ति[5] कथाके ॥
इभ[6] गंजन मजबूत अंग जमहूत जथाके,
चल्ले इम रजपूत चंड पुरुहूत[7] प्रथाके ॥ ४१ ॥
हुलसे अतिभट चलनहार प्रतिभट[8] पज्जा[9] के,
हेला[10] संगर बहनहार लंगर लज्जाके ॥
पलभोजिन[11] पालक पुगाइ मधु रस मज्जा[12]के,
लुब्भि[13] सयन सुख लैनहार सूरन सैज्जा[14]के ॥४२॥
इत निर्भय जीवन उदास खिल[15] दास खुदाके,
मानी अति बल मुसलमान मनमत्त मुदा[16]के ॥
पर खंडन पटकैं प्रपात तरवारि तुदा[17] के,
इम पंजपर्तन[18]१ चयहार४ यार[19]२ जिस इष्ट जुदाके ॥४३॥
उभयर दीन जय पीनं[20] ओज तँहँ भिन्न तफा[21]के,
होडाहोडी बढनहार बल१ लौंन बफा[22] के ॥
दब्बैं संकल असह दाव पग काल कफा[23] के,
द्वैर ही दिस इच्छक दुरूहैं[24] निज क्रित्ति नफा के ॥

१ निश्चय २ उल्लंघन करनेवाले. (इस छंद में अन्त्यानुप्रास में 'के' शब्द आये हैं सो बहुधा कितनों के वाचक हैं) ॥ ४० ॥ ३ पीड़ा के ४ सृष्टि की सीमा ५ कीर्ति ६ हाथियों के मारने में ७ इन्द्र के समान प्रसिद्धिवाले ॥ ४१ ॥ ८ शत्रुओं को ९ नीच बनानेवाले वा दबानेवाले १० युद्ध में क्रीड़ा पूर्वक चलनेवाले ११ मांस भोजन करनेवाले पशु पक्षियों के १२ मेद (हाड के भीतर की मींजी) १३ लोभ करके १४ शरशय्या ॥ ४२ ॥ १५ बाकी के १६ हर्ष १७ 'तुद व्यथने' इस धातु से तुदा शब्द का अर्थ पीड़ा देनेवाला है १८ दिन भर में पांच बार निमाज पढनेवाले १९ आर्यों में चार वर्ण हैं इसीप्रकार यवनों में शेख, सय्यद, मुगल, पठान ये चार जातियें हैं सो इन चारों में कितने ही का मजहब (सुन्नी सिया आदि) जुदा था परन्तु परस्पर में १९ मित्र थे ॥ ४३ ॥ २० पुष्ट. जुदे जुदे २१ जिलों के २२ निमकहलाल २३ क्रोध से काल की सांकल को पैर से दबानेवाले २४ कठिनाई से तर्कना में आवैं ऐसे

कड्ढनहार कर्गिनकाये समसेर सफा के ॥४४॥
वादी डारन विजय वाद असिबर आंखा के,
कोप जहर भासक कराल त्रासक ताखाँ के ॥
सुरबानी१ अरबी२ सं मुख्य भाखन भाखा के,
तेरह१३ चवु४ आदिक प्रतानँ संभृत साखाके ॥४५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-
सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे धवलपुरान्तिकदाराशिकोहौरंगजेबसमरार-
म्भवर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः षड्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोब्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विदित तीज३ आसाढ४ वदि२, जोसी हरजि द्विजात ॥
समर सुद्धि१ पग्घर२न सहित, अप्पी बूंदिय आत ॥ १ ॥
रानि१न कुमरानि१न सरुचि, चहि ठकुरानि३न चाय ॥
सुनि बहुतन पतिस्मृत समर, किय प्रातहि हुंत काय ॥२॥
तीजा३ अरु चोथी४ तिन्नहि, इम छट्ठी६ अंसु आस ॥
रानीत्रय३ जीवत रही, करि अपकित्ति प्रकास ॥३॥
तीजी३ राजकुमारि१९४१३तहँ, जो प्रतापगढ जात ॥
जाके वापी१ वाग२ जुगर, कोटा मग्ग कहात ॥४॥

---

१ हाथियों के शरीर में २ साफ तरवार निकालनेवाले ॥ ४४ ॥ ३ हठ करनेवाले ४ पूर्ण ५ तक्षक ६ संस्कृत. तेरह और चार शाखाओं को ७ फैलाकर ८ पोषण करनेवाले; अथवा श्रेष्ठ रीति से पुष्ट करने वाले यह आर्य और यवनों का वर्णन यथा संख्या से है ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में धौलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब से युद्ध प्रारम्भ होने का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२६ मयूख हुए ॥

९ब्राह्मण१०युद्ध की खबर॥१॥११शरीर होसे ॥२॥ १२मोक्ष की आशा से ॥३॥४॥

नित्यकुमरि१९४।४ तिम नारवी, चोथी४ जोवन चाहि ॥
बिक्खन सुख बिलसन बची, सुत भगवंत१९५।३ सराहि ५॥
इम छठी६ असु लाभ वह, करि आनंदकुमारि१९४।६॥
बडो१ सुतहु मरतहु बची, बधू सगर्भ बिचारि ॥ ६ ॥
पंच५हि सुत भारत१९५।४प्रिया, उठी जरन हित आति ॥
चऊ४ सगर्भा चालुकी, तँह रोकी हठ ताति ॥ ७ ॥
अक्खी ममसुत अंसयह, उदर तिहारे आहि ॥
यातैं तू१ रहि मैं२हु इम, जियत रही लखि जाहि ॥८॥
रानी ए३ इम बचिरही, तीन३हि लोन ह्यताई ॥
सत्त७ मरी सुभगा सुनहु, पति पहिलैं बिधि पाइ ॥६॥
बूंदीसन दिस बारुनी३।७, अंग गिर आयत एस ॥
रविछत्री१ बिरची रुचिर, बसु जिहिं खरचि बिसेस ॥१०॥
स्यामकुमरि१९४।१ रद्धारि सो, पुव्व गई परलोक ॥
जेठी१ यह भाऊ१९५।१ जननि, सुभगा सतिय बिसोक॥११॥
चंद्रावति दूजी२ चतुर, प्रेमकुमरि१९४।२ खिनपाइ ॥
भीम१९५।२ प्रसू सद्गति भजी, बिधिबल देह बिहाइ ॥१२॥
नवम९ ईडरची निपुनि, अरु पिछली चउ४ ऊढ ॥
पति पहिलैं सुभगापनहि, मृत ए सत्त७ अमूढ ॥१३॥
रानीखट६ अब नृप मरत, पंच५ खवासि उपेत ॥
जे पातुरि चालीस४० जुत, हुत हुव सहगति हेत ॥१४॥
प्रिया चालुकी पंचमी५, सूरजकुमरि१९४।५ सनाम ॥
ऐकी हठि पहिलैं जरत, अब सु जगी अभिराम ॥१५॥

१नरकी २सुख देखने की ॥५॥ ३प्राण के लाभ से ४ पुत्र की बहू को गर्भवती जानकर ॥ ६ ॥ ५ उस स्त्री को, अथवा उसको स्त्रियों ने रोकी; अथवा माता रूपी सासू ने रोकी ॥७॥६है७इसकारण से भी ॥८॥८निमक हराम होकर ॥९॥ ९पश्चिम दिशामें१०पर्वत के ऊपर११बडा१२धन ॥१०॥११॥१३भीमसिंह की माता ॥१२॥१४विवाही हुई१५सुहागनपन में१६चतुर ॥१३॥१७सहित ॥१४॥१५॥

जाके वापी१ बाग२ जुग२, अवहु सुजस अंकूर ॥
छारबाग सन इत सु छवि, दिस दक्खिन२।३ कछु दूर ॥ १६ ॥
रानी सप्तम७हरकुमारि१९४।७, उदित चालुकी आहि ॥
रानाउति अष्टम८रुचिर, चंद्रकुमरि१९४।८जस चाहि ॥ १७ ॥
जाके वापी१बाग२जुग२, मिलत कुमाराति मग्ग ॥
इमहि जरी तँहँ अष्टमीट, पट्ट कारि कित्ति उदग्ग ॥ १८ ॥
कावंधी दसमी१०कही, कथ कल्यान कुमारि१९४।१०॥
सोहु जरी अति प्रीतिसह, असह बिरह अवधारि ॥ १९ ॥
विदित वेल१अस वापिका२, याके दक्खिन१।३ओर ॥
छारबागके ढिगहि छवि, जे सूचत जसजोर ॥ २० ॥
कावंधी एकादसी११, फुल्लाकुमरि१९४।११गुन फीत ॥
जो महलन वासी जरी, भूपबिरह अवभीत ॥ २१ ॥
जासवेल१वापी२जुग२हि, मांडुदापुर मग्ग ॥
अंकित जससूचक अवहु, लसत पुव्व१दिस लग्ग ॥ २२ ॥
अपँर२ईडरेचीहु इम, हुव लच्छी१९४।१२अभिधान ॥
रहउरी पट्ट बारहीं, बिसी कृसानु बिहान ॥ २३ ॥
पंच५भुजिष्या राम२०३।४प्रभु, जरी सुनहु अव जत्थ ॥
प्रथम१चमेली१नाम पहु, स्वामि बिरह हुव सत्थ ॥ २४ ॥
चत्वर जो चोगानके, गोपुर ढिग इत आहि ॥
कल्पित ताके नामकरि, सो पट्ट विदित सदाहि ॥ २५ ॥
गिरिसँ ओर८चत्वँर ढिगाहि, सिखरबंध हरिसद्म१ ॥
तिहिं बिरच्यो अज्जहु तनत, प्रभा प्रात जिम पद्म ॥ २६ ॥

---

१ राठोड़ी २धारण करके अर्थात् बिरह को गम्भीर जानकर ॥१९॥ ३ बाग ॥२०॥ ४ गुणों का समूह ५ राजा के बिरह से डरी हुई ॥२१॥ ६ जिसका भाग ॥२२॥ ७ दूसरी ईडरेची ८ प्रवेश किया ९ अग्नि में १० प्रभात समय ॥२३॥ ११ पास-वान जिन्हें १२ हे प्रभु रामसिंह ॥ २४ ॥ १३ शहर के दरवाजे के पास ॥ २५ ॥ १४ ईशानकोण में १५ चौगान के समीप १६ विष्णु का मंदिर १७ जिस प्रकार

इम खवासि दूजी२ इहाँ, जरी अनार्गँ२जास ॥
पुर सेखापुर छत्रपुर, चापी१ हरिगृह२वास ॥ २७ ॥
स्यामरंग३तीजी३सुनति, चोथी४तँहँ चंपा४रु ॥
पट्ठ हरिमाला५पंचमी५, चढी चिता ए५ चारु ॥ २८ ॥
तिम पातुरि चालिस४०तँहँ, गई मयूरी१गैल ॥
पुरढिग तस छत्री१प्रथित, सर्मन दिसा२।३के सैल ॥ २९ ॥
इम.दूजी२ आसावरी, अठतीस३८ तिम ओर ॥
चालिस४०हि प्रविसी चिता, ठानि सुजस सबठोर ॥ ३० ॥
छ६अरु पंचचालीस४५छंम, इहिं क्रम रानि१न आदि ॥
इक्कावन५१प्रविसी अँनल, सत्थहि हित संवादि ॥ ३१ ॥
चिता निलय आयत रुचिर, इक्क विसी सब्रआइ ॥
किय भाऊ१९५।१सबको रवकर, दाह सु विधि दरसाइ । ३२ ।
जिम निज निज पति पग्घजुत, सुनहु जरी अवसेस ॥
कुमरानी भारत१९५।४कुमर, ऊँढा पंचक५एस ॥ ३३ ॥
आदि सुता आनंदकी, सेखाउति रंभा१९५।२ सु ॥
परनि मनोहरपुर प्रिया, आनी भारत१९५।४ आसु ॥ ३४ ॥
पुनि कोलासर सिवपुरी, राजाउत अमरेस ॥
कुमरहि दिय जमुना१९५।२ कनी, इहिंक्रम दूजी२ एस ॥ ३५ ॥
बल्लनोत जुज्झार बलि, कनी सुजानकुमारि१९५।३ ॥
परिनाई खीना पति जु, निपुन तृती३य सु नारि ॥ ३६ ॥
सोलंखी हरिसिंहकी, रत्नकुमरि१९५।४ कुमरी सु ॥

प्रभात समय में कमल कांति फैलाता है तिसप्रकार यह मंदिर भी फैलाता है ॥ २६ ॥ १ पुरा (शहर के द्वार के बाहर का छोटा ग्राम) ॥२७॥ २ सुन्दर ॥२८॥ ३ प्रसिद्ध ४ दक्षिण दिशा के ५ पर्वत पर ॥ २९ ॥ ३० ॥ ६ समर्थ ७ अग्नि में ८ स्नेह का कथन करके ॥ ३१ ॥ ९ चिता के चौके सुन्दर घर में १० इकट्ठी होकर घुसीं ११ अपने हाथ से ॥ ३२ ॥ १२ विवाही हुई ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

कुमरानी भारत१९५।४ कुमर, ब्याह चतुर्थ४ बरी सु ॥३७॥
मरीसु१ बरीसु२ अन्त्यानुप्रासः १॥

॥ दोहा ॥

कनी गोर रनछोरकी, इंदकुमरि१९५।५ अभिधान ॥
पंचम५ ब्याह कुमार पटु, परन्यौं रीति प्रमान ॥ ३८ ॥
ए पंच५हि जरिबे उठी, इन्हँ सस्सू तँहँ आइ ॥
चउम४ सगर्भा चालुकी, रोकी प्रसभ रचाइ ॥ ३९ ॥
बरजी भाऊ१९५।१ जेठ बलि, *ओक रही इम एह ॥
तनय जन्यौं आनंद१९६।१ तस, उच्छव किन्न अछेह ॥४०॥
बहुरि मर्‌यो चउ४मास बचि, यह बालहि आनंद१९६।१ ॥
अति सोच्यो भाऊ१९५।१ अधिप, मन कल्प न कहि मंद ।४१।
यह कछु भावी१ सुनहु अब, वर्त्तमान२ सुहि वत्त ॥
चोथी४ स्नूखा सु चालुकी, रोकी जियन विरत्त ॥ ४२ ॥
तास सपत्नी चउ४हि तिम, सूचित जाइ मसान ॥
ज्वलन अप्रसूता जरी, सह पतिपग्ग सुजान ॥ ४३ ॥
अधिप अनुज सुहुकम११४।५।१ उदय, १९४।६।२ सूर१९४।७।३
परे त्रय३ सूर ॥
परे भतीजे चउ४ प्रधन, पहु सुनिये जसपूर ॥ ४४ ॥
दलि ओरंग४०।३ मुराद४७।४ दल, परे जहाँ अतिमान ॥
इंदसल्ल१९४।२सुत अष्ट८महु, गिनिये प्रथम१गुमान१९५।८। ॥४५॥
तिम जेठो सुहुकम१९४।५तनय, जोरावर१९५।१।२सुज जोर
प्रधन तत्थ दूजा२ परयो, रचि खग्गन घन रोर ॥ ४६ ॥

॥३७॥ ३८ ॥ ३९ ॥ * घर में ॥ ४० ॥ ४१ ॥ १ बालक २ विरक्त ॥४२॥ ३ बिना सन्तानवाली ॥ ४३ ॥ ४ युद्ध में ॥ ४४ ॥ ५ बलवान् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

दूजो२ अरु तीजो३ कुवरहि, महासिंह१९४१९ सुत मेय ॥
ए तीजो३चोथो४इहाँ, कनक१९५।२।३लाल१९५।३।४जसंक्षेप ।४७।
इक१ कुमर अरु त्रय३ अनुज, बंधुन चउ४ समवेत ॥
स्वयं नवम९ संभर सता१९४।१, खिरयो असम रनखेत ॥ ४८ ॥
लो मुहुकम१९४।५ मुख्य सत्त७ जहँ, तुट्टे तेगन तँष्ट ॥
तिम संगहु निज निज तियन, किय सहगोन अकष्ट ॥ ४९ ॥
जुगरमुहुकम१९४।५पतनी जरी, सती बिदित पतिसंग ॥
इक१इक१सेसद्दन संग इम, अनल बिसी हुतअंग ॥ ५० ॥
किते कनक१९५।२लाल१९५।३हि कहत, दिव अनूढ २ागतदोइ
किते बिबाहै पै कहत, गई न तिय जिय गोइ ॥ ५१ ॥
बिठ्ठल१माधव२आदि बलि, परे सुभट सतपंच५०० ॥
चउसत४००तँहँ घारँन चढे, बाहुजरवीर अबंचे ॥ ५२ ॥
ब्राहुज२तहँ कोउक बिर्‌यो, ललना।बिनु सुरलोक ॥
क्रम इतरन संगहु किती, सती जरिय गतसोक ॥ ५३ ॥
इम सुचि४असित२चउत्थि४अँह,, हुव घरघर हाकार ॥
बिसवासे भाऊ१९५।१बखसि, अखिलन बिभव उदार ॥ ५४ ॥
चँविहँ पहु भाऊ१९५।१चरित, बंधन दोउ२न व्याह ॥
भीम१९५।२व्याह पुब्बहि भनैं, त्रय३बालाहि स्रृत ताह ॥ ५५ ॥
अधिप सता१९४।१बिरचेहु अब, सुनि ए थान असेस ॥
अधिप ख्यात सूचत अबहु, निज जस राम२०२ नरेस ॥ ५६ ॥
चउ४मंदिर हरिके रुचिर, पुरबिच इक१प्राकार१।५ ॥
तिंहिं ढिगइक१चोगान१।६तँहँ, इकरदुर्गा आगार१।७॥ ५७ ॥

---

१ प्रमाण (गणना) वाला २ यश खरीदनेवाला ॥ ४७ ॥ ३ साथ ४ चहुवाण शत्रुशाल ५ जिसके समान दूसरा कोई नहीं ऐसा ॥ ४८ ॥ ६ आदि ७ खड्गों से छोटे छोटे टुकड़े होकर ८ बिना कष्ट ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ९ स्वर्ग गये १० बिना विवाहे ११ जी छिपाकर ॥५१॥ १२ घायल हुए १३ चात्रिय १४ नहीं ठगनेवाले ॥ ५२ ॥ १५ स्त्री बिना कोई ही चत्री स्वर्ग में गया १६ आषाढ बदि चौथ के १७ दिन ॥ ५४ ॥ १८ कहेंगे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १९ कोट २० देवी का मन्दिर ॥५७॥

दुव२गोपुर२।९प्रासाद२।१०दुव२,इक१सैर१।१२इक१उद्यान१।१३
ए तेरह१३अविवाद इन, पहु प्रणीत थित थान ॥ ५८ ॥
पत्थरगज१।१४इक१।१४अट्टपर, संसय तँहँ दम्सात ॥
सब ए अब क्रमतैं सुनहु, आयत जस अवदात ॥ ५९ ॥
श्रीकेसव मंदिर१सुभग, अतुल सु पट्टनि माँहिं ॥
दुव२स्यामल२जगदीस२के, मंदिर२।३बूंदीमाँहिं॥ ६० ॥
हित निर्जपर बलराम१हुव, सेवक बिप्र सनाढ्य॥
किय चोथो४तस्सनामकरि, इहाँ बिदित छबि आढ्य ॥ ६१ ॥
पूरब सूरजपोलितैं, बस्यो जु संतति बीत ॥
दामोदर१राधा२बिदित, पधराये तँहँ प्रीत ॥ ६२ ॥
रत्नबुरज़१सन बारुनी३।५, करि गिरि१लगि प्राकार१।५ ॥
बाहिर करि दक्खिन२।३बसति, बिचकिय चोक१।६बिथार।६३।
उमा हर्षदाको उहाँ, मंदिर१।७ पंचम५ मंडि ॥
गोपुर१।८तँहँ चोगानको, बिरचिय चोर बिहंडि ॥ ६४ ॥
दूजो तँहँ मंडूकदर, तँहँ गोपुर२।९रचि ताम ॥
दृढ त्रि३खंड१।१०चउ४खंड२।११दुव, रचे महल२।११अभिराम।६५।
महलन बिच पहिलो१ महल१।१०, रात्रिखंड अभिधान ॥
गजमुखसाल१ रु रंगमुख, मंडप२ मंजु अमान ॥६६॥
मुकुट आदिमंदिर३ सहित, तीजो३खंड जु तास ॥
महलन मिरि दूजो२महल२।११, प्राची१ करत प्रकास ॥६७॥
जाको खंड चतुष्क४जुत, नाम इक्क१ नरनाह ॥
छत्रमहल२।११ बिख्यात छिति, सो यह लेत सराह ॥६८॥
केतु१ कलस२ दोउ२न कसनै, छत्रमहल२।११सिर छल १।२ ॥

---

१ बाहर के द्वार २ महल ३ तालाब ४ बाग ॥ ५८ ॥ ५ पाषाण का हाथी ६ बुर्ज पर ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ७ वहां ॥ ६५ ॥ ८ नाम ९ गजशाला १० रंग मंडप ॥ ६६ ॥ ११ मुकुट मन्दिर १२ पूर्व दिशा में ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १३ सुन्दर

गढ कोटा जिहिँ लैगयो, अघको भीम१९८।१अमन ॥६९॥
पंती१नाम निजधाइ पट्ठु, ताके नाम तॆड़ाग२ ॥
रचे प्रताप सागर१।१२ रुचिर, भूप भज्यो जसभाग ॥७०॥
।।हित रक्तदंता निकट, विहित सुरुथपुर बाग१।१३ ॥
माधव१ ऋतु बिक्खन मनुज, रक्खेँ जँहँ अनुराग ॥७१॥
प्रतिमा गज१।१४इक१अट्टपर, दक्खिन१।३दिस सो स्निग्ध॥
नगर बरोदाके निकट, सता१९४।१ रचित संदिग्ध ॥७२॥
गज जवानभाई गदित, तस प्रतिमा, वह तत्थ ॥
रची रतन१९२।१ कति इम कहत, सो पै संसयसत्थ॥७३॥
एक१ कुंड१ छत्री२।३ उभय१, धन्य पंती१ नृपधाइ ॥
किय प्रतापसागर१।१२ निकट, पँहु सँह अह पधराइ॥७४॥
अग्ग मनोहर१९२।४ भोज१९१।२ उत, जो उपवन किय जत्थ ॥
तास ढिगहि जो कुंड१ तिम, सुभ छत्री२।३जुग२सत्थ।७५।
इम नृपधाली भ्रात इत, मन्नि सुजस फलमान२ ॥
छत्री१ किय पृथु तास छिति, थित प्राची१ गिरिथान॥७६॥
सक दुव बसु सोलह१६८२ समय, भूपकुमर हुव भीम१९५।२ ॥
तनुत्यागी सूचित समय, सत्त ख सत्रह१७०७ सीम ॥७७॥
भूपकुमर भारत१९५।५ भयो, इम नव आष्टि अनेह ॥
पंद्रह सत्रह१७१५ साक पर, दिव पत्तो तजिदेह ॥७८॥
गुन खट सोलह १६६३ सकल गन, भयो सता१९४।१यह भूप ॥
सिंधुर अहि सोलह१६८८समय, राज्य लह्यो अनुरूप।७९।
पंद्रह सत्रह सक परव, तनुभव१ भ्रात२ भतीज३ ॥

१ पाप का पात्र ॥ ६९ ॥ २ तालाव ॥ ७० ॥ ३ वसन्त ऋतु में ४ प्रीति ५ बुर्ज पर ६ सचिक्कण ७ शत्रुशाल के रचने में सन्देह है ८ जिस हाथी को जवान भाई कहते हैं ॥७३॥ ९राजा की धाय ने १०प्रभु का ११उत्सव सहित दिन में पधराये; अथवा उत्सव के दिन पधराये ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ १२ राजा का धाय भाई १३ मोटी १४ पूर्व दिशा के पर्वत पर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

अष्ट८ सहित सुत्तो अधिप, धवलद्रंग रनधीज ॥८०॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे हरजीनामविप्रशत्रुशल्यादिवीरमरणोदन्तप्रापणराज्ञीकुमारपत्नीपतिलोकगमन१, शत्रुशल्यसामयिकप्रासाददेवालयादिस्थाननिर्मितिवर्णनं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितः सप्तविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२७ ॥

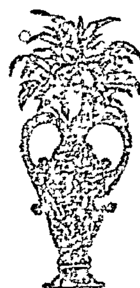
---

१ धौलपुर के युद्ध में ॥ ८० ॥ *

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में हरजी नामक ब्राह्मण का राव शत्रुशाल आदि वीरों के मारेजाने की खबर लाने पर राणियों और कुमराणियों का सती होना १ शत्रुशाल के समय में महल मंदिर आदि स्थान बनने के वर्णन का पन्द्रहवाँ १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२७ मयूख हुए ॥

---

* ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की इच्छा थी कि शत्रुशाल के मारेजाने के इस युद्ध का वर्णन अत्यन्त उत्तमता के साथ किया जावेगा इसकारण शत्रुशाल के बुन्दी से चढने का वर्णन करके युद्ध के वर्णन का स्थान खाली छोडदिया और आगे शत्रुशाल के मारेजाने का और उसके साथ मारेजाने की गणना करके बून्दी में सतियें होने का वर्णन करदिया है, परन्तु फिर या तो सावकाश नहीं मिला अथवा स्मरण नहीं आया, इसकारण इस युद्ध का वर्णन नहीं होसका, यह हमने स्वयं सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से सुना है ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भावसिंह१९५।१चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रचि चउत्थि४दिन ग्यारहम११, कथित श्राद्धकरटा१दि ॥
दान अखिल बिप्रनं दये, सब बिधेय संपादि ॥ १ ॥
बहु भोजन दिन बारहम१२, जन द्विज१सुख जेमाइ ॥
तद्दिन बिधि सम सद्धि तिम्ह, ठाम महालय१ठाइ ॥ २ ॥
सक पंद्रह सत्रह१७१५समय, रीति सद्धि अनुरूप ॥
सुचि४संगत पंचमि५असितर, भावसिंह१९५।१हुव भूप ॥ ३ ॥
कनक छत्र१चामर२कलित, छादनँ२श्रीजन२छाइ ॥
जनक पट्ट भाऊ१९५।१जई, बैठो नय बिकसाइ ॥ ४ ॥
आये जन गुरु१लघु२अखिल, संभरराज समाज ॥
उंत्तारन१उंपदा२दि इन, सब सद्धिय बिधि साज ॥ ५ ॥
सुधा बचन सबके श्रवन, पुट सह प्रीति पिवाइ ॥
आस्वासन करि आदरे, स्वच्छभाव दरसाइ ॥ ६ ॥
पीतांबर१पायन प्रनमि, रचि अर्चन अभिराम ॥
आसापूरनि२अंबिका, पूजी सबिधि१प्रनाम२ ॥ ७ ॥
तद्दिन इम बैठो तखत, पट्ट भाऊ१९५।१ भूपाल ॥
मित्र१न घत्ती धर्ममति, सत्रु१न छत्ती साल ॥ ८ ॥
जुग२भ्रातन अब जंपियत, व्याह अखिल बिलसंत ॥
परनैं पुव्व अनेह इम, भाऊ१९५।१।१अरु भगवंत१९५।३।२ ॥९॥
कुमरपन हि भाऊ१९५।१करे, बारह१२रानि सब व्याह ॥

---

१ एकादशा आदि श्राद्ध २ उचित सम्पादन करके ॥ १ ॥ ३ आदि ४ श्राद्ध विशेष ॥ २ ॥ ५ अषाढ बदि पंचमी ॥ ३ ॥ ६ विदित ७ छत्र ८ चमरों से ॥४॥ ९ सभा में १० न्यौछावर ११ नजराना ॥ ५ ॥ १२ कर्णपुट से अर्थात् कानों के सड्डों में ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ १३ पहिले समय में ॥ ६ ॥

अष्ट८करे भगवंत१९५।३इम रचि निगमोदित राह ॥ १० ॥

॥

ए क्रम कारि कहियत अखिल, राजराज प्रभु राम२०३।४॥११॥

॥ घनाक्षरी ॥

रानी राजसिंहवारी भगिनी कुमार माऊ१९५।१,
नाम धनकुमारि१९५।१बरी जो पहिले१ बिबाह ॥
साक ख ख सत्रह१७००तनूज ताके पृथ्वीसिंह१९६।१,
जो भयो सो जियत दुरमास भयो नरनाह ॥
दूजीर्‍हरिकी सुता प्रतापगढ सीसोदनी,
भातुलादिदेवी१९५।२नाम व्याह्यो अधिके उछाह ॥
राजपुर तीजी३हरकुमरि१९५।३सनाम बड-
गूजरि बिबाह्यो फतैसिंह सुता रुचिराह ॥ १२ ॥
कल्यानकी कन्या ईडरेची रठ्ठउरि ऊंढा,
चोथी४कुमरानी नाथकुमरि१९५।४तदीय नाम ॥
भीम जमुनादि भानुदहर दुरलाभ नाशे ताको,
सुता पंचमी५बिबाह्यो गंगा१९५।५अभिराम ॥
नाथाउत चालुक प्रतापसुता छट्टी६नाम,
अमरकुमारि१९५।६सो बरी निज रिहानी गाम ॥
चंद्राउत नरहरी अमरसुता जो सप्तमी ७सो,
दीपकुमारि१९५।७ बिवाह्यो भाटखेरी ताम ॥१३॥
स्वसुरको नाम सो न जान्यो पुर अष्टमी८ पों,
कल्यानाहिं कुमारि१९५।८ बिवाह्यो जोधपुर जाइ ॥
चुंडाउत राजसिंहकन्या देवकुमारि१९५।९ बिवाह्यो,
नवमी९ पों पुरवेगम सुपर्व पाइ ॥

१ वेद के कथनानुसार ॥१०॥ २ हे राजाओं के राजा; अथवा कुंवर रामसिंह ॥११॥ ३ मातुल,देवी ४ प्रीति के मार्ग से ॥ १२ ॥ ५ पिपासिता ६ उसका ७ तहां ॥ १३ ॥ ८ श्रेष्ठ समय पाकर

लाडकुमरी१९५।१० सो प्रेमकुमरी१९५।१० दुनामवारी,
दसमी१०कबंध हरनाथकी सुता सुभाइ ॥
एगारहीं११ मल्हनादिवासी रट्ठउरि सदा-
कुमरि१९५।११ सुमेरुसाहिपुत्री वरी छक्क-छाइ ॥१४॥
सो सीसोदनी जो सुता सहस्रमल्लवारी बारहीं१२,
कुमरानी लाडकुमरि१९५।१२ वरी कुमार ॥
भाऊ१९५।१ के सुता इक१ खवासकी भई सो अन्न,
पूरना१ बिबाही रानाउत रघुनाथ दार ॥
आठों८ भगवंत१९५।३कै विवाह सुनि ए बे सबे,
जंपेजात राम२०३।४ नरनाह क्रमके प्रकार ॥
भाग्यवती१९५।१ जेठी१ जसकुमरि१९६।१ कनीकी प्रसू,
प्रमारी जु रामठेस भानुकी सुता सुढार॥१५॥
दूजी२ मंचहेरी फतमल्ल बडगुज्जरकी,
देवमति१९५।२ कन्या सो ही बख्तकुमारि१९५।२ नाम ॥
तीजी३ चंद्रकुमरि१९५।३ चालुक्य हरिकन्या चोथी४,
नष्ट जिहिं नाम बल्लनोति१९५।४सु बिबाही बाम ॥
कल्यानकी कन्या पट्ट पंचमी५ मऊके प्रांत,
रट्ठउरि राधा१९५।५ सुभ लग्न सो लही ललाम ॥
चंद्राउत उदय तनूजा तिम छट्ठी६ छत्र-
कुमरि१९५।६ बिबाहयो जाडभानुपुर भव्य धाम ॥१६॥
राघवकी कन्या सप्तमी७ जो जाइ रामगढ,
व्याहयो ब्रजकुमरि१९५।७ सनाम गोरि विंदबनि ॥
तामैं भई दूजी२ भगवंत१९५।३ कै तनूजा नाम,
कुमरि१९५।२ वरी सो रामपुर के महीप मनि ॥
रतनकबंधकी कनी जो हरकुमरि१९५।८,

॥ १४ ॥ १ रघुनाथ की स्त्री २ अब ३ कन्या की माता ॥ १५ ॥ १६ ॥ ४ पुत्री

बिबाही अष्टमी८ सो भगवंत१९५।३मह मंजु तनि ॥
भ्राता च्यारि४ ए इम कुमार हि बिबाहे क्रम,
बारह१२ छ६ अट्ठ८ पंच५ भूत सु उदंत भनि ॥१७॥
वर्त्तमान बात अब अन्वय मैं आनी जात,
भाऊ१९५।१भयो भूपति पिताको इम पट्ट पाइ ॥
सचिव सुसील सनमानैं उपधा मैं आनि,
राज्यके सम्हारे सब अंग दृढता दिखाइ ॥
घायलन पायो जब पाटवें तबहि तैसैं,
कामआये बीरन के पुत्र बकी बुलाइ ॥
ते१रु तिम घायल २ अघायल ३असेस आप,
नियत निवाजे बीर बाजे जसके बजाइ ॥ १८ ॥
धोलपुर धारन लगे १ जे धुर धारन सपिंड१,
असपिंड २ रु सगोत्र ३ असगोत्र ४ सूर ॥
घायल भये २ जे नहि घायल भये २ पै जे,
बिसेस बढि जूझे मुख्य मुख्य प्रतिघात पूर,
जूझे सतपंच५०० नाथ तिनमैं जितेक जानैं,
बिप्रा१दिक बीर जे अमुख्य हु कलाह क्रूर,
तिनकै तनूजनके बैभव बढाये भाऊ १९५।१,
ङ्ख६।१न अधीस ए बुलाइ सबही हजूर ॥ १९ ॥
सता१९४।१के सपिंड१ तूटे एकादस११ संगरमैं,
एक१अंगजन्मा१भ्राता३।४तीन३रु भतीज४।८च्यारि४ ॥
तीन३हि सपिंड१ भ्राता ३।११ सात७ असपिंड२ रु,
सगोत्र ३ दुव २तूटे असगोत्र ४ दस १०राचे रारि ॥

---

१ सुन्दर उत्सव फैलाकर २ भूतकाल का वृत्तान्त ॥ १७ ॥ ३ वंश में ४धर्म अर्थ कामादिक से आशय की परीक्षा करके ५ नैरोग्यता ॥ १८ ॥ १९ ॥१पुत्र

याही क्रम चांपत २सनाभि १ असनाभि २ रु,
सगोत्र३ असगोत्र४ इन्ह पीछैं वेदिहैं विथारि ॥ २० ॥
सता १९४।१के सपिंड१ ए व एकादस११ जानौं इहाँ,
इक१सुत भारत१जो ढारत गजन ढालें ॥
सूबे क्रम भ्राता मुहुकम१९४।५।२ज्यौं उदय१९४।६।३सूर१९४।७।४,
भ्रातृज गुमान१९४।८।५जोरावर१९५।१।६त्यौं कनक१९५।२।७ला-
ल१९५।३।८ ॥
ईटावा अधीस हिरदाउत२४।२०उदयसिंह१९४।१९,
बिट्ठल११३।१।१० रु माधो१९६।१।११ पूर१८८।३ मोकल-
१८८।४ प्रसैस्तिपाल ॥
ए व असपिंड२सात७सारन१९६।१ पितैनाति रायसिंह१९०।१।१,
नगराज१९१।१।२ पिता१ पुत्र२ तलवासवाल ॥२१॥
कल्यानसिंह१९०।१।३नवगामपति निम्माउत१२।८,
भाई नवरंग पोते८।४उभयरइहाँ अर्वाह ॥
खैरूनौं१ खजूरि२ पति हृदयनरायन१९२।१।४रु,
साँवल१९३।१।५सधीर अरि एनैं संहरन सीह ॥
हालूपोते४बंधु दुव२ डाभीपति हरिसिंह१९२।१।६,
ओवनअधीस दूजो२कनक१९१।१।७उदार ईह ॥
खीची१३हैं२सगोत्र३ जोध१ जुन्यापति गैरोलीस,
गोवर्द्धन२ ए व असगोत्र४दस१० जेत लीह ॥ २२ ॥
भाटी जैतसिंह१चंद्राउत्त मुहुकमसिंह२,
गोर सदानंद३ दहिया दुव२विजय २।४राम२।५ ॥
डाभीआसकरन६ कबंध चंद्रसिंह७ रूपसिंह२।८,
लालसिंह१९ दुव२चालुक रु झाला स्याम१० ॥

---

१ विस्तार से कहेंगे ॥ २० ॥ २ हाथियों के निशान को गिरानेवाला ३ दस्तावेजों (लिखावटों) का पालनेवाला ४ पोता ॥ २१ ॥ ५ कल्याणसिंह ६ निर्भय ७ शत्रुओं रूपी हरिणों को मारनेवाला सिंह ८ इच्छा ॥ २२ ॥

बिप्र१द्रुव२बीर जोगीराम१बलराम२च्यारि४,
लाल१।३हरि२।४रत्न३।५खेम४।६ए४बनिक३आये काम ॥
फतेनंद१।७कायथ गुमान१।८ऊदा२।९गुज्जर रु,
माली खेम१।१०नाथू२।११पज्जे४पंचक५याँकौं नाम ॥२३॥
जानौं अब जवन दलेलखान१अलीखान२,
दाऊद३रु रुस्तुम४सलेमखान५मानखान६ ॥
पीरखान७आजीखान८हैदर९रहीमबेग१०,
कुतब११करीम१२सेखकादर१३पहलवान ॥
तेरह१३ए नाम्नी खरे खग्गनकी धार खिरि,
स्वामी सत्रुसाल१६४।१के समीप परे अतिमान ॥
और गज१बाजि२चामर३दिन के चाकर,
अनेक ही परे पै उनके न जानैं अभिधान ॥ २४ ॥
इत्यादिक संकल परे जे जूझि पंचसत५००,
रीझ दै बिसासे पुत्र तिनके बुलाइ बीर ॥
पुत्र जिनके हुते न तिनकी तियन पाये,
स्वापतेयं जीवन लौं पुरस१ रु निवाह२सीर ॥
नारिहु हुती न जिनके तो तिनके निमित्त तीरथ,
प्रयाग१गया२आदिक निखिल नीर ॥
कौंकस१गिराइ दान२भोजन कराइ कवि,
लोकनके काव्यन सढाये धर्मधारी धीर ॥ २५ ॥
घायल२हु बीस२०जे, सपिंड१असपिंड२पंच५,
यौं त्रय३सगोत्र३सप्तदस१७असगोत्र४आइ ॥
तीजो३इंद्रसाल१९४।२को तनूज रनछोर१९५।३।१दूजो२,
गोपालासिंह१९५।२।२सुख्य१वैरीसाल१९४।२को बुलाइ ।
मुहुकम१९४।५स पुत्रसतेग१९५।६।३जगमोहन१९५।७।४हैर२,

१शद्व ॥२३॥ २ पहलवान् ३ नाम ॥ २४ ॥ ४ धन ५ दाह ॥ २५ ॥ ६ गोपालसिंह

छठो६ अरु सप्तम७सराहि मन मोदछाइ ॥
कका महासिंह१९५।५रु तदीय सुत जेठो१मान१९५।१६,
ए खट६सपिंड१न मैं मुख्य बढते बनाइ ॥ २६ ॥
याही क्रमसे सजे चउदह१४सपिंड१इहाँ,
जनक के काका हरि१९३।३को सुत बडो१सुजान१९४।११
याको भ्रात चोथो४अजबेस१९४।१२रु तनय याको,
जेठो१गजसिंह१९५।१३कुलपट्टप नेय निधान ॥
पट्टप प्रयाग१९४।१४नाती हृदयनरायन१९२।२को,
जेठे१रनछोर१९५।१५सुत संजुत प्रथितपान ॥
भाई सबलेस१९४।१६याको काका बलराम१९३।१सुत,
काका बिजैराम१९३।३सुत घासीराम१९४।१७मतिमान २७
रतन१९२।२के भ्राता के सोदास१९२।३को पिनाती मुख्य
सातल१९५।१८सधीर सनमान्यौं सतकार ठानि ॥
रायमल्ल१९१।३तनय कुपुत जेठो१रामचन्द्र१९२।१,
ताको मुख्य१नाती अजबेस१९४।१९हु अधिक मानि ॥
सुर्जन१९०।१के भ्राता अखैराज१८९।२के पिनाती दोइ२,
जेठो१रूपसिंह१९३।१।२०दूजो२साखा बखतेस१९४।१।२१जानि॥
सुर्जन१९०।१को चोथो४भ्रात राम१८९।४को पिनाती मुख्य१,
मान्यौं त्यौं मुकुंद१९२।१।२२हु प्रबीरन मैं पहिचानि ॥ २८ ॥
अर्जुन१८८।१के दूजो२भ्रात भीम१८८।२को पिनाती मुख्य१,
प्रेमसिंह१९३।१।२३नाम ताको वैभव१पटा२बढारि ॥
अर्जुन१८८।१के तीजे३भ्रात पूरन१८८।३को नाती मुख्य,
हिंडोलीस नाम रुक्मंगद१९४।१।२४बली बिचारि ॥
निकट छ६बंधु अरु दूरयौं चउदह१४,
सपिंड१सब ही ए बीस२०धायन परे निहारि ॥

१ उसका पुत्र ॥ २६ ॥ २ नीति रूपी धनवाला ३ प्रसिद्ध बलवाला ॥२७॥२८॥

रामें२०३।४दिनदुल्लह सुनौं वें असपिंड२पंच५,
घायन परे जे मुगलन की मरोरि मारि ॥ २९ ॥
भूपति सुभांड१८६।४को जो भ्राता अखैराज१८६।१वडो१,
स्वामिद्रोह ठानि खोयो जाकै कुल स्वामिधर्म ॥
तामैं मुख्य१सूर सिवसिंह१९४।१।१असपिंडन,
पाये घाय सत्रुनके सस्त्रन विदीर्ण वर्म ॥
लालाउत१०।६जैतसिंह१८५।१वंस अवतंस मान१९१।१।२,
डुंगरपउत्त७।३वल्लू१९१।१।३कलिमैं कृतान्त कर्म ॥
भीम१९३।१।४हरपालपोता५।१हाथाउत्त३धीर१९४।१।५अस,
पिंड२पंच५घायल ए मर्द्दक मुगल६मर्म ॥ ३० ॥
ए त्रय१भदोरिया६सगोत्र३चहुवान अब,
भंडपुरभूप को भतीज सत्रुसाल१नाम ॥
दूजो२ अभैपुर को अधीस्वर मुकुंद२तीजो,
मंडाउरी सासक जो सो पैं चंद्रसिंह३ताम ॥
अब असगोत्र२सुनौं सोढा वनमालीदास१,
साला रविमल्ल३स्वीय चालुक्र जनेन जाम ॥
मोहिल मुकुंद३प्रतिहार त्यौं परसुराम४,
झाला रत्नसिंह५रु विहारीदास६धीरधाम ॥ ३१ ॥
मानकुल मंडन त्यौं कूरम अजवसिंह७,
तोमर प्रतापसिंह८जादव विजयपाल६ ॥
सक्रवाल राघव१०कवंध सेरसिंह११ रु,
प्रमार जयसिंह१२हरी सैंगर१३कलहकाल ॥
वाँधूगढ भूपको भतीज भीमसेन१४वंस,

---

१ ऐ रामसिंह २ अब ॥ २९ ॥ शस्त्रों से फटे हुए ३कवचवाला ४ युद्ध में यम राज के समान कार्य करनेवाला ॥ ३० ॥ ५ तहां ६ सोलंकी वंश में जन्म लेनेवाला ॥ ३१ ॥ ७ युद्ध में यमराज

चालुक बघेल वीर डाहन गजन डाल ॥
भाटी रतनेस१५अडगूजर कनक१६वैस,
वंसी बलवंत१७बीर बीरतरु आलवाल ॥ ३२ ॥
ऐसैं बीस२०घायल सपिंड१असपिंड२ पंच५,
तीन३त्यों सगोत्र३सप्तदस१७ असगोत्र४आनि ॥
भूसुर सदासिव१जनेस जलधारी धाय,
भाई सिवराम१सुत भारत१९५।४को ठानठानि ॥
इत्यादिक स्वस्थ भये सप्तसत७००घायल,
बुलाइ कैं निवाज भट भावसिंह१९५।१भूमीजानि ॥
घायल भये न जे बिसेस बढि जुज्झे तेहु,
सुनिये समस्त मुख्य मुख्य पट्टुला प्रमानि ॥ ३३ ॥
राम२०३।४नरनाह तिनमैं हु जे सपिंड१अस-
पिंड२ऐसैं जानहु सगोत्र३असगोत्र४ जोध ॥
जेठो१इंद्रसाल१९१।२कोतनूज गजसिंह१९५।१।१तथा,
आनंदादिसिंह१९५।५।२सुत पंचस५ रिपुन रोध ॥
बिष्णुसिंह१९५।१।३जेठो१राजसिंह१९४।४को तनूज बीर,
दूजो२मधु१९५।२।४बैरिन बिदारन बिसदबोध ॥
दूदाउत२२।१८मुख्य१प्रेम१९४।१।५काका अनरेस१९३।१।६सुत,
नाती रायमल्ल१९२।३को त्यों केसरी१९३।१।७कलह क्रोध ॥३४॥
सूर सुरतान१८९।१को पिनाती रामसिंह१९३।१।८मुख्य,
आठ८ए सपिंड१असपिंड२अब जंपेजात ॥
चुंडाउत१४।१०मुख्य१नसे सेसनमैं मुख्य१लाल१९३।१,
ऊदाउत१५।१७मुख्य१अखैराज१९३।१।२तिम खग्ग ख्यात
सारन१९६।१के अन्वय अधीस१जसवंत१९२।१।३नव-

वीरता रूपी वृच्छ का१थांवला॥३२॥१ब्राह्मण२राजा का जल रखनेवाला (पाणे-री) ४ नैरोग्य ५ भूपति ॥३३॥५आनन्दसिंह ७उज्वल ज्ञानवाला ॥३४॥ ८ वंश

ब्रह्म१९५।२को पिनाती वीर बिट्ठल१९१।१४जस जमात ॥
बंस नवरंग१८३।२के को नाथ भट नाथूराम१९२।१५,
लाडपुरवारो जाहि संगर सदा सुहात ॥ ३५ ॥
बैरिन बियाती थिरराज१८३।३नाती रामचंद्र१९१।१६,
नाम भगवानदास१९२।१७पट्टप१तनै उपेत ॥
सप्त७असपिंड१ए बली अब सगोत्र३सुनौं,
देवरा९दलेल१हरि२खीर्ची१३संभु३समवेत ॥
टंक५गजमाल४च्यारि४सूर ए सगोत्र३अस-
गोत्र४अब जानौं जुग२जादव नवल१नेत२ ॥
भाटी मालदेव३कृष्ण४कूरम प्रमार पता५,
एते असगोत्र४पंच५खग्गन खिल्हारी खेत ॥ ३६ ॥
इत्यादिक आपुनैं दुर्जन दलनहार,
राज्यरखवारे ते बुलाइ सनमान सूर ॥
आस्वासन ईसको समरतं पैं समुझि जानि,
हानिन सतां१९४।१की भो प्रजाहु कै प्रमदपूर,
आयो इन आगरा कुमार दारा४०।१साहनैं सो,
पैठन दयोन कह्यो दिल्ली रहि मोसौं दूर ॥
जो बनैं तो जूझि नतो औनें यह ऊझि बालि,
काहूसौं न बूझि कालैं काटहु कितहु कूर ॥ ३७ ॥
बरज्यो घनौं मैं तब तो तैं अतिबीर बनि,
जंग जुग२हारे सब सेना अपनी नसाइ ॥
आगरा रहै तैं अब अनुज३तिहार तजि,
मेराहू बिसास कछु करिहै आनिष्टआइ ॥
दिल्ली जो टिकै न तो जितोक धन जाइसकै,

१ पाटवी पुत्र,सहित २ साथ ॥ ३५ ॥ ३ पूर्ण हर्ष ४ युद्ध करके ५ घर ६ छोड़कर ७ हे मूर्ख कहीं जाकर समय बिता ॥ ३६ ॥

सो लैजाहु मैं न जिहिँ भो न मन तेरे भाइ ॥
दारा४०१यौं कहाई बनैं दिल्ली टिकिबो न अब,
जानिहो अभय जहाँ बचिहौं जियत जाइ ॥ ३८ ॥
भाखि इम लै धन अभीष्ट दारा ४०१ भजि,
होइ मरुदेस मैं लग्यो सो पंचनंद१ मग्ग ॥
जोलौं कछवाह१ गोर२ जवन३ न जुरे भये,
ता सुत सलेम ४११ सौं बिसासि राख्यो शाहि बग्ग ॥
पीछैं जो पलाइ३त है श्रीनगर सासकै४ सौं,
पाइहै पनाह ज्यौं उदंत५ सु कहैंगे अग्ग ॥
पाइ जय पापी अवरंग ४०३ रु मुराद ४०४ इत,
आये आगरा पैं गूढ तख्त के लोभ लग्ग ॥ ३९ ॥
सुतन समीप सुत आवत उभय साह,
यौं कहि पठाइ मुरि जाहु तुम स्वस्व धाम ॥
कपट करंड इन दोउ७न कहाई एह,
खानैंजाद आये एक चुंबन चरन काम ॥
आयो सुनिबेसैं खेद प्रभुके असाध्य यातैं,
भेजिहो दरस दे तो गिनिहो हमैं गुलाम ॥
यौंही भेजिबेसैं खीज खोली इत जानीजात,
शंपरमिटाइ देहु तातैं तात तिम ताम ॥ ४० ॥
ऐसीदेत अरजी समीप आगराके आइ,
पर१भट भेदि केक तँहँ तँहँ स्वीय२ राखि ॥
साहसौं कहाई आप दारा ४०१ कौं द्रविनँ देकैं,
भेजते नहीं जो ऐसैं अंगजतौं अभिलाखि ॥

॥ ३८ ॥ १ पंजाब के मार्ग २ भागकर ३ श्रीनगर पर आज्ञा करनेवाले से ४ शरण ५ वृत्तान्त ॥ ३९ ॥ ६ आपने अपने घर ७ कपटके करंड (छबड़ा) अर्थात् कपट का (टोकरा) पात्र ८ सन्देह ९ तहां ॥ ४० ॥ १० धन देकर ११ पुत्रपनकी

तो तो हमैं संसय न होतो पर यातैं अब,
*प्रानत्रान जतन कियोहै प्रभुको †भै भाखि ॥
याको आप धोखा जिन आनहु दरस दैकैं,
पुत्रन पठावहु ‡सनातन सनेहसाखि ॥ ४१ ॥
साह कहि पठई कही मैं तब दारा सन,
अनुज१तिहारे मोपैं पूछन कुसल आत ॥
मानी मूढ तोहू मम सम्मति न मानी खल,
जूझ्यो जाइ जाइ कैं अवंती२ धोलपुर ख्यात ॥
नाहक अनीकं आपुनैं ही दुहुँ२ओर के जे,
वालिस विनासे तातैं सो२न सुत मैंरन तात ॥
याही तैं बिडारयो पुर पैठन दयो न द्रव्य,
कछु न दयो मैं कोन कहत वृथाही बात ॥ ४२ ॥
पुत्रन२कहाई सो हु सुनि रु पिता सौं पीछी,
अबहु सलेम५।१प्रभु सासन सौं अज्जआहि ॥
सत्रुसुत सौं जो प्रीति रावरी न व्हे तो आप,
दारा४०।१के निदान क्यौं न तबही बिंडारो ताहि ॥
दारा४०।१संग द्रव्य दैकैं अब जो नटत आप,
यातैं भय धोखा रहैं वाकरन चित चाहि ॥
अंतर प्रकोष्ठलौं जे चोकी रावरी है उहाँ,
आपुनी उतीही हम राखहिं नय निबाहि ॥ ४३ ॥
बिगरतवेरं भली१भासत विरुद्ध२बात,
यातैं करी सो सब प्रमादी साह अंगीकार ॥
जान्यौं जैसे तैसे दुष्ट मिलिहु लुरैं तौ ताज१,
तखत२बचाइ देखिलैहौं पुनि जोरदार ॥

*प्राण रक्षा का †भय कहकर ‡प्राचीन स्नेह रखकर ॥४१॥ १ सलाह २ सेना ३ सूर्य ४ निकाला ॥ ४२ ॥ ५ हमारे शत्रु दाराशिकोह के पुत्र से. ६ कारण ७ निकाले ८ भीतर के द्वार पर ९ नीति ॥ ४३ ॥ १० समय

आपुनैं१प्रबीर पलटाये जे न जानि उन,
माँहि उतनैंही राखि रिपुनके२ रखवार ॥
अंतर प्रकोष्ठ अंत *छलिनके छंदकरि,
स्वल्प रचि †संसद बुलाये दुव२ही कुमार ॥ ४४ ॥
अंतर ‡खलज आइ पैठन लगै न उहाँ,
पूछत कही यों क्यों व पुत्रन मैं धोखा पूर ॥
चुंबन चरन बाबा ज्यान के अधीन इहाँ,
स्वीय बालबच्चे हम लाये सब ही हजूर ॥
धावरन अंक पातैं एहु सिसु ऐहैं भय,
प्रानको हम हु तातैं त्रायक तजैं न दूर ॥
ऐसी भाखि ठहरि प्रकोष्ठपैं कछुक काल,
सिबिरं सिखाइ राखे सैन सूँ बुलाये सूर ॥ ४५ ॥
ड्योढी साहजादनके बढत बिसेस बीर,
जैहैं मिलैं जालम प्रमादी इम साह जानि ॥
भाखी सावधान रन अंकनं मैं आनदेहु,
द्यौं जिते सभामैं तिते सुतन के संग ठानि ॥
सासन सु पाइ अवरंग४०।३रु मुराद४०।४उभैर,
पुत्र१न लै आगैं त्यौं तेसुत्र२न को तोमं तानि ॥
पीठि दै प्रजाकौं दुव२दुष्टन चरन चुंबे,
अश्रुन उपेत ठहे रुमालसन बंधि पानि ॥ ४६ ॥
दै दै उपालंभ साह ए दुव२लगाय इम,
लेत दृग लेत सब सिसु हु लगाइ उर ॥
भाख्यो अब जाहु नेक निपुन सुपुत्र तुम,
दारा४०।१ज्यौं करो त्यौं करिहो न धारि धर्म धुर ॥

*छलियों के आधीन करके †छोटी सभा रच कर ॥४४॥ ‡भीतर के द्वारपर १ बाउओं की गोदों में २रक्षकों को ३डेरे में ॥४५॥४गोदों में ५कच्चों को ६समूह ७ सन्तानों को अपनी पीठ पीछे रखकर ८हाथ ॥४६॥ ९ओलंभा १०नेत्र मिलते ही

सुनि अवरंग४०।३कही चुंवते चरन हम,
च्यारिदिनपै भो छली रावरो ही चित्त *छुर ॥
तो ए बालवच्चे सब जिंत्र मैं मिलावहु हमैं,
तो जानदेहु है अभीष्ट हमैं प्रान१‡पुर२ ॥ ४७ ॥
चरनन चुंवि अवरंग४०।३कहि ऐसैं ऊठि,
अश्रुन दिखाइ आयो प्रथम१§प्रकोष्ट पर ॥
आवत हि दोउरन ¶बिसासके बुलाये हुते,
ते सब पठाये कहि साह डारो कैद घर ॥
एतेमैं मुराद४०।४ हु सवेग उठि आयो मिलि,
डाकिन प्रकोष्ठ रुपि तापैं डारयो एक डर ॥
साहके जिते हे तिन सो दस१० गुनित दोरि,
पकरन पैठे मेरे पुत्रनके पापपर ॥ ४८ ॥
सिसुन बचाइ गहिलीनौं इम साह तिन,
पाके१ हुते ताके ते खिरे हाँ झारि तरवारि ॥
नमि नमि काचे२ साहजादन सौं रांचे धरा१,
धाम२ धन३ जाचे तिन्हैं साचे मिले सुखकारि ॥
उज्झि जयसिंघ१ अनिरुद्ध२रु दलेल३ इत,
साह रोक्यो सुतन सलेम ४१।१ भज्यो मनमारि ॥
श्रीनगर सासकके सरन गयो सो पीछैं,
ताहि गहिदेहैं सो बिसासघात बिसतारि ॥४९॥
एक१देह इहाँलौं अवरंग ४०।३ रु दारा ४०।४ उमैर,
पकरि पिताकौं दयो काराँनाम धाम धरि ॥

* छुर (लीच्य) † बांधी में ‡ नगर अर्थात् हमारा प्राण और हमारा नगर ही हमको चाहिये ॥ ४७ ॥ § खाश कोठी पर ¶ विश्वासवाले सेवकों को १ उन मनुष्यों को लानेवालों ने ॥ ४८ ॥ २ पक्के विचारवाले बादशाह के सेवक थे ३ शाहजादों के रंग में रंगे ४ जयसिंह आदि नीचे लिखेहुओं को छोड़कर ५ आज्ञा चलानेवाला (हाकिम) ॥ ४९ ॥ १ इस समय तक ७ कैद के घर में

यातैं जयसिंह १ अनिरुद्ध२ रु दलेल३ दुव२,
बंधनसौं सूची हम कांकौंगिनैं साह करि ॥
अब अवरंग ४०।३ लै मुराद ४०।४ हिं विजन बोल्यो,
कैसीकरिहैं बँ लिखी कूरम तो पाप परि ॥
ऐसी कहि ताहि पत्र औरहि दे आप लघु,
बाधो मिस आयो छली घेरनैं को घाट धरि ॥ ५० ॥
दूजे२ द्वार आपुनैं भरोसाके असेस भट,
भेजिके मुराद ४०।४।१ हिं गहाइ पापी पुत्र२ जुत ॥
कूटमंत्रि निर्दय निसंक करि कैद तेहु,
ग्वालेरके गढमैं पठाइदये द्वै२ हि हुत ॥
आपुनैं पिताकौं आगरेही राखि कारा अब,
आप भयो साह व्है निरंकुस निखिल नुंत॥
दिल्लीपुर जाइ पीछैं नृप१ रु नबाब२ सब,
बेगहि बुलाये अवरंग ४०।३ तीजे३ साहसुत ॥ ५१ ॥
जब जयसिंह१ अनिरुद्ध२ रु दलेल३ एहू,
सैदाबाद सौं चढि कैं दिल्ली गये वेस्य बनि ॥
भूमिपति भाऊ १९५।३।१ गयो बुंदी तैं सम्हारि सेना,
आयो जसवंत२ जोधपुरतैं खलखैखनि ॥
गो इत मुकुंद १९४।१ सुत कोटातैं जगतसिंह १९५।३।३,
इत्यादिक औरिज१ मलेच्छ२ जुरे तोरैं तनि ॥
आमैरअधीसकौं हजारी एक१००० को अधिक,
मुनुसब दीनों रुपात कीनों मानवंस मनि ॥ ५२ ॥

१ पादशाह को कैद करनेवाले औरंगजेब और मुरादबख्श से पूछा कि हमें २ किसको पादशाह जानैं ३ मुराद को एकान्त में लेकर ४ अब ५ लघुशंका करने के मिससे ६ मुराद को घेरने का घाट पकड़कर ॥ ५० ॥ ७ खोटे मंत्री ८ पौत्र ९ कैद में १० सब से स्तुति पाकर ॥ ५१ ॥ ११ आर्योंका वेषकर १२ दुष्टता की खान १३ आर्य १४ समूह ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

उत्तारन[1]जुत आसमैं, उपदा[2] गज[1] हय[2] आदि ॥
सबन भेट किय साहकों, पहिलैं[3] क्रम संपादि ॥ ५३ ॥
तदनंतर साह हु तहाँ, समुचित सबन समप्पि ॥
इक्कसहँस १००० मुनसब अधिक, इम जयसिंह[1] हिं अप्पि॥५४॥
कुछि निकट जसवंत[2] वलि, अद्भुत तुरग एक॥
स्वकर साह तस पग्ग सो, रक्ख्यो हठ अँतिरेक[4] ॥ ५५ ॥
कहिय बिहसि तैं नृप कहिय, पटकि कंठ अतिप्रानँ[5]॥
अवरंग४०।३ हि गहि आनि हौं, मुद[6] अब तुह मुखमाँ न ॥५६॥
यह भजियो उज्जैनितैं, त्रपा[7] दूर परि त्रास ॥
गहीके चाकर गदिय[8], प्रभु अधीन अब पास ॥ ५७ ॥
याहि रीझि इक[1]इक[2]अधिक, दुव[1]दुव[2]गज[1]हय[2] दत्त[9] ॥
इक्क[1]खिलत रु जानी न उर, बद्लान[10] भावी वत्त ॥ ५८ ॥
भजिबे[1]करि रीझतभयो, वा कारन कछु ओर[2]॥
वा लुटिबे[3]रखोर इम; मन्न्यौ गिनि भटमोर ॥ ५९ ॥
इम चतुक्क[4]क्रमतैं अधिक, माऊ१९५।१[1]नृप किय भेट ॥
जिन्ह नाम हु जँहँ गढ गिरे, फते मुबारिक[1]फेट ॥ ६० ॥
गजराज[2]रु तिम मानगज[3], संग्रामादिक[12] सूर[4]॥
उपदा[13] भिन्न रु भिन्न ए४, गैवँर[14] डालगरूर ॥ ६१ ॥
कीनौं पंचम[5] जयंकलम[5], उपदा क्रम अनुसार ॥
सब रक्खि रु दिय जो मुनहु, ऐसो साह उदार ॥ ६२ ॥

१न्यौछावर २नजराना ३पहिले करते थे यह क्रम संपादन करके ॥५३॥५४॥ ४ अतिशय हठ करके ॥ ५५॥ ५ अत्यन्त बल के साथ कंठ में कपान डालकर ६ यह परम शोभा अब तुम्हारे मुख पर नहीं है ॥ ५६ ॥ ७ लज्जा ८ कहा ॥ ५७ ॥ ९ दिये १०आगे आनेवाले समय में पलटेगा यह वार्ता नहीं जानी ॥५८॥ उज्जैन के ११ युद्ध से भागने के कारण ॥ ५९ ॥ ६० ॥ १२ संग्रामशूर १३ नजराना जुदा किया और ये चारों ही जुदे नजर किये १४ हाथी ॥६१॥६२॥

सहससत्त७००मुनसब१सहित, इभ२हय३प्रमुख उपेत ॥
पाइ एकदस११परगनौ४, खिरयो सता१९४१ रनखेत ॥ ६३ ॥
गद्दी को चाकर गिन्यौं, जो भजिगो जसवंत ॥
जो तुट्टयो सत पंच५००जुत, सतसप्तक७००छतसंत ॥ ६४ ॥
गद्दीपति तंत्र न गिन्यौं, सता१९४१नृप सु अतिसूर ॥
इभ चउ४दिय भाऊ१९५१अधिप, जे पुनि रक्खि हजूर ।५६।
इती अधिक उपदा हु इहिं, रक्खिहु प्रत्युत रुट्ट ॥
पहुके मुनसब१परगनौं२, दुव२हि घटाये दुष्ट ॥ ६६ ॥
पहिलै मुनसब१परगनौं२, सता१९४१लये भंजि साह ॥
आगस बिनु ओरंग४०१३ए, रुट्ठि लये खलराह ॥ ६७ ॥
सो सब क्रम१उद्देस२सह, अग्रिम किरन उदंत ॥
कहियत अब सुनिये कछुक, महिप राम२०३१४मतिमंत॥६८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-भूपभावसिंहचरित्रे भावसिंहबुन्दीसिंहासनाधिरोहणविवाहादिकथन १, धवलपुरसमरहतशस्त्रक्षतवीरतारणविधातृगणन २, यवनेन्द्राप्रसाददाराशिकोहपञ्चनदप्रान्तपलायन ३, कपटरचनया यवनेन्द्रान्तिकप्राप्तकुमारौरंगजेबमुरादतद्बन्दीकरण ४, कीलितमुरादौरंगजेबयवनेन्द्रीभवन५,पूर्वाधिकैकसहस्राश्ववाराधिकारप्रदानपूर्वक

१घायल॥६४॥२अधीन ॥६५॥३उलटा क्रोधित हुआ ॥६६॥४बादशाह का सेवन करके ५बिना अपराध ॥ ६७ ॥ ६ अनुसंधान सहित ७ अगले मयूख में ॥६८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में भावसिंह का बुंदी की गद्दी पर बैठना और विवाहादि का कथन१ धोलपुर के युद्ध में मरनेवाले, घायल होनेवाले और वीरता से युद्ध करनेवालों की गणना२ बादशाह की अप्रसन्नता से दाराशिकोह का पंजाब की ओर भागना३ कपट की रचना से शाहजादा औरंगजेब और मुरादबख्श का बादशाह शाहजहां के पास पहुंचकर उसको कैद करना४ मुरादबख्श को कैद करके औरंगजेब का बादशाह होना ५ जैपुर के राजा जयसिंह को एक हजारी मनसब अधिक देकर उसको और जोधपुर के राजा जसवन्त

जयपुराधीशजयसिंहयोधपुराधीशयशवन्तसिंहप्रसादापादन ६, बुन्दीन्द्रभावसिंहाश्ववाराधिकारन्हासवर्णनं प्रथमो-मयूखः ॥ १ ॥

आदितोऽष्टविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मुनसब इक्कहजार१०००मित, जयसिंह१हिँ दिय जत्थ ॥
गद्दीपति तंत्रे सु गिन्यौं , तोसो समुचित तत्थ ॥ १ ॥
दारा४०।१कुमर हिँ पिठि दै, जो रन तैँ जसवंत२ ॥
गो भजि तिहिँ गज१हय२द्वि२गुन, सहतुरग३दिय संत ॥२॥
अधिक निवेदे च्यारि४इभ, सो भेटहु लहि साह ॥
भाऊ१९५।१ प्रति रूष्टहि भयो, रंच न समुझ्यो राह ॥ ३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अल्पहि रीझ सता१९४।१मन आये, पहिले अठ८परगनाँ पाये ॥
टौंक१मालपुर२केकरी३हु तिम, अरु गढहथनी४हिंगुलाज५इम।४।
भैंसोदा६रु पानगढ७भासक, केथोली८बलि सुवलि प्रकासक ॥
अखेसेन१मुहुक्कम२खिच्ची१३अरि, सोदर द्वै२हि तहाँ मित संहरि५
तिनकौं जित्ति भीमगढ९पत्तन, लयो नवम९लरि धीर धराधन ॥
गढमऊ१रु वाराँ२पहिलैं गत, लये साह तब अटक न लंघत ।६।
मिलि अवरंग४०।३मुराद४०।४इक्क१मन,सब आयेउज्जयिनी जुज्झन
पुव्वहि तब सु मऊ१पुनि पायो, अरु बुंदी हि पटा तस आयो ।७।
जब औरंग४०।३मुराद४०।४हि जित्ते, बिसाँलाहि इतके भट बित्ते॥
दारा४०।१।१सहित जियन मन दिन्नौं, कासिमखान पलायन

सिंह को अपनी प्रसन्नता में लेना ६ बुंदी के राजा भावसिंह का मनसब घटाने के वर्णन की प्रतिज्ञा का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२८ मयूख हुए ॥

१ आधीन ॥१॥२॥ २हाथी ३क्रुद्ध ॥३॥४॥ ४ नाश करके ॥ ५ ॥ ५भूपति६अटक नदी के पार नहीं जाने के समय ॥६॥ ७ ॥ ७ उज्जैन के युद्ध में ८ भागा ॥८॥

किन्नौं ॥ ८ ॥

बुंदी अधिप सता१९४।१तब बुल्ल्यो, तस आदर बढतो इम तुल्ल्यो।
प्रथम लयो सु दयो बाराँ २ पुनि, संग अधिक नव ९ प्रांत लेहु
सुनि ॥ ९ ॥

बाराँ२जुत ते दस१०हि बखानत, जहँ बाराँ१पहिलो१ सब जानत
बहुरचो खैराबाद२बरोद३हु, लै कोटासन लय३हि दये लेहु ॥१०॥
अप्पन तंत्र चउम४दिय आगर४, सारंगपुर५भेलसा६सागर७ ॥
बालाभेट८ सिरौंभ९ द्रंग बलि, छबरा१ अप्प्यो दसम १० रीझ
छलि ॥ ११ ॥

दस १० ए मऊ १ सहित एकादस११, बीस २० भीमगढ १ जुत
पहिले८बस ॥
नृप परगनाँ इते२०क लहे जुत, सप्तहजारी७०००मुनसुब संजुत१२
नृप भाऊ१९५।१गुन साह न धारे, अब ए बीस२०हि प्रांत उतारे
हो जब मुनसब सप्तहजारिय ७०००, अबहु सह्रचउसहँस४५००
उतारिय ॥ १३ ॥

अह्रसहित दुसहँस२५००मुनसब इम, जिहिं भाऊ१९५।१कै रक्खि
इतर जिम ॥
सहँससह्रदुव२५०० मित रनसंतहिं, भनि मुनसुब दिन्नौं भगवंत
१९५।३हिं ॥१४॥
दिय तिहिं संग मऊ१ बाराँ२ दुव२, सम आदर किय द्वैरहि सता
१९४।१ सुव ॥
भाऊ १९५।१ कै कछु अधिक रही भुव, होइ तदपि स्वानुज स्व
तुल्य हुव ॥ १५ ॥

॥ ९ ॥ १ शीघ्र ॥ १० ॥ २ अपने अधिकार में ३ रीझ में उमंग कर ॥ ११ ॥
४ स्तुति योग्य ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ढाई हजार ६ अन्य राजाओं के समान ७
युद्ध में श्रेष्ट जानकर ॥ १४ ॥ ९ शत्रुशाल के पुत्र ९ खेद की बात है कि १०
छोटा भाई अपने बराबर होगया ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

मुनसब१मुनसब२माँहिं सौं, देस१माँहिं सौं देस२ ॥
भिन्न रावपद३पाइ भो, इम भगवंत१६५।३इलेस ॥ १६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सहँस दुसद्ध२५००रक्खि सुनसव सब, इम किय अल्पविभव भाऊ १९५।१ अब ॥
लुब्ध सद्धचउसहँस४५००छिन्नि लिय,दुव२दल३ सहँस२५००तावि च उक्त हिं दिय ।१७।
पुनि यह द्रुतँ सु रावपद३पै हैं, जेठे१सौं हु बहुरि बढिजैहैं ॥
पंचसहँस५०००दल२५००बढि इम ए पहु,लखि जेठे१सम अनुज३।२ कानि लहु ॥ १८ ॥
कहि अब रावपद २ हु सम करि है, साह १ कथित २ दिस हित अनुसरिहै ॥
खल सुनसबदुवसहँस२००० रह्यो खिँल, किन्नौं स्वबल खालसा सो किल ॥ १९ ॥
अग्गैं सता १९४।१ प्रांत अष्टक८ इम, जित्ति भीमगढ९ नवम ९ लयो जिम ॥
बारौं १ मऊ २ गई सु लई बलि, क्रमतैं दई मऊ १।१० पहिले कलि ॥ २० ॥
प्रांत सता १६४।१ कोही यह १० ही पैर, दयो माधवहि १९३।२ साह जथा दैर ॥
तस संगहि बारौं २।११ हु गई तिस, जब नव ९ संग दई सूचित

---

१ भूपति ॥ १६ ॥ २ लोभ करके ३ दो और आधा (ढाई) ॥ १७ ॥ ४ शीघ्र ५ पांच हजार का आधा आधा ६ शीघ्र ॥ १८ ॥ ७ बाकी ८ निश्चय ॥ १९ ॥ ९ युद्ध में ॥ २० ॥ १० परन्तु ११ भय से ॥ २१ ॥

जिम ॥ २१ ॥

मिलिबरोद१बाराँ२आगर३*मुख,खैँराबाद४सिरोँज५†सुधनसुख॥
इक घटिबीस २० स खिल इत्यादिक, बीसम २० तत्थ भीमगढ
९।२० आदिक ॥ २२ ॥

ए भाऊ१९५।१ सनसब२०हि उतारे, पुनि मऊ१।१० रु बाराँ२।११
‡बट पारे ॥

ते दुव२ अप्पि स्वभट भगवंत १९५।३ हि, सुरि साह रु सन्नि न
कछु मंतहि ॥ २३ ॥

रहे भीमगढ९।२०जुत अट्ठारह१८, ते सब प्रांत खालसा करि तह ॥
मुनसब कथित तुल्य दै मित मित, इत भाऊ १९५।१।१ भगवंत
१९५।३।२गिन्यौं इत ॥२४॥

मऊ१बहुरि बाराँ२ खल मंतै सु, अधिप भयो लहि जुग२ भगवंत
१९५।३ सु ॥

कही इम न मैं अग्रज१किंकर, अग्रज२को किम सहों अनादर२५
बुंदी सब हड्डन जननी बर, जनन्यौं मैंहु अबहि जिहिं जाठर ॥
किम चंडातक तस कतराऊँ, प्रभुसौं भिन्न नई भुव१पाऊँ ॥२६॥
भिन्नहि तिम मुनसुब लहि भासौं, प्रसू सुजस मैं पुत्र प्रकासौं ॥
सक्तहि हजरत भिन्न समर्प्पन, अप्पन कछु अप्पन हित अप्पन
अग्रज१भुव१मुनसब२चाहि अक्खय, मोहि इतर अप्पैं बहु बसुमय
सु मैं तदपि न बढौं अग्रज१सन, मन्नौं सदा मुख्य स्वामीसन ।२८।
पुहवी१कछु पद२कछु घटिपाऊँ, अग्रज१सासन स्वसिर उठाऊँ ॥
सता १९४।१ तनयंपन तब मम सुधरैं, कित्ति मदीय सुकवि अ-
तुल करैं ॥२९ ॥

---

*आदि †श्रेष्ठ धन ॥ २२ ॥ ‡पट्ट कर दिये १सलाह ॥२३॥ २थोड़ा थोड़ा ॥२४॥ ३दुष्ट विचार से ॥२५॥ ४उदर में ५लहँगा ॥ २६ ॥ ६ माता ७ समर्थ ८ देने में ॥ २७ ॥ ९ धनमय ॥ २८ ॥ १० शत्रुशाल का पुत्रपन ११ मेरी कीर्ति ॥ २९ ॥

जन्मसफल तो मैं मम जानौं, *प्रभु१प्रभु प्रभु२मम उचित प्रमानौं
भाऊ१९५।१ अनुज तबहि मैं †भूतल, विदित रहौं जस‡खट्टि बाहुबल ॥ ३० ॥
पै प्रभु राम२०३।४न यहहु प्रमानी, जिहिँ सठ स्वीयँ वृद्धि सुभजानी
मति सोधी भाऊ१९५।१अग्रज१मम, सो क्यौं रहैं दुष्ट०हैं मोसम॥
कछु ताहू सौं तिक्ख निकारौं, प्रभुता बंटि ताहि तनु पारौं ॥
सुहि गिनि मुनसब१देस२सुहाये, अग्रज१के इहिं खल उतराये।३२।
तउन प्रांत बीस२०हि पाये तिहिँ, जुग२मऊ१रु बारौं३हि मिले जिहिँ
मुनसब सहसहँसचउ ४५०० मिटाइ, पुनि तासौं सह दु सहँस २५०० पाइ ॥ ३३ ॥
अग्रज१पूज्य जदपि संभव अर्ह, मन्नि तदपि निज वृद्धि महामँह
कुटिल तंत्र दुसहँस २००० मुनसब करि, उक्त प्रांत अष्ठारह १८ लिय अरि ॥ ३४ ॥
पँहुनँ साह रीभ्क यह पाई, उपदा तँहँ चउ४गज अधिकाई ॥
भोज१९१।२।१प्रतिर्भ भो यह भगवंत१९५।३।२हु, लिन्नी भुव दूदा १९१।१ सनें जिहिँ लहुं ॥३५॥
यह न कहीं हो प्रभु तुम अकबर ३७।१, वखसहु भिन्न विभव भूमुख बर ॥
पै सुनि कहि बुंदी तिहिँ पाई, अग्रज१सन गिनि मन अधिकाई॥
इसहि दुष्ट भगवंत१९५।३इहाँ यह, मन्नतभो घर वंटि बडो मँह॥
भेट अधिक चउ४गज तउ भूपति, करि मन्निय इम्म दिन जैहैं कति॥

* हे स्वामी मेरी स्वामिता के समान स्वामिता मिलना उचित है, अथवा हे प्रभु आप स्वामी के स्वामी हो सो मेरे उचित होवे सो प्रमाण करो †भूमि पर ‡सम्पादन करके ॥३०॥ १हे स्वामी रामसिंह २ अपनी ॥३१॥ ३ न्यून ॥३२॥३३॥ ४ जन्म दिन से ५बढ़ने में बड़ा उत्सव माना ६उस कुटिल औरंगजेब ने अपने अधिकार(खालसे) में ॥ ३४ ॥ ७ राजा ने ८ सदृश ९ दुर्जनशाल से १० जिसने शीघ्र भूमि ली थी॥३५॥११हे अकबर बादशाह १२भूमि आदि ॥३६॥ १३उत्सव

*बलिहु गिनैं न साह गद्दी बस, तजिबो तब †समुचित आश्रय तस
इहिं विचार अलपहि लहि आदर, बिस्यो[1] सिबिर निज मुरि बुंदीबर[2]
भगवंत १९५।२ हु अग्रज १ निभ[3] भास्यो, करि खलभाव समत्व[4]
प्रकास्यो ॥
साह लयो दुसहँस २००० मुनसब सौंमि, अट्ठारह १८ परगनाँ अ-
तिक्रमि[6] ॥३९॥
आंमैर१जोधपुर२आदि ईनन[7], पाइ देय अद्ध३ हि इत ऋजुपन[8] ॥
भयो बिमन[9] कछु तँहँ नृप भाऊ१९५।१, इच्छि मरन रन सबन अगाऊ
जान्यौं कामपरहिं तब जुज्झहिं, बिक्खि[10] सु साह कौंहि[11] बलि बुज्झहिं
बीरत्त[12] वहि लखि जु यह बढावहिं, पुनि तोतो बिभवहि हम पावहिं
तदपि स्वकीय गिनैं न साह तब, समझहिं अब बिपदा स्वीकृत[13] सब
रान प्रताप रहे जिम रहिहैं, बनैं तिम न तो दिवँ[14] सुख बहिहैं । ४२ ।
सुनि यह अरज करी सब सुभटन, पटा तजहु अब सजहु बीरपन॥
को इहहेतु बिसिख[15] यह कुप्प्यो, लज्जा१रीति२प्रीति३सब लुप्प्यो
भूप कहिय अबहि न इम भाखहु, रंचक बीर धीरपन राखहु ॥
अपनौं मन जो लखि यह उज्वल, खलपन तजि बहुरि न भासैं खल
याके अनुग[16] हैहितो अप्पन, पुनि लखिलैहि स्वामि मत थप्पन ॥
बहुरि न मिच्छ प्रीति जो बिक्खहिं, सब सम्मत तोतो सुहि सिक्खहिं
पै यह सोक अतुल हम पायो, दुव२पालन सब ग्रास दुरायो ॥
बिष्णुसिंह १९५।१ आदिक बीरन बस, हरीगढा१दि हुते जय
साहस ॥ ४६ ॥

॥ ३७ ॥ * फिर † उचित १ अपने डेरे में प्रवेश हुआ २ बुन्दी का पति ॥ ३८ ॥ ३ सदृश ४ बराबर पन ५ ठंढेपन से; अथवा काट लिया ६ उल्लंघन करके ॥ ३९ ॥ ७ राजाओं ने ८ सीधापन ९ उदास ॥ ४० ॥ १० देखकर ११ फिर किसको पूछैगा १२ वीरता ॥ ४१ ॥ १३ अंगीकार १४ स्वर्ग के सुख ॥ ४२ ॥ १५ बिना शिखावाला (यवन) ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ सेवक ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

ते सब गये रही मम भ्रू तनु, जवन लई हेलन² लखिकैं जनु ॥
अब न इतीक मिलैं छिति इनकौं, जथाश्रद्ध³ मिलिहैं तउ जिनकौं
बदि यह निज अध्यक्ष⁴ बुलाये, ए बस सब बुंदी चलि आये ॥
काका महासिंह १९४।९।१ जहँ हाकिम १, अरु दहिया सुंदर २ चमूप⁵२ इम ॥ ४८ ॥
सचिव३ रायमल्लोत२३।१९ सपिंड⁶ सु, बंधु नाम हरिभानु१९४।१।३ बुद्धिवसु⁷ ॥
त्रय ३ हि मऊ १ बारौं २ अधिकृत⁸ तब, ए हे ते भाऊ १९५।१ बुल्ले अब ॥ ४९ ॥
सुनहु पुव्व दहिया यह सुंदर २, बन्यों सता १९४।१ छत सचिव वर्ग⁹ बर ॥
मऊ १ रह्यो सु सजि भट मेला, दल्यो सता१९४।१ जब नृप बुंदेला ॥ ५० ॥
अनरुच्यो तब कछु साह देखि उर, पलटयो यह प्रभुभक्त मऊ१पुर
सूबा मालवईस बिसाला, हो जो सेरखान१जिम हाला¹⁰ ¹¹ ॥ ५१ ॥
सोहि नसा बढिकैं निज सूरन, प्रस्थित भो दिल्ली कछु पूरन ॥
कढन लग्यो मग मऊ१सीमकरि, तँह सुंदर२बनि समरसिंधु तरि¹²
फिरि अह्यो रु रोकि तस फैलन, गरयो मोरि दयो वह गैलन ॥
अबहु चमूप हुतो दहिया यह, सुहु आयो निज स्वामिधर्म सह५३
अंतिम दोउ२न ग्रामहुते उत, जेहु गये इतरन बहुतन जुत ॥
बलि इत्यादि मऊ१ बारौं२ बस, जहँ आये निबहन सासन¹³ १ ॥ जस२ ॥ ५४ ॥
जड़ हरपालपउत्त५।१।१भये जिम, उतर्‌यो इनतैं जज्जाउर इम ॥

१अल्प मानो २अपराध देखकर ३श्रद्धा के अनुसार ॥४७॥ ४ अपने अधिकारी ५सेनापति ॥४८॥ ६ राजा के सात पीढी के भीतर का भाई ७ बुद्धि ही है धन जिसके ८ अधिकारी ॥ ४९ ॥ ९ समूह ॥५०॥१० उज्जैन का ११ जहर ॥५१॥ १२ युद्ध रूपी समुद्र को तिरकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १३ आज्ञा ॥ ५४ ॥

सता१९४१महासिंह१९४१९हिं बितरयो सो, काका हाकिम मऊ १करयो सो ॥ ५५ ॥

मंत्री१सेनानी२रु सचिव३मत, ते आये सिटि जदपि हुते तत ॥
हो जज्जाउर महासिंह१९४१हित, अतुल ग्राम तो जुत प्रवृत्त इत
यातैं उत३न मिल्यो कछु याकँहँ, तिन सेसनके ग्राम हुते तँहँ ॥
नृप अधिकृत सुंदर २।१ हरिभानुक ३।२, भये छुधित तत्रात्य ग्रास भुक्‌ ॥ ५७ ॥

इनको त्रिक५बुंदी जब आयो, पहु तब समुचित हुकम पठायो ॥
ग्राम दई२ जुत ठिक्करिया १ गुरु ३।२।१, अप्पो सुंदर २ हित देस अनुरु ॥ ५८ ॥

अरनिहा१।२दुव२ग्राम सहित इम, हरिभानु१९४१।३हिं दिय नृप७है उर हिंम ॥
अधिकृत दुर्मन त्रय३नहिं आये, दुव अंतिम दै कथित दिपाये ।५९।
राजसिंह१९४१४कुल मुख जस रक्खन, विष्णुसिंह१९५।१ आदिक दंव अरिबन ॥
इत्यादिक सुभटादिन अखिलन, ग्रास विहीन भयेउत बहुगन।६०।
गदित हमारे नेगन ग्रामहु, परबस परि इम दुव२हि गये पँहु ॥
बंभन खेट१रु भीमखेट२बलि, वृत्ति निंयतहै बँहुल भेट वलि ।६१।

खेटबलि१भेटबलि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

ग्राम जुग२हि वह मऊ गलै गय, इम बिनु वृत्ति भये हम बिनु अँय
विष्णु १९५।१ राजसिंहोत १।३१ आदि वर, भये अनाथँ जिते अप्पन भँर ॥ ६२ ॥

---

१ दिया था सो ॥५५॥५६॥ २ भूखे ३ वहां के ग्रामों को ४ भोगनेवाले ॥५७॥ ५ तीनों का समुदाय ६ समीप ॥५८॥ ७ ठंढे हृदय से ८ कहे हुए ॥५९॥ ९ अग्नि ॥ ६० ॥ १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपने नेग के ग्रामों को कहते हैं ११ हे राजा १२ ब्रामणों खेड़ा १३ निश्चय १४ बहुत ॥६१॥ १५ बिना शुभ भाग्य के १६ बिना आमदनी १७ भट ॥६२॥

इत चम्मलि सन तिन्हहु मिले अब, संबसथा१दि सबन क्रमतैं सब
हमरे पितरहु बृत्ति हीन हुव, दिल्ली पहुँचे खेम१६८।१।राम१६८।१।
१ दुव २ ॥ ६३ ॥
सुकवि खेम१६८।१।नगराज१६७।१ केर सुत, जहँ भूपाल १६७।१
तनूज राम१६८जुत ॥
दिल्ली गये बृत्ति बिनु ए दुव२, हड्डनपति सन बिमन मिलन हुव६४

॥ दोहा ॥

भूप कह्यो जिन दुख भजहु, गये जदपि ए ग्राम ॥
गिनहु उभै२हस्मरे गये, तुम सिर भारन ताम ॥ ६५ ॥
उनको जो कर४ आवतो, दम्म ताहिमित देय ॥
समय समय बंटि सु सुकवि, सकल लेहु गिनि श्रेय ॥ ६६ ॥
संबधन१०याहन२ससिसुन, गर्भधरन३तिम गेह ॥
वसु६ इत७सुख अवसर बिभजि, अखिल सम्हारहु एह॥६७॥
उरलाये कवि स्वीय इम, बुंदी अधिप बिसासि ॥
नेगन बंधिय रीति नव, प्रीति बिसेस प्रकासि ॥ ६८ ॥
गत मुनसब नृपको गिन्यौं, सहँससह४५००चउ४सर्व ॥
समुझि रहे कविजन सुमति, अप्पत यहहु अखर्ब१० ॥६९॥
कहियत सो अग्रिम किरन११, राजमुकुटमनि१२ राम२०३।४ ॥
नेग कविन जिम हुव नियत, गुमत वृत्तिमय गाम ॥७० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे यवनेन्द्रौरङ्गजेबाप्रसत्तिहेतुबुन्दीन्द्रभावसिंहप्रान्ता-

---

१ ग्राम ॥६३॥ २ उदास ॥६४॥ ३ तहां ॥६५॥ ४हासिल ५उतने ही रुपये ॥६६॥ ६धन ७ इत्यादि, समय ८बंट करके ॥ ६७ ॥ ९ नवीन ॥६८॥ १० जो देते हैं सो ही बहुत है ॥६९॥ ११अगले मयूख में १२ हे राजाओं के मुकुट रामसिंह ॥७०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में बादशाह औरंगजेब की अप्रसन्नता के कारण बुंदी के राव भावसिंह के परगने और मन्सब कम होकर उसके छोटे भाई भगवंत-

इववाराधिकारन्हासतदनुजभगवन्तसिंहवृद्धिवर्णनं द्वितीयो मयूखः आदित एकोनत्रिंशदधिकद्विशततमः ॥२२९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इमतैं खिल जे पंच५हे, नेगी हे नरनाह ॥
ग्राम तिनहुके सब गये, हे पैरतट ते हाह ॥ १ ॥
इमहिं सबन किन्नी अरज, जिन जिन दिल्लिय जाइ ॥
तिन तिन सबन बिसासि तँहँ, किय नृप हित अधिकाइ ।२।
प्रथम पुरोहित१व्यास२पुनि, चारन३भट्ट४हुचित्त ॥
पंचम५नापित५डोंबं६पुनि, बिसवासे भूबित्त ॥ ३ ॥
कतिक नेग सामान्य किय, सब इम तत्थ सरीक ॥
दुव२त्रय३चउ४पंचम५बिदित, ठाँठाँ सुहु अब ठीक ॥ ४ ॥
जे उद्देस१रु चिन्ह२जुत, अब कहियत अवनीप ॥
ते मुक्तागन धरहु तिम, स्रवन सु पेसल सीप ॥ ५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जब जब स्वस्व समय रानीजन, लहँ प्रथम१सुत दोहँदलच्छन ॥
सह परिजन तबछ६हि वृत्यासन, नृपघरहोइ प्रसवलग भोजन॥१६॥
प्रथमेतर गर्भहिं जब पावैं, जिम तब करि सीमंत जिमावैं ॥
प्रथम १ पुत्र संभवँ उच्छवपर, बंटैं छ६हि खटसत ६०० रूप्प -
य ३ वर ॥ ७ ॥

सिंह की वृद्धि होने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ॥और आदि से २२९ मयूख हुए ॥

१ बाकी २ घामल नदी के पैले किनारे ३ खेद है ॥ १ ॥ २ ॥ ४ उदास ५ नाई ६ डोली ७ भूमि ही है धन जिसके ऐसा राजा ॥ ३ ॥ ८ ठौर ठौर ॥ ४ ॥९ मोतियों के समूह के समान धारण करो १०कानों रूपी सुन्दर सीप में॥ ५ ॥ ११गर्भ१२ घर के लोगों सहित१३वृत्ति भोगनेवाले१४बालक के जन्म होने तक ॥ ६ ॥१५ब्राह्मण (पुरोहित) को छोड़कर अन्य१६पंचमासी १७ जन्म ॥ ७ ॥

अरु चउ४मुख्यन चउ४गज४उत्कट, पुरुख१तिय२नके सब भूख
न५ पट६ ॥

अंत्य जुग२ हि सब यह इय४ आदिक ५।६, सुनहु कनिष्ठ सुतन
प्रासादिक ॥ ८ ॥

करैं तबहु यह७तारतम्य करि, पुत्र जितेक तितेक भेद परि ॥
प्रसवननैं अखिलव जो पूरब, सुना जन्म अवधिहु सो८ सो९जब ॥
अरु कन्याके प्रगव अनंतर, पावहिं जे काहिँ अवसरपर ॥
विवेचन नेग जे भिन्न रहे खिल, ते तिन्ह जानैं होहु गिरि१ कि
तिल२ ॥ १० ॥

पुत्र निमित्त अधिक हम३पावहिं, सो वैं सुनहु मन निपैत सुहावहि
हम३कुल मुख्य दंपैतीरुहै जे, ताहि गोरैव यह वढन चहै जे ॥
प्रथम१पुत्र भैव मुक्तिन पूजन१।१०, जहँ गावैं प्रभु वंधु वधूजन२।११
इम महर्घ भूखन ३।१२ पट ४।१३ अर्चित, सदन कैसैं अवरोध
समर्चित५।१४ ॥ १२ ॥

पूजन१वधूजन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

राव घरके हम चैमन ६।१५, तहँ सब, तिय खोजन अवरोधैं जाहैं
७।१६, तब ॥

बहुर ८।१७ पंच ५ इक१ हार ९।१८ पुरटमय, जैसाहैं कवितियाहि
जसोदय ॥ १३ ॥

नेग नवक ९ हमकों यह नियतहि, लिखिदिय प्रथम१ कुमर उ-
ॐव लहि ॥
कुमर सस्त्रबंधन अनेहँ क्रम, मिले महुर२।१९दस१०कनकं मनोहर
प्रथम १ कुमार प्रथम १ सगपनपर, धरैं कटकं १।२० हम खट ६
हि वृत्तिधर ॥
सत१००सत१००रुप्पय२।२१तिमहि लहैं सब, तुरग३।२२बस्त्र४।२३
समुपेतं तथा तब ॥ १५ ॥
लघुसुतादि प्रसवादि समै लहि, सगपनलग कछुघटिइमं ५।२४
सबहि ॥
अब बिवाह बिधि वृत्ति इलापँति, मति क्रम कहियत सुनहु महा-
मति ॥ १६ ॥
ज्येष्ठ१कुमर व्याहन बिधिक्रम जँहँ, कहत लहत जोजो जाजा कँहँ
कहुँ छ६ पंच५ चउ४ त्रय३ दुव२ इक१ क्रम, पै हम बंट सु सुनहु
जथा प्रम ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

गनपतिपूजनतैं गिनहु, बंधुनसहित बुलाइ ॥
सुरस अन्न नृपके सदन, खट६हि वृत्तिधर खाइ१।२५।१८।
आम अन्न२।२६सबके अरथ, बलि मन मिति चउवीस२४॥
मिलैं सु बंटैं खट६हि मिलि, अन्ततंनाम अधीस ॥ १९ ॥
वृद्धिबैराभिध धान्य३।२७बलि, मनन बिहत्तरि७२मान ॥
बंटैं सुहु खट६वृत्तिधर, सब सब वृत्ति सुजान ॥ २० ॥
बहुरि बिहत्तरि७२मन बिहित, आमं सालिमय अन्न४।२८॥
जवैं पावनदिन मिलहिं जो, सब बंटहिं संपन्न ॥ २१ ॥
मँहँडेकेदिन सत१००महुर५।२९,पेसैंल खट६सिरुपाव६।३०॥

---

१ निश्चय २ जन्म ३ समय ४ स्वर्ण की ॥ १४ ॥ ५ फड़े (कंकण) ६ सहित ॥ १५ ॥ ७ हे भूपति ॥१६॥ ८ प्रमाण ॥ १७ ॥ १८ ॥ ९ कच्चा अन्न १० चाखे ॥१९॥ ११नेग का नाम है ॥२०॥ १२कच्चे चावल १३यव धान्य ॥२१॥१४ सुन्दर

खंभहिं रोपत महुर७।३१खट६,भूखन८।३२खट६मनिभाव ।२२।
इक१खंभहिं बंधैं सु इभ९।३३, मनन बिहत्तरि७२ मेय ॥
मधुर नव्य गोधूम मय, अट१०।३४पिंड अभिधेय॥ २३ ॥
वेढैं खंभहिं जो वसन११।३५,बिहित जरीमय बुद्ध॥
तुलित बिहत्तरि७२मन तिमहि, सुरस मिठाई१२।३६सुद्ध ।२४।
तिहिं बासर अवसान तिम, निस बीरत निसनाम ॥
सूचित७२मित समिता१३।३७सुमन, त्योंहि सुमन१४।३८तँहँ तौम७२
आज्य१५।३९बिहत्तरि७२मन इहाँ, सक्कर१६।४०ता७२हि समान
इम बीरत निस नेग ए४,अखिल दलित अभिधान ॥ २६ ॥

॥ षट्पात् ॥

दूजे२दिन इम दिष्ट निचय वसु परन निमंत्रन१७।४१ ॥
धवपर्ट१भूखन२धरन१८।४२रु तस वँडवा आरोहन१९।४३
दस२०।४४पंच५।२रु पंचदस१५।३महुर३०अय४उठौं इम सासन ॥
वृत्तिनहिं अप३नदत विदित वृद्धन सँकखी सन ॥
चढि बलि बरात पथ गमथैं चलि ब्याहैं कुलहानि जाइ वर ॥
तहँ नियत वृत्ति दूजे२दिवस ग्रंथित त्याग आरंभ पर ॥ २७ ॥

सासन१खासन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

नेग छ६मित तहँ नियत त्याग पहिलैं इम तीन३न ॥
भेदक चारन१।२भट्ट२।४जथा ब्रांतिमें६ पटही जन३।६ ॥
महुर२०।४४तीन३धरि मध्य पंच५अंगुलि भरि रुप्पय२१।४५

॥ २२ ॥ १ हाथी २ वज़न (तोल) ३ नवीन ४ गेहूं ५ इस नेग का नाम आटा का पिंड नाम है ॥ २३ ॥ ६ कपड़ा से लपेटने हैं वह वस्त्र ॥ २४ ॥ ७ उस दिन के अन्त में ८ मैदा (गेहूं का बारीक आटा) ९ गेहूं की १० मैदू ११ लड्डू ॥ २५ ॥ १२ तुल्य ॥ २६ ॥ १३ धन का समूह १४ पानि के वस्त्र १५ नाड़ी १६ ओसाका मारना के कारण १७ बड़े लोगों की आज्ञा से १८ आगे चौतरे स्थान पर जाकर १९ निश्चय २० प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ २१ दोनों २२ पांचों अंगुलियों से

सयं निज निज संग्रहित तावं[2] मानव हमही त्रय३ ॥
ए वीरमुट्ठिनामक उदित तीन३न३तीन३हि नेग तिम ॥
तीन३न वहारि त्रय३त्यागसैं नेग सुनहु पालन प्रतिम[3] ॥ २८ ॥
चंडाल१रु चम्मार[4]२ रंजक३तच्छक[5]४व्योकार[6]५रु ॥
क्रम नापित६कुंभार७आदि कारुक[9] उपेत अरु ॥
भृत्य[10]८रु बेतनभृत्य[11]९जिते जाके पुनि जाचक१० ॥
सुरपूजक[12]११तिम साधु[13]१२विप्र[14] निजवृत्ति सु बाचक१३ ॥
जामात[15]१४भाम[16]१५भानेज१६जुत सवित[17] सुत१७रु विधवा१८सहित
लै द्विगुन त्याग२१४६निज निजकुलज[18]पुरुख दूरदेसहु प्रहित[19]।२९।
रु१अरु२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रुप्पय१गज२हय३करभ[20]४बसन५भूखन६जाजाविधि ॥
बंटहिं त्याग बिसाल नियत खुलवाइ कोस निधि[21] ॥
तास द्विगुन हम त्रय३हि गहैं गौरव[22]१लाघव२गति ॥
भूखन१गज२हय३ मोलि[23]४अयनैं[24] इक१इक१इक१इक१आनि ॥
जाचक१ रु पुरोहित२ भृत्य[25]३ जन पावहिं द्विगुनित पुरुखप्रति ॥
खिल्ल[26] नाम द्विगुन इक१इक१लखहिं सवन तदपि पालनसुमति३०
वाहीदिनके अंत पंति भोजन जब पावहिं ॥
कन्नी[27] जनकसन कहि रु दुलह यह हमहिं दिवावहिं ॥
पंच५महुर१२३४७वर पुंरट[28] मंजु मन वीस२ मिठाइ१२४४८
वलि घर आइ बरात दुलह प्रविसैं बसुदाई[29] ॥

मुट्ठी भरकर १ अपने अपने हाथ से २ तहां ३ सदृश ॥ २८ ॥ ४ चमार ५ धोबी ६ खाती ७ लुहार ८ नाई ९ कमीणों सहित १० चाकर ११ तनखा पानेवाले नौकर १२ मन्दिर का पुजारी १३ स्वामी (संन्यासी आदि) १४पुरोहित १५ जमाई १६ बहिनोई १७ पुत्र सहित पुत्र की माता १८ अपने अपने कुल के पुरुष १९ दूर देश में बिखरे हुए भी दूना त्याग लेते हैं ॥ २९ ॥ २० ॥ २०ऊंट २१धन का खजाना २२बड़प्पन २३ऊंट २४एक एक के घर २५ सेवक २६पाकी के ॥३०॥ २७कन्या के पिता से २८ सुवर्ण की २९ धन देनेवाला ॥

तँहँ महुर१।२५।४९ जुगर रु कुलदैवतहिँ पूजत २।२६।५० पंच५ रु बहुरि वर ॥
कंकन तजंत दस१० महुर३।२७।५१ करि ध्रुव हम हुव इम वृत्तिधर

॥ दोहा ॥

पयलग्गैँ दुलहनि प्रथम१, पंच५ महुर१।२८।५२ करि पेस ॥
तिम पगलग्गैँ कवितिनय, इतर इक्क१ दै एस२।२९।५३ ॥३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

मध्य२ कनिष्ट३ कुमार जितेजिहिँ क्रम प्रभु जानहु ॥
नेगहु तिहिँक्रम१।३०।५४ प्रचुर१ न्यून२ प्रति दुलह प्रमानहु ॥
लै जन्म१हिँ व्याह२लग गेह आवन३ लग यागति ॥
नियत इते५६हम नेग करे इम खिल्लन भिन्न कति ॥
हमरेहि नेग१ कैकैं हमहि महिपं भाग जिनमैं मिलहिँर ॥
तेअत्थ कहि१रु कहियत२ तथा खेतन मिति जिम तजि खिलहिँ।३३।
सब व्याहन सब सुनत नेग सम च्यारि४ घटैँ नन ॥
इम मुख्खन सब असन१ करहिँ मोचन लग कंकन ॥
बंधैँ गज२खंभ बलि सोहु पलटैँ न सदासम ॥
वीरसुहि ३ तिन बहुरि त्याग४ आरंभ नियत तम ॥
परदेस थितंहु निजकुलपुरुख कारुनजुत पहिलेहि क्रम ॥
लै द्विरगुन त्याग४९ च्यारि लघु व्है न नेग इम तुष्ट हम ।३४।
कन्नी नेग अब कहत गर्भआदिक पहिलीगति ॥
प्रसवकाल छठहि पात्र महुर१।३१।५५ द्वादस१२लौ१ सम्मति ॥
सिरुपाव१।३२।५६ दन त्रिक३ सहित महुर२।३३।५७।३ पंद्रह १५ तीन३न मैं ॥

---

१ दुलहन पहिले पहिल पगे लागै २अन्य ॥ ३२ ॥ ३ बहुत ४ बाकी के लोगों के ५ हे राजा ६ सब ॥ ३३ ॥ ७ कंकणा डोरड़ा खोलने तक ८ कमीण लोगों सहित ९, छोटे ॥ ३४ ॥ १० कन्या के नेग

वरके घरतैं वृत्ति मिलैं ए दुव२ सगपनसैं ॥
हम१ भट्ट२ तथा पंटही सहित बरपरखाई नामविधि ॥
तँहँ ए दुश्नेग बँटैं त्रयश्हि नेग व्याह सुनिये सुनिधि ॥३५॥
ननमैं १पनसैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
ठहे पूजित हेरंब उहाँ बारह१२ मन अच्छत १।३४।५८ ॥
जथा पुव्व सव जनन असनर।३५।५९ तबतैं तँहँ अबिरत ॥
बावन जव चउवीस२४ मान सुमनंन अच्छत ३।३६।६० मन ॥
मंडप दिन खट६महुर४।३७।६७ प्रथित पर्षिल्ल कपर्दपन ॥
खट६ महुर५३।८।६२ खंभरोपन खिन रु जिहिं वेढन१ अंसुक ज-
री ६।३९।६३ ॥
मन चउ रु वीस२४अच्छत सुमन७।४०।६४ क्रमतिहिं बंधै सो
करी ८।४१।६५ ॥ ३६ ॥
पुनिछ६महुर९।४२।६६सिरुपाव१०।४३।६७तत्थखट६मिलहिंखंभतल
मधुर मिठाई११।४४।६८छ६मन मिलहिं सबके बट निर्मल ॥
पंच५महुर१२।४५।६९सिरुपाव१३।४६।७०सँहत पंच५रु पचीस२५मन
अट्ट१४।४७।७१पिंड अभिधान तास बट पंच५सदातन ॥
तिहिं दिवस अंत वीरत तमी मन बारह१२बिदलित सुमन१५।४८।७२
मन छ६छ६हंवी१६।४९।७३रु सक्कर१७।५०।७४मिलहिं जुहु हम बंटहिं
पंच५ जन ॥ ३७ ॥
मन पचीस२५पुनि सुमन१८।२।७५नेग यह अच्छत नामक ॥
पंच५महुर१९।५२।७६सिरुपाव२०।५३।७७पंच५तँहँमिलहिंप्रकामक
पिंडा२४दिन हम पंच५बंट पावहिं तँहँ व्यासरन ॥
बंट सब६न बलि वदहिं सकल सनियम जिम सासन ॥

१होली ॥३५॥ २गणेश ३ निरन्तर ४ गेहूं ५ प्रसिद्ध ६ पीली कोडी ७ थम्भ के लपेटने का ८ जरी का वस्त्र ९हाथी ॥ ३६ ॥ १० बडे सिरपाव ११ दलेहुए गेहूं १२ घृत ॥ ३७ ॥ १३ विशेष कामना सहित १४ जैसी आज्ञा है

तँहँ मन छतीस३६सालि१२१।५४।७८कि सुमन२१।५४।७८वृद्धि बरन लहिहैं छद्वट ॥
दापा सनाम जावत दये प्रति नर दुव२रुप्पय२२।५५।७९प्रकट॥३८॥
लग्नसमय प्रभुमिलहिं हमहिं इक१महुर१।२३।५६।८०विवाहत ॥
तँहँ बंटत तंबोल२ मिलहिं भूखन३।२४।५७।८१इक१सम्मत ॥
जंपति३कर जुग२जुरन समय जरमय इक१सारिय३।२५।१८।८२
बहुरि दुव२कर बिच्छुरत हेममाला४।२६।५९।८३इक१भारिय ॥
ए नेगच्यारि४हमरेहि अब पटजर चँवँरी १।२७।६०।८४मंडप२।२८।६१।८५न ॥
छादक जितैक तिन्ह बंट छ६हि समय है रु पहुँचन सबन ॥३९॥
इम प्रभु अट्ठाईस२८कनीँउँपयाम नेगकिय ॥
बरके घर सन बहुरि सुनहु जे नियत प्रकासिय ॥
समुह मेलसिरुपाव१।२९।६२।८६महुर२।३०।६३।८७खट६खट६प्रभु मानहु ॥
दापानामक द्रम्म३।३१।६४।८८प्रमिति खटसत६००पहिचानहु ॥
इम नेग सबन त्रय३बस्तु ए लहि बिभाग छ३हि हम लहैं ॥
हम त्रय३हि नेग पंचक५लहत करहु श्रवन ते अबकहैं ॥ ४० ॥
आदिम१तोरन ईभ१।४३२।६५।८९रु दैत गोरनदिन दाई ॥
तिथि१५महुर२।५।३३।६६।९० रु सिरुपाव३।६।३४।६७।९१तीन३मन दुदस१२मिठाई४।७३।५।६८।९२॥
दास१कारु२जुत द्वि२गुन पुरुख त्याग५।६।३।७।६९।९३सु सबपावहिं
हम१भट्ट२रु पटहौर२ सुबिंसिख५मित नेग बंटावहिं ॥
इम गर्भआदि१ज्याहनअवधि२नेग५।८।३६।६९।९३पुत्र१पुत्रि२नानियत
बंधि रु नरेसभाऊ१९५।१०बदिय जिन दुख पावहु मो जियत ॥४१॥

१चावल, अथवा गेहूं॥३८॥२पानबीड़ा ३स्त्री पुरुष का हथलवा ४तांस की साड़ी ५दोनों हाथ (हथलेवा)छूटते समय ६ सोने की माला ॥ ३९ ॥ ७ कन्या के विवाह में ।४०। ८तोरणका हाथी ९ चाकर और कमीणों सहित १०दोली ११पांचों ही।४१।

॥ दोहा ॥

बुल्लि सपिंड१सगोत्र२बलि, इक्कसह्र१९४२कुल आदि३५ ॥
सवन सुनाये नेगसब, सब देहुव संवादि ॥ ४२ ॥
सच हुड्ड६१न घर तबहिं सन, नियत भये सब नेग ॥
नदिय लुपन हम वृत्ति नृप, बंधि रीति यह वेग ॥ ४३ ॥
के हमरी१ हम बंट२कै, अक्खी वृत्ति सु अत्थ ॥
भिन्न कालिक अपरन भई, सो सो नहीं समत्थ ॥ ४४ ॥
इम नैमित्तिक१ अप्पि अब, नित्य२नेग नरनाह ॥
प्रतिवच्छर१ अवसर प्रथितं, रचै सुनहु ध्रुवराह ॥ ४५ ॥
जिनमैं हम पावत जितै, कहियत विन्माति कर्म ॥
श्रवनदेहु भूपति श्रवन, विजय१ धर्म२ जस६ वर्म ॥ ४६ ॥

॥ षटपात् ॥

मधु१ सित१ प्रतिपद१मिलन दम्म १९४नवँ अब्द लगत दुव२॥
मन१ मोदक २१९५ गुनगोरि६ हेतु अंतहपुरतैं हुव ॥
पुनि इक१इक१सिरुपाव१।३।९६महुर२।४।९७सित१राधं२तीजमत
जिठ्ठ अमा३० दम्म५।९८जुगर्सु पहु अंतहपुर संगत ॥
इम अट्ठ१आदि सावन५अमा३०सब भोजन उपहार६।९९ सब॥
रक्खी अनहैं पुरिगाम१५रुचिर तिथि जव रुप्पय७१००पंच५॥ तव ॥३७॥
ज्यौं कुलदेविय जैजत दम्म१।८।१०१ईस७सित१ छट्ठी६दस १०॥
दिन नवमी९पुनिदम्म२।९१०२तेहु दस१० मान अग्ग तस ॥
दसमी१० विजयादिवस महुर ३।१०।१०३दस१०लये महीपति॥

---

१ कथन करके ॥ ४२॥४३॥ २ अन्य लोगों को ॥४४॥ ३ लावाना ४ प्रसिद्ध॥४५॥ ५ यश के कवच ॥ ४६ ॥ ६ चैत सुदी एकम ७ नवीन वर्ष लगता है तब ८ लड्डू ९ जनाने से १० वैशाख सुदी तीज ११ ज्येष्ठ वदि अमावास्या १२ समय ॥ ४७ ॥ १३ पुजते हैं तब १४ आसोज सुदि छट और दशमी के दिन

*प्रथित इक्क१सिरुपाव४।१।१०४ मुल्लबहु मेंप महामति ॥
दस१०दम्म१।१।२।१०५दीपमाला३०दिवस अखिलनेग सबुजन
ग्रसन ३।१।३।१०६ ॥

जँहँ इम प्रदेय रानी जनन विदितखाद्य१रुप्पय२ वसन३.।४८।
नियत पट्टरानी सु पक्क मोदक१।१।४।१०७ मन पंचक ५ ॥
पंच५ दम्म ४।१५।१०८पहुँचात इक्क१सिरुपाव५।१६।१०९अवंचक ॥
इम लघुरानी अखिल दुस्मन मोदक६।१७।११० रुप्पय ७।१८।१११
दुव२ ॥
भेजैं तँहँ इम श्रोन धन्य सिरुपाव८।१९।११२इक्क१धुव ॥
जीरोति नाम यह नेग जिम तिथि दूजी२सुदि१ उज्ज८तँहँ ॥
मंगालदम्म१।२०।११३ पंच५रु सुमन जावक२।२१।११४ सिति मन
पंच५जँहँ ॥ ४९ ॥
[6]अहछ्ठी६तस अग्ग देय थप्पिय रुप्पय२२।११५दस१० ॥
माघ११बिसद१पंचमि५पजुगल२महुर२३।११६हि साधकजस ॥
होरी१५दिन आहेरँ पुरटमुद्रा२४।११७किय पंचक५ ॥
कर्क४।१ मकर १०।२ संक्रांति असन १।२५।११८।२।२६।११९ सब
जनन अवंचक ॥
जबजबहिफागखेलन जुरहिं तव तव इक१उष्णीस १।२७।१२०तहँ
तुर्रा१।२८।१२१रु हार३।२९।१२२सुमननें बितरि किय सु वृत्ति इम
कविन कहँ ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

जन्मदिवस नृपको जहाँ, महुर१।३०।१२३इक्क१अतिमान ॥
जिट्ठ११कुमरके जन्मपैं, दम्म१२ ३१ १२४पंच५मित दान ॥ ५१ ॥

*विदित १बड़े प्रमाण का ॥४८॥२ पके हुए लाड्डू ३सरल चित्त से ४काती सु-दी दौज ५ जव ॥ ४६ ॥ ६ छठ के दिन ७ होली के दिन की शिकार में ८ सो-ने की ९ पगड़ी १० श्रेष्ठ मन से; वा फूलों के हार और तुर्रा देकर ॥ ५० ॥ ११ पाटवी कुमर के १२ जन्म दिन (सालगिरह) पर १३ पांच रुपये देते हैं ॥५१॥

इतर कुमारन जन्म अहँ[1], दुव२दुव२रूप्पय३।३२।१२५ देय ॥
तजि रोगहिँ नृप न्हान तँहँ, महुर१।२३।१२६ द्वि२संख्या मेय़॥५२॥
जिठ्ठ१कुमरके न्हान जिम, रूप्पय२।३४।१२७पंचक रक्खि ॥
दुव२दुव२इतरन न्हानदिय, अप्पन रूप्पय३।३५।१२८अक्खि॥५३॥
वीस२० महुर १।३६।१२९रन नृपबिजयें[2], पुरुखन प्रति सिरुपाव २।३७।१३० ॥
महुर३।३८।१३१पँट्टसुत[3] पंच५मित, चैलँ[4]४।३९।१३२उचित जयचाव
इक्क१महुर४।४०।१३३ सन दस१०अवधि, दम्म५।४०।१३३ खिलत जय देय५।४०।१३३ ॥
इक१हय५।४१।१३४दै नृप खिलत२।४२।१३५इक१, साह[5] रीझलहि अेय ॥ ५५ ॥
मँहिखी[7]१केर द्वि२रागमन, जँहँ पय लग्गत जावँ ॥
मिलैं सुकवितियकौं महुर१।४३।१३६, पंच५रु इक१सिरुपाव२।४४।१३७
उभयरमहुर ३।४५।१३८ सिरुपाव ४।४६।१३९ इक१, क्रम रानीजु कनिठ[9] ॥
इक्क१महुर५।४७।१४० सिरुपाव६।४८।१४१ इक१,जिठ१ कुमर तिय जिठ्ठ[10]१ ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

पटसव७४९।१४२रूप्पय८।५०।१४३पंच५, अप्पै कुमरानी ईतर[11] ॥
रीति यहै तँहँ रंच, हड्ड६१हेलि[12] न ह्रासहै[13] ॥ ५८ ॥
जौंया भ्रातन[14] जेम, आवै घर मुख्य१रु इतर२ ॥
अंबर[15] ९।५१।१४४ नाणकँ[16] १०।५२।१४५ एम, अप्पैं ते निज निज

१ जन्म दिन पर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ २ युद्ध में राजा के विजयी होने पर ३ पाटवी पुत्र के युद्ध जीतने पर ४ वस्त्र ॥ ५४ ॥ ५ बाकी कुमरों की जय होने पर यथा दशाह से रीझ लेने के समय ॥५५॥ ७राणी के८जहाँ ॥५६॥ ९छोटी राणी१०बड़े कुँवर की बड़ी कुँवराणी ॥५७॥ ११अन्य कुँवराणियें १२हाडों के सूर्य १३ क्षय अर्थात् इन नेगों में क्षति नहीं करते॥५८॥ १४भाइयों की स्त्रियें१५वस्त्र१६रुपये

उचित ॥ ५९ ॥

जिम ए सूचित जाइ, पित्रालय[1] कछु हेतु[2] पुनि ॥
अप्पन आलय आइ, तँहँ पयलग्गैं कवितियन ॥ ६० ॥
अप्पैं महिखी१एह, तब तब रुप्पय१।५३।१४६पंच५तिन्ह ॥
अरु खिल ताहि अनेह[3], दै पयलग्गत दम्म२।५४।१४७दुव२६१
दैं२हि निवेदहिं[6] दम्म३।५५।१४८, मुख्य१कुम्मर जेठी१जँनी ॥
क्रम पयलग्गन कम्म, दम्म४।५६।१४६इक१दै सेस सब ॥६२॥
रक्खि नेग इहिं रीति, सब हह६१न घर तान सासि१४९ ॥
पुनि सोलह१६।१६५सह प्रीति, देस प्रजाप्रति किन्नहह॥६३॥
कर्षुक धान्यकुमाइ, जो घरआनैं मन जिते ॥
उनतैं क्रम काढि आइ, सेर१।१५०तिते हमरे सदन ॥ ६४ ॥
इक्खु[9]१दसंगुल[10]२अंब३, सौका[11]४दिन विक्रय[12] समय ॥
काढि लव२।१५१दसम१०कंदंब[13], सब पहुँचैं हमरै सदन ॥ ६५ ॥
लहत ज्येष्ट१सुत लाह, पंच५दम्म३।१५२ भेजहिं प्रजा ॥
इतरन भव[14] उच्छाह, दुव२दुव२रुप्पय४।१५३देय सब ॥ ६६ ॥
दम्म५।१५४पंच५दुव२दम्म६।१५५, याही क्रम तिन्ह व्यांह अरु॥
करन असन हम कम्म, सामग्री७।१५६अट्टा[15]१दि सब ॥ ६७ ॥
हालिक[16]१कारु[17]२बिहाइ, अर्ल[18] खिलन जन्मते सुता ॥
इक१रुप्पय८।१५७घर आइ,व्याहनतस जुग२दम्म९।१५८बालि।६८।
गुड़१घृत२आदिक गैल, बिक्रय बट लव[19]१०।१५९बारहम१२ ॥
बिकि महिषी[20]१गो२बैल३, बीसम२०लव११।१६०उपदावनैं[21] ॥६९॥

॥ ५९ ॥ १ पिता के घर २ किसी कारण से ॥६०॥ ३ राणी ४ समय ५ रुपये ॥ ६१ ॥६ भेट करते हैं ७ माता ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ८ घरसे लोग ॥ ६४ ॥ ९ गन्ने १० खरबूजा ११ तरकारी आदि १२बेचने के समय १३ दशवें अंश का समूह निकालकर ॥ ६५ ॥ १४ जन्म ॥६६॥ १५ आटा ॥ ६७ ॥ १६ हल हांकनेवाले और १७ कमीणों को छोडकर १८ बाकी के धनवालों के पुत्री होने के समय ॥ ६८ ॥ १९ बारहवां हिस्सा २० भैंस २१ भेट ॥ ६९ ॥

इतपरदेसिन आइ, वारन१हय२मैंप३मुख बिकत ॥
क्रम लव सतस१०० कढाइ, सठिम६०तिम तीसम३० सहित१॥
१२।१६१।२।१३।१६२।३।१४।१६३ ॥७०॥

बनिज पटा१दिक बस्तु, व्यापारिन देसि२न बिकत ॥
अंस१।१५।१६६सोलहम१६अस्तु, अस्तु बिदेसि१न अष्टम८सुर॥
१६।१६७ ॥ ७१ ॥

इम दिल्लियनृप अक्खि, सैंसद४बिच ए १६७नेग सब ॥
रीति नियत पर रक्खि, स्वीका५रिन इह६१न सबन ॥ ७२ ॥

॥ युग्मम् ॥

अवनि६ रही घर अद्ध७, अद्ध८ लही उद्धत अनुज ॥
निज पालन सन्नद्ध, भूप तदपि भाऊ१९५।१ भयो ॥ ७३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

गर्भ१प्रसव२संबंध३कै११ग्रह४, वैच्छुर१२इक१बिच दिवस५चउद्दह१४॥
कर्क४।१मकर१०।२रवि गमन६फाग७क्रम, महिपा१दिन जैन्माह८
मनोरम ॥ ७४ ॥

माहिपा१दिन गैंद तजि न्हावन मह ९, इम महिपा१दिन जुम्
विजय अँह१० ॥

सुपहु लहैं जयरीक्ष११साहसन, महिषी१आदि छिगमस मेलन१२
पुनि पितृहर जाइ रु आवनपर१३, बंस नेग खित्त ए तेरह१३वर॥
अर्जनधार्य१।१४फलादि२।१५बिक्रन इम, तनयादिने प्रसव ३।१६
रु विवाह४।१७तिम ॥ ७६ ॥

बिकत गुड़१दि ५।१८गवा२दिक६।१९ समै वर, परदेसिन गज१मुख
बिक्रय७।२०पर ॥

१हाथी २ ऊट आदि ॥ ७० ॥ ३ वस्त्र आदि ॥ ७१ ॥ ४ सभा में ५ अंगीकार किया ॥ ७२ ॥ ६ पृथ्वी ७ तैयार ८ तो भी ॥ ७३ ॥ ९ जन्म १० लगाई ११ विवाह १२ एक वर्ष में १३ जन्म दिन ॥ ७४ ॥ १४ नैरोग्य होकर १५ दिन १६ रार्ष ॥ ७५ ॥ १७ पिता के घर १८ धान इकट्ठा करने पर १९ कन्याओं के ज-

दुकूला१दि विकल्प८।२१ कर देसि१ न, पावतलाभ-तस९।२२ हि परदेसिन ॥ ७७ ॥

करदेसिन१परदेसिन२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

ए नव९समय प्रजा वलि अप्पन, सब बाईस२२स्वल्पत्ति समप्पन
द्विधा गर्भ१सब असन नेग दुव२, होते द्विधा हि प्रसव२ पंचक ३।५।७ दुव ॥ ७८ ॥

कनी गर्भ३ दुवदुव२।७।९ पूरबक्कन, प्रथम१पुत्र भव४ नेग नवक्क ९।१८ प्रेम ॥
हुव ए नेग नव९हि हमरेही, सुनहु खिलाहु सब६बंट सनेही ॥७९॥
छुरिकाबंध५नेगइक्क१।१९छज्जैं, कुमर प्रथम१सगपन६चउ४।२३कज्जैं
लघु१सुतादि भव३ जुन सगपन७।७लग, सिलैंग्नक्कल पह १।५।२५ तारतम्य मग ॥ ८० ॥
प्रथमा१दिक सुतव्याह२।८तास३०।५४पुनि, सदा सहस तँहँ च्यारि ४लेहु सुनि ॥
गृहजन असन१ रु खंभ बद्ध गज२, वीरमुद्रि३ अरु द्विगुन त्याग ४ लज ॥ ८१ ॥
दुहिता नव९इक्क१।५५ रु सगपन१०दुव२।५७, हित ए द्वैरहि दुलह घरतैं हुव ॥
अट्ठाईस२८।८५कन्यका उपयस११,प्रभु निजघर१तैं देय जथाप्रम८२
पुनि बरघर२तैं अट्ट८नियतपन, त्रिक३।३।८८सब६बट पंचक५।८।३६।९३ हम तीन३न ॥
चउदह१४ समय१५ नेग चउबीस२४।११७ हि, महदिन किय प्रति-अब्द१महीसहि ॥ ८३ ॥

न्म ॥ ७६ ॥ १ वस्त्र आदि ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ २ जन्म ३ प्रमाण ॥ ७९ ॥ ४छुरी बांधने का ५ विचार ॥ ८० ॥ ६ समूह ॥ ८१ ॥ ७ विवाह ॥ ८२ ॥ ८ उत्सव के दिन ९ सालाना ॥ ८३ ॥

दुव२।११९ संक्रांति२६फाग२७त्रय३।२२ दृढदयं[1], तिम नृपा१दि३ज-
न्माहँ[2]३।३०नेग त्रय३।१२५ ॥
अरुजँ[3] नृपा१दि३न्हानत्रय३।३३त्रय३।१२८इम, जय३।३६नृप१मुख्य
त्रय३करतपंच५।१३३जिम ॥ ८४ ॥
प्रभु दुव३।१३५साहरीझ प्रभुपावत१।३७, खट६हि१द्विरागम ६।४३
दसक१०।१४५ दिखावत ॥
रानि२ न कुमरानि४न ठक्कुरानि६न, ए गुरु१लघु२पन छ६ खिनन
रनँइन[4] ॥ ८५ ॥
पिउहर१०हैं चउ४ गेह पधारत४।४७, महिखी१प्रमुख४ देत चउ४।
१४९ ध्रुव मत ॥
नेग तान भू१४९मित नरनायक, बंधे निजकुल१वृत्ति बिधायक।८६।
सोलह१६सनियँम[5] बंधि प्रजासन, महिप दिवाये हमहिँ महामन ॥
सब कृषिधान्य१।४८बंट१।१५० चालीसम४०, दसम१फला१दि१।२।
४९न वंट१।१५१अरिंदम ॥ ८७ ॥
आदि १रु इतर२ सुतनके संभवँ[6]१।१५१, अप्पैं दम्म१।२।१५३पंच ५
दुव२उच्छव ॥
द्विरविध व्याह१।२।१५३तिनकेहु१।२।१५५पंच५ दुव२, हमरे सब-
मनुजन भोजन३।१।५६हुव ॥ ८८ ॥
हँलिय[7]१कारु२विनुसुताजन्म१।५४हित, इक१।१।१५७रु व्याह१।५८
दम्म१।५८दुव२अंकित ॥
वेचिगुड़ा१दि१।५६ वारहम१२लव१।१५९बट, बीसम२०वेचि१।१५७ग-
वा१दि१।१६०विसंकट ॥ ८९ ॥
वेचि१।५८ द्विरद१लव१।१६१ सतम१००विदेसिन१, साठिम६०लव१।
१६२विक्रय१।५६हय२सेसिन ॥

---

१ दृढ दयावाले ने २ जन्म दिन ३ नैरोग्य ॥८४॥ ४ हे युद्ध के सूर्य ॥ ८५ ॥८६॥
५ नियम सहित ॥८७॥ ६ जनम ॥८८॥ ७ हल हांकनेवाला ८ कमीश ॥ ८९ ॥

बट१।१६३तीसम३०बासंत३न बिक्रय१।६०, बेचि१।६० पटा१दि अंस
१।१६४अष्टम८०यग्र ॥ ९० ॥
देसि२नलव१।१६५ सोलहम१६पटा१दि६१न, दृढ ए१६५ नेग करे
नृप जा दिन ॥
चउदह१४दिन प्रतिअब्द१तेहुचुनि, समयनकी संख्याहु लेहुसुनि९१
सब अवसर इकसठि६१संकलन, सोलह१६तँहँ ए नेग प्रजासन ॥
तानइंदु१४९ मित नेग स्वकुल१ तत, सोलह१६ सह पैँसठि अग्ग
सत १६५ ॥ ९२ ॥

॥ दोहा ॥

छितिप बंधि इम नेग छह्हि, वृत्तिधरन बिस्वास ॥
पठये सब बुंदीपुरी, रक्खि सुक्षित गुनरासि ॥ ९३ ॥
हमरे पुब्ब पितामहहु, दै आसिख लहिदान ॥
सुकविखेम१६८।१।१अरु राम१६८।१।२सह, बिलसे आइ लबान ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लाद्याश्रितनियतवसुप्रतोलीपात्रत्वत्यागादिवर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मह समाढ्य बारौं१मढ२, भूप भयो भगवंत१९५।३ ॥
अग्रज१भू लिय छिन्नि इम, अनख बढाइ अनंत ॥ १ ॥

---

१ छंद ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥९४॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) आदि नेगियों के नेग और पोळपात्र के त्याग आदि के वर्णन का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २३० मयूख हुए ॥
२ धनवान् ॥ १ ॥

वसुधा साह सहाय बिनु, लेतो छिन्नि सु लुब्ध[1] ॥
जबहु बीरपन जानते, बदि यह धर्म बिरुद्ध ॥ २ ॥
पै जिम सरभ[2]सहाय पगि, वृक[2] लै सिंह[3] बिभाग ॥
भूमि अर्द्ध लहि सम भयो, रक्खि भूपपन राग ॥ ३ ॥
तब भाऊ१९५।१ भूपहु तजी, प्रथित[4] अनुजसन प्रीति ॥
बहुरि दुरभ्रातन मिलन बिधि, न हुव मान धननीति ॥ ४ ॥
भीरु सुजा४०।२इतजो भज्यो, पहिलैं गंगापार ॥
जप[1]अनिरुद्ध[2]दलेल[3]जब, रहेरोध रखवार ॥ ५ ॥
साहभयो अवरंग४०।३सुनि, एहु मिले सब आनि ॥
सुजा४०।२कटक उततैं सज्यो, पुनिदै मुच्छन पानि ॥ ६ ॥
पूरब पाटलिपुत्रतैं, राजमहल्ल अभिराम ॥
पुर गंगातट जो प्रथित, तह आयो यह ताम ॥ ७ ॥
ठहै तत्थहि दल हाजरी, चढयो सु दर्प मचात ॥
अहो अनुज मही गही, सल्प सु उर न समात ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुनि आत सुजा४०।२ बल बहुल संग, अवरंग४०।३ चढयो इततैं अभंग ॥
संभवित भूप हाजरि लसात, भाऊ१९५।२।१ भगवंत१९५।३।२ हु संग भ्रात ॥ ९ ॥
इम समुख मिले उद्धत असेस, दुव२कटक खेगैखजुवा प्रदेस ॥
दुरदिनरु दुरत्ति तोपन दगाइ, ठहरे बिदूर बिच जुद्ध ठाइ ॥ १० ॥
तीजे३दिन बाजिन बग्ग तानि, जुग चक्र जुरे बल[1]सक्र[2]जानि ॥
आरूढ गजन भाई उभै२हि, ललकारत पहुँचे निजन लैहि ॥ ११ ॥

१ लोभी ॥ २ ॥ २ सिंह की ३ राजापन से स्नेह रखकर ॥ ३ ॥ ४ विदित ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ पटना शहर से ६ प्रसिद्ध ७ तहां ॥ ७ ॥ ८ आश्चर्य है कि ॥ ८ ॥ ९ बहुत सेना के साथ १० जिनका हाजर होना सम्भव था वे ॥ ९ ॥ ११ खजुवा नगर के पास १२ बहुत दूर ॥ १० ॥ १३ सेना १४ इन्द्र और बलराजा ॥ ११ ॥

इतरहु इत१उत२के कति अमीर, बेतंडन[2] आरुहि मिलन वीर ॥
हुसियार सुजा४०१२कैदल हरोल, लहि अवसर झारे खग्ग लोल[3]
अवरंग ४०१३ कटक कछु सिथिल[4] आस, तिमातिम इत क्रमक्रम बढत त्रास ॥
बिच पैठि सुजा ४०१२ के भटन व्रात[5], दृढ सैय[6] चलाइ कछु जय दिखात ॥ १३ ॥
इमपिछि सुजा४०१२ के इक अमीर, सन्निधि[7] अवरंग४०१३ हि लै सधीर ॥
गज तास[8] स्वगज टक्कर लगाइ, जानुन[9] जकाइदिय सीघ्र जाइ १४
चीस१रु पुरीस[10]२इम इभ[11] अचेत, बेपन[12]२लग्यो सु घुम्मन२व्यपेत[13] ॥
जो होइ पलायन[14] सक्ति जाहि, तो जाइ दूरभाजि भाजि सु ताहि१५
इत पात अति असह एह, दिय स्वामि[15] अनुज अरि द्विरद देह
अवरंग ४०१३ चहिय गिरि चढन अर्व[16], गिनि असु[17] बिपत्ति इभपर[18] बिगर्व[19] ॥
अवरंग ४०१३ वीर तँहँ इक अलीह[20], ललकारयो स्वामि सु तर्ज लीह ॥
गिरिबो यह[21]गज१तैं तखत२तैं सु; हत्थी रहैंहिं निजहिट्ठ[22] हैं सु१७
इभ[23]१ही यह दिल्लीपद२ अज्ज, करिये नताहि तजि लजि कुकज्ज[24]

१ और भी २ हाथियों पर सवार होकर ३ चपल ॥ १२ ॥ ४ ढीला हुआ ५ समूह ६ हाथ ॥ १३ ॥ ७ औरंगजेब का समीप लेकर ८ उस औरंगजेब के हाथी के अपने हाथी की टक्कर लगाकर ९ घुटनों के बल गिरादिया ॥ १४ ॥ १० लीद करके ११ हाथी १२ कांपने लगा १३ दुर्गति होने से १४ भागने की शक्ति होती तो ॥ १५ ॥ १५ स्वामि के शत्रु छोटे भाई औरंगजेब के हाथी ने १६ औरंगजेब ने हाथी से गिरकर घोड़े पर चढना चाहा १७ प्राण का १८ हाथी पर १९ गर्व रहित ॥ १६ ॥ २० बिना मार्ग से अर्थात् सेवक का स्वामि से यह कहने का मार्ग नहीं है तो भी उसने ललकारा २१ यह हाथी से गिरना है सो तख्त से गिरना है २२ हाथी अपने नीचे रहने से ही तख्त भी अपने नीचे रहेगा ॥ १७ ॥ २३ यह हाथी २४ खोटा कार्य

उज्जैइनी दारा ४०।१ करि पहैंहि, बन बनन भ्रमत बिपदा बहैं-
हि ॥ १८ ॥

है मरन१ जियन२ जय३ दैव हत्थ, सब स्वीय[2] लखहिँ गजथित
समत्थ[3] ॥

भनि मृत कि[4]१ भग्ग२ इभ सून्य इक्खि, सब लगहिँ[5] मग्ग उद्दा-
व सिक्खि ॥ १९ ॥

तिम कहिय गजा[6]जीवहिँ मतर्ज्जिँ[7], इभकौं उठाहु कछु धिर्ज्ज[8] अ-
र्ज्जि ॥

घन रीझ१ लेहु तो जय घुमंड, देहु न उठाइ तो माथदंड२ ।२०।
वृत्तांत[9] कहत लग्गत बिलंब, काल[10] सु हुव दुद्धर डर करंबैं[11] ॥
जो लौं गज उट्ठहिँ पुब्ब जास, पैद्दुत[12] अनीक हुव तास पास॥२१॥
मिथ्याहि नैंठ[13] अवरंग४०।३।१मानि जित्यो सुजा ४०।२।२ हि जि-
य सत्य जानि ॥

तहँ नृप१ नवाब२ बहु बदलि तोर, अति त्रस्त भजे पति सिविरैं[14]
ओर ॥ २२ ॥

जसवंत जोधपुरभूप जत्थ, मन्निसु सुजा४०।२ बँ[15] हुव पति समत्थ॥
इहिं धूर्त अचानक सिविर आइ, सन्नद्ध स्वीय सब बल सजाइ॥
क्रम लुट्टि साह बैभव१ कितोक, जु मिल्यो वरोध[16] जेवर२ जितोक
लै वित्त[17] जोधपुर गो निलज्ज, अवरंग४०।३ न जान्यौ जियत अ-
ज्ज[18] ॥ २४ ॥

१उज्जैन के युद्ध में दाराशिकोह ने हाथी से उतर कर॥१८॥२अपने लोग३समर्थ ४ हाथी को खाली देखकर आप का मराहुआ या भगाहुआ कहकर सेना के सबलोग ५ भागे ॥ १९ ॥ ६ महावत को ७ धमका कर कहा ८ धैर्य देकर ॥ २० ॥ ९ यह बात कहते बार लगती है १० वह समय ११ भय का समूह होने के कारण दुर्धर हुआ १२ सेना भागी ॥२१॥१३झूठे ही औरंगजेब को मरा हुआ मानकर औरंगजेब के १४ डेरों की ओर १५ सब ॥२३॥ १६ ज-नाने में १७धन १८ आज औरंगजेब को जीवित नहीं जाना ॥ २४ ॥

खल एह सुजा ४०।२ जय करत [1]ख्यात, जब लुट्टन लग्यो [2]अर्थ जात ॥
बुंदीस सिविर[3] जब नरन [4]व्रात, हो सोहु सुजा ४०।२ जय सुनि सुहात ॥ २५ ॥
भगवंत १९५।३ सिविर१ संजुत [5]स्वभाइ, लुट्टतहुव जँहँतँहँ [6]प्रसभ लाइ ॥
अन्न बिगरे सबके सिविर माँहिँ, जन बहु [7]पलाइ दिसदिसन जाँहिँ
इम [8]डम्मर मच्यो इत सिविर१ आनि, तिम उत रन२ तिहिं भट [9]कोप तानि ॥
उतरन दयो न इभतें [10]स्वईस, रु कहिय [11]इभपालहिँ [12]बितत रीस।७२।
इभकौं उठाइकै लेहु [13]इष्ट१, [14]असु तव कै लैहौं२ रे अनिष्ट ॥
बिसवास१ धिज्जर२ बल३ मन४ बढाइ, [15]इभ सिथिल निट्ठि तिहिं दिय उठाइ ॥ २८ ॥
उट्ठत मतंग तापर बइट्ठ, दल१ अप्पर अप्प१ दल२ बिकल दिट्ठ ॥
गजकै गजटक्कर गो लगाइ, जो [16]म्लिच्छ हन्यौं भगवंत १९५।३ जाइ।९२।
भाऊ १९५।१ नरेस गिनि स्वामि भाव, कछु दूर खरो न भजन कहाव ॥
अवरंग ४०।३ कहिय लखि कवन एह, निज बुल्ले भाऊ १९५।१ यह सनेह ॥ ३० ॥
बुल्ल्यो सु खरो यह सरबिलंद, करिहैँ फतेहि तो [17]किति कंद ॥
अवरंग४०।३ अक्खि इम [18]पीलु पिल्लि, किय हल्ल सुजा४०।२पर

१ प्रसिद्ध २ धन ३ बुन्दीश के डेरों में ४ मनुष्यों का समूह ॥२५॥ ५ भगवन्तसिंह के डेरों सहित ५ अपनी इच्छानुसार ६ हठ करके ७ भागकर ॥ २६ ॥ ८ उपद्रव ९ क्रोध करके १० अपने स्वामी औरंगजेब को हाथी से नहीं उतरने दिया ११ महावत को १२ क्रोध फैलाकर ॥ २७ ॥ १३ मन चाहा फल १४ प्राण १५ हाथी को ॥ २८ ॥ १६ हाथी के टक्कर लगानेवाले म्लेच्छ को भगवन्तसिंह ने मार लिया ॥ २९ ॥ ३० ॥ १७ कीर्ति का मूल १८ हाथी को बढाकर

सरन किल्लि[1] ॥३१॥
हड्डा६१धिप भाऊ१९५ तस हरोल, बढिगो लै अखिलन[2] देत बोल
बुंदीस दल१रु निजदल२विसिष्ट[3], दिल्लीस जुरयो स्वभटोपदिष्ट[4]॥३२॥
अवरंग४०१३ जियत लखि सुभट ओर, ते दूर दूर हे प्रहतजोर[5]॥
मिलि तेहु सबै रचि सस्त्र मार, भिलि जुट्ट अरिसिर पटकि भार॥
अवरंग४०१३नियति[6] अनुकूल आइ, इक चित्त जुरे सब छक अघाइ॥
भाऊ१९५१ अधीस भुजबल भरोस, सो गोहि पैठि परवल सरोस
चउ४भेद[7] लरन प्रहरन[8] चलंत, छिति अंग रंग१ नभ२ उच्छलंत॥
सामीप्य[9] लयो गजथित सुजा४०१२ सु, इभ[10]१ इभ२न जुरे हय१ ह-
य२न आसु[11] ॥ ३५ ॥
बुन्दीसहिं अक्खिय साह बीर, व्है तव भुज रैन[12]१ खनि२ विजय१
हीर२ ॥
सव्वहु तिम खल जिम बढि सकैन, अवसर यह मुनसब बढन ऐन[13]
सुनि नृप प्रसन्न हलकारि स्वीय[14], गय झंपि सुजा ४०१२ सिर रय
गरीय[15] ॥
जिम परत किलकिला१ सैंफर[16]२जानि, तिम पहुँचि सत्रु गंज रंज[17]
प्रतानि ॥३७॥
पीलु[18]१हिं प्रहारि खर[19] झारि खग्ग, आंधोरन[20] मस्तक कियअलग्ग
दूजी२हु बाँजि झंपा दिवाइ[21], आघात सुजा ४०१२१३ सिर किपउ

१ बाणों से फैलकर सूजा पर हल्ला किया॥३१॥२सब को३युक्त४अपने वीरों से उपदेश पाकर ॥ ३२ ॥ ५ निर्बल होकर ॥ ३३ ॥ ६ भाग्य ॥३४॥ ७ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त इन चार प्रकार के ८ शस्त्र चलते समय ९ नजदीक १० हाथियों के सवारों का हाथियों के सवारों से और घोड़ों के सवारों का घोड़ों के सवारों से ११ शीघ्र युद्ध हुआ (यहां हाथियों का हाथियों से और घोड़ों का घोड़ों से लड़ने में लक्षणा से सवारों का ग्रहण है) ॥३५॥ १२ युद्ध रूपी खान में विजय रूपी हीरा १३ स्थान ॥ ३६ ॥ १४ अपने लोगों को बढाकर १५ बड़े वेग से १६ मच्छी को देखकर १७ रजोगुण फैलाकर ॥ ३७ ॥ १८ हाथी को १९ तीक्ष्ण २० महावत को २१ घोड़े को झंप दिलाकर ॥ ३८ ॥

आइ ॥ ३८ ॥
सो खग्ग खवासीके सिपाह४,*अङ्कुन पर झेल्यों आक्खि वाह ॥
आधोरन[1] आसन पुनि सु आइ, प्रेरतहुव पीलुहिं[2] छिदपाइ ॥३९॥
प्रभु[3] १ बाहु सुजा४०।२ सर इक पइठ, बलि झंपि गयो ढिग हय बइठ ॥
गजप्रेरक[4]१ अपर२हु दियउ गेरि, जान्यौं सुजा ४०।२हु हानिहै हि हेरि ॥ ४० ॥
हय१ लिय तिहिं गय२ तजि कछु सहाय, कुंजर[5] लखि परभट सून्यकाय ॥
जिहिं जानि नष्ट[6] अवरंग४०।३जेम, तासहु दलभग्गो पुब्बँ तेम ।४१।
इहिं अंतर भो इत भानु अस्त, मचि अंधकार छाये समस्त ॥
पर१ अप्पन२ जन बोध न परंत, हुव त्रास सुजा४०।२ हिय आस हंत ॥ ४२ ॥
नृपके भतीज तँहँ रूप१९६।२ नाम, जज्जाउरपति बढि उचित जाम ॥
अरि साहसुजा४०।२को जो वजीर,मारयो सु इबादतखान१वीर।४३।
उद्राव[9] मचतठहर्यो न एह४०।२, निज अँसु[10] लै भग्गो रनअनेहँ[11] ॥
बुंदीसकेहु कनक१९५।१दि बीर, साधक सहाय हुव बिजय सीर
अवरंग४०।३केहु खिलभट[12] अनेक, इहिं जय हुव भाँगो[13] चित्त एक१
पै हड्ड६१।१ ता१हि गज२ सह पिरीड़[14], गजपालि[15]१ खवासीभट२ गिराइ ॥ ४५ ॥

*हाल पर १महावत के आसन पर आकर २हाथी को ॥३९॥ ३राजा भाऊसिंह के भुज पर सुजा का एक तीर लगा ४दूसरे महावत को भी ॥४०॥ सुजा हाथी छोड़कर घोड़े पर चढ़ा ५हाथी को खाली देखकर ६जिस प्रकार औरंगजेब का मराहुआ जाना था तिस प्रकार सुजा को भी मराहुआ जाना ७ पहिले की भाँति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ८ जहां ॥ ४३ ॥ ९ भागना १० प्राण ११ युद्ध के समय ॥ ४४ ॥ १२ बाकी के वीर एक चित्त होकर १३ वंट करनेवाले १४ पीडा देकर १५ महावत ॥ ४५ ॥

गजतैं सु गिरायो बिकल गत्त, *घमसान मचायो प्रात घत्त ॥
पति न लखि परंन †प्रद्रव परंत, इभ१ बाजि२रहे कति ‡रंगअंत॥४६॥
इक१ सोहि खासगज रु हुव२ओर, §त्रिगजी३लिय नृप बल बिजय सोर ॥
बलि तिनसैं इकपर रजत बंब४, किय निज तिम तिथि १५ तिम हय कदंब १९ ॥ ४७ ॥
अप३ गज हय पंद्रह १५ लुट्टि ताव, भास्यो अवरंग४० जहिं जैपद भाव१९५।१ ॥
पायो सता १९४।२ जु जगजस प्रसारि, बलि मुनसब देवे सुहि बिचारि ॥ ४८ ॥
सतकारि सराहत रीझिसाह, भाऊ१९५।१प्रति भाखिय वाहवाह ॥
वारन अप३तिथि१५हय रजत बंब१, लूटहु दई सु कहि जय वलंब
भूपहु प्रसन्नहुव अडर भासि, बचनन निज कत्थन नन बिकासि ॥
कासिव१सुर्व मिच्छन आक्खि कित्ति, बुल्ले मुगलेसहिं समय बित्ति
अब होत सकल इम जय उपेत, खेलन रन जित्यो कोन खेत ॥
प्रभु अप्प लखत जिहिं बल प्रसारि, इभतैं सु प्रेहत दिन्नौं उतारि
तासौं वै उचित इह बुझि ताहि, अप्पन मन जो कछु देहु याहि ॥
जवनेस बदिय तुम कहत ज्यौंहि, सह बिजय भये बुंदीस सौंहि
सिबिरैं अब याकौं अप्पि सर्व, अनुमत सैराहिं गिनिहै अखर्व॥
रन जित्ति इम सु दुंदुभि घुराइ, पहु भाऊ१९५।१जय अवलंब पाइ
सिबिरन दिस आवत मुदित साह, पथमाँहिं सुन्यौं आगसैं प्रवाह

*युद्ध †अपने स्वामी को नहीं देखकर शत्रुओं में भागना पड़ी ‡युद्धभूमि के अन्त में ॥ ४६ ॥ §तीन हाथियों का समुदाय १ चांदी का नगारा २पन्द्रह घोड़ों का समूह ॥ ४७ ॥ ३ तहां ४ जय देनेवाला भावसिंह ॥ ४८ ॥ ५ हाथी ६ चांदी का नगारा ७जय का अवलम्ब कह कर ॥४९॥ ८ आदि ॥ ५० ॥९सहित १० सारकर ॥ ५१ ॥ ११अब ॥ ५२ ॥ १२डेरों में १३ उत्साह करने की प्रशंसा करके १४ बड़ा ॥ ५३ ॥ १५ अपराध का

बुंदीस *सिबिरके जनन †व्रात, खलभाव विभव लुट्यो हि ख्यात
मन्नत जसवंतहिं जड ‡निमित, बुंदीसहि §लोलुभ चहिय वित्त ॥
किय प्रथम लूट जसवंत१क्रूर, सिबिरस्थ तदपि बुंदीस सूर ।५५।
करते जो संगति दोस कष्ट, भगवंत१९५।३सिबिर१होतो न भ्रष्ट॥
बलि खास सीर२की पुर३बजार४, सब लुट्टि न करते लुप्त सार५६
जसवंतसौंहु ए बढत जाव[2], भगवंत१९५।३विभव लुट्टन प्रभाव ॥
रन चहत सुजा४०।२जय [3]मैच्छरीक, अब जानिपरिय लुट्टत अनीक५७
न पिहित जो [5]है इन्ह नृप निदेस, क्यों मंतु करैं तो असह एस ॥
अवरंग४०।३सुनत यह सिबिर आइ, प्रजरयो कृसानु[6] जनु [7]आज्य पाइ
सासन दिय तोपन पिल्लि साह, भाऊ१९५।१कहँ भुंजहु [9]गुरु गुनाह
पाये भगवंत१९५।३हु दुव२प्रहार, तिहिं करहु [10]स्वस्थ तम वैद्यवार५९
बुंदीस सिबिर[11]जन इक१बचैंन, अखिलन पहुँचावहु [12]संमन ऐंन ॥
यह सुनि लै तोपन तस अनीक, रिस रस बस बेढिय [13]संभरीक६०
उतरयो इत भूपति सिबिर आनि, मन लुट्टन [14]आगस असह मानि
लुंटाकन[15] धिक्कारि बंधि लैन, दृढ किन्न जथोचित दंडदैन ॥ ६१ ॥
जिहिं [16]चविय [17]आततायिन सजोर, सूदन किय जयश्रम[18] व्यर्थ मोर ॥
पाये प्रहार परभटन पारि, हत्थी ताजिगो भजि आरि सु हारि ।६२।
सो मम जस दुर्लभ दलन सज्ज, [19]असुदंड सहहु फल सकल अज्ज॥
जिन्ह हनन खिलन दै हुकम [20]जाव, तोपनगन बिंटिय सिबिर[21]ताव
हो सज्ज नृपहु लै असि सहायै[22], निजभटन कहिय अव मरन न्याय

---

* डेरों के लोगों के † समूह ने ॥ ५४ ॥ ‡ कारण § अत्यन्त लोभी १ डेरों में ठहरे हुए ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ २ जहां ३ पहुवाघ ४ बुरा ॥ ५७ ॥ ५ राजा की गुप्त आज्ञा नहीं होती तो नहीं सहने योग्य अपराध क्यों करते ६ अग्नि ७ घृत ॥ ५८ ॥ ८ तोपें भेजकर ९ बड़े अपराध से १० बहुत नैरोग्य ॥ ५९ ॥ ११ डेरों के लोग १२ यमराज के घर १३ चहुवाण को घेरा ॥ ६० ॥ १४ अपराध १५ लूटनेवालों को धिक्कार देकर ॥ ६१ ॥ १६ कहा १७ आततायी लोगों ने १८ विजय के परिश्रम को ॥ ६२ ॥ १९ प्राणों का २० जहां २१ तहां ॥ ६३ ॥ २२ खड्ग को सहाय लेकर

पुनि आततांइगन बुल्लिपास, अक्खिय अवहै इक१मरन आस।६४।
बचिहैंतो देहँ दम बहोरि, जितने जस भुजबस लेहु जोरि ॥
कति भटन अरज किय नय प्रकास, पटकहु अपराधिन साहपास
नृप कहिय मोहि दम दैन नीति, इहिं तुम मर्त जियभय कुजस
ईति ॥
तोहू कति सुभटन प्रसभ तानि, अक्खिय देहेला दिट्ठि आनि ।६६।
हुत हम अपराधिन करत दूर, ठहे इष्ट तिमहिं सद्व हजूर ॥
जिन किन्न अरज पच्छेंहु जाइ, तिन्हतर्जि साह दिय बध बताइ६७
इत कहिय आइ मन्नी न एह, नृप इत निज तर्जे नीति नेह ॥
बाहर सु कढ्ढि बाहन बिहीन, लौ निजगन मन पन सरन लीन६८
अक्खिय इक१पहिले तोप वार, सहि पीछैं स्फारहिं निसित सार
चाहैं यह जीवन आस चाहि, सोहैन रहै इम आसि समाहि ।६९।
पहिलैं तुम सहहु स्वामि पच्छैं, मारहु पुनि हमकहँ मिलि सँमच्छ
अतिघोर अज्ज यह जवन आग्गि, जहँ को पतंग हम जरन जग्गि
पुनि यह उदंत गए साहपास, अति क्रुद्ध तबहु हंतांहि आस ॥
सासन यह तीजो३ घोर सोधि, बलमैं हुव हाहा भय प्रबोधि।७१।
यहु साह सान्य तहँ हुवर नवाब, सिबिरनैंथित जय१ बध २ गि-
नि हिसाब ॥
कुंनोस सिबिरहिं कढत बेर, अक्खिय कछु ठहरहु नहिं अबेर७२
सन्नैंन साह तो स्वीय-संग, आंचरि मरि करियो जस उदग्ग ॥
तोपनअध्यक्षहु बुल्लि तत्थ, अरु अक्खिय ठहरहु बुल्लि अत्थ

---

१ लूटनेवालों के समूह को पास बुलाकर ॥ ६४ ॥ २ देह ३ नीति ॥ ६५ ॥ ४ तुम्हारी सलाह ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ५ निश्चय करके ॥ ६९ ॥ ६ पक्ष ७ सन्मुख (सन्मुख) ८ आज ॥ ७० ॥ ९ कुलक्षण १० मारनेवालों की इच्छा ११ सेना में ॥ ७१ ॥ १२ डेरों में स्थित १३ डेरे के पास निकलते समय ॥ ७२ ॥ १४ अपने मनों (मरने मारने) का १५ आचरण करके १६ तोपखाने के दारोगा को ॥७३॥

जोलौं हम बिन्नति करहिं जाइ, भ्रमि तोलौं न करहु हुकम भाइ
जंपिय सकोप तिन दुहुँरन जाइ, प्रभु गर्बहु तानक दुरजय पाइ॥७४॥
दारा सो सत्रु रु उचित दाय[1], सो दूरभयो हिंदुन सहाय ॥
भग्गो सुजा४०।२ हु तिन्ह त्रास भार, तिनकौं न हनहु गिनि अप्रतारै[2] ॥ ७५ ॥
प्रभुकै पिता३९।१हु बलि[3] बिद्यमान, दारा ४०।१२ सुजा ४०।२।३ हु अरि नय निर्दान[4] ॥
रिपु व्है कढ्योहि रहोरगज४, अरिकरत अप्प या[5]कोहु आज॥७६॥
हो भूप यहै प्रभुके हरोल, तस स्वामिधर्म जय बिगत तोल ॥
पीछैं कबंध यह लूट पाइ, संगी किय कति खल फल सुनाइ॥७७॥
बुंदीस दये तिनकौं निडारि[6], जो होइ देहु खल बंधि१ जारि२ ॥
हिंदुन भुव यह हुव अप्प हस्त, प्रतिकूल न बर्तहु तिन्ह प्रसस्त[7]॥
है हड्ड६१।१ स्वामि हित करनहार, अप्पहु कछु जयफल हो उदार॥
जसवंत जाखिपहु[8] सत्रु जानि, प्रभु स्वामिधर्म सेवत प्रमानि॥ ७९ ॥
दैहो हनिबेको इहिं[9] निदेस, अभिमत तब करिहै भरत एस ॥
प्रभुलौं बढ्यावहिं जो प्रतारि[10], व्है तब अनिष्ट न सुरै सु हारि॥८०॥
जो कढिहु जाइ तो बंधि जोर, ए द्वै२[11] हि रहैं प्रभु घातओर ॥
जो अल्पआयु मारयोहु जाइ, दुर्मन ह्वै तो सब मन दुराइ ॥ ८१ ॥
बिगरैं सब हिंदुन प्रभु बिसास, अति दूर परैं तव राज्य आस ॥
तातैं जो मन्नहु स्वहित तुल्लि, बैल्ल[12]१तोपरन प्रत्युतै[13] सोहु बुल्लि॥८२॥

॥ ७४ ॥ १ इस दाराशिकोह का पक्ष भी उचित था २ ठगने के वा ताड़ना के योग्य नहीं जानकर ॥ ७५ ॥ ३ फिर ४ नीति के शत्रु होने के कारण ॥७६॥ ५ लाभ ॥७७॥ ६ निकाल दिये ७ उन श्रेष्ठों के प्रतिकूल न वर्तना ॥ ७८ ॥ ८ पक्षिन के पति को भी ॥ ७९ ॥ ९ ताड़ित १० विशेष ताड़ना करके ॥ ८० ॥ ११ जोधपुर का राजा यशवन्तसिंह और बुन्दी का राव भाऊसिंह ॥ ८१ ॥ १२ सेना १३ उलटी (पीछी) ॥ ८२ ॥

नहिंतो यह अवसर बलि बनैंन, हजरत पाछितैंहो उचित हैंन ॥
हम मृत्यु हिताश्हित १ कहनहार, बलि प्रभु प्रमान जिहिं तिहिं बिचार ॥ ८३ ॥

निस अंधकार अति जिहिं अनेह, अक्खी दुरनबावन अरज एह
तिम सुनि भय संसय नैंप तुलाइ, बल १ तोप २ निकर साह सें बुलाइ ॥ ८४ ॥

नृप कहँ बिसासि अक्खिय निसेस, बंधन घरभेजहु फल बिसेस
बल १ तोप २ न जातहि मत बिचारि, नृपतैं खल लुंटक दिय निकारि ॥ ८५ ॥

अक्खिय मैं आतहि बेर अत्थ, सब दंडि लिडारिय खलन सत्थ ॥
व्है तो गहाइ लेहु ब हजूर, देसहु सन ते जन किन्न दूर ॥ ८६ ॥
अवरंग४०।३क्रुधानलतैं अधीस, रक्ख्यो इम दिष्टहिं टारि रीस ॥
जाफर१साइस्तेखान२जोट२, ए हुव नवाब नृप कष्ट ओट ॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

इम बुंदीपति तैं अनख, निह्नि न साह निवारि ॥
कथित नवाबनके कहैं, धीरभयो हितधारि ॥ ८८ ॥
कछुदिन अंतर न्हानकरि, भाऊ१९५।१।१अरु भगवंत१९५।३।२॥
भिन्न समय जावतभये, साहसभा बिलसंत ॥ ८९ ॥
करेरीक्ष भगवंत१९५।३कौं, सत्त७परगनाँ साह ॥
पै तिनमैं इक्क बिघ्न परि, हे परतंत्र प्रबाह ॥ ९० ॥
चक्रसेन१अभिधान चढि, सबररांज अतिसूर ॥

॥ ८३ ॥ १ समय २नीति ३ समूह ४बादशाह ने उनको बुलवा लिये ॥ ८४ ॥ ५ सम्पूर्ण ६ लूटनेवालों को ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ७ क्रोध की * अग्नि से ८भाग्य ने ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९ चक्रसेन नामक १० भीलों का राजा ॥ ९१ ॥

* अग्नि शब्द पुलिङ्ग है परन्तु कविता में स्त्री लिङ्ग से व्यवहार किया जाता है इसकारण हमने भी स्त्री लिङ्ग लिखा है ॥

सहँस पंच५०००भिल्लन सहित, पैठो तहँ बल पूर ॥ ९१ ॥
जावहिं साह अनीकं जब, जो दुर्गम भजिजाइ ॥
आइबिसैं बनि ईस यह, पीछैं अवसर पाइ ॥ ९२ ॥
जत्र कुत्र तत्रत्य[2] जन, हुव हाकिम दुव[3]हेतु ॥
तत्थ[4] रहैं इम तोरिबो, कठिन किरातन[5] केतु ॥ ९३ ॥
पुर चाचुर्नो[1]नाम पुनि, खत्ताखेरियख्यात ॥
बिलसैं जो जुगथान बसि, सबर[6] परगनाँ सात७ ॥ ९४ ॥
ते भगवंत१९५१हिं रीझतकि, सात७हि अप्पे साह ॥
कह्यो चक्रधर[7] हनि करहु, अप्प अमल उमिराह ॥ ९५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे खजुवान्तिकसूजौरङ्गजेबरणाकरणम्१, सूजावीरवारणाघट्टनेनौरंगजेबारोह्यकरिपातन २, औरंगजेबपक्षत्वभ्रमयोधपुरेशयशवन्तसिंहस्यौरंगजेबशिबिरलुण्ठन ३, भावसिंहानुजभगवन्तसिंहस्यौरंगजेबगजपातकयवनहनन४, हड्डाधिराजभावसिंहसूजारोह्यगजाम्बष्ठमारणम्५, अश्वारूढसूजापलायनेन तत्सैन्यप्रपलायन६, एतद्विजयहेत्वौरङ्गजेबभावसिंहप्रसत्तिसमययोधपुरेशयशवन्तसिंहस्यौ-

---

१लेना ॥ ९२ ॥ २ वहाँ के लोग ३ दोनों कारणों से ४ तहां ५ भीलों की ध्वजा ॥ ९३ ॥ ६ भील ॥ ९४ ॥ ७ चक्रसेन नामक भील को ॥ ९५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में खजुवा के पास सूजा और औरंगजेब का युद्ध होना१ सूजा के एक वीर का अपने हाथी की टक्कर दिलाकर औरंगजेब की सवारी के हाथी को गिराना२ औरंगजेब को मराहुआ जानकर जोधपुर के राजा यशवन्तसिंह का औरंगजेब के डेरों को लूटना ३ औरंगजेब के हाथी के टक्कर लगानेवाले यवन को भाऊसिंह के छोटे भाई भगवन्तसिंह का मारना ४ हड्डाधिराज भाऊ का सूजा की सवारी के हाथी के महावत को मारना ५ सूजा के घोड़े सवार होकर भागने के कारण सूजा की फौज का भागना ६ इस विजय के कारण औरंगजेब का भाऊ पर प्रसन्न होने के समय जोधपुर के राजा यशवंतसिंह का औरंगजेब के जनाने आदि लूटने के समय बुन्दी के लो-

रङ्गजेबावरोधलुसटनबुन्दीभटसहायकरणसूचनप्राप्त्या भावसिंहो-पर्यौरङ्गजेबसैन्यप्रेषणं ७, जाफरखांशाइस्तखांनामयवनद्वयनिवेदनत्क्षान्तभावसिंहापराधनीरुजभगवन्तसिंहप्रान्तसप्तकप्रदानं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदित एकत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३१ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जसवंतहु इत जाइकैं, प्रथम कर्मवति १९५। पास ॥
मुच्छ करेंखि हड्डीमहल, अधिक विकत्थन आस ॥ १ ॥
अक्खिय जिहिं आतंकतैं, मोकहँ भग्गो मानि ॥
उज्जइनीतैं आवतहि, तैंहु नर्मक्किय तानि ॥ २ ॥
भय ताकैं जो मैं भज्यो, तो ब तसहि जव जुट्टि ॥
मुच्छ१ रु नासा२ छिन्नि मैं, लायो किम वसु लुट्टि ॥ ३ ॥
आनैं तस अँवरोधकै, हुरम जनन हारादि ॥
ए धारहु तुम आभरन, छंमपन संसय छादि ॥ ४ ॥
कर्मवती१९५रानी कही, जहँ हड्डी करजोरि ॥
सूरहि प्रभुलाये सदन, वसु लखि छिद्र बहोरि ॥ ५ ॥
पतिके देतहु नलिपपुनि, बास्कैं करन बिलास ॥
जथा कुपित जसवंतको, तथा सह्यो सनलास ॥ ६ ॥
लिपि पत्रन पावत लिखित, भाऊ१९५।१नृप भगिनी सु ॥

गौं का यशवन्तसिंह की सहायता करने की सूचना पाने के कारण औरंगजेब का अप्रसन्न होकर भाऊपर सेना भेजना ७ जाफरखां और शाइस्तखां दोनों नवाबों के निवेदन करने से भावसिंह का अपराध क्षमा करके भगवन्तसिंह के नैरोग्य होने पर उसको सात परगने दिलाने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से २३१ मयूख हुए ॥

१ हाडी रानी २ मूंछ खींचकर ३ कहता हुआ ॥ १ ॥ ४ हंसी ॥ २ ॥ ५ डर ६ धन ॥ ३ ॥ ७ जनाने के ८ हार आदि भूषण ९ समर्थ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०अपने

[1]रमन बिरत [2]अबिरत रही, गृहसुख [3]रति न गिनी सु ॥ ७ ॥
प्राची[4]दिस भो [5]प्रद्रवित, [6]भीरु सुजा ४०।२ इत भज्जि ॥
बंधन[7]लग्गो बहुरि [8]बल, सो [9]सोभित भट सज्जि ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

तापर पठयो तनय मुख्य१ सुलतानमुहम्मद ४१।१ ॥
भाऊ१९५।१ बुंदियभूप दयो तससंग दुरासद ॥
कुमर राम१।२ अरु किर्त्तिसिंह२।३ कूरमनृपकेरे ॥
नृपति गोड अनिरुद्ध४ प्रगुन [10]अर्थजपर प्रेरे ॥
पुनि जगतसिंह१६५।१५ कोटापतिहु संगहि भोजि मुकुंद१६४।१ सुत ॥
सबतैंहि कहिय पक्करहु१सुजा४०।२हेति[11] अनल कै रहहु [12]हुत९
पुत्रसंग इन्ह [13]प्रमुख अयुत अष्टक८०००० दल लिन्नों ॥
साहसुतहु बढि सबिध कथित काका बल किन्नों ॥
सुता सुजा४०।१ की सुनत एह [14]चिरतैं हो इच्छित ॥
सुजा४०।२ सु जानत सहज तास साहिपासैं[15] रच्यो तित ॥
पठई भतीज कहिकहि [16]पिहित अनुजपुत्र तुम [17]मुख्य१ उत ॥
[18]जामातें होहु जुवराज [19]जिमैं प्रिया आय ब्याहहु [20]प्रनुत ॥ १० ॥
यह न लखैंजिम [21]ईतर अप्प छन्नैं कढि आवहु ॥
करि [22]निक्काह आतहि [23]कनी सु [24]पतनी प्रिय पावहु ॥

सार में ॥ ६ ॥ १ पति से विरक्त होकर २ निरन्तर ३ प्रीति ॥ ७ ॥ ४ पूर्व दिशा को ५ भागा ६ लजा ॥ ८ ॥ ७ दुष्प्राप्य अथवा दुर्धर्ष " यह बुन्दी के राजा का विशेषण है" ८ कीर्तिसिंह ९ विशेष गुणवाले १० बडे भाई बुजा पर ११शस्त्र रूपी अग्नि में १२होम होकर रहो ॥ ९ ॥ १३आदि १४बहुत समय से चाहता था १५ सुलतान महम्मद सूजा की पुत्री के पास राख रहा था १६ गुप्त १७ पाटवी १८ जमाई १९ युवराज की भांति अर्थात् औरंगजेब को कैद करके तुम युवराज होकर यहां आकर २० विशेष स्तुति योग्य प्रिया से विवाह करो ॥ १० ॥ २१ अन्य नहीं देखे ऐसे २२ यावनी भाषा का विवाह वाची शब्द है २३ कन्या को २४स्त्री

इम सहाय इत होइ जनक१ कारि तास जनक२ जिम ॥
दिल्ली बिलसहु दुलभ करहु संदेह अत्थ किम ॥
जामात मारि जो मैं जेरठ कनी रुचिर विधवा करौं ॥
तुम३ हल४ मिलाप रैब सक्खि तब पलटि कोल दोजखपरौं५ ॥११॥
काका लिपि यह कुमर कलित६ निर्जन गोचर७ करि ॥
अंतरंग निज अनुग८ भाव९बोधन१० लोभी भरि ॥
काका पुव्वहि कुटिल जेहु कुड्डे जर जुत्तिन ॥
ते कुल्ले कढि त्वरित निटिल्ल११ निज संडहु मुत्तिन ॥
बिस्वस्त१२ भेजि काका बहुरि जिम कुल्ले तिम चलहु जहँ ॥
कारिजेर वप्प तस वप्प१३ क्रम तुम विलसहु नव रूप्प१४ तहँ ॥१२॥
लुब्ध सु लुब्धन पोषित१५ मन्नि सुलतान मुहुम्मद ॥
छोरि जनक१६ बलछिद्र पाइ निकस्यो अघछलपद ॥
कुल्ल्यो जो बिस्वस्त सुजा भेज्यो सुहि तासह ॥
काकामति कातिकाम मिल्यो इक सु व्याहन१७ सह ॥
कुमरहिं न बिक्खि इत तँहँ कटक१८ पठई सुहि लिखि साह प्रति ॥
अवरंग लिखिय रक्खियो उतहि मग अहे तुम रोध१९मति ॥१३॥
इम जाहि हुकुम अनीकि२० रक्खिय तत्थहि मग रोधक ॥
काका सन इत कुमर बिंदवनि२१ मिलिय कुबोधक२२ ॥

१ तुम्हारे पिता औरंगजेब को उसके पिता शाहजहाँ के समान कैद करके २ युग्म ३ तुम्हारे कन्या को ४ ईश्वर साक्षी है ५ नरक में पहुंचा ॥११॥ ६ विदित अथवा प्रगट ७ एकान्त में देखकर ८ जानकी ९ नौकर १० अभिप्राय जानने के लिये ११ ललाट मोतियों से रच्यो अर्थात् मोतियों से अजन चढाया "निटिल शब्द का अर्थ दण्डकार [illegible] की टीका में [illegible] ललाट लिखा है" १२ भरोसे के पुरुषों को १३ उसके पिता (शाहजहाँ) के क्रम से १४ [illegible] ॥१२॥ १५ उस लोभी ने लोभियों के पालने को जानकर १६ पिता (औरंगजेब) की सेना को छोड़कर १७ व्याह करने के उत्साह से १८ सेना ने कुंवर को मार्ग देखकर १९ रोकने और युद्ध में ॥१३॥ २० सेना २१ [illegible] २२ दुर्बुद्धि [illegible]

स्वसुता[1] तत्थ सुजा४०।२सु भेट किय ब्याहि भतीजहिं ॥
अति तामैं आसक्त बन्यौं मन्नि सु सुख बीजहिं[2] ॥
अवरंग४०।३पटकि कछु पेच इतकुमर१भ्रात२बिच द्रोहकारि॥
कछु मिस बुलाइ गहि सो कुमर अटक्यो गढग्वालेर अरि१४

॥अष्टूपात्॥

जरा[3]अवधि रहि जत्थ मरहिं सुलतान मुहुम्मद४१।१॥
तिम मुराद४०।४काकाहु तास सहपुत्र[4]सभासद२ ॥
इत बिजई अवरंग४०।३प्रबल आयो दिल्लीपुर ॥
लरिहौं कछुक बिलंबि[5] आइ यह मंत्र[6] सुजा४०।२उर ॥
सो कुटुंब बलसहित[7] तबहि दिल्लिय सीमातजि ॥
छलबध[8] संकित छमहु भीरुदिस पुब्ब१गयो भजि ॥
सो साहसुजा४०।२बिस्वाससह अराकान पुरके अधिप ॥
सकुटंब हन्यौं पापी सहज भरि अघ भर निजदेह[9] निप॥१५॥

॥ घनाक्षरी ॥

बर्मा की विलायतके पच्छिम३।४प्रदेस माँहिं,
इंद्रओर[10]१अप्पनतैं अराकान नाम पुर ॥
तामैं राज्य करत नरेस कोऊ तासमय,
ता बिसासघातीनैं धिजोइ दैदै धिज्ज धुर ॥
सोहू दै सहाय मैं रु बिजय बिभागी बनि,
इच्छत कृतघ्न अवरंग४०।३को प्रसाद[11] उर ॥
भूलिधीज्यो भोरा जो सुजा४०।२ सो सकुटुंब मार्यो,
छन्नघात कीनौं छद्म[12] मनके महानिठुर ॥ १६ ॥
रोधक[13] सुजा ४०।२के मगमैं जो बल[14] राख्यो साह,

१ अपनी पुत्री २ कारण ॥ १४ ॥ ३ वृद्धावस्था पर्यन्त ४ पुत्र सहित ५ विलम्ब करके ६ सलाह ७ सेना सहित ८ छल घात से ९ अपने शरीर रूपी कलश को पाप के भार से भरकर ॥ १५ ॥ १० ईशान कोण में ११ मलनता १२ छल ॥ १६ ॥ १३ रोकनेवाली १४ सेना

सो अब बुलाइ भेजे सीख देदै स्वीय घर ॥
जान्यौं जसवंत जोधपुरके नरेस इत,
देह१ पर्‌यो दुर्लभ तो पुहवी बिदूरपर ॥
आलोचत[1] ऐसैं स्वीयभटन[2] समेत गहि,
दारा४०।२ कौं धि[3]जोइ सौंपिदेबो जानि श्रेय[4]तर ॥
दारा४०।२नैं दुखेर जो बचायो आगैं तातैं वह,
धीजतहो ताहि सोहि भेज्यो भाटी[5]बंस भेर ॥ १७ ॥
ताके संग औरहु कृतघ्न भट आपुनैं ते,
भेजि रु कहाइ हम.हैं[6] वे अवरंग४०।३ अरि ॥
नीतिहूसौं निपट[7] तुमारोही तखत यातैं,
कीजे पातसाही आप हमहिं वजीर करि ॥
चोर अवरंग४०।३ हाहा स्वामीके तखत चढ्यो,
ताहि गहि लेहौं मैं महामृध[8] मैं मारिमारि ॥
बीच हरि१ गंगा२ दै बुलावत हजूर हमैं,
पीछैं पछितैहो आज संसय[9] प्रवाह परि ॥ १८ ॥
ज्यौंही इन हाहा जाइ दुष्टन मिलाइ दारा४०।१,
कितवन[10] त्यौंही भरे कपटके बैन कहि ॥
दावपेच बिरचि लपेटलीनौं दारा४०।१ यातैं,
कौल जोजो कीनौं सो लिखाइ चढ्यो संगचहि ॥
जोधपुर आयो जो सैंतडू[11]के समीप[12] सैन,
दिल्लीपति आदर बढाइ आन्यौं,छद्म[13] बहि ॥
मैंना१ मेर२ व्याध३ रु पुलिंद[14]४न मुखर[15] मेलि,

१ विचार करते हुए २ अपने वीरों सहित ३ विश्वास देकर ४ बहुत श्रेष्ठ ५ भट (वीर) "गोविन्ददास आदी" को ॥ १७ ॥ ६ अब ७ निश्चय ८ युद्ध में ९ संदेह के ॥ १८ ॥ १० ठगों ने ११ नदी का नाम है १२ से १३ छल करके १४ भील १५ नीचों (अप्रिय बोलनेवालों) को मिलाकर

चंक्र च्यारिअयुत४०००० दिखायो निज रेफ रहि ॥१९॥
दारा ४०।१ कहुं संग तहाँ जुरिगो कितोक दल,
तासहित ताकौं लौ कबंधज प्रयानकिय ॥
दिल्लीढिग आवत अनीक इतकोहु सज्जि,
अभिमुख आत भीरु प्यारिनके प्रानप्रिय ॥
मंत्रमिस दावमैं लै दारा४०।१ अतिसीम दुष्ट,
देखत गहाइ इग लज्जाको न लेसलिय ॥
दिल्लीपुर आइ पठवाइ कैद दारा ४०।१ जोरि,
कहाई सु बल यह लेकैं देहु दास जिय ॥ २० ॥
साह जसवंतसौं तो कछु न कहाइ ताहि,
मारनके मंत्र निजफौज चढिवो निवारि ॥
अंतिक बुलाइ दारा४०।१ पूछ्यो अवरंग४०।३ हमकौं,
जो गहते तो कहाकरते तब निहारि ॥
दारा४०।१ कह्यो तेरोकंठ कर्तन करते हम,
अवरंग४०।३ कह्यो कैसी हमैंकरिवो बिचारि ॥
दारा४०।१ कह्यो जोहि करते हम करो तुम सो,
सो सुनि हनन भेज्यो बीजँ इक१हू बिसारि ॥२१॥
जवन भरोसाको बहादुरखाँनाम जानि,
मारुयो अवरंग४०।३ कंठदारा४०।१के छुरीकरहु ॥
दारा४०।१कौं लिवाइ तिहिं बारह१२ पुलन आइ,

---

१ सेना २ ऊपर रहकर अर्थात् रेफ, अक्षर के ऊपर रहता है इसप्रकार सबके ऊपर रहकर; अथवा उस अधम ने अपने को दारा का निज का दिखाया ॥१९॥ ३ राठोड़ ने ४ सन्मुख ५ कायर ६ स्त्रियों के प्राणों के प्यारे ७ सलाह करने के मिस से ॥ २० ॥ ८ दाराशिकोह को मारने की सलाह से जो फौज की चढाई होती थी वह रोक दी ९ समीप १० कंठ कटवाना ११ अब हम को क्या करना चाहिये १२ एक वीर्य से उत्पन्न हुए थे सो भूलकर ॥ २१ ॥

भाख्यो करिलेहु करतव्य[1] जिय जो धरहु ॥
गुसल१ निमाज२ करि दारा४०।१ कछुकाल कहि,
पढत कुरान३ कह्यो क्यों[2] बे चिर आचरहु ॥
सो सुनि कुरानकी किताबकी बहादुरके,
उरमैं दई रु कह्यो पापी पापमैं मरहु ॥ २२ ॥
लै वह किताब कलामुल्लाकी बहादुरनैं,
बैठि उर दारा४०।१ को बिदारयो कंठ बीर बनि ॥
पुस्तक कितेकनमैं पावत यहहु लेख,
नभतैं[3] प्रसून[4] उहाँ बरसे बितान[5] तनि ॥
जोधपुरभूप जसवंत मुख धूरिडारि,
प्रचुर[6] प्रजानैं हाहा धिकधिक भूँरि[7] भनि ॥
जानि धूर्त कातर[8] बिडारयो[9] अवरंग४०।३ जाहि,
फलहि मिल्यो न नाँकदेकैं[10] अपसौंन जनि ॥ २३ ॥
श्रीनगर भूपतिके सरन सलेम४१।१ हुतो,
दारा४०।१को तनूज[11] अछो बिपुल बिसास लहि ॥
मारयो सुनि दारा४०।१कों कृतघ्ननैं कपटमंडि,
सो गहि सलेम४१।१ भेज्यो सोपै रह्यो कैद सहि ॥
रोकि१ जनकां[12]१दिक सुजा२दिक मराइ२ इत,
दारा३दिक मारि३अकंटक अवरंग४०।३ रहि ॥
दारा४०।१की सुता निज तृतीय३सुत आजम४१।३कों,
दीनी तास ओरहु जो भ्रात हैतो-कैदकहि॥२४॥
सेना जो सुजादि[13]सैं ही ताके सब भूप सहि,

१करना होवे सो करलो २ अब विलम्ब क्यों करते हो ॥ २२ ॥ ३ आकाश से ४ पुष्प ५ विशेष फैलकर ६ बहुत ७ बहुत ८ कायर ९ निकाला १० नासिका देकर अपशकुन देने का ॥ २३ ॥ ११ दारा का पुत्र १२ पिता आदि को ॥२४॥ १३ सूजा की ओर थी

गेहन पठाये तब भाऊ१९५।१को अनुज गो न॥
पंच५मासपीछैं भगवंत१९५।३ चहि सीख भाख्यो,
भेट गुर्सदेकैं जाइ जाफरनबाब भोन॥
बुंदीके बरब्बर बढायो बसुधादे मोहि,
पै नपायो भूपपद सो अब सफल होन॥
इष्ट उंपदा दे अवलंब आप मानैं यातैं,
करहु सहाय इहाँ आपसो इतर कोन॥ २५॥
सोहीं खान जाफर नबाबहु निवेदि,
अवरंग४०।३तैं दिवायो भगवंत१९५।३ काजैं रावपद॥
पीछैं लहि सीख मऊ पत्तन चहहु आइ,
मातुलकौं मारि वहाँ दिखावतभो राजमद॥
कल्यानकनास जो कक्कोरको नरूको सुत,
चंदभानुको सो हो अमात्य मऊरंग-हद॥
प्रीति१ ताकी भाऊसोंहि१९५।१पिहितै प्रमानि,
पकराइ कछु पत्र२ लु हन्यों यों गरि कोप गद॥ २६॥
भाऊ१९५।१भूमिपाल इत बुंदी भ्रात भीम१९५।२सुत,
कृष्ण१९६।२मान्यों कुमरसता१९४।१सो स्वांत सत्यकरि॥
कुमरपनेमैं मुख्य कापरनि१ पत्तनसों,
सहँसपचीस२५०००को पटा दिय सनेह भरि॥
जाम यह बुंदीकी मँही न बटिजाति तोतो,
पावतो कुमार पटा द्विगुन५०००० ध्रुवत्व धरि॥
तोहू धर्मधीर पुत्र पैहप प्रमानि ताकों,
वैभव बढाइ कीनों किंकित इतो बितरि॥ २७॥

१ भाऊ का छोटा भाई भगवन्तसिंह नहीं गया २ भूमि देकर ३ राजा की पदवी ४ वांछित नजराना देकर ५ आधार॥ २५॥ ६ अर्ज करके ७ पुर ८ मामा को ९ छिपाहुई १० कोप रूपी रोग जाहकर॥ २६॥ ११ मन में १२ जहां १३ भूमि १४ निश्चय ही १५ पाटवी १६ देकर॥ २७॥

इत भगवंत१९५।३ मऊपत्तन अधीस होइ,
भाऊ१९५।१सौं बिरोध कोटि अधिक तुलापैं आनि ॥
बुंदीके समान सब वैभव बनाइ गज१,
बाजि२ छत्र३ चामर४ चलाये मद१ मोद२ मानि ॥
पीछ खिन पाइ[1] पृतना[2] निज सकल[3] सज्जि,
चाचुरनी१ खाताखेरी२ जाइ भो अवनिजानि[4] ॥
चक्रसेन[5] सबर बिडारयो[6] जीति चोरैंखेत,
परगनाँ सात७हि तहाँके करे स्वीयपानि ॥ २८ ॥
चाचुरनी१ चालुक हरी२कौं राखि हाकिम रु,
सोमानी बनिक राम२ खाताखेरी२ ख्यातकरि[8] ॥
अच्छी च्यारिसहँस४००० चमू[9] हाँ इन्हपास राखि,
आयो मऊ आप भिल्ल गंजनके दर्प्पभरि[10] ॥
सोपै ताहि हायनके[11] सावनमैं आइ सूर,
[12]पैनैं पंचसहँस५००० पुलिंदनको[13] जाल जरि ॥
गोगैंन[14] गिराइ परमाँहिं तनु[15] पाइ खाता-
खेरी१।२ गरदाई[16] जुरयो जमको जलूस धरि ॥ २९ ॥
जाकहँ न आतो जानि मेघागमैं[17] मोद मनि,
घरनैं[18] घनैं भट गयेहे सुख सिक्ख लहि ॥
सोही छिद्रपाइ चक्रसेन इम आइ मेहैं[19],
गोलिन मचाइ दुर्ग कीनौं रुद्र दाँव[20] दहि ॥
बरखा प्रसाद[21] असनादि[22] उपहार[23] बीति,

१समय पाकर २ सेना ३ सब ४भूपति हुआ ५चक्रसेन नामक भील को ६निकाला ७ अपने हाथ में किये ॥ २८ ॥ ८ प्रसिद्ध ९ सेना १० भील को दबाने के घमंड में भरकर ११ उसी सम्वत् के १२ तीक्ष्ण १३ भीलों का समूह १४ गउओं के समूह को गिराकर और किले में १५ थोड़े शत्रु पाकर १६ घेर कर ॥ २९ ॥ १७ वर्षा के आगम का आनंद मानकर १८ अपने अपने घरों को १९ वर्षा २० अग्नि से जलाकर २१ मेघ की प्रसन्नता के दान से अर्थात् अत्यन्त वर्षा होने से २२ भोजन आदि २३ सामग्री बीतने से

माँहिके सिपाह भये व्याकुल बिपत्ति बहि ॥
अप्पन सहाय मंग्यो तबहु मऊतैं दैसक्यो,
न भगवंत१९५।३ सोपै रुद्ध कछु*हेतु रहि ॥ ३० ॥
दुर्गके मवीरनकौं खाताखेरी१।२ तीन३दिन,
†असनबिहीन जात ‡निखिलन व्है निरास ॥
माँग्यो धर्महार हारि §सबरसिरोमानिसोह,
तानैं जय जानिकैं इन्हैंहु दयो अवकास ॥
हरि१अरु राम२ह्वैरहि ए तब उहाँहि पहुँचे,
ते सब संगले सिटाये भगवंत१९५।३पास ॥
धिक्कारि न चहि भगवंत१९५।५व्हाँ दुरहु२न भाख्यो,
[३]असन न अप्पि अहो अब यह कोप आस ॥ ३१ ॥
मास इक१लौं तो भूँज्यौं अन्नहु कठिन मिल्यो,
पाउसमैं तोहू पंचसहँस५०००रुकाइ पर ॥
जिम तिम जुट्ट छम संधाते नछुट्टे के,
किरातगन कुट्टे देखि लज्जा१जाति२स्वामि दर३ ॥
भोजनको गंध जब त्रि३दिन न भास्यो तब,
फोजनको त्रास्यो फैल खोजनको गैल खेर ॥
स्वामी अब नाहकहीं बिमन बनैं तो कहि,
कट्टहु कृपान याँ हि यों रु कीनैं अग्ग गैर ॥ ३२ ॥
निर्बचन व्हैकैं तब आगसैं निवारि पीछैं,
पाउसके अंत भगवंत१९५।३साजि सेना भूरि ॥
प्रबल पुलिंदैं चक्रसेनपैं चलाइ ताकौं,

*कारण॥३०॥ †भोजन बिना ‡सब §भीलों के राजा से १धिक्कार देकर २भोजन नहीं देकर ३हुआ ॥३१॥ ४भूँगड़ा भाजी आदि भुना हुआ अन्न ५वर्षा में ६धा-वुओं को ७ समर्थ प्रतिज्ञा से ८ भीलों के समूह से ९ स्वामी के भय से १० त्रास दिया हुआ ११ तीक्ष्ण मार्ग १२ उदास १३ खङ्ग १४ यों कहकर १५ कंठ आगे किये ॥ ३२ ॥ १६ चुप होकर १७ अपराध १८ बहुत १९ भील २० भीलों.

बहुरि बिडारि खाताखेरी १।२लई पनपूरि ॥
साहनैंहु काऊकाम तासमैं *समर साध्य,
सौंप्यो भगवंत१९५।३हिं सुधारि सु समरसूरि ॥
दिल्लीके अधीन देस१दुर्ग२जो बिरचि बीर,
आयो मऊ बैरिनको चंड †चतुरंग चूरि ॥ ३३ ॥
ताकौं तिहिं रीझपैं बहादुरी बखसि पंच,
लाख५०००००के पटासौं दीनौं गुगेरक१नाम ढंग ॥
साहसौं इतोक अब पावत ‡अतिक अति,
सीसपन पायो दर्पछायो भगवंत१९५।३ अंग,
भाऊ१९५।१सौं §भलाई आजलौं तो तुल्य अप्पहे ब,
साहहीं बढायो सब सुनसव२ देस संग,
बुंदीके घरानैंमाँहि मैं अब बडो यौं आइ,
मुजराकरहु मोहि पहिलैं विनय बंग ॥ ३४ ॥
भाई भगवंत१९५।३वीरपन१मैं बढ्यो त्यौं धर्म१,
धारि मद३मारतो तो भासतो ज्यौं धर्म१मनि२ ॥
पै इम अहंपदके पत्रहिं पठात भनी,
निर्जनतैं भाऊ१९५।१चलो बिलसैं बिनम्रबनि ॥
पंचन प्रबोध्यो अवरंग४०।३की महर वापैं,
एक१घर बाढ्यो द्रोह देहैं अपकित्ति तनि ॥
राज्य इत अनुज जमायो भलीरीति बैठ,
आनिके मऊमैं बडेसेठ स्वापतेय. खनि ॥ ३५ ॥

के राजा का नाम है * युद्ध से सिद्ध होनेवाला कार्य † भयंकर सेना का चूर्ण करके ॥ ३३ ॥ ‡प्रशंसा युक्त; अथवा अधिक पाकर बडप्पन पाया §कहाई १ आप २ देश के साथ ३ नम्रता के व्यंग्य से; अथवा मस्तक झुकाकर (झुककर मुजरा करने में और प्रथम मुजरा करने में व्यंग्य रूप नम्रता सिद्ध होती है) ॥ ३४ ॥ ४ अपने लोगों से ५ विशेष नम्र होकर ६समझाया ७ अपकीर्ति फैलावेगा ८ धन की ९ खान ॥ ३५ ॥

बुंदीसौं बढ्यो यौं सुतबैभव बिचारि बुंदी,
माता भगवंत१९५।३की हुती सो आनि मानमांति ॥
नाम नित्यकुमारि१९४।४ककोरकी नरूकी मेदि,
पतिके परिग्रहके लोकहु कढाइकाति ॥
सोचि अब बुंदीहै मऊकैबस पातैं सब,
चाहो स्वामि सेवन चलो तो इम गूढगांति ॥
पाटनके न्हानके बहानैंसौं निकासि मैंसूं,
लोक बहु लैकैं पहुँची यौं मऊ पुत्रपाति ॥ ३६ ॥
संबत प्रमान आष्टि सत्रह१७१६समय यहै,
यौं पति सता१९४।१के घर ईरखा१असूया२आनि ॥
सासु१नके सोति२नके जेठ३देयर४नके प्रभूत,
पलटाइ जन पुत्रकों मैंहत मानि ॥
धावर१धइत्री२दास३दासी४बलि बैतनिक५,
मौल६मनुजादिक के लैगई जो लोभी ठानि ॥
रीति गनिकाकी रजपूतहु कितेक गये,
संग१ रु कितेक जुदे२ जाकों बरजोर जानि ॥ ३७ ॥
जीविका मऊवस ही जिनकी कितेक जेहू,
जाइभये तत्र सनमानैं ते समस्तजन ॥
स्वासी सुनो स्वीयैं कविकुलको कुलीन कोऊ,
तबहु गयो न मानि कोटाको प्रसाद मन ॥
वृत्तिधर जे गये पुरोहित२ प्रमुख बंस,
बाँधि गज१ बाजी२ तिन्ह बार भरे धाम धन ॥
इनकों सुवर्ण तार पात्रहु अखिल दैकैं,
बुंदीपैं कटाक्ष कीनौं ईरखा अमंदपन ॥ ३८ ॥

१अहंकार की बुद्धि से२छिपाकर३माता ॥३६॥ ४सहित५धडा ६तनखा पानेवाले सेवक ७मनुष्य आदि ॥३७॥८ आधीन ९ हे स्वामी रामसिंह १० आप के कवि (सूर्यमल्ल)के कुल की ११प्रसन्नता १२आदि १३द्वार समय १४चांदी के ॥ ३८ ॥

भाटहु करोढिया[1] चतुर्भुज धनिक[2] भयो,
याकों दये जानैं तहाँ अधिक बतीस३२ बीति ॥
मातुलको[4] मारिबो प्रबंधन[5] लिखित पायो,
भाट यह कारन बतायो तामैं तजि भीति ॥
गूगैरकों गरुइ गिनी सो राजधानी राखि सब,
छक पाइ राज्य बिलस्यो रँमनरीति ॥
जहाँजहाँ साहनैं पठायो तहाँतहाँ जाइ,
हत्थनं बिकत्थन दिखाइ सुरयो जंगजीति ॥ ३९ ॥
इनही दिन१न कछू पीछैं२ पहिलें३वा ईतर,
बुंदेलन भूमैं ब्रजभाषाकवि विप्र तीन ३ ॥
जेठो१ भ्रात भूखन१ रु मध्य२ मतिराम२ तीजो ३,
चिंतामनि३ विदित भये ए कविता प्रबीन ॥
किंवदंती ऐसी कर्णापावतहे राम२०३।४ प्रभु,
भूखनकी भामी कहौ पीलुं लखि तुंग पीन ॥
हाँसें गजबाँधबेकी निस्वासि हृदय हेरि,
भाख्यो किम राखैं भिच्छु दारिद लघुत्व लीन ॥ ४० ॥
जेठो१ यहजानि वा सुमति मतिराम२ मानि,
अग्रज प्रबोधि प्रजावतीकों दुखितपाइ ॥
जेठो१गो सितारा सिवराजको सुजसजानि,
मध्य२ आयो बुंदी रीझ भाऊ१९५।१ की गुरु गिनाइ ॥
चिंतामनि३ विचरयो समीपके रसेसनमें,

१करोदिया जाति का भाट२धनवान् हुआ ३थोड़े४मामा का मारना५ग्रन्थों में लिखा हुआ मिला ६ भारी ७ पति की भांति ८ हाथों के विशेष कथन के साथ अर्थात् बाहुबल दिखाकर ॥ ३९ ॥ ९ अन्य समय में १० दंतकथा ११ भूषन कवि की स्त्री ने १२ ऊंचा और पुष्ट हाथी देखकर १३ चाह १४ निश्वास डालकर १५ भिक्षुक होकर दरिद्र से छोटे पन में लीन होरहे हैं ॥ ४० ॥ १६ बड़े भाई को समझाया १७ भोजाई को १८ यशी १९ राजाओं में

लाये सब बारनै बिसेसक्रमतैं बढाइ ॥
लहुरो३ नजानिये कितेक करी लायो मति-
राम२ इत आयो त्यौं रिझायो भूप गुन गाइ ॥ ४१ ॥
भाऊ१९५।१ को प्रभाव अलंकारन विषय आनि,
नूतन बनाइ ग्रंथ ललितललाम१ नाम ॥
संसदकौं पाइ सो नरेसन सुनाइ रुचि,
रीझपैं बढाइ कह्यो आगम जितेक काम ॥
सब पट१भूखन२रु वारन३बत्तीस३२कहैं,
लाईस२२हु कीति रु दये चउसहँस४०००दाम४ ॥
गेहहि इत गज निबाहन बहुरि दये,
पाटनिके प्रांतके रिरी१रु चिर्रा२दुव२गाम५ ॥ ४२ ॥
भाऊ१९५।१भूमिपाल अभिलाप मतिराम२को यौं,
कूरन बिरंचि भेद्यो जगती जगाइ जस ॥
भौंन भान ललितललाम१हू बिदित भयो,
पढन१पढावन२मैं सुकविन रम्यरस ॥
बुध मतिराम२भगवंत१९५।३हु बुलायो सो,
गयो न गिनि गर्व बीखि बुंदीसौं बिरोधबस ॥
जेठो१गो सितारा जँहँ बनमैं सिकारीवेस,
अस्ववार एक१सिवराज२आयो दिठ्ठि तस ॥ ४३ ॥
पूछ्यो को१कह्यो मैं कवि२राजाकौं रिझाइ इभ,
भूरि लैन आयो कहो कौंन तुम प्रश्नकार ॥
सेवक समीपी छत्रपतिको छितिपै भाख्यो,
मोहि पै सुनावहु सो अनुकंपा अनुसार ॥

---

१ हाथी २ छोटा ॥१४॥ ३ग्रन्थ का नाम है ४सभा को ५हाथी ६कितने ही लो-ग बाईस हाथी देना कहते हैं ७हाथियों के निर्बाह के लिये ॥४२॥ ८पृथ्वी पर ९ पण्डित १० देखकर ॥ ४३॥ ११हाथी १२पूछनेवाले १३ राजा ने कहा १४कृपा के

वाकौं तब भूखन१मनोहर[1] सुनायो एक१,
जंप्यो[2] करजोरि जिहिं ओरहु कहो उदार ॥
छन्ननृपकौं[3] इम सुनावत कतिक छंद,
घांघांतैं[4] घुमंडि मिले सेनाके बिबिध[5] वीर ॥ ४४ ॥
प्रभु पहिचानि कवि बावन५२प्रमित[6] पद्य,
है जब उपस्थित[7] सुनाये ते मुदित होइ ॥
कहत कितेक आयो एकाकी[8] सिकार[9] तानैं,
बावन५२सुने यौं वृत्त[10] नम्रबानि गोत्रगोइ[11] ॥
किमहु उदंत[12] होहु पै इम सितारा कवि,
आनि सनमानि देकैं द्विरद[13] पचासदोइ५२ ॥
ग्राम२धाम३दाम४पट५भूखन६उचित आप्प,
ख्यात[13]कीनौं भूखन सु दूखन दारिद खोइ ॥ ४५ ॥
बावन५२सुनाये कवि बनमैं नृपहिं वृत्त,
ताही[14]मित दंताबल[15]५२दानमैं आचिज्ज[16] येह ॥
दक्खिन३।२के अर्द्ध देस पच्छिम५।३को पाता[17] नव,
लक्ख९०००००दलनाथ ताकै गज न कितेक गेह ॥
तनकहु[18] तर्कपैं सता१९४।२नैं दई सत्तसई७००[19],
मूर्त्त[20] तामैं नंद रस भू १६९मित दिपत देह ॥
कै गज जितेक निबहैं घर तितेक लेकैं,
आयो मचवायो हारमैं दुरमदैंन[21] मेह ॥ ४६ ॥

---

१ मनोहर जाति का छंद २ कहा ३ छिपेहुए राजा को ४ दिशा दिशा से ५ समूह ॥ ४४ ॥ ६ प्रमाण अर्थात् गिन्ती के बावन छंद ७ कंठ थे ८ अकेला ९ छंद १० गोत्र छिपाकर ११ वृत्तान्त कैसे ही होओ १२ हाथी १३ प्रसिद्ध किया ॥ ४५ ॥ १४ उतने ही १५ हाथी १६ आश्चर्य है १७ "पा रक्षणे" इस धातु से "पाता" शब्द का अर्थ रक्षा करनेवाला है १८ थोड़ी सी तर्क पर शत्रुशाल ने १९ सात सौ हाथी दिये थे जिनमें १६९ हाथी २० मूर्तिमान् (स्वरूप) थे २१ मस्त हाथियों के मद की वर्षा ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

इम आतन त्रप३आनि इभ, बंधि निबह निज *बार ॥
†प्रजावातिन प्रति किय प्रकट, ए घर लखहु उदार ॥४७॥
नाम सत्रुसल्ल२हि नृपति, बुंदेलहु रनवीर ॥
बरनि महुब्बानाह नलि, भूखन १ धन किय भीर ॥ ४८ ॥
बहु उज्वल१के बीर२के, पंद्य मनोहर प्राय ॥
जे भूखन१कृत नामजुत, अबहु विदित जस आय ॥ ४९ ॥
मतिराम२हु शृंगारमय, ग्रंथ गोत्र रसराज२ ॥
नेत्रित लच्छन निर्मयो, अपर२हु भासत आज ॥ ५० ॥
चिंतामनि३नृगिरा रचिय, पिंगल३लच्छन पद्य ॥
उज्वल१मुख वृत्तहु ऽतर, बहुत अबहु गुन गद्य ॥ ५१ ॥
भाऊ१९५॥१गज बर्नित भनत, इक्क१मनोहर आहि ॥
आयो अग्रज संग इह, जुपै जनावत जाहि ॥ ५२ ॥
कवि भूखन१निज काव्यमैं, मारित१कथित सुराद ४०१४ ॥
कवि बहुमत ऽद्ध२जु कह्यो, पहुँचै किल सु प्रमाद ॥ ५३ ॥
बंधनमैं हु बिसेस बलि, गढ पठयो ग्वालेर ॥
कैदहि तस पुत्रा१दि किय, जोपै तत्थहि जेर ॥ ५४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी भूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबसूनुसुलतानमुहम्मदस्य स्वपितृव्य-

*द्वार †भोजाइयों को ॥४७॥४८॥१शृंगार रस के और वीररस के २छंद जिनमें अधिक छंद मनोहर जाति के हैं ३ लच्छनों को दिखाने वाला; वा लच्छनों की अनर्गलता सहित; अथवा लच्छनों की लक्ष्मीवाला ४ बनाया ५ अन्य अर्थात् ललितललाम नामक ग्रन्थ से अन्य ॥५०॥६देश भाषा में ७ शृंगार आदि छंद भी ॥५१॥ ८ भाऊसिंह के हाथियों का वर्णन ६ है ॥५२॥ १०मुराद को मारना कहा है ११ सूर्यमल्ल कहते हैं कि मैंने बहुतों के मत से कैद करना कहा है ॥ ५३ ॥ १२ फिर १३ वहां ही कैद रहे ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में औरंगजेब के बड़े पुत्र सुलतान मोहम्मद का अपने काका-

जासुतोद्वहनतन्मेलनहेतुबन्दीभवन १, औरंगजेबभयप्रपलायिताराकानस्थानस्थितसूजाछलघातमरण २, योधपुरेशयशवन्तसिंहच्छलगृहीतदाराशिकोहौरंगजेबमारण ३, भावसिंहानुजभगवन्तसिंहस्य कोचदानराजपदादान ४, भावसिंहस्य कृष्णसिंहयुवराजीकरण ५ भगवन्तसिंहस्य चक्रसेनभिल्लनिष्कासनखाताखेडीप्रभृतिप्रान्तादान तद्वत्सरचक्रसेनतत्स्थानपुनरादान ६, तदनन्तरचक्रसेननिष्कासनेन भगवन्तसिंहस्य पुनरधिकारसंपादन ७, शिवराजाद्भूषणकवेर्भावसिंहान्मतिरामस्येतरराजभ्यश्च चिन्तामणेः करटिलाभैकैकस्य पृथक्पृथग्ग्रन्थनिर्मितिसूचनं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितो द्वात्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जिम जिम हित साहनैं जनायो, तिम तिम है भगवंत १९५।३
मुख्य नामी ॥
विभव अधिक भ्रात१ मैं बनायो, सुनसबकौंहु बढान वृत्ति मन्नी॥१॥
रुचि पद तस रहऊरि रानी, पटुपट्टु इक्क१ सुता वहै प्रसूता ॥

शूजा की पुत्री से विवाह करके शूजा से मिलजाने के कारण कैद होना १ औरंगजेब से भागेहुए शूजा का अराकान में छलघात से माराजाना२ जोधपुर के राजा यशवन्तसिंह के छल से पकड़ेहुए दाराशिकोह को औरंगजेब का मरवाना३ भाऊ के छोटे भाई भगवन्तसिंह का रिश्वत देकर राजा पद लेना४ भाऊसिंह का कृष्णसिंह को कुमर बनाना५ भगवंतसिंह का चक्रसेन नामक भील को निकालकर खाताखेड़ी आदि परगने लेना और उसी संवत् में चक्रसेन का फिर खाताखेड़ी विजय करना६ जिसपीछे चक्रसेन को निकालकर फिर भगवंतसिंह का अधिकार करना७ भूषण कवि का शिवराज से, मतिराम का भाऊ से और चिन्तामणि का अन्य राजाओं से हाथी पाना और प्रत्येक के भिन्न भिन्न ग्रन्थ बनाने की सूचना का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और आदि से २३२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥

जसकुमरि१९६।१जु नाम पाइ जानी, उचितबिबाह बया भई सु इक्खी ।
जिम सगपन चित्रकूट जाको, रहत समै तिहिं राजसिंहरानौं ॥
तनुजेनु सरदारसिंह१ताको, बर गिनि सो भगवंत१९५।३तत्थ झुल्ल्यो
जसकुमरि १९६।१ सुता बिबाहि जासौं, द्विरद १ तुरंगम २ ग्राम३
दास४दासी५ ॥
पट६पुरट७अलंकृती७प्रथासौं, मनिन जरी परितोख दे समप्पी ॥४॥
जु दुलह सरदारसिंह१जंप्यो, प्रथित सु पट्टप धर्मसील पिक्ख्यो ॥
स्वजनक रिससौं कृती सु कंप्यो, पटु निजदेह बिहालभोहि पीछैं॥५॥
सक नख मुनि भू१७२०समै वरयो सो, जसकुमरी१९६।१ भगवंत
सिंह१९५।३जाई ॥
सक सर हग वाजि भू१७२५मरयो सो, अवसरपर कहि हैं सहेतु अग्गैं ॥

॥ घनाक्षरी ॥

संबत प्रमान नख सत्रह १७२० समय हुतो,
लंधनमैं पातसाह दूजो२चारलिस १ नाम ॥
पुत्री ताहि व्याहि पोर्टगेजनके पातसाह,
बंबईपुरी हो इहाँ जाकेबस बत्तीधाम ॥
दायजमैं जानै दूजे२चारलिस१कौं जो दयो,
तबतैं गयो सो अंगरेज८नके दंग तांम ॥
सुता भगवंत१९५।३नैं बिबाही जो ही संबत१७२०मैं,
यों गो अंगरेज८नकै बंबई१नगर बांम ॥ ७ ॥
संबत नयन पच्छ मुनि भू१७२२प्रमित समै,
काराअवरुद्ध साहजिहान३९।१हु छोरयो काय ॥

---

१ वय (अवस्था) वाली ॥ २ ॥ २ पुत्र ॥ ३ ॥ ३ स्वर्ण के भूषण की ४ प्रसिद्धि से ५ इनाम देकर ॥ ४ ॥ ६ कहा ७ विदित ८ बड़ पण्डित पिता के क्रोध से कंपायमान होकर ९उस चतुर ने अपना शरीर इस विवाह हुए पीछे छोड़ा अर्थात् आत्मघात किया ॥ ५ ॥ १० समय पर आगे कारण सहित कहेंगे ॥ ६ ॥ ११ तहां १२ बलटा ॥ ७ ॥ १३ कैद में रुकेहुए ने १४ शरीर

तबतो निसंक अवरंग४०।३०हे प्रसभ तानि,
सत्वर१ बुलायो सब भूपनको समुदाय ॥
संबत बिकृति बाजि भू१७२३मित लगत समा,
राध१मैं गये सब निदेसतंत्र नरराय ॥
स्वामी तब कर्ण१बीकानेरको हुतो सो सिटि,
नांघो भूतं अटक किनारेको सुमिरि न्याय ॥ ८ ॥
सूरसिंह नृपनैं बिहायो जब संहनन,
ताको पट्ट पायो तब कर्ण१हि बडेकुमार ॥
मातम मिटाइबेहु आयो तबतैं न वह,
अटकि न लंघि१मुरि औनेर२के भय अपार ॥
आहूतसु अबहु न आयो सुहि संका आनि,
दूजा२जसवंत२जोधपुरं वै दुरितंकार ॥

१शीघ्र २सम्वत् ३ वैशाख में ४ आज्ञा के वश होकर ५ राजा ६नहीं आया७ पहिले अटक नदी उल्लंघन नहीं की थी उसका स्मरण करके ॥८॥ ८देह छोडी तब ९ बुलाया हुआ १० जोधपुर का *पापी पति ॥९॥

*इस ग्रन्थ वंशभास्कर) में यथावसर निन्दा और स्तुति सभी की है यहां तक कि बुन्दीवालों के परम विरोधी शीपोदिया क्षत्रियों ने जो जो कार्य स्तुति योग्य किये हैं उन उनकी पूर्ण प्रशंसा की है और स्वयं बुंदेवालों ने जो जो कार्य निन्दनीय किये हैं उनकी निन्दा भी लिख दी है. इसकारण मिथ्यावादी होने का दोष तो इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)पर कदापि लग नहीं सकता. परंतु कहीं कहीं किसी किसी के इतिहास में हेर फेर भी पायाजाता है; इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उनको बहवाभाटों आदि से जहां का जैसा वृत्तांत मिला है वहां वह वैसा ही लिखना पड़ा है. जिसके लिये हमने दिग्दर्शन न्याय से जहां तहां नोट कर दिये हैं. वैसे ही इस स्थान में भी लिखा जाता है कि जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह के उज्जैन से भागने के कारण उनकी राणी हाडी का व्यंग्य से पति की निन्दा करना, ओरंगजेब के जनाने को लूटने के कारण अधर्मी आदि विशेषण देना और दाराशिकोह के साथ विश्वासघात करना लिखकर पापी लिखना, जोधपुर की ख्यात से सिद्ध नहीं होता. दारा के साथ विश्वासघात का किसी ख्यात में कोई लेख ही नहीं है; और उज्जैन से भागने के विषय में लिखा है कि युद्ध में सब परगह के मारे जाने पर रतलाम के राजा रत्नसिंह के समझाने पर उनको छत्र चमर देकर महाराजा स्वयं निकल आये और जिस पीछे ओरंगजेब का छलघात करना जानकर उसके हुरमखाने को लूट कर जोधपुर चले आये इत्यादि. इस ग्रन्थ के इस प्रकारके कथन से विरुद्ध लेख उक्त महाराजा से पहिले के और पिछले अनेक मिलते हैं जिनको पाठक लोग स्वयं विचारलेंवें. इसमें तो किसीको सदेह नहीं है कि उक्त महाराजा बडे प्रतापी, वीर और बलवान् थे.

दारा४०।१छलिदीनौं तोहु जोधपुरलीनौं सो न,
दीनौं यातैं यहहु न आयो भीति अनुसार ॥ ९ ॥
कहत कितेक यह आयो पै न धीजि[1] अरु,
रह्यो कछु अंतर सौं स्वीय सेना समुपेत[2] ॥
कहत कितेक दारा बंचि[3] जलदीनौं यह,
तोहू आदरयो न तबहीतैं हो तिहिं निकेत[4] ॥
कहत कितेक यातैं जोधपुर लैबेकौं याके,
अग्रज समरसुत रायसिंह कहँ देत ॥
देस पुनि लैबेकौं गहाइदीनौं दारा४०।१सोहु,
मंदहिं[5] मिल्यो न हुलो तबतैं चकित चेत ॥ १० ॥
सेस जे असेस तहँ हाजरि नरेस होत,
निर्भय निदेस अवरंग४०।३तिन्ह दीनौं एस ॥
हिंदु न कहावहु बहावहु भ्रमित भेद[6],
अबतैं जवनहोइ पावहु बिभवबिसेस ॥
मानिकैं मुहुम्मद१कुरान२करि कंठ नित्य,
साधहु निमाज३बादि कलमा४बिहित बेस५ ॥
दुहितासमैं[7] दे ताहि राखतहो भिन्न तुम,
सो अब करो न करो पंति[8] हमरी प्रवेस ॥ ११ ॥
पबिसो[9] परत यह सासन सबन सीस,
भीत सबभूपन बिबिंकत बिरच्यो बिचार ॥
दीसत दुलभ जाहि मुलसव१देस२द्रव्य३सो,
तुरक होहु रहु लोकन लहन सार ॥
भूमिपाल भाऊ१९५।१एक१बेर सखिबोहै भाखि,

१ विश्वास नहीं करके २ अपनी सेना सहित ३ ठगकर ४ घर में ५ मूर्ख को ॥ १० ॥ ६ भ्रम युक्त भेद को छोड़ो ७ समय पर हमको पुत्री देकर फिर तुम उसको भोजनादि व्यवहार से जुदी रखते हो सो अब ऐसा नहीं करके ८ हमारी पंक्ति में प्रवेश करो ॥ ११ ॥ ९ वज्र के समान १० छानै

भाख्यो मिलि सर्व यह झेलहिं भुजन भार ॥
जानैं सीसघरपैं१कृपानकरपैं२है जोलौं,
मृत्यु१बरं मानैं पै न ठानैं जवनत्व प्यार ॥ १२ ॥
एक१मन व्है करि समस्तन सलाह एह,
निर्भय निवेदी निबहैं जो हमतैं निदेस॥
सोतो सिरधारैं लौंन आजिमैं उजारैं भेट,
प्राननकी पारैं अरि मारैं प्रभुके असेस ॥
जापैं जाफरा१दिक नबाबन निवास्यो जोहु,
बाँदी अवरंग४०।३तोहु न तज्यो प्रसभ बेस ॥
भूपन कहाई ऐसी कबहु भई न हम,
हाजरिहैं मारहु१बढारहु२वा सुगलेस ॥ १३ ॥
हो आमैर कुंम्म जयसिंह कछुकाज तहाँ,
तनुज तदीय रामसिंह२।१हो है नरनाह ॥
भाटी तैंससंग जैसलादिमेरवारो भूपर,
सूचि हित भिन्नलौंकैं ए दुव२प्रबोधे साह ॥
तिनमैं तृतीय३जसवंत३हु कहत केते,
इनसौं कही इम रहो तुम हुकम राह ॥
द्विरगुन पटा लै बाँत स्वीकृत दिखावो सोहि,
सबन सिखावो चित्त आदारि कथित चाह ॥ १४ ॥
जेजे दुहिता न देत तिनपैं जैतन जानौं,
जवन न व्हैहैं१तोहु देहैं दुहिता२तो जेहु॥
जो तुम१न मानौं तो तिन्ह२तो दूरजानौं यातैं,

१ खड्ग २ श्रेष्ठ ३ परन्तु ४ यवन पन से ॥ १२ ॥ ५ अरज कराई ६ युद्ध में ७ हठी औरंगजेब ने ८ हठ ९ हे मुगलों के पति ॥ १३ ॥ १० कछवाहा ११ पुत्र १२ उसके साथी १३ जैसलमेर का १४ हित जना कर १५ बादशाह समझाये १६ यवन होने की हमारी कही हुई वार्ता स्वीकार करके १७ हुई ॥ १४ ॥ १८ पुत्री नहीं देते हैं १९ उपाय

लेखसंग सुमति कही सो तुम करिलेहु॥
अंजनके अच्छे दिन रंचक हुते यों उन,
लोभ न लह्यो रु कह्यो आलोचहु अप्प एहु ॥
होइ हमरे जो सुता लेहु तो हजूर हाहा,
दीनलिंगराइ हमैं जातितैं न जानिदेहु ॥ १५ ॥
अधिप उदैपुर१त्यों रामपुर२बुंदी३आदि,
जाति१तैं विडारैं कुल२तैंहु टारैं दै कलंक ॥
जवनं अमीर इतै रावरे जितेक हम,
जंपिहैं१जवन सुता न देहैं२सहसंक ॥
इत१उत२द्वै३हि यौंतैं अंतर१अनादर दै,
बाहिर२ बडेकाहि बखानिहै कथनबंक ॥
पुत्रि१न तो जवन बिवाहहिं परंतु रिक्त,
रहिहैं हमारेकुल पुत्र२नके पैरजंक ॥ १६ ॥
हाहा यह दुष्कर१ हजूर पकर्यो प्रसभ,
अग्गहु सिकंदर१से उथन भई न एह ॥
छत्रिय२ न राखौं छिलि कहि यों कुठारकरि,
काटे राम हम कुल तोहु अबहे अछेह ॥
यातैं औंहि उचित निदेसको निवारिबोही,
जोन यह तो ज्यौं नृपभाऊ१६५१ बिरचिनेह ॥
पहिलैं कराइ ताहि स्वीकृत हमारी पंति,
पाछैं हमैं प्रेरहु लुपैं न ज्यौं लपितस्नेह ॥ १७ ॥
बीकानेरभूप बदलो समनैं आइवर्यो,

---

१ जो तुमको श्रेष्ठ सलाह कही है उसकी लिखावट कर दो २आर्यों के ३आप ही विचारो ४ पुत्री ५ धर्म ॥ १५ ॥ १ निकालैं ७यवन तो कहेंगे और अपनी पुत्रियें नहीं देवेंगे ८ दोनों ओर से ९टेढे कथन से १०रीता (खाली) ११शय्या ॥१६॥ १२ कठिन १३ हठ १४ परशुराम ने १५ है १६कहा हुआ वाक्य ॥ १७ ॥

ताकीसुता व्याह्यो कृष्ण१९६।१ भाऊ१९५।१ जो गिन्यों कुमार॥
बीकानेर१ बुंदी२ औसैं संबंधी उभै२ ए यातैं,
भाऊ१९५।१ जो भनैं सो कर्यो१ क्यों न निबहैं करार॥
बुंदीसकी बहिनी बिवाही जसवंतजैसैं,
सो१ जिम कहैंतिम करैं यह२ समुझि सार॥
सोहि जब भाखी साह भाऊ१९५।१ तब भाखी हम,
हाजरि हनहु इमैं लिखहु ज्यौं बिचार॥ १८॥
औसैं अवनीसनतैं सासन लगाइ साह,
दिल्लीकी दुहाईमैं भरोसाके भट पठाइ॥
हुकम दयो यों ढाहि देवालय हिंदुनके,
मस्जिदन मंडो जिन सामग्री सु व्यर्थजाइ॥
जबतैं नरेस एक१दीनको हुकमजान्यों,
बीर जबहीतैं असु आरा निहचै बिहाइ॥
दूजो२सुनि देवालय ढाहन निदेस पत्र,
बुंदी पठयो यों कृष्ण१९६।१ कुमरहिं जो जताइ॥ १९॥
केसवके मंदिरपैं हल्ला जो करें तो मेरे,
मेरद मरैं पैं दुष्ट मिच्छन छुवनदेहु॥
जवन न व्हैबो हमैं१ इत मरिजैबो तुम्हैं२,
उत न बचैबो प्रान निर्भय उचित एहु॥
बित्तं बहु दैकैं मेर१ मैंनां२ सैबरादि बुल्लि,
सदनकी सेना सह लासिकैं भैचक लेहु॥
दीठि ज्यों परैं न भ्रष्टव्हैबो इष्टदेवनको,

१भाऊ ने जिसको कुमर मान लिया उस कृष्णसिंह को २ बादशाह ने कहै सो वार्ता कही ॥१८॥ ३ राजाओं से ४ मंदिर गिराकर ५ बनाओ कि सामग्री व्यर्थ नहीं जावै ६धर्म ७ प्राणों की आशा छोडकर ८मंदिर गिराने की आज्ञा ॥ १९ ॥ ९ बीर १०धन ११भील आदि बुलाकर १२घर की सेना से १३युद्ध में त्रास सहित १४ टक्कर

प्रान१ आगैं पीछैं लाल तिनके गिरहुगेहु२ ॥ २० ॥
कृष्णसिंह१६६।१कुमर पिताको यह पत्र पाइ,
सेना सजि बुंदी पहिलैं यों भयो सावधान ॥
देसकेहु छत्रिय१ चतुर्थ४लव दैनहार,
अखिल बुलाये मेर२मुखहु बढे उफान ॥
एतेमाँहि सेना पंचसहँस५००० उपेत इत,
देवालय दारिवेकों आयो खल भुस्तखान१ ॥
केसवके मंदिरको कलस उतार्यो यामैं,
मिच्छन चमूके देकैं पट्टनिपुरी मिलान ॥ २१ ॥
कलस उतारि ताहि गेरनको जत्नकरैं,
बेर न लगाइ तोलौं बुंदीपतिके कुमर ॥
कृष्णसिंह१९६।१ अयुत अनीक लै कराल पहुँच्योहि,
बनि काल ततकाल परजाल पर ॥
पूरे पृष्ठवाहन प्रभारी जे जवनजन,
अन्ना१दिक लैन आढ्यग्रामनमैं जात औंर ॥
भिल्ल१ मेर२ मैनैं सब संगदै कितेक भट,
तिनपर चक्र भेज्यो छसहँस६००० तूर्णतर ॥२२॥
बानधिर टारिकैं हजारचउ४००० वीर कारि,
दूजीर अनी आप कढ्यो सिविरैं बिनास काज ॥
पहिलें गये तिन प्रसारमैं पहुँचि पृष्ठै—
वाहन पकरि लूटे१ मारे२ घनैं सहलाज३ ॥

---

१ हे पुत्र २ गिरो ॥ २० ॥ ३ चौथा बंट देनेवाले ४ आदि ५ मंदिर गिराने को ६ म्लेच्छ सेना के ७मुकाम ॥२१॥ ८ समय विलंब ९ दस हजार १० यमराज होकर ११ तुरन्त १२ शत्रुओं के समूह पर १३ बैल पोठिये १४ धनवान् ग्रामों से १५ शीघ्र १६ सेना १७ बहु शीघ्र ॥ २२ ॥ १८ युद्ध से नहीं भागने का चिन्ह रखनेवाले १९ डेरों का नाश करने को २० फैलाव (पालव) में या तृण काष्ठ लानेवालों के समूह में २१ पोठियों (बैलों) को

ताकौ चहुँ४ओर होत हाकौ दलके तुरक,
कढिकढि पूगे कूद्र वढिवढि बंछि बाज ॥
घोर घमसान होत तिनके तुमुल बिजै,
सुंडीभट खेतभये सूरनके सिरताज ॥ २३ ॥
सूनें सिबिरनपै अचानक इतैतैं कूद्यौ१ [illegible],
कुमर परयौ ज्यौं मृगगन२न पै छुधित सींह ॥
गेरे काटि घेरे पाक्कारे नर१ बाजि२ गज३,
वैभव अवेरे हेरे लूटि लूटि अनबीह ॥
भाज्यौ अस्तखान तजि सेना जरकुन्न भूत,
उज्झित सुरालय बिगान अभिमान हूँहैं ॥
बोहू लग्यो न खेतसौं जंग कुमार सरो,
मानत मरोर जत नागत जगत जीहैं ॥ २४ ॥
कोट पंचनरौत चमूकौ गाखि पट्टनिकें,
गंप१ हय२ खच्चर३ वस्त्र४ मौलीजिल५ पटगेह६ ॥
स्वापतेय७ अन्न८ भारवाहक९न समेत सब,
उपहारें सब लूटि लायौ आलमें कुमर एह ॥
सेन१ सखोंद्रिनकौ प्रेंगुन प्रमोदि दये,
ओदन१ वसन२ बिना३ इनकौ नियत गेह ॥
आसननैं उलव्यौ आक्रोस लौं [illegible] नाद,
बादुन गैली [illegible] ज्यौं सूबन गाँवै [illegible] ॥ २५ ॥

[illegible]

भाऊ१९५।१ कुँवर२ पै इक१ संग दल भेजतो सो,
निठिनिठि निहोरिवे२ नवाब बोलो नृपमित्र[3] ॥
मारयो सुनि दारा४०।१ मन हारयो खानकासिम१हु,
लाग्यो पय आनि सोहु बोल्यो पटुता[4] पवित्र ॥
बुंदीपति सम्मति[5] कुमार जो करी तो ताहि,
व्है हम हरोल हनैं१ कै गहैं२ चाहि न चित्र[6] ॥
भाऊ१९५।१ भिन्न[7] व्है तो कोप[8] हल्ला करो न हाल,
अप्पनहु हैं ज्यों बारि[9] भ्रमरी बहित्र[10] ॥२६॥
माँचिर है घाँघाँमैं[11] उपद्रव तिहिँ[13] अनेहैं[12],
चोरी१ धाँटि२ जोरी हेतु[14] प्रचुर परैं पुकार ॥
देस१ दुर्ग२ गाम३ धाम४ सबठाँ दुजन[15] दावैं,
यातैं रुक्यो लखतो नवाब त्रिक३ अनुसार ॥
ऐसैं एक१ दीन[16] पैं निहोरे होत इत१ उत२,
देस गुड़वानैंकी पुकार आई जँवदार[17] ॥
बारीगढ१ चोकीगढ२ द्वै२ ही दाबिराखे अब,
गौड़न उपाय इलाँ[18] खिलहु करैं अगार ॥२७॥
होत श्राद्धकारक[19] ज्यों सव्य१ अपसव्य२ होत,
एकदीन करत हुतो यौं साह व्यग्रप्रीति[20] ॥
घाँघाँकी पुकारमैं पुकार सु सुनत घोर,
पठयो लिखाइ फरमान भगवंत१९५।३ प्रति ॥
सूबापति संगलै अवंतीको वजीर खान,

भाऊ और बुंदी की १भूमि पर २सेना ३राजा भाऊसिंह के मित्र ४चतुरता ५सलाह से ६ इसमें आश्चर्य नहीं है ७ भाऊसिंह कुमर से जुदा होवे तो ८ अचानक ९ जल के भ्रमर में १० नाव होवे जिसप्रकार ॥ २६ ॥ ११ दिशा दिशा (ठौर ठौर) १२उस समय १३धाड़ा १४कारण से बहुत पुकार १५ दुर्जन १६ धर्म १७ शीघ्रता से १८ बाकी की भूमि को भी अपने घर करते हैं ॥ २७॥ १९ श्राद्ध करानेवाला सव्य अपसव्य होता है इसप्रकार २० व्याकुल

गढ दुवर२ लेहु गंजि गौड़न दे कैदगति ॥
साँवनमैं सासनगयो सो धरि सीस ईस,
अंतमैं चढ्यो सो मिल्यो सूचित सो जुद्धमति ॥ २८ ॥
बानधर सादी खटसहँस६००० स्वकीय बलि,
रक्खि रनकाज द्वैसहजार२००० बढते बहोरि॥
उज्जइनी जाइ सो वजीरखानकों लै इम,
गौड़नकों गंजन गये ए जवं१जोर२ जोरि ॥
सूची भगवंत१९५।१हाँ वजीरखानतैं सर्मद,
तुम१हम२भेजे जय बंटन अरिन तोरि ॥
जातैं जाहि जैसी रारि रुचत रचो सो तिम,
दीजिये न दखल जुरें जँहँ मन न मोरि ॥ २९ ॥
यह सुनि दर्पजैन अंतर१अनखें घानि,
अच्छो कहि ऊपर२तैं सूबापति होइ संग ॥
लुट्टि गुड़वान द्वैरहि बारीगढ१लागे जागे,
भाग्यवल जोमिनके जाविधि जम्यो जंग ॥
सुर्जन१९०।१चारि१घाँ प्रचारि भटस्वीय भग-
वंत१९५।३चढि निश्रेनिन पैठो इततैं अभंग ॥
केते काटिडारे१ केते पक्करि निकारे२दई,
गढमैं दुहाई ओंधिराज सूचि अवरंग४०।३॥ ३० ॥
सिद्ध जय सीरी पैठि पीछैं तँहँ सूबापति,
बाहिरकी बाँह दे सराह्यो भगवंत१९५।३बीर ॥
ज्योंही जैंवी जाइ गरदाऽ दूजी२चाकीगढ२,
लैलयो सता१९४।१केसुत तासैं लग्यो इक१तीर ॥

१कैद करके २आश्विन मास के अंत में ॥२८॥ ३नहीं भागने का चिन्ह रखने वाले ४ सवार ५ अपने ६ वेग ७ मल ८ दूर्प युक्त कहा ॥ २९ ॥ ९ घमंड के वचन १० क्रोध ११ ऊपर के मन से १२अवरंग को स्वामी जनाकर ॥३०॥ १३ ऊपर के मन से प्रशंसा करके १४वेगवान.

अमल जमाइ गुड़वानैं मैं सुरे उभयर२,
सो जय *उदंत गुप्तदूतन †कितव सीर ॥
एक१मत सबन निवेद्यो साह्यागैं भग-
वंत१९५।३।१ जय कीनौं जथा अपरहु लीनौं भीर ॥ ३१ ॥
सोहि सुनि रीझ भगवंत१९५।३पैं पठाई साह,
खिलत१बिभूखन२रु इक१‡गै१।२§है १।४खास ॥
प्रहरन५सर्व वालाभेटको परगन६रु,
पंचकहजारी५०००मुनसब७त्यौं जस प्रकास ॥
कानि फरमानमैं बढाई आई राव८कहि,
अंध्वमैं ए पूगत वजीरखान है उदास ॥
छत-उपचारमैं दिवाइकैं गरल३लच्छी,
मारयो भगवंत१९५।३पक्ख मेचकित२पोस१०मास ॥ ३२ ॥
संवत कृसानु दृग सत्रह१७२३प्रमित समै,
हन्यौं भगवंत१९५।३ हंत खल यौं वजीरखान ॥
ताकी वह सुद्धि मऊ१गूगोर२हु आई तँहँ,
याको हुती ऊँढा१आठ८जे सब जरी सुजान ॥
संग तिनके तिम खवासि२पातुरि३संघ मानि,
हित भस्ममई जे चालीस४०परिमान ॥
पंच५ठकुरानी जरी इनमैं मऊ१पुर रु,
थप्पिजस तीन३जरी गूगोर२अभिधानं थान ॥ ३३ ॥
भाऊ१९५।१इत पत्र कृष्ण१९६।१कुमर सँकास भेज्यो,
खूब कीनी बैस तैं भजायो अस्तखान खल ॥
देस१काल२हाल लखि लाल११अब भेजिदेहु,
सिबिर१३की सामग्री जिताक लूटी सो सकल ॥

*वृत्तान्त।†छली॥३१॥‡हाथी§घोड़ा१सार्ग में२घाव के इलाज में ३विष दिला कर४पौष वदि पक्ष में॥३२॥५विद है कि६खवर७विवाहिता स्त्रियें८समूह९गुग्गर नामक स्थान में ॥३३॥ १०पास ११हे पुत्र १२हे पुत्र १३डेरे की लूट की सामग्री

ऊतरयो कलस सो पैं न तुम चढाहु अब,
औहैं इम तो पुनि चढैहैं बिधिसौं अचल ॥
*एक१दीनहठ न तजैं हम१मरैं तो उहाँ,
तुम२हु मरे पैं देहु आपनौं †छोनितल ॥३४॥
हल्ले बारबार इत एक१दीनकाजैं होत,
भाऊ१९५१‡मुख्य भूप पेलिदेत जे समै प्रवीन ॥
एक१ गज आगैं ज्यौं बरंडहि के अंतराय,
केही टिकैं खड्गीर२ इन यौं नय३ बरंड कीन॥
भाऊ१९५१ पास भेज्यो ४दल तासमैं करनभूप,
आप जो सहाय रहो आऊँ तब मैं अधीन ॥
पच्छी लिखी भूप साह ६भ्रष्ट जो न पारै१ लिखि,
मैं बोलि बुलाऊँ२ तब आवहु इहित लीन ॥ ३५ ॥
मानी साह पट्टनि लुट्यो सो उपहार१ मंग्यो,
मारयो तिहिं बैर मंग्यो मारक सुही कुमार२ ॥
भूप लिखिभेजी उपहारतो अबहि भेजि,
कुमरकहाई बंटि लैगये बिजयकार ॥
साह इहिं झंझट विलंबहि परत सोधि,
लौनलागो पट्टनि तदीयें सब ग्राम लार ॥
भूपहु कहाई नयओटै लै कुमर१ भेजौं,
आनि तस संग हि लुट्यो सु दूनौं२ उपहार ॥ ३६ ॥
भाखो साह बिरचि बिलंब क्यौं न भेजत तो,
तब नृप वेहीमित्र दै बिच नबाब तीन३ ॥

*एक धर्म करने का † भूमि तल ॥ ३४ ॥ ‡ भाऊ आदि १ अगड़ के अंतर से एक हाथी के आगे कई २ खड्गवाले भी टिकजाते हैं तैसे ३ नीति का बरंडा (अगड़)किया बीकानेर के राजा कर्णसिंह ने भाऊसिंह के पास४पत्र भेजा५धर्म भ्रष्ट ६ फिर ॥ ३५ ॥ ७ सामान ८मारनेवाले कुमर कृष्णसिंह को मांगा ९विजय करनेवाले १० झोड़ (झगड़े) में११उसके ग्रामों सहित १२नीति की आड़ लेकर १३ सामग्री ॥ ३६ ॥

लक्खदुव२००००० मुद्रा दै वजीरहिँ पिहित लोभ,
बिन्नति कराई इन उचारिन४ पैं यों प्रवीन ॥
सुत अपराधी गहि सौंपन भनत भूप,
दूनौं२ उपहार देत आगस१ त्रपा२ सौं दीन ॥
इतर असाध्य जोलौं मतलब लहु यातैं,
कोलौं बहिंकावहि हजूरकौं सो बलहीन ॥ ३७ ॥
एक१ दीनको हठ हजूर न तजो तो अब,
जोधपुर हीन अतिखीन राजाजसवंत ॥
भाऊ१९५।१ सु भास तातैं याहि बिच दैकैं ताहि,
भीतरहि बुलाइ साँकरमैं लै भपअमंत ॥
देहु बलि लोभ जानिबेमैं सो करैं मंदित,
औरहु किते तो करैं नौकरैं ते पावैं अंत॥
पै इहिं प्रसभ हाहा उलटपलट व्हैहैं,
हिंदुनके देस ए असेस कहि हंतहंत ॥ ३८ ॥
मरिबेलगैं जे तिनकौं लो टारि काहू मिस,
लोभ१ भय२ सौं जे व्है तिन्हैं यौं निजदीन लेहु ॥
हुकम न मोघ होइ जगतु हसै न जैसैं,
असैं सुनि मानी साह नीठि नीठि मानी एहु ॥
भाखी तुम मोहि भाखी सोहि भाखो भाऊ१९५।१सन,
देहु अपराधी१जसवंत२हिं बुलाइ देहु ॥
मिलि सु महीपसौं नवाबन निवेदी गूढ,
यह जो करो तो रहैं पहनि निजहिं गेहु ॥ ३९ ॥
अधिप करयो हैं हम पट्टप अधीन पैंहु,

१ छानें २ अपराध की ३ लज्जा से दीन होकर ४ अन्य ॥ ३७ ॥ ५ बहिनोई ६ कहा हुआ ७ नाश ८ हठ से ९ हुल्लड़ (हाहाकार) ॥३८॥ १० अपने धर्म से ११ कुमर कृष्णसिंह को और जोधपुर के राजा जसवंतसिंह को ॥ ३९ ॥ १२ पाट (तखत) के आधीन

हितही हमारे सतच्यारि४००सरे धोलपुर ॥
पट्टहितही मैं सत्तसय७०० न पहार पाये,
ऐसैं अवरंग४०१३ अब पट्टप प्रमानि उर ॥
मैं यों प्रभुजानि उपदाँहु लै अधिक मिल्यो,
धोरी गज च्यारि४त्यौं निसेस दये भेट धुर ॥
रीझकी ठाँ अर्द्ध३ प्रतिदेय४मिल्यो औरनसौं,
सोहु सही तोहू पुनि रीझ सुनि ये प्रचुर ॥ ४० ॥
मुनसब१मोसौं सत्तसहँस७०००छँमासौं छीनि,
वारौं१मऊ२पवर छँमा३हू छीनि अर्द्ध३ इम ॥
अर्द्ध३ अवनी सौं मोहि अढाईहजारी२५००अकिख,
जेठो१करयो अनुज२समान संतु होइ जिम ॥
ताहि पुनि द्विगुन बेढायो जैसी रीझ तकि,
तैसी ठाँ सुजा४०११के रन सौपै प्रतिकूल तिम ॥
नाक काटिबो१जो तुम सबल न मान्यौं तोहू,
नाक काटिबेमें२तो कुमी न राखी साह किम ॥ ४१ ॥
पट्टनि हू लेहु तजि एक१दोनको प्रसभ२,
उज्झिडावरे२कौं तिम दूज्यों लेहु उपहार॥
भृत्यहैं न मेरे जसवंत१रु करण्य२भूप,
तोहू आगैं देहैं तो चलै हैं कछु जत्न तार ॥
हम पहिलेंही मरिबेकौं हुसियारहैं पै,
कपटकरो तो लगैं पातक हमैं हु ढार ॥
भाखैं जग भाऊ१९५१२की भलाई विसवास दे,

१मालिक जानकर २नजराना ३ मुख्य ४ जबह ५ उलटा (पीछा) दान ६बहुत ॥ ४० ॥ ७ क्षमा युक्त से; अथवा सम से ८ भूमि ९ अपराध होवे इसप्रकार १०मासिका(मनसब कम होजाने से बुन्दीवालों ने नाक काटना माना)११स्वर्ण की प्राप्ति मिटाने में तो किसी प्रकार कमी नहीं रक्खा ॥ ४१ ॥ १२मेरे लड़ने को छोड़कर १३सामान १४ सेवक

बुलाइकैं मरायेश्कै करायेरकैद अघकार ॥ ४२ ॥
होत ऐसैं झंझट बसंत१दूजोर२पूरो होत,
ग्रीखम१के लगत अराजक पुरी गूगोर ॥
माताभगवंत१९५१३की बुलाइ कृष्ण१९६११कुमरहिं,
निरलोभी छानैं धरयो दूरनैं राज्य सुत ठोर ॥
पहिलैं बुलायो मधु१९५१ नाम राजसिंह१९५१४पुत्र,
स्वीयैंन ह्वाँ सूची जिन मेटो पतिबंस जोर ॥
बलि जिहिं भेजि गूढ कृष्ण१९६११सु बुलाइ ताहि,
अंकलै नजकी दीनौं पंचकहजारी५०००तोर ॥ ४३ ॥
तैसी सुनि भूप लिखिभेजी अब बुंदी ताहि,
पैठन न देहु गयो अप्पनतैं सो कुपूत ॥
पट्टनिकी लूट सब दूरनी पहुँचाइ कह्यो,
मो बस न कृष्ण१९६११हैं बुलावहु दै बर्यांदूत ॥
जोहू साह पट्टनि उतारिबे लग्यो सो तहँ,
दम्म दुवलक्ख२०००००मानैं दै पुनि सचिव सूत॥
अप३हि नवाबन वजीर४सह भाखी तहि,
भाऊ१९५१२साध्यो हुकम तऊ न कारिये अभूत ॥ ४४ ॥
दूरनौं उपहार सब लूटको हजूरकौं दै,
कहिगो पिहिरैं कृष्ण१९६११बलि सु दयो बताइ ॥
मरजी तऊ तो कछु लेहु दंम मुद्रा जातैं,
सासैंन बनैं१२ जोधभूप न बिगारिजाइ ॥
पंचलाख५०००००मुद्रा तब सौंहस सो भूपपर,

१पापी ने ॥ ४२ ॥ वसन्त ऋतु का २दूसरा महीना वैशाख मास ३ राजा विना ४ अपने लोगों ने कहा ५ वंश के पति का बल गत मेटो ६ गोद ॥ ४३ ॥ ७पत्र ८ प्रमाण ९ पहिले नहीं हुआ सो मत करो ॥ ४४ ॥ १० छिप कर ११ दंड के रुपये १२ हुक्म १३ वीर राजा है सो बिगड़ नहीं जावै १४हठ से

सोहु भरदीनौं स्वांत टेक उतकी टराइ ॥
सो पै टेक साह न तजी रु यौं प्रबोध्यो सोहु,
मीन पैं पललमान लोभको लपेटा लाइ ॥ ४५ ॥
पत्तन गूर्गोर इत नत्तीं१ओ पितामही२के,
राज्य प्रभुतामैं नैंक न बनी बिहित रीति ॥
भिदिभिदि लोक इत त्यौं उत दुरपाले भये,
ऐसी चढी सो न फेरि समिति सखी अनीति ॥
तबही नरूकी तीरथनको बहाँनाँ ताकि,
कोपि चली निकसि भुलाइ यौं करन भीति ॥
अपजस घाँघाँ उड्यो पोते१को पितामही२को,
बात सु सुनतगई साहकी कृपा हु बीति ॥ ४६ ॥
समुझी नरूकी नांती पट्टनि अहित साध्य,
याही अपराध साह कृष्ण१९५१सौं न अनुकूल ॥
तातैं मो पुकार सुनि दैहैं सो बिडारि ताहि,
मैं त्यौं कृपापाल भगवंत१९५३प्रसू हितमूल ॥
च्यारि४धाम को करि बहाँनाँ सो अनखि चली,
संग कुमरानी बडी१भेजी कृष्ण१९६१सहि सूल ॥
सचिव१सिपाह२ संग दीनैं दै कथित द्रव्य,
हारि यौं प्रबोधे क्यौंहु मेटहु हृदय हूल ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

केसरदेवी१९६१नाम करि. जेठी१कुमरानी जु ॥

१ मन का हठ छुड़ाकर २ समझाये ३ मछली पर मांस के समान ॥ ४५ ॥ ४ पोता और दादी ५ उचित ६ अनीति रूपी सखी की सभा में; अथवा सभा में अनीति रूपी सखी ऐसी चढी ७ इसप्रकार भूलकर भय करने को चली ८ और ठौर पोता और ९ दादी का अपयश उडा ॥ ४६ ॥ १० पोते ने पाटण में ११ प्रसन्न नहीं है १२ उसको निकाल देवेगा १३ भगवन्तसिंह की माता होने के कारण १४ कहने के माफिक द्रव्य देकर १५ किसी प्रकार ॥ ४७ ॥

*दइत नरूकी संग दिय, जतन निपुन जानी जु ॥ ४८ ॥
साह नाम पंचाय१न सु, सचिव१६ कति सामंत२ ॥
उचित पठाये संग इम, उचित निहोरन अंत ॥ ४९ ॥
तीरथ न्हान१न चित्त तस, प्रत्युत करन पुकारि२ ॥
गया अवधि सो तब गई, बहुरि मुरी इहिं बारि ॥ ५० ॥
कुमरानी१सह कृष्ण१९५।१के, जनबैभव हे जेहु ॥
मथुरा आतहि मुद्धमति, गहि हठ पठये गेहु ॥ ५१ ॥
जाइ अप्प अवरंग४०।३जँहँ, किय तिय कुमति पुकार॥
मातासन जातहि मिल्यो, भाऊ१९५।१धरि कुलभार ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे महाराणाराजसिंहसूनुसरदारसिंहस्य चाहुम्रानभगवन्तसिंहसुतोपयमन १, आंग्लमोहमयीपत्तनप्रापण २, यवनेन्द्रशाहजहांकारामरण ३, आर्यराजयवनीकरणौरंगजेबप्रसभार्यराजास्वीकरण ४, आर्यमन्दिरपाततत्सामग्रीयवनमस्जिदनिर्माणौरंगजेबनिदेशन ५, पट्टनिमन्दिरपातनसमयकुमारकृष्णसिंहयवनेन्द्रसैन्यविजयन ६, गुडवानाबारीगढविजयानन्तरसविषक्षतौषधिमऊराजभगवन्तसिंहतनुत्यजन ७, स्वसूनुकृष्णसिंहोपरि भवगन्तसिंहजायायाः प्रक्रोशार्थदिल्लीद्रङ्गगमनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

---

*प्यारी;अथवा पति ने साथ दी।४८।१उमराव ।४९।२बलटा।५०।३मूर्ख ।५१।५२।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में महाराणा राजसिंह के पुत्र सरदारसिंह का चहुवाण भगवंतसिंह की पुत्री से विवाह होना १ बंबई का अंगरेजों के हाथ लगना २ बादशाह शाहजिहांका कैद में मरना ३ औरंगजेब का हिन्दू राजाओं को यवन करने का हठ करना और राजाओं का अस्वीकार करना ४ हिन्दुओं के मंदिर गिरा कर उसी सामग्री से मसजिद बनवाने का औरंगजेब का हुक्म ५ पाटण का मंदिर गिराते समय बादशाही सेना से बुन्दी के कुमर कृष्णसिंह का विजय ६ गुडवाना और बारीगढ विजय किये पीछे घाव के इलाज में जहर होकर मऊ के राजा भगवंतसिंह चहुवाण का देहांत होना ७ भगवंत

आदितस्त्रयस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ वैतालीयम् ॥

इत भाऊ१९५।१भूप उच्चरयो, कठिन अनुग्रह पुत्रपैं करयो ॥
बिप्रया जो कृष्ण१९५।१आदरयो,पाप सु पुत्रकपंति तैं परयो॥१॥
अरजो मम चित्त आनिकैं, सैमि अरजी हु न देहु साहको॥
जननी सुत मोहि जानिकैं, पुरबुंदी अबहू पधारिये ॥ २
बंदे सिर ही बिराजिये, जोलौं जीवित दासकै जथा ॥
सबपै स्व निदेस साजिये, अनुचित बिन्नति दै न उज्झिकै॥३॥
प्रत्युत खिजि नारँवी प्रसू, अंगज बैननसोहु आदरयो ॥
बिचकी जन अर्थ दै बसू, पठई बिन्नति स्वीय साहपैं ॥ ४ ॥
हजरत भगवंत१९५।३ माइ हौं, अंकस्थ न जिहिँ कृष्ण१९६।
१ आदरैं ॥
प्रभु सासन मान पाइहौं, भय तिहिँ दै तँहँ मोहि भेजिये ॥५॥
सो सुनतहि कुप्पि साह हू, अक्खिय जाहु निकाय अप्पनैं ॥
गिनि समकृत बहु गुनाह हू ,लोभिनि अंक कुपुत्र क्यौंलयो॥६॥
तिहिँ इम जवनेस तर्जिकैं, बिन्नतिसौं प्रतिकूल ह्वाँ बन्यौं ॥
बलि यह वह मान बर्जिकैं, गुग्गर१ हि तजिकैं मऊरगई ॥७॥

राजसवर्तिका ॥

बुंदी करे नव९ कृष्ण१९६।१ बिवाह चही तिहिँ त्यौंहि खवासि

सिंह की स्त्री का पुत्र कृष्णसिंह पर दिल्ली पुकारू जाने का ६ छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २३३ मयूख हुए ॥

१ वी (आज्ञा) नहीं मानने का कार्य कृष्णसिंह ने अंगीकार किया तो; अथवा कृष्णसिंह ने निर्लज्जता अंगीकार की तो २ पापी ॥ १ ॥ ३ शान्ति करके ॥२॥ ४ सेवक के मस्तक पर ही विराजो ५ अनुचित अरजी देना छोड़कर ॥ ३ ॥ ६ उलटा ७ माता नरूकी ८ पुत्र का वचन ९ धन ॥ ४ ॥ १०गोद रक्खा हुआ कृष्णसिंह ॥ ५ ॥ ११ घर १२ कियेहुए १३ गोद ॥ ६ ॥ १४धमकाकर १५मान

चउद्दह१४ ॥

तत्थहि ताके भये सुत तीन३ *सुता दुव२ तेहु सुनौं क्रमसंग्रह ॥
करणकी नंदिनी राजकुमारि१९६।३ तृतीय३ वधू त्रय३ तोकजनैं तह ॥
सो अनिरुद्ध१९७।१ रु कीरतिसिंह१९७।२ सुत द्वय२ बख्तकुमारि १९७।१ सुता१ सह ॥ ८ ॥
जादवी ही तस छट्ठी६ †जनी तस इक्क१सुता हुव नाम सुखाँ१९७।१ तस ॥
इक्क खवासिके सूनु भो इक्क१ पै सिवराम१ ए पंच५ प्रजा अस ॥
सो त्रयोबिंसति२३ वर्ष बया अब जाइ बन्यौं भगवंत१९५।३ को औरस ॥
यानैं सबै तिय बुल्ली उहाँ जहँ पंचगई न उबारि त्रपा जस ॥९॥
सो भयो कृष्ण१९६।१नृपार्जुन को सुत ताकें न व्याह कहे सब ताहि सौं ॥
पै जे बधू न गई तँहँ पंच५ सुनौं तिनको क्रमतो लुखमाहिसौं ॥
तीजी३बधू जो प्रजा त्रिक३ की जननी न गई पहिलैं हठि जाहिसौं॥
औरहु च्यारि४गईन उहाँ पतिके अबुंधत्वपैं छिज्जि त्रपाहिसौं॥१०॥
गौड़ी किसोरकुमारि१९५।५ गिनौं पुनि पंचमी५ जादवी छट्ठी६ जसोवति१९५।६ ॥
सप्तमी७ कल्ली जो गंगा१९६।७सनाम रु अष्टमी कावंधी पूराँ १९६।८ सुंधी अति ॥
कुंतीपुरी इन पंच५ बधून तजी न चक्रे न पती सुख१ संतति ॥
पंच५ हि ते इत राखी प्रसन्न मनोमैंत साधिकैं आऊमहामति॥११॥

रहित होकर ॥ ७ ॥ * पुत्रियें † बालक ॥ ८ ॥ ‡ माता १ सन्तान २ यय लाया ३ लज्जा ॥ ९ ॥ ४ राजा के छोटे भाई अनंतसिंह का पुत्र ५ स्त्रियें ६ परम शोभा से ७ बूढ़ेपन पर ८ लज्जा से ॥ १० ॥ ९ राठोड़ी १० श्रेष्ट बुद्धि वाली ११ मनवांछित ॥ ११ ॥

दै अरजी निज दर्प दहाइ मुरी जब नारवी नै१ मऊ मग ॥
कृष्ण१९६।१ पैं ठहै तब मिच्छप क्रुद्ध उतारि मऊ हु लई लघुता लग ॥
नारवी मान तहाँतैं नसाइ गुगोरगई प्रतिकूलसे दै पग ॥
तानैं स्वमान गुमायो तऊ सुतकृष्ण१९६।१ घट्यो सु अहो भई उँच्चग॥ १२ ॥
लै मऊ१ बाराँ२ त्यौं संगही लै अवरंग४०।३ नैं कृष्ण १९६।१ घटाइदयो इम ॥
राखी गुगोर१ औ चाचुरनी२ खाताखेरी३ त्रईहि दीय पटातिम ॥
राख्यो हजारउभै२००० उँपटंक जु पै त्रीहजारी ३००० को छीनि लयो जिम ॥
तातैं लुभावन स्वस्त रुकौं अवरंग४०।३ बिचार्‍यो सुलोभ दै अग्रिम ॥ १३ ॥
भाऊ१९५।१ सौं साह सो ऐसैं भनी वह कृष्ण१९६।१ कुपुत्र मर्‍यो अपराधन ॥
ढंग वे बाराँ१ मऊ२ अब द्वै२ हि लहो तुमरेतुम है हमैं लोभ न ॥
जो इक१ दीनमैं होहु जई ततो होहु वजीर हमारे सनातन॥
सुर्जन १९०।१ पायो जितो लहि सर्ब करो जस ख्यात भरो घर कंचन॥ १४ ॥
जित्ति सुजा४०।२ को लयो जस एसैंही सासन एहहु मानिबो सारहै ॥
जो न रुचैं यह तो जसवंत१ रु कर्ण२बुलावहु सु पै उपकारहै ॥
भूप भन्यौं नहिं पूर्ब१ निदेस बनैं तस क्यौं हठ बारहिबार है ॥

१नरूकी२बादशाह३ऊंची गति बाली-अर्थात् कृष्णसिंह के बदने से आप अपने को ऊंची समझने लगी सो आश्चर्य है ॥१२॥४खिताब ॥१३॥ ५प्राचीन रीति (सदैव)के अनुसार६प्रसिद्ध॥१४॥७प्रथम[एक दीन होने] की आज्ञा नहीं बनती

सासन दूजो२ करो जब सोह रचौं तब जो छलको न बिचारहै१५
मामक मान घटायो घनों इम फेरि घटाइबेहीको उपाय है ॥
आपतैं छन्नमदीय उदंत अहो न जितोक रह्यो व्यय१आय२है ॥
ज्यों उपटंक अढाईहजार२५०० को रंच रह्यो समुझ्यो सु ॥
सहायहै ॥
तोहू बनी सो करी तब त्यों घरआन्यों बिजै खजुवा लहि घाय है१६
तोहू हजूरकी रीझ वहै तिम गौरव मेरो लि३पोद गुमाइकैं ॥
भ्राता मदीय लई सुहि भूमि लहों अब मैंहु जो लोभहिं लाइकैं१ ॥
जामिप१ व्याही२ बुलाइ उभैर जिम पेचके संकटमाँहिं पराइकैं
हह्हन६१ को मुख स्याम७ है जो किम सुद्ध ७है सो न कही
बहिकाइकैं ॥१७॥
आपकों न कहानहै ओरकै देखतहो मम चित्त जो निर्दर ॥
साह कह्यो तुम स्वामिकों सौंह दिवावत न्याय सो कैसे दिगंतर ॥
लैहु इहाँ नृप द्वै२ ही बुलाइ जिन्हैं हम भेदिहैं अर्पि जमी१ जर
लोभतैं वे हम दीनलहैं तो नहीं सु महीं तव कृत्य गिनैं नर ।१८।
चाकरी सोपै सिरेचढती तुमरी हम मानिहैं सीम जहाँतक ॥
यों करजोरि कहाई अधीस व्है हीन बिसाससो नाँ करिबो इक॥
कोऊ करो प्रतिभू जो स्वयं कढि बाढै बिसास जो संसय बाधक॥
जो न रुचै यह तोपै हजूरके आश्रितहैं रहिहैं बनि रोचक ॥१९॥
जोरतैं यों नृपपैं हठजाल दिखावत साहकों अब्द गये दुव२ ॥
अंतपैं भाखी उभैर अबलीसन हह्ह६१ बुलाइ कहाहु कृती हुव ॥
तासों चहे नृप सौंह तहाँ धरि कोप हठी प्रतिकूलता लै ध्रुव ॥
भाख्यो अहो खल किंकर भाखि सुबोलबनैंहसैंराम्बिअंधाभुव॥२०॥

---

१ मेरा २मेरा वृत्तान्त ३ खरच ४ आमद ॥१६॥५तीन अंश मिटा कर एक अंश बाकी रक्खा ६ बहिनोई ७ काला मुख ॥१७॥८निर्भय ९भूमि और धन देकर. पृथ्वी पर वह १०कार्य तुमारा नहीं गिना जावेगा ॥१८॥ ११जामिन[जमानत देनेवाला] १९ ॥ १२ चतुर १३ सौगन १४विडंबना १५राजा १६खड्डे में ॥२०॥

भाऊ१९५।१ तहाँहु चह्यो प्रतिभू कहि यों आप वली बदलो तो कहाकरैं ॥
हापन ह्रै इम झंझठ होत महीप कह्यो हनिये बै इहाँ मरैं ॥
जोरपैं यातैं बढे जवनेस भन्यों तुमपैं दम ओर कहा भरैं ॥
हिंदुन इष्ट जो कृत्य इहाँ हम होन न दैहैं मिटाइ हरैं ॥ २१ ॥

संवत वेद त्रिलोचन सत्रह१७२४ उज्वल१ भद्दव६ के दसमी१० ग्रह ॥
साँहस साहि कही इम साह अहो अब हिंदु तजो यह आग्रह ॥
कल्हि कछू मह जो करिहो मचिजै हैं ततो महमैं मृतिको मह॥
ज्यौं जिजिया१ दिक भेट भरो इक१दीनन होहु रहो कुल उँद्वह।२२।

वज्रसो भाऊ१९५।१ यहै सुनि बैन विचारि इहाँ अब है मरिबो वर
कूरम१ आदि महीपनकौं समुझाइ कह्यो गिनौं मोहिपुरस्सर ॥
संग न जो पै चलो तुम सर्व तथापि परिग्रह संगदै सत्वर ॥
कल्हिको उच्छव मेटकरैं न निरंकुस जुज्झ परैं नरपैं नर ॥ २३ ॥

और नरेस न भाखी यहै छितिपैं तुमरी नहिं वीरता छन्न हैं ॥
रावरेसंग पठाइहैं शीघ्रि पदाति कितेक जे जाति प्रपन्नहैं ॥
मांच्यो निसा सबठाँ यह मंत्रपै राजा न भो खिलकोहु प्रसन्नहैं ॥
इक्खिलई अबतो सबनैं इहाँ अर्ज्ज असेसहिं मिच्छन अन्नहैं ।२४।

प्रात भयो इहिं मंत्र प्रपंचसैं सुद्धिपैं लागिरहे चैर साहके ॥
नित्य निवेरि रु भाऊ१९५।१नरेस सज्यो मरिबेहिततंत्र सलाहके॥
कुंकुमीवस्त्र पितांजिम स्वीकरि राजसचिन्ह धेर पिवराहके ॥

१ जामिन २ घर्घ तक ३ अब ४ दंड. हिंदुओं के इष्ट का ५ कार्य जो यहां होता है सो नहीं होनेदेंगे ॥ २१ ॥ ६ दिन ७ हठ करके ८ हठ ९ उन उत्सवों १० मृत्यु का उत्सव ११ कुल के नायक [कुल का उद्धार करके] ॥२२॥ १२ अग्रणी १३ परिग्रह १४ शीघ्र ॥ २३ ॥ १५ पैदल १६ जाति के शरण है, १७सलाह १८ सब आर्य १९ म्लेच्छों का भक्ष्य है ॥ २४ ॥ २० खबर पर २१ हलकारे २२ सलाह के आधीन होकर २३केसर के वस्त्र २४खुशाल ने किये थे जिस प्रकार स्वीकार करके २५ राजापन के अथवा; रजोगुण के २६ स्वर्ग के मार्ग के

सो सुनि चोथे४ वजीरसमेत नबाब सखा सकुचे नरनाहके ॥२५॥
स्वामी रुठाइ सहाय नदैसकैं१ राज्यको थंभ गिरैं इत संभरी ॥
तोहू तिरोहित दूत तती करि प्रस्थित भूपपैं ख्याति यहै करी ॥
क्यों मरिये अनिमित्त१ अकाल२हिंदोइये आज पटालयही हरी॥
एककी मानैंनही अवरंग४०१३धरि मन सोलिपि वज्रपैं ज्योंधरी२६
भूपहु गूढ[11] कहाई न [12]भो तुमसौं यह पाप पै साह प्रतीपं[13]तो ॥
जो मरिबेमैं प्रसन्न व्हो जोधैं[14] मुरैं न सो छुद्रहु दूर महीपर तो ॥
चूकिबो हो तो हमैं कुलचाल जो टारते क्यों इक १ दीनकी
टीप[15] तो ॥
मुक्तिसे जाबिच मोती मिलैं सो तजैं किम धर्ममयी सुभ सीप
तो ॥ २७ ॥
साइस्ते १ जाफर २ कासिम ३ सौं इम गूढ कहाइ वजीर ४
उपेत[16]हि ॥
जाम उभै२ दिनपैं कछु जात करयो इक ठाँ बल [17]व्रात यहै कहि॥
श्रीप्रभुवारे बिमानके संग चलो मम पीठि जिते मरिबो चहि ॥
सेसनको हितसौं जब सीख गिनौं जुहि श्रेय करो सु अभै गहि२८
पंचन भाखी हमैं प्रभुपास अहो न भयो कछु दुर्लभ आजलौं ॥
खग्गन यातैं घनैं रिपु खाइ कहो [18]वं न क्यों पहुँचैं प्रभुकाजलौं ॥
भेजि भरोसाके आधे इहाँ सब विष्णुबिमानन आनि समाजलौं॥
बीच तिन्हैं करि आप बली जमुनापैं चल्यो धरि धर्मजिहाजलौं२९
बुंदीचमू[19] सुनि आते बिमान कहयो अवरंग४०१३न [20]ठाँठाँ कटाकरो

१ स्वामी को क्रुद्ध करके २ चहुवाण ३ छिपीहुई ४ पंक्ति ५ भेजकर ६ विना कारण ७विना समय ८ जलजात्रा के उत्सव में विष्णु को ९डेरों में ही झुलाओ १० हीरे के लेख के समान ॥ २६ ॥ ११ गुप्त १२यह पाप तुम से नहीं हुआ है परंतु बादशाह ही १३ विरुद्ध १४बीर होता है सो छोटा भी मरने से नहीं डरता सो राजा का डरना तो दूर रहा १५ उच्चस्वर की आवाज ॥ २७ ॥ १६ सहित १७ सेना का समूह ॥२८॥१८अब ॥२९॥१९बुन्दी की सेना २०ठाम ठाम

ए जब पीछे मुरैं करि इष्ट सबै फल तोपन दै तहँ संहेरो[1]॥
आप लैजाइ विमान इतैं बिधि क्रीड़ा कराइ कह्यो बल[2] बिस्तरो॥
कालिंदी कूलपैं[3] अज्ज कहाइ[4] महाभट अज्ज[5] महापदकों मरो३०
यौं कहिकैं मुरिबेके[6] अनेहतो पूगी[7] प्रलैकरी तोपनकी तति ॥
अध्व[8] महीपको रोकि अनीक निदेस चह्यो हनिबे सहबिन्नति[9]॥
भाऊ १९५।१ कह्यो भट भूपन भेजे[10] जे स्वस्व बिमानके अग्र लै[11]
संगति[12] ॥
हाँ१सहइष्ट[13]२हाँ सर्ब हरोल करैं जस यौं जु मरैं न सैमा कति[14]३१
बीरन यौं अनुकूल बनाइ ठहै भाऊ १९५।१ हरोल कह्यो[15] बलना-
हहिं ॥
क्यौं मग नाइक रोकिरहे सुकरत्वमैं[16] कष्ट दै मात्र सिपाहहिं ॥
क्यौंहै बिलंब निदेस करो इतपै मरिबो हम सर्व उमाहहिं ॥
साहको सासनआयो तहाँ यह दाहहु क्यौं न तुमहैं न तो दाहहिं[17]३२
लै यह१सासन खानदलेल द्वितीय२ चल्यो ठहाँ निदेस सुही दयो॥
आइ चतुष्टय४ सो इहिं अंतर पाय पर्‌यो[18] रु भली भनतोभयो ॥
बीतिहैं हिंदु न स्वामी बिसासितो आसको देखहुत्रासहि उन्नयो॥
नीतिके आश्रय देहुनिदेस लचे जिम हिंदु तजैं हठ जोलयो॥३३॥
चाहैं मरे जे स्वतंत्र चलैं तिन्ह मारन टेक कहाँलग तानिये ॥

१ नाश करो २ सेना अथवा पराक्रम फैलाओ ३ जमुना के किनारे ४आर्य कहाकर ५ आज ॥ ३० ॥ ६ पीछे फिरने के समय ७ पंक्ति. राजा का ८ मार्ग रोककर ९ सेना ने मारने का हुक्म चाहा १० राजाओं ने भेजे जो वीर ११ अपने अपने विमानों को आगे लेकर १२ साथ रहो १३ इष्ट देव के साथ १४ कितने वर्ष नहीं मरेंगे अर्थात् कभी तो मरना होवेहीगा ॥ ३१ ॥ १५ सेनापति से कहा १६ श्रेष्ट कार्य में १७नहीं तो तुमको जलावेंगे ॥ ३२ ॥१८तीन तो ऊपर कहेहुए और चौथा दलेलखां यह चारों का समुदाय बादशाह के पैरों पड़ा १९हिन्दुओं पर स्वामी का विश्वास जाता रहेगा ॥ ३३ ॥

जानियें यौं१ *प्रपितामह१जोर मुरे इत२शानप्रताप ३ से मानिये॥
तुटै पै जोरतैं नाँहि नमैं वपुके१बलतैं बल बुद्धि२बखानिये ॥
ज्यौं प्रपितामह जे जिजिया१दि तजे. तिनकौं इनपैं पुनि आनिये३४
ए जिजिया१दि रुके इकवीस२१ही आप इहाँ बहुभार बिथारिये
और मिलाय घनैं इनमैं द्रम दुस्सहको डर बज्रसो डारिये ॥
कोलगें देहैं विचार कितेक मुरैं इतकौं तिन्ह दारिद मारिये ॥
ऐसी बिधा करि अल्पइन्हैं बलि जोरके तोर सुसाध्य बिचारिये३५
व्याज कछू करि दंड बुलाइकैं सक्किलौं दंडके द्रम्म सम्हारहु ॥
त्यौं जिजिया१मुख दंड कितेहि बनैं न इते बरजोर बिथारहु ॥
सो सुनि लै जननीमिस साह बुलाइ अनीक कहाई बिचारहु ॥
आज मो माता बचाये इहाँ पर यौं कबलौं रहिहो भयपारहु॥३६॥
यौं जब सेना मुरी अवरंग ४०१३ की सम्मर्द ह्वौं सबके उर संचर
माइको है मिस भाऊ १९५१२ भन्यौं कित माइ १ हुती जब कैद पितार्कर ॥
पै भलो क्यौं रह्यो कुल पंथ यौं बधि बिमान खडे रन आ हर ॥
स्वीय विमान व्हाँ थापि सबै क्रमतैं खिल ठाँठौं स्वयं पहुँचे करे३७
बज्र१ टरयो यह बुंदियतैं सहिबो यह बंट टरयो तिम सैसतैं ॥
लोभके पत्र तथापि लिखाइकैं लोभिन घौंघौं दये जित लोसतैं ॥
अज्ज१कुलीन हजारन आइकैं सिच्छ सम्र टरि सैसे१ उमेसव्रतैं ॥
इक१व्हाँ चालुक१हाडा२हु इक१यौं दोरे है दुष्ट त्यौं बुंदिय देसतें३८

---

*अकबर के बल से भी राणा प्रतापसिंह झुक बैठा था।१४।हिंदुओं के तीर्थों पर यवन बादशाह की लागत विशेष जो थीं उन इक्कीस लागतों को अकबर ने छोड दी थीं१दंड२कहां तक॥३५॥३मिस४सेना को बुलाकर दंड के रुपये५आदि ६जबरदस्ती फैलाओ ७माता का मिस करके अर्थात् माता के कहने से सेना पीछी बुलाई गई है यह कहकर ॥३६॥ ८ हर्ष ॥ ३७ ॥ ९ ठौर ठौर १० आर्य ११ लक्ष्मी के पति विष्णु और शिव की भक्ति से टलकर ॥ ३८ ॥

हो जयसिंह१जु चालुक हो अरु मोहनउत्त२हो हड्ड६१सो हत्थिय॥
राज्यकी हाँस२ बढाइ ए रंक सबेग हजूर गये दुव२सत्थिय ॥
लैलै पटा इक१००००० इक्क१हि लाख१००००० को त्रो उपटंक
हजारी१०० को अत्थिय ॥
दप्र६ हि लोभपैं यों अति दुष्ट किते न ल्है मिच्छ स्वगौरव कत्थिँय३९
यों जिन सत्रह १७२४ संबत अंतर एकादसी ११ सित१ पद्मा ११
उछाहको ॥
घौंघौं१० छयो बरखा जल घौंट११ नवीन यहै जस बुंदिय नाहको ॥
मिच्छ हु केक भये टरि मूढ सज्जो१निबज्जो२सु निदेस१२ सलाहको॥
पै अब दुस्सह दंड परयो सु घटानलग्यो सब भूपन साह को॥४०॥
मुद्दा१३ सवाय५ तैं बीस२०प्रमान समान धरयो जिजिया१सबके सिर
इक्क१समा१४ प्रति दंड जो अज्ज न जाय चंडालके द्वार भरैं चिरैं१५ ॥
ऐसे अकब्बर३७।२छोरे इकीस२.१इहाँ इनमैं बहु और मिलें इर१६॥
कष्ट भो अज्ज१७ कहाइबो ल्हौं तिथि१८ धर्मकी भाऊ१९५।२.करी
सिरपैं थिर॥ ४१ ॥
ऐसी सुनैं जल१अन्न२हु पैं कैर१९ अंचकैं लोभ बढायो भयंकर ॥
नौठि बचाये जे देवनिकेत२१ परयो दंम२२ दुस्सह त्यों तिनँ२३ऊपर ॥
को चँऊ४धाम रु तित्थ२५ करैं विनु भूपन सूपन२६ पाइसकैं वर ॥

---

१ हाथी सिंह २ चाह ३ साथी ४ खिताब ५ अर्थ (धन) वाला ६ अल्प लोभ से यवन होकर ७ अपना बड़प्पन कहा ॥ ३९ ॥ ८ शुक्ल पक्ष की ९ भाद्रपद की एकादशी का नाम पद्मा है १० ठाम ठाम ११वर्षा ऋतु के जल की भांति १२ आज्ञा ॥ ४० ॥ १३ रुपये १४ एक वर्ष प्रति १५ बहुत १६ या मिले "इ गतौ" इस धातु से 'इर' का अर्थ गति है १७ आर्य कहलाना १८धर्म का दिन ॥ ४१ ॥ १९ हासिल २०उस कर को चलाने वाले ने "अञ्चु गतिपूजनयोः"इस धातु से यह शब्द बना है २१मंदिर २२दंड २३उन हिन्दुओं पर २४जगदीश, बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वर ये चारों धाम और २५ तीर्थ राजाओं के विना कौन करै २६ व्यंजन अर्थात् श्रेष्ट भोजन के पदार्थ भी नहीं पासकते

ऐसो परयो अवरंग ४०।३ अकाल जो सप्तही ७ ईतिन रीतिन सोदर ॥ ४२ ॥
जोरतैं मिच्छनैंबो रुक्यो जिम ए ए अनीति मची चहुँ४ ओरतैं ॥
ओरतैं छुट्टत टेक अहेय सबै रही हड्ड६१नके सिरमोरतैं ॥
मोरतैं श्रीजमुनातैं बिमान द्रव्यो न जो सम्मर्ह गोलन दौरतैं ॥
द्वारतैं डेरन लेगो स्वदेव जथा लघु१ दिग्घ २ बिमानन जोरतैं ।४३।
भाऊ१९५।१नरेस बिचारि भन्यो दृढचित्त अहो सहिहैं सब दंड तो॥
तोहु जो मिच्छ करैं बलतैं अटकी वह साहकी टेक अखंड तो॥
मंडतो जो यह टेक अमोघ तोमैं परिबो ततकालहि मंडतो ॥
दंडतो जो न रुकैं तनु दंड तो चंड तो है पै तथा न प्रचंड तो ॥४४॥
मानि बिमान निकासन मंतु लये दंम दम्म छलाख६०००००ईलसतैं
संसद आवनजावन साधि जो पूरबरीति मिल्यो जवनेसतैं ॥
बुंदिव यों लहि रंच बिसास दे पत्र स्वनामको जंगलदेसतैं ॥
बुल्लयो भूपति करन कबंध सु पै गयो संसय कै कछु सेसतैं ॥४५॥
आइ नरूकी करी अरजी लहि कोप तहाँ सरबस्वहि लेतहो ॥
कृष्ण १९६।१ पैं हो जो घनौं प्रतिकूल सो मारिबेके अभिप्राय समेतहो ॥
उक्त नवाबनैं व्हाँहू कह्यो इम हाहा कितो भगवंत १९५।१ सौं हेतहो ॥
नामतो ताको मिटाइये नाँहिं वढैबो बिसेस चह्यो प्रभुचेतहो ॥

१औरंगजेब रूपी दुर्भिक्ष अतिवृष्टि, अनावृष्टि टीडी, चूहा, सुवे, अपने राज्य की सेना, शत्रु की सेना इन सातों को ईति कहते हैं जिसका २सगा भाई ॥४२॥ ३ अन्य लोगों से ४ नहीं छोडने योग्य यमुना से विष्णु का विमान पीछा ५ मुड़ते समय ६उत्सव उत्सव ७तोपों के गोलों के फैलाव से; वा गोलों की दौड़से ८ अपने इष्टदेव ॥ ४३ ॥ ९ खाली नहीं जानेवाली १० छोटा दण्ड देता हुआ नहीं रुकै तो यह दंड ११ भयंकर तो है परन्तु अत्यन्त भयंकर नहीं है ॥४४॥ १२ अपराध १३ दंड के रुपये १४ राजा भाऊसिंह से १५ सभा में १६ बुंदिप १७ बीकानेर से ॥ ४५ ॥ १८ चित्त ॥ ४६ ॥

पट्ठानि जुद्धके मंतु प्रसंग बन्यौं खल कृष्ण १९८।२ निगाहतैं
बाहिर ॥
ईखिं तऊ भगवंत १९५।१ की ओर जनाइपे राखि कछू थिर
जाहिर ॥
मिच्छेव लोतव वारौ १ मऊ२ लघु राखे त्रि ३ देस गुगोर१सौंजाहिर
भेजी नरूकी तथा तिंहिंभाँति दया न करी अपराधपैं दाहिर॥४७
विक्रमनेरतैं आये कवंध महीपति कर्ण स्व इष्ट मनावत ॥
गोपुरमाँहिं हवेली गिनी इम गो पुरमाँहिं न पर्व्हर आवत॥
बाहिर बुंदीकी वाहिनी वीचसौं भाऊ १९५।१ सौं आनिमिल्यो
हित भावत ॥
मित्र नवाब वे पूछे महीप चले नृपकर्ण विसास न लावत ॥४८॥
मानत को हो वजीरके सम्मत पावत को हो विसासमैं प्रत्यय ॥
कर्णनरेस जो आप कहो विसैं पुर आनि चहैं नहीं व्यत्यय॥
मंडि उपव्हर ते चउ४मंत्र जनातभये जिम सूचना सत्यय ॥
तातके अन्वयको जो तकैं अहो सो थकैं कौनसी बातके
अत्यय ॥ ४९ ॥
कर्णके बाहिर डेरा करा३कैं रावर सैंन्निधि हालतो राखहु ॥
साहको आसय पूछैं इहिं अंतर ओगन जो अभिलाखहु ॥
तैसाही ठानि सता १९४।१ के तनैं भनी कर्णसौं संसयतो नहिं
भाखहु ॥
पै निजडेर नही नहिं पास क्रिम खिन क्यों कृमि गावहु माखहु॥५०

१ [illegible] (सामन्तादि) ने [illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ ४८ ॥ १० [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] ॥ ४९ ॥ १६ [illegible] ॥ ५० ॥

आपुनौं ह्यां मिलिबो सुनि एह बिवाहीपनौं१व्यवहार२ बिचारिकैं
मानैं न ज्यौं करि वे मिलि मंत्र टिक्यो यह बाहर रीतिहु ढारिकैं
संसय नाँ३व्यवहारी सगे सो न ह्वै बिपरीत कुकाल निहारिकैं ॥
आपपैं भार परै जो इहाँ मिलिहौं मैं तहाँ तब फोजन फारिकैं।५१।
कर्णा कह्यो बहु भारपैं पहिलैं मिलिहौं यह माँहि प्रतीतिहै ॥
आपके डेरनहू अबतैं नहिं आइबो मेरो सु पै सुभनीतिहै ॥
कालके पासमैं बास करयो तऊ भाऊ१९५१के पास न नासन भीति है ॥
भूप भनी मन इक्क१ भयो जिनको वे सदाही असंसय जीतिहै५२

गीतिः ॥

करि सिक्ख कर्णा इम कहि, भाऊ१९५१ नृप सिबिरैं ढिगहि रहत भयो ॥
गूढ वजीरहिं आग्रहिं, द्रव्यहु उपहार पंचलक्ख५००००० दयो।५३।
नृपके मित्र नबाबहु, सह कासिम१ जाफर२ पुनि साइस्ते३ ॥
पहु प्रेरित साधे पहु, लखि देस१रु काल२लोभ दु२दिस लग्यो।५४।
तत्थ वजीर१ रु ए त्रय३, च्यारिन४को मंत्र साह अधिक चह्यो ॥
इन जिम सम्मति आश्रय, कति कहत कलीजखान५ पंचम ५कौं ॥ ५५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी भूपभावसिंहचरित्रे यवनेन्द्रौरंगजेबाज्ञाविरुद्धानिश्चितनिधनभावसिंहजलयात्रैकादशीघस्त्रविष्णुविमानयमुनातटनयन१, शाइस्तखांप्रभृ

१ छिपीहुई सलाह २ इनकार करके ३ व्यवहार रखनेवाले ४ बुरा समय ॥५१॥ ५ नाश होने का डर नहीं है ६ निस्संदेह ॥ ५२ ॥ ७ डेरे के समीप ८ आग्रह करके ९ नजराने में ॥ ५३ ॥ १० राजा भाऊसिंह की प्रेरणा से औरंगजेब को शीघ्र साधा ॥५४॥ ११ इन चारों की सलाह का आश्रय लेकर ॥५५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञा के विरुद्ध भाऊसिंह का मरना ठान कर जलजात्रा एकादशी के दिन विष्णु भगवान् के विमान को यमुना नदी

तिप्रार्थनयैतत्प्रत्यूहशमन २, औरंगजेबबहुलतरार्यपवनीकरण ३, विक्रमनगराधीशकर्णसिंहस्य दिल्लीद्रंगभावसिंहान्तिकनगरान्तर निवसनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदितश्चतुस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहे जवन जे च्यारि४कै, पंच५ वजीर पुरोग ॥
मानतहो इनकी सुगल६, जानत प्रतिभा जोग ॥१॥
तोहू बाहिर उत्तरयो, सुनि नृप कर्णहिं साह ॥
सह सेनेस१ बजीर२ सिर, रिसकिय लिय लखि राह३ ॥२॥

राजसवत्तिका ॥

दंम्म४ तथा प्रतिवासर५ दंडके पंचहजार५००० चमूप६पैं मेरिकैं ॥
मेरि बजीरर२पैं या५००० ही प्रमान भन्यौं तुम छन्न मिले हिय मेरिकैं७ ॥
जो लग द्रंगन बुल्लहु जंगली तोलग देहु तथा हित हेरिकैं ॥
भाऊ१९५११पैं कर्ण२पैं दै सुहि भार बलेस१ बजीर२ सु तीनों निबेरिकैं ॥ ३ ॥
कर्णसूँ यौं अवरंग४०१२ कहाई पिता मम संग गयो न क्यौं पच्छिम५।३।१ ॥
सिंधु१०पैं रोके क्यौं हिन्दू सबैर रु गयो सुरि गेह क्यौं तूही

पर लजाना १ साइस्तखां आदि की अरज से इस विघ्न का मिटना २ बादशाह औरंगजेब का बहुत से हिंदुओं को यवन करना ३ बीकानेर से राजा करणसिंह का दिल्ली में जाकर भाऊसिंह के समीप पुरके बारह ठहरने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चौतीस २३४मयूख हुए ॥
१ चयरणी (आदि) २ बुद्धि के योग से (बुद्धिमान्) ॥ १ ॥ ३ मार्ग ॥२॥ ४ रुपये ५ प्रतिदिन ६ सेनापति पर ७ हृदय मिलाकर ८ बीकानेर के राजा को नगर में नहीं बुलाओगे तब तक ९ सेनापति ॥ ३ ॥ १० अटक नदी पर

तहाँ तिम३ ॥
*अज्जहु क्यौं न हवेलिय आत४कहावहु तो तनु अंड घुसी किम॥
भाऊ १९५।१ के सम्मत जंगलीभूप २ इतीक भयें अरजी पठई इम ॥ ४ ॥
सिंधुको लंघन वर्जित १ सूचिकैं हाडा६१सता १९४।१ अटके न्हाँ सदा हम२ ॥
साध्य न खेद पिताकै सुन्यौं मुरिगो घर मैं सुपैं धर्महीहों मम३॥
तापर खीजिकैं रावरेतात लुभायें लयो सु दयो सत्रनैं दम ॥
जो सब पूछत मोसूँ हजूर उहाँ हो मर्दीयैं किसोर बैं आगम ॥५॥
बुंदिय भूप की प्रीति बिसेस सो मैं दुहिता दिय कृष्ण १९६।१ कुमारकौं ॥
भूपति भाऊ१९५।१ इहाँ उतरे मगमाँहि मिले बढते व्यवहारकौं ॥
हैं हम जेते अधीन हजूरके प्रेरैं परस्पर प्रीति प्रसारकौं ॥
ताहुपैं द्वै९हम व्याही तहाँ प्रकटैं किम नाँहि जयोचित प्यारकौं६
भेद इतो समुझ्यो मैं इहाँ भये बुंदी अधीस्वरकौं बहु बासर ॥
मैं इनसौं यह जानि मिल्यो इनकौं अब औसर सीखको सत्वर॥
ताहुपैं जो प्रभुको यह त्रास तो पासही दास हो दूर कितेपर ॥
बिक्रमनैर उतारि बुलाइकैं कीलते लंबे इते प्रभुके कर ॥ ७ ॥
जो द्रुत सीख मिलैं चढिजाइ तो भाऊ १९५।१ सौं मोर सौं अहो कब भेट व्है ॥
आगैं मिले नहीं यातैं इहाँ कछु काल रह्यो ज्यौं पुरागमें केट व्है
ऐसीहु विन्नतिपैं अवरंग ४०।३ फँटा जिम व्यालकी १ कालकी

*आज भी † घमंड १ सलाह से २ बीकानेर का राजा ॥ ४ ॥ ३ अटकनदी का उतरना हिन्दुओं को मना है यह जनाकर शत्रुशाल ने रोके ४ मेरे पिता के असाध्यरोग सुना ५ लोभ करके ६ दंड ७ मेरे ८ तरुण अवस्था का आगम था ॥ ५ ॥ ९ पुत्री १० जय करने के उचित ॥ ६ ॥ ११ दिन १२ समय १३ शीघ्र १४ बीकानेर १५ कैद करते ॥ ७ ॥ १६ शीघ्र १७ पुर में आये के [पीछे] होवेगा १८ काले सर्प के फण की टक्कर के समान होकर

फेट२०है ॥

कर्णमहीपपैं कोप्यो कराल मनौं प्रलयोदधि[1] सो किम मेट है८

बेगही खानकलेल१बुलाइकैं प्रेरयो तोपन संगी चमूपति ॥

भाऊ १९५।१ यहै पहिलैं सुनि भीर सज्यो नृपकर्ण२की कर्ण की संमति ॥

वस्त्रहू कुंकुम[3]रंग बनाइ कँम्यौं[4] निजढेरन रक्खि बली कांति॥

जौलौं दलेस१न जाइसकैं गयो तौलौं यहै गजपैं हरि[5]की गति॥९॥

भाख्यो तहाँ इक जंगलभूप महीपको निर्मित[6] वृत्त मनोहर ॥

ऊहाकरो इहिं पद्यकौं आदिलै आघ्रिन आदिकै जोरिकैं अच्छर ॥

काव्य मनोहर[11] के जिम अंतके पंद्रह१५वर्ण जे ख्यात[12] धरापर॥

भव्य[13] मनोहर[14] कीरति भाऊ१९५।१की पद्य प्रैतीक जनातजो मेंध्वर१०

रोधक सत्रु न संभरराय[17] सहाय सज्यो न लज्यो भय साहके ॥

साथी स्वकीय प्रवीरन साथ लहै पट इष्ट त्रिविष्टप[18] लाहके ॥

ज्यौं लखि जातहि[19] वंदी लौं बैन कहै नृपकर्ण अहो इम वाँहके॥

भल्लो इहाँ पहुँचे पहु[21] भीर गदाग्रज[22] जैसे सभै गज१ग्राह२के ॥११॥

रोकि करीन[23] बिथोकि[24] अरीन तुरंगन झोकि[25] हैं तोकि लिभागन[26] ॥

१प्रलय का समुद्र।८।२सेनापति को कर्ण के समान बीकानेर के राजा कर्ण की सहाय पर सज्जा।३केसर के रंग के वस्त्र बनाकर४चला।जिस भांति गज और ग्राह के युद्ध में गज की सहाय पर ५विष्णु भगवान् गये तिस भांति ॥९॥६बीकानेर के राजा ने अपना७बनायाहुआ८मनोहरजाति का छन्द भाऊ से कहा९इस छन्द को आदि में देकर तर्कना करो१०इस छन्द के आदि के चरण से प्रत्येक चरण के आदि के अक्षर जोड़ो ११ मनोहर छन्द के अन्त के चरण के पृथ्वी पर पन्द्रह अक्षर १२ प्रसिद्ध हैं १३ भाऊसिंह की सत्य और १४ सुन्दर कीर्ति का १५ छन्द का एक अंग (टुकड़ा) १६ सीधी [पाधरी] जनाताहै ॥ १० ॥ १७ शत्रुओं को रोकनेवाला चहुवाण राजा १८ स्वर्ग के लाभ के अर्थ १९जिसप्रकार भाट स्तुति करैं तिसप्रकार २० प्रशंसा के वचन कहैं २१ हे राजा २२ विष्णु भगवान् ॥ ११ ॥ २३ हाथियों को रोककर २४ शत्रुओं को बिखेर कर तथा शत्रुओं के विशेष समूह को रोक कर २६ भाले उठाकर २५ घोड़ों

साधन सोहि *सुरालय कौ †नयको जय संसय कोहु ‡निरागन ॥
दीपन बोल उछाहके दै §अवनीपन आदर्यो त्यौं ¶तनु त्यागन ॥
नामी नरेस मिल्यो इम मित्रसौं वृष्टि ज्यौं चित्रसौं सूकत बागन१२
नाकी१ बिमान चढे सहनारि२न आनिकैं छाये अनीकन ऊपर ॥
थट्ट सजे दुवर्घौं रनथंभ बजे स्वर सिंधुन बब्ब१ धुर२ बर ॥
काल इतेकके अंतर काल ज्यौं साह व्है साहचमू चली संगर ॥
पंद्रह१५अंघ्रि इहाँलौं त्रि३पंद्यन आदिमैं धारत कर्णके अच्छर १३
खांनदलेल१निदेस लै खीजत आयो इतेकमैं तोपन तानिकैं ॥
बत्तीबतावनको ही बिलंब उभै२दल बेहि लये बिधि आनिकैं ॥
वेग मिलाइ सजे गज१बाजि२चढे नृप द्वै२मरिबो पहिचानिकैं ॥
पुत्रनलौं यह त्रास परयो जन दैदै कपाट दुरे भय जानिकैं ॥ १४ ॥
अर्ज्ज१रु मिच्छ२रसेस असेस१ससेसप्रजेस२ह सोचे सहे सुनि॥
धुंधि रची रज दिग्गज धूजि पयोधि हले पुट भू के चले पुनि ॥
भासुरी बीरन भूसौं मिली गन जोगिनी२बीर२न जोगिनीसो१००गुनि

को शत्रुओं में डालेंगे सोही * स्वर्ग का साधन है और † नीति का भी यही साधन है और जय के संदेह में भी निश्चय ही ‡ प्रीति नहीं है [यहां नि अव्यय निश्चयार्थ में है; अथवा बादशाह से युद्ध करने में विजय का संदेह है तोभी उस युद्ध करने में किसीको अप्रीति नहीं है, उस अर्थ में यह नि निषेधार्थ में है] § उन राजाओं ने इसप्रकार वीर रस के उद्दीपन के बोलदे देकर ¶ शरीर छोड़ना अंगीकार किया ? आश्चर्य करानेवाली वर्षा ॥ १२॥ २ स्वर्ग में रहनेवाले (देवता) ३ सेना के ऊपर ४ समूह ५ युद्ध के खंभे ६ सिन्धवी रागनी (बड़ाराग) ७ मृदंग ८ यमराज के समान. यहां तक के १० तीन छन्दों के पन्द्रह ९ चरण. बीकानेर के राजा कर्णसिंह के कहेहुए अक्षर आदि * में धारण करते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ आर्य १२ भूपति १३ सब शेष सहित १४ ब्रह्मा १५ समुद्र १६ भूमि के पुड़ १७ वीरों के स्त्रियों के पास (खुंहारों) से मिले १८ पावन वीरों से; अथवा सेना के वीरों से जोगिनियां (देवी की

*उपरोक्त तीन छन्दों के पन्द्रह चरणों के आदि के अक्षर जोड़ने से मनहरजाति के छन्द का नीचे लिखाहुआ अन्तिम चरण निकलता है जो राजा करणसिंह ने कहा था 'माऊं का भरोसा ज्यो भरोसा दीनानाथका'.

रारिके कौतुकी रुद्र१ पुरोग चले सब रीझ घनी मनमैं चुनि ॥१५॥
भाऊ१०५।१मन्यों पछितोतो महारइहाँ सहिवोइक१साहकी ओरको
पीछैं वनैं सु लरैंपरिहैं करिहैं पलपूजन खड्ग कठोरको ॥
वाहुन वाहिनी हारैं बिलोरि जथा मद मारैं अरातिन जोरको ॥
यों अवरंग४०।३करैं अनुताप चुक्यो जिम धाप रुक्यो मन चोरको१६
तोपनकेचलतेहि तुरंग चमूपर सम्मुह संग चलाइहैं ॥
दुम्मग२वेर न फेर दगै जिम भूपर भंजते ऊपर जाइहैं ॥
मार पसार अपार मचाइ कितेक अनीकहिं खग्गन खाइहैं ॥
अज्जसों ऐसी वहोरि वनैं न तथा अवरंग४०।३पथा पछिताइहैं १७
घोर समैंमैं तटसिंवघाभुव पैं जितहीतित भासित भै रह्यो ॥
लोह समांसमके लहिवे छलि छोरैं छमाछम छत्रन छ्वै रह्यो ॥
यों निय हाँ प्रतिमाप्रतिमापै चढ्यो लख्यो वीर१न भीरु२नदैवे रह्यो
आसा विधान दुहूघाँ बचिवो अवहै किनहै यह संसय ह्वैरह्यो।१८
या समैंहु जिहि नेक वजीर१औ साइस्त२जाफर३कासिम४संगहैं
यों अरजी कर जोरि करी इक१दीनैंक सागन हीन उमंगहैं ॥
तिन दरवाउ रहे चढऽथाँ जिनमैं अव सज्ज एरजुज्झन संगहैं॥
जो मरिहैं तो घनों वकैं जगमैं वीतिहू रावरो रीति कुवंगहैं॥१९॥
जो [illegible] आडमिर्जा जसवंतसिंधारफत हिंदुव भूप दुरचित्तके ॥
[illegible] भीरकरैं विपरीत इहाँ वहु दाँयक चित्तके ॥

[illegible]

बित्त जो लेत न क्यौं² बवली भय छोरिन तो लुटिहैं इहां भित्तके॥
मित्तके पच्छ भरोसा करो मतिमानों इतैं इते मित्त अमित्त के२०
जो सब हिंदु जुरे टरिजाइ तो कैसी बनैं इनमैं हि रहैं किते ॥
मित्त१को पच्छ मिटैं सह मूल अमित्र२उदास३दुर२घा उमहैं किते
सबघां सीमा इहां इनकी तिनकी प्रतिकूलता लाहं लहैं किते॥
सोचो बिपत्ति हुमायैंसमै अजमेर अधीस करी सो कहैं किते२१
साहंस सीमाहुतो यह साह पै मानीयहै सो भुवालन भागतैं ॥
पूरे जे तोप पदातिरनके सजे सूर सबै करे दूर कुमागतैं ॥
लाख चुहान सौं पंच५००००० इतैं लहि लाख पचीस २५०००००
कैबंधरकों लागतैं ॥
साहंसमुदा इती३०००००० क समेटि ससाहंससाहसँम्यो इन आगतैं
कर्नकौं औसैं बचावनकौं जस हाका जग्यो चहुँ४घां चहुवानको॥
कृत्यें सो काव्य कविंदनके मैं इतो प्रसरयो ज्यों सता१९४।१ सँस
आनको ॥
भूप उभैरसौं तहां सब भूप मिले करि उच्छव ज्यों निज मानको
भाऊ १९५।१ के पायन कर्णा २ भुवाल पर्‍यो गिनि निर्भय दा-
यक प्रानको ॥ २३ ॥
कंठलगाइकैं भाऊ१९५।१कह्यो हमकौं तो इहां ब सैंमा त्रय३०है गयो

१धन के२ मंबर३भींत(शहरपनाह)के भीतरवाले४मित्र के पच्च का भरोसा मत करो अर्थात् यवन लोग आपके मित्र हैं जिनके भरोसे पर मत रहो क्योंकि यह इतने आर्य राजा ५ मित्र हैं सो अमित्र होरहे हैं ॥२०॥ ६ उदासीन (तटस्थ रहनेवाले) ७ उमाह (उत्साह) करेंगे ८ हिन्दुओं की ९ लाभ ॥ २१ ॥ १०हठ की सीमावाला यह बादशाह था परन्तु ११राजाओं के भाग्य से मानली तोपें और पैदलों के १२समूह सभ्भ हुए जो वीर थे उनको उस कुमार्ग से दूर किये १३राठोड़(बीकानेर के राजा) को इतने रुपये लगते ही १४दंड के रुपये १५बह हठ १६ शान्त किया ॥ २२ ॥ १७ कार्य १८शत्रुशाल के समान अन्य का यश ऐसा कभी नहीं हुआ ॥ २३ ॥ १९ तीन वर्ष

सीखको पाइबो आयो समीप सु पै अहो साहको साहस खेगयो
आयेहो आप इहाँ अबही पुरमैं प्रबिसो इम भंसको भै गयो ॥
कीनी सोकर्या त्यों सेस रसेसन संघहु गेहकौं सिक्खहिं देगयो२४
यों रहि तीन३समा कछु ऊँन सबै जिन सत्रह१७२४संबत अंतर ॥
बापसौं कीरति आप बढाई गवाइ कविंदन छाइ दिगंतर ॥
आपनौं धर्म निबाहि अहो सिरदैन सज्यो बहुबैरके संगर ॥
यों जय सिक्खलै बुंदीअधीस पुरी प्रबिस्यो सक उक्त१७२४समा पर
संबत सोहि इतैं जिन सत्रह१७२४मान गयो तँहँ साह महामति ॥
लंधन सासक चारलिसाख्य सो कंपनीकौं दई बंबई संप्रति ॥
अब्द चतुष्टय४साहअधीन रही अब कंपनी पाई जथा रति ॥
बानिजको व्यवहार बढाई सु पै गिनि मुख्य पुरी त्रय३संगति२६
यों इन अब्दन माँहिं उदैपुर राजपदांद्रिकसिंह जो रानहो ॥
ता समै या जगतेस तनूजके दास जो हीरक मंत्री१प्रधान२हो ॥
राज्यमैं कोऊ स्वतंत्र न राखि सबै तस तंत्र करे यों सुजानहो ॥
भेदी असेस सो हीरक भृत्य अधीसके नासमैं उद्यमवानहो।२७।
मुख्य व्हाँ रानके जो ही कुमार सु पै अभिधाँ करि सो सरदारहै
जो भगवंत१९५।३सुतापति जानहु धर्मधुरंधरता ब्रत धारहो ॥
पट्टकुमारकी हो जो प्रैसू तिहिँ हीरक भेदि तन्यों इक तारहो ॥

१बादशाह का हट मिट गया२नाश होने का भय गया३जाकी के राजाओं के ४समूह को ॥ २४ ॥ ५ तीन वर्ष से कुछ कम ६ घुसा ७कहेहुए विक्रम के शक के सम्वत् में ॥ २५ ॥ ८ चार्लिस नामक ९ सौदागरों के समूह को अंगरेजी भाषा में कंपनी कहते हैं १०इस समय११चार वर्ष१२प्रीति के अनुसार ॥२६॥ १३राज शब्द है आदि में जिसके अर्थात् राजसिंह१४इस महाराणा जगत्सिंह के पुत्र [राजसिंह] के हीरदास नामक सलाहकार और प्रधान [दीवान] था १५ आधीन १६ अपने स्वामी के नाश में उपाय करनेवाला था ॥ २७ ॥ जिसका १७ नाम सरदारसिंह था १८ नियम का धारण करनेवाला था १९पाटवी कुमर की माता को ही हीरदास ने भेद कर यह तंत्र रचा कि पुत्र को गद्दी मिलने के कारण पति को मरवाडाले.

पुत्रके काज हतैं पतिकौं बिरच्यो इम पापिनी पापबिथारहो।२८।
पापिनीके सरदारसो पुत्र हुतो पै सुतो अपराध बिहीन हो ॥
जाकी प्रसूही रच्यो यह जाल सो कत्तिय७स्वेत१मैं स्वीकृतकोन हो
भृत्ति बिसासको हीरक भृत्यके ऊरुज नाम दयालु अधीनहो ॥
रान१के हीरक२ज्यौं रुचिमैं इम हीरक२के यह३प्रत्यय पीनहो२९
ऊरुज दीपावलीकी निसा यह सासुरै जावनलागो समीपही ॥
हीरक तापैं प्रसन्न व्है होइ कटारी स्वकीय सो दै रु यहै कही
सासुरेमैं छिगसों हनौं सस्त्रन लै यह जाहु ज्यौं जानैं स्वयं लही
सो लै दयालु इतो समुझ्यो न सम्हारिकैं लै कछु जैबो भलोनही३०
हीरकसौं कछु अंतर व्हैकैं सम्हारी दयालु कटारी सो सत्वर ॥
कोस तदीयमैं पत्र कढ्यो सब राज्यके अंगनकी लिपि संकर ॥
मारिकैं रानकौं सर्ब मिलै बइठारिहैं कालिह कुमारकौं बिष्टर ॥
पै कही रानी जो ताकी प्रसू वाकी हाकिमी ताहू रहैं सबऊपर३१
देखि यौं जो अघपत्र दयालु हो हीरको पै पलट्यो हिय हालही
सासुरेको तजि जैबो सुपै पुहवीस प्रकोष्ट कर्‌यो ततकालही ॥
रान बुलाइ त्वरी अवरोधतैं सौंप्यो सोपत्र निभालकैं सालही ॥
लै यह रान ज्यौं प्रानलये महाकालनिसा मची दीपकमालही३२
सूची जो रानी प्रसू सरदारकी जातिकी हाडी६१के ताहि जनावत
ताहिको बासक हो सो तहाँ पुनि रानौं गयो छलछिद्र जो पावत

१विस्तार२कार्तिक मास के शुक्लपक्ष में३यह अपना कार्य करना ठहराया था ४रानआपाला हीरदास का सेवक५वैश्य[बनियां]६दयालदास नामक आधीन था७पूर्ण विश्वासपात्र था ॥२९॥८वह बनियां९दीवाली की रात्रि में १०अपनी कटारी देकर ॥३०॥ ११.शीघ्र १२ उस कटारी के मियान के भंडारिये में १३ राजा के मुख्य लोगों के १४ लेख सहित. संकर [मिलाहुआ लेख]१५सिंहासन पर १६ सरदारसिंह की माता ॥३१॥ १७राजा की १८डोढ़ी पर १९गया [चला] २० राना को शीघ्र २१ जनाने से बुलाकर २२ देखने से निश्चय ही शाका रूपी २३ दीवाली की उस रात्रि में बड़ी कालरात्रि मची ॥ ३२ ॥ २४ माता २५ वार

मारि गदा करि सो [1]महिला जन ताके असेस हनैं तिम जावत ॥
पापी सु धाइ उदैपुरमैं सबही पकरे सुनैं जेहु [2]नसावत ॥ ३३ ॥
माताको मारिबो जानि कुमार [3]अमंतुहोपै सुनि जा [4]अभिसापकों
[5]काय तज्यो द्रुत काहु प्रकार बहोरि दिखायो न आनन बापकों॥
सूचित हीर लयो सरनैं सो पुरोहित रानके जानिन पापकों ॥
केते कहैं नहीं हीरं कढयो तस पुत्रही गो सरनैं लखि तापकों ३४
केते कहैं तस बंधु कढयो हितसौं सरनैं सुहि राख्यो पुरोहित ॥
कोइ कहैपै पुरोहितको कुल१हीरक के कुल२ज्यौं दल्यो [7]द्रोहित
ओरहू जे हुते या अघतैं स कुटुंब ते [8]कोल्हू पिलाइकैं [9]सोहित ॥

१ उस स्त्री को गुरज से मारी २ नाश किया ॥ ३३ ॥ ३ निरपराध [निर्दोषी] था परन्तु उस ४ झूठे दोष को सुनकर ५ शरीर * छोडा ६ फिर पिता को मुख नहीं दिखाया. यह पाप नहीं जानकर पुरोहित ने हीर को शरण लिया ॥ ३४ ॥ ७ द्रोह करनेवाले ने ८ घाणी में पिलाकर ९ शोभित हुआ

*मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद मे यह वृत्तान्त इसप्रकार से है कि कुमर सरदारसिंह की माता ने अपने पुत्र को राज दिलाने के कारण महाराणा के मन में सन्देह कराकर बडे कुमर सुलतानसिंह को मरवाडाला जिस पीछे बडे पुरोहित के नाम एक पत्र लिखा कि सुलतानसिंह को तो मैने मरवाडाला अब दरबार को भी जहर दे दो कि मेरा बेटा सरदारसिंह राजा होजावे, इस पत्र को पुरोहित ने अपनी कटारी के खीसे में रख दिया, जब पुरोहित का नौकर दयालदास वैश्य अपने ससुराल देवाली नामक गांव में जाने लगा तब उसने पुरोहित से कोई शस्त्र मांगा और पुरोहित ने वही कटारी दयालदास को दी उसका खीसा (भंडारया) खोल कर देखा तो वह पत्र दयालदास को मिला जिसको पढकर उसी समय देवाली से एक कोस पर पीछा उदयपुर आया और उसी आधी रात को वह पत्र महाराणा राजसिंह को दिखाया जिसको देखते ही महाराणा ने क्रोध में होकर भीतर जाकर उस राणी[सरदारसिंह की माता]को गुरज की देकर मारडाली और प्रभात होते ही पुरोहित महलो मे आया तब उसी गुरज से उसको मारा यह वृत्तान्त सुनकर निर्दोषी कुमर सरदारसिंह ने जहर खाकर आत्मघात किया और मरते समय निम्न दोहा अपने हाथ से लिखकर मस्तक नीचे रख दिया.

"पांणी पिंड नणांह, पिंड जातां पांणी रहै ॥ तो चीतारसी वणांह, सपना ज्यों सरदारसी॥१॥"

इस पीछे महाराणा ने दयालदास वैश्य को अपना प्रधान [दीवान] बनाया और इन पापों से छूटने के कारण राजसमुद्र नामक बडा तालाब बनाया उस समय में बडा पुरोहित गरीबदास था परन्तु उसको मारना नहीं पायाजाता. इससे ऐसा जाना जाता है कि यह पुरोहित गरीबदास के भाइयों में से कोई होवेगा.

पापि१नमैं गिनिकेही अपाप२लयो अघ रान कियो पुर लोहित३५
जानैं न पापको गंधहु जे पै सुनैं इम रान हजारन संहरे ॥
बाहिर हे ते बचे बलसौं पुरके तो घनैं जमजंत्र पिले परे ॥
वानिज२ सोही दयालु बिसारि मुसाहिब मानि टराइ जिते टरे ॥
ते जन सर्व करे तस तंत्र३ चवीं सब पंथ चलो अब ऊबरे॥ ३६ ॥
कृष्ण१९६।२बुलाई स्वसा पहिलैं कछु आई गुगोर सुता भगवंत १९५।२ की ॥
स्वाँमी मरयो व्हाँ सुन्यौं सरदार करयो सहगोन लखी गति कंतकी
संवत मान पचीस रु सत्रह१७२५निंदा नची यह रान उदंतकी ॥
ऊर्ज्ज७सिता१दि१की के उतं१के इतं२केके लिखैं यह आश्विन ६ अंतकी ॥ ३७ ॥
रानसौं व्है यह पापकराल भई जगनिंदक हाक भयंकर ॥
अंचकलो नसुनैं जिन्ह अंग उमंग न रंचक राखैं कहीं अंर ॥
पीछैतैं रान तथा पिछताइ बुलाइके पंडित पूछि महाबर ॥
राजसमुद्र तड़ाग१रच्यो रु दयालु रच्यो हरिमंदिर दुस्तर ॥३८॥
रानको छोटोकुमार रह्यो जयसिंह सु पै इहिं पाप घनौं जरयो॥
तानैं जयादिसमुद्र तड़ाग३कुमारनैं तातहुसौं बढतो करयो ॥
तापर ईरखा आनिकैं तात बडोहु सो ताल कह्यो जरि ढीवँरयो

१नगर को लाल कर दिया ॥ ३५ ॥ २ बनियां ३ आधीन ४ कहा ॥ ३६ ॥५कृष्णसिंह ने अपनी बहिन को ६ पुत्री ७ पति ८ सती हुई ९ प्यारे की गति की १० रानी के वृत्तान्त की ११ मेवाड़ के बड़वाभाट आदि १२ कार्तिक सुदि एकम लिखते हैं और १३ बुंदी के बड़वाभाट आश्विन सुदि पूर्णिमा लिखते हैं ॥ ३७ ॥ १४जिसके अंग पर कोई पूज्य पन नहीं सुना अर्थात् कोई राज्य चिन्ह नहीं पहना और १५शीघ्र ही उस राजसिंह ने कहा कि मुझको राज्य की कुछ भी उमंग नहीं है १६बडे श्रेष्ट लोगों से पूछा; अथवा पण्डितों से बडा वर पूछा १७ तालाव ॥ ३८ ॥ १८ जयसमुद्र तालाव १९ पिता से भी बडा बनाया २० राजसिंह ने उस तालाव का नाम जलकर

जाहिर नाम भयो तस जोक्षि तऊ वह ताल वदैं अति विस्तरचो३९
बुंदी इतैं नृप भाऊ१९५।१प्रवीर मधुसूदन पूजिकैं वेदविधानसौं ॥
अस्तखाँ के अब कुंभ उतारयो सो पीछो चढाइकैं रीति प्रमानसौं
धर्मसौं राज्य जमाइ धुरंधर भूपन मुख्य रह्यो रहि मानसौं ॥
अज्जहुं जाको लै नाम असेस करैं क्रय१विक्रय२काढि दुकानसौं४०
यौं सिवराज सितारा अधीसको दौर मच्यो अतिजोरको दक्खिन
पावत साहनैं ताकी पुकार तयार करयो नृप संभरी तक्खिन ॥
भाऊ१९५।१भन्यौं इक१मो भगिनी सु बिवाह वैं है अवसाख्रकों
संक्खिन ॥
याकौं सवेग बिबाहि इहाँ१पुनि दास उहाँ२दहैलि परपंक्खिन४१
ऐसी बैंलापति दै अरजी वलि ठानि प्रपंच स्वसाके बिबाहको ॥
रानके पुत्र जो मुख्य१रह्यो सो वरयो कछु टारक सासन साहको
व्याही स्वसा वह ताकौं बुलाइ निदेस सो चिंति सता १९४।१न-
रनाहको ॥
गंगा१९५।५कों व्याहि उदैपुर गो सैंवधू जयसिंह लैबोल सराहको
व्याह्यो व्है रान किते यौं वदैं सु पै पैच्छ गिनौं निहचै न सम्हारिकैं

ढेबर * रक्खा १ फैलाहुआ ॥ ३९ ॥ २ विधानों को ३ पाटण के मंदिर का कलश ४ आज भी ५ व्यापार ॥ ४० ॥ इधर सितारा के पति का ६ फैलाव ७ बादशाह को ८ उसी समय ९ अवस्था १० साची से ११ शत्रुओं को ॥ ४१ ॥ १२ आडा वला नामक पर्वत का पति १३ रचना १४ बहिन के विवाह की १५ बादशाह के हुक्म को नहीं माननेवाला १६ स्त्री सहित ॥ ४२ ॥ १७ कहते हैं १८ इसमें निश्चय पक्ष कौनसा है सो नहीं जाना गया

* बड़वाभाटों की लिखी हुई या कोई अन्य लोगों की प्रसिद्ध की हुई यह कथा ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] के कथनानुसार सब राजपूताना में प्रसिद्ध है परन्तु असत्य है क्योंकि महाराणा राजसिंह के देहांत सम्वत् १७३० में हुए पीछे जयसमुद्र तालाव का काम सम्वत् १७४४ में प्रारम्भ होकर सम्वत् १७४८ में समाप्त हुआ है और पर्वतों के जिन नाके को बान्धकर यह तालाव बनाया गया उस नाके का नाम ढेबर था इसकारण इस तालाव का नाम ढेबर का तालाव प्रसिद्ध हुआ है ॥

दायजमैं सब दूरन दये नृप भाऊ१९५।१स्वतंत्र[१] सो व्याह निहारिकैं
ताहूनैं त्याग दयो दिपतो[२] पट१भूखन रहै[३] गै[४] स्व[५]ओलि[६] प्रसारिकैं,
मामैं[७] नै सालकै[८]प्रीतिभजी सजी मामै की सालक धी[९] हित धारिकैं ॥ ४३ ॥
संभरं व्याहि यौं गंगा १९५।५ स्वैसा[१०] पुनि साह स्वैरा[११] लखि साज्जि[१२] प्रयानकौं ॥
रानी किती इहाँ रक्खि स्वैसंग[१३] लई किति बाहिर मंडि मिलानकौं[१४]
औरंगाबाद गयो दरकुंच यौं स्यानी बढावत बीरन मानकौं ॥
पास बसाइकैं भावपुरा१निवस्यो[१५] तहाँ सत्रुन संक निदानकौं ।४४।
कृष्ण १९६।१ कुमार गुगोर गयो बलि[१६] बारा१ मऊ २ जिहिं खोई कुबुद्धिसौं ॥
गो अब दिल्ली पहै पँर[१७] गो न सभालग जोलौं स्वभाव बिसुद्धिसौं[१८] ॥
बार।१मऊ२की दई लखि बिन्नति काहू कह्यो तँहँ साहहे क्रुद्धसौं॥
सो सुनिकैं भजि भीत सिटाइ गयो सो गुगोर लगी हिय लुब्धसौं[१९]४५
जोपै मुकुंद १९४।१तनैं जगतेस१९५।१ लखाइकैं अस्तमरार त्रिलक्ख ३०००००न ॥
लोभी इजारा मऊ इक१ लैकैं चुभ्यो हिय कृष्ण१९६।१कै आसय चक्खन ॥
संबत भू गुन सत्तह १७३१ मैं इत कृष्ण १९६।१ गुगोर पितामही[२०] अक्खन ॥
सो भगवंत१९५।३की दूजी२सुता परिनाई स्वसा निज बुद्धि लोपक्खन

---

१ स्वतंत्र राजा से व्याह हुआ देखकर २ प्रकाशमान [प्रसिद्ध होने योग्य] ३ हाथी ४ घोड़ा ५ धन ६ ऊंट ७ पहिमोई ने ८ साले से प्रीति की ९ हित की बुद्धि धारण करके ॥ ४३ ॥ १० बहुवाण ने ११ गंगा नामक बहिन को १२ शीघ्रता १३अपने साथ १४नगर के बाहिर मुकाम करके १५ निवास किया ॥ ४४ ॥ १६ फिर १७परन्तु सभा तक नहीं गया १८ विशेष शुद्ध स्वभाव से १६ लोभ से ॥ ४५ ॥ २० दादी के कहने से ॥ ४६ ॥

भाऊ१९५।१तहाँ घर सासन भेजि नरूकी प्रसू जिन जीवत जानिकैं
दूसरी२रानी जो भाउलदेवि१९५।२पठाई गुगोर स्वगेह प्रमानिकैं
रामपुरा मुहुकम्म नरेसको पुत्र गुपाल तथा पहिचानिकैं ॥
कृष्णा की१९६।१जामि जो मानकुमारि१९६।२ सो ताहि बिवाहि
दई मह²ह तानिकैं ॥४७॥

जानि इतैं अवरंगके जोरकों राजपदादिकसिंह सो गानहु ॥
साहके पायन लागिबो सोधि मैंथासौं चमू सजि कीनों प्रपानहु ॥
नौपित पंथमैं सो कमं नाम लिल्यो कवि ओ कह्यो क्यौं न हौ मानहु
नैंक अहो कुलरीति निहारि पतासे पितामहतो पहिचानहु ॥४८॥
यों मरुबानिमैं छप्पई एक१नई रचि पंथ पढी कवि नापित ॥
सो सुनि रान हु चेत सम्हारि मुरयो फ्निमिग्ग जथा मही मांपित
मालपुराके प्रमार३न मारि सु पै पुर लूटि करयो किधौं सांपित॥
यों गो उदैपुर ओ इनसौं पलटे करि द्रोह प्रमार ते पापित॥४९॥

॥ दोहा ॥

सुर सत्रह१७३३मित लगत सक, इत श्रीपुष्कर आइ ॥
वहु कवि नरहरि बारहठ, बुधजनैं तत्थ बुलाइ ॥ ५० ॥
एकलक्ख१०००००मितसौं अधिक, करि मुद्रा किय कैंज ॥
पूछि अर्थ तिन्ह पंडितन, सु हुव काव्य हित सज्ज ॥ ५१ ॥
और खरचि सरवरच इम, न कवि निकासैं नाम ॥
बुध विप्रन लहि अर्थबल, तिहिं सु काव्य किय तांम॥ २५ ॥

१ बहिन २ उत्सव ॥ ४७ ॥ ३ रांणा राजसिंह ४ प्रसिद्धि से मार्ग में ६कमा नामक ५ नाई मिला ७ खेद (हाय) ८ प्रतापसिंह जैसे ॥४८॥ इस अभिप्राय की मरुभाषा में ९ उलटे मार्ग १० भूमि को मापता हुआ ११ आपयुक्त [*जलाया] १२ पापी ॥ ४९ ॥१३ तहां पंडितों को बुला कर ॥५०॥ १४ प्रमाण १५ कार्य किया ॥५१॥ १६ पंडित ब्राह्मणों से अर्थ का बल लेकर उस (बारहठ नरहरिदास) ने तहां श्रेष्ठ काव्य किया ॥ ५२ ॥

* मेवाड़ के इतिहास में महाराणा राजसिंह ने पाट बैठ कर टीका दौड़ की उसमें मालपुरे को जलाना लिखा है.

भनि रामायन१भागवत२, उभय२मुख्य अनुसार ॥
भाषाकवितामैं भने, अखिल विष्णु अवतार२४ ॥ ५३ ॥
सहस अष्ट१६०००अरु अष्टसत८००, एकसठ्ठि६१तिन्ह अग्ग॥
आर३अष्टमी८सुचि४असित२, सो किय ग्रंथ समग्ग ॥ ५४ ॥
कवि अवतारचरित्र१करि, इहिं प्रबंध अभिधान ॥
क्रम लिखाइ तिम ख्यात किय, पुस्तक सतन प्रतान ॥ ५५ ॥
संकृति २४ मिँत अवतार सब, हरिके जाबिच हैहि ॥
राम१।२१कृष्ण१।२२विस्तर रचित, धुतिहिं प्रकासत द्वैरहि।५६।
ऐसो कवि चारन अपर, भाषा कविबर भो न ॥
जाकी कविता भक्तिजुत, कित्ति लहत चहुँ४कोन ॥५७॥
पुब्बहि इत आमेरपुर, सो नृप सृत जयसीह १ ॥
रामसीह२तस पट्टलहि, लहिय राज्य जस लीह ॥ ५८ ॥
कुलपति२माथुर बिप्रकुल, भाषाकवि जिहिं रूप ॥
सादर बुल्लि प्रसाद सह, रीझ बिराचे अनुरूप ॥५९॥
द्रोनपर्व७।१भारत बिदित, अर्थ तास अनुकार ॥
ग्रंथ रचायो नाम करि, संग्रामादिकसार२॥६०॥
सुर सत्रह मित१७३३यहहि सक, बदि२फग्गुन१२गुरु५वार॥
सप्तम७तिथि तँहँ ग्रंथ सो, किय प्रारंभ प्रकार ॥ ६१ ॥
भाषा ग्रंथनमैं भलो, प्रविदित यहहु प्रबंध ॥
पद असाधु बहुठाँ परत, सुतो हरत दृढसंध ॥ ६२ ॥
इक संबताबिच ए उभय२, बनैं ग्रंथ बिख्यात ॥

॥५३॥१मंगलवार२आषाढ मास कृष्णपक्ष३समग्र ॥५४॥४इस ग्रन्थ का५नाम ६सैकड़ों पुस्तकें फैलाकर प्रसिद्ध किया॥५५॥७प्रमाण८विस्तार पूर्वक९कान्ति ।५६। १० अन्य भाषा में ११ श्रेष्ठ कवि नहीं हुआ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ प्रसन्नता सहित बुलाकर १३ अपने स्वरूप के अनुसार ॥५९॥ १४ सदृश १५संग्रामसार ॥ ६० ॥ ६१ ॥ १६ विशेष प्रसिद्ध १७ ग्रन्थ १८ अशुद्ध १९दृढ प्रतिज्ञा कालादा

कुलपति१पावन रीकरकिय, नरहरि लोभ निपात२ ॥६३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे यवनीकरणार्थविक्रमनगराधीशकर्णसिंहोपरि यवनेन्द्रौरंगजेबसैन्यप्रेषणातत्सहायभावसिंहतदन्तिकगमन१, जाफरखांप्रभृतिप्रार्थनौरंगजेबसैन्यप्रत्यागमनेनोभयभूपमृत्युमुखोद्धरण२, मोहमयीपत्तनस्यांग्लकरपतन ३, उदयपुराधीशराजसिंहच्छद्मघातप्राकट्यहेतुराज्ञीपुरोहिताद्यनेकस्मरणकुमारात्मघातमरण४, राजसमुद्रजयसमुद्रकासारनिर्मितिभणन ५, महाराणाराजसिंहमालपुरप्रज्वालन६,महाराणाजयसिंहस्यभावसिंहभगिनीपरिणयन७,यवनेन्द्रौरंगजेबनिदेशससैन्यभावसिंहस्य दाक्षिणात्यसितारानगराधीशशिवराजाक्रमण८, चारणबारहठनरहरिदासस्यावतारचरित्रप्रबन्धरचन ९, कुलपतिमिश्रस्य संग्रामसारग्रन्थनिर्माणसूचनमष्टमो मयूख : ॥ ८ ॥

करते हैं ॥ ६२ ॥ १ नरहरिदास ने लोभ का त्याग कर दिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में यवन करने के अर्थ बीकानेर के राजा कर्णसिंह पर बादशाह ओरंगजेब का सेना भेजना और कर्णसिंह की सहाय पर राव भाऊसिंह का कर्णसिंह के पास जाना १, जाफरखां आदि की अरज से ओरंगजेब का सेना को पीछी बुलाना और इन दोनों राजाओं का मृत्यु के मुख से बचना २ बंबई नगर का अंगरेजी कंपनी के हाथ में पड़ना ३ उदयपुर में महाराणा राजसिंह को छलघात से मारने का यत्न प्रकट होजाने के कारण राणी और पुरोहित आदि अनेक मनुष्यों का माराजाना और कुमर सरदारसिंह का आत्मघात करके मरना ४ राजसमुद्र और जयसमुद्र तालावों के बनने की कथा५ महाराणा राजसिंह का मालपुरा को जलाना६ राणा जयसिंह का राव भाऊ की बहिन को विवाहना७ बादशाह ओरंगजेब की आज्ञा के अनुसार सेना सहित दक्षिण में सितारा के पति शिवराज पर जाना८ चारण बारहठ नरहरिदास का अवतार चरित्र नामक ग्रन्थ बनाना९ कुलपति मिश्र के संग्रामसार नामक ग्रंथ बनाने की सूचना का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पैंतीस २३५ मयूख हुए ॥

आदितः पञ्चात्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

गो भजि जो गूगोरगढ, कुपित[1] साह सुनि कृष्ण१९६।१ ॥
सूचित पुनि ब्याही स्वसाँ[2], वसु[3] बहु वितरि[4] वितृष्ण[5] ॥ १ ॥
पुव्वहि हो साहहु कुपित, रनपट्टनि[6] अपराध १ ॥
बने उभय२ अपराध बलि, बिधि समस्त करि बाध ॥ २ ।
गो दिल्ली पै डरि न गो, दिल्लीपति दरबार ॥
मरजी बिन बारौं१मऊ२, चाह्यो लैन बिचार२॥३॥
बिनाँ मिलैं भजिगो३ बहुरि, अति रिस तातैं आनि ॥
हनन बिचार्यो हड्ड६१कौं, मुगल निरंकुस मानि ॥ ४ ॥
दूजो२ हो दिल्लीसकै, सुत जो आलमसाह४१।२ ॥
पठयो ताहि अवंति पुर, रचि सूबापति राह ॥ ५ ॥
भगवंत१९५।३ हिं गरलँद[7] मन्यो, जो खल खानवजीर ॥
तिहिं बिडारि[8] इमनिजतनय, मालव पठयो मीर ॥ ६ ॥
क्रमंतबेर[9] तासौं कह्यो, सठ कृष्ण१९६।१हु तव संग ॥
ताहि हनहु कछु छिद्र तकि, सहसा[10] पलकि प्रसंग ॥ ७ ॥
आलम४१।२ सुत समुझाइ इम, पठयो कथित प्रदेस ॥
दै फरमान रु संग दिय, ऐंस[11] कृष्ण१९६।१ भनि ऐंस[12] ॥ ८ ॥
अवतैं तू आलम४१।२ अनुग[13], सासन मम अनुसार ॥
कथित[14] तास अविरत[15] करहु, मालिक गिनहु कुमार ॥ ९ ॥

॥ वेताल ॥

१बादशाह को क्रोधित सुनकर २कहीहुई बहिन का विवाह किया ३धन ४देकर ५तृष्णा रहित ॥१॥६पाटण के युद्ध को॥२॥३॥४॥५॥७विष देनेवाला ८निकाल कर बादशाह ने अपने पुत्र को भेजा॥६॥९चलते समय १०अचानक ॥७॥११इस कृष्णसिंह को १२यह कहकर॥८॥१३सेवक १४उसका कहना १५निरन्तर करना

दल[1] दौर[2] घोरन जोर२तब गूगोर तौर[3] दिखाइ ॥
मगमाँहिं आलम४१।२सौं मिल्यो यह कृष्णासिंह१९५।१हु आइ ॥
उपदा[4]१रु बलि[5]२ करि रीति आश्रित सद्धि थान सलाम३॥
कर जोरि अक्खिय दासको सिरहै बै[6] साहन काम ॥१०॥
भगवंत१९५।३ सौं अतिमेयँ लै प्रतिदेय[8] सो नवभूप[9] ॥
भाखी सुठाँ[10] लहि संग भो रहि रीतिके अनुरूप ॥
निज चित्त चिंतिय साहसुत इहिं होइ बहु नरनास[11] ॥
छलि मारिबो सुनि छन्न व्है प्रति बीर कति इहिपास ॥११॥
इम सोचिकैं किय कृष्णा१९६।१आलम४१।२स्वीय[12] बेगम संग ॥
भ्रम टारि पुष्पकरंडिनी[13] चलि सद्धिहौं खल भंग ॥
दरकुंच हंकिय थप्पि यौं नियराय[14] उक्त प्रदेस ॥
अरु सुक्र[15]३सुभ्र[16]१ चतुर्दसी१४दिन ताजपुर रहि एस ॥१२॥
श्रुति वन्हि सत्रह१७३४मान संवत पूर्णिमा१५तिथिपाइ ॥
प्रविस्यो[17] सु पुष्पकरंडिनीपुर[18] एम आलम४१।२आइ ॥
आवासहो[19] जँहँ आपनौ तँहँ पत्त[20] सत्वर[21] एह ॥
गहि बाँह कृष्णा सु१९६।१लैगयो जिम मित्र अप्पन गेह॥१३॥
करि छद्म[22] घातक सज्ज अप्प टरयो कछू मिस कास[23] ॥
कर कृष्णा१९६।१पैं तिनके चले इत चोर जानि कुरास[24] ॥
तस बीर सज्ज प्रकोष्ट[25] हे तिन हक्क अंदर होत ॥
सह हल्ल पैठन क्यौं करयो जिम मीन प्रतिमुख[26] सोत१४
जिनमैं कटे बहु स्वामि[27]लौं नव९बीर पहुँचेजाइ ॥

१ सेना के २ फैलाव से ३ प्रताप ४ नजर ५ न्यौछावर ६ अब ॥ १० ॥ ७ प्रमान ८ पीछा दिया ९ नवीन राजा पन १० श्रेष्ट जगह ११ मनुष्यों का नाश ॥ ११ ॥ १२ अपनी बेगम के साथ १३ स्थान का नाम है १४कहे हुए प्रदेश को समीप लेकर १५ ज्येष्ट १६ सुदि ॥ १२ ॥ १७प्रवेश हूआ १८नगर का नाम १९महल २०पहुंचा २१शीघ्र ॥१३॥२२छलघात करने वाले को२३पास से२४बुरे ढंग से २५ द्वार पर २६ उलटी धारा में मच्छी जावे जैसे ॥१४॥ २७अपने स्वा-

मारे सपातक स्वामिघातक खग्ग फग्ग मचाइ ॥
कटि चूक पूरन टूक सूरन उच्छटे चहुँ४कोद ॥
चहुवान१मिच्छ२नके चले बहु पानि तालि बिनोद ॥१५॥
जँहँ रंगरंग सुगंध नीर१प्रसून२मनि३गन जोग ॥
भरिगो सुथान कृपान कत्तितै अस्थि१पल२आभोग ॥
त्रय कृष्ण१६६१२करतैं कटिपरे कटिमिच्छ घातक तत्थ ॥
खिल बीस२०रक्खिय खेत जे समवेत हड्ड६१नँ सत्थ ॥१६॥
लखतो रह्यो सु अटा चढ्यो सुत साहको यह लाभ ॥
तल लुत्थि लुत्थिनपैं लगी हुव चूक वह तुमलाभ ॥
तँहँ ए परे दस१०स्वामि१संजुत पारि अरि तेईस२३ ॥
सिव अर्थको हु रह्यो न ठ्हाँ खिरि खंड संभर सीस ॥१७॥
इम वेदराम३४प्रमेय संवत सुक्कके३सित१अंत ॥
गूगोरको नृप काम आयउ प्रेरि कित्ति दिगंत ॥
दिल्लीपुरी सैन भीरु ज्यों तब त्यों भन्यों सुनि द्रोह ॥
अब बीर यों स परयो अवंतिय लागि लुत्थिन लोह ॥ १८ ॥
ढिग पंच५धीर सगोत्र१बीर परे अरातिनैं ढाहि ॥
असगोत२च्यारि४म्ररे उहाँ दस१०गोत्र ए अब आहि ॥
लरि सदाराम१पहार२भैरव३केसरी४अरु लाल५॥
तँहँ हड्ड६१पंच५हि ए खिरे जिम टूक लोमैन ताल ॥ १९ ॥
सीसोद भारत१भारमल्ल२उभै२कटे पहु संग ॥

भी (कृष्णसिंह), पर्वत १ पाप सहित २ स्वामी को मारने वालों को ३चारों दिशाओं में ४ हाथ ॥ १५ ॥ ५ पुष्प ६ खड्ग से कटेहुओं से ७ हाड और मांस से परिपूर्ण होकर ८ बाकी के ९ मिलेहुए [साथ] १० हाडों के साथ ॥१६॥ ११ आकाश को भर देनेवाला १२शिव के काम का [पूर्णमस्तक] कोई नहीं रहा अर्थात् सब के मस्तकों के टूक टूक होगये १३चहुवाण का मस्तक ॥१७॥ १४ज्येष्ठ सुदि के अन्त में १५दिल्ली से १६उज्जैन में १७शस्त्रों से लोथें [मृतक शरीर] लगकर ॥१८॥ १८ शत्रुओं को गिरा कर-१९ हरताल से केसों के टुकड़े होजाते हैं तैसे ॥ १९ ॥

आनंद[13]नाम कबंध चालुक लाल[14]खंडित अंग ॥
ए९ज्यौं नव९ग्रह कृष्ण१९६।१ज्यौं सिसुमार१०इन्ह आधार
व्है टूक ए दस१०ही झरे बहु मारि मारनहार ॥२०॥
इत१के प्रबीर प्रकोष्ठ[3] बाहिर तुट्टये इकतीस३१ ॥
उत२केनकी गिनती न जाहिर भइप्रमानहु ईस ॥
तिम कृष्ण१९६।१मारन हक्क सुनि खिल्ल सत्थ भज्जि गतास
पठई चमू तिनकेहु डेरनपैं प्रकोप प्रकास ॥ २१ ॥
दुव२देस बग्गड पै बजैं सीसोद राउल दोइ२॥
हो तत्थ दोउ२न माँहिंसैं इक१जास संभव होइ ॥
कति लोग भज्जि रु तास डेरन उब्बर्यो ततकाल ॥
बलि गो कितो गूगोर भज्जि तजि सिबिर सून्य बिसाल २२
बिनुसंक डेरनको सु वैभव लुट्टि मिच्छन व्रातँ ॥
सब लैगयो ज्जिहिं हत्थ जो परिगो सु जैं दरसात ॥
गयँ हो गनेसवतार१ सो गयलूट कारन गैल ॥
गज तिलक२दूजो२नाग यो सह कोप सासु[11] कि सैल ॥२३॥
मदमूढ मिच्छन हाँ[12] लयो करटी[13] सु गोलन मारि ॥
[14]पृतनाप्रदेस अरराय[15] सो हुव को सकै वँ[16] पुकारि ॥
सूबा अवंति अधीन हे नृप जे हुते तँहँ सर्व ॥
उनकै अचानक मंतु[17] खोजत भो अचिंज्ज[18] अखर्ब ॥२४॥
द्विज जो पुरोहित कृष्ण१९६।१को तहँ हो भवानियदास१
खिल[19]मैं जु मुख्य१हुतो द्वितीय२सु स्यामरूप२खवास ॥

१तारामंडल २मारने वालों को ॥२०॥ ३ड्योढी के बाहर ४हे स्वामी रामसिंह ५बाकी की सेना (साथ) ॥ २१ ॥६ वागड़ देश के पै अर्थात् पति ७ म्लेच्छों का समूह लूट लेगया ८ जय दिखाते हुए ९हाथी १० हार्था ११ मानों प्राण सहित पर्वत ॥२३॥१२हाथ १३ उस हाथी को १४सेना का प्रदेश १५वन(शून्य) होगया १६ अब १७ अपराध हेरने में १८ आश्चर्य । २४। १९बाकी के लोगों में

ए द्वैरहि[1] राउलकेर डेरन मुख्य हे अवसेस ॥
सीसोद पुच्छिय द्वैरहिसौं कछु बुद्धहै किं कलेस ॥ २५ ॥
सीसोद राउलसौं कह्यो द्विज खग्ग चालन सुद्धि ॥
बलि गो१कि स्वामि मरयो२सु निश्चय बुद्ध[2] है न स्वबुद्धि ॥
किय ख्यात राउल बिप्रकौं तँहँ काम आयउ कृष्ण१९६।।१
तृदिवौंक[3] भो स्व[4] ख वेद४०साथिन जुज्झि देह बितृष्ण[5]॥२६
बहु मिच्छ बाहिर१बंढ्ढये[6] इम माँहिं खल तेईस२३ ॥
सुनि बिप्र अक्खिय वाहवाह घनौं धुनावत सीस॥
बलि हेतु[7] पुच्छत बिप्र बुल्लिय अप्प जानहु एह ॥
गहिबो बुरो १हनिबो भलो२सुरगेह[8] है जिम गेह ॥ २७ ॥
पीछैं वकील स्वकीय राउल भेजि आलम४०।उपास ॥
सब लुत्थि[9] संग्गिय लारि मंचन स्वामि सौं सविसास ॥
चालीस४०पुद्गल[10] मंच चउदह१४इक्क१पैं निज१ आनि ॥
सिप्रातटस्थ[11] पिसाच मोचन ठाम दग्धहु ठानि ॥ २८ ॥
अहं[12] तीन३विप्र१खवास२रहि किय आस्थि लैन उपाय ॥
तत्रस्थ[13] लोकन यों कह्यो तँहँ है न लैन हितांय ॥
यह मुख्य तीरथ है तहाँ सन आस्थि जाइ अहो न ॥
कछु बुद्धि ऊहन[15] सुद्धि कारन कौन क्यौं सु कहो न ॥२९॥
नर जे बचे सीसोद के तिन्ह ताहि रत्ति निकासि ॥
बलि एहु द्वैरहि चउत्थ४वासर[16] त्यौं कढे हिय त्रासि ॥
इन सुद्धि[17] विप्र१खवास२दोउ२न दिन्न बुंदिय आइ ॥

१ डूंगरपुर के राउल के डेरों में बाकी थे ॥ २५ ॥ २ हमारी बुद्धि में मालूम नहीं ३ देवता हुआ अर्थात् स्वर्ग गया ४ अपने चालीस साथियों सहित ५ तृष्णा रहित ॥ २६ ॥ ६ काटे ७ कारण ८ जिसमें स्वर्ग घर होता है॥२७॥ ९लोथें (मृतक शरीर) १०शरीर ११ सफरा नदी के किनारे पिशाचमोचन नामक जगह पर दाग दिया ॥२८॥ १२तीन दिन१३वहां रहनेवालों ने१४ यहां से अस्थि लेना हित के अर्थ नहीं है१५तर्कना ॥२९॥१६चौथे दिन१७खबर

गूगोर सेस वचे गये पतिनास त्रस्त[1] पलाइ ॥३०॥
नभ व्योम१७०० सम्वत भद्द६मेचक[2]३कृष्णा१९६।१जन्म निदान॥
मति[3] भिन्न जाइ मऊ लई तेवीस२४सम[4] बय मान ॥
वपु त्यौं तज्यो चउवीस२४ सम बय सुक्र३अंतिम१५स्वेत३॥[5]
न कही मऊपति[6] जानि ही नव९ नारि तास निकेत[7] ॥ ३१ ॥
बुंदीपुरीहि रही कही तिनमाँहिं पंच सु बुद्धि ॥
तिनमाँहिं भस्मभई लयी सुनि स्वामि नियत न सुद्धि ॥
पट्ट पंचमी५।१ तँहँ गोड़ि झल्लिय सप्तमी७।२सु प्रवीन ॥
तिम अष्टमी८।३रट्ठोरि बुंदिय ए जरी तिय तीन३ ॥ ३२ ॥
तीजी३।१रु छट्ठि६।२य द्वै२जरी न प्रजावती[8] रहि तत्थ ॥
वैधव्य धर्म विधानतैं[9] अवसानि सद्धिय[10] अत्थ ॥
गूगोर च्यारि४कही गई पति के बुलावत पास ॥
इक१दाहरी नवमी९।१जरी तँहँ प्रीतिके अवकास ॥ ३३ ॥
अरु द्वै२हि पुव्व मरी द्वितीय२।१चतुर्थ४।२सेखाउत्ति ॥
पहिली१जु केसरदेवि१९६।१सो न जरी मनोहर पुत्ति ॥
कति कहतही दसमी१०हु तिय तस गोड़ि लाडकुमारि१९६।१०
नहिं सुद्धि[11] पै रु खवासि तेहु जरी चउद्दह१४नारि ॥३४ ॥
गूगोर नारायनगिरीके बाग हुव सहगोन[12] ॥
अद्यापि[13] चौरा तत्थ उनके भौ[14] प्रकासत भोन ॥
अट्ठारही१८ ताहि संग नारिन कृष्णा१९६।१गो दिवँ[15] एम ॥
तस नास संसय भो असेस न हेरि हेलन[16] तेम ॥ ३५ ॥

१ डर से भगकर ॥ ३० ॥ २भादवा वदि ३कुक्षि से भिन्न होकर [निर्बुद्धि] ४ वर्ष ५ ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा के दिन. उसके घर में नौ स्त्रियां थीं परन्तु उस कृष्ण को ६ मऊ का पति जानकर स्त्रियों के ब्याह का वृत्तान्त नहीं कहा ७ घर में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ८ सन्तानवाली होने से नहीं जली ९ विधवापन के धर्म से १० वहां ही अन्त हुआ ॥३३॥ ११ खबर ॥३४॥ १२सती १३ अब तक भी १४ कान्ति १५स्वर्ग १६ दोष नहीं देखकर ॥ ३५ ॥

सुनि कृष्ण१९६।१मारन भावसिंह१९५।१नरेस इत किय सोक ॥
ताकेंहि बुंदिय सुद्ध ओरस जे रहे चउ४तोक[1] ॥
तिनमाँहिं दोउ२न द्वै२सुता बिनसी अनूढहि[2] गेहु ॥
रहोरि३कै सुत द्वै२ रहे लघु२अंत तिम सुनिलेहु ॥ ३६ ॥
यह कीर्तिसिंह१९७।२सनाम जो अनिरुद्ध१९७।१सोदर[3] आस ॥
पहिलैं सु भावपुरा१ हि भूपति बुल्लयो निज पास ॥
सो व्हाँ मरयो सिसु या समै तनु रक्खि हायन[4] तीन३ ॥
अनिरुद्ध१९७।१इक्क१रह्यो सता[5]१९४।१कुलतंतु अप्प अधीन ॥३७॥
तब कृष्ण१९६।१कौं दिय जो पटा सु स्वसूनु[6] गिनि दिय ताहि ॥
अरु अब्द ग्यारह११ लौं इहाँ बयमैं गये तस आहि ॥
कति यौं कहैं बुंदीहि ताकहँ स्व स्व पुत्र बनाइ ॥
मतभेद कोउक होउ पै दिय औरसत्व[7] मनाइ ॥ ३८ ॥
इत साह जो दिय१जोधपुर अमरेसके सुत अत्थ[8] ॥
तो लैलयो रु दयो न२तो तबलौं रह्यो तिम तत्थ[9] ॥
अरु कानि[10] स्वीय घटाइ सो जसवंत बर्जित[11] आस ॥
निरगार[12] दुस्थ[13] रह्यो ससंक त्रिसंकु भूप निकास ॥ ३९ ॥
बुंदीस वढि जब लैगयो पैज्ञा[14] ११ बिधेय बिधान ॥
जसवंत तब कहि मुक्कली किय भव्य[15] अप्प सु मान ॥
अबतैंहि तुम१हम२इक्क१ हैं भनिमुक्कली तब भूप ॥
हम साह आश्रित अप्प हेरहु रावरे अनुरूप[16] ॥ ४० ॥
कहिमुक्कली पुनि साह प्रेरित आहु ज्यौं[17] नृपकर्ण ॥
संका तथापि मिटी न जावत ज्यौं धनी१प्रतिसर्ण२ ॥

१ बालक २ बिना बिवाही हुई ॥३६॥ ३सगा भाई हुआ ४ वर्ष ५ शत्रुशाल के वंश में ॥ ३७ ॥ ६ अपना पुत्र मान कर ७ औरसपन ॥ ३८ ॥ अमरसिंह के पुत्र के ८अर्थ जोधपुर दिया ९तहां १०आदर (इज्जत) ११आशा रहित हुआ १२बिना घर १३दरिद्री ॥३९॥१४भादवा सुदि एकदशी के दिन१५शुभ१६आप के सदृश ॥ ४० ॥ १७ जिसप्रकार राजा करणसिंह आया उसीप्रकार

सो तोहु जाइसक्यो न१ ओ ठहरयो२न बिनु अवलंब ॥
अब साह अक्खिय नैरतैं इन्ह कड्ढि देहु कदंब ॥ ४१ ॥
जसवंत तिय२जन मात्र हे जिन्ह नैरतैंहु निकासि ॥
रट्ठोर परिजन३१हीन पुर किय इक्क परजन४२रासि ॥
सकुटुंब अब जसवंत सोचत देसबिरहित दीन ॥
मतिहीन गति अवलंब५ खोजत ज्यौंक६ बाहिर मीन ॥४२॥
अक्ख्यो जु कासिमखान१तस सुत नाम खानअमीर२ ॥
भो पुब्ब तासन७ मित्रभाव सु पै चह्यो अब सीर ॥
कछु छन्न८ दे उपहार ताकँहँ मंडि पत्रन९ मंत्र ॥
तिहिं द्वार लै१० बिच तास तात१तथा वजीर२हु तंत्र ॥ ४३ ॥
जिनकौंहु दे उपदा११ अभीष्ट रु साहचित्त जगाइ ॥
इक प्रान निर्भय मंत्र जानि परयो सु पुरढिग आइ॥
सबही नबाव१अमात्य२न्हाँ सन छन्न भेट पसारि॥
अपनैंकरे तँह के भये१न भये२समै अनुकारि१२ ॥ ४४ ॥
दिय तत्थ बिज्ञप्ति१३पत्र यौं अब जीविकाबिनु दास ॥
कहिहो सु करिहै चाकरी लहि प्राणलाभ प्रकास ॥
लहिं संरन चरन हजूरके दिय आदि परिजन१४लोक ॥
सबही इहाँ रहिहैं परे स्व निबाहको तजि सोक ॥४५॥
तव साह त्यौं हि निदेसदै चहि जीविकाबिनु ताहि ॥
दियभेजि सूबा सिंधुपार तथा अनादर दाहि ॥
वलि कहिय परिजन तव रहैं इहँ जाम१५ ताम१६ बिसास ॥

१समूह सहित ॥ ४१ ॥ २ स्त्रियां मात्र ३ पास के लोगों[सेवकों]से ४ शत्रु के लोकों का समूह रहा ५ आधार ६ जल से बाहिर होकर मीन (मच्छी) आधार सोचै जैसे ॥ ४२ ॥ ७ उससे ८ नजराना ९ पुत्रों से सलाह करके १० उसके द्वारा उसके पिता (कासिमखान) को ॥ ४३ ॥ ११ नजराना इच्छानुसार देकर१२समय के अनुसार (सदृश) ॥ ४४ ॥ १३अरजी १४ सेवक ॥४५॥ १५जब तक तेरे घर के सब लोग यहां रहैं १६ तब तक ही विश्वास है

नहितो निलज्ज वहैहि[1] तू हमरोहु चाहत नास ॥४६॥
सुहि मन्नि गो जसवंत सिंधुहिँ[2] लंघि कावल सीम ॥
दिल्ली रहे सब तास परिजन आस जानि कदामि[3] ॥
तिम इक्क१गर्भवती हुती जसवंत रानिय तत्थ ॥
सब तास चाहिरहे प्रसूति गहे बडे मह[4] सत्थ ॥४७॥
पैंतीस सत्रह१७३५सालपैं इम दिष्टके[5] अनुसार ॥
कछु काल जातहि बाल[6] भो तस अजित१सिंह कुमार ॥
इन गूँढ[7] रक्खिय तोहु सुत वह जानिकैं अवरंग४०।३॥
सूँची[8] पठावहु बाल अप्पहिँ जोधपुरही[9] संग ॥४८॥
इन यौँ बिचारिय मारिबे सिसु साह संगत अँज्ज[10] ॥
कहिमुक्कली अबही न भो ढिग तोहु प्रसवन कज्ज[11] ॥
जान्यौँ न आसय साहको पर एहु सुनि अतिजोर ॥
अपनौं अनीकँ[12] पठाइ तिन्ह दल[13] बिंटयो चहुँ४ओर ॥ ४९ ॥
अरु यौँ कहाइय जो न भेजहु पास बालक एह ॥
न बहोरि ताकहँ जोधपुर मिलि है मुधा[14] किम नेह ॥
उन देखि प्रत्युत[15] वेढ[16] अप्पन मारिबोहि प्रमानि ॥
कछु रीति कढ्ढन बांब[17] चिंतिय बंस रक्खन कानि ॥५०॥
गोविंद बनि तँहँ व्यालग्राहक[18] बेस अप्पन गोइ[19] ॥
धसिगो चमूबिच व्है स्व डेरन जेमतेम धिजोइ ॥
कछु बित्त[20] इक्क१करंड[21] रक्खि करंड इक्क१कुमार ॥

१वही हमारे डेरों को लूटनेवाला है ॥४६॥२अटक नदी को लांघ कर ३प्राचीन आशा अर्थात् जोधपुर की आशा ४ उत्सव सहित ॥४७॥ ५ भाग्य के ६ बालक ७ छांने ८ सूचना की ९ जोधपुर साथ ही देवेंगे ॥ ४८ ॥ १० आज ११ प्रसव होने का कार्य १२सेना१३सेना को घेर ली ॥ ४९ ॥१४वृथा स्नेह क्यों करते हो १५उलटा १६अपने को घेर कर१७विचार अथवा प्रसंग ॥५०॥ गोविंददास भाटी तहां १८कालबेलिया बना १९अपना लिबास छिपाकर२०धन २१ टोकरे (करंडे) में रखकर एक करंडे में कुमार अजितसिंह को रक्खा

कढिगो सु मंगत टूक रुट्टिन[1] भाखतो जयकार ॥ ५१ ॥
आ[2]जन्म रक्खन बाल सँमुचित[3] भै समस्तन आनि ॥
तिम दुर्गदास१कबंध त्यौं रघुनाथ२ भट्टिय मानि ॥
इनसौं कह्यो तुम जाहु द्वै२तँहँ उच्चरी इम एह ॥
यह साह छन्न करी इहाँ मचिहै ब[4] सत्रन मेह ॥ ५२ ॥
जहँ सर्ब तुम जुत स्वामिके रनिवास[5]लौं कटिजाइ ॥
कहि ए तहाँ दुव२कपाटरैं हम धर्म हीन कहाइ ॥
उनको तऊ हठ देखि दोउ२न उच्चरी पुनि एह ॥
भ[6]वदीय मरन निभालि द्वै२आसि[7]पूत करि निजदेह ॥५३॥
पीछैं उभै२काढिजाइकैं रहिहैं सदा सिसु पास ॥
इम सौँह[8] लै जबही कही तबही लही उन्ह आस ॥
करि कोप यह सुनि साह तब अ[9]वरोध निश्चय काज॥
सँह[10] मुक्कलेनरवेस नारि१रु सौविदल्ल[11]२समाज ॥ ५४ ॥
तिन जाइ इम जसवंतको अवरोध[12] सोधिय तौम[13] ॥
परखी सु सँद्य[14] प्रसूतिका जसवंत रानिय जौंस[15] ॥
न लख्यो तथापि प्रसूत बालक त्यौंहि आइ निवेदि ॥
रिस साहकै बढती रचात भये प्रलुब्धन[16] भेदि ॥ ५५ ॥
खिज़ि साह आक्खिय अस्तखानहिं जाइ तू अति जोर ॥
न मिलै जु सिसु तो पकरि नारिन आनि व्हाँ हनि और[17]॥
सुनि अस्तखाँ इम साह सासन संक्रम्यो[18] सह सेन ॥
इत त्यौं कबंधन अंगंम्यौं[19] रनिवास कढ्ढन ऐन[20] ॥ ५६ ॥

१ रोटी का टूक मांगता हुआ ॥ ५१ ॥ २ जन्म पर्यन्त ३उचित ४अब ॥५२॥ ५ ज़नाना ६ आप मरना ताक कर ७ खड्ग से अपने शरीर को पवित्र करके ॥ ५३ ॥ ८ सौगन लेकर ९ जनाने में निश्चय करने के लिये १० साथ भेजे ११कंचुकिओं (नाज़रों) के समूह को ॥५४॥ १२जनाना १३तहां १४तुरन्त की बालक जननेवाली स्त्री १५उस समय (जहां)१६लोभियों को भेदकर ।५५। १७स्त्रियों को पकड़ ला और अन्य को मार १८ चला. जनाने को काटना १९अंगीकार किया २० घर में ॥ ५६ ॥

प्रविसे[1] वरोध सपिंड[2] भट लै लै बिकोस[3] कृपान ॥
हनिबेलगे निज स्वामि[4] नारिन मन्नि निज बपु हान ॥
हड्डी६१जु कमवती१६५।१हुती तिनसौं कह्यो तिहिं तत्थ॥
हनिकैं हमैं मरिहो कहो तँहँ कोन पिक्खहि हत्थ[5]॥५७॥
सुनि यौं कह्यो तिन स्वामिनी मरिबो न तंत्र[6] प्रमान ॥
तुम हत्थ पिक्खन जो रहो अब तो गहैं तुम कान[7] ॥
हठपुव्व[8] वे न हनैं१ गहैं२गहिबो बिचारनहार ॥
दिल्लीस पित्थल[9]१७ ।१से इहाँ दृष्टांत केहि उदार ॥ ५८ ॥
भटवेस कर्मवती१९५।१ सज्यो तँहँ इक्खि सो तिन्ह भाव ॥
छुरिका[10] उभै[11]खर मारि छातिय बेढि कोचैं[12] बनाव ॥
अपनैं[13] सपिंडन इक्खतैं यह सज्जि यौं हुव संग ॥
भट ते मुरे इम ठानि खिल[14] सब भूप नारिन भंग ॥ ५९ ॥
अपनैं प्रवीरनमैं रही हड्डी सु गज आरूढ[15] ॥
गहि छत्र१चामर२आदि निजपति राजचिन्ह अगूढ[16] ॥
इहिं बीच सह बल१पुव्व[17]बल२मिलि अस्तखानहु आनि ॥
प्रतिबैन भेजिय अर्भ[18] अप्पहु के दिखावहु पानि[19] ॥६०॥
करि हल्ल मिच्छनसौं भिरे तँहँ धीर बीर कबंध ॥

---

१ जनाने में घुसे २ सपिण्डी (सात पीढि के भीतरवाले) उमराव ३ खड्ग निकालकर ४ अपने स्वामि की स्त्रियों को ५ तुम्हारे हाथों (प्रहारों) को कौन देखेगा ॥ ५७ ॥ ६ मरना अपने आधीन नहीं है ७ आदर ८ हठ पूर्वक ९ दिल्ली के पति पृथ्वीराज ने बहुत मरना चाहा था परन्तु गोरीशाह ने पकड़ना चाहा तो पकड़ ही लिया सो ऐसे कितने ही दृष्टान्त विद्यमान हैं ॥ ५८ ॥ दो ११ तीक्ष्ण १०छुरियां छाती में मारकर १२ कवच से ढक ली १३ अपने सपिण्डों के देखते १४ बाकी के । ५९ । १५हाथी पर सवार रही१६प्रसिद्ध१७पहिले भेजीहुई सेना से १८ बालक को सौंपो १९ हाथ दिखाओ (युद्ध करो) ॥ ६० ॥

हड्डी६१ लरी बिच अट्ठ८ हत्थिन स्वामिबेस सुसंध[1] ॥
इक१ जामलौं[2] घमसान अंकुरि[3] पूर सत्रुन मारि ॥
[4]पैररक्खि कर्मवती १९५।२परी बपु खंडखंड बिथारि॥ ६१ ॥
रट्ठोर सूर सबै रहे रन बाढ झारि बिचित्र ॥
पहिलैं[5] कहे दुव२ते कढे कारि काय घाय पवित्र ॥
धरि अग्ग ते खिल्ल[6] लैगये कातिदूर फौज धकोइ ॥
दै अस्तखानहिं प्रानसंसय निक्खसे इम दोइ ॥ ६२ ॥
पैंतीस सत्रह१७३५ साकपैं अतिघोर रन हुव एह ॥
[9]दुव२घाँ हजारन व्हाँ भये तिम मृतक१घायल देह२ ॥
[10]पँहु जो रह्यो इत सिंधुपार सु जानि सुहु जसवंत ॥
ऐसो लग्यो [11]भुवलोभ जिहिं समुझ्यो न [12]आगम अंत॥६३॥
इत भूप दक्खिनदेस भावपुरा रह्यो दस१० अब्द ॥
[13]सबघाँ [14]सपान कृपान साधन बिस्तरयो जस सब्द ॥
अब अट्ठ८पावक बाजि भू१७३८सक [15]रांध२लग्गत एह ॥
[16]अह पक्ख [17]मेचक२अष्टमी८ दिव[18] गो बिहाइ स्वदेह ॥६४॥
विधि प्रथम१पंचम५।२छट्ठ६।३सप्तम७।४नवम८।५दसम१०।६बिवाह
पहिलैं मरी खट६ए प्रिया निज भक्ति सौं भजि नाह[19] ॥
इनमैंहु सप्तम७ऊढ[20] इक१पहिलैं मरी पतिपास ॥
[21]खिलें जे रही खट६ते जरी [22]अवसान अब खिन तास॥ ६५ ॥
दूजी२।१रु चोथी४।२अष्टमी८।३हुंदी भई हुतदेह[23] ॥

१श्रेष्ठ प्रतिज्ञा से २प्रहर तक ३युद्ध में खड़ी होकर ४शत्रुओं को मारकर।६१।५घावों से शरीर पवित्र करके ६बाकी की राठोड़ी फौज को आगे घर कर धका ले गये ७प्राण का सन्देह ॥ ६२ ॥८सम्वत् में ९दोनों ओर १०राजा (यशवन्तसिंह) ११भूमि का लोभ १२ अन्त समय के आगम को नहीं समझा (यशवन्तसिंह इस से थोड़े ही समय पीछे मर गया इस कारण अन्त का आगम लिखा है)॥६३॥ १३ सब दिशाओं में १४ हाथ के साथ खड्ग के साधन से १५ वैशाख मास १६ दिन १७कृष्णपक्ष. अपना शरीर छोड कर १८स्वर्ग को गया ॥६४॥ १९पति का सेवन करके २०विवाहिता २१बाकी २२उसके अन्त समय में ॥६५॥ २३सती हुई

तीजो३।१तथा एगारहो११।२अरु बारहो१२।३ढिग एह ॥
बुंदी१तथा तँहँ२द्वै२हि थान जरी खवासि बतीस३२॥
इम अट्ठतीस३८जनीन सहदिवपत्त[१] हड्ड६१नईस॥६६॥
पहुकै[२] सुता इक१अन्तपुरनिकाखवासि[३]प्रजात ॥
सीसोद बीरमकेर सूनुहि ताहि ब्याहिय तात ॥
जामात[५] सो रघुनाथ नामक देह रक्खि जनेस[६] ॥
ताके समान पटा हु ताकँहँ दत्त[७] बुंदियदेस ॥६७ ॥
बुंदी सुन्यौं नृप मरन निश्चय ताहुसौं सुनि वेग ॥
तब हड्ड६१दुर्ज्जन१९६।१नाम दुर्ज्जन[८] स्वामिपर लिय तेग॥
पति एह बलवानि डंगको गोपालको१९५।१खल्ल पुत्र ॥
सहसा[९] मरयो सुनि स्वामिको तब सो अधर्म तनुत्र[१०] ॥६८॥
अति लुब्ध[११] भिल्ल१रु मेर२मैनन३जोरि लोभ उपाय ॥
बुंदी प्रसू[१२] निज भोग वंछि चढ्यो सु लोलुप चाय ॥
जिहिँ घस्र[१३] बुंदिय भूप निपतन सुद्धि[१४] पहुँचिय जाइ ॥
पहुँच्यो सु दुर्जन१९६।१ताहि बाँसर[१५] वेढपुर प्रकटाइ ॥६९॥
तिहिँ काल भातुलदेवि१९५।२आदिक्क उक्त रानिय तीन३।
पति सत्थ होन खवासिगनजुत निक्कसी जसपीन ॥
अरजी सुनी तँहँ दुष्ट दुर्ज्जन१९६।१ढंग[१६] लग्गिय आनि ॥
महिपाल निज अनिरुद्ध१९७।१पंद्रह१५अब्द वय सिसुमानि॥७०॥
सीसोदनी२प्रति सर्वनैं अरजी निवेदिय एह ॥
इक कौन[१७] अँग्ग लरैं मरैं हम अप्प जरन अनेहँ[१८] ॥

१स्वर्ग गया ॥६६॥ २राजा के ३पासवान स्त्री से उत्पन्न ४पिता ने ५जमाई ६राजा ने अपने देश में रख कर ७दिया ॥६७॥ ८शत्रु [दुष्ट] दुर्जनसिंह ने ९अचानक १०अधर्म का कवच ॥६८॥ ११अत्यन्त लोभी १२बुन्दी रूपी अपनी माता से भोग करना चाह कर १३जिस दिन बुन्दी के राजा के मरने की १४खबर १५उसी दिन नगर के घेरा लगा कर ॥ ६९ ॥ १६पुर के आ लगा (घेर लिया) है ।७०। १७ किसके आगे १८ आपके जलने का समय है

बलि सत्रु तक्कत छिद्र बाहिर देखि यौं[1] कछु देर ॥
करिकैं जसो लखि जुद्ध विग्रहु व्है न ज्यौं उतकेर ॥ ७१ ॥
सीसोदनी२सुनि यौं तनैं[2] अनिरुद्ध१९७१बुल्लि समीप ॥
सबसौं कह्यो यह सूनु मन्नहु याहि स्वीय[3] महीप॥
तासौंहु अक्खिय रक्खि तू सुत स्वीय[4]जन सतकार ॥
हमसंग होहु न सत्रुसद्दहु पिल्लि चंड प्रहार ॥७२॥
मोको[5] टरे कढि जारि आवहु जोध इक्कहजार१००० ॥
कलि[6] भूप जुत खिल जित्ति दुर्जन१९८।१होहु जय जसकार॥
तिन्ह छार बाग कहे जिते१०००टरि लैगये भट तत्थ ॥
सङ्गोन ठानि विधानसौं लिन त्यौं कर्यो पति सत्थ ॥७३॥
पुर कोटपैं इत सज्ज भट करि दुर्ग तोपन प्रेरि ॥
गन जत्रकुत्र करे अरीतिन लुत्थिलुत्थिन गेरि ॥
अनिरुद्ध१९७१के इम जुद्धमैं दुव२जाम होत अतीत[11] ॥
भजिगो सु दुर्जन[12]१९८।१हद्द६१दुर्जन ताहि[13] बासर भीत ७४

सौराष्ट्री दोहा ॥

भाऊ१९५।१नृप भव[14]भूत, संबत नभ बसु नृप१६८०समय ॥
हद्द६१नकुल पुरुहूत[15], तिथि सतह१७१५सक भो तथा ॥ ७५ ॥
अब बसु गुन अत्यष्टि१७३८अष्टमि८अह[16] माधव[17]२ असित२ ॥
नियति करी वपु नष्टि, सोक भयो अज्जन[18] सबन ॥ ७६ ॥
अब तस निर्मित ऐनें[19], स्रवनकरहु प्रिय लोक सब ॥
निरखत व्है सुख नैन, सर५ऐसे आयत रुचिर ॥ ७७ ॥
मंडिय महलनमाँहिं, सौधँ[21] मुकुटमंदिर सता१९४।२ ॥

---

१ इसकारण ॥ ७१ ॥ २ इस पुत्र को ३ अपना राजा मानो ४ अपने लोगों का ॥ ७२ ॥ ५ हटे हुए ६ युद्ध में ७ यश करनेवाले ८ शत्रुओं को ९लोथ पर लोथ गिरा कर १० दो प्रहर ११ व्यतीत १२ दुष्ट दुर्जनसिंह १३ उसी दिन डरकर ॥ ७४ ॥ १४ जन्म हुआ १५ इन्द्र ॥ ७५ ॥ १६ दिन १७ वैशाख वदि १८ सर्व आर्यों को ॥ ७६ ॥ १९ उसके बनाये हुए स्थान २० चौड़े (बड़े) ॥७७॥२१ महल

ऊपर तस इक१[1]आँहिं, महलसु१भाऊ१९५१[2]निर्मयो ॥ ७८ ॥
[3]अधमहलन बिच एम, [4]मंजु [5]पृथुल मोतीमहल ॥
तँहँ कुमारपन तेम, निबस्यो यह [6]नयमैं निपुन ॥ ७९ ॥
[7]अध्यातमादिकदास, बैष्णवकी [8]बिज्ञप्तितैं ॥
नियत [9]पांथश्रमनास, नृपति स्थान इक निर्मयो ॥ ८० ॥
पुर लक्खैरिय पास, दिपत कोण ईसान दिस ॥
अधिप पूरि तस आस, मंदिर१[10]बाँपी२ निर्मये ॥ ८१ ॥
ताकी निर्मितिकाज, लूणाकरण कायथ ललित ॥
रक्खि भाउ१९५१अधिराज, लूणाँबाय प्रसिद्ध हुव ॥ ८२ ॥
[11]उपवन बिरच्यो एक१, रत्नबाग ढिग जो रुचिर ॥
[12]बलि दूजो२[13]सबिबेक, फूलसरोवर तट [14]फबत ॥ ८३ ॥
पंति बिबिध प्राकार, जो चद्दरि [15]जलजंत जुत ॥
अब जीरन उद्धार, किय जाको प्रभु [16]अप्पं [17]किल ॥ ८४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबनिदेशतत्पुत्रालमगुग्गैरपतिकृष्णसिंहछद्महनन १, कृष्णहननानन्तरभावसिंहस्यानिरुद्धपुत्रीकरण २, योधपुरराज्यप्रहाणहेतुप्रार्थितौरंगजेबदिल्लीरक्षितस्वावरोधयशव-

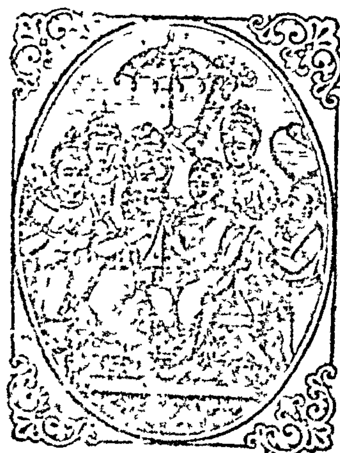
---

१ है २ भाऊने बनाया ॥ ७८ ॥ ३ नीचे के महलों में ४ सुन्दर ५ बड़ा ६ नीति में ॥ ७९ ॥ ७ अध्यात्मदास की ८ अरज से ९ पथिक [मार्ग चलनेवाले] लोगों का श्रम मिटाने के लिये ॥८०॥ १० बावड़ी ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ११ बाग १२ फिर १३ विचार पूर्वक १४ शोभायमान है ॥ ८३ ॥ १५ फव्वारों सहित १६ हे प्रभु जिसका जीर्णोद्धार आपने १७ निश्चय किया है ॥८४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञानुसार औरंगजेब के पुत्र आलम का गुग्गैर के पति चहुवाण कृष्णसिंह को छलघात से मारना १ कृष्णसिंह के मारेजाने पीछे भाऊसिंह का अनिरुद्धसिंह को अपना पुत्र बनाना २ जोधपुर खालसे होजाने के कारण औरंगजेब को अरजी देकर राजा जसवन्तसिंह

न्तसिंहकाबुलाक्रमणा ३, यशवन्तसिंहात्मजाजितसिंहजन्मसमकालनिःशलाकतन्निष्कासनानन्तरकृतयवनेन्द्रसैन्ययुद्धयशवन्तपत्नीहाडीमरणा ४, दक्षिणजनपदभावसिंहपञ्चत्वप्राप्तावनिरुद्धसिंहपट्टप्रापणा ५, दुर्जनसिंहबुन्दीरणापराजयवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥
आदितः षट्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥

का अपने जनाने को दिल्ली में रखकर काबल के सूबे पर जाना ३ यशवन्तसिंह के पुत्र अजितसिंह का जन्म होने पर उस बालक को छाने निकाले पीछे यशवन्तसिंह की राणी हाडी का बादशाही सेना से युद्ध करके काम आना ४ बुन्दी के राजा भाऊसिंह के दक्षिण में देहान्त होने पर अनिरुद्धसिंह का पाट बैठना ५ हाडा दुर्जनसिंह का बुन्दी से युद्ध करके हारने का नवमां ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छतीस २३६ मयूख हुए ॥



॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथाऽनिरुद्धसिंह१९६।१चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

करि उत्तरविधि निज करन, बय किसोर जय बुद्ध ॥
तीजी ३ तिथि बैठो तखत, राध[1]बिसद[1] अनिरुद्ध१९६।१ ॥१॥
किते बिसद१तेरासि१३कहत, अधिपभाव अभिसेक ॥
भाऊ१९५।१ठाँ अनिरुद्ध१९६।१भो, अंक गनितें घटि एक[2]॥२॥
कह्यो प्रथम तुम कृष्ण१९६।१को, यातैं तिँहिं क्रम अंक ॥
अब भाऊ१९६।१सुत अंक इहिं,इहिं क्रम गनित असंक॥३॥
पट्टदिवस मंगल प्रसरि, सब उपदा[4]बलि[5]साधि ॥
भट१अमात्य२पौरजन[6]३भये, उर प्रसन्न तजि आधि[7] ॥ ४ ॥
पीतंबर१कुलइष्ट प्रभु, जजि[8] कुलदेवी२जुत्त ॥
भाऊ१९५।१बिधि पालतभयो, अवनी दुरितें[9] अछुत्त ॥ ५ ॥
इंक[10]१ठाँ भावी१भूत२अब, बदहिं ससंतति व्याह१ ॥
बर्त्तमान वलि[11] बरनिहैं, आदरि क्रम उच्छाह ॥ ६ ॥

(घनाक्षरी)

भूत१भावी२कीने छःबिबाह अनिरुद्ध१९६।१भूप,
चउ४द्वै२सुता त्यौं भावी में लहे छःतोकें[12] ॥
पुव्व व्याह जादवी करोली रत्नपाल पुत्री,
व्याहि स्यामकुमरि१९६।१बँनियक[13] करे बिसोक ॥

१ वैशाख शुक्लपक्ष में ॥ १ ॥ पीढियों की २ गणना के अंकों में एक अंक घट कर ॥ २ ॥ ३ गोद आने के कारण पीढियों की गणना का जो अंक कृष्णसिंह के नाम पर आया था वही अंक अनिरुद्धसिंह के नाम पर आया इस कारण एक अंक घट गया ॥ ३ ॥ ४ नजराना ५ न्यौछावर ६ प्रजा के लोक ७मन की पीड़ा छोड कर ॥ ४ ॥८पूजन करके ९पाप से अछूती[विना स्पर्श की हुई]भूमि १०पहिले और पीछे के सब विवाह और संतान एक ही स्थान पर कहेंगे ११फिर ॥ ६ ॥ १२ बालक १३ याचकों को शोक रहित किये

नाथाउति दूजी२लाडकुमरि१९६।२नमानाँ स्त्रीय,
भट जसवंतसुता अन्वय चुलुक्य *ओक ॥
[1]वापी जुग२बाग एक१जाके बनवाये प्रभु,
अज्जहि प्रसिद्ध पूर लहत प्रसंसा लोक ॥ ७ ॥
देवी हर्षदा सौं दीप पाच्छिम३।५प्रदेस पर,
बापी बनी एक१यह सो हैं बडे बिस्तार ॥
साख[1]पुर देवपुरा ताके जो समीप वापी,
दूजी२सो रु ताहीके समीप बाग१।३छबिदार ॥
याही चालुकीके बडे [2]अंगज भये ए उभै२,
सूर बुधसिंह१९७।१जोधसिंह१९७।२क्रमतैं कुमार ॥
वापी नाथाउति२नैं बनाई पहिली१जो बडी,
मुद्रा[3] तहँ लागी मान[4] द्वै अयुत है हजार२२००० ॥ ८ ॥
त्याही तीजी३दक्खिनमैं डोलाही बुलाइ भटि-
यानी चंद्रकुमरि१९६।३भवानीदासपुत्री भूप ॥
कन्या फतेसिंहकी नरूकी बखतकुमरि१९६।४ककोरकी बिवाही कछवाही चोथी४रुचिरूप ॥
प्राची[6]१खाननामक खवासकी हवेलीपास,
जाकी बापिका[7]१है लख्यो पुराय सत्र१जसजूप ॥
जंदाकेर तकिया समीप बाग१।२जाको ताल,
जायवंतसागर[10]तैं उत्तर४।७छिति अनूप ॥ ९ ॥
पंचमी५झलापपुर व्याही गजसिंहपुत्री,
राजाउति रानी रामकुमरी१९६।५नियतनाम[11] ॥
ताकै द्वै२तनूजा[12] द्वै२तनूज चउ४तोक[13] तहाँ,

---

* सोलंखियों के घर में [1]बावड़ी ॥७॥ १शहर के बाहर का पुरा २ पुत्र ३ रुपये ४ प्रमाण ॥ ८ ॥ ५ रूप में कान्तिवाली ६पूर्व दिशा में ७बावड़ी ८ पवित्र यज्ञ ९ यश रूपी खंभ युक्त १० जैतसागर ॥ ९ ॥ ११निश्चय १२ पुत्रियें १३ बालक

कुसलकुमारि१९७१*कल्यानादिककुमारि१९७२ताम ॥
ए वडी सुता द्वै२द्वै२भये त्यौं इनके †अनुज,
वाल §अभिधातैं अमरेस१९७३रु विजय१९७४वाम ॥
¶दुर्ज्जनादिसिंह सुता छठी दुवलानौं लाड-
कुमरि१९७६सनाम व्याह्यो चालुकी छवी ललाम॥१०॥
भूत१पहिले१ द्वै२पिछले चउ४बिवाह भावी३,
भावी३सर्व संतति कही ए अनिरुद्ध१९६१केर ॥
वर्त्तमान२जानौं विधिसौं इम तखत बैठि,
वर्ष तिथि१५ वें बिच सझारयो राज्य ताही बेर ॥
साहपास भेजन जथोचित सचिव सोधि,
सवन निवेदी बेनीदत्त है बचन सेर ॥
याहि कछु सासन दै सासन करहु एह,
आनौं फरमान अब दै अरज व्हे न देर ॥ ११ ॥
बेनीदत्त व्यासकौं निवेदि ऐसी पंचननैं,
सुलवपत्र सासन गहायो वारवासि१ ग्राम ॥
हाडा६१ जगभानु१द्विज नागरप्रताप२हेरि,
ताके संग दै ए द्वै २ पठायो वह दिल्ली ताम॥
रीति अनुसार अनिरुद्ध१९६१वस बुंदी राखि,
दीनौं फरमान साह व्यासहिं लिखे लै दाम ॥
लोभी परगनौं तोहू ए दुव २ उतारिलये,
नाम मुख्य तामैं खैराबाद१ रु बरोद२ नाम ॥ १२ ॥
मुख्य उँपदा१वैलि२रहे खिंले स्वर्यमिलैंन.

*कल्याणकुमारी †छोटे ‡छोटा §नाम से ¶दुर्जनसिंह १सुन्दर ॥१०॥२पहिले ३ आगे होने वाले विवाह और आगे होनेवाली ४ सन्तान ५ अपने अरज करी ७ पंडितों में श्रेष्ठ. इसको कुछ ८उदक ग्राम देकर हुक्म करें ९ तांबा पत्र देकर वारवासी नामक ग्राम उदक दिया १०तहाँ ॥११॥ १२ न्यौछावर १३ नारी १४ अपने मिलने पर

सेस बिधि साहि[1] आयो बेनीदत्त ताके साथ ॥
सेस अवनीसौं फरमान लै लिखितसिद्ध,
आये पंच५अहदी हजूरके पसारे हाथ ॥
भर्म१बसना२दि रीति उचित तिन्हैं दै भूप,
नाइ सिर ठाढे[3] फरमान लयो बुंदीनाथ ॥
मरत महीप भाऊ१९५।१देस इत दक्खिन२।३मैं,
अमल अरीनको लग्यो बढन लै लै आथ[4] ॥ १३ ॥
अकबर४१।४ चोथो ४ अवरंग४०।३ को तनय इतैं,
जनकसौं जनक[5] करी जो बिधिमैं बिचारि ॥
कोपपाल हो खल कुपाचता[6] कितीक करि,
सो अब कढ्यो भाजि सखा लै मंत्र[7] अनुसारि ॥
भागपुर१बीजापुर२ पत्तन सितारा३भूप,
एते अपनावैं अवरंग४०।३ इला[8] धक धारि ॥
जाइमिल्यो इन३मैं कह्यो सो४साहजादा टेक,
पापकी पकरि संगी भेदसौं कतिक टारि ॥ १४ ॥
मालवके सूबापैं बहादुरखाँ१ भोजि मीर,
आलम४१।२।२अवंतीमैं पठायो अवरंगाबाद ॥
कासिमको तनय अमीरखान३काबलके,
सूबापर भेज्यो साह प्रीत अधिके प्रसादै[9] ॥
प्रेरयो अस्तखान४दुर्गदास१रघुनाथ२पटु,
एह न ठिगायो दुर्गदास१भट अप्रमाद[10] ॥
मिच्छन प्रसादी[11] रघुनाथ२जाइ मार्यो बदै[12],

१ साधि (विधि साधकर) २ स्वर्ण वस्त्र आदि ३ खड़े होकर शिर झुकाकर ४ धन ॥ १३ ॥ ५ पिता औरंगजेब ने उसके पिता शाहजहां को कैद किया सो ६ पचावट (सहनता) नहीं करके ७ सलाह के ८ भूमि को ॥ १४ ॥ ९ प्रसन्नता से १० सावधान ११ म्लेच्छों की प्रसन्नता चाहने वाला १२ कहते हैं

साह पहिलैंही इन्ह लच्छन बिनु बिखाद ॥ १५ ॥
जब जसवंत जात अर्भक अजितसिंह,
गोइंदादिदास भाटी कापालिक बेस गहि ॥
लै कढ्यो करंड धरि साहको कटक लंघि,
वंसथिति हेतु स्वामिधर्महिं विसेस वहि ॥
सिसुके सहाई दुर्गदास१ रघुनाथ२ द्वै२ ही,
काढे नीठिनाठि कछै रारिहु पुरोग रहि ॥
काहू बिप्रगेह राख्यो गोइ सिसु केतें कहैं,
केते कहैं संभव बन्यों त्यों देस१काल२साहि ॥ १६ ॥
पीछैं रट्ठउर१भाटी२पासन उभै२पकरि,
लूटतभये जे लागि दिल्लीके द्रविनं देस ॥
विरले पुर नवाब दीपक जरनदये,
अप्रहतें राखि भूमि जोधपुरकी असेस ॥
गोपैं अधिकारी१कहतैं कति बनिक२गहे,
धूमि डारि धरनी धुजावत जन धनेसैं ॥
साह तैसी तिनकी पुकारपैं पुकार सुनि,
दोउ२नके चित्र मगवाइ देखे वपु१वेस२ ॥ १७ ॥
तोमरतैं वर्तकैं पकात फेरि पावकतैं,
आसुकर्ण अंगज१तो ईख्यो अस्ववार१एह ॥
भाटी सुरतानसुत२छीबं सह भोजनपैं,

॥ १५ ॥ जसवन्तसिंह से उत्पन्न(पुत्र) १बालक २गोविन्ददास ३कापालिक के वेस करके ४ करंड (टोकरे) में रखकर ५बादशाही सेना को लांघकर ६वंश की स्थिति के कारण ७युद्ध में अग्रणी रहकर ८छिपाकर ॥ १६ ॥ ९साले पकड़कर १० धनवाले देश. नवाबों के विरले पुरों में दीपक जलने दिया ११जाने(हानि)रहित १२ग्वाल १३जला डाली १४धनवान् मनुष्यों को १५नगारों १६शरीर के वेस (पोशाक) ॥ १७ ॥ १७भाले से फेरकर अग्नि पर १८बाटी [बाकरी]पकाना हुआ १९ आसकरण के पुत्र (दुर्गदास) को घोड़े पर चढाहुआ देखा २० सुरतान-सिंह के पुत्र (रघुनाथसिंह) की तसवीर भोजन करते मदोन्मत्त हुए की देखी

जोपै भीम अनुज[1]निवारयो तउनैं सुजान ॥ २३ ॥
संवत भुजंग गुन सत्रह१७३८ सिसिर६समै,
साह इम रानकी लिखाइकैं सह प्रसाद[2] ॥
कुंच[3] अजमेरतैं अतित्वर[4] तदनु कीनौं,
वेलापटु[6] जैबोही बिचारि अवरंगाबाद ॥
आप दिस टोडा१राजमहल२ समीप आत,
बुंदीसहु जाइमिल्यो सम्मुह बिनुबिखाद ॥
गेहको प्रबंध करि जैसैं अनिरुद्ध१९१।१गयो,
सोपै सुनिये व लौकथारस सरस स्वाद ॥ २४ ॥
बुंदीनृपको हो अवरंगाबाद सो विभव,
उदित कथासौं कछु पहिले समय आनि ॥
जज्जाउरईस मानसिंह १९५।१तनुजात महा-
सिंह१९४।९को पिनाती रूपसिंह१९६।२मिल्यो प्रभु मानि ॥
संग गे[12] पचास५०हे[13] छसै६००अो बीस२० वेगसैर[14],
तीनसै सकट[15]३००रथ१बहैल२तदर्ध[16]१५०तानि ॥
सत्ताईस२७तोप तथा तिन्ह उपहार[17] सजी,
पंचसै५००किरांची[18] लायो स्वामिधर्म पहिचानि ॥ २५ ॥
सबन सराह्यो रूपसिंह१९६।२कहि साधुसाधु[19],
पीछैं इम अैवो सुनि साहको समय पाइ ॥
सेवा१कुलदेवीकी पुरोहित सुंक१हिं सौंपि,
नाथाउत चालुक किसोर२हिं प्रभु२बनाइ ॥

---

१ छोटे भाई भीमसिंह ने मना किया तो भी ॥ २३ ॥ २ प्रसन्नता के साथ ३ प्रस्थान ४ शीघ्र ५ जिस पीछे ६ समय चतुर ७ उत्तम ॥२४॥ ८ ऐश्वर्य. वह ९ कथा ९ पहिले कह दीगई है १० पुत्र ११ पोता १२ हाथी १३ घोड़े १४ वेगवान् घोड़े; अथवा खच्चर १५ छकड़े १६ रथ और पोठिये छकड़ों से आधे फैलाकर १७ सामग्री १८ भार के छकड़े (तोपों की सामग्री भरे हुए छकड़े) ॥ २५ ॥ १९ श्रेष्ठ श्रेष्ठ २० मान है

कर्मसिंह[3]बनिक नियोगी[3]ताकै पास करि,
उदैसिंह[4]कायथ मुनीम[4]करि सौम आइ ॥
गैनोलीपुरीको सेखा[5] बनिक बुलाइ गुल्मी,
सेस ताकौं देसको असेस कामप्[5]समुझाइ ॥ २६ ॥
द्वारा[6]मिरधाकौं कोटपाल अधिकार[6]देकैं,
कल्पपाल घासी[7]नाम आदि[1]बन[2]पाल[7]करि ॥
सेस अधिकारी जे पुरातनही राखि सबै,
इम बुंदी ताम अधिकारी ए[7]नवीन धरि ॥
दै रानी पुरा[1]तिम पुरोहित भवानीदास[1],
संग लै मिल्यो यौं राजमहल समीप सरि ॥
साह बिसवास्यो कहि नाती तू सता[1][9][1]को अब,
बीर चलि दक्खिन[2][3]हमारेसंग जीति अरि ॥ २७ ॥
रीति साधि उपदा[1] निछावरि[2] बिरचि राजा,
पाइ प्रतिदेय[11] तैसैं साहसौं इभ[1]पुरोगैं[13] ॥
सेना स्वीय सहित नरेश छहैं यौं साह संग,
पुर अवरंगाबाद पहुँचे जैलूस[14] जोग,
भावपुरहीमैं अनिरुद्धको[1][9][6][1]निवास भयो,
छाइ तास चहुं[4]घाँ बरूथिनी[15] बिबिधछोगैं[16] ॥
मिच्छ[1]पैलें मानैं बुरहानपुरको बचन,
लोभी तऊ बेरहि प्रमानैं मग्गहठ्ठ[2]लोग ॥ २८ ॥
लाखैरी पुरीके आदि घाँटैमैं[17] कढत दल,
बाँमीं[18] बंधदुर्ग[1]आइ लूटी पिछली बहीरैं[19] ॥

[1]आज्ञा करनेवाला [2]गुमास्ता [3]नाम है [4]गुल्मी (कुछ समूह की रक्षा करनेवाला अर्थात् हाकिम) ॥२६॥ [5]जाति विशेष; अथवा अधिकार विशेष [6]कोटवाल [7]कलाल को [8]पहिले थे उनको ही रखकर [9]चलके ॥२७॥ [10]नजर [11]खिल्लत [12]हाथी [13]आदि [14]सुराति व; अथवा शोभा; अथवा तख्त के योग्य [15]सेना [16]उत्साह ॥२८॥ [17]पर्वतों का कठिन मार्ग [18]राठोड़ दुर्गदासने [19]भार बरदारी आदि सेना का पिछ-

*उपालंभ भेज्यो अस्तखानपैं तमकि यातैं,
पीछैं खानदेस गो अवंतीके अरचि पीरं ॥
सूनु साह आलम४१।२कौं जातहिं पकरि साह,
राख्यो अवरंगावाद पासहिं बिमति वीर ॥
आजम४१।३तृतीय३सुत तातैं भो प्रसन्न अति,
मूढ जान्यौं दिल्लीढंग मैंही बन्यौं हौं व मीर ॥ २९ ॥
संभा नाम कैतो हो सितारको अधीस१उत,
प्रतिनिधि२को हैं मरहट्ठनमैं मुख्यपन ॥
अकबर४१।४चोथो ४ पुत्र ताके पास हो सो अब,
साह आयो सुनत निकासिदीनौं भीतिसन ॥
अस्त गो उदैपुर व्हाँ रानहु न राख्यो ताहि,
धीज्यो जाहि दुर्ग१हिं टिकायो तिहिं बिंबधन ॥
खानदेस अरजी पठाई यह अस्तखान,
तापैं पुनि भेजी चमू सुनतहि सद्यतन ॥ ३० ॥
बाहिनी वहोरि अस्तखानके सहाय इम,
आई अजमेर सुनि संका दुर्गदास१आनि ॥
अकबर४०।४ताहूनैं निकासिदीनौं भीत वह,
काहूनै नराख्यो पुनि साहकी करत कानि ॥
उत्तरि अटक तव साहको तनय एह,
मग्गमैं अमीरखानसौं दुंरि कुसल मानि ॥
सरन बिचारि देस फारस गो ताम तिह,
रान नगरीके पातसाह राख्यो हित तानि ॥ ३१ ॥
काबुलसौं पच्छिम३।५विलायत इरान कहै,

ला भाग*उलहना क्रोध करके. उज्जैन के २पीर का १पूजन करके३जाते ही४ निर्बुद्धि ॥ २९ ॥ ५ असतखां. दुर्गदास ने उस ६धन के प्रतिबिम्ब को ठहराया ७ तुरन्त ॥ ३० ॥ ८ सेना ९ आदर तथा भय १०छिपाकर ॥ ३१ ॥

सूबा मुख्य जामैं गिनैं बारह१२ *द्रविन सार ॥
तिनमैं नगर मुख्य कर्मासाह१तवरेज२दिज-
फूल३सारी४कार्मा५मसहिद६जेबदार ॥
रसद७ सखुरमादि१ अस्तराबि४आबाद८।९,
रूसीराज१०रुतार११ इंगै इतिमुख्य है सुढार ॥
सबनमैं नामी राजधानी के सहर इस्फ-
हान१२।१ तिहरान१३।२डमेरगिनिये जिहिं अगारै ॥ ३२ ॥
इस्फहान१पत्तन पुरानी१राजधानी उहाँ,
राजधानी नव्य२तिहरान२बिरची वहोरि ॥
जाको पातसाह अवलंब लखि साहजादा,
जो तस सरन गयो अकबर४१।४हाथ जोरि ॥
ताकौं उर लाइ बिसवासि ह्वाँ टिकायो तानैं,
रहतो इहाँसो गहिलेतो पिता रन रोरि ॥
आलमको४१।२१सोकि अकबर४१।४।२कों अजाइ ऐसैं,
दक्खिन२।३रह्यो सो परपक्खिन दलन दोरि ॥ ३३ ॥
नृप अनिरुद्ध१६।१ अरु मनवरखाँ२नवाब बीर,
ईस्ए आजम४१।३पै राखि अवरंगाबाद ॥
सूबा खानदेसको सम्हारि इनइको दै साह,
भजि आप सत्रुनपै पहुँच्यो बिनु प्रमाद ॥
ऐसी अनुकूल लई साहकी निदेस उहाँ,
संगर सिकंदरहिसैं पच्चायो जानैं जयस्वाद ॥
बीजापुर१लैं निज सिकंदर१पकरि बीर,
युद्ध१जय पायो नच्यो चंड४खो सुजस नाद ॥ ३४ ॥

१पञ्जाब २काँकासगान ३नगर ३ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] सूबे ॥ ३२ ॥
१ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] को [illegible] को [illegible] ॥ ३३ ॥ १ [illegible]
[illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] सूबे में ॥ ३४ ॥

दूजें२रन भागनैर बल्लको *बरन डारि,
[1]पानिबल जीति तानाँ साह२हु लयो पकरि ॥
समर तृतीय३जीतिलीनौं गहि संभा३साह,
ऐसैं दाबि दक्खिन२।३लये ए बाँधि तीन३अरि ॥
नैन पुनि संभा३के निकासे यौं किते कहत,
दौलतादि आबादक[1]धाम ए सबैहि धरि ॥
आन तिनकी पर मर०व्वतखाँ राखि तहाँ,
जीते सेस जिमहि सिपाहनके अग्रसारि ॥ ३५ ॥
पंचम५तनूज खानबख्स४१।५हुतो जो पास,
लानि अनुकंपा[2] राज्य उभय२सम्रद्ध ताहि ॥
बीजापुर१भागनैर२दीने ए सबित्त१बल२,
दक्खिन२।३प्रभुत्व४दीनौं साहपंद२सीमासाहि ॥
प्रीतिपात्र हो यह५कुमार पैननारि[3] पुत्र,
अधिक प्रसन्न यासौं आप होइ मड माहि ॥
पट्ट[4] ताहि दैकरि अवाची२।३भुव पातसाह,
आयो पातसाह पीछो स्वीय जहाँथिति[5] आहि ॥३६॥
बिजय[6] त्रयी३लै दर्पी[8] आइ अवरंगाबाद,
अभय निरंकुस[9] भो अब सबघातैं साह ॥
तीजे३सुत आजम४१।३बिचारि रह्यो साहतनैं,
मैंही अब मुख्य लैहौं अवसरैं[10] दिल्ली लाह[11] ॥
[12]संक नव राम मुनि भू१७३९इत अटक सूबा,
नाम जसवंत मरयो जोधपुर नरनाह[13] ॥

---

* सेना का कोट डाल कर १ भुजों के बल से १ स्थान ॥३५॥ २कृपा फैलाकर ३ वेश्या का पुत्र ४दक्षिण भूमि का पाट देकर. जहाँ अपनी५स्थिति६है ॥३६॥ ७ तीन ८ घमंडी ९ अंकुश रहित (स्वतन्त्र) १० समय पर ११ लाभ १२ विक्रम का संवत् १३ जोधपुर का राजा

साहनैं अजितसिंह तबहु बुलायो सोपैं,
भटन न भेज्यो राख्यो तिमहि *निगूढ एह ॥ ३७ ॥
आनंदादिराव१नाम संभाके सुभट इत,
बारहहजार१२०००बाहिनीसौं वीर †बंध बल ॥
सीमा जो सितारा की कितीक अब दाबी साह,
नेंग१के सहायतामैं हिंडनै२ न देत हल ॥
जितजित जात मार१लूट२हिं मचात मत्त३,
सो सुनि पुकार साह दे कितोक संग दल४ ॥
नृप अनिरुद्ध१९६।१।१अरु मनवरखाँ२नवाब,
पठये उभै२ए मुख्य तापैं न बिलंबि पल ॥३८॥
सोलह१६समा५ वय नरेस अनिरुद्ध१९६।१।२सूर,
सूचितै६ नबाब३लैकैं मित्रपनमैं समान ॥
गाढे हठ लूटि बुरहानपुर को गरदैं७,
जात मरहट्ठ रोह्यो८ सो पुनि न जायो जान ॥
ग्रामनाम कुंभारी समीपलौं पहुँचि गैल,
खंडन९ खलन अनिरुद्ध१९६।१।२मनवरखाँन ॥
खंडन खिल्हारी भृंग१भानु२हिं रुकातभये,
घाँघाँ घुमडाइ कुसुमाकर१० सो घमसान ॥ ३९ ॥
वनिक धनिक कैदी१लूटको सकल वित्त२,
ए२तो पहुँचतही छुराये भीम अनुकौरि११ ॥
बाहिनी१२ सिताराकी बिलोरिडारी१३ व्हैव्है बीच,
सोरिडारी मिलत अनी के१४ घनी मनुहारि ॥

---

* गुप्त मार्ग से ॥ ३७ ॥ † सेना से ‡बल बांध कर १ भालू की सहायता से २ हल नहीं चलने देता ३ मस्त ४ सेना ॥ ३८ ॥ ५ वर्ष की अवस्था में ६ सूचना किये हुए नवाब को ७ घेरा ८ रोका ९ काट कर. खिल्हाड़ी भँवरों ने सूर्य को रोका १० वसन्त ऋतु के समान लाल ॥ ३९ ॥ ११ भीम के सदृश १२ सेना १३ मथडाली १४ कितनी ही .

पाइ समता न सेख१मुगल२पठान३नकी,
तैसी चंड चाली चहुवाननकी तरवारि ॥
मालिक समेत रुपे न रहे इकठे *आजि,
भठे मन नठे मरहठे स्वीय मद मारि ॥ ४० ॥
भूप अनिरुद्ध१९६।१को प्रबीर †असपिंड भ्राता,
१ताम आयो काम नवरंग पोता४।८सुरतान१ ॥
सस्त्र दुव२लाये बुंदी अधिपके संहनन,
सू३सज्जा इत१उत२के बहु समान ॥
नृप१रु नवाब२इम आये पाइ उभै दीनौं,
साह रीझ१मैं सराह२को बिदित दान ॥
जासमैं बिरोधीमरहट्ठननैं जितातित,
भीत करिराख्यो देस दक्खिन२।३बिकलभान ॥ ४१ ॥
दूजीरवेर बहुरि बहादुरखाँ१संग दैकैं,
भेज्यो मरहट्ठनपैं साह अनिरुद्ध१९६।१भूप ॥
सिवापुर१कालोचा२दि ड्रंगन समीप सीम,
जुद्ध१मैंख२दूजो२रच्यो तोमर१बिदित जूप२ ॥
सत्रु१हँवनीय२आप१दिक्छित२कृपानं स्रुवा,
सिंधूरागं१मंत्र२सहरंगं१बेदी २अनुरूप ॥
जय१फल२ताको लै निवेद्यो साह आगै जाइ,
चाहि प्रीति तबहु सराहे जुग२ही चमूप ॥४२॥

---

* युद्ध में माही मन से आगे ॥ ४० ॥ † सात पीढी से बाहिर का भाई।तहाँ १ शरीर २ शय्याशय्या ३ चेल रहित ॥ ४१ ॥ ४ युद्ध रूपी यज्ञ ५ भाला है सोही प्रसिद्ध६यज्ञ थंभ है.शत्रु है सो ही७होम का पदार्थ है और स्वयं८दीक्षित [यज्ञ की दीक्षा लेनेवाला] है ९ खड्ग है सो १०होम करने का पात्र है ११ सिन्धवी रागिनी [पडाराग]है सो ही वेदमंत्र है.१२ युद्धक्षेत्र है सो ही १३ वेदी [होम करने का कुंड]है १४ दोनों सेनापतियों

बालापुर तीजी३रारि त्यौं जुग२लह्यो बिजय,
यौं अबै प्रमान्यौं आजि कोबिद है अनिरुद्ध ॥
अहितन ओघ अभिभूतहु रुके न इत,
यूतमैं दबाये यून मीठो जानि जेम मुद्ध ॥
बीजापुर१भागनेर२कैहु जे जवन बचे,
मेल मरहट्ठनसौं जोरि अब तेहु जुद्ध ॥
धामधाम लूटनलगे यौं डारि धाटिनिकौं,
पारत पुकारपैं पुकार बीरप्रन बुद्ध ॥ ४३ ॥
चोथी४बेर आजम४१।३तृतीय३सुतकौंचढाइ,
सत्रुनपैं भेज्यो है नरेस अनिरुध४१६।१संग ॥
आनंदादिराव१मरहट्ठनमैं मुख्य उत,
जवन दु२घांके जुरे इक्क१व्है त्रि३बलजंग ॥
दिल्लीकी बरूथिनीको बिक्रम असह देखि,
भाजत१जुरत२जुरि१भाजत२लहत भंग ॥
आगैंआगैं धाटिनके उक्त अधिकारी अटे,
पीछैंपीछैं साहपुत बिचर्यो दमन बंग ॥ ४४ ॥
दारा४०।१की सुता जो व्याही आजम४१।३उचित देखि,
सोपै ही तदीय संग बेगम सह सनेह ॥
पाइ छिद्र कोऊ परी सत्रुनके संकट सो,
ताहि लै बली ते परदाइँ चले मुरि गेह ॥
सो परयो अलीअंल व्है आजम४१।३मंईदं श्रुति,
आनिचित्त अंनख अचानक उछारि एह ॥

की प्रशंसा की ॥ ४२ ॥ १ युद्ध में २ चतुर ३ शत्रुओं का समूह ४व्याकुल होकर भी नहीं रुका ५ मूर्ख ६ धाड़ाघातियों को ॥ ४३ ॥ ७ सेना का ८ बल ९ फिरे (चले) १० दंड देने के भेद (व्यंग्य) से ॥ ४४ ॥ ११ पड़दे में लेकर (छिपाकर) १२ बिच्छू का डंक होकर आजम रूपी १३ सिंह के कान में पड़ा १४ क्रोध

भेजतभो सुजन भरोसा भाखि भूपतिकों,
आनिपूगो यहहु मचावत सरन सेह ॥ ४५ ॥
ऐसैं अनिरुद्ध१९६१पहुँचतहीं अरिन ओघ,
सम्मुह पलटि जुरे घोर भयो घमसान ॥
मिच्छ१तो टरे न्हाँ बुरहानपुर कौल मानि,
काटे मरहट्ठन२के चखाइ घाय चहुवान ॥
स्वीयजन कैदी३अवरोधकी विभूति४सह,
जीतिकैं छुरायो उक्त बेगमको नरजान ॥
फोरयो घाय तीन३नृपके वपु लगे फवत,
पान१सान२पैनैं एक१बान रु दुव२कृपान ॥ ४६ ॥
गेरे मुंड१केते फेरे रुंड२केते अंधगति,
तोरे तुंड३ केते काटे झुंड केते जयकार ॥
आनंदादिराव१ संतू२आदि मरहट्ठ उहाँ,
पंच५मुख्य पारे चीरिडारे घने अनुचार ॥
लोम दे पलाद१गन रनके कुतूहलि२न,
सकल रिझाये दाहि संचय महारि सार ॥
भंजिकैं सिताबदल एक अनिरुद्ध भूप,
हरकों निवेदे वीर तहिन प्रचुर हार ॥ ४७ ॥
बुंदीके भटनमाँहिं मुख्य झारे दुव२वार,
फतेसिंह१चालुक परयो प्रबल बल फारि ॥
गौर देवसिंह२दूजो२नारद रिझाइ गिरयो,
अट्ठतीस३८ इतके रहे भट इतर गारि ॥

१भागों का भेद करके राजा रतनसिंह से युद्ध नहीं करने का बुरहानपुर में म्लेच्छों ने कौल किया था उसको मानकर ॥४५॥ ३ जनाने की सामग्री सहित ४ पालकी ५ म्यान से नीकास किये हुए ६ खड्ग ॥ ४६ ॥ ७ अनेक ८ मेघों को ९ मांस भोजन करनेवाले गीध आदिकों को १० युद्ध का तमाशा देखनेवाले ११ मनुष्यों को बहुत द्वार किये की भेट किये ॥ ४७ ॥ १२ गौ

आनंद१ रु संतू२नारू३नत्थेराव४ईस्वर५ए,
मुख्य मरहट्ठ मरे और घनें अनुसारि ॥
विजय१समेत यौं नरेस लायो बेगम२कौं,
बाराह१ज्यौं बसुधा२दितीकेसुतकौं बिदारि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

आजम४१।३मिलत लगाइ उर, बहुत नृपहिं बिरुदाइ ॥
राखी इज्जत तैं मरद, भाखी यौं मम भाइ ॥ ४९ ॥
बहुत बडाई बेगमहु, पहुकौं करि पतिपास ॥
अक्खी जो जात न यहै, व्है कुल१जस२असु३न्हास ॥५०॥
आजम४१।३जनकहिं दै अरज, नृप कहँ रीझ निमित्त ॥
प्रथित दिवाई गत पुहवि१, वलि पीछी सह बित्त ॥ ५१ ॥
महत देस बारा१ मऊ२, बलि लघु खैराबाद३।१ ॥
चाचुरनी४।२खेरी५।३चउ४हि, साहित बरोद६।४प्रसाद॥५२॥
खट६हिं देस पट१भूखन२रु, आयुध३गय४हय५आदि ॥
देय बिभव भूपहिं दयो, बीर सुजस संवादि ॥ ५३ ॥
इम सोलह१६सम वय अधिप, नियत उधारयो नाँम ॥
भटियानी व्याहत भयो, तत्थहिं डोला ताँम ॥ ५४ ॥
नाम चंद्रकुमरि१९६।३जु निपुन, जेसलमेरु प्रजात ॥
इम रानी तीजी३यहै, व्याही नृप बिख्यात ॥ ५५ ॥
पाये इम गत देस पुनि, सह जस१बिजय२प्रसंग ॥
गत सुनसब दैबोहु गिनि, रह्यो साह अवरंग४०।३ ॥५६॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी

---

१ हिरण्याक्ष को मारकर ॥ ४८ ॥ २ स्तुति करके ॥ ४९ ॥ ३ राजा की ४ माता ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ यश कहकर ॥ ५३ ॥ ६ वहीं डोला मंगवाकर ७ वहीं व्याहा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ८ भाऊसिंह से गयाहुआ मनसब ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति

पत्यनिरुद्धसिंहचरित्रेऽनिरुद्धसिंहविवाहसंततिवर्णन १, बुन्दीपट्टलेखनहेतुवेणीदत्तादेल्लीप्रेषण २, औरंगजेबपुत्राकबरतत्प्रतीपीभवन ३ अकबरमन्त्रज्येष्ठात्मजालमौरंगजेबप्रतीपभावौरंगजेबससैन्यदक्षिणादिग्गमन ४, राठोड़दुर्गदासयवनेन्द्रसार्थलुण्टन ५, कीलितालमौरंगजेबकियत्कालदक्षिणानिवसनाकबरफारसदेशगमन ६, बुरहानपुरान्तिककृतमहाराष्ट्रयुद्धानिरुद्धसिंहाजमस्मरणामोचन ७, अनिरुद्धवारां१मऊ२प्रान्तप्रत्यासादनं नाम दशमो मयूखः ॥१०॥

आदितः सप्तत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ ॥ २३७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

फैल्यो जस नृपको फबत, इत इम दक्खिन१।३ देस ॥
हित सह साह प्रसन्न हुव, अप्पि विभूति असेस ॥ १ ॥
जीत्यो जुद्ध चउत्थ४जब, पाये दुव२प्रतिकूल ॥
इक भ्राता असपिंड इह, सामंत१८७१ज कुलसूल ॥२॥
कूर सुपै अभिधान करि, दुर्जनसिंह१हिं दुष्ट ॥
भुजनेरी सासक भयो, स्वामिद्रोह संतुष्ट ॥ ३ ॥
विस्वनाथ१कायत्थ बलि, फतैचंदसुत फुट्टि ॥

अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह के विवाह और सन्तानों का वर्णन१ बुंदी का पट्टा लिखवाने को वेणीदत्त को दिल्ली भेजना २ शाहजादा अकबर का औरंगजेब से बागी होना ३ अकबर की सलाह से बडे शाहजादे आलम का औरंगजेब से विरुद्ध होना और औरंगजेब का सेना सहित दक्षिण में जाना४ राठोड़ दुर्गदास का बादशाह की बहीर को लूटना५ शाहजादे आलम को कैद करके बादशाह औरंगजेब का दक्षिण में रहना और शाहजादे अकबर का भागकर फारस में जाना ६ बुरहानपुर के समीप अनिरुद्धसिंह मरहठों से युद्ध करके आजम की हुरम को मरहठों से छुडाना७ अनिरुद्धसिंह को वारां, मऊ का परगना पीछा मिलने का दशवां १० मयूख हुआ और आदि से दो सौ सैंतीस २३७ मयूख हुए ॥

१शीघ्र॥१॥२मूर्ख ३ दुर्जनसिंह ॥ २ ॥

संदेस पलटयो सुपै, बखसी धर्मबिछोह ॥ ४ ॥
मरहट्ठन सन ये मिले, दुवरहि ठानि प्रभुद्रोह ॥
उत१के पाये पत्र इत२, पापिन पाप प्ररोह ॥ ५ ॥
इत१के पत्रहु जात उत२,सुनैं पिहितलिपि सज्ज ॥
जेम टरैं उत१के जवन१, उनतैं इत२के अज्ज ॥ ६ ॥
इत्यादिक सब मर्म इन, खल दोउरन किय ख्यात ॥
प्रभुद्रोही जानैं प्रभुहु, पलचरन पहँ पातं ॥ ७ ॥
चेति काकगति अति चमक, प्रथम१सुद्धि यह पाइ ॥
भीत जुगरहि हिगतैं भजे,लघुजन कुलहिं लजाइ ॥ ८ ॥
दुवरभुजनैरी१संदरीर२, तत्र इन्द्र२थान उतारि ॥
बुंदी कहि पठई बहुरि, बिमतिन देहु बिडारि ॥ ९ ॥
दुवरन दये गेहन दुरन, जामिक इतके जाइ ॥
इम अधमन जिम आदस्यो, अर्घ पर अघ अधिकाइ॥१०॥

(घनाक्षरी)

संवत गगन वेद सत्रही १७४०लगत समा,
दुर्जन१रु बिस्वनाथ२छन्न रहि बुंदी देस ॥
बिष्णुसिंह१९५१सूनु राजसिंह१९४१४नाती बलभद्र१९६१
बुंदी हो सु फोस्यो नृप ताकों लोभ दै बिसेस ॥
सो अघ बिदितहोत गो भजि इहाँ तैं सोहु,
लीनों जाइ सरन उदैपुर लवकुलेस ॥
जानैं स्वीय तनया बिचित्रकुमरी१९७१सो जहाँ,
ब्याही बारि बिंदं जयसिंह-राना बसुधेस ॥ ११ ॥
कन्या इक१याकैं भई पीछैं सोहि कालकरि,

॥ ४ ॥ ५ ॥ १छांने के लेख २ भेद ३ हलकारों से ४ पाते थे ॥ ७ ॥ ५ काकपची सदैव सचेत रहता है इसप्रकार ॥ ८ ॥ ९ ॥ ६ घरों में नहीं घुसने दिये ७ पहरायत ८ पाप पर पाप ॥ १० ॥ ९ लव के वंश के पति (महाराणा)का १० कुल्लह ॥ ११ ॥

ब्याह्यो भीम१९८।१कोटा कुमार नृप बुधवेर १९७।१बेर[१] ॥
ऐसैं बलभद्र१९६।१वर्त्तमानमैं उदैपुर गो,
सो इत दुजनसिंह१९६।१समुझि सपिंड सेर ॥
बिस्वनाथ१दुर्जन२सौं ऐसैं कहि भेजे बैन,
बैरीसाल१९४।३वंसी वीर दुर्जन१९६।१न करि देर ॥
बुंदी लईचाहैं तासौं मिलिकैं करो बिहित[३],
कैसी प्रभुता ह्वै तह१के उद्यमैं ह्मकेर ॥ १२ ॥
बुद्धि मेरी बदली तुमारे बहिकाइबे तैं,
पीछैं राजसिंह१९४।४कुल लगत कलंक पाइ ॥
हेरि हित पीछैं सकुटुंब निकस्यो मैं हारि,
लाभ पुर पट्टनके ल्हानको बहानौं लाइ ॥
उत तुम संग टिकिबो न लखि पायो इत,
असन१बसन२को निबाह उदैपुर आइ ॥
इस बलवंनिको सहाइ तुमरैहि अब,
भूपति भंजहु बुंदी बुंदीपतिको प्रमाइ ॥ १३ ॥
दुर्जन१९६।१के आगैं बलभद्र१९६।१हारि ऐसैं दीन,
बिस्वनाथ१दुर्जन२सौं निस्पृह[६] कहाई बात ॥
हुरबलो[७] ए तो हुष्ट चाहत है चाम१हाड,
बलवनि ईससौं मिल मन द्रुत बहात ॥
द्विगुन पटाके लोभ अधम बिसासि ह्वैरही,
दुर्जन[९] ह्वै दुर्जन१९६।१घुमाई बुंदीपर घात ॥
अस्ववार[१०]१छसत६००पदाति२छहजार६०००आनि,
पटके पुरीकौं[११] बोढि हेतिनके[१२] वज्रपात ॥ १४ ॥
संवत गगन वेद सत्रह१७४०कथित समै,
राध[१३]१मास आसित[१४]२चंउत्थि दिन मंडी रारि ॥

१ बुधसिंह के समय में २सिंह ३उचित ॥१२॥ ४ भोजन ५ ग्राम का नाम है ॥ १३॥ ६इच्छा रहित ७ गीदड़ के समान ८शीघ्र ९दुर्जनसिंह ने शत्रु होकर १० सवार ११ घेर कर १२ शस्त्रों के ॥१४॥१३वैशाख१४वदी

नीठिनीठि द्वै२दिन किसोरसिंह नाथाउत,
बुंदी जुद्ध ठहरि कढ्यो भट जस विगारि॥
दारित कपाट[1] माँहिं पैठे भट दुर्जनके,
धाम धाम लुट्यो पुर जाम[2]१ताम[3] हठ धारि ॥
बुंदीमैं अमल ठानि छट्ठी६के दिवस बैठो,
पट्ट आइ दुर्जन१९६।१अचानक विरोध पारि ॥१५॥
दुर्जन१रु बिस्वनाथ२आदिक सहाय[4]दाता,
जानैं जई[5] द्विशुन पटा दै मानैं मुख्यकरि ॥
मुख्य सुजनैरी१ तैं हु नंदैना[6]२नृपति मान्यों,
यहहि जनाइ हेतु पीछैं[7] ढुंढकारि अरि ॥
वर्त्तमानमैं यों स्वामिद्रोही सो तख्तबैठि,
धर्नीअधीस[8] है दिवान वज्यो हाँस धरि ॥
चिन्ह सिर आतपत्र[10]१चामर२चलाये पहिले,
न जे पलाये[11] ते मिलाये कारा[12] दर्प्प पारि ॥ १६ ॥
ऊरुज[13] करमसिंह१कायथ उदैसिंह२,
विप्रविस्वनाथ१।३हरिवल्लभ२।४उभय२व्यास ॥
कारामैं[14] पठाये अधिकारी ए चउ४हि कैद,
रानी जन भेजिराखे निखिल[15] अधोनिवास ॥
द्विज ह्हाँ पुरोधा[16] सुकदेव कह्यो दुर्जन१९६।१सों,
होत अवरोध काहैं कुल१जस२धर्म३ह्रास[17] ॥
अधम संदर्प्प[18] उलटो रिस पकरि पापैं,

१ किवाड़ तोड़कर २ एक प्रहर तक; अथवा जहां तहां ३ तहां ॥ १५ ॥ ४ सहाय देनेवाले ५ जय करने वाले ६ ग्राम का नाम है ७ धिक्कार के साथ निकाल कर ८ भूपति ९ बुन्दी के रावराजा का उपपद दीवांन है १० छत्र ११ भागे जिनको १२ कैद किये ॥ १६ ॥ १३ वैश्य १४ कैद (जेलखाने) में १५ सबको नीचे के महलों में रक्खे १६ पुरोहित १७ हानि १८ घमंड

पट्टनि पठायो अवरोधहु[1] हठ प्रकास ॥ १७ ॥
भ्राता पहुँचाइवेकौं आपुनैं अनुज भेजे,
नेता[2] करि द्वैही फतेसिंह१९६।२जैतसिंह१९६।३नाम ॥
आधे पंथ रानिन उभैरए पहुँचाइ आये,
ठीकरिया ग्रामलौं गये लखि निकट ठाम ॥
जन अवरोधवारे[3] पट्टनि बसे यौं जाइ,
जानी यह सुद्धि[4] अनिरुद्ध१९६।१नृप वर्त्तौं[5] जाम ॥
आजम४१।३के द्वारा भेजी अरज हजूरएह,
दासपैं इहाँ वै[6] विनु धाम न खरच दाम ॥ १८ ॥
अधिक प्रसन्न नृप सौं हो साह यातैं एह,
सुनत रिसायो यौं दमंग[7] ज्यौं मिलत सोर ॥
आजम४१।३को अंगनाहु[8] बिन्नति पठाई ऐसैं,
मानहु स्वसुर राखी इज्जत नृपहि मोर ॥
इच्छा प्रियपुत्र१कौं वधू२को लखी त्यौंहि आप,
जोध अनिरुद्ध१९६।१संग वाहिनी[10] दै अतिजोर ॥
बुंदी लैन भेज्यो कह्यो चलत वहोरि वैल[11],
अलप लखोतो लिखिभेजो भेजिहौं मैं ओर ॥ १९ ॥
भीम१नाम रानाँ जयसिंहको अनुज भ्रात,
रानाँ राजसिंहसुत जो बच्यो तटस्थैं[12] रहि ॥
पीछैं जाहि उचित पटामैं सह भूपपद,
बनहड़ा[13]१ढंग मिल्यो गौरव विसेस वहि ॥

हित १ जनाने लोकों को ॥ १७ ॥ २ हाकिम ३ जनाने के लोक ४ खबर ५ राजा अनिरुद्धसिंह था वहां कहीं ६ अब ॥ १८ ॥ ७ अग्नि ८ हुरम ने ९ पुत्र की स्त्री की १० सेना ११ सेना ॥ १९ ॥ १२ राना राजसिंह को मारने का भेद प्रसिद्ध होजाने पर जो उपद्रव हुआ था उस उपद्रव से किनारे रहकर १३ राजा पन के साथ *बनहड़ापुर मिला.

* महाराणा जयसिंह और महाराज भीमसिंह का एक ही दिन का जन्म है इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध

पीछैं सुता याहीकी बिवाह्यो जोधसिंह१९७१ अग्रज१,
के संग अनुज समै पैं बिधिलेख लहि ॥
अग्रजसौं तोरि साहआश्रित हुतो ह्वाँ यह,
सो१हु दयो संग पहिलैतैं प्रीति चित्त चहि ॥ २० ॥
दोनौं संग भूमिपति अबिदित नाम दूजो,
अन्ववाय गोड़१जाको चामरिक१उपटंक ॥
जवन मुगलखान तीजो३संग भेज्यो जाहि,
सूबा अजमेर दीनौं उद्यमी गिनि असंक ॥
अस्तखान अलस न राख्यो अधिकारी उहाँ,
एक१दुर्गदासहि रुक्यो न जानि हठ अंक ॥
मुगलसौं मुगल कही यौं इन्ह संग मिलि,
बुंदी लै प्रथम१पीछैं२सरलीकर२हु बंक ॥ २१ ॥
बोधि ऐसैं भीम१चामरिक२रु मुगल३बुंदी,

॥ २० ॥ १ जिसका नाम मालूम नहीं २ वंश ३ पदवी ४ आलस्य नहीं रक्खा ५ युद्ध में हठ करनेवाला; अथवा हठ का चिन्ह रखनेवाला ६ टेढ़ों को सीधे करो ॥ २१ ॥ ७ समझाकर

है कि दोनों की वधाई लेकर दो जने महाराणा राजसिंह के पास गये तव महाराणा सोते थे तहां जयसिंह की वधाई लानेवाला पैरों की तरफ और भीमसिंह की वधाई लानेवाला सिर की तरफ बैठ गया, फिर महाराणा जगे तब पगांथे की तरफ दृष्टि पड़ते ही जयसिंह की वधाई देनेवाले ने कुमर के जन्म की सूचना की तब सिराने की तरफ से भीमसिंह की वधाई देनेवाले ने अरज की कि मैं जिनकी वधाई लाया हूं उनका जन्म पहले हुआ है इस पर महाराणा राजसिंह ने कहा कि इस समय हमारे पाटवी पुत्र सुरताणसिंह और छोटा सरदारसिंह दोनों मौजूद हैं फिर इन में छोटे बड़े का झगड़ा निरर्थक है इसलिये हमको पहिले खबर हुई वही बड़ा है इस पर उस समय तो कुछ विचार नहीं हुआ परन्तु सुरताणसिंह और सरदारसिंह तो राणा राजसिंह की विद्यमानता में ही मरगये और सम्वत् १७३७ में महाराणा राजसिंह का देहान्त हुआ तब जयसिंह के पाट बैठने पर छोटे बड़े का विचार बढ़कर भीमसिंह ने उदयपुर को छोड़ दिया और अजमेर में बादशाह औरंगजेब के पास जाकर राजापन की पदवी सहित बनेड़ा पाया जो उस समय बादशाही अधिकार में होगया था उदयपुर से इनके साथ इस टीकाकार (बारहठ किसनसिंह) के परदादा उदयभाण आये जिनको भीमसिंह ने बनेड़े के नेग और गीहड़्या नामक ग्राम दिया सो अभी मौजूद है सो इन भीमसिंह को बूंदी की सहाय पर भेजना लिखा सो तो उचित ही है परन्तु बनेड़े का पट्टा इस समय मिलना लिखा सो असत्य है; क्योंकि बनेड़ा पहिले ही मिल चुका था.

सीसोद१रु गोर मिच्छर२भेजे नृपके सहाय ॥
आजम४१।३की बेगमहु पतिसौं निवे[1]दि इहाँ,
पठई कितीक पत्ति सेनाहू प्रबल प्राये[2] ॥
मऊ१बाराँ२आदिकमैं अमल जमाइ मग्ग,
कोटापुर आइ तनैं फौजके पटनि[3]काय ॥
सूबापति संगिन मयूर तँहँ एक१मार्‌यो,
बढिगो कलह तापैं बिख[4]की लगत लाय ॥ २२ ॥
जावत भो दक्खिन१।३नरेस साहसंग जब,
पट्टनिके डेरन भो पहिलैं यह उदंत[5] ॥
हृदयनरायन१९२।१पिनाती[6] छत्रसिंह१६हाडा,
संग अवनीसकै हुतो सो भट बंधु हंत[7] ॥
नामी गज ताकै एक हो गजकुमर१नाम,
केते कहँ पहिलैं दयो सो ताहि छितिकंत[8] ॥
तासौं नृप मंग्यो सो दयो न गजराज तानैं,
जारहयो कोटा तजि बुंदी बास बरजंत[9] ॥ २३ ॥
कोटाके मुकामपैं मारत मयूर क्रुद्ध,
छत्रसिंह१९भटन चलाई तेग धारि छोहँ[10] ॥
मारक[11] मयूरको लयो वह जवन मारि,
दल निज भेज्यो तापैं सूबापति आनि द्रोह ॥"
छत्रसिंह१९ । सिबिर[12] लयो तिन भटन छाइ,
लोपन दगाइवो तक्यो ही महारिसमोह ॥
भूप अनिरुद्ध१९६।१यह जानत सबेग भाजि,
ले भर[13] स्व सिर सोह्यो[14] पहिलै जवन रोहँ[15] ॥ २४ ॥

१ अरज करके २ बहुत प्रबल ३ डेरे ४ जहर की ॥२२॥ ५ वृत्तांत ६ पोता ७ हाय (खेद है) ८ बुन्दी के राजा ने ९बुंदी का निवास छोड़कर ॥२३॥ १०क्रोध ११ मयूरों को मारनेवाले यवन को १२ डेरे का १३ भार १४ शोभायमान हुआ १५ यवनों को रोककर ॥ २४ ॥

मिच्छनकों सौंह[1] दै टिकाइ ततकाल मुरि,
आइ सूबापतिपैं सवेग भूप अनिरुध१९६।१ ॥
सूची[2] एह राखि जवनेस भोज१६१।२सुर्जन१९०।१सौं,
सोहु तुमसौं न छानी समुझहु भाव सुद्ध ॥
हानिबो हमारो तुम्हैं जो रुचत स्वीय हित,
अत्थ[3] लागिजैहैं तोतो लुत्थिनपैं लुत्थि उद्ध[4] ॥
नाँतो सौंपिदैहैं असिबाहकैं[5] तुमहि न्याय,
जवनन रोकिदेहु जवनैं[6] न होहु जुद्ध ॥ २५ ॥
मानि सु मुगलखान लेबो गहि मारकँको[7],
भूप संग दूत भेजि बलहि[8] लयो बुलाइ ॥
छत्रसिंह१९ । डेरन गो बैठो गजपैं छितिप,
उतरि उहाँ रु मनैं भ्राताको लयो मनाइ ॥
लग्गत बिरुद[9] पास आपुनैं चढाइ लायो,
ठाम निज पिछिपैं खवासीमैं सुभट ठाइ ॥
मोदित मुगलखानसौं यह मिलायो सूर,
मारकैं[10] दयो सो पहिलैंही गूढ निकसाइ ॥ २६ ॥
माँग्यो मोरमारकको[11] मारक मुगलखान,
पैंहु[12] तँहँ भाख्यो भजिगो सो क्यौंहु[13] लहि प्रान ॥
हाडोतीधरामैं अपराधी पुनि आइहै तो,
समुचित[14] पाइहै बचाइहै न अवसान[15] ॥
ऐसैं वढ्यो[16] बिग्रह मिटाइकैं निज अनीकैं[17],
कोटातैं चलाइ घेरी बुंदी सह तुरकानैं[18] ॥

१सौगन देकर२यह वार्ता ३यहां ४ऊंची ५तरवार चलानेवाले को ६शीघ्र युद्ध नहीं है॥ २५ ॥ ७ मारनेवाले को ८ सेना ९ स्तुति १०मारनेवाले को पहिले ही छांने निकाल दिया॥२६॥११मयूर को मारनेवाले यवन को मारनेवाला १२राजा ने कहा १३किसी प्रकार; अथवा कहीं भाग गया १४उचित दंड पावेगा १५नाश, अथवा अंत में बढ हुए १६विग्रह को मिटाकर १७अपनी सेना में १८यवनों सहित

समय हुतो पै छत्रसिंह१९ । सुत आयो संग,
[1]आहव रचायो अनिरुद्ध१९६।१इतैं अतिमान[2]॥ २७ ॥
बुंदीतैं कछुक काम बखसी सु बिस्वनाथ,
१पट्टनि गयोहो गूढ रानी जन जानि पास ॥
पहुँचत सुद्धि[3] ताकी नृपपैं मगहि मध्य,
ग्राह[4]कैं पठाइ गहि संग लयो अबिसास ॥
आवतहि बुंदी गरदाइ[5] पटक्यो असह,
सहरके सूरनपैं तोपनको अति त्रास ॥
तोप इक१तैसैं [6]प्राच्य१पर्वत चढाइ तासौं,
जो२ही दुर्ग [7]अट्ट डारयो तोरिकैं [8]चरख जास ॥ २८ ॥
दक्खिन२।३दिसासौं इत [9]गोपुर [10]अररं [11]दौरि,
[12]अर्द्ध१दल माँहिं आयो बाहुन बढात दल ॥
उत्तर४।७दिसासौं डोभरे[13]की राह होइ इत,
दुर्गके [14]अररं तोरि पैठो माँहिं [15]अर्द्ध१दल ॥
दुज्जन१९६।१[16]सनाभि१[17]असनाभि२काढि भीतद्वैरही,
प्रान लै [18]पलाये दुष्ट थान ठहरे न [19]पल ॥
भाद्रपद६[20]असितं२चतुर्थी पैं अमल भयो,
बुंदी अनिरुद्ध१९६।१को यौं जयजस लै [21]बिमल ॥ २९ ॥
तारागढ [22]कारा खल बिस्वनाथ१ राखि तिम,
वाजे मंडि मंगल विजैके बीर बजवाइ ॥
रीति कुलधर्मकी चलाइ रु जमायो राज्य,
लीनों [23]अवरोध [24]उक्तपुर१तैं [25]पुर२बुलाइ ॥

१युद्धरचा ॥२७॥ ३खबर४पकड़नेवालों को भेजकर५घेर कर६पूर्व दिशा के ७बुरज ८तोप का धाकट ॥२८॥ ९शहर के द्वार के १०कपाट ११तोड़कर१२आधी सेना १३मार्ग का नाम है १४गढ के किंवाड़ तोड़कर१५आधी सेना१६सपिंडी भाई १७सपिंडी से बाहर के भाई१८भागे १९क्षण भर भी नहीं ठहरे २०कृष्णपक्ष २१निर्मल ॥२९॥२२कैद२३जनाना२४कहेहुए(पाटण)पुर से २५बुंदी में

सूबापति१आदि जे सहायक त्रय३हि संगी,
गेह मेहमानि[1] राखि दीनी सीख हित गाइ॥
जातहि मुगलखान सूबा अजमेर जंगी,
रठउर रोके जितहीतित रनरचाइ ॥ ३० ॥
सामंत१८७।१के सूनुनमैं[2] जेठो बलकर्ण१८८।१जान्यौं,
मुख्य१कुल ताको तामैं दुर्जन१९ । कह्यो जो मूढ ॥
बैरीसाल१९४।३नाँती[3] दुष्ट दुर्जन१९६।१को संगी बन्यौं,
गो भजि बहोरि तासु संगहि निकासि गूढ ॥
तीजे३सुत तेज१८८।३बंसी मानैं तिहिं ठाम१मुख्य,
राख्यो भुजनैरी१ छीनि नंदनाँ२अँनवरूढ[4] ॥
संदन[5] सम्हारि अनिरुद्ध१९६।१नृप याही समैं,
आनी तीन३रानी पुनि ओसर बिरचि ऊँढ[6] ॥ ३१ ॥
भाख्यो जो सपिंड दुष्ट दुर्जन१९६।१ इहाँ तैं भज्यो,
गूँढ रहि लूटै तिंहिंकें इत मऊके ग्राम ॥
आनिमिल्यो यासौं तहाँ धाटिधर भिल्ल भीम[9],
जाइलई चाचुरनी१दोउ२न लरि छह्जामैं[10] ॥
साकै[11] लगतेही भूमि बेद मुनि इंदु१७४१समै,
स्वेत[12]१मधु[13]१दसमीं१०चढ्यो नृप जय सकाम[14] ॥
माधौनी[15]२२।२६जुझार१९३।४सुत नाम जयसिंह१९५।१मग्ग
ईस कोटरेको ईख्यो[16] बलसैं बहत बाम[17] ॥ ३२ ॥
पत्तन बरोदसौं कितोक धन जोर पाइ,
भोमियाँ[18] बिभाग यह लेतहो प्रमादै[19] आइ ॥

१ मिझसानी ॥ ३० ॥ २ पुत्रों में ३पोता ४प्राचीन समय से चढाहुआ अर्थात् प्राचीन अधिकार से नानणा नामक ग्राम छीन लिया ५ घर ६ विवाह ॥३१॥ ७ झांने ८ धाड़ायती (डाकू) ९ नाम है १० पहर ११ सम्वत् १२ शुक्लपक्ष १३ चैत्रमास १४ जय की कामना से १५ माधोसिंहोत हाडा १६ देखा १७ विरुद्ध ॥ ३२ ॥ १८ भोम का बंट १९ मत्तता की रीति से

तासौं करि जुद्ध कोटराहु लै निकास्यो ताहि,
सोपै भाजि चाचुरनी पहुँच्यो तिम सिटाइ ॥
एक१ही दिवसमैं महीप अनिरुद्ध१९६।१वहै,
जीतिलीनी चाचुरनी सत्वर[1] असह्य जाइ ॥
भिल्ल१रु सैनाभि[2]स्सह दुर्जन१९६।१तहाँ सौं भजि,
खींचि१३नमैं जाइ दुस्यो स्वीय बलकौं खपाइ[3] ॥ ३३ ॥
चाचुरनी१लौता[4] भट राखि भूप व्हाँतैं चढि,
नगरी मऊ२मैं किते दिवस कस्यो निवास ॥
साहढिग जाइ इतैं मालवको सूबादार,
आयो पीछो मालव बहादुर लै अवकास[5] ॥
अधिपके[6] मित्र खानमुगल१बहादुर२ए,
तासौं यह मिलन अवंती[7] गो सुहृद[8] तास ॥
छत्राधम[9] दुर्जन१९६।१न आइ इत छानैं पुरी,
लाखैरी प्रविसि[10] निसि कीनौं कोटवाल नास ॥ ३४ ॥
सो सुनत सूचि नृप सुहृद[11] बहादुरसौं,
दंड हित भेज्यो दंड[12] खींचि१३नपैं जोर दैन ॥
कहि यौं पठाइ तुम काढि हाडा६।१दुर्जन१६।१कौं,
बहुरि न आनदेहु कानदेहु[13] इक१वैन ॥
दंड भरि साहकौं बिडास्यो[14] तिन दुर्जन१९६।१कौं,
आकुल अँट्यो[15] सो ऐनऐन[16] मैं रहित ऐन[17] ॥
तीससत३००सैं[18]।दिन सौं कुसलै[19] पठायो तापैं,

१ शीघ्र २ सपिंडी भाई ३ अपने बल का नाश करके ॥३३॥ ४रक्षक(चाचुरनी की रक्षा के लिये) ५ फुरसत ६राजा अनिरुद्धसिंह के मित्र ७ उज्जैन ८उसका मित्र ९ अधम चर्त्री १०प्रवेश करके ॥ ३४ ॥ ११ मित्र १२ सेना १३सुनो १४ निकाला १५ व्याकुल होकर फिरा १६ घर घर में १७बिना घर १८सवारों से १९ कुशलसिंह को

निज जो सिलहदार[1] नृपसो अरुननैंन[2] ॥ ३५ ॥
दुर्धर[3] कुसलसिंह१नृपके सिलहदार,
दुर्जन१९६।१कों एक१ठास स्वस्थ टिकिबे दयो न ॥
छाया१जिम विग्रहें[4]२की संग न कबहु छोरि,
आजतहि राख्यो दुर्गदास सो जुंग[5]भयो न ॥
जैत्थ[6] वह१ प्रात तत्थ दुपहर२एह२जात,
लहि इम त्रास स्वास सीतल[7] कहुँ लयो न ॥
सहसा[8] तुपक छूटि धालीसुत[9] स्वीयहीकी,
ठाँ इक मऱ्यो सो दुष्ट चिंतितं[10] तस ठयो न ॥ ३६ ॥
मित्र१मिल२द्वै२इत अवंती अति मोद मिलि,
गज१हय२लै दै भूप बुंदी दिस कीनौं गौनं[11] ॥
द्वै२ही उक्त दुर्जन१९६।१के अनुज इहाँ ते आनि,
भूप१रु बहादुर२के पाय पर गतभौनं[12] ॥
तिनकी दया लै कह्यो सूबापति१भूपति२सौं,
लंघि कुलधर्म जिहिँ रावरो लजायो लोन ॥
सहज मऱ्यो सो खल दुर्जन१९६।१हरामखोर,
हीन तस बंधु दीन आये ए अनुग[13] होन ॥ ३७ ॥
अन्न१वस्त्र२इनकों हमारोही कथन हेरि,
देहु आप अबतो गयो करि दुसह दाह ॥
मित्रको कथन मानि संग तिन्हैँ आनि मित्र,
नगर गुगोर आइ ऐसैं जई नरनाह ॥
चौरों[14] पूजि कृष्ण१९६।१।१भगवंत१९५।३।२के तहाँतैं चढि,

---

१ ओहदे का नाम है २ लालनेत्र करके ॥ ३५ ॥ ३ कठिनाई से दबाया (डराने) में आवे ऐसा ४ जिसप्रकार शरीर का साथ छाया नहीं छोडती है तिसप्रकार ५ दुर्गदास से नहीं मिल सका ६ जहां ७ ठंढा, श्वास ८ अचानक बन्दूक छूटकर ९ अपने ही धायभाई की १० उसका विचारा हुआ नहीं हुआ ॥ ३६ ॥ ११ गमन १२ विना घर १३ सेवक ॥ ३७ ॥ १४ दग्ध स्थान का मंदिर

लाखैरी पुरी लखि प्रजाकौं [illegible] लाह ॥
कोटवाल सुतकौं पिता ज्यौं अधिकारी करि,
कंटक प्रजाके काढि बुंदी किंस्यो रुचिगाह ॥ ३८ ॥
दुर्जन१९६।१के भ्राता फतैसिंह१९६।२।१कौं उचित दीनौं,
गोत रह टोडा१जो समीधीको लगत ग्राम ॥
खेग१गजधर२को दुला३२लाखैरीको खेट,
दीनैं दुव२देखि जैतसिंह१९६।३।२कौं उचित जाम ॥
साधि स्वामीसेवा बीर पीछैं यह जैतसिंह१९६।३,
किंत्ति करि भावीकाल दिल्लीपुर आयो काम ॥
सूनु जाको देव१९७।१सो वँखामैं बुधसिंह१९७।१संगी,
धीर भयो छोरि दुवलाख२०००००के धरनि धाम ॥ ३९ ॥
संवत नयन वेद सत्रही१७४२लगत समा,
सित२मधु१आदि१तिथि संगत समय सुद्ध ॥
नाथाउति दूजी२नृपरानीनैं प्रसव पाइ,
बालक जन्यौं सो नाम करि सो कुमर बुद्ध१९७।१ ॥
पत्तन१रु देस२जाको उच्छव मच्यो प्रचुर,
रीतिपर लक्खन लगाये द्रम्म अनिरुद्ध१९६।१ ॥
पीछैं सक वेद वेद सत्रह१७४४।अनेहँ पर,
तनय भो दूजो२ताकै जोधसिंह१९७।२जित जुद्ध ॥ ४० ॥
रानी जुत दुव२हि कुमार ए तब नरेस,
मातामह भौन भेजे नगर नमाँनाँ नाम ॥
तबतैं रहे ए वसु८अब्दलौं कुमर तत्थ,
आये सक बावन५२मैं पीछे गेह प्रभुराम ॥
जेठे१के जनमपीछैं राजाउति२रानी जनी,

१प्रवेश किया ॥३८॥२परगना के मुख्य ग्राम का नाम है ३खेड़ा४जहां५कीर्ति६आगे आनेवाले समय में ७ युद्ध में ८ भूमि ॥ ३९ ॥ ९ चैत्र सुदि एकम १० जापा ११बहुत १२रुपये १३समय१४पुत्र ॥४०॥१५नाना के घर१६आठ वर्ष तक

दोइ२दुहिता जे बाल्यहीमैं मरी बिधि[1]बाम ॥
काबलके सूबा गये याहीके उभै२कुमर,
तत्थ भये पीछैं मरे तत्थहि[2] पृथुक[3] ताम ॥ ४१ ॥
एह कछु भावी बर्त्तमान अब जानौं इहाँ,
पाये मतभेद दोइ२ग्रंथलेख भेद परि ॥
मानैं किते बेद बेद सत्रह१७४४के सालमाँहि,
धीर अंगरेज[8]न उँपायन[4] कितोक धारि ॥
साहके निदेससौं[5] रिझाइ बंग[6] सूबापति,
अर्घ[7] दैकैं मोललये तीन३ग्राम होन आरि ॥
मानैं किते छप्पन५६के संबत लये ए मोल,
कलकत्ता१गोबिंदोर२छोटानटीनाकरि ॥ ४२ ॥
ग्राम कलकत्ते माँहि सत्तरि हुते व्हाँ गेह,
बहुरि बसायो इननैं जो बडोबिसतार,
अंतर[9] तदीय फोर्टबिलियम१नाम एक,
रुचिर[10] बनायो दुर्ग स्वीय पच्छ[11] रखवार ॥
अजनके[12] मंडलकी राजधानी एक १ अब,
व्है रही पुरीजो सब बस्तुसार दुखहार ॥
सो तहँ बनाइ अवरंग ४० ।३ साह सम्मतिसौं,
देखो अंगरेज८भये उतके जमीनदार ॥ ४३ ॥
नृप अनिरुद्ध १९।१ के प्रबीरपनको प्रभाव,
जान्यौं सो इहाँलौं अपाकित्ति[13] अब जानौं जास ॥
मान[14] सक पंच वेद सत्रह १७४५ तँपस्य[15]१२मास,
बुंदीपति कीनों रंचैं[16] पट्टानि नगरवास ॥

१ ब्रह्मा की विरुद्धता से २ बालक ३ तहां ॥ ४१ ॥ ४ नजराना ५ हुक्म से ६ बंगाले के सूबापति को ७ मूल्य (कीमत) ८ नाम है ॥४२॥ ९ उसके भीतर १० सुन्दर ११ अपने पक्ष के लोगों की रक्षा के लिये १२ आर्यावर्त्त की ॥४३॥ १३ अब आगे उसकी अपकीर्ति जानो १४ प्रमाण १५ फाल्गुन १६ कुछ

जासमैं सिनसिनी १ रु सिवगिरिस्वारे जट्ट[१],
प्रबल भये जे मंडि मार१लूट२चहुँ४पास ॥
सो सुनि पुकार अवरंगाबाद बासी साह,
आजम४१।३को पुत्र भेज्यो स्वीय नाती[२] जय आस ॥४४॥
याके संग हो न बुंदीसहुकौं हुकम आयो,
औरहु नबाब१नृप२भेजे के घन उफान[३] ॥
पट्टनिही पहुँच्यो निदेसैं[४] साहनातीको हु,
थट्ट[५] सह बट्ट[६] आइ मिलियो अमुक[७] थान ॥
चूक मिलिबेमैं करिहो तो दंड पैहो चाहि,
हमहि न दोष व्हैहैं जस१बसु२देस३हान३ ॥
याबिधि कहाइ साहजादा दरकुंच आइ,
जेय जटवारि[९] कीनी सन्निधि[१०] रन अजान ॥ ४५॥
पट्टनितैं भूप चल्यो खटपुर१रात्ति रहि,
कीनौं पुरबंसी२जाइ दूजो२दलको मुकाम ॥
सोखवारे गेहनसौं सुभट बुलाये संग,
बिन्नति करी व्हाँ किते भृत्यन नियति[११] बाम[१२] ॥
देखहु रहैहैं गुनगोरि३के दिवस दोइ२,
जोधँ[१३] अपनैंहू आइ मिलिहैं अखिल जाम ॥
यातैं पुरबुंदी व्है पधारहु सजव[१५] आप,
लैकैंबय जुब्बन[१६] नवोढँन[१७] रस ललामँ[१८] ॥ ४६ ॥
पीछैं पूगिजैहैं करि धाव[१९] साहजादेपास,
को मरैं१बचैं२को चलिबो है उहाँ रनकाज ॥
स्वामी मूँढ[२०] भृत्यनकी अरज यहैही सुनि,

जाट २ अपने पोते को ॥ ४४ ॥ ३ बढाव से ४ हुक्म ५ सेना ६ सहित मार्ग में ७ फलाने स्थान पर ८ घन ९ जाटों का देश १० समीप ॥ ४५ ॥ ११ भाग्य की १२ विकलता से १३ वीर १४ जहां १५ शीघ्र १६ जोबन १७ नवोढा स्त्रियों का १८ सुन्दर रस लेकर ॥ ४६ ॥ १९ दौड़ २० मूर्ख सेवकों को

आयो चढि बुंदी[1] अहो हड्ड६१नको अधिराज ॥
तीजी३अरु चोथी४तिथि रहिकैं[2] कथिततत्थ,
सकल मिलाइ सेना संगर[3]को साजि साज ॥
स्वेत१मधु१पंचमी५छ बेद मुनि इंदु१७४६साक,
बुंदीतैं चल्यो जो करि लंबे कुंच अतिबाजें[5] ॥ ४७ ॥
संकेतपैं जाइ सुत आजम४१।३के स्वीय[6] सेना,
अखिल निहारी व्हाँ न पूगिसक्यो नृप एह,
ताके अपराधकी लिखाइ अरजीहु तानैं,
पठई पितामहपैं[7] नृप यौं जनायो नेह ॥
पीछैं बडे बेगतैं बिजेयथान[8] पहुँचत,
श्रमित[9] मिल्यो सो गुनिगोरि३पैं[10] निबसि गेह ॥
कैदतैं छुडाईहुती सु प्रसू[11] तऊ कुमार,
आदरचो न बुंदीपति सूचिकैं रिसअछेह ॥ ४८ ॥
मानी प्रतिपक्खिनसौं[12] प्रातहि प्रघात[13] मच्यो,
जैत्थहु[14] न पूगिसकें साहके कतिक जोध ॥
जट्टनको तत्थ बढिगो अति असह जोर,
स्वबल सिटायो ताको कुमरहुँ[15] पायो सोध ॥
मोहनोत२माधानी[16] । व्हाँ कोटाकी चमूतैं[17] काढि,
काम आयो गोवर्द्धन१९५।२मारि घनैं अतिक्रोध ॥
त्रिदिवँ[18] गयो सो राजगढको अधीस तहाँ,
बाँह गलडारि नारि अच्छरीसह[19] सुबोध ॥ ४९ ॥
पुव्वहि अँनीककी[20] अँनी[21] काति सुरत पेखि,

१ आश्चर्य २ कही हुई ३ युद्ध ४ चैत्र सुदि ५ अत्यन्त शीघ्रता से ॥४७॥ ६ अप- … ७ औरंगजेब के समीप ८ विजय करनेवाले स्थान पर ९ थकाहुआ १० … गोर पर घर में निवास करके ११ शाहजादे की माता को ॥४८॥ १२ शत्रुओं … १३ विशेषघात (युद्ध) १४ जहां भी १५ शाहजादे ने १६ माधोसिंहोत १७ … ना से १८ स्वर्ग १९ अप्सरा ॥ ४९ ॥ २० सेना का २१ अग्रभाग

निखसि[1] अनीकतैं अनीक जुत खोइ नाम ॥
रोस[2] साहनातीको बिचारि तैसैं अनिरुद्ध१९६।१,
भीत गीतैं[3] आयो भजि धामहीनैं[4] निजधाम ॥
धारनमैं[5] धसिकैं अकेले१धीर गोवर्द्धन१९५।२,
राख्यो[6] जसभागी बीर कोटाको अधिप राम१९८।३ ॥
सेस सेना साहकी इतेबिच पहुँचि संख्यँ,
जट्टनके थट्ट जीति लै लयो लरि दुरजाम[7] ॥ ५० ॥
इत अनिरुद्ध१९६।१कुलधर्म[8] कँहँ दै उदकै,
आयो भाजि बुंदी तापैं अमरखैं[10] साह आनि ॥
काहूनैं[11] लयो न पुरपट्टनि कबहु क्योंहुँ,
जोपैं लयो छीनि सदा बुंदीके बँटहु[12] जानि ॥
भूप बुधसिंह१९७।१जैसो आलम४१।२मरत भयो,
तैसोही यहहु भयो ब्रीडा[13] भजिबेकी तानि[14] ॥
ऐसी अपकित्ति उडी दिष्टकरि[15] जैसी उहाँ,
हड्ड६।२न न पाइ सुरतान[16]१८३।१बिनु धर्महानि ॥ ५१ ॥
कोटैकी गई प्रसरि याहातैं अतुल किर्त्ति[17],
ग्रामनसमेत पुरपट्टनि लहि स्वगेह ॥
कोटापति अन्वयमैं[18] पुरुख उभै२न कहे,
उनको उदंत[19] हयाँ प्रसंगसौं सुनहु एह ॥
सुतजु मुकुंद१९४।१को मरयो जब जगतसिंह१९५।१,
नीति करि पंचननैं कुल१क्रम२हेरि नेह ॥

१ बुरी रीति से निकलकर सेना सहित नाम खोकर २बादशाह के पाति का क्रोध ३ भय का गान करता हुआ ४ उस स्थान को छोडकर ५ तरवारों की धारा में ६ यश में बंट करनेवाला ७ युद्ध में ८ प्रहर ॥ ५० ॥ ९ कुल के धर्म को पानी देकर १० क्रोध ११ किसी कारण से १२ बुन्दी के बंट में समझकर १३ भागने की लज्जा १४ फैलाकर १५ भाग्य से १६ बुन्दी के राव सुरताणसिंह के विना ॥ ५१ ॥ १७ कीर्ति १८ वंश में १९ वृत्तान्त

मोहन१९४१२के सूनु[1]ने मनाई तुमरो तखत,
तदपि[2] जनाई तिन दास हमरे तो देह[3] ॥ ५२ ॥
भाखि ऐसैं सबन निबाह्यो धुर भीखमको,
मोहन१९४१२अनुज कन्ह१९४१३सुत तव स्वामी मानि ॥
प्रेमसिंह१९६।१बाल धर्यो पंचननैं कोटापट्ट,
आदि कुलरीतिसौं अनुक्रम[4] उचित आनि ॥
ताकी सिसुता[5]मैं तास धात्री[6]नैं प्रसारि तोर[7],
यहि घटायो न बढायो कछु लै कुबानि ॥
[8]उंछिशा[9]के असन[10] करी[11]हय[12]निबल ईखि,
कोटातैं निकारिदये करी हय कहु कानि ॥ ५३ ॥
मृध[12]मैं मर्यो न सुत पंचम५जो माधव१९३।२को,
लोहनतैं जर्जर बच्यो बलिष्ट आयु लहि ॥
पंचननैं सो तव किसोर१९७।१धर्यो कोटापट्ट,
करिकैं रहस्य[13] नय[14]१सूरता२समान कहि ॥
ताकै　　　　　　　　　　राम१९८।३सुत तीन,
पहिले इहाँ हुव२परे गिनि प्रसाद[15] पैहि ॥
पुत्र तीजो३राम१९८।३सु किसोर१९८।५मान पट्टपति,
गो दिवि[16] दहोरि[17] चि[18]के घायन[19] उदर्क गहि ॥ ५४ ॥
पुन तस तीजो३रामसिंह१९८।३तव बैठो पट्ट,
जेठे हुव२भ्रात रहे ईरखा बहु जनात ॥
पै जो कह्यो जनक[20] विचारि निजदेस प्रभु,
मिच्छ[21]हु पट्टा दै मान्यौं ताहिकों ज्यों तस तात[22] ॥

१पुत्रों ने २तोभी ३शरीर ४क्रम के साथ ५बालपन में ६धाय ने ७प्रताप ८नगर ९०कु रीति १०अल्प धान्यके ११भोजन से हाथी और घोड़ों को निर्बल देखकर ॥५३॥ १२युद्ध में १३ एकान्त (गुप्त) १४ नीति १५प्रसाद के रूप में १६स्वर्ग १७एकत्र हुए १८ घावों से १९ आगे आनेवाले समय का कर्म फल ग्रहण करके ॥५४॥ २० पिता २१ बादशाह ने २२ उसके पिता को माना था तिसीप्रकार

सोही रामसिंह१९८।३इहाँ कोटापुर सासक हो,
उक्त भूप१हैं पै बर्त्तमान अब जानों बात ॥
पाई एक१भाई संटि यानैं पुरी पट्टनि सो,
बुंदीपति कीनों जयजस२को जँहँ बिघात ॥ ५५ ॥
भागे सब हाडे६१ पहिलैं तो यह ख्यात भई,
बुंदी देस१कोटादेस२सोक भो बिनु बिसास ॥
तोहनपुरेस कविराज हरनाथ तहाँ,
गोवर्द्धन१९५।२भागो सुनि छोरयो लैन मुखग्रास ॥
भाख्यो यौं परिच्छा हम कीनी सो बितथ भई,
तो अब न जीवैं बजि चारन घंटक तास ॥
अन्नबिनु या कविकौं ऐसैं कढे तीन३अंह,
चोथे४दिन पाई ज्यों भई त्यौं चारमुख चास ॥
हाडे६१ओर भागे पै न भागो सुत मोहन१९४।२को,
खेतपरयो गोवर्द्धन१९५।२जट्टन घनेंन खाइ ॥
ऐसो भयो निश्चय लयो तब सुकवि अन्न,
जो सु भजिआवैं निहचे तो यह मरिजाइ ॥
लूटिपरयो ताकों जानि प्रत्युत सुमह तानि,
तानैं कविता करि परिच्छा जगकौं जताइ ॥
कोटापति वृत्तिभोजी जीवन बिचारयो कबि,
काव्य जाके डिंगल गिरामैं धजों चमकाइ ॥ ५७ ॥
साह ऐसैं पट्टनि उतारी अनिरुद्ध१९६।१सन,
कोटापति राम१९८।८को मिली सो सबग्राम साथ ॥

१पति २घदले में देकर ३ नाश ॥५६॥ ४प्रसिद्ध ५विश्वास ६ थूहगापुर का पति कवि महियारिया शाखा का चारण ७ परीक्षा ८ झूंठी ९ इस चारणपन का शरीरधारी बजकर १० दिन ११ हलकारों के मुख से,१२ खबर सुनी ॥ ५६ ॥ १३ उलटा १४श्रेष्ठ उत्सव करके १५परीक्षा १६जीविका१७ग्रानेवाला

यातैं हमरेहु ग्राम खट६हि लवान१आदि,
पट्टनके संग गये पाथमैं ज्यों मिलि पाथ ॥
तव खट६ए रहे वरोदिया नगर तंत्र२,
हरिना१प्रमुख३ अल्प प्रभुके कविन हाथ ॥
पहु बुधसिंह१९७१संग स्वकवि कढे न पीछैं,
यातैं सब खोइराख्यो हरिना१स्वगृह आथ६ ॥ ५८ ॥
सोंपे राख्यो हमरे उमेद१९८१४नृपही सदय,
नातो व्है दलेल१९८१२के रहे हे इम जातो नाम ॥
एह कछु भावी३वर्त्तमान२ प्रभु जानों अव,
कोटापतिके गये लवान१मुख यों छ६गाम ॥
जाइ तव कोटा रामसिंह१९८१३कों नंति जनाइ,
धुत्तपन ठानि कह्यो लेहु न स्वकवि धाम ॥
राम१९८१३कह्यो वृत्ति हमनैं तो सह्रियारियनन,
सोंपी तुमतो१नटाइ क्यों अब इत संकाम ॥ ५९ ॥
माधव१९३१२हमारे प्रपितामह उचित मानि,
तुमहि बुलाये पै न आये व्हाँ प्रसभ तानि ॥
भाख्यो हम बुंदी तंत्र कितकित हाहा भ्रमे,
माधव१९३१२तदपि लायो खंधिल   । हि निज मानि
बुंदी१ओ लवान२जेवो वरज्यो न मान्यों वलि,
इससों अधिक दीनी गोठि जयसिंह आनि ॥
उद्धत समुझि मान । खंधिल । तनय यातैं,
वृत्ति दीनी औरनकों तुमरी लखि कुवानि ॥ ६० ॥

१ जिसप्रकार पानी में पानी मिलजावे तिसप्रकार मिल गये २ आधीन ३ हरणां आदि ४ आप के कवियों के हाथ में ५ राजा बुधसिंह के साथ ६ अपने घर का धन ॥ ५८ ॥ ७ दयावान् ८ बुधसिंह के विरोधी दलेलसिंह के होकर रहे थे इस कारण ९ आदि १० नटना ११ धूर्त्तता करके १२ कामना सहित क्यों होते हो ॥ ५९ ॥ १३ हठ करके १४ आधीन १५ नाम है १६ चञ्चल ॥ ६० ॥

आई अब पट्टनि हमारे तुम यातैं आइ,
खोये जे लवान१आदि राखेंयहो ग्राम खट६॥
तोलों आइ अबहु हमारे होहु बुंदी तजि,
बलि सु न मानि छोरि पट्टनि प्रदेस बट ॥
आवत बुलाइकैं लवानमैं हवेलि१अरु,
पुहविरहवालेकों दईंदे कछु दब्प१पटे२ ॥
सो सुनि दई न लहि पट्टनिहू बुधसिंह१९७।१,
पच्छ दुव२संगी काक४तारा३ज्यौं करे प्रकट ॥ ६१ ॥
पीछैं गई बुंदी बुधसिंह१९७।१नृपके प्रमाद,
तब जो भई सो कही कहिहैं बहुरि ताम ॥
राखि पै हवेली१औ हवाला२यौं लवान१मैं रु,
आये उपालंभ लहि बुंदीको छबि ललाम ॥
इत अपराध अनिरुद्ध१९६।१को भजत इहाँ,
जानि अवरंग४०।३अतिकोपको बिरुप जाम ॥
भेज्यो नृप काबलके सूबा अहदीन भेजि,
दीनीसुधि जाहु नदे प्रत्यह हजार१०००दाम ॥६२॥
वज्रसो हुकम यहै साहको सुनत बुंदी,
धोर भय माच्यो ज्यौं अनीर झख जेठ३घाम ॥
भाख्यो नृप सुज्जन१९०।३नरेस करि कोल सात७,
तोरयो गुडवानौं अकबर३७।२के प्रसाद ताम ॥
भोज१९१।१रतनेस१९२। सत्रुसल्ल१९४।१अरु भाऊ१९५।१भूप,
काहुन अटक लंघी रखीयहु बिगारि काम ॥

---

१ मेह २ सुधि ३ वक्र ४ काग पक्षी की दृष्टि आगे पीछे दोनों ओर जाती है जैसे ॥ ६१ ॥ ५ यहां ६ उलंभा ओलंभा लेकर ७ जहां ८ नगर ९ प्रति दिन (हमेशह) ॥ ६२ ॥ १० ज्येष्ठ मास की धूप में बिना पानीवाली मछली के समान ११ यहां १२ नदरानदी १३ अपनी

हारि अब ऐसों कहा कहिहैं सकल हाड़,
स्वीयन१ हाँ सुचि धुव गहिहै गयेंही धाम ॥ ६३ ॥
पाउसको ऐसो अनिरुद्ध१०६।१नृप ताहू पेखि,
प्रतिदिन दंड मादको जो तरसठौं पुगाइ ॥
आश्विन७लौं बारह हजार१२००० अहदीन अप्पि,
भीत सीत पानी बंसविरुदन देवो भाइ ॥
लघु दुवररानी अो खवासि कछु संग लैकैं,
जीवत मृतक भयो अटक परत्र जाइ ॥
राजा अब्द पंचक५अमीरखानपास रहि
सुर्जन१०१।१को कोविद बिगार्यो सर्वसौं सिटाइ ॥ ६४ ॥
छट्ठे६अब्दमैं तहँ कुदिष्ट करि रोग छाइ,
मास सुचि४मेचक२द्वितीया२गयो भूप मरि ॥
बुंदी लाये रानि१न खवासि२न सह विभूति,
कथित प्रासन उहाँ भूपतिको दाह करि ॥
दुर्जन१०६।१दवायो कुंसलाख्य१मो सिलहदार,
महारामरनाथाउत साकलहु मज्झ परि ॥
नयन कलंब मुनि इंदु१७५२सक बुंदीनैर,
सहसा अमंगल अनिष्ट मच्यो भै प्रसरि ॥ ६५ ॥

(चूडाल्लदोहा)

हहह६१न इनैं अनिरुद्ध१०६।१हुव, अटकपार बिनु अंग अमंगल
इत बुंदी सब आकुले, सबु भये इन्हि संग समंगल ॥ ६६ ॥

---

१ अपने लोगों से ॥ ६३ ॥ २ तलाश करने तथा दंड लेने को भेजे जाते थे उन लोगों को अहदी कहते थे जो राजपूताने में चालसी का नाम प्रसिद्ध होगया है ३ भय का मित्र होकर ठंडी ऋतु में भी पानी देना कहा ४ अटक नदी के पार जाकर ५ पांच वर्ष ६ सुर्जन की भलाई उदय में ॥ ६४ ॥ ७ छट्ठे वर्ष में ८ आषाढ वदि दोज के दिन १० कुशलसिंह नाम का ११ मध्य १२ भय ॥ ६५ ॥ १३ हाड़ों का राजा १४ मंगल सहित ॥ ६६ ॥

पुव्व१मरी रानीप्रथम१, सह जदोनि१हुती हि सेस[2]सब ॥
उत न जरी न जरी इतहु, तीस३०खवासि हुई ससंग तव ॥६७॥
महाराम१सालक कुमति, पीछैं सालम संग भयो पर ॥
सिलहदार१कुसलाख्य१सह[3], आयो लै सब भूति[4] इहाँ अर[5] ॥६८॥

॥ दोहा ॥

अटकपार मरतहि अधिप, हुव बुंदिय हाकार ॥
सिसु दुव२मातुल सदन[6] सन, बुल्ले बिहित[7] बिचार[8] ॥६९॥
क्रमित चरित अनिरुद्ध१९६१[9]को, अल्पहि हो जिम आनि ॥
कथन जथाश्रुत तिम कहिय, पुनि श्रुत१लेख२प्रमानि[10] ॥७०॥

॥ ॥

सुपहु रचे सबही महलन सिर[11] इहिं अनिरुद्ध महल१अभिधान ॥
सबसन उच्च अजिर[12]छत्रि३न सह बहु तुंगित[13] करि वहुत विधान ॥
गिरिगढ द्वार[14] अवधि सन सुभ गिनि क्रमकारि सवपुरविच पौरिकूट[15] ॥
पाउस जल कर्द्दम[16] दुख परिहरि लिय पहिलैं इम कारि जस लूट ॥७१॥
पुर कापरनि तथाहि कुमरपन प्रथित[17] रुचिर बिरचे प्रासाद३ ॥
नृपधात्रेयहु[18] देव१सनामक वाढिय[19] जस जग मुख संवाद ॥
निज आख्यां[20] करि देवपुरा१नवसाखापुर[21] यह रचिय सयान ॥
बापी२उपबन३महल३बनाइ रु थिति किय तँहँ सुहिगिनि निजथान ॥
इक१छत्रिय१[5]बिरचिय तँहँ अनुपम चउरासिय थंभन चित चारु[22] ॥
थिर जैसी कहियत बिरले थल किय तैसी प्रमुदित करि कारु[23] ॥

१जादवणी सहित २ पति के साथ ॥ ६७ ॥ ३ कुशलसिंह के साथ ४ ऐश्वर्य ५शीघ्र ॥ ६८ ॥ ६ मामा के घर ७ से ८उचित विचार से बुलाए ॥ ६९ ॥ ९चल ताहुआ चरित्र १० सुनेहुए और लिखेहुए के अनुसार ॥ ७० ॥ ११ महलों के ऊपर १२ चौक १३ ऊंचा १४ पर्वत के गढ के दरवाजे की सीमा से १५ नगर का द्वार १६ वर्षा के जल के कीचड़ का दुःख मिटा कर ॥ ७१ ॥ १७ प्रसिद्ध १८ धाय भाई १९कहलाया २० अपने नाम से २१ शहर के बाहर का पुरा ॥ ७२ ॥ २२ सुन्दर २३ कारीगरों (शिल्पियों) ने

बिरचिय तिम दूजो२छत्री३ईश्वर पुनि तारागढ प्राच्य१प्रदेस ॥
कहियत सुत सजनक आख्या करि इम तबतैं छत्रिन जुग२एस ७३

॥ दोहा ॥

पहुँ बुंदिय बाजार पथ, सिला खुग किय सज्ज ॥
पाउसमैं दुख पंकको, यातैं मचत न अँज्ज ॥ ७४ ॥
किते कहत खलु यह खुरा१, मंजु रच्यो नृप माइ ॥
किमहु होहु पै कर्द्दमं न, जिहिं करि अबलगि जाइ ॥७५॥
तज्यो देह नृप रचित जँहँ, अज्जहु चौरी आहि ॥
रच्यो चरित अनिरुद्ध१९६१को, बिधि क्रम वत्त निबाहि ॥
जिहिं संग न इक्क१हु जरी, अँबला रानिन आदि ॥
यह आचिज्ज पिक्खहु अधिप, उज्झिय रीति अनादि ॥७७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपत्यनिरुद्धसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणागतानिरुद्धहाडादुर्जनसिंहबुन्दीविजयन १, यवनेन्द्रसेनासहायप्रद्रावितदुर्जनसिंहानिरुद्धसिंहबुन्दीपुनरधिगमन २, क्रीतकलिकातानगरांग्लफोर्टविलिअमदुर्गनिर्माण ३, सनसनीकजट्टयुद्धानिरुद्धसिंहपलायन४, तद्युद्धकोटासेना-

१श्रेष्ठ २तारागढ की पूर्व दिशा में ३ पिता सहित पुत्र के नाम से ॥७३॥४राजा ने ५ पत्थर का खुरा तयार कराया ६ कीचड़ का ७ आज [इस समय] ॥७४॥ ८ निश्चय ९ यह सुन्दर खुरा राजा की माता ने बनाया १० कादा [कीचड़] ॥ ७५ ॥ ११ श्मशानों का* मंदिर १२ है १३ वार्ता का निर्वाह करके ॥७६ ॥ १४ स्त्री १५ आश्चर्य १६ अनादि रीति को छोडी ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह को दक्षिण में जानकर हाडा दुर्जनसिंह का बुंदी विजय करना १ बादशाही सेना के बल से दुर्जनसिंह को भगाकर अनिरुद्धसिंह का बुंदी पीछा लेना २ और अंगरेजों का कलकत्ता नगर मोल लेकर वहां फोर्टविलियम नामक गढ बनाना ३ सनसनीवाले जाटों के युद्ध में अनिरुद्धसिंह का भागना ४ इसी युद्ध में कोटा के सेनापति गोवर्धन

* पहिले समय में दग्ध स्थान पर मंदिर बनते थे अब उसके स्थान में छत्रियां बनती हैं किन्तु जोधपुर में तो श्मशानों में अब भी मंदिर ही बनते हैं ॥

पतिगोवर्द्धनपद्रवश्रवणास्वपरीक्षान्नृतत्वहेतुकृतानशनव्रततूहणापुरीयमहियारियाचारणाहरनाथस्य रणाहतगोवर्द्धनश्रवणोत्सवपुरःसराशनकरण ५, रणापलायनापराधहृतानिरुद्धपट्टनप्रान्तकोटाधिपप्रदान ६, प्राप्तदण्डकृत्तसुर्जनसंधानिरुद्धसिंहयवनेन्द्रसेवासिन्धुसरित्परतटगमन ७, उपितपञ्चहायनानिरुद्धसिंहतत्रस्मिमरणातत्समयनिर्मितस्थानसूचनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितोऽष्टत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३८ ॥

दास का भागना सुनने के कारण अपनी परीक्षा को झूठी मानकर मरने के कारण अन्न जल छोड़नेवाले तूहणापुर के महियारिया चारण हरनाथ का गोवर्धन का युद्ध में काम आना सुनकर उत्सव करके अन्न जल लेना ५ युद्ध में भागजाने के अपराध से अनिरुद्धसिंह से पाटण का परगना छोनकर कोटा वालों को मिलना६ बादशाह से दंड पाकर सुर्जन के कियेहुए कोलको तोड़कर अनिरुद्धसिंह का शाही सेवा में अटक नदी के पार जाना ७ पांच वर्ष रहकर अनिरुद्धसिंह का वहीं पर मरना और अनिरुद्धसिंह के समय के बने हुए स्थानों की सूचना का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि दो सौ अड़तीस २३८ मयूख हुए ॥

